Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिंदी शिक्षण

डॉ. (श्रीमती) उमा मंगल

CC-0 Agamnigam Digital ... ation F... h.Fund... -Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिंदी शिक्षण

डॉ० (श्रीमती) उमा मंगल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिंदी शिक्षण

(Teaching of Hindi)

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc. No. 6376
Dated 21-9-2004
52 (III)

डॉ० (श्रीमती) उमा मंगल
वैश्य कॉलिज आफ़ एजूकेशन
रोहतक

G.M.C.E.J
6376

आर्य बुक डिपो
करोल बाग़, नई दिल्ली-110005

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रकाशक :
सुखपाल गुप्त
आर्य बुक डिपो
30, नाईवाला, करोल बाग
नई दिल्ली-110005
दूरभाष : 25721221,25720363

© लेखिकाधीन

प्रथम संस्करण : 1991
पुनर्मुद्रण : 1995, 96
द्विवितीय संस्करण : 1998
पुनर्मुद्रण : 2000
तृतीय संशोधित एवं
परिवर्धित संस्करण : 2003
पुनर्मुद्रण : 2004

मूल्य : 120.00 रुपये

टाइपसैटिंग :
प्रखर इंटरनेशनल
किशन गंज, दिल्ली-110007

मुद्रक :
विशाल प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रस्तुत संस्करण की भूमिका

परिवर्तन जीवन का एक अभिन्न अंग है। जीवन की सुंदर एवं सफल अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक भाषा शिक्षण में तो इस प्रकार के परिवर्तन का महत्त्व और भी बढ़ जाता है। विगत कुछ वर्षों में विभिन्न विश्वविद्यालयों के शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में काफी कुछ परिवर्तन आए हैं। अधिकतर ये परिवर्तन राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (N.C.T.E.) द्वारा सुझाए गए पाठ्यक्रम को ध्यान में रखते हुए ही किए गए हैं। प्रस्तुत संस्करण की आधारभूमि इन्हीं परिवर्तनों की माँग को पूरा करना ही है। इस दृष्टि से प्रस्तुत संस्करण में पाठक गणों को कुछ निम्न विशेषताएँ देखने को मिलेंगी। पुस्तक की संपूर्ण पाठ्यसामग्री को भलीभाँति संशोधित एवं परिमार्जित करने की चेष्टा की गई है।

पुस्तक की पाठ्यसामग्री को इस प्रकार परिवर्धित किया गया है कि वह भारतीय विश्वविद्यालयों के बी.एड. कक्षा के हिंदी शिक्षण पाठ्यक्रम की आवश्यकताओं को पूरा कर सके। परिणामस्वरूप इसमें कुछ निम्न नवीन प्रकरणों का समावेश किया गया है।

— भाषा शिक्षण में शैक्षिक एवं अनुदेशनात्मक उद्देश्य
— सूक्ष्म शिक्षण द्वारा शिक्षण कौशलों का विकास
— हिंदी शिक्षण में पाठ्यक्रम सहगामी (Co-curricular) क्रियाएँ
— हिंदी शिक्षण में अनुदेशनात्मक सामग्री (Instructional material)
— हिंदी पाठ्यवस्तु का शिक्षाशास्त्रीय विश्लेषण (Pedagogical analysis)

हिंदी शिक्षणं हेतु भावी और कार्यरत अध्यापकों को आवश्यक सैद्धांतिक ज्ञान के साथ-साथ प्रयोगात्मक अनुभव एवं व्यावहारात्मक सुझाव भी प्राप्त हो सके, इस प्रकार की चेष्टा भी यहाँ यथासंभव की गई है।

आशा है अपने इस रूप में प्रस्तुत संस्करण पाठकों के लिए अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकेगा। पुस्तक में आगामी सुधार हेतु सुझाव सहर्ष आमंत्रित हैं।

शुभ कामनाओं सहित।

—डॉ. (श्रीमती) उमा मंगल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रथम संस्करण की भूमिका

भाषा अभिव्यक्ति का साधन है और ज्ञान ग्रहण करने का माध्यम भी। भाषा का ज्ञान इस दिशा में बालक के लिए वह सीढ़ी है जिसकी सहायता से वह अपने विकास की छोटी-बड़ी मंजिलों की ऊँचाइयों तक पहुँचता रहता है। बालक के व्यक्तित्व का समुचित विकास और उसके अध्ययन-मार्ग पर निरंतर आगे बढ़ते रहने के लिए यह आवश्यक है कि वह अपनी अभिव्यक्ति की भाषा पर समुचित अधिकार स्थापित कर सके। इस कार्य हेतु बालक के भाषा-शिक्षण पर प्रारंभ से ही पूरा-पूरा ध्यान देने की आवश्यकता है। यह आवश्यकतापूर्ति स्वाभाविक रूप से अध्यापकों के उचित प्रशिक्षण कार्यक्रम से जुड़ी हुई है। प्रस्तुत पुस्तक इसी आवश्यकतापूर्ति का एक प्रयास है।

इस प्रयास की कुछ निम्न विशेषताएँ हैं :

- पुस्तक यद्यपि विशेषकर कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय एवं महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक के नियमित एवं पत्राचार बी.एड. पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर लिखी गई है, परंतु यह अन्य भारतीय विश्वविद्यालयों तथा संस्थानों के अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता को भी पूरा करने में सक्षम है।
- पुस्तक की भाषा को यथासंभव सरल एवं छात्र-उपयोगी रखने का प्रयत्न किया गया है। इसी दृष्टि से पुस्तक में जहाँ-तहाँ अंग्रेजी समानार्थक शब्द और पद देने की चेष्टा की गई है तथा पुस्तक के अंत में परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण विश्वविद्यालयीय प्रश्नों को अध्ययन तथा अभ्यास हेतु रखा गया है।
- हिंदी भाषा-शिक्षण के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की आवश्यकतापूर्ति हेतु पुस्तक में हिंदी-शिक्षण संबंधी आवश्यक विषयवस्तु को इसके द्वितीय खंड में अलग से चार अध्यायों में विभाजित कर वर्णन करने का प्रयत्न किया गया है।

आशा है अपने प्रस्तुत रूप में यह प्रयास हिंदी भाषा के सेवारत और भावी अध्यापक दोनों को ही अपने शिक्षण-कार्य में सफलता प्राप्त कराने का मार्ग प्रशस्त कर सकेगा।

इस पुस्तक की रचना हेतु जिन विद्वानों की रचनाओं से लाभ उठाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है तथा शिक्षक-प्रशिक्षण से लगातार पिछले दो दशक से जुड़े रहने के कारण अपने साथियों तथा विद्यार्थियों से जो भी ज्ञान एवं अनुभव प्राप्त हुए हैं उनके प्रति आभार प्रकट करना मैं कर्तव्य समझती हूँ तथा साथ ही उनसे यह अपेक्षा भी करती हूँ कि वे इसमें आवश्यक सुधार हेतु अपने अमूल्य सुझाव देने का कष्ट करेंगे।

विज्ञ पाठकों के लिए शुभकामनाओं सहित।

—डॉ. (श्रीमती) उमा मंगल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विषयानुक्रम

अध्याय	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	भाषा—अर्थ, प्रकृति एवं रूप (Language—Meaning, Nature and Form)	1
2.	मातृभाषा के रूप में हिंदी शिक्षण का महत्त्व एवं उद्देश्य (Importance and Aims of Teaching Hindi as Mother Tongue)	11
3.	मातृभाषा के रूप में हिंदी शिक्षण के सामान्य सिद्धांत (General Principles of Teaching Hindi as Mother Tongue)	25
4.	भाषा शिक्षण में शैक्षिक एवं अनुदेशनात्मक उद्देश्य (Educational and Instructional Objectives in Language Teaching)	30
5.	भाषायी कौशलों का शिक्षण (Teaching of Language Skills)	53
6.	हिंदी ध्वनियाँ—वर्गीकरण, उच्चारण एवं शिक्षण (Hindi Sounds—Classification Pronunciation and their Teachings)	78
7.	अक्षर विन्यास या वर्तनी—त्रुटियाँ, कारण एवं निवारण (Spelling Errors—Causes and Remedial Measures)	93
8.	हिंदी शब्द—स्रोत, रचना एवं शिक्षण (Hindi Words—Sources, Composition and Teaching)	99
9.	हिंदी वाक्य-विश्लेषण, रचना एवं विराम चिह्न (Hindi Sentences-Analysis, Composition and Punctuation)	116
10.	कविता शिक्षण (Teaching of Poetry)	131
11.	गद्य शिक्षण (Teaching of Prose)	152
12.	कहानी शिक्षण (Teaching of Story)	168
13.	नाटक शिक्षण (Teaching of Play / Drama)	178
14.	व्याकरण शिक्षण (Teaching of Grammar)	189
15.	रचना शिक्षण (Teaching of Composition)	203
16.	सूक्ष्म शिक्षण द्वारा शिक्षण कौशलों का विकास (Development of Teaching Skills through Micro Teaching)	228
17.	इकाई-योजना एवं दैनिक पाठ योजना निर्माण (Unit Planning and Daily Lesson Planning)	256
18.	हिंदी पाठ्यक्रम—निर्माण एवं समीक्षा (Construction and Evaluation of Hindi Curriculum)	269

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

19. हिंदी पाठ्यपुस्तक-समीक्षा 275
(Critical Evaluation of Hindi Textbooks).
20. हिंदी शिक्षण में पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएँ 283
(Co-curricular Activities in Hindi Teaching)
21. हिंदी शिक्षण में मूल्यांकन 298
(Evaluation in Hindi Teaching)
22. हिंदी शिक्षण में गृहकार्य 321
(Home work in Hindi Teaching)
23. हिंदी शिक्षण में अनुदेशनात्मक सामग्री 328
(Instructional Material in Hindi Teaching)
24. हिंदी पाठ्यवस्तु का शिक्षाशास्त्रीय विश्लेषण 343
(Pedagogical Analysis of the Subject Matter of Hindi)
सहायक एवं विशेष अध्ययन ग्रंथ सूची 358
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

1

भाषा-अर्थ, प्रकृति एवं रूप
(Language—Meaning, Nature and Form)

भाषा क्या है ? (What is Language ?)

भाषा क्या है इस विचार पर विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने मत और तर्क के अनुसार अलग-अलग विचार व्यक्त किए हैं। उदाहरण के लिए यहाँ हम कुछ विदेशी विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं को उद्धृत करना चाहेंगे।

1. बेंद्रिय के अनुसार—"भाषा एक तरह का चिह्न है। चिह्न का आशय उन प्रतीकों अथवा संकेतों से है जिनके द्वारा मानव अपने विचार दूसरों पर प्रकट करता है।"

2. स्वीट महोदय के अनुसार—"ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों को प्रकट करना ही भाषा है।" (Language is the expression of thoughts by Speech sounds.)

3. बिट्रेनिका विश्वकोश (Encyclopaedia Britanica) के अनुसार—"भाषा ध्वनि-प्रतीकों या संकेतों की ऐसी मान्य व्यवस्था है जिसके द्वारा एक समाज के लोग आपस में विचार-विनिमय करते हैं।" (Language is an arbitrary system of vocal symbols by means of which, human beings, as members of a social group communicate with each other).

आइए, अब इन उपर्युक्त परिभाषाओं पर मनन करके भाषा क्या है यह जानने का प्रयत्न किया जाए।

यह सच है कि हमारे अंतर में जो कुछ भी विद्यमान होता है, जो भी विचार उमड़ रहे होते हैं, जो भी भावनाएँ उद्वेलित हो रही होती हैं और जो कुछ भी हम दूसरों को बतलाना या जताना चाहते हैं, इस अभिव्यक्ति के लिए हम जिस माध्यम का भी सहारा ले सकते हैं, विस्तृत अर्थों में उस सभी को भाषा की संज्ञा देने का प्रयत्न किया जा सकता है। इस दृष्टि से एक मूर्तिकार द्वारा निर्मित मूर्ति में उसकी भाषा बोलती है। एक चित्रकार या कार्टून-निर्माता अपने चित्रों और कार्टूनों से वह सब कुछ कहने का प्रयत्न करता है जिसे वह दूसरों से कहना चाहता है। नृत्यांगना के थिरकते पाँव और आँख, नाक, भौं, ग्रीवा आदि अंग-प्रत्यंगों का संचालन दर्शकों को उसके नृत्य से जुड़े हुए भावों को प्रेषित करने में मदद करता है परंतु, इन सभी प्रतीकों या संकेतों की, जिनके माध्यम से विचार या भाव संप्रेषण का कार्य किया जाता है, अपनी-अपनी सीमाएँ होती हैं। यह आवश्यक नहीं कि मूर्तिकार, चित्रकार, व्यंग्यकार या नृत्यकार जिन भावों या विचारों को संप्रेषित करना चाहते हैं उन्हें दूसरों के द्वारा उसी रूप में समझा या ग्रहण कर लिया जाए। वैसे तो गूँगों की भी अपनी भाषा होती है जिसे वे विभिन्न संकेतों के माध्यम से दूसरों तक संप्रेषित करना चाहते हैं, परंतु इन संकेतों के माध्यम से चाहे उनकी प्रस्तुति चित्रात्मक हो या क्रियात्मक, इस बात की भली-भाँति गारंटी नहीं दी जा सकती कि जो कुछ भी इस रूप में भाव और विचार-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रकाशन के लिए किया जा रहा है उसे देखकर दूसरा भी वही समझे जिसे प्रेषक प्रेषित कर रहा होता है।

"गूँगे की बात गूँगा ही जाने या उसके घरवाले।" यह बात इसलिए कही जाती है कि गूँगे के द्वारा प्रतीकों एवं संकेतों की भाषा का क्षेत्र बहुत ही सीमित होता है। इन संकेतों से जो भली-भाँति परिचित होता है वह ही इनका अर्थ समझकर गूँगे द्वारा व्यक्त विचार और भाव-प्रकाशन को ठीक तरह ग्रहण कर सकता है, कोई अन्य नहीं। इस प्रकार मात्र संकेतात्मक अभिव्यक्ति को ही अगर भाषा मान लिया जाए तो इस दृष्टि से पशु-पक्षियों और यहाँ तक कि पेड़-पौधों की भी अपनी एक भाषा होनी चाहिए जो वह अपने दुख-सुख, हर्ष-कष्ट, राग-विराग आदि अंतरभावों के प्रकाशन के लिए काम में लाते हैं। परंतु क्या हम वह कुछ समझ सकते हैं जिसे वे हम तक प्रेषित करना चाहते हैं ? कदापि नहीं।

स्पष्ट है, अंगसंचालन क्रियात्मक तथा चित्रात्मक आदि सांकेतिक अभिव्यक्ति द्वारा जो भाव और विचार-प्रकाशन किया जाता है वह उतना सशक्त, सटीक और यथार्थ नहीं बन पाता जितना कि ध्वन्यात्मक संकेतों के माध्यम से हो सकता है। इस तरह विचारों और भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए ध्वन्यत्मक प्रतीकों या संकेतों का प्रयोग काफी प्रभावपूर्ण कदम माना जा सकता है। इन ध्वन्यात्मक संकेतों को भी अगर किसी भी तरह सर्वमान्य और प्रामाणिक बना लिया जाए तो इससे भावों और विचारों का संप्रेषण करनेवाले और ग्रहण करनेवाले दोनों को ही पर्याप्त सहायता मिल सकती है। जो कुछ कहा जाए उसे उसी रूप में अधिकतर लोगों द्वारा समझा जाए, इसी प्रकार के सामाजिक मान्यताप्राप्त ध्वनि-संकेतों के समूह का नाम ही भाषा है। **इस प्रकार भाषा को व्यक्तिगत विचारों एवं भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए प्रयुक्त किए जाने वाले सामाजिक मान्यताप्राप्त ध्वनि-संकेतों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।**

भाषा की उपर्युक्त परिभाषा का उपयुक्त विश्लेषण करके देखा जाए तो भाव और विचार-प्रकाशन के लिए प्रयुक्त संकेतात्मक अभिव्यक्ति न केवल ध्वनि-संकेतों के रूप में सिमट जाती है, वरन् उस पर यह अंकुश भी लग जाता है कि वह समाज के द्वारा यथेष्ट रूप से मान्यताप्राप्त होनी चाहिए। यह एक प्रकार से समाज के सदस्यों द्वारा अपने विचारों और भावों का उपयुक्त आदान-प्रदान करने के लिए किए जाने वाला एक समझौता ही है जिसमें यह निश्चित कर लिया जाता है कि किस प्रकार के भावों और विचारों का प्रकाशन किया जाएगा। समय और स्थान के साथ इस समझौते और परिणामस्वरूप प्रयुक्त किए जाने वाले ध्वनि-संकेतों के रूप में परिवर्तन आता रहता है। इस तरह विभिन्न समाजों में काल-क्रम और स्थान विशेष की दृष्टि से ध्वनि-संकेतों की अपनी-अपनी जगह में मान्यताप्राप्त अलग-अलग भाषाएँ होती हैं।

कहावत है कि "चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर बानी," और इस दृष्टि से बोलचाल के रूप में प्रयुक्त वाणी अथवा भाषा का स्वरूप थोड़ी-थोड़ी दूर पर बसनेवाले सामाजिक समूहों में अलग-अलग हो सकता है। प्रश्न उठता है कि इस प्रकार समाज द्वारा प्रयुक्त बोलचाल की भाषा या वाणी को सही अर्थों में 'भाषा' का दर्जा दिया जाए या नहीं। विशुद्ध अर्थों में भाषा के इस रूप को जिसे आम बोलचाल में प्रयुक्त किया जाता है, भाषा का नाम न देकर 'बोली' कहना ही ज्यादा उपयुक्त रहता है। इस अर्थ में ब्रज, अवधी, बुंदेलखंडी, भोजपुरी, हरियाणवी, बाँगरू, छत्तीसगढ़ी, मैथिली, मेवाती आदि को बोली का नाम देना ही ठीक जँचता है। भाषा के रूप में प्रतिष्ठित होने के लिए सामाजिक मान्यताप्राप्त ध्वनि-संकेतों के समूह का क्षेत्र कुछ अधिक विस्तृत होना चाहिए। उसमें कई बोलियाँ तथा विभाषाएँ शामिल होनी चाहिए तथा उसे समाज के एक बड़े वर्ग तथा क्षेत्र द्वारा बोला, लिखा, पढ़ा, समझा जाना चाहिए। इस अर्थ में खड़ी बोली को, जो भारत के एक बड़े क्षेत्र में भाव और विचार-संप्रेषण हेतु

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
उच्चरित अथवा लिपिबद्ध रूप में काम में लाई जाती है, सही अर्थों में भाषा का नाम दिया जा सकता है।

इस प्रकार तकनीकी दृष्टि से संकेतात्मक रूप में उच्चरित और लिपिबद्ध उस ध्वनि-समूह को भाषा की संज्ञा दी जा सकती है जिसमें कई बोलियाँ और क्षेत्रीय विभाषाएँ शामिल हों, जो अपेक्षाकृत एक बड़े क्षेत्र में रहनेवाले व्यक्तियों द्वारा बोली, लिखी, पढ़ी तथा समझी जाए और जिसका रूप अपेक्षाकृत अधिक शिष्ट और ग्रहण करने योग्य हो।

भाषा की प्रकृति (Nature of the Language)

भाषा क्या है ? इसे किस रूप में परिभाषित किया जा सकता है ? यह जानने के पश्चात यह प्रश्न उठता है कि भाषा की वास्तविक प्रकृति क्या है ? उसके स्वरूप के बारे में क्या कुछ कहा जा सकता है ? इस संदर्भ में संक्षिप्त रूप से निम्न बातें कही जा सकती हैं :

1. भाषा अभिव्यक्ति का एक सांकेतिक साधन है (Language is the symbolic means of expression)—विचारों और भावों के प्रकाशन हेतु भाषा को एक सांकेतिक साधन के रूप में काम में लाया जाता है। भाषा के रूप में प्रयुक्त संकेतों द्वारा समाज के सदस्यों द्वारा आपसी विचार-विनिमय और भाव-प्रकाशन में उपयुक्त सहायता प्रदान करने का कार्य किया जाता है।

2. भाषा में समाज द्वारा स्वीकृत ध्वन्यात्मक संकेतों का प्रयोग होता है (Language makes use of the socially accepted sound patterns)—भाषा का स्वरूप चित्रात्मक और आंगिक आदि क्रियात्मक अभिव्यक्ति तक ही सीमित नहीं रहता। इसमें सार्थक ध्वन्यात्मक संकेतों का प्रयोग अनिवार्य होता है। इन संकेतों की सार्थकता इस बात पर निर्भर करती है कि इसे जिस समाज में प्रयुक्त किया जा रहा है उसकी मान्यता प्राप्त हो। समाज के सदस्यों द्वारा इसके मौखिक तथा लिखित रूप को आपस में अच्छी तरह बोला, लिखा, पढ़ा तथा समझा जा सकता हो।

3. भाषा का विचारों से गहरा संबंध है (Language and thoughts are closely related)—भाषा विचारों की जननी है और विचारों का सही संप्रेषण भाषा के माध्यम से ही हो सकता है। अत: भाषा और विचारों का आपस में अटूट संबंध है। इन्हें एक-दूसरे से अलग करके देखा तथा समझा ही नहीं जा सकता। विचार के अभाव में भाषा मूल्यहीन और निरर्थक है। मनुष्य के विचारों तथा भाषा दोनों का ही मूल्य और महत्त्व होता है, इसका कारण उनमें निहित पारस्परिक अंत:निर्भरता ही है। मनुष्य के अलावा शेष प्राणियों में उनकी अपनी भाषा तो होती है परंतु विचारों के अभाव में उसका उतना मूल्य नहीं होता। इस तरह मानव-भाषा की अपनी एक अनूठी विशेषता होती है कि वह विचारशून्य न होकर विचारयुक्त होती है।

4. भाषा पैतृक संपत्ति न होकर अर्जित संपत्ति है (Language is not inherited, it is earned)—भाषा वंशानुक्रम (Heridity) की देन नहीं कही जा सकती बल्कि इसे बच्चा शुरू से ही अपने प्राप्त वातावरण में से सीखने का प्रयत्न करता है। यह उसकी वह अर्जित संपत्ति है जिसे वह अपने स्वयं के प्रयासों तथा भाषा को सीख सकने वाली वातावरणजन्य परिस्थितियों से प्राप्त करता है। अगर भाषा वंशानुक्रम की देन या पैतृक संपत्ति के रूप में प्राप्त हो सकती तो हिंदीभाषी माँ-बाप का बच्चा आवश्यक रूप से हिंदी का अच्छा ज्ञाता होता, चाहे उसे दक्षिण के किसी भी ऐसे परिवार या प्रांत में पाला जाता जहाँ हिंदी को प्रयोग में नहीं लाया जाता। उसी तरह फ्रेंच माँ-बाप का बच्चा हिंदुस्तान में हिंदीभाषी लोगों के बीच रहकर भी फ्रेंच का अच्छा ज्ञाता होता। परंतु हम देखते हैं कि ऐसी बात नहीं है, बल्कि स्थिति इसके विपरीत ही होती है। विदेशों में बसनेवाले भारतीयों के बच्चे उसी देश की भाषा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अच्छी तरह जानते हैं, हिंदी नहीं। पंजाब में बस जाने वाले तमिलभाषी माँ-बाप के बच्चे पंजाबी बहुत अच्छी तरह बोल और समझ सकते हैं जबकि उनके स्वयं के माँ-बाप ऐसा नहीं कर सकते हैं। ऐसा क्यों होता है ? स्पष्ट है कि भाषा पैतृक संपत्ति न होकर अर्जित संपत्ति है।

5. भाषा का अर्जन अनुकरण द्वारा होता है (Language is learned through imitation)—भाषा अनुकरण से सीखी जाती है। अपने प्राप्त वातावरण में बालक जिस प्रकार की भाषा दूसरों को बोलता हुआ सुनता है, लिखता हुआ देखता है, उसे ही अनुकरण द्वारा सीखने का वह प्रयास करता है। रामू नामक भेड़िये बालक का उदाहरण हमारे सामने है। इस बालक को भड़िये की माँद में पाया गया था। किसी भेड़िये द्वारा उठा लिए जाने के कारण इसे शुरू से ही भेड़ियों के बीच रहना पड़ा। भाषा के अनुकरण के लिए इसके सामने भेड़ियों की ही भाषा थी, मनुष्य की नहीं। परिणामस्वरूप जब इस बालक को माँद में से प्राप्त किया गया तो वह मनुष्यों की तरह कोई भी भाषा नहीं बोल सकता था बल्कि भेड़ियों की तरह गुर्राना या आवाज करना ही वह सीख पाया था। अनुकरण के द्वारा बालक अपने परिवेश में रहनेवाले व्यक्तियों द्वारा प्रयोग की जानेवाली भाषा को अच्छी तरह उसी रूप में सीख लेता है जिस रूप में (शुद्ध या अशुद्ध) उसका प्रयोग उन व्यक्तियों द्वारा किया जाता है।

6. भाषा का संबंध परंपरा से होता है (Language is linked with tradition)—भाषा परंपरागत होती है। यह सदियों से पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही होती है। हम इसका अर्जन करते हैं। हम और हमारी वर्तमान पीढ़ी इसके रूप में थोड़ा-बहुत परिवर्तन भी लाती है। अत: इसमें थोड़ा-बहुत परिमार्जन और परिवर्तन करने का माध्यम तो हम बन सकते हैं, इसमें आमूल-चूल परिवर्तन करने या पहले से चली आ रही भाषा के स्थान पर बिल्कुल नई भाषा का सृजन करने का कार्य एक साथ नहीं कर सकते। इस तरह भाषा का संबंध परंपरा से होता है। वह समाज की देन है। व्यक्ति तो परंपरा से चली आ रही भाषा को अनुकरण द्वारा ग्रहण करता है। जो कुछ भी थोड़ा-बहुत परिवर्तन भाषा के स्वरूप में लाया जाता है वह समाज के द्वारा ही लाया जाता है और परंपरा द्वारा इसे आगे की पीढ़ियों को सौंपा जाता है।

7. भाषा गतिशील और परिवर्तनशील होती है (Language is dynamic and changable)—भाषा जड़ और स्थिर नहीं बल्कि चेतन और गतिशील है। जब से भाषा का उद्गम हुआ है, बहती हुई नदी की तरह इसकी प्रवाहशीलता में कोई अंतर नहीं आया है। आज भाषा का जो स्वरूप है वह पहले नहीं था और आनेवाले समय में ऐसा भी नहीं रहेगा। उदाहरण के लिए आज जिस हिंदी का हम प्रयोग कर रहे हैं वह 40-50 वर्ष पूर्व की हिंदी से भिन्न है और इस रूप में भी शनै:-शनै: परिवर्तन आ रहा है। परिवर्तन जीवन का शाश्वत नियम है और कोई भी भाषा इस नियम से अछूती नहीं रहती। भाषा का कोई अंतिम स्वरूप नहीं होता, उसमें देश, काल और परिस्थितियों के हिसाब से परिवर्तन आते ही रहते हैं।

8. प्रत्येक भाषा की अपनी भौगोलिक सीमा होती है (Every language limits itself into specific geographical boundaries)—हर भाषा का अपना क्षेत्र होता है तथा भौगोलिक सीमाएँ होती हैं जिनके भीतर ही उसे अच्छी तरह बोला, लिखा, पढ़ा तथा समझा जाता है। उस क्षेत्र या सीमा से बाहर निकलते ही उसके स्वरूप में थोड़ा-बहुत परिवर्तन आना शुरू हो जाता है अथवा उससे पूर्णतया भिन्न किसी अन्य भाषा की सीमाएँ और क्षेत्र शुरू हो जाता है।

9. प्रत्येक भाषा की अपनी अलग से एक संरचना होती है (Every language has its own unique structure)—हर भाषा का अपना अलग से एक निश्चित स्वरूप और संरचना होती है जो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसमें निहित ध्वनियों, शब्दों, वाक्य-रचनाओं तथा संबंधित अर्थों में स्पष्ट रूप से झलकता है। कोई भी दो भाषाएँ अगर वे अलग-अलग भाषाएँ हैं, सरंचना अथवा ढाँचे की दृष्टि से कभी भी एक जैसी नहीं हो सकतीं और यही बात उनको एक-दूसरे से अलग करती है।

10. भाषा में विभिन्नता और अनेकरूपता होती है (Language has many variety and forms)—भाषा अनुकरण से सीखी जाती है और अनुकरण में पूर्णता की आशा करना व्यर्थ है। व्यक्तियों के शारीरिक, मानसिक तथा संवेगात्मक अंतरों के कारण उनके भाषा सीखने और उसे व्यवहार में लाने के ढंगों में भी अंतर आ जाता है और इस तरह वह जो भाषा व्यवहार में लाते हैं उसका स्वरूप अन्य के द्वारा व्यवहार में लाई गई भाषा से थोड़ा-बहुत भिन्न अवश्य होता है। उनके संपर्क में आकर जो भी उनका अनुकरण कर भाषा सीखता है उसकी भाषा इस तरह दूसरों का अनुकरण कर सीखने वाले व्यक्तियों से स्वाभाविक रूप से भिन्न होती है। शनैः-शनैः इस तरह की भिन्नता भाषा के कई रूपों को जन्म देने का कारण बन सकती है। आज हिंदी भाषा के जो रूप उसकी विभाषाओं और बोलियों में हमें दृष्टिगोचर हो रहे हैं वह सभी इसी बात के परिणाम हैं।

11. भाषा संस्कृति और सभ्यता से जुड़ी रहती है (Lauguage is related with culture and civilization)—भाषा का अपने प्रयोग करनेवाले व्यक्तियों तथा समाज की सभ्यता और संस्कृति से अटूट संबंध रहता है। भाषा के द्वारा ही समाज के सदस्य आपस में विचारों और भावनाओं का आदान-प्रदान करते हैं। उनके समस्त आचरण और व्यवहार को भाषा ही वहन करती है तथा उसे समाज का आचरण और व्यवहार बनाती है। अतः किसी भी समाज की सभ्यता और संस्कृति की झलक उसकी भाषा में मिल जाती है। हरियाणवी जहाँ हरियाणा प्रदेश की संस्कृति और सभ्यता तथा वहाँ के रहने वालों के व्यवहार और व्यक्तित्व को मुखरित करती है वहाँ लखनवी लखनऊ में रहनेवाले व्यक्तियों के व्यवहार का लखनवी अंदाज में बयान करती हुई नजर आती है। भाषा, आम बोलचाल तथा साहित्य के रूप में जहाँ समाज और संस्कृति को उजागर करती हुई दिखाई देती है, वहाँ सभ्यता और संस्कृति में जो कुछ भी उपस्थित रहता है उसको ध्यान में रखते हुए अपने स्वभाव और स्वरूप को उसी के अनुरूप ढालने का भी प्रयत्न करती हुई दिखाई देती है।

12. भाषा कठिनता से सरलता की ओर जाती है (Language proceeds from complex to simple)—मनुष्य का यह जन्मजात स्वभाव है कि वह कठिनाईपूर्ण रास्ते को छोड़कर सरल पथ से ही आगे बढ़ना चाहता है। कम-से-कम प्रयास से ही वह अपना काम चलाना चाहता है। उसके इस स्वभाव के वशीभूत उसके द्वारा प्रयुक्त भाषा में भी परिवर्तन आते रहते हैं। वह जलधारा की तरह ऊँचाई (कठिनता) से नीचाई (सरलता) की ओर प्रवाहित होने लगती है। 'प्रसाद' से 'परसाद' तथा 'पस्साद' और 'वीरेंद्र' का 'वीरेंद्रर' तथा 'बीरू' बन जाना इसी कम-से-कम प्रयास और सरलता की ओर बहने का परिणाम कहा जा सकता है।

13. भाषा संश्लेषणात्मकता से विश्लेषणात्मकता की ओर जाती है (Language proceeds from synthesis to analysis)—भाषा संश्लेषणात्मकता या संयोगावस्था से विश्लेषणात्मकता अथवा वियोगावस्था की ओर यात्रा करती हुई दिखाई पड़ती है। जुड़े हुए शब्दों, अक्षरों और वाक्यों के स्थान पर इनके अलग-अलग रूपों का प्रचलन होने लगता है। उदाहरण के लिए संस्कृत भाषा में 'बालकः पुस्तकम् पठति' के उपयोग के स्थान पर अब हिंदी में 'बालक पुस्तक को पढ़ता है' कहा जाता है। 'पुस्तकम्' के संयुक्त रूप के स्थान पर अब 'पुस्तक को' तथा 'पठति' के संयुक्त रूप के स्थान पर 'पढ़ता है' जैसे वियुक्त रूपों का प्रयोग करना पड़ता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भाषा के विभिन्न रूप (Different Forms of the Language)

भाषा हमें उसके विविध रूपों में देखने को मिलती है। इन रूपों का विभाजन मोटे तौर पर कई ढंग से किया जाता है।

(A) सर्वप्रथम अगर हम भाषा को प्रयोग में लाने की दृष्टि से विचार करें तो हर भाषा के दो रूप दिखाई देते हैं : (i) उच्चरित रूप (Pronounced Form) तथा (ii) लिखित या लिपि रूप (Written Form)। भाषा के उच्चरित रूप का प्रयोग हम अपनी बोलचाल की भाषा में हर समय करते ही रहते हैं। चूँकि इसका प्रयोग मौखिक रूप से विचार-विनिमय के लिए किया जाता है अत: इसे मौखिक भाषा भी कहा जाता है।

भाषा के लिखित रूप का प्रयोग हम उस समय करते हैं जबकि हम अपने मौखिक विचारों को किसी भी लिपि में लिखकर दूसरों तक पहुँचाना चाहते हैं। भाषा का यह रूप मौखिक रूप से अधिक स्थायी माना जाता है। भाषा की उत्पत्ति और विकास की दृष्टि से भी यह भाषा का उन्नत रूप माना जाता है क्योंकि भाषा पहले उच्चरित रूप में ही अवतरित होती है और फिर बाद में उसकी लिपि का आविष्कार होता है। जब हम अपने विचार और संदेश दूर-दूर बैठे व्यक्तियों तक पहुँचाना चाहते हैं अथवा आनेवाले समय में लोगों को अपने विचारों से परिचित कराना चाहते हैं तो हमें भाषा के लिखित रूप का ही सहारा लेना होता है। साहित्य का सृजन, उन्नयन और आगे आनेवाली पीढ़ियों में इसका हस्तांतरण भाषा के इसी रूप में अच्छी तरह हो सकता है।

(B) किसी भी समाज, प्रदेश, देश तथा विश्व में भाषा के कितने प्रचलित रूपों के दर्शन हो सकते हैं, इस दृष्टि से विचार किया जाए तो हमें भाषा के निम्न मुख्य रूप देखने को मिल सकते हैं।

1. मातृभाषा (Mother tongue)—माता बच्चे के साथ जिस भाषा में बातचीत करती है और बालक अपनी माता तथा परिवार के अन्य व्यक्तियों का अनुकरण कर जिस भाषा को सीखता है उसे ही प्राय: मातृभाषा कहा जाता है। परंतु मातृभाषा का यह संकुचित अर्थ है। इस अर्थ में तो अगर एक पंजाबी भाषी परिवार उत्तर प्रदेश में रह रहा हो ओर माँ-बाप के पंजाबी में वार्तालाप करने के कारण बालक शुरू से ही पंजाबी सीख जाता हो तो इसका यह अर्थ नहीं हो जाता कि बालक की मातृभाषा पंजाबी है। यह उसी अवस्था में संभव है जबकि वह परिवार बहुत ही अस्थायी रूप से उत्तर प्रदेश में रह रहा हो और उसे पुन: पंजाब या किसी अन्य प्रांत में जाना हो। वास्तविक स्थिति में तो बालक उस भाषा का भी सहज रूप से अनुकरण करेगा जो उसके संपर्क में आनेवाले व्यक्तियों द्वारा बोली जाती है और इस तरह से किसी क्षेत्र, प्रांत, प्रदेश में बोली जानेवाली भाषा, जिसे बालक अपने परिवार के बाहर के सामाजिक वातावरण में से अनुकरण द्वारा ग्रहण करेगा, मातृभाषा की पदवी को सुशोभित करेगी। परंतु भाषा के रूप में, प्रतिष्ठित होने के लिए उसके मौखिक तथा लिखित दोनों रूपों में प्रचलन आवश्यक है। दूसरे शब्दों में, विस्तृत अर्थ में मातृभाषा किसी क्षेत्र-विशेष की उस भाषा को कहा जाता है जिसमें उस क्षेत्र के रहनेवाले सभी व्यक्ति मौखिक तथा लिखित रूप से अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। इस दृष्टि से भोजपुरी, ब्रज, अवधी तथा हरियाणवी को बोली का दर्जा तो दिया जा सकता है, मातृभाषा का नहीं। इनके मौखिक रूप का ही अधिक प्रचलन है लिखित का नहीं और इस दृष्टि से हरियाणा में रहनेवाले व्यक्तियों की बोली तो हरियाणवी हो सकती है परंतु उनकी मातृभाषा हरियाणवी न मानकर हिंदी ही मानी जाएगी।

2. मूल भाषा (Original or Root Language)—संसार की सभी भाषाएँ किसी-न-किसी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
भाषा-परिवार की अंग हैं। जो भाषा किसी भी भाषा-परिवार की जन्मदायिनी या उत्पत्ति का स्रोत मानी जाती है उसे उस परिवार की सभी भाषाओं की मूल भाषा कहा जाता है। उदाहरण के लिए उत्तर भारत में प्रचलित सभी आर्य भाषाओं की मूल भाषा वैदिक संस्कृत मानी जाती है जबकि अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, स्पेनिश आदि यूरोपीय भाषाओं की मूल भाषाएँ ग्रीक तथा लैटिन मानी जाती हैं।

3. बोली (Dialect)—'बोली' अंग्रेजी डाइलेक्ट शब्द का हिंदी अनुवाद है। यह भाषा का वह रूप है जो एक सीमित क्षेत्र में रहनेवाले व्यक्तियों के द्वारा मौखिक रूप में प्रयुक्त किया जाता है। विशुद्ध दृष्टि से किसी बोली को भाषा के पूर्ण रूप का दर्जा नहीं दिया जा सकता। दूसरे शब्दों में, 'बोली' से तात्पर्य किसी भाषा के ऐसे सीमित क्षेत्रीय रूप से है जिसे उस क्षेत्र के अंदर रहनेवाले व्यक्तियों के द्वारा बोला जाता है। इन व्यक्तियों का लगभग एक जैसा उच्चारण और एक जैसा शब्दकोश होता है। प्रसिद्ध भाषाविद भोलानाथ तिवारी के शब्दों में , ''एक भाषा के अंतर्गत जब कई अलग-अलग रूप विकसित हो जाते हैं तो उन्हें, 'बोली' कहते हैं।''

एक भाषा क्षेत्र के अंतर्गत इस प्रकार अलग-अलग बोलियाँ हो सकती हैं। उदाहरण के लिए खड़ी बोली, ब्रज, अवधी, मैथिली, भोजपुरी, बुंदेली आदि को हिंदी भाषा की बोलियों के नाम से जाना जा सकता है। अधिक विकसित होने पर कोई भी बोली स्वतंत्र रूप से भाषा दर्जा भी ग्रहण कर लेती है। पंजाबी के साथ यही हुआ है जो एक 'बोली' से भाषा का दर्जा प्राप्त कर चुकी है।

4. प्रादेशिक भाषा (Regional language)—किसी प्रदेश-विशेष में प्रयुक्त होनेवाली भाषा को प्रादेशिक भाषा का दर्जा दिया जाता है। कश्मीर घाटी के एक बड़े क्षेत्र में कश्मीरी भाषा का प्रयोग होता है अत: यह उस क्षेत्र की प्रादेशिक भाषा कही जाएगी। इसी तरह से पंजाब प्रांत में प्रयुक्त होनेवाली पंजाबी भाषा को उस प्रदेश की प्रादेशिक भाष कहा जाएगा। इसी तरह उत्तर भारत के एक बड़े क्षेत्र, में प्रयुक्त होनेवाली हिंदी भाषा को इस बड़े भू-भाग तथा क्षेत्र जिसमें उत्तर प्रदेश, राजस्थान, बिहार, मध्यप्रदेश, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश तथा केंद्रशासित प्रदेश दिल्ली, चंडीगढ़ आदि शामिल हैं, की प्रादेशिक भाषा कहा जा सकता है। स्पष्ट है कि एक प्रादेशिक भाषा में कई प्रकार की बोलियाँ शामिल हो सकती हैं जैसे पंजाबी भाषा में 'डोगरी', 'मुल्तानी' तथा हिंदी में राजस्थानी, भोजपुरी, बुंदेली, ब्रज, अवधी, मैथिली, हरियाणवी, पहाड़ी, खड़ी बोली आदि। दूसरे, प्रादेशिक भाषा अधिकतर उस प्रदेश में बसनेवाले व्यक्तियों की मातृभाषा ही होती है जैसे पंजाब क्षेत्र में रहनेवाले बहुत-से व्यक्तियों के लिए पंजाबी प्रादेशिक भाषा होने के साथ-साथ मातृभाषा भी है। परंतु यह नियम शाश्वत नहीं है। फाजिलका, अबोहर तथा अन्य ऐसे प्रदेश भी पंजाबी भाषा क्षेत्र में आते हैं जिनके बहुत-से निवासियों की मातृभाषा पंजाबी न होकर हिंदी है। इसी तरह आंध्र प्रदेश की प्रादेशिक भाषा यद्यपि तेलुगु है परंतु उसके अंतर्गत रहनेवाले बहुत-से लोगों की मातृभाषा उर्दू है।

5. राजभाषा (State Official Language)—किसी प्रांत में सरकारी कामकाज चलाने के लिए वैधानिक रूप से जिस भाषा का प्रयोग किया जाता है उसे उस प्रांत या प्रदेश विशेष की राजभाषा कहा जाता है। हमारे देश के विभिन्न प्रांतों में इस प्रकार से अलग-अलग भाषाओं को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। आंध्र प्रदेश की राजभाषा तेलुगु है, तमिलनाडु की राजभाषा तमिल, कर्नाटक की कन्नड़, उड़ीसा की उड़िया तथा बंगाल की बंगाली है। यह सब इस वजह से है कि हमारा राष्ट्र एक बहुभाषी राष्ट्र है। संसार के सभी देशों में ऐसा नहीं है। वहाँ प्राय: मातृभाषा, प्रादेशिक भाषा, राजभाषा तथा राष्ट्रभाषा में कोई अंतर नहीं होता। परंतु हमारे यहाँ इस प्रकार का व्यापक अंतर विद्यमान है।

6. आदर्श या परिनिष्ठित भाषा (Standard Language)—किसी एक क्षेत्र की भाषा में कई

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बोलियाँ का समावेश होता है। जैसे हिंदी भाषा की ब्रज, अवधी, मैथिली, भोजपुरी, खड़ी बोली आदि कई बोलियाँ हैं। अपनी लोकप्रियता और बहुप्रचलितता के फलस्वरूप जब कोई एक बोली आदर्श मान ली जाती है तो पूरे क्षेत्र में बोलने, लिखने-पढ़ने आदि के लिए उसी के रूप को आदर्श मानकर चला जाता है। साहित्य क्षेत्र में भी भाषा के इसी रूप को आदर्श मानकर प्रयुक्त किया जाता है। उदाहरण के लिए 'खड़ी बोली' को आदर्श मानकर आज हिंदी भाषा क्षेत्र में प्रयोग में लाया जाता है और इसी को साहित्य के क्षेत्र में मान्यता प्राप्त है। व्याकरण रचना, काव्य आदि में भाषा के इसी रूप को 'हिंदी' भाषा का आदर्श रूप मानकर चला जाता है।

7. अपभाषा (Slang)—भोलानाथ तिवारी के शब्दों में, ''अपभाषा भाषा का वह रूप है जिसे परिनिष्ठित एवं शिष्ट भाषा की तुलना में विकृत या अपभ्रष्ट समझा जाता है। यह एक तरह से आदर्श भाषा का बिगड़ा हुआ रूप है जिसे अपेक्षाकृत कम पढ़े-लिखे, अशिक्षित, पिछड़े हुए विशेष तबके के व्यक्तियों द्वारा प्रयोग में लाया जाता है। अश्लील, गँवारू, अपभ्रष्ट, अगृहीत और अशिष्ट भाषा का प्रयोग भाषा के इसी रूप में आता है।

8. सांस्कृतिक भाषा (Cultural Language)—किसी जाति, समाज या राष्ट्र की सांस्कृतिक धरोहर जिस भाषा में सुरक्षित रहती है उस भाषा को उसकी सांस्कृतिक भाषा का दर्जा दिया जाता है। अपनी संस्कृति से भली-भाँति परिचित होने के लिए इस भाषा का ज्ञान बहुत आवश्यक है। उदाहरण के लिए संस्कृत भारत की सांस्कृतिक भाषा है। हमारे सभी प्राचीन ग्रंथ इसी भाषा में उपलब्ध हैं। अगर हम अपनी संस्कृति के गौरवपूर्ण इतिहास और ज्ञान-विज्ञान की जानकारी चाहते हैं तो हमें अध्ययन के लिए संस्कृत भाषा का ज्ञान आवश्यक है। विदेशियों ने इस तथ्य को अच्छी तरह जानकर ही हमारे दुर्लभ ग्रंथों का संस्कृत भाषा सीखकर भली-भाँति अध्ययन किया और इस तरह ज्ञान-विज्ञान की बहुत सारी हमारी धरोहर में से बहुत-सी अमूल्य जानकारी एकत्रित करने का प्रयत्न किया। ज्योतिष, खगोल विद्या, नक्षत्रशास्त्र, भू-विज्ञान, रसायन शास्त्र, औषधि-विज्ञान आदि के हमारे पुराने ज्ञान-विज्ञान से लाभ उठाने में इस तरह उन्होंने हमारी सांस्कृतिक भाषा संस्कृत के अध्ययन द्वारा ही सफलता प्राप्त की। दुर्भाग्य से हमने अपनी सांस्कृतिक भाषा के अध्ययन की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया जबकि यूरोपीय देशों में अब तक अपनी सांस्कृतिक भाषाओं, ग्रीक तथा लैटिन आदि पर पूरा-पूरा जोर दिया जाता रहा है।

9. राष्ट्रभाषा (National Language)—प्रत्येक प्रभुसत्तासंपन्न राष्ट्र की जहाँ अपनी एक निश्चित भौगोलिक सीमाएँ होती हैं, लिखित संविधान होता है, एक राष्ट्रीय चिह्न तथा झंडा होता है वहाँ उसकी संपूर्ण राष्ट्र के लिए मान्य और बहु-प्रचलित भाषा भी होती है जिसे राष्ट्रभाषा का नाम दिया जाता है। राष्ट्र विशेष का सारा शासन-कार्य इसी भाषा में चलाया जाता है। राष्ट्र की भावात्मक एकता के लिए यही भाषा एक सशक्त कड़ी का कार्य भी करती है। राष्ट्र के अधिकतर व्यक्तियों की यह मातृभाषा अथवा प्रादेशिक भाषा होती है। हमारे देश के संविधान में हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा होने का गौरव प्रदान किया गया है। भारत के अधिकांश प्रांतों की यह प्रादेशिक राजभाषा तथा मातृभाषा है तथा अन्य प्रांतों में भी इसे सुविधापूर्वक बोला, लिखा, पढ़ा तथा समझा जाता है; परंतु दुर्भाग्य की बात है कि संविधान-निर्माण के इतने वर्षों बाद भी इसे पूर्ण रूप से राष्ट्रभाषा का सम्मान प्राप्त नहीं हो सका है तथा राजनैतिक और क्षेत्रीय स्वार्थों ने अभी भी राष्ट्रीय भाषा तथा सरकारी भाषा के रूप में अंग्रेजी को प्रतिष्ठित किया हुआ है।

10. अंतर्राष्ट्रीय भाषा (International Language)—जब किसी देश-विशेष की राष्ट्रभाषा इतनी लोकप्रिय और बहु-प्रचलित हो जाए कि विश्व के सभी राष्ट्र विचारों एवं भावों के पारस्परिक

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
विनिमय के लिए उसका प्रयोग करने लगें तब उसे अंतर्राष्ट्रीय भाषा होने का गौरव प्राप्त हो जाता है। आज संपूर्ण विश्व में अंग्रेजी भाषा को ही इस प्रकार की अंतर्राष्ट्रीय भाषा होने का गौरव अच्छी तरह प्राप्त है। विश्व के अधिकांश देशों की यह राष्ट्रीय और मातृभाषा भी है तथा इसे विश्व के अधिकांश देशों के निवासियों द्वारा अच्छी तरह बोला, लिखा, पढ़ा तथा समझा जाता है।

11. विदेशी भाषा (Foreign Language)—किसी देश में पढ़ी और समझी जानेवाली किसी दूसरे देश की भाषा, जो उस देश की मूल भाषा, सांस्कृतिक भाषा, मातृभाषा या राष्ट्रभाषा नहीं होती, उस देश के लिए विदेशी भाषा कहलाती है। इस रूप में हमारे लिए जर्मन, फ्रेंच, चीनी, रूसी, जापानी आदि सभी भाषाएँ विदेशी भाषाएँ हैं। वैसे तो अंग्रेजी भी हमारे लिए विदेशी भाषा ही है, जिसे अंग्रजों के शासन ने हमारे ऊपर लाद दिया था और जिसका बोझ आज तक हम इसलिए उठाते आ रहे हैं क्योंकि भारत के कुछ प्रांतों, विशेषकर, दक्षिण में हिंदी का राष्ट्रभाषा के रूप में विरोध के कारण केंद्रीय सरकार उसे द्वितीय राष्ट्रभाषा के पद से नहीं हटा सकी है। इस रूप में फारसी भाषा भी विदेशी भाषा ही है क्योंकि इसका संबंध हमारे देश की किसी मूलभाषा, सांस्कृतिक भाषा अथवा मातृभाषा से नहीं है और यह विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा विदेश से निर्यात की गई भाषा ही है।

भाषा के इन रूपों के संदर्भ में यह कहा सकता है कि भाषा के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को भाषा के इन सभी रूपों से यथा आवश्यक परिचित होना अति आवश्यक है। भाषा के आदर्श रूप को ठीक प्रकार समझकर ग्रहण करने का उनके द्वारा पूरा प्रयत्न होना चाहिए। उनकी शिक्षा तथा आत्माभिव्यक्ति के लिए मातृभाषा के शिक्षण पर प्रारंभ से ही पूरा-पूरा ध्यान दिया जाना चाहिए। राष्ट्रभाषा तथा देश की संपर्क भाषा के रूप में उन्हें हिंदी को सीखने और समझने पर भी ध्यान देना चाहिए तथा अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में अंग्रेजी का ज्ञान भी इसलिए प्राप्त करना चाहिए कि जिससे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उपलब्ध ज्ञान-विज्ञान की खिड़की उनके लिए अच्छी तरह खुली रहे। इसी दृष्टि से उन्हें अन्य उपयुक्त विदेशी भाषाओं का समुचित ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न भी अवश्य करना चाहिए ताकि दूसरे राष्ट्रों के ज्ञान-विज्ञान, विचार तथा भावनाओं से परिचय प्राप्त करने में आसानी हो। परंतु जहाँ तक विद्यालय स्तर पर शिक्षा प्राप्त करने के लिए उपयुक्त माध्यम का प्रश्न है, उसे मातृभाषा ही बनाए रखने में ज्यादा सुविधा और लाभ रहता है, इस बात की अनदेखी करने का प्रयत्न कदापि नहीं किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त देश की कोई एक भाषा राष्ट्रभाषा भी होनी चाहिए जिसके पढ़ने-लिखने और विकास करने में पूरी शक्ति लगा देनी चाहिए। विदेशी भाषा कितनी भी समृद्ध क्यों न हो, विदेशी ही होती है, उसे राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करते रहना कमजोरी या मजबूरी तो हो सकती है, राष्ट्रीय सम्मान और राष्ट्रीय हित की बात नहीं।

अध्ययन के लिए प्रश्न

1. भाषा किसे कहते हैं ? विभिन्न परिभाषाओं के आधार पर स्पष्ट करें।
2. भाषा से आप क्या समझते हैं ? इसकी प्रकृति क्या है ? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
3. भाषा क्या है ? इसके विभिन्न रूपों का विस्तार सहित वर्णन कीजिए।
4. भाषा क्या है ? बोली से यह किस प्रकार भिन्न है ? भाषा की कोई एक उचित परिभाषा विकसित कीजिए।
5. निम्नलिखित पर संक्षिप्त में टीका-टिप्पणी प्रस्तुत कीजिए :

   (i) भाषा गतिशील और परिवर्तनशील होती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

(ii) भाषा अर्जित संपत्ति है।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(iii) भाषा का विचारों से गहरा संबंध है।

(iv) भाषा की अपनी भौगोलिक सीमा होती है।

(v) भाषा ध्वनि-संकेतों की मान्य व्यवस्था है।

6. निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :

(i) भाषा की प्रकृति

(ii) भाषा के विभिन्न रूप

(iii) अंतर्राष्ट्रीय एवं विदेशी भाषा

(iv) राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2

मातृभाषा के रूप में हिंदी-शिक्षण का महत्त्व एवं उद्देश्य

(Importance and Aims of Teaching Hindi as Mother Tongue)

मातृभाषा क्या है ? (What is Mother Tongue ?)

जैसा कि पिछले अध्याय में वर्णन किया जा चुका है, भाषा अभिव्यक्ति एवं विचार-विनिमय का मानव-निर्मित सफल साधन है। यह पैतृक संपत्ति न होकर अर्जित संपत्ति है जिसे बालक अनुकरण एवं प्रयास द्वारा ग्रहण करने की चेष्टा करता है। बालक का अपने जन्म से जिस व्यक्ति के साथ प्रथम घनिष्ठ संपर्क होता है वह उसकी माँ है। अपनी माता से अनुकरण के द्वारा वह जिस भाषा को सीखता है वह और कोई नहीं उसकी मातृभाषा ही होती है। इस तरह शाब्दिक और संकुचित अर्थ में माता अपने बालक से जिस भाषा में बात करती है और बालक अनुकरण द्वारा अपनी माँ से जिस भाषा को सीखता है उसे बालक की मातृभाषा की संज्ञा दी जाती है।

बालक का संपर्क केवल अपनी माता से ही नहीं होता बल्कि पिता और परिवार के अन्य सदस्य भी उससे किसी भाषा में बात करते हैं अथवा परिवार के ये सदस्य आपस में भी किसी-न-किसी भाषा में विचार-विनिमय करते हैं। बालक ध्यान से सब कुछ सुनता है और उनके द्वारा बोली जानेवाली भाषा का अनुकरण करता है। इस तरह वह ज़ब कुछ और बड़ा होता है तो उसके सामाजिक दायरे और परिवेश में परिवार के बाहर मुहल्ला, गाँव, विद्यालय तथा क्षेत्र विशेष का परिवेश भी शामिल हो जाता है। इस परिवेश से संबंधित व्यक्तियों द्वारा जिस भाषा का प्रयोग किया जाता है, बालक अनायास ही अनुकरण द्वारा उस भाषा को सीखने के लिए बाध्य हो जाता है। विस्तृत अर्थों में बालक के सामाजिक परिवेश से संबंधित इस क्षेत्र विशेष में प्रयुक्त (मौखिक तथा लिखित रूप में प्रचलित) भाषा विशेष को ही बालक की मातृभाषा का दर्जा दिया जा सकता है। जैसा कि स्पष्ट किया जा चुका है, अभिव्यक्ति के काम में आनेवाली कोई भाषा पूर्ण रूप से भाषा का दर्जा तभी ग्रहण करती है जबकि उसे मौखिक तथा लिखित रूपों में ही अच्छी तरह प्रयुक्त किया जाता हो। इस दृष्टि से ब्रज, अवधी और हरियाणवी, जिन्हें बालक के माता-पिता, घर परिवार, गाँव या क्षेत्र विशेष में ठीक तरह बोला और समझा जाता है, मातृभाषा का दर्जा न लेकर मात्र बोलियाँ ही कहलाती हैं क्योंकि इन भाषाओं के लिखित रूप का अधिक प्रचलन नहीं है। पत्र-लेखन, व्यावसायिक कार्य, सरकारी काम-काज, साहित्य के पठन और लेखन में भाषाओं के इन रूपों का प्रयोग नहीं होता बल्कि इन सभी क्षेत्रों के निवासी हिंदी को ही पढ़ने, पढ़ाने, लिखने तथा बोलने इत्यादि में व्यवहार में लाते हैं। अतः इन प्रदेशों में रहनेवाले व्यक्तियों की मातृभाषा हिंदी ही मानी जाएगी, सीमित क्षेत्रों में बोली और समझी जानेवाली बोलियाँ नहीं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मातृभाषा के रूप में हिंदी का महत्त्व
(Importance of Hindi as a Mother Tongue)

हिंदी देश के अधिकांश लोगों की मातृभाषा होने के नाते उनकी अपनी निजी भाषा है। अपनी भाषा में विचार-विनिमय करने, शिक्षा ग्रहण करने तथा भाव-प्रकाशन करने का आनंद और प्रतिफल ही कुछ और है। कविवर भारतेंदु हरिश्चंद्र ने इसे निम्न शब्दों में व्यक्त किया है—

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल॥

सचमुच में हृदय के उद्‌गार तो अपनी भाषा में ही प्रकट किए जा सकते हैं और अपनी भाषा में ही अपने विचारों की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति हो सकती है तथा यही भाषा लिखित और मौखिक रूप में बच्चे द्‌वारा अच्छी तरह ग्रहण की जा सकती है। जब तक वह कही हुई या लिखी हुई बात को समझेगा ही नहीं, तब तक ज्ञान-प्राप्ति की आशा करना व्यर्थ ही है और इस तरह बालक की प्रगति और सामाजिक तरक्की का द्‌वार निज भाषा यानी मातृभाषा के भली-भाँति शिक्षण से ही खुल सकता है, किसी बाहरी या विदेशी भाषा द्‌वारा नहीं। माँ के आँचल, और लोरियों से जुड़ी हुई तथा परिवार के सदस्यों के स्नेह से आपूरित इस मातृभाषा का एक व्यक्ति के साथ जन्म से लेकर मृत्यु पर्यंत एक ऐसा शारीरिक और भावात्मक संबंध होता है, जिसका कोई अन्य भाषा चाहे वह कितनी भी विकसित क्यों न हो, मुकाबला नहीं कर सकती। एक पौधे का अपनी भूमि और मिलनेवाले पानी, खाद तथा वातावरण से जो संबंध होता है वही संबंध व्यक्ति का अपनी मातृभाषा से होता है। कोई भी पौधा अपनी निजी भूमि और प्राप्त स्वाभाविक वातावरण में ही अच्छी तरह आरोपित, पल्लवित और सुरभित हो सकता है। उसी प्रकार बालकों के विकास और प्रगति के लिए भी उनकी निजी भाषा चाहिए। बालकों के इस विकास में मातृभाषा के महत्त्व को संक्षेप में निम्न प्रकार लिपिबद्‌ध किया जा सकता है।

1. विचार-विनिमय का प्रमुख साधन है—जिस स्वाभाविकता एवं सहजता से हम मातृभाषा में विचारों का आदान-प्रदान करते हैं, उतना किसी अन्य भाषा में नहीं। विचार और भाषा का अटूट संबंध है। जितना अधिक हम विचारों को प्रकट करते हैं उतने ही नवीन विचार हमारे मन में उठते रहते हैं। हम मातृभाषा के माध्यम से ही इन विचारों को पूर्णता व प्रवाहिकता के साथ प्रकट करते हैं और दूसरों के विचारों के भाव व अर्थ को पूर्णता के साथ ग्रहण करते हैं।

2. स्कूली जीवन की आधारशिला है—बच्चा अपने परिवार से जिस भाषा को ग्रहण करता है, यदि उसी भाषा में उसे स्कूल में भी शिक्षा दी जाती है तो वह उस शिक्षा को आसानी से ग्रहण कर लेता है। वह जिस पूर्णता से सभी विषयों को मातृभाषा के माध्यम से आत्मसात कर लेता है उस पूर्णता से किसी अन्य भाषा में कर ही नहीं सकता। अतः स्कूल के सभी कार्यकलापों में भाग लेने के लिए मातृभाषा ही प्रमुख माध्यम है।

3. ज्ञानार्जन का प्रमुख साधन है—मानव, श्रवण एवं पठन इन क्रियाओं के माध्यम से ही देश-विदेश की सभी तरह की जानकारी प्राप्त करता है। जो शब्द-भंडार उसकी शैशवावस्था से उसके पास धीरे-धीरे बढ़ रहा है यदि उसी शब्द-भंडार के माध्यम से वह किसी विचार को सुनता है या किसी रचना को पढ़ता है तो उस विचार को वह अनायास ही पूरी तरह ग्रहण कर लेता है और ये विचार उसके मस्तिष्क में एकत्रित होते हुए उसके ज्ञान में वृद्‌धि करते हैं। वास्तव में मातृभाषा ही बालक की ज्ञान-वृद्‌धि का प्रमुख साधन है।

4. मानसिक एवं बौद्‌धिक विकास में सहायक—ज्ञान-वृद्‌धि से बुद्‌धि विकसित होती है और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बौद्धिक विकास से मानसिक विकास प्रभावित होता है। मानसिक विकास के लिए विचारशक्ति, तर्कशक्ति, विवेकशक्ति तथा अभिव्यक्ति-कौशल का होना अत्यंत आवश्यक है। जिस व्यक्ति का भाषा पर जितना अधिक अधिकार होगा उसकी विचारशक्ति, तर्कशक्ति एवं अभिव्यक्ति भी उतनी ही अधिक विकसित होगी। सशक्त भाषा विचारशक्ति, तर्कशक्ति एवं अभिव्यक्ति-कौशल को विकसित एवं व्यक्ति को मानसिक प्रबलता प्रदान करती है।

5. शारीरिक विकास में सहायक है—मातृभाषा में स्वाभाविक रूप से की गई विचाराभिव्यक्ति बालक के चित्त को प्रसन्नता प्रदान करती है। चित्त की यह प्रसन्नता शरीर को स्वस्थ रखने में सहायक होती है। यह सत्य है कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है, तो यह भी सत्य है कि मस्तिष्क के स्वस्थ रहने पर ही शरीर भी स्वस्थ रहता है और शारीरिक विकास स्वाभाविक रूप से होता है।

6. भावात्मक विकास में सहायक है—राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था—''मनुष्य के मानसिक विकास के लिए मातृभाषा उतनी ही आवश्यक है जितना शिशु के शारीरिक विकास के लिए माता का दूध।'' शैशवावस्था में बालक माता के दूध के साथ-साथ उसकी वात्सल्यपूर्ण लोरियों के माध्यम से मातृभाषा को ग्रहण करता है तथा अपनी तोतली बोली से परिवार के सभी सदस्यों को प्रसन्न करता है। यह क्रिया बालक को सहज, सुरक्षा, खुशी एवं आत्मसंतुष्टि प्रदान करती है और यही आत्मसंतुष्टि तथा प्रसन्नता बालक में विभिन्न भावात्मक गुणों, जैसे—स्नेह, सहानुभूति, सहृदयता, सेवा, धैर्य एवं त्याग आदि को विकसित करने में सहायक होती है।

7. सांस्कृतिक विकास में सहायक है—अपनी मातृभाषा के साहित्य का अध्ययन कर हम अपने देश की परंपराओं, आदर्शों, मूल्यों एवं रहन-सहन आदि से आसानी से परिचित हो सकते हैं। कहा भी गया है—''मातृभाषा बच्चों को अपने पूर्वजों के विचारों, भावों, रीति-रिवाजों, आदर्शों एवं महत्त्वाकांक्षाओं से परिचित कराने का सशक्त माध्यम है।''

8. सामाजिक विकास में सहायक है—मातृभाषा में विचारों का आदान-प्रदान करके ही बालक समाज में एक-दूसरे को सहयोग प्रदान करता है एवं आपसी संबंधों को विकसित करता है और समाज का उपयोगी सदस्य बनता है।

9. चारित्रिक एवं नैतिक विकास में सहायक है—मातृभाषा के साहित्य का अध्ययन कर तथा मातृभाषा में व्यक्त किए गए विभिन्न रूपकों एवं नाटकों आदि को देखकर बालक विभिन्न नैतिक गुणों से परिचित होता है और उन्हें ग्रहण करने का प्रयास करता है। इस प्रकार मातृभाषा बालक को नैतिक रूप से भी समृद्ध बनाती है।

10. लोकतंत्रात्मक विकास में सहायक है—बालक के लोकतंत्रात्मक विकास से अभिप्राय है कि बच्चे को अपने अधिकार एवं कर्तव्यों का पूर्ण ज्ञान हो, उसमें सामाजिक व राजनीतिक चेतना हो। उसे देश की सामाजिक व राजनीतिक समस्याओं का ज्ञान हो। मातृभाषा के ज्ञान के बिना यह सब जानकारी असंभव है।

11. व्यावहारिक जीवन में सहायक है—व्यावहारिक जीवन में सफल होने के लिए जरूरी है कि बच्चे को अपने से बड़ों, छोटों एवं बराबरवालों के साथ बातचीत करनी आती हो। यह कार्य मातृभाषा में जितनी कुशलता से हो सकता है उतनी कुशलता से किसी अन्य भाषा में नहीं। मातृभाषा बालक को व्यावहारिक कुशलता प्रदान करती है। प्रायः देखा जाता है कि जो व्यक्ति मौखिक एवं लिखित भाषा के प्रयोग में जितना कुशल होता है, व्यावहारिक जीवन में भी उतना ही सफल होता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

12. व्यक्तित्व के संपूर्ण विकास में सहायक है—मातृभाषा व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, चारित्रिक एवं भावात्मक आदि विकास में सहायक होकर व्यक्तित्व को संतुलित रूप से विकसित करती है। एक तरफ तो साहित्य का अध्ययन बालक के ज्ञान में वृद्धि करता है तो दूसरी तरफ मातृभाषा के माध्यम से विचारों का आदान-प्रदान कर वह व्यावहारिक कुशलता प्राप्त करता है जिससे बालक को आत्मतुष्टि व प्रसन्नता का अनुभव होता है, उसमें स्वस्थ भावनाओं का विकास होता है और उसका व्यक्तित्व संतुलित रूप से विकसित होता है।

इस प्रकार से यह स्पष्ट है कि बच्चे की शिक्षा एवं व्यक्तित्व के विकास में मातृभाषा का महत्त्वपूर्ण योगदान है। दुर्भाग्य की बात है कि विदेशी भाषा के मोह में पड़कर हम अपनी भाषा से दूर हो रहे हैं और अपनी सभ्यता एवं संस्कृति से अपरिचित रहकर हीनता से ग्रस्त होते जा रहे हैं। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने इसी तरह मोह को त्यागने के लिए प्रेरित करते हुए कहा था :

''अंग्रेजी पढ़ि के जदपि, सब गुण होत प्रवीण।
पै निज भाषा ज्ञान बिन, रहत हीन के हीन।''

अत: यदि हम चाहते हैं कि हमारे देश के भावी नागरिक आत्मगौरव से पूर्ण हों, उनका व्यक्तित्व पूरी तरह से विकसित हो एवं वे तन, मन, धन, से देश के विकास में हाथ बटाएँ, तो मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा प्रदान करना ही एकमात्र उपाय है और इस दृष्टि से मातृभाषा शिक्षण को सही दिशा प्रदान करने के प्रयत्न सभी ओर से किए जाने चाहिए।

राष्ट्रभाषा के रूप से हिंदी का महत्त्व और स्थान
(Place and Importance of Hindi as a National Language)

हमारा देश एक बहुभाषी देश है जिसमें विभिन्न प्रांतों में और स्थानों पर अलग-अलग भाषाएँ बोली जाती हैं। भाषाएँ बहुत हैं। इनमें से केवल 18 भाषाओं को हमारे संविधान में प्रमुख भाषाएँ मानकर उल्लेख किया गया है। ये प्रमुख भाषाएँ हैं—हिंदी, गुरुमुखी यानी पंजाबी, गुजराती, मराठी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, उड़िया, बंगला, असमी, उर्दू, कश्मीरी, सिंधी, नेपाली, मणिपुरी, कोंकणी, मलयालम और संस्कृत। काफी सोच-विचार के बाद इन भाषाओं में हिंदी को राष्ट्रभाषा का सम्मान देने का निर्णय संविधान के अंतर्गत किया गया परंतु साथ ही यह भी जोड़ दिया गया कि जब तक अहिंदीभाषी प्रांतों में इसे स्वेच्छा से स्वीकार नहीं किया जाए, सरकारी काम-काज के लिए अंग्रेजी का भी द्वितीय राष्ट्रभाषा के रूप में प्रयोग किया जाता रहेगा। संविधान-निर्माताओं तथा तत्कालीन राजनीतिज्ञों द्वारा यहाँ ही एक बड़ी भूल हो गई जिसके दुष्परिणाम के कारण स्वतंत्रता-प्राप्ति के इतने वर्षों पश्चात भी हिंदी को संपूर्ण रूप से राष्ट्रभाषा का क्रियात्मक रूप से स्थान नहीं मिल पाया है। अहिंदी भाषी क्षेत्रों, विशेषकर सुदूर दक्षिणी प्रांतों के हिंदी वैर के कारण तथा राजनैतिक दाँवपेंचों की वजह से हिंदी के लिए अंग्रेजी को हटाकर अपना संपूर्ण अधिकार प्राप्त करने की बात सरकारी तौर से अब दूर की होकर रह गई है। परंतु यदि स्थिति का अवलोकन किया जाए तो हिंदी में अब उन सभी शक्ति, सामर्थ्य और गुणों के दर्शन हो सकते हैं जो एक भाषा को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने के लिए आवश्यक रूप से चाहिए। परिणामस्वरूप राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी का महत्त्व दिनोंदिन बढ़ता ही जा रहा है। इसके मूल में मुख्यतया निम्नलिखित बातें हैं :

—संविधान में वर्णित 18 मुख्य भाषाओं में से हिंदी ही मात्र एक ऐसी भाषा है जिसे संपूर्ण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
भारत की जनभाषा का दर्जा दिया जा सकता है। यह भाषा लगभग संपूर्ण भारत में बोली तथा समझी जाती है।

—हिंदी और भारत की अन्य भाषाओं का शब्द-भंडार बहुत कुछ समान है अत: भारत में रहनेवाले सभी व्यक्तियों के लिए हिंदी सीखना काफी सरल है। यहाँ तक कि दक्षिण की कोई सी एक भाषा को सीखने वाले दक्षिण की किसी दूसरी भाषा को इतनी शीघ्रता और आसानी से नहीं सीख सकते जितना कि वे हिंदी को सीख सकते हैं।

—उत्तर और मध्य भारत के बहुत से प्रांतों एवं क्षेत्रों की यह मातृभाषा है।

—हिंदी भारत की सांस्कृतिक एकता की प्रतीक है। राजनैतिक जागरण का भी स्रोत रही है।

—हिंदी की नागरी लिपि वैज्ञानिक आधार पर काफी श्रेष्ठ है और हिंदी में लिखा साहित्य भी श्रेष्ठता की दृष्टि से संसार की किसी भी भाषा से हीन नहीं है।

—हिंदी को उसी रूप में राजभाषा तथा राष्ट्रभाषा का सम्मान संविधान के अंतर्गत दिया गया है जितना कि राष्ट्रीय चिह्न के रूप में अशोक चक्र, राष्ट्रीय ध्वज के रूप में तिरंगे ध्वज तथा राष्ट्रीय पक्षी के रूप में मोर को दिया हुआ है। यह हमारी राष्ट्रीय एकता तथा भावनात्मक एकता की प्रतीक है। राष्ट्रकवि दिनकर के शब्दों में, ''हिंदी तोड़नेवाली नहीं, जोड़नेवाली भाषा है। हिंदीभाषी प्रांतों में अनेक जनपदीय भाषाएँ हैं, किंतु उनसे एकाकार होकर हिंदी ने सभी हिंदीभाषी प्रांतों को एक सूत्र में बाँध रखा है। यही नहीं हिंदी का एक अदृश्य तार गुजरात से लेकर असम तक सारे उत्तर भारत को एक धागे में बाँधे हुए है।''

—हिंदी को राजभाषा तथा राष्ट्रभाषा के रूप में सरकारी काम-काज करने की भाषा बनाया हुआ है। भारतीय संविधान में स्पष्ट रूप से उल्लेख है कि राज्यों को अपना कार्य क्षेत्रीय भाषा में करने की स्वतंत्रता है परंतु संघ का कार्य राष्ट्रभाषा हिंदी में होगा। परिणामस्वरूप केंद्रीय सरकार का सारा कार्य हिंदी में चलाने की आज पूरी व्यवस्था है। केंद्र से राज्य सरकारों का पत्र-व्यवहार हिंदी में ही होता है। हाँ, आवश्यकतानुसार उसका अंग्रेजी अनुवाद भी प्रेषित किया जा सकता है। केंद्रीय सरकार की सभी नौकरियों के लिए हिंदी का साधारण ज्ञान अपेक्षित बनता जा रहा है और राष्ट्रीय सेवाओं के लिए आयोजित परीक्षाओं में हिंदी को प्रमुख स्थान मिलता जा रहा है तथा अंग्रेजी की अनिवार्यता हटती जा रही है।

—हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में व्यापक मान्यता दिलाने के रूप में प्रयत्न भी सरकार द्वारा किए जा रहे हैं। दक्षिण में हिंदी-विरोध को ध्यान में रखते हुए उत्तरी भारत के प्रांतों में दक्षिण की भाषाओं को सीखने-सिखाने के कार्य को प्रोत्साहित किया जा रहा है। यह विश्वास दिलाने का प्रयत्न किया जा रहा है कि हिंदी का प्रसार किसी भी प्रांतीय भाषा के मूल्य पर नहीं किया जाएगा। प्रांतीय भाषाओं को पूरा फलने-फूलने का अधिकार है परंतु विदेशी अंग्रेजी भाषा का मोह त्यागकर हिंदी को उसका वास्तविक राष्ट्रभाषा पद देने में ही संपूर्ण राष्ट्र का हित और गौरव है।

इस तरह हिंदी शनै:-शनै: व्यवहारात्मक रूप से राष्ट्रभाषा का संपूर्ण गौरव प्राप्त करने की ओर अग्रसर हो रही है और अगर हम दक्षिणी प्रांतों के निवासियों के हृदय से हिंदी के बारे में फैली हुई भ्रांतियों, शंकाओं तथा डर को निकाल सकें तथा वहाँ हिंदी भाषा को सीखने का सहज वातावरण तैयार कर सकें तो वह दिन दूर नहीं जब हिंदी राष्ट्रभाषा के रूप में अपना पूर्ण स्थान प्राप्त करने में सफल होकर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bahtalab Jammu

राष्ट्र की राजनैतिक, भावात्मक, सांस्कृतिक एकता का प्रतीक बनकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पूरी मान्यता प्राप्त करने की ओर अग्रसर हो सकेगी।

संसार की भाषाओं में हिंदी का स्थान और महत्त्व
(Place and Importance of Hindi Among the Languages of the World)

हिंदी का जन्म संस्कृत भाषा से हुआ है जो कि भारोपीय परिवार की एक उत्कृष्ट भाषा है। संसार की कई प्रचलित भाषाओं का भारोपीय परिवार की संस्कृत भाषा से काफी घनिष्ठ संबंध है। यही कारण है कि संस्कृत के काफ़ी शब्द संसार की अन्य भाषाओं से मिलते-जुलते हैं। समय के साथ-साथ संस्कृत में जन्मी इस हिंदी भाषा ने अपने भंडार को अत्यंत समृद्ध किया है और संसार की भाषाओं में अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान बनाया हैं। आज विश्व के सभी विकसित देशों, जैसे जर्मनी, फ्रांस, इंग्लैंड, रूस एवं अमरीका आदि देशों, के प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा एक महत्त्वपूर्ण विदेशी भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है। एशिया, अफ्रीका और आस्ट्रेलिया महाद्वीप के कई देशों में हिंदी का अध्ययन करनेवाले छात्रों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है।

भारत दुनिया का सबसे बड़ा प्रजातांत्रिक राष्ट्र है। विश्वशांति और अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना में निर्गुट देश के रूप में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करने के कारण इस देश की संस्कृति, आदर्श और मूल्यों की ओर विभिन्न देशों का ध्यान आकर्षित हो रहा है। परिणामस्वरूप इस देश की राष्ट्रभाषा हिंदी का अध्ययन करने में भी उनकी रुचि बढ़ रही है। विकासशील देशों में तो भारतवासी उनके विकास में अपनी जनशक्ति के सहारे काफी तकनीकी और औद्यौगिक सहयोग प्रदान कर रहे हैं। इस तरह से विभिन्न देशों में भारतवासियों के एक बड़ी सख्या में बस जाने के कारण, आज इस बात की आवश्यकता हो गई है कि इन देशों में प्रारंभ से ही हिंदी की शिक्षा की व्यवस्था की जाए।

विश्व के सभी देशों में हिंदी का प्रसार होने के कारण ही आज इस बात की आवश्यकता महसूस की जा रही है कि संयुक्त राष्ट्रसंघ में भी हिंदी को स्थान दिया जाए।

आज हिंदी भाषा के समृद्ध साहित्य को पढ़ने की इच्छा विश्व के प्राय: सभी देश व्यक्त कर रहे हैं। तुलसीकृत रामचरितमानस का अनुवाद तो विश्व की अनेक भाषाओं जैसे—जर्मनी, रूसी, इंगलिश, फ्रेंच, जापानी आदि में हो चुका है। इसी तरह प्रेमचंद के उपन्यासों और कहानियों, जयशंकर प्रसाद की कामायनी आदि रचनाओं, डॉ. रांगेय राघव के उपन्यासों आदि अनेक हिंदी रचनाओं का विभिन्न विदेशी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। इन अनूदित ग्रंथों ने संसार की विभिन्न भाषाओं के साहित्य को काफी समृद्ध और प्रभावित किया है। इस तरह हिंदी भाषा अपने साहित्य को समृद्ध करती हुई विश्व की विभिन्न भाषाओं में एक महत्त्वपूर्ण स्थान बनाने के लिए प्रयत्नशील है।

मातृभाषा के रूप में हिंदी शिक्षण के उद्देश्य
(Aims of Teaching Hindi as Mother Tongue)

भाषा अनुकरण से सीखी जाती है। बालक भी अपने परिवार में माता-पिता, भाई-बहिन एवं परिवार के अन्य सदस्यों के अनुकरण द्वारा तथा आसपास के वातावरण से भाषा सीखता रहता है, परंतु इसका तात्पर्य यह नहीं कि बच्चे को भाषा की शिक्षा की आवश्यकता ही नहीं। परिवार में सीखी गई यह भाषा पूर्ण रूप से शुद्ध, परिमार्जित, व्याकरणसम्मत एवं ओजस्वी नहीं होती है जबकि जीवन के विभिन्न अवसरों पर एवं विभिन्न क्षेत्रों में सफलतापूर्वक विचारों की अभिव्यक्ति के लिए शुद्ध, परिमार्जित, व्याकरणसम्मत भाषा अर्थात विस्तृत भाषा-ज्ञान की आवश्यकता होती है। अत: बच्चे के पूर्ण विकास के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लिए भाषा की शिक्षा अनिवार्य है। भाषा एक कौशल है। इसके दो रूप हैं—मौखिक एवं लिखित। भाषा की शिक्षा से तात्पर्य—भाषा के मौखिक एवं लिखित दोनों रूपों पर बालक का पूर्ण अधिकार प्राप्त कराना है। अर्थात बालक में सुनने, बोलने, पढ़ने एवं लिखने के कौशल को विकसित करना ही भाषा-शिक्षण का उद्देश्य है। मातृभाषा हिंदी-शिक्षण के उद्देश्यों का वर्णन हम निम्न प्रकार से कर सकते हैं :

1. ग्राह्यात्मक उद्देश्य—ग्राह्य का अर्थ है ग्रहण करना अर्थात बच्चे में उन कौशलों को विकसित करना जिनके द्वारा वह मौखिक या लिखित रूप में व्यक्त किए गए विचारों को ग्रहण कर सके। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हमें बच्चों में दो कौशलों को विकसित करना होता है :

(अ) सुनकर विचारों को ग्रहण करने की योग्यता का विकास—दूसरों के द्वारा बोली गई भाषा को सुनने और समझने के लिए बच्चों को निम्न बातों में पारंगत करना होगा :

ध्वनियों का ज्ञान, शब्दों का ज्ञान, स्वराघात व बलाघात का ज्ञान, ध्यानपूर्वक सुनने की आदत का निर्माण, मुहावरों एवं लोकोक्तियों का ज्ञान, विभिन्न पाठ से संबंधित एवं पाठांतर क्रियाओं में सक्रिय सहयोग लेने के लिए प्रेरित करना आदि।

(आ) पढ़कर विचारों को ग्रहण करने की योग्यता का विकास—''साहित्य समाज का दर्पण है।'' हमारे समाज एवं सभ्यता की सारी पूँजी साहित्य में निहित है। उससे परिचित होने के लिए जरूरी है कि बालक को पढ़ना और पढ़कर ठीक-ठीक अर्थ ग्रहण करना आता हो। अत: भाषा-शिक्षण का एक उद्देश्य है—पढ़ने की योग्यता का विकास करना। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए निम्न कौशलों को विकसित करना आवश्यक है :

बच्चों के शब्द एवं सूक्ति-भंडार की वृद्धि करना जिससे वे नए-नए शब्दों को पढ़कर उनका अर्थ एवं भाव ग्रहण कर सकें; मुहावरे एवं लोकोक्ति-भंडार में वृद्धि करना, विराम-चिह्नों का ज्ञान; शुद्ध उच्चारण के साथ लिखी हुई भाषा का सस्वर एवं मौन वाचन करना और वाचन करते हुए अर्थ ग्रहण करना, पठित सामग्री में से सूक्तियों, मुहावरों एवं लोकोक्तियों का संग्रह करना, पठित सामग्री का केंद्रीय भाव समझना, उचित हाव-भाव, आरोह-अवरोह एवं यति-गति के अनुसार वाचन की योग्यता विकसित करना तथा पठित सामग्री पर चिंतन-मनन करने की योग्यता का विकास करना आदि।

2. अभिव्यंजनात्मक उद्देश्य—अभिव्यंजना का अर्थ है मौखिक या लिखित भाषा के माध्यम से अपने अनुभवों एवं विचारों को दूसरों के सम्मुख अभिव्यक्त करना। जो व्यक्ति अपने विचारों को जितने प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करता है, वह जीवन में उतनी ही सफलता प्राप्त करता है। अत: हिंदी-भाषा-अध्यापक का कर्तव्य छात्रों में अभिव्यक्ति-कौशल को विकसित करना भी है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए भी बच्चों में दो कौशलों को विकसित करना होता है : लिखकर

(अ) बोलकर विचारों को अभिव्यक्त करने की योग्यता का विकास करना—सामाजिक प्राणी होने के कारण जीवन में पग-पग पर विचारों का आदान-प्रदान करना होता है। अपने विचारों तथा भावों को शुद्ध एवं स्पष्ट रूप से व्यक्त करने से सुननेवाला भावानुसार ही बात को ग्रहण कर लेता है। अत: मौखिक अभिव्यक्ति के लिए बच्चों में निम्न भाषा-कौशल विकसित करना आवश्यक है :

शुद्ध उच्चारण के साथ बोलने का अभ्यास; बोलते समय शब्दों, सूक्तियों, मुहावरों और लोकोक्तियों का शुद्ध प्रयोग; उचित गति, स्वर एवं प्रवाह के साथ बोलने तथा शिष्टाचार के नियमों का पालन करते हुए, अवसर के अनुकूल भाषा का प्रयोग करना; मधुर वाणी का प्रयोग करना; प्रश्नों का ठीक-ठीक उत्तर देना; तर्कसंगत सार्थक बात कहने की योग्यता विकसित करना; क्रमबद्ध रूप से उचित प्रवाह के साथ पूर्ण बात कहने के योग्य बनाना आदि।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(आ) लिखकर विचारों को प्रकट करने की योग्यता का विकास करना—भाषा का लिखित रूप उसे स्थायित्व प्रदान करता है। अतः बच्चों में लिखित रूप से अभिव्यक्ति की योग्यता विकसित करना भी भाषा-शिक्षण का एक आवश्यक उद्देश्य है। लिखित भाषा ही साहित्य के भंडार को विकसित करती है और सभ्यता एवं संस्कृति को पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित करती है। लिखित अभिव्यक्ति की योग्यता विकसित करने के लिए बच्चों में निम्न भाषा-कौशलों को विकसित करना जरूरी है :

बच्चों को लिपि का पूर्ण ज्ञान देना; सुंदर, सुडौल लेख का अभ्यास कराना; वर्णविन्यास का ज्ञान कराना; शब्दों, सूक्तियों, मुहावरों एवं लोकोक्तियों का उचित प्रयोग करना सिखाना; पठित सामग्री पर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देना; पठित सामग्री का संक्षिप्तीकरण करना; विस्तारीकरण करना; क्रमपूर्वक विचारों को व्यक्त करना; उचित अनुच्छेदों में विभाजित कर लिखना सिखाना; उचित गति एवं सावधानी से लिखने का अभ्यास कराना आदि।

3. रचनात्मक उद्देश्य—इसे सृजनात्मक उद्देश्य भी कहा जाता है। रचना या सृजन से तात्पर्य है—नई मौलिक रचना करना। सृजनात्मकता की इस प्रवृत्ति ने ही तुलसी, कबीर, टैगोर, सूर, जयशंकर प्रसाद, प्रेमचंद और मैथिलीशरण गुप्त जैसे महान साहित्यकारों को जन्म दिया। प्रत्येक बालक में सृजनशीलता होती है, आवश्यकता इस बात की है कि उसे विकसित होने का उचित अवसर दिया जाए। लिखित अभिव्यक्ति की योग्यता का विकास करना ही हम अपना उद्देश्य मानकर बच्चों को केवल लिखना सिखाकर अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं। भाषा के अध्यापक का कर्तव्य है कि वह बालक की इस ईश्वरप्रदत्त प्रतिभा को विकसित करने के लिए प्रयत्नशील रहे। लिखना सिखाने के पश्चात बच्चों से कहानी, निबंध, कविता एवं घटना-वर्णन लिखाकर उन्हें अपनी मौलिक प्रतिभा को प्रकट करने का अवसर प्रदान किया जा सकता है।

इसके लिए अध्यापक लिखित अभिव्यक्ति के कौशलों को विकसित करने के साथ-साथ निम्न प्रयास भी कर सकता है :

मौलिक विचारों को उपयुक्त भाषा-शैली में व्यक्त करना; बच्चों से पत्र, कविता, कहानी, संवाद, आदि लिखाना; मौलिक विचारों को प्रोत्साहन देना; विभिन्न लेखन-प्रतियोगिताओं का आयोजन करना; विभिन्न लेखन-शैलियों का ज्ञान देना एवं जीवनी, आत्मकथा, घटना एवं सार-लेखन का अभ्यास कराना आदि।

4. श्लाघात्मक उद्देश्य—श्लाघा से तात्पर्य सराहना करने से है अतः इसे सराहनात्मक उद्देश्य भी कहा जाता है। इस उद्देश्य के विकास के साथ-साथ ही साहित्य में छात्रों की रुचि विकसित की जाती है। इसके द्वारा बालक में साहित्यिक अभिवृत्तियों को विकसित किया जाता है। हर बालक कुशल लेखक या कवि तो नहीं बन सकता है परंतु साहित्य की सराहना तो कर सकता है। इसके लिए निम्न कौशलों को विकसित करना आवश्यक होता है :

उचित ताल, लय एवं आरोह के साथ काव्य-पाठ करना; साहित्य की विभिन्न विधाओं का रसास्वादन करना; कविताएँ कंठस्थ करना; काव्यांशों व गद्यांशों को कंठस्थ करना; व्याख्या करना एवं मौखिक-लिखित अभिव्यक्ति के समय उद्धृत करना आदि।

5. समीक्षात्मक उद्देश्य—समीक्षा से अभिप्राय समालोचना से है। बालक का भाषा एवं साहित्य पर पूर्ण अधिकार कराने की दृष्टि से यह भी आवश्यक है कि वे साहित्य की जिस विधा का अध्ययन करें

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसकी प्रामाणिकता व अप्रामाणिकता को भी देख सकें। बच्चा यह समझ सके कि वह साहित्य के जिस रूप का अध्ययन कर रहा है, उसकी भाषा-शैली, भाव एवं विचार उपयुक्त हैं या नहीं। इस स्तर तक पहुँचने के उपरांत ही बच्चे का भाषा पर पूर्ण अधिकार हो सकेगा। इसके लिए निम्नलिखित कौशलों की आवश्यकता होती है :

पद्य, निबंध, कहानी नाटक एवं उपन्यास आदि को पढ़कर उसकी भाषा-शैली का विश्लेषण, करना; विभिन्न भाषा-गुणों (ओज, प्रसाद, माधुर्य); शब्दशक्तियों (अभिधा, लक्षणा, व्यंजना), विभिन्न रीतियों (वैदर्भी पांचाली, गौड़ी); रस, अलंकार एवं छंद आदि को पहचानना एवं विश्लेषण करना; विभिन्न तत्वों एवं तथ्यों के आधार पर सामग्री की प्रामाणिकता व उपयुक्तता बताना; विभिन्न आलोचनात्मक शैलियों का प्रयोग एवं विभिन्न साहित्यिक रचनाओं का तर्क एवं न्यायसंगत मूल्यांकन करना आदि।

6. रुच्यात्मक उद्देश्य—रुच्यात्मकता से तात्पर्य है भाषा एवं साहित्य में बालकों की रुचि जाग्रत करना। छात्रों के व्यक्तित्व का उचित विकास करने की दृष्टि से यह भी आवश्यक है कि उसकी रुचियों को सही दिशा प्रदान की जाए। बचपन से ही उसकी रुचि को हम जिधर मोड़ देंगे, उसकी क्रियाएँ उसी तरफ प्रवाहित होने लगेंगी। यदि अध्यापक बालक की रुचि साहित्य-अध्ययन की तरफ मोड़ देगा तो बचपन से बच्चे के क्रियाकलापों को सही दिशा मिल जाएगी। इसके लिए निम्न कौशलों को विकसित करना आवश्यक है :

पाठ्यक्रम के अतिरिक्त अन्य पुस्तकों को पढ़ने के लिए प्रेरित करना, साहित्यिक पत्र एवं पत्रिकाओं को पढ़ना, सुरुचिपूर्ण अंशों को कंठस्थ करना एवं एकत्रित करना, कविताओं को कंठस्थ करना, विद्यालय की साहित्यिक क्रियाओं में भाग लेना एवं सहयोग देना तथा विद्यलाय पत्रिका एवं अन्य पत्रिकाओं में योगदान देना आदि।

7. अभिवृत्यात्मक उद्देश्य—इस उद्देश्य से अभिप्राय है बच्चों में उपयुक्त दृष्टिकोणों, आदतों एवं अभिवृत्तियों का निर्माण करना। वास्तव में देखा जाए तो शिक्षा का उद्देश्य ही बच्चों में सद्प्रवृत्तियों को विकसित करना है जिससे देश को आदर्श नागरिक मिल सकें। साहित्य एवं सद्प्रवृत्ति में गहरा संबंध है। भाषा का अध्यापक बच्चों में साहित्यिक अभिरुचि को विकसित करने के साथ-साथ ही उनमें सद्प्रवृत्तियों को स्वाभाविक रूप से विकसित कर सकता है। अध्यापक विभिन्न साहित्यिक रचनाओं एवं गतिविधियों के माध्यम से बच्चों में प्रेम, श्रद्धा, सहृदयता, आस्था, राष्ट्रीय एकता, संवदेनशीलता एवं देश-प्रेम जैसी सद्वृत्तियों को सहज ही विकसित कर सकता है। इसके लिए निम्न योग्यताओं को विकसित करना आवश्यक है :

विद्यार्थियों को देश-प्रेम, मानव-प्रेम तथा साहित्य-प्रेम की ओर अग्रसर करना, मानवता के प्रति सहृदयता तथा संवेदनशीलता विकसित करना, उनमें राष्ट्रीय एवं भावात्मक एकता विकसित करना, अनेकता में एकता के सिद्धांत को समझाना एवं उसमें आस्था विकसित करना, उच्च मानवीय आदर्शों में आस्था एवं श्रद्धा विकसित करना, सांस्कृतिक व सामाजिक मान्यताओं में आस्था विकसित करना, उनकी सद्वृत्तियों का पोषण एवं संवर्धन करना तथा उनके आचरण में सद्वृत्तियों को सक्रिय करने का प्रयास करना आदि।

भाषा-शिक्षण के ये सभी उद्देश्य एक-दूसरे के सहयोगी हैं। ये सभी साथ-साथ चलते हैं। एक के विकास के साथ दूसरा अपने आप ही विकसित हो जाता है। इन सभी उद्देश्यों की पूर्ति से विद्यार्थी के व्यवहार में कई तरह के परिवर्तन होते रहते हैं। अध्यापक को इन परिवर्तनों के प्रति सजग रहना चाहिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उद्देश्यों की अपेक्षित व्यवहार परिवर्तनों के संदर्भ में व्याख्या
(Expressing Aims in terms of Desirable Behavioural Changes)

उपर्युक्त वर्णित मातृभाषा-शिक्षण के सभी उद्देश्यों का लक्ष्य बालक के व्यवहार में अनुकूल परिवर्तन लाना होता है और यह परिवर्तन व्यवहार के सभी पक्षों—ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक में लाए जाते हैं। इन परिवर्तनों को स्पष्ट रूप से समझने के लिए व्यवहारजन्य शब्दावली में व्यक्त किया जा सकता है। बच्चों के व्यवहार में आनेवाले इन्हीं परिवर्तनों के आधार पर मातृभाषा-शिक्षण की प्रक्रिया की सफलता या असफलता का आकलन भी सुगमतापूर्वक किया जा सकता है। चूँकि शिक्षण को बच्चे के व्यवहार में परिवर्तन लाने वाली प्रक्रिया माना गया है अत: मातृभाषा-शिक्षण की सफलता या असफलता का आकलन भी इस शिक्षण से बालक के व्यवहार में आने वाले परिवर्तनों के आकलन द्वारा सुगमतापूर्वक किया जा सकता है। इस दृष्टि से मातृभाषा शिक्षण द्वारा होने वाले व्यवहार परिवर्तनों की व्याख्या अत्यंत आवश्यक है।

मातृभाषा-शिक्षण के उद्देश्य, उन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए आयोजित की जानेवाली क्रियाएँ तथा विषयवस्तु और उन क्रियाओं व विषय-ज्ञान से होनेवाले व्यवहारगत परिवर्तनों की व्याख्या निम्न प्रकार से की जा सकती है :

1. ग्राह्यात्मक उद्देश्य—बच्चा दो प्रकार से विचारों को ग्रहण करता है—सुनकर व पढ़कर। दोनों रूपों से बच्चे में व्यवहारगत निम्न परिवर्तन होते हैं :

(अ) सुनकर विचारों को ग्रहण करना

विषयवस्तु (श्रुत सामग्री)—आदर्श वाचन, भाषण, वार्तालाप, निर्देश, कविता-पाठ, प्रश्न, नाटक देखना, आकाशवाणी व दूरदर्शन पर प्रसारित होनेवाले कार्यक्रम।

व्यवहारगत परिवर्तन

(i) विद्यार्थी आदर्श वाचन, प्रश्न, भाषण, रेडियो, टेलीविजन प्रसारण एवं अध्यापक के आदेश, कविता आदि को ध्यानपूर्वक सुनते हैं।

(ii) छात्र सुनते समय शिष्टाचार के नियमों का पालन करते हैं और अनुशासन का प्रदर्शन करते हैं।

(iii) वे श्रुत सामग्री में प्रयुक्त ध्वनियों, शब्दों, मुहावरों आदि को समझने का प्रयास करते हैं और उनका अर्थ समझते हैं।

(iv) वे श्रुत साम्रगी के भाव व अर्थ को बता सकते हैं।

(v) छात्र अध्यापक द्वारा पूछे गए प्रश्नों को समझकर उत्तर देते हैं।

(vi) छात्र अध्यापक के निर्देशों को समझकर उनका पालन करते हैं।

(vii) छात्र श्रुत सामग्री के रुचिकर अंशों का चुनाव करते हैं।

(viii) छात्र श्रुत सामग्री के रुचिकर अंशों का आवश्यकतानुसार प्रयोग करते हैं।

(ix) छात्र सुनकर नवीन शब्दों, मुहावरों को याद करते हैं और स्वयं अपनी अभिव्यक्ति में उनका प्रयोग करते हैं।

(आ) पढ़कर विचार ग्रहण करना

पाठ्य-सामग्री—मातृभाषा साहित्य की विभिन्न विधाओं के अंश जैसे—गद्य (निबंध, कहानी, नाटक, कविता, आत्मकथा, जीवनी, यात्रा-वर्णन, उपन्यास आदि)।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

व्यवहारगत परिवर्तन

(i) छात्र विषयवस्तु को शुद्ध उच्चारण, उचित गति, उचित स्वर, उचित स्वराघात, बलाघात एवं स्वर के उतार-चढ़ाव के साथ पढ़ते हैं।

(ii) छात्र पाठ्य-सामग्री को ध्यान एवं धैर्य के साथ पढ़ते हैं।

(iii) छात्र पाठ्य-सामग्री का भावानुकूल सस्वर वाचन करते हैं।

(iv) छात्र पाठ्य-सामग्री में प्रयुक्त शब्दों, मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रसंगानुकूल अर्थ ग्रहण करते हैं।

(v) छात्र पाठ्य-सामग्री का केंद्रीय भाव ग्रहण कर उसका सारांश बताते हैं।

(vi) छात्र पाठ्य-सामग्री को मन में पढ़कर उसका भावानुकूल महत्त्व समझ सकते हैं और पाठ्य-सामग्री में व्यक्त भावों का परस्पर संबंध स्थापित करते हैं।

(vii) छात्र पाठ्य-सामग्री में से उपयोगी अंशों का चुनाव करते हैं।

(viii) छात्र पाठ्य-सामग्री की भाषा-शैली को समझते हैं।

2. अभिव्यंजनात्मक उद्देश्य—विचाराभिव्यक्ति भी दो प्रकार से की जाती है—बोलकर और लिखकर। अत: अभिव्यंजना के लिए छात्रों में ये दोनों कौशल विकसित करने होते हैं।

(अ) मौखिक रूप से (बोलकर) विचार अभिव्यक्त करना

अभिव्यक्ति संबंधी क्रियाएँ ये हैं—वार्तालाप, विचार-विमर्श, प्रश्नोत्तर, दृश्य या घटना का वर्णन, कहानी कहना, वाद-विवाद, भाषण, कविता-पाठ, नाटक, साक्षात्कार आदि।

व्यवहारगत परिवर्तन

(i) छात्र उचित स्वर, शुद्ध उच्चारण, उचित गति एवं विराम के साथ अभिव्यक्ति संबंधी क्रियाओं में भाग लेते हैं।

(ii) छात्र उचित प्रवाह के साथ, भावानुकूल, हाव-भाव के साथ वार्तालाप आदि में भाग लेते हैं।

(iii) छात्र स्पष्ट रूप से शिष्टाचार के नियमों का पालन करते हुए बोलते हैं।

(iv) छात्र भावानुसार शब्दों, मुहावरों आदि का प्रयोग करते हैं।

(v) छात्र व्याकरणसम्मत शुद्ध भाषा का प्रयोग करते हुए बोलते हैं।

(vi) छात्र प्रसंगानुकूल अभिव्यक्ति की शैली का प्रयोग करते हैं।

(vii) छात्र क्रमबद्ध रूप से विचाराभिव्यक्ति करते हैं।

(viii) छात्र अवसर के अनुकूल मौखिक अभिव्यक्ति करते हैं।

(ix) छात्र बोलते हुए विचारों में सुसंबद्धता बनाए रखते हैं।

(x) छात्र पूछे गए प्रश्नों का उचित ढंग से उत्तर देते हैं।

(xi) छात्र अभिव्यक्ति में औचित्य, संक्षिप्तता एवं सार्थकता का ध्यान रखते हैं।

(xii) छात्र पूर्ण आत्मविश्वास के साथ मौखिक अभिव्यक्ति करते हैं।

(अ) लिखकर विचाराभिव्यक्ति करना

लिखित अभिव्यक्ति संबंधी क्रियाएँ ये हैं—सुलेख का अभ्यास, शब्दों का वाक्य में प्रयोग, पाठ्य वस्तु पर आधारित प्रश्नों के उत्तर, निबंध, पत्र-लेखन, कहानी-लेखन, डायरी-लेखन, संवाद-लेखन, आत्मकथा-लेखन आदि।

व्यवहारगत परिवर्तन—इन क्रियाओं के अभ्यास से छात्रों में निम्नलिखित व्यवहारगत परिवर्तन होंगे :

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(i) छात्र सुडौल एवं सुंदर लेख लिखते हैं।
(ii) छात्र शुद्ध अक्षरविन्यास का ध्यान रखते हुए लिखते हैं।
(iii) छात्र विराम-चिह्नों का ठीक प्रयोग करते हुए लिखते हैं।
(iv) छात्र व्याकरणसम्मत भाषा का प्रयोग करते हैं।
(v) छात्र अपने विचारों को उचित परिच्छेद में विभाजित कर लिखते हैं।
(vi) छात्र ठीक वाक्य-विन्यास करते हुए लिखते हैं।
(vii) छात्र अपने विचारों को क्रमबद्ध रूप से लिखकर व्यक्त करते हैं।
(viii) छात्र शब्दों, मुहावरों, सूक्तियों एवं लोकोक्तियों का उचित रूप से प्रयोग करते हैं।
(ix) छात्र अपनी रचना में विचारों की सुसंबद्धता को बनाए रखते हैं।
(x) छात्र लिखित अभिव्यक्ति में अनुकूल शैली का प्रयोग करते हैं।

3. सृजनात्मक उद्देश्य—लिखित अभिव्यक्ति की योग्यता विकसित करने के साथ बच्चों की सृजनात्मक शक्तियों को विकसित करना भी भाषा-शिक्षक का कर्त्तव्य है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए वह निम्न क्रियाओं का आयोजन कर सकता है :

रचना-कार्य—सार-लेखन, निबंध-लेखन, कहानी-लेखन, पत्र-लेखन, संवाद-लेखन, कविता-लेखन, संस्मरण-लेखन, आत्मकथा-लेखन, परिच्छेद-लेखन आदि।

व्यवहारगत परिवर्तन

(i) छात्र किसी भी विषय पर एक, दो या अधिक परिच्छेदों में विचार व्यक्त करते हैं।
(ii) छात्र अपने अनुभव किए गए विचारों को सार रूप में व्यक्त करते हैं।
(iii) छात्र पठित अंश का सार लिखकर व्यक्त करते हैं।
(iv) छात्र किसी भी देखी, सुनी या अनुभव की गई घटना को कल्पना-शक्ति के द्वारा निबंध, कहानी या नाटक आदि के रूप में नया रूप देते हैं।
(v) छात्र किसी भी पठित सामग्री या श्रुत सामग्री का संक्षेपीकरण या विस्तारीकरण करके उसे नई रचना का रूप देते हैं।

4. सराहनात्मक उद्देश्य—छात्रों में साहित्य की सराहना करने की योग्यता एवं साहित्य का रसास्वादन व सौंदर्यानुभूति की क्षमता विकसित करने की दृष्टि से अध्यापक निम्न क्रियाओं का आयोजन कर सकता है :

विभिन्न प्रकार की कविताएँ, मुक्तक या गीतिकाव्य, कहानी, एकांकी एवं विभिन्न साहित्यिक क्रियाएँ।

व्यवहारगत परिवर्तन

(i) छात्र उचित ताल, लय, हाव-भाव एवं आरोह-अवरोह के साथ कविता-पाठ करते हैं।
(ii) कविताओं का अध्ययन कर उनका भाव व अर्थ ग्रहण करते हैं।
(iii) छात्र कविता के सुंदर स्थलों की पहचान कर उनका आनंद लेते हैं।
(iv) छात्र छंद, रस, अलंकार आदि की सहायता से कविता में व्यक्त भावों की सराहना करते हैं।
(v) छात्र कविता कंठस्थ करते हैं।
(vi) छात्र अपनी अभिव्यक्ति में कंठस्थ की गई कविताओं को उद्धृत करते हैं।
(vii) छात्र विभिन्न साहित्यिक क्रियाओं में भाग लेते व उनसे आनंद का अनुभव करते हैं।

5. समीक्षात्मक उद्देश्य—छात्र में समीक्षात्मक अर्थात समालोचनात्मक योग्यताओं को विकसित

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करने के लिए अध्यापक निम्न क्रियाओं का आयोजन कर सकता है :

आलोचना सामग्री एवं क्रियाएँ—कविता, कहानी, निबंध, संस्मरण, एकांकी, रूपक, आत्मकथा, रेखाचित्र एवं भाषा-शैली तत्वों का ज्ञान आदि।

व्यवहारगत परिवर्तन

(i) छात्र साहित्य की विविध विधाओं का अध्ययन करने के उपरांत उनकी भाषा-शैली आदि की समीक्षा करते हैं।

(ii) छात्र रचनाओं की विषयवस्तु का तर्क एवं न्यायसंगत मूल्यांकन करते हैं।

(iii) छात्र अलोचनात्मक दृष्टिकोण में साहित्यिक रचनाओं के सौंदर्यात्मक स्थलों को पहचानते हैं।

(iv) छात्र विभिन्न आलोचना-शैलियों का प्रयोग करते हैं।

(v) विभिन्न भाषा-तत्वों के आधार पर विषय-सामग्री की आलोचनात्मक दृष्टि से प्रामाणिकता परखते हैं।

(vi) छात्र विभिन्न रसों, अलंकारों एवं छंदों का आलोचनात्मक विश्लेषण करते हैं।

6. रुच्यात्मक उद्देश्य—अपेक्षित सामग्री—साहित्य की विविध विधाएँ (कहानी, नाटक, पद्य, निबंध, कविता, उपन्यास आदि), विभिन्न साहित्यिक क्रियाएँ एवं साहित्यिक पत्र व पत्रिकाएँ।

व्यवहारगत परिवर्तन

(i) छात्र साहित्यिक विधाओं का अध्ययन कर उनके रुचि अंशों को छाँटकर संगृहीत करते हैं।

(ii) छात्र कविताओं को कंठस्थ करते हैं।

(iii) छात्र पुस्तकालय-अध्ययन में रुचि लेते हैं।

(iv) छात्र पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ने में रुचि लेते हैं।

(v) छात्र साहित्यिक क्रार्यक्रमों में सक्रिय रुचि लेते हैं।

(vi) वे विद्यालय से बाहर आयोजित होनेवाली साहित्यिक गति-विधियों में रुचि लेते हैं।

(vii) छात्र विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं के सदस्य बनने का प्रयास करते हैं।

7. अभिवृत्यात्मक उद्देश्य—छात्रों में सद्प्रवृत्तियों को विकसित करने की दृष्टि से अध्यापक निम्न सामग्री व क्रियाओं की व्यवस्था कर सकता है :

अपेक्षित सामग्री—विभिन्न साहित्यिक विधाएँ एवं साहित्यिक क्रियाएँ।

व्यवहारगत परिवर्तन

(i) छात्र साहित्य की विभिन्न विधाओं जैसे—नाटक, कहानी, निबंध, कविता, महापुरुषों की जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण एवं एकांकी आदि के अध्ययन से प्रेरणा प्राप्त कर सद्वृत्तियों की ओर उन्मुख होते हैं और उन्हें अपने व्यवहार में अपनाने का प्रयास करते हैं।

(ii) छात्र मानव-प्रेम एवं देश-प्रेम की ओर उम्मुख होते हैं।

(iii) विभिन्न साहित्यिक क्रियाओं से प्रेरित होकर दूसरों के प्रति सहृदयता प्रकट करते हैं।

(iv) छात्र अपनी सभ्यता तथा संस्कृति के प्रति श्रद्धा एवं आस्था व्यक्त करते हैं।

(v) छात्र मानव-मूल्यों को अपने जीवन में अपनाने का प्रयास करते हैं।

(vi) छात्र सामाजिक मान्यताओं के प्रति आस्था प्रदर्शित करते हैं।

(vii) छात्र अपने विचार एवं आचरण में सद्वृत्तियों को अभिव्यक्त करते हैं।

इस प्रकार से यह स्पष्ट होता है कि भाषा-शिक्षण में उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए छात्रों में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

विभिन्न प्रकार के व्यवहारगत परिवर्तनों की अपेक्षा होती है। ये परिवर्तन ही भाषा-शिक्षण के उद्देश्यों
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
की प्राप्ति के सूचक होते हैं। शिक्षण के प्राथमिक स्तर से लेकर माध्यमिक स्तर से होते हुए, उच्च स्तर तक ये व्यवहारगत परिवर्तन बालकों में उत्तरोत्तर विकसित होते रहते हैं। यह भी ध्यान देने की बात है कि छात्र के व्यवहार में होनेवाले ये परिवर्तन, भाषा-शिक्षण के एक अथवा एक से अधिक उद्देश्यों की प्राप्ति के सूचक होते हैं। जैसे—अभिव्यक्ति के उद्देश्य से संबंधित व्यवहारगत परिवर्तन सृजनात्मक उद्देश्य की आंशिक प्राप्ति के सूचक भी होते हैं। अध्यापक को अपने छात्रों के व्यवहार में होनेवाले इन परिवर्तनों के प्रति सजग रहना चाहिए।

अध्ययन के लिए प्रश्न

1. मातृभाषा से आप क्या समझते हैं? इसके महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

2. ''मातृभाषा के द्वारा ही बालक के व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास संभव है।'' इस कथन की विवेचना कीजिए।

3. ''बच्चे के मानसिक विकास के लिए मातृभाषा उतनी ही आवश्यक है जितना कि बच्चे के शारीरिक विकास के लिए माता का दूध।'' गांधीजी के इस कथन की पुष्टि कीजिए।

4. विद्यालय-शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर निर्धारित किए जानेवाले मातृभाषा-शिक्षण के उद्देश्यों का विस्तार से वर्णन कीजिए।

5. मातृभाषा के रूप में हिंदी-शिक्षण के विभिन्न उद्देश्यों की व्याख्या करते हुए स्पष्ट कीजिए कि आप इनकी प्राप्ति के लिए क्या-क्या प्रयास करेंगे।

6. मातृभाषा-शिक्षण का क्या महत्त्व है? मातृभाषा-शिक्षण के क्या उद्देश्य होने चाहिए?

7. मातृभाषा के महत्त्व का विवेचन करते हुए मातृभाषा-शिक्षण की भूमिका एवं उद्देश्यों पर विस्तार से प्रकाश डालिए।

8. ''मातृभाषा जीवन के समस्त क्रिया-कलापों के संचालन की भाषा है अत: उसके शिक्षण के उद्देश्य भी अनेकमुखी एवं व्यापक होंगे।'' इस कथन की विवेचना करते हुए माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं की दृष्टि से मातृभाषा-शिक्षण के उद्देश्यों की व्याख्या कीजिए।

9. ''मातृभाषा की शिक्षा पर छात्रों का मानसिक और बौद्धिक विकास निर्भर है।'' समीक्षा कीजिए।

10. मातृभाषा के रूप में हिंदी-शिक्षण के विभिन्न उद्देश्यों की अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तनों के संदर्भ में व्याख्या कीजिए।

11. मातृभाषा-शिक्षण के कोई पाँच उद्देश्य लिखिए एवं उनका विशिष्टीकरण सोदाहरण प्रस्तुत कीजिए।

12. मातृभाषा-शिक्षण के उद्देश्यों तथा व्यवहार-परिवर्तनों की विवेचना कीजिए।

13. निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :

(i) मातृभाषा का बालक के व्यक्तित्व के विकास में योगदान

(ii) मातृभाषा-शिक्षण का महत्त्व

(iii) विद्यालय स्तर पर मातृभाषा-शिक्षण के उद्देश्य

(iv) मातृभाषा-शिक्षण के विभिन्न उद्देश्यों की अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तनों के संदर्भ में व्याख्या।

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3

मातृभाषा के रूप में हिंदी-शिक्षण के सामान्य सिद्धांत
(General Principles of Teaching Hindi as Mother Tongue)

हिंदी-शिक्षण क्या है ? (What is Hindi Teaching?)

जन्म लेते ही परिवार के सदस्यों द्वारा बोली जानेवाली ध्वनियाँ बच्चे के कानों में प्रविष्ट होने लगती हैं। बालक अचेतन रूप से इन ध्वनियों को ग्रहण करने लगता है। फिर अनुकरण करते हुए स्वयं भी इन ध्वनियों को अभिव्यक्त करने लगता है और इस प्रकार बोलचाल की भाषा का प्रयोग करना सीख जाता है। परंतु अनुकरण के द्वारा परिवार में सीखी गई यह भाषा जीवन-यापन की दृष्टि से पर्याप्त नहीं है। अभिव्यक्ति को प्रभावशाली, शुद्ध एवं परिमार्जित बनाने के लिए बालक को शब्द-ज्ञान, वाक्य-ज्ञान आदि व्याकरण-नियमों का ज्ञान कराना आवश्यक होता है। इसके लिए विद्यालय में अध्यापक द्वारा भाषा-शिक्षण की आवश्यकता होती है। यही भाषा-शिक्षण है और जब भाषा के रूप में हिंदी की ध्वनियों, शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों एवं साहित्य की विविध विधाओं का ज्ञान कराया जाता है तो यह हिंदी-शिक्षण है। अर्थात जिस क्रिया द्वारा बालक को हिंदी भाषा से संबंधित भाषा-कौशलों में प्रवीणता प्रदान करके उसके चिंतन तथा अभिव्यक्ति को प्रभावशाली बनाया जाता है तथा जीवन से संबंधित किसी भी विषय का अध्ययन करने की सामर्थ्य विकसित की जाती है उसे ही भाषा-शिक्षण, मातृभाषा-शिक्षण या हिंदी-शिक्षण कहा जाता है।

भाषा-शिक्षण के सामान्य सिद्धांत क्या हैं ?
(What are the General Principles of Hindi Teaching?)

बालक जिस सामाजिक पर्यावरण में पलता-बढ़ता है वहाँ से स्वयं ही सीखना प्रारंभ कर देता है। प्रारंभ में वह अनुकरण करके विभिन्न ध्वनियों को बोलना सीखता है, फिर दूसरों की ध्वनियों को सुनकर अर्थ समझने व अर्थ समझकर उत्तर देने का प्रयास करता है और विभिन्न क्रियाओं में अपने-आपको व्यस्त रखता है। परंतु वह उन्हीं क्रियाओं में अपने को व्यस्त रखता है, जिनमें उसकी रुचि होती है। शिक्षण के समय भी बालक की इन स्वाभाविक क्रियाओं व रुचियों का ध्यान रखा जाना आवश्यक है, जिससे बच्चा सरलता व सुगमतापूर्वक विभिन्न कौशलों का अर्जन कर सके। शिक्षण एक कला है, इस कला में प्रवीण होने के लिए अध्यापक को बालक की रुचियों, योग्यताओं, क्षमताओं एवं आवश्यकताओं आदि का ध्यान रखना जरूरी है। ये ही शिक्षण के सामान्य सिद्धांत कहे जाते हैं। ये भाषा-शिक्षण में अत्यंत लाभकारी सिद्ध होते हैं। मातृभाषा हिंदी-शिक्षण के सामान्य सिद्धांत निम्नलिखित हैं :

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

1. रुचि का सिद्धांत (Principle of Interest)—जब तक भाषा सीखने में बच्चे की रुचि नहीं होगी तब तक उसे भाषा नहीं सिखाई जा सकती है। जिस कार्य में उसकी रुचि होती है, वह वही कार्य करता है। भाषा-अध्यापक का यह कर्तव्य है कि वह पाठ्य-सामग्री में बच्चे की रुचि जाग्रत करे। रुचि होने से बच्चा पढ़ाई में मन लगाएगा और विषय की तरफ ध्यान केंद्रित कर सकेगा। विषय की तरफ बच्चों की रुचि उत्पन्न करने के लिए अध्यापक अनेक उपाय कर सकता है:

—किसी वस्तु, मॉडल या चित्र आदि दृश्य-श्रव्य सामग्री को दिखाकर,
—बच्चों से उनकी योग्यता व क्षमता के अनुसार प्रश्न पूछकर,
—बच्चों की रुचि व आवश्यकतानुसार शिक्षण-विधियों का प्रयोग कर,
—साहित्यिक क्रियाओं का आयोजन कर,
—कक्षा में खेल-विधि का प्रयोग कर,
—बच्चों के पूर्वज्ञान के आधार पर नए ज्ञान को प्रस्तुत कर,
—ज्ञान को बच्चों के जीवन से जोड़कर,
—कविता-शिक्षण में कविता-पाठ, अंत्याक्षरी, कविता कंठस्थ करने आदि की प्रेरणा देकर,
—नाटक-शिक्षण में अभिनय-कौशल का प्रशिक्षण देकर, नाटक का प्रयोग कर तथा
—बच्चों से सहानुभूति व उत्साहवर्धक व्यवहार करके भी अध्यापक अपने शिक्षण को रोचक बना सकता है।

2. क्रियाशीलता का सिद्धांत (Principle of Activity)—बाल-मनोविज्ञान ने यह सिद्ध किया है कि बच्चे जन्म से ही क्रियाशील होते हैं। वे निष्क्रिय होकर नहीं बैठ सकते। अत: शिक्षण-प्रक्रिया में यदि बच्चे को अधिक-से-अधिक क्रियाशील रखा जाता है तो शिक्षण-उद्देश्यों की प्राप्ति की संभावना भी उतनी ही ज्यादा बढ़ जाती है। अत: शिक्षण-प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने के लिए इस सिद्धांत का पालन करना आवश्यक है। इसके लिए अध्यापक :

—बच्चों को मौखिक वार्तालाप, प्रश्नोत्तर, घटना-वर्णन, कहानी कहना व सुनना आदि क्रियाओं द्वारा क्रियाशील रख सकता है।
—कक्षा में पढ़ाते समय आदर्श वाचन के पश्चात बच्चों से अनुकरण वाचन कराकर सक्रिय कर सकता है।
—अर्जित ज्ञान को लिखित रूप में अभिव्यक्त करने का अवसर देकर सक्रिय कर सकता है, तथा
—विविध साहित्यिक क्रियाओं में भाग लेने को प्रेरित कर क्रियाशील बना सकता है।

3. जीवन से संबंधित करने का सिद्धांत (Principle of Correlation with Life)—मनोविज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि जो विषय एवं क्रियाएँ बच्चे के जीवन से संबंधित होती हैं उन्हें सीखने में बच्चा रुचि लेता है और आसानी से सीख भी लेता है। मातृभाषा के रूप में हिंदी का शिक्षण करते समय अध्यापक गद्य, पद्य, कहानी, नाटक, रचना एवं व्याकरण आदि का ज्ञान बच्चों को देता है। यदि इन सबको पढ़ाते समय बच्चों के दैनिक जीवन से संबंधित उदाहरण, दृष्टांत आदि की सहायता से विषयवस्तु की व्याख्या की जाए तो बच्चा उसे सुनने व समझने में अधिक रुचि लेगा और विषयवस्तु उसके लिए बोधगम्य भी हो जाएगी।

4. स्वाभाविकता का सिद्धांत (Principle of Spontaneity)—बच्चा अपनी माँ की गोद से ही भाषा सीखना शुरू कर देता है। जैसे-जैसे वह बढ़ता है वैसे-वैसे वह अपने आसपास के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वातावरण से भी अपने भाषा-ज्ञान में वृद्धि करता है। इस प्रकार वह सुनना व बोलना सीख जाता है। कालांतर में विद्यालय जाने पर वह पढ़ना व लिखना सीखता है। भाषा-शिक्षण में इसी स्वाभाविक क्रम को अपनाना चाहिए—सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना।

इसी प्रकार बच्चा अपने विचारों की अभिव्यक्ति सर्वप्रथम पूर्ण वाक्य के रूप में करता है यद्यपि वह एक ही वर्ण या शब्द का प्रयोग करता है। अपनी माँ से दू या दूद्दू या मम् (पानी) बोलकर 'मुझे दूध दो' या 'मुझे पानी दो' वाक्य को प्रकट करता है। वैसे भी भाषा की पूर्ण इकाई वाक्य है। वाक्य की इकाई शब्द है और शब्द की इकाई वर्ण है। अत: सर्वप्रथम वाक्य, फिर शब्द, तत्पश्चात वर्ण सिखाना ही भाषा-शिक्षण का स्वाभाविक क्रम है।

इसी तरह बच्चा स्वाभाविक वातावरण को अधिक पसंद करता है, बनावटीपन उसे पसंद नहीं। अत: अध्यापक को कक्षा में स्वाभाविक वातावरण बनाए रखने का प्रयास भी करना चाहिए जिससे बच्चा बिना किसी तनाव के स्वाभाविक रूप से भाषा-ज्ञान प्राप्त कर सके।

5. बोलचाल का सिद्धांत (Principle of Conversation)—भाषा विचार-विनिमय का प्रमुख साधन है। अत: भाषा की शिक्षा में विचार-विनिमय अर्थात बोलचाल के सिद्धांत का महत्त्वपूर्ण स्थान है। भाषा के दो रूप हैं—मौखिक और लिखित। बोलचाल के बिना मौखिक रूप का अभ्यास तो हो ही नहीं सकता है। भाषायी कौशल विकसित करने की दृष्टि से कक्षा में बच्चों को बोलने के अधिक-से-अधिक अवसर देने चाहिए। अध्यापक प्रश्नोत्तर, कहानी-वर्णन, वाद-विवाद, कविता-पाठ, संवाद, घटना-वर्णन, भाषण एवं सस्वर पाठ आदि की सहायता से बच्चों में शुद्ध उच्चारण, उचित गति, हाव-भाव, उतार-चढ़ाव एवं प्रभावशाली ढंग से भावाभिव्यक्ति की योग्यता विकसित कर सकता है।

6. वैयक्तिक विभिन्नता का सिद्धांत (Principle of Individual Differences)—एक कक्षा में 40-50 विद्यार्थी होते हैं परंतु ये सभी विद्यार्थी समान योग्यता के नहीं होते। किसी को उच्चारण में कठिनाई होती है तो कोई सस्वर वाचन से डरता है। कोई छात्र प्रश्न के उत्तर नहीं दे पाता तो कोई व्याकरण संबंधी अशुद्धि करता है। कोई लिखने में अशुद्धि करता है तो किसी का लेख गंदा है। कहने का अभिप्राय यह है कि कोई भी दो बच्चे एक-से नहीं होते। प्रत्येक छात्र की सीखने की क्षमता अलग-अलग होती है। उनकी रुचि एवं अभिरुचि अलग-अलग होती है।

भाषा के अध्यापक का कर्तव्य है कि अपनी कक्षा के सभी छात्रों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं को जानने और उनकी विभिन्नता के अनुसार ही उनको शिक्षा देने का प्रयास करे। उनकी व्यक्तिगत विभिन्नताओं को पहचानकर ही उनकी योग्यताओं को विकसित करना चाहिए तथा उनकी व्यक्तिगत समस्याओं और कठिनाइयों को जानकर उन्हें दूर करने का प्रयास किया जाना चाहिए।

7. निश्चित उद्देश्य का सिद्धांत (Principle of Definitness of the Aims)—मातृभाषा हिंदी-शिक्षण के एक नहीं बल्कि अनेक उद्देश्य हैं जैसे—सुनने, बोलने, पढ़ने एवं लिखने के कौशल का विकास, सौंदर्यानुभूति, रुचि, अभिवृत्ति, सृजनात्मकता एवं समीक्षा आदि का विकास करना। इनमें से किसी उद्देश्य को अधिक महत्त्व देना या किसी को बिल्कुल ही छोड़ देना ठीक नहीं है। अध्यापक का कर्तव्य है कि वह शिक्षा देने से पहले पाठ के उद्देश्यों को निश्चित कर ले ताकि सभी उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विभिन्न क्रियाओं का चयन एवं व्यवस्था ठीक ढंग से कर सके।

8. अभ्यास का सिद्धांत (Principle of Practice)—भाषा एक कौशल है और उसका विकास अभ्यास पर निर्भर है। एक कहावत है—करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान। भाषा-शिक्षण में हर कौशल अभ्यास पर आधारित है। अत: अध्यापक का कर्तव्य है कि वह बच्चों में हर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
भाषायी कौशल को विकसित करने के लिए अधिक-से-अधिक अभ्यास कराए। जैसे-अशुद्ध उच्चारण करनेवाले को यदि बार-बार शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराया जाए, तो निश्चय ही वह शुद्ध उच्चारण करने लगेगा।

9. चयन का सिद्धांत (Principle of Selection)—मनोविज्ञान के अनुसार बालक की रुचि, योग्यता आदि में अंतर होता है। अत: अध्यापक को सभी छात्रों का उचित विकास करने के लिए चयन के सिद्धांत का पालन करना चाहिए। उसे बच्चे की योग्यता के अनुसार ही उचित शिक्षण-विधि का चयन करना चाहिए, क्योंकि सभी छात्रों के लिए एक-सी शिक्षण विधि का प्रयोग ठीक नहीं। इसी प्रकार शिक्षण-उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सोच-विचारकर चयन की गई क्रियाएँ एवं पाठ्य-सामग्री उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक होती हैं।

10. अनुपात और क्रम का सिद्धांत (Principle of proper Proportion and Order)—भाषा के दो रूप होते हैं—मौखिक और लिखित। मौखिक रूप पर अधिकार प्राप्त करने के लिए छात्र सुनता और बोलता है तथा लिखित रूप पर अधिकार प्राप्त करने के लिए पढ़ने और लिखने के कौशल का अर्जन करता है। भाषा सिखाने का भी यही स्वाभाविक क्रम है। इसी क्रम को ध्यान में रखते हुए भाषा का शिक्षण करते हुए अध्यापक को—

—पहले स्वयं बोलना चाहिए जिससे छात्र सुनकर समझने का प्रयास करें।

—फिर छात्रों को स्वयं बोलने का अवसर प्रदान करना चाहिए तथा उनकी मौखिक अभिव्यक्ति के दोषों को दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

—सुनना व बोलना सिखाने के कुछ समयोपरांत बच्चों को पढ़ना सिखाना चाहिए। जिससे वे दूसरों के लिखित विचारों को पढ़कर उनका अर्थ ग्रहण कर सकें।

—अंत में छात्रों को अपने भावों व विचारों को लिखकर अभिव्यक्त करना सिखाना चाहिए।

इस स्वाभाविक क्रम के साथ सुनना, बोलना, पढ़ना व लिखना, इन चारों कौशलों के उचित अनुपात का भी ध्यान रखना चाहिए। ऐसा न हो कि छात्र सुनना सीख ले और बोल न पाए या पढ़ना सीख ले और लिख न पाए। चारों कौशलों का विकास उचित अनुपात में होना चाहिए।

इसी प्रकार भाषा-शिक्षण में भाषायी योग्यताओं के उचित विकास की दृष्टि से उच्चारण, शब्द-भंडार, मुहावरे, अक्षर-विन्यास, व्याकरण, वाचन, लेखन आदि अंगों के उचित आनुपातिक विकास की ओर भी ध्यान देना चाहिए।

11. नियोजन का सिद्धांत (Principle of Planning)—कार्य प्रारंभ करने से पहले उसके करने के ढंग, उसमें प्रयुक्त होनेवाले साधन एवं उसमें लगनेवाले समय आदि की पूरी योजना बनाना ही नियोजन का सिद्धांत है। योजनाबद्ध रूप में किया गया कार्य सर्वदा सफलता प्रदान करता है। अतः अध्यापक को भी अपने शिक्षण को प्रभावशाली बनाने एवं सफलता प्रदान करने के उद्देश्य से पाठ को पढ़ाने से पूर्व ही योजना बना लेनी चाहिए कि उसे क्या पढ़ाना है, किस विधि से पढ़ाना है व किस-किस सामग्री की सहायता लेनी है।

12. आवृत्ति का सिद्धांत (Principle of Revision)—मनोवैज्ञानिक प्रयोगों ने यह सिद्ध कर दिया है कि एक बार सीखे गए ज्ञान को जितना दोहराया जाएगा, वह उतना ही अधिक स्थायी हो जाएगा। अत: पाठ को पढ़ाने के उपरांत उसी कालांश में विषय को दोहरा लेना चाहिए। इसके अलावा जब भी अवसर मिले, विषय की आवृत्ति करते रहना चाहिए।

13. बहुमुखी प्रयास का सिद्धांत (Principle of Multiple Attempts)—अपने शिक्षण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

को सहज, सरल व सुगम बनाने के लिए अध्यापक को बहुमुखी प्रयास का सिद्धांत अपनाना चाहिए। किसी पाठ को पढ़ाते समय स्वयं सस्वर वाचन, बच्चों से अनुकरण वाचन, उच्चारण, कठिन शब्दों के अर्थ व शब्दों की वर्तनी का अभ्यास, शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करना, व्याकरण के नियम, पाठ पर प्रश्न, भावाभिव्यक्ति एवं लिखित कार्य आदि कराना चाहिए।

14. अनुकरण का सिद्धांत (Principle of Imitation)—भाषा अनुकरण से सीखी जाती है। बालक अपने माता-पिता एवं परिवार के सभी सदस्यों का अनुकरण करके भाषा को सुनना और बोलना सीख लेता है। वह जैसा सुनता है वैसा ही बोलता है, जैसा देखता है वही लिखता है। अध्यापक इस बात का ध्यान रखते हुए भाषा का प्रयोग करने में हमेशा ही सावधान रहे। शुद्ध भाषा का प्रयोग करे जिससे बच्चे भाषा के शुद्ध रूप का ही अनुकरण करें।

इस प्रकार शिक्षण-क्रिया को सहज, सरल, सुगम, रोचक एवं प्रभावशाली बनाने के लिए शिक्षाशास्त्रियों ने शिक्षण के कई सामान्य सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है। अध्यापक को चाहिए कि वह अपने बच्चों की मानसिक क्षमताओं, रुचियों, योग्यताओं, शिक्षण-सामग्री एवं शिक्षण-परिस्थिति के अनुसार विभिन्न सिद्धांतों को अपनाकर अपनी शिक्षण-प्रक्रिया को रोचक, मनोवैज्ञानिक, उद्देश्यपूर्ण एवं प्रभावशाली बनाने का प्रयास करे।

अध्ययन के लिए प्रश्न

1. मातृभाषा के रूप में हिंदी-शिक्षण के सामान्य सिद्धांतों की विवेचना कीजिए।

2. भाषा-शिक्षण के सामान्य सिद्धांत क्या हैं? इन सिद्धांतों को हिंदी-शिक्षण में कहाँ तक लागू किया जा सकता है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

3. हिंदी शिक्षण से आप क्या समझते हैं? हिंदी-शिक्षण के सामान्य सिद्धांतों की विवेचना कीजिए।

4. मातृभाषा हिंदी का शिक्षण करते समय किन-किन सामान्य सिद्धांतों का पालन किया जाना चाहिए? स्पष्ट करें।

5. मातृभाषा-शिक्षण के सामान्य सिद्धांत क्या हैं? कक्षा में मातृभाषा की शिक्षा देते समय आप इनका अनुगमन करने के लिए किन बातों को ध्यान में रखेंगे? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

6. निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :

(i) मातृभाषा शिक्षण के सामान्य सिद्धांत

(ii) भाषा-शिक्षण का रुचि सिद्धांत

(iii) भाषा-शिक्षण में वैयक्तिक विभिन्नता का सिद्धांत

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4

भाषा-शिक्षण में शैक्षिक एवं अनुदेशनात्मक उद्देश्य
(Educational and Instructional Objectives in Language Teaching)

शिक्षण एक सोद्देश्य प्रक्रिया है। किसी-न-किसी विशिष्ट उद्देश्य की प्राप्ति के लिए ही शिक्षण की विभिन्न क्रियाओं का आयोजन किया जाता है। शिक्षण का सीधा संबंध अधिगम अनुभवों से होता है और अधिगम अनुभव व्यवहार-परिवर्तन से संबंधित हैं। यह व्यवहार परिवर्तन किसी भी स्तर पर हो सकता है। एक ओर तो यह किसी कक्षा के शिक्षण परिणामों तक सीमित हो सकता है तो दूसरी ओर शिक्षा की प्रक्रिया के द्वारा राष्ट्रीय प्रेम या अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना को विकसित करने के रूप में व्यापक भी हो सकता है। शैक्षिक प्रक्रिया या शिक्षण अधिगम कार्य के द्वारा हम जिस मंजिल तक पहुँचना चाहते हैं उसके लिए हम विभिन्न प्रकार की तकनीकी शब्दावली को प्रयोग में लाते हैं। जैसे— शैक्षिक लक्ष्य, शैक्षिक उद्देश्य तथा अनुदेशनात्मक उद्देश्य। अत: एक अध्यापक को अपना कार्य सफलतापूर्वक संपन्न करने के लिए इस प्रकार की शब्दावली और इसके पारस्परिक अंतर का स्पष्ट ज्ञान होना चाहिए।

शैक्षिक लक्ष्य, शैक्षिक उद्देश्य और अनुदेशनात्मक उद्देश्यों का अर्थ
(Meaning of Educational Aims, Educational Objectives and Instructional Objectives)

शैक्षिक लक्ष्य या आदर्श उस अंतिम स्थिति के द्योतक हैं जिसे हम शिक्षा के द्वारा प्राप्त करना चाहते हैं। बहुधा वे इतने व्यापक होते हैं या पूर्णता की उस स्थिति का बोध कराते हैं जिस तक पहुँचना संभव भी हो सकता है और असंभव भी, जैसे—बच्चे का नैतिक या आध्यात्मिक विकास, वर्गहीन समाज की स्थापना, संसार में गरीबी, अज्ञानता व निरक्षरता का उन्मूलन करना आदि। वे इतने अस्पष्ट और अनिश्चित होते हैं कि उपलब्ध शैक्षिक ढाँचे और कक्षा की परिस्थितियों में उनकी प्राप्ति कठिन ही नहीं, असंभव भी हो सकती है।

इसके विपरीत अनुदेशनात्मक उद्देश्य बहुत संकुचित व विशिष्ट होते हैं। ये निश्चित, संक्षिप्त, स्पष्ट, व्यावहारिक व प्राप्त करने के योग्य होते हैं। ये पूर्व निर्धारित होते हैं और इनका निर्माण इस प्रकार किया जाता है कि निश्चित अवधिवाले एक निर्धारित कालांश में संपन्न किए गए सामान्य कक्षा-शिक्षण द्वारा आसानी से उनकी प्राप्ति हो सकती है। ये शिक्षण व अधिगम के वांछित परिणाम होते हैं। अतः इन्हें शिक्षण तथा अधिगम उद्देश्यों का नाम भी दे दिया जाता है। इनका उल्लेख हमेशा अपेक्षित छात्र

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

व्यवहार या वांछित व्यवहार परिवर्तन के रूप में किया जाता है और इनका मापन भी आसानी से किया जा सकता है। कक्षा में संपन्न अनुदेशनात्मक कार्य के पश्चात विद्यार्थी जिस प्रकार के अपेक्षित व्यवहार का प्रदर्शन कर सकेंगे इस व्यवहार को मापन योग्य उचित शब्दावली में व्यक्त करना ही अनुदेशनात्मक उद्देश्यों का प्रयोजन है।

शैक्षिक उद्देश्य, शैक्षिक लक्ष्य एवं शिक्षण उद्देश्य के बीच की स्थिति है। ये शैक्षिक लक्ष्यों से अधिक विशिष्ट, सीमित एवं सुनिश्चित होते हैं परंतु शिक्षण उद्देश्य से कम विशिष्ट और अधिक विस्तृत होते हैं। ये शिक्षा के सामान्य प्रयोजनों को सिद्ध करते हैं। किसी भी विषय के शिक्षण उद्देश्य शैक्षिक उद्देश्यों पर ही आधारित होते हैं। उपलब्ध शैक्षिक ढाँचे में इन शैक्षिक उद्देश्यों को आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। हर राष्ट्र और समाज के शैक्षिक उद्देश्यों में भिन्नता होती है; जैसे—भारतवर्ष में प्रजातंत्रीय नेतृत्व, व्यावसायिक कुशलता, धर्म-निरपेक्षता, देशप्रेम आदि को विकसित करना आदि शैक्षिक उद्देश्यों की श्रेणी में आते हैं। इनका उद्देश्य व्यक्ति एवं समाज का हित करना है। ये सामान्य शिक्षा योजना द्वारा बच्चे के व्यक्तित्व के ज्ञानात्मक, भावनात्मक व क्रियात्मक पक्षों को उचित रूप से विकसित करने में सहायता करते हैं।

इस प्रकार शिक्षण उद्देश्य, शैक्षिक उद्देश्यों पर आधारित होते हैं और शैक्षिक उद्देश्य शैक्षिक लक्ष्यों पर निर्भर करते हैं। ये उद्देश्य और लक्ष्य एक-दूसरे में किस तरह अंतर्निहित होते हैं, इसे निम्न रेखाचित्र द्वारा समझा जा सकता है :—

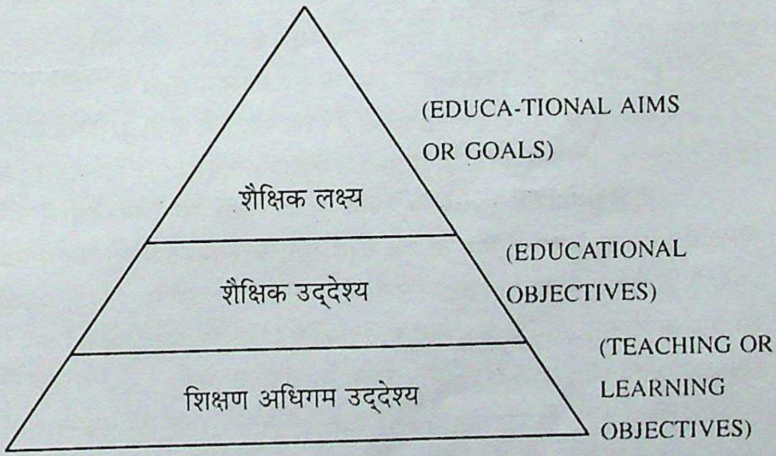

चित्र 4.01 उद्देश्यों का क्रम

उपरोक्त चित्र द्वारा प्रतीत होता है कि अनुदेशनात्मक शिक्षण-अधिगम उद्देश्य वे मूलभूत प्रयोजन हैं जिन्हें सीमित समय एवं साधनों के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है जबकि शैक्षिक उद्देश्य अथवा लक्ष्य बहुत व्यापक होते हैं और अपने-आपमें उनकी प्राप्ति काफी कठिन होती है।

उद्देश्यों के इन व्यापक और सीमित दृष्टिकोण और उनके प्रभाव-क्षेत्र को निम्नांकित रेखाचित्र द्वारा प्रदर्शित किया गया है :—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

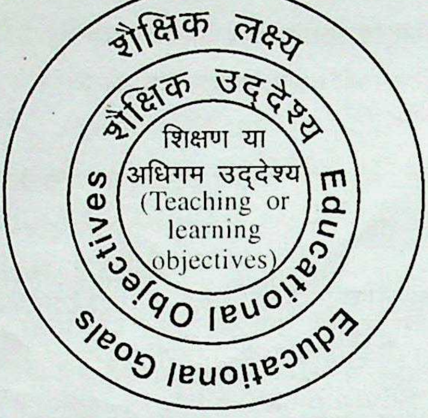

चित्र 4. 02 उद्देश्यों का रेखाचित्रीय निरूपण

इस दृष्टिकोण के अनुसार शैक्षिक लक्ष्य वह विशाल समुद्र है जिसके गर्भ में अनेक शैक्षिक उद्देश्य समाए हुए हैं और आगे चलकर अनुदेशनात्मक या शिक्षण व अधिगम उद्देश्य इन्हीं शैक्षिक उद्देश्यों के अंतर्गत समाविष्ट हो जाते हैं।

शैक्षिक एवं अनुदेशनात्मक उद्देश्यों का वर्गीकरण (Taxonomy of Educational and Instructional Objectives)

जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि किसी शिक्षण कार्य के विशिष्ट परिणामों की व्याख्या करनेवाले शिक्षण व अधिगम उद्देश्य एक व्यापक वर्ग, जिसे शैक्षिक उद्देश्य कहा जाता है, में समाविष्ट हो जाते हैं। इन शैक्षिक उद्देश्यों का सीधा संबंध बच्चे के व्यवहार के ज्ञानात्मक, भावात्मक व क्रियात्मक—तीनों पक्षों (Domains) से है। इस प्रकार से कक्षा के कार्यों के फलस्वरूप विशिष्ट और संक्षिप्त शिक्षण-अधिगम परिणामों के रूप में शैक्षिक उद्देश्यों का विश्लेषण किया जा सकता है।

अनुदेशनात्मक एवं शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण करने की दिशा में अनेक विद्वानों के द्वारा विभिन्न प्रयास किए गए हैं परंतु बी.एस.ब्लूम और उनके सहयोगियों (ब्लूम एवं अन्य Bloom et al, 1956) के द्वारा किया गया प्रयास प्रशंसनीय है। ब्लूम 'महाविद्यालयों व विश्वविद्यालय परीक्षकों की एक अमेरिकन समिति' के द्वारा प्रस्तुत की गई 'शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण (Taxonomy of Educational Objectives) नामक रचना के संपादक थे।

'टेक्सोनोमी' (Taxonomy) का अर्थ वर्गीकरण करने की एक प्रणाली है। जिस प्रकार डेवी (Dewey) ने पुस्तकालय की विभिन्न पुस्तकों एवं ग्रंथों के अलग-अलग वर्गीकरण के लिए अपनी 'दशमलव प्रणाली' (Decimal System) प्रस्तुत की थी, ब्लूम ने भी उद्देश्यों का वर्गीकरण करने में इसी प्रकार की कार्य-कुशलता का परिचय देकर शैक्षिक उद्देश्यों को बहुत ही सहज एवं स्पष्ट बना दिया है।

अनुदेशनात्मक एवं शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण इस आधार पर किया गया है कि शिक्षण अधिगम प्रक्रिया किसी पाठ्यपुस्तक या अधिगम अनुभव द्वारा विद्यार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन लाने का एक प्रयास है। व्यवहार के तीन पक्ष (Domains) हैं—ज्ञानात्मक (Cognitive—knowing), भावात्मक (Affective—Feeling) और क्रियात्मक (Psychomotor—doing)। ब्लूम ने इन तीनों पक्षों (Domains) के आधार पर अनुदेशात्मक या शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण निम्न प्रकार

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किया है :—

(i) ज्ञानात्मक उद्देश्य (Cognitive Objectives)

(ii) भावात्मक उद्देश्य (Affective Objectives)

(iii) क्रियात्मक उद्देश्य (Psychomotor Conative Objectives)

प्रथम ज्ञानात्मक पक्ष का वर्गीकरण ब्लूम तथा अन्यों (Bloom, et at, 1956) ने दूसरे भावात्मक पक्ष का वर्गीकरण ब्लूम व उसके सहयोगी क्रथवाल व मरीआ (Krath wohl and Maria, 1964) ने और तीसरे क्रियात्मक पक्ष का वर्गीकरण सिंपसन (1966) तथा हेरो (1972) ने प्रस्तुत किया है। यहाँ सभी पक्षों का वर्गीकरण संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है।

ज्ञानात्मक पक्ष के शैक्षिक एवं अनुदेशनात्मक उद्देश्यों का वर्गीकरण (Taxonomy of Educational and Instructional Objectives in the Cognitive Domain)

ब्लूम ने ज्ञानात्मक पक्ष के उद्देश्यों को सरल से कठिन (Simple to Complex) और शिक्षण-अधिगम के निम्न स्तर से शुरू करके ऊँचे-से-ऊँचे स्तर तक ले जाने के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए छः वर्गों में विभाजित किया है। ये वर्ग हैं—ज्ञान, बोध, प्रयोग, विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन। साथ ही उन्होंने हर वर्ग के अधिगम परिणामों को भी स्पष्ट करने का प्रयास किया है, जैसा कि निम्नलिखित तालिका में प्रस्तुत किया जा रहा है :—

तालिका 4.01 ज्ञानात्मक पक्ष के उद्देश्यों का वर्गीकरण (Taxonomy of Objectives in the Cognitive Domain)

1. ज्ञान (Knowledge) (सबसे निम्न स्तर)

(ए) विशिष्टताओं का ज्ञान (Knowledge of Specifics)

(i) पदों का ज्ञान (Knolwledge of Terminology)

(ii) विशिष्ट तथ्यों का ज्ञान (Knowledge of specific facts)

(बी) विशिष्ट ज्ञान से संबंध स्थापित करने के उपायों एवं परंपराओं का ज्ञान (Knowledge of ways and means of dealing with specific)

(i) परंपराओं का ज्ञान (Knowledge of conventions)

(ii) प्रचलन और तारतम्य का ज्ञान (Knowledge of trends and sequences)

(iii) वर्गीकरण एवं वर्गों का ज्ञान (Knowledge of classifications and categories)

(iv) कसौटियों का ज्ञान (Knowledge of criteria)

(v) विधियों का ज्ञान (Knowledge of methodology

(सी) ज्ञान के किसी क्षेत्र के सार्वभौमिक और अमूर्त प्रत्ययों का ज्ञान (Knowledge of universals and abstractions in a field)

(i) प्रनियमों और सामान्यीकरण का ज्ञान (Knowledge of principles and generalizations)

---

* Abstracted from Bloom. B. S. (ed.) et al (1956) ; A Taxonomy of educational Objectives. Hand Book 1 : The Cognitive Domain, Longmans, Green.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2. बोध (Comperehension) (ज्ञान के बाद दूसरे क्रम का निम्न स्तर)

(ए) अनुवाद (Translation)

(बी) अर्थापन (Interpretation)

(सी) बहिर्वेशन (Extrapolation)

3. प्रयोग (Application) (तीसरे क्रम का निम्न स्तर)

4. विश्लेषण (Analysis) (उच्च स्तर)

(ए) तत्वों का विश्लेषण (Analysis of elements)

(बी) संबंधों का विश्लेषण (Analysis of Relationship)

(सी) संगठनात्मक प्रनियमों का विश्लेषण (Analysis of organisational principles)

5. संश्लेषण (Synthesis) (उच्चतर स्तर)

(ए) एक नवीन संप्रेषण का उत्पादन (Production of unique communication)

(बी) किसी प्रस्तावित कार्यवाही के लिए योजना बनाना (Production of a plan or a proposed set of operations)

(सी) अमूर्त संबंधों के समुच्चय का निर्माण (Derivation of a set of abstract relations)

6. मूल्यांकन (Evaluation) (उच्चतम स्तर)

(ए) आंतरिक साक्ष्यों के आधार पर मूल्य-निर्धारण (Judgement in terms of internal evidence)

(बी) बाह्य कसौटियों के आधार पर मूल्य निर्धारण (Judgement in terms of external criterial)

ब्लूम द्वारा प्रस्तुत किए गए ज्ञानात्मक पक्ष के उपरोक्त वर्गीकरण को हम इस प्रकार से स्पष्ट कर सकते हैं :—

1. ज्ञान (Knowledge)—इस वर्ग में विद्यार्थियों को पाठ्यवस्तु के विशिष्ट तथ्यों, पदों, परंपराओं, प्रचलनों, वर्गों, कसौटियों, विधियों, प्रनियमों, सामान्यीकरणों, सिद्धांतों एवं संरचनाओं का प्रत्यभिज्ञान (Recognition) और प्रत्यास्मरण (Recall) कराने का प्रयास किया जाता है तथा कक्षा में इसके लिए समुचित परिस्थितियाँ उत्पन्न की जाती हैं।

2. बोध (Comprehension)—ज्ञान वर्ग में जिन तथ्यों, पदों, परंपराओं, वर्गों और प्रनियमों आदि का ज्ञान कराया जाता है यहाँ इस वर्ग में उनके बारे में भलीभाँति अवबोध या समझ विकसित की जाती है। जिससे विद्यार्थी उस प्राप्त ज्ञान को अपने शब्दों में अनुवाद करके व्यक्त कर सकें और उनकी व्याख्या, गणना तथा उल्लेख कर सकें। ज्ञान के बिना बोध नहीं हो सकता है। अत: ज्ञान वर्ग इस वर्ग के लिए आवश्यक आधार है।

3. प्रयोग (Application)—किसी भी तथ्य, नियम या सिद्धांत का सामान्यीकरण करने, उनकी कमज़ोरियों का निदान करने तथा पाठ्यवस्तु का प्रयोग करने के लिए यह आवश्यक है कि पहले उस वस्तु का ज्ञान व बोध होना चाहिए। तब ही विद्यार्थी उचित ढंग से, अपनी योग्यतानुसार व्यक्तिगत परिस्थितियों में इस ज्ञान का प्रयोग कर सकेंगे। अत: ज्ञान व बोध वर्ग इस वर्ग के आधार हैं।

4. विश्लेषण (Analysis)—इस वर्ग में विद्यार्थियों को तथ्यों, नियमों या सिद्धांतों आदि का विश्लेषण, उनके संबंधों का विश्लेषण तथा उनका व्यवस्थित सिद्धांतों के रूप में विश्लेषण करना होता है। सीखी गई वस्तु के तत्वों को इस प्रकार अलग-अलग करने और उनका संबंध स्थापित करने के लिए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ज्ञान, बोध व प्रयोग के उद्देश्यों की प्राप्ति आवश्यक है।

5. संश्लेषण (Synthesis)—विद्यार्थी पहले चार वर्गों के उद्देश्यों की प्राप्ति के पश्चात ही सीखी गई पाठ्यवस्तु के तथ्यों, नियमों, सिद्धांतों आदि के तत्वों को एक नवीन रूप में व्यवस्थित करके एक नया अनोखा संप्रेषण, योजना या प्रारूप तैयार करते हैं।

6. मूल्यांकन (Evaluation)—किसी भी शिक्षण कार्य की सफलता इस बात पर निर्भर है कि विद्यार्थी यह निर्णय ले सकें कि उन्होंने जो भी अधिगम किया है, वह मूल्य की दृष्टि से उपयोगी है या अनुपयोगी। अत: इस स्तर पर अंत:साक्ष्यों व बाह्य कसौटियों के आधार पर बच्चों में पाठ्यवस्तु के तथ्यों, सिद्धांतों और नियमों आदि के बारे में निर्णय लेने की योग्यता विकसित की जाती है।

इस प्रकार विभिन्न शिक्षण विषयों में निहित तथ्यों, सिद्धांतों आदि की सहायता में ज्ञान से लेकर मूल्यांकन तक के उद्देश्यों की प्राप्ति करके ज्ञानात्मक पक्ष को विकसित करने का प्रयास किया जाता है।

भावात्मक पक्ष के शैक्षिक एवं अनुदेशनात्मक उद्देश्यों का वर्गीकरण (Taxonomy of Educational and Instructional objectives in the Affective Domain)

ब्लूम तथा उसके सहयोगियों क्रथवाल और मरिया (Bloom and his associates krathwohl & Maria, 1964) ने भावात्मक पक्ष के उद्देश्यों का जो वर्गीकरण निम्न स्तर से उच्च स्तर पर जाते हुए जिस रूप में प्रस्तुत किया है वह निम्न है—

तालिका 4.02 भावात्मक पक्ष के उद्देश्यों का वर्गीकरण (Taxonomy of objectives in Affective Domain)

1. आग्रहण या ध्यान देना (Receiving or Attending)—सबसे निम्न स्तर का उद्देश्य

(a) अभिज्ञता (चेतना) (Awareness)

(b) ग्रहण करने की तत्परता (Willingness to receive)

(c) नियंत्रित या चयनात्मक अवधान (Controlled or selected attention)

2. अनुक्रिया (Responding)—

(a) अनुक्रिया करने की सम्मति देना (Acquiesence in Responding)

(b) अनुक्रिया करने की तत्परता (Willingness to respond)

(c) अनुक्रिया करने में संतुष्टि (Satisfaction in response)

3. आकलन (Valuing)

(a) किसी मूल्य की स्वीकृति (Acceptance of value)

(b) किसी मूल्य के लिए अधिक लगाव यां अभिरुचि (Preference for a value)

(c) प्रतिबद्धता (Commitment)

4. संगठन (Organisation)

(a) एक मूल्य प्रणाली को धारण करना (Conceptualisation of a value)

(b) एक मूल्य प्रणाली का संगठन करना (Organisation of a value system)

5. मूल्य प्रणाली का चरित्रीकरण अथवा विशेषीकरण (Characterisation by a value

* Abstracted from Krathwohl D. R., Bloom B. S. and Maria B. B. (1964). Taxonomy of Educational objectives, Hand book, II The Affective Domain, New York, David Mckay.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
or value complex)—उच्चतर स्तर का उद्देश्य

(a) सामान्यीकृत समुच्चय (Generalised set)

(b) चरित्रीकरण या विशेषीकरण (Characterisation)

इस प्रकार हम देखते हैं कि ब्लूम और उसके सहयोगियों ने भावात्मक पक्ष के शैक्षिक उद्देश्यों को पाँच वर्गों में विभाजित किया है जिनको निम्न ढंग से स्पष्ट किया जा सकता है :

1. आग्रहण या ध्यान देना (Receiving or Attending)—भावात्मक विकास की दृष्टि से सबसे पहले मानव मूल्यों की अनुभूति करानी होती है। अनुभूति के लिए किसी-न-किसी प्रकार के उद्दीपन का होना अत्यंत आवश्यक है। इस उद्दीपन के प्रति विद्यार्थी को आवश्यक रूप से आकृष्ट होना चाहिए और उसके प्रति अनुक्रिया करने की इच्छा उत्पन्न होनी चाहिए। इसलिए इस वर्ग में अध्यापक का कार्य विद्यार्थियों को प्रस्तुत विषयवस्तु के प्रति पर्याप्त रूप से आकर्षित करना तथा इस प्रकार से अभिप्रेरित करना है कि विद्यार्थियों में मानवीय मूल्यों को भलीभाँति ग्रहण करने के लिए पर्याप्त इच्छा जाग्रत हो जाए। इच्छा जाग्रत होने और ध्यानाकर्षित होने की यह स्थिति विद्यार्थियों में उचित समय तक बनी रहे, इस कार्य हेतु पर्याप्त चेष्टा ही अध्यापक का कर्तव्य होता है।

2. अनुक्रिया (Responding)—भावात्मक विकास का दूसरा स्तर विद्यार्थियों की उचित अनुक्रिया से संबंधित है। इस वर्ग के लिए आग्रहण वर्ग एक आधार का काम करता है। विद्यार्थियों में मूल्यों को उचित रूप से ग्रहण करने की इच्छा जब जाग्रत हो जाती है और जब वह शैक्षिक गतिविधियों में सुरुचिपूर्वक भाग लेना प्रारंभ कर देता है तभी उसके द्वारा की हुई अनुक्रियाओं की पहचान हो सकती है। विद्यार्थी अनुक्रिया करने में समर्थ हों, इसके लिए उन्हें अनुक्रिया करने के लिए तैयार किया जाना चाहिए, उनमें अनुक्रिया करने की इच्छा जाग्रत करनी चाहिए और वे अनुक्रिया करने में पर्याप्त संतुष्टि का अनुभव करें, इसके लिए आवश्यक प्रयत्न करने चाहिए। इस प्रकार से यह वर्ग विद्यार्थियों से आत्माभिव्यक्ति, आत्मविकास और उससे प्राप्त संतुष्टि को विकसित करने में सहायता करता है।

3. आकलन (Valuing)—इस वर्ग की क्रियाएँ अपने दोनों वर्गों की क्रियाओं व उनके परिणामों पर आधारित हैं। जब कोई विद्यार्थी किसी वस्तु या विचार के प्रति पर्याप्त रूप से आकर्षित होकर उसके प्रति अपनी अनुक्रिया व्यक्त करता है तो उसकी यह अनुक्रिया, वह वस्तु या विचार उतने ही मूल्यवान होते हैं जितना कि उन्हें वह अपने प्रयोजन-पूर्ति का साधन समझता है। यहाँ उस वस्तु या विचार का सामाजिक मूल्य भी आँका जाता है। इस तरह व्यक्तिगत और सामाजिक—दोनों प्रकार के मूल्यों की प्राप्ति की दृष्टि से उसका संबंधित व्यवहार प्रभावित होता है। इस प्रकार इस स्तर पर विद्यार्थियों में किसी विशेष मूल्य को स्वीकार करने व किसी विशेष मूल्य के प्रति अधिक लगाव या अभिरुचि प्रकट करते हुए उसके पालन के लिए वचनबद्ध होने की योजना को विकसित करने का प्रयास किया जाता है।

4. संगठन (Organisation)—जैसे-जैसे विद्यार्थी किसी वस्तु या विचार के मूल्य को ध्यान में रखते हुए उसके प्रति अपनी व्यवहार संबंधी अनुक्रियाएँ करना सीखता जाता है, वैसे-वैसे इस दिशा में आगे बढ़ते हुए जब वह कई प्रकार के व्यक्तिगत व सामाजिक मूल्यों को ग्रहण करता है तो कई परिस्थितियों में उसे ऐसा आभास होता है कि ये मूल्य अंतर्विरोधी हैं। उनके इस टकराव को रोकने के लिए तथा इन मूल्यों को भली-भाँति अर्जित करने के लिए मूल्यों के स्वरूप और संप्रत्यय का ज्ञान कराना जरूरी हो जाता है। इस ज्ञान के बाद ही इनका व्यवस्थापन और संगठन करना होता है। इसके लिए एक अध्यापक को विभिन्न मूल्यों के व्यक्तिगत एवं सामाजिक हितचिंतन को अच्छी तरह ध्यान में रखकर इस

CC0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रकार उचित समन्वय करना चाहिए कि व्यक्तिगत हितचिंतन होते हुए भी सामाजिक मूल्यों की प्राप्ति हो सके। इन मूल्यों के आपसी संबंधों को अच्छी प्रकार समझकर उनको एक ऐसी प्रणाली के अंदर गठित करना चाहिए जिससे विद्यार्थियों में एक सशक्त चरित्र उभरकर सामने आ सके। इस प्रकार के स्तर की प्राप्ति इस वर्ग के पहले तीनों वर्गों के उद्देश्यों को प्राप्त होने के बाद ही हो सकती है।

5. मूल्यों का चरित्रीकरण या विशेषीकरण (Characterisation by a value or value complex)—भावात्मक पक्ष के विकास के इस स्तर तक पहुँचने के लिए इसके पहले चारों वर्गों के उद्देश्यों की प्राप्ति आवश्यक है। यहाँ आकर विद्यार्थी के व्यक्तिगत व सामाजिक मूल्यों के समन्वय से उत्पन्न जिस मूल्य प्रणाली अथवा चरित्र की भूमिका बन चुकी होती है, उसे विशेष रूप प्रदान करने का प्रयत्न किया जाता है। चरित्र संबंधी यह स्तर व्यक्ति का वह अपेक्षाकृत स्थायी और वैयाक्तिक रूप होता है जिसके आधार पर उसके व्यक्तित्व की पहचान होती है। इस प्रकार अपने अंदर विभिन्न मूल्यों को आत्मसात करके वह भावात्मक विकास के उच्चस्तर को प्राप्त करता है। इसीलिए चरित्रीकरण या विशेषीकरण भावात्मक क्षेत्र के उद्देश्यों में सर्वोपरि है।

क्रियात्मक पक्ष के शैक्षिक अनुदेशात्मक उद्देश्यों का वर्गीकरण (Taxonomy of Educational and Instructional objectives in the Conative or Psychomotor Domain)

अपने चारों ओर फैले भौतिक और सामाजिक वातावरण के साथ सही ढंग से समायोजन करने के लिए बालक का क्रियात्मक या मनोशारीरिक विकास आवश्यक है। बालक के व्यवहार के इस क्रियात्मक या मनोशारीरिक पक्ष से संबंधित उद्देश्यों को वर्गीकृत करने का सबसे पहला प्रयत्न सिंपसन (Simpson, 1966) द्वारा किया गया। बाद में हेरो (Harrow, 1972) ने इससे आगे कुछ विकास किया। हैरो (Harrow, 1972) ने इन उद्देश्यों को छः वर्गों में विभाजित किया है। इस वर्गीकरण को आगे इसी अध्याय की तालिका नं. 4.05 में देखा जा सकता है। यहाँ वर्गीकृत अंगों का आवश्यक वर्णन किया जा रहा है।

1. सहज क्रियात्मक अंगसंचालन (Reflex Movements)—व्यवहार के क्रियात्मक पक्ष का यह वर्ग सबसे निम्न स्तर का है। ये क्रियाएँ किसी वस्तु के संपर्क में आते ही बिना किसी इच्छा के अपने आप ही होने लगती हैं। ये स्वचालित स्नायुतंत्र व मस्तिष्क के द्वारा संचालित व नियंत्रित होती हैं। इसलिए ये क्रियाएँ जन्म से मृत्यु तक विकसित होती रहती हैं। इनके बिना जीवन असंभव है। जब बच्चा अपने चारों ओर फैले किसी उद्दीपन के संपर्क में आता है तो वह कोई-न-कोई प्रतिक्रिया अनजाने में ही व्यक्त करता है। जैसे हाथ पर चींटी गिरते ही हाथ झटक देता है। इस प्रकार से मानव के सभी प्रकार के व्यवहार इन सहज क्रियाओं पर आधारित हैं। अतः इस वर्ग में विद्यार्थी की इन्हीं सहज क्रियाओं को और भी सजग बनाने का प्रयास किया जाता है।

2. आधारभूत अंगसंचालन (Basic fundamental Movement)—प्रथम वर्ग की सहज क्रियाओं के आधार पर ही बालक में स्वाभाविक आधारभूत अंगसंचालन संबंधी क्रियाएँ विकसित होती हैं। किसी प्रकार का आदेश मिलते ही बच्चा इस प्रकार का अंगसंचालन करने लगता है, परंतु वह इन क्रियाओं पर अधिक देर तक नियंत्रण नहीं कर सकता है जैसे—उछलना, कूदना। मनुष्य के भावी जीवन में सुदृढ़ एवं सशक्त अंगसंचालन की क्षमता विकसित करने के लिए इस प्रकार की क्रियाओं का प्रशिक्षण आवश्यक है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3. शारीरिक योग्यताएँ (Physical Abilities)—शारीरिक अंगों के उचित संचालन से ही शारीरिक योग्यता विकसित होती है तथा शारीरिक योग्यता से ही अंगसंचालन में सहायता मिलती है। अत: अंगसंचालन संबंधी क्रियाओं में और भी परिपक्वता लाने के लिए बालक की शक्ति व सामर्थ्य को विकसित करने का प्रयास करना ही इस वर्ग का उद्देश्य है। शक्ति व सामर्थ्य की सहायता से ही बालक जीवन की कठिनाइयों का सामना करता है और वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करता है। अत: इस वर्ग में बच्चे को शक्ति का प्रयोग करने, किसी भी स्थिति को सहन करने और उसके अनुसार गति करने की क्रिया में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। इन योग्यताओं की सहायता से ही बालक बाद में विभिन्न कौशलों को अर्जित करता है।

4. प्रत्यक्षीकरण योग्यताएँ (Perceptual Abilities)—इन योग्यताओं को अर्जित करने के लिए पेशीय क्रियाएँ व शारीरिक योग्यताएँ आधार का काम करती हैं। प्रत्यक्षीकरण योग्यताएँ बच्चे की कर्मेद्रिंयों व ज्ञानेद्रिंयों के सामंजस्य पर निर्भर करती हैं। बच्चा जानबूझकर, अपनी इच्छानुसार इन योग्यताओं को अर्जित करने का प्रयास करता है। इन कौशलों की सहायता से बच्चा वातावरण में फैले उद्दीपनों को पहचानते व समझते हुए, उनके साथ समायोजन करने में सफल होता है। साथ ही अपनी पाँचों ज्ञाद्रियों से प्राप्त ज्ञान में विभेद करने की योग्यता भी अर्जित करता है, जैसे—छूकर, देखकर, सुनकर, सूंघकर पहचानना और अंतर बताना। इन्हीं योग्यताओं की सहायता से बाद में उच्च कोटि की पेशीय क्रियाएँ विकसित होती हैं।

5. कौशलयुक्त अंगसंचालन (Skilled Movements)—पहले चारों वर्गों में अर्जित योग्यताओं व क्रियाओं के आधार पर ये कौशल युक्त अंगसंचालन संबंधी क्रियाएँ विकसित होती हैं। इनके लिए बच्चे को पूर्ण प्रशिक्षण लेना होता है। तभी वह इस प्रकार के कौशलयुक्त जटिल अंगसंचालन की क्रियाएँ कर सकता है। पहले इन क्रियाओं को जानबूझकर सीखना पड़ता है, फिर इनका अभ्यास करना पड़ता है और तब अच्छी तरह से सीख लेने के पश्चात छात्र बिना किसी विशेष प्रयास के इन क्रियाओं को पूर्ण कौशल के साथ प्रदर्शित करने में समर्थ हो जाता है, जैसे—नृत्य-कौशल, वाद्य-कौशल, तैरने का कौशल आदि।

6. सुसंबंद्ध या सांकेतिक संप्रेषण (Non-Discussive Communications)—सांकेतिक संप्रेषण या सुसंबद्ध संप्रेषण वे व्यवहार हैं कि जिनके द्वारा विद्यार्थी बिना कहे ही अपने भावों को पूर्ण कौशल के साथ अभिव्यक्त कर सके। मनोपेशीय क्रियाएँ इस कार्य हेतु आवश्यक आधार का काम करती हैं। अत: पहले पूर्व कौशल अर्जित कर लेने के पश्चात विद्यार्थी में इतनी योग्यता आ जाती है कि वह सामान्य मुखाकृति या भावभंगिमा से लेकर पूर्ण रूप से कौशलयुक्त व्यवहार एवं अभिनय के द्वारा अपने भावों का संप्रेषण कर सकता है।

उद्देश्यों को व्यवहारपरक शब्दावली में लिखना
(Writing objectives in Behaviour Terms)

ब्लूम द्वारा किए गए उद्देश्यों के वर्गीकरण की मुख्य कमी यह है कि इसमें शिक्षण अधिनियम के उद्देश्यों को विद्यार्थियों के अंत्य व्यवहार (Terminal Behaviour) के रूप में स्पष्ट नहीं किया गया है, जैसे यह स्पष्ट नहीं होता कि शिक्षण कार्य की समाप्ति पर छात्र किस कार्य को करने की योग्यता प्राप्त कर लेगा। यदि इन उद्देश्यों को व्यावहारिक भाषा में स्पष्ट कर दिया जाए तो उद्देश्यों का यह विशिष्टीकरण, शिक्षण अधिगम कार्य में अधिक प्रभावशाली और उद्देश्यपूर्ण सिद्ध होगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अगर रचना की दृष्टि से देखा जाए तो शैक्षिक और अनुदेशनात्मक उद्देश्यों के मुख्यतया दो भाग हैं :—

(i) अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन (Modification of behaviour)

(ii) व्यवहार में परिवर्तन लानेवाली विषयवस्तु (Content Part)

पहला भाग उन व्यवहार-परिवर्तनों की ओर संकेत करता है जो संबंधित अनुदेशन या अधिगम अनुभवों के द्वारा अधिगमकर्ता के व्यवहार में लाए जाते हैं। दूसरा विषयवस्तु भाग संबंधित अनुदेशन के द्वारा प्रदान किए गए सामान्य पाठ्यक्रम और पाठ्यचर्या के विशिष्ट भाग की ओर संकेत करता है। इसके माध्यम से ही व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाना संभव होता है।

उद्देश्य को व्यवहारपरक शब्दावली में लिखने के लिए निम्नलिखित तीन बातों को ध्यान में रखना होता है :—

(i) उद्देश्य की प्रकृति जैसे—ज्ञान, बोध, प्रयोग आदि।

(ii) व्यवहार का पक्ष या क्षेत्र जैसे—ज्ञानात्मक, भावात्मक आदि।

(iii) विषयवस्तु का वह विशिष्ट भाग जिसके माध्यम से व्यवहार में परिवर्तन लाने का कार्य किया जाता है, जैसे—मौलिक अधिकार, सिंचाई के साधन, ऊर्जा के स्रोत आदि।

इन उद्देश्यों को व्यावहारिक भाषा में लिखने के लिए कई विधियाँ या उपागम प्रयोग में लाए जाते हैं। यहाँ इस कार्य के लिए निम्न तीन उपागमों का वर्णन किया जा रहा है :—

1. राबर्ट मेगर उपागम (Robert Mager's Approach)
2. राबर्ट मिलर उपागम (Robert Miller's Approach)
3. आर.सी.ई.एम. उपागम (R. C. E. M. Approach)

1. राबर्ट मेगर उपागम (Robert Mager's Approach)—राबर्ट मेगर (Robert Mager, 1962) के अनुसार छात्रों के अपेक्षित अंत्य व्यवहार (Expected Terminal Behaviour) के रूप में अनुदेशनात्मक उद्देश्यों को भली-भाँति लिखा जा सकता है। इन उद्देश्यों को लिखने के लिए निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए :—

(i) अंत्य व्यवहार की पहिचान और उसका नामकरण।

(ii) उन सभी महत्त्वपूर्ण परिस्थितियों का वर्णन जिनके अंतर्गत छात्रों में अपेक्षित व्यवहार करने की आशा की जाती है।

(iii) विद्यार्थियों की उपलब्धि (अपेक्षित अंतिम व्यवहार) की परीक्षा के लिए मापदंड निर्धारित करना जिससे यह पता लगाया जा सके कि व्यवहार के स्वीकृत स्तर पर आने के लिए विद्यार्थी को अपने व्यवहार में कितना परिवर्तन लाना है।

मेगर उपागम में उद्देश्यों को व्यावहारिक रूप में लिखने के लिए ब्लूम द्वारा प्रस्तुत किए गए उद्देश्यों के वर्गीकरण को अपना आधार बनाया है। विभिन्न उद्देश्यों को लिखने के लिए मेगर ने कार्यपरक क्रियाओं (Action Verbs) का उपयोग किया है। इन क्रियाओं के माध्यम से विद्यार्थी के अंत्य व्यवहार अथवा अधिगम परिणामों को ऐसी व्यावहारिक शब्दावली में लिखा जा सकता है जिनको आसानी से मापा जा सके और निरीक्षण किया जा सके। व्यवहार के ज्ञानात्मक और भावात्मक पक्षों से संबंधित ऐसी कार्यपरक क्रियाओं की सूची तालिका नं. 4.03 और 4.04 में दी जा रही है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तालिका 4.03 ज्ञानात्मक पक्ष से संबंधित कार्यपरक क्रियाओं की सूची

Table 4.03. A list of Associated Action Verbs for the Cognitive Domain

उद्देश्य (ब्लूम के वर्गीकरण पर आधारित) (Objective Based on Bloom's Taxonomy)	संबंधित कार्यपरक क्रियाएँ (Associated Action Verbs)
1. ज्ञान (Knowledge)	परिभाषा देना (Define), सूची देना (List), लेबल लगाना (Label), मापन करना (Measure) नाम देना (Name), प्रत्यास्मरण करना (Recall), पहचानना (Recognise), पुन: उत्पादन करना (Reproduce), चुनना (Select), कथन देना (State), लिखना (Write), रेखांकित करना (Underline) आदि।
2. बोध (Comprehension)	बदलना (Change), वर्गीकरण करना (Classify), भेद करना (Distinguish) व्याख्या (Explain), प्रतिपादन करना (Formulate), पहचानना (Identify), उदाहरण देना (Illustrate), संकेत करना (Indicate), अर्थापन करना (Interpret), न्याय करना (Justify), निर्णय लेना (Judge), नाम देना (Name), प्रतिनिधित्व करना (Represent), चयन करना (Select), सारांश देना (Summarize), रूपांतर करना (Transform), अनुवाद करना (Translate) इत्यादि।
3. प्रयोग (Application)	जाँच करना (Assess), बदलना (Change), चुनना (Choose), संचालित करना (Conduct), निर्माण करना (Construct), गणना करना (Compute), प्रदर्शित करना (Demonstrate), खोज करना (Discover), व्याख्या करना (Explain), स्थापित करना (Establish), पाना (Find), उत्पन्न करना (Generate), उदाहरण देना (Illustrate), संशोधित करना (Modify), पूर्व कथन देना (Predict), परिपालन करना (Perform), चयन करना (Select),

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

	समाधान करना (Solve), उपयोग करना (Use) आदि।
4. विश्लेषण (Analysis)	विश्लेषण करना (Analyse), संबंधित करना (Associate), तुलना करना (Compare), निष्कर्ष निकालना (Conclude), अंतर बताना (Contrast), आलोचना करना (Criticise), विभेद करना (Differentiate), पहचानना (Identify), पुष्टि करना (Justify) इंगित करना (Point Out), निर्णय लेना (Resolve), चयन करना (Select), अलग करना (Separate) आदि।
5. संश्लेषण (Synthesis)	तर्क करना, (Argue), निष्कर्ष देना (Conclude), मिलाना (Combine), निकालना (Derive), वाद-विवाद करना (Discuss), सामान्यीकरण करना (Generalize), समन्वित करना (Integrate), संगठित करना (Organise), संक्षिप्त करना (Precise), सिद्ध करना (Prove), संबंधित करना (Relate), पुनः कथन देना (Re-state), चयन करना (Select), सारांश देना (Summarise), संश्लिष्ट करना (Synthesize) आदि।
6. मूल्यांकन (Evaluation)	संबंधित करना (Associate), चुनना (Choose), तुलना करना (Compare), आलोचना करना (Criticise), निष्कर्ष देना (Coclude), बचाव करना (Defend), निश्चित करना (Determine), मूल्यांकन करना (Evaluate), निर्णय लेना (Judge) पहचानना (Identify), अभिज्ञान करना (Recognize), संबंध स्थापित करना (Relate), चयन करना (Select), सारांश देना (Summarize), समर्थन करना (Support), जाँच करना (Verify) आदि।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तालिका Table 4.04 भावात्मक पक्ष से संबंधित कार्यपरक क्रियाओं की सूची
(Table 4.04. A list of Action Verbs for Affectiv domain)

उद्देश्य (ब्लूम तथा उसके सहयोगियों द्वारा प्रस्तुत वर्गीकरण के आधार पर) (Objectives Based on Bloom's Taxonomy)	कार्यपरक क्रियाएँ (Action Verbs)
1. आग्रहण (Receiving)	पूछना (Ask), स्वीकार करना (Accept), ध्यान देना (Atend), सावधान होना (Beware), पकड़ना (Catch), खोजना (Discover), प्रयोग करना (Experiment), पहचानना (Identify), पक्ष लेना (Favour), अनुसरण करना (Follow), निरीक्षण करना (Observe), पसंद करना (Prefer), प्रत्यक्षीकरण करना (Perceive), आग्रह करना (Receive), चयन करना (Select), नाम देना (Name) आदि।
2. अनुक्रिया (Responding)	उत्तर देना (Answer), मदद करना (Assist), पूरा करना (Complete), निकालना (Derive), वाद-विवाद करना (Discuss), विकसित करना (Develop), सहायता करना (Help), सूची देना (List), लेबल देना (Label), नाम देना (Name), आज्ञापालन करना (Obey), उपस्थित करना (Present), अभ्यास करना (Practise), आलेखन बनाना (Record), चयन करना (Select), कथन करना (State), लिखना (Write) आदि।
3. आकलन (Value)	स्वीकार करना (Accept), ध्यान देना (Attain), पूरा करना (Complete), चुनना (Choose), निश्चय करना (Decide), प्रदर्शित करना (Demonstrate), विभेद करना (Discriminate), विकास करना (Develop), वृद्धि करना (Increase), संकेत करना (Indicate), भाग लेना (Participate), अभिरुचि का क्रम देना (Prefer), पहिचानना (Recognise) आदि।
4. संगठन (Organisation)	जोड़ना (Add), संबंधित करना (Associate), परिवर्तित करना (Change), तुलना करना (Com-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

	pare), पूरा करना (Complete), समन्वय करना (Coordinate), सहसंबंध स्थापित करना (Correlate), निश्चित करना (Develop), पाना (Find), बनाना (From), सामान्यीकरण करना (Generalize), समन्वित करना (Integrate), निर्णय करना (Judge), योजना बनाना (Project), तैयार करना (Prepare), संबंध स्थापित करना (Relate), चयन करना (Select), संश्लेषित करना (Synthesize), व्यवस्थित करना (Organise) आदि।
5. मूल्यों का चरित्रीकरण या विशेषीकरण (Characterisation by a value or value complex)	स्वीकार करना (Accept), बदलना (Change), चरित्रीकरण (Characterize), निश्चय करना (Decide), विभेद करना (Discriminate), विकसित करना (Develop), प्रयोग करना (Experiment), सामना करना (Face), पहचानना (Identify), पुष्टि करना (Judge), सिद्ध करना (Prove), दोहराना (Revise), सेवा करना (Serve), हल करना (Solve), जाँच करना (Verify) आदि।

किसी भी विशेष पक्ष के उद्देश्यों को व्यावहारिक रूप में लिखने के लिए पढ़ाई जानेवाली विषयवस्तु या विशेष उपविषय से संबंधित उचित कार्यपरक क्रियाओं को चुन लिया जाता है। फिर विषयवस्तु के उस भाग से कार्यपकर क्रिया को जोड़कर उद्देश्य को व्यावहारिक रूप में लिखा जा सकता है। यहाँ कुछ उदाहणों के द्वारा इस बात को स्पष्ट करने का प्रयास किया जा रहा है।

उदाहरण-1

विषय—हिंदी (गद्य)

प्रकरण—गुरु गोविंद सिंह

गद्यांश—''मध्यकालीन भारत में स्वतंत्रता एवं लोकरक्षा के लिए सतत संघर्ष करनेवाले अग्रगण्य महापुरुषों में गुरु गोविंद सिंह का नाम उल्लेखनीय है। उन्होंने स्वयं बड़े-से-बड़ा बलिदान दिया, अपने प्राणप्रिय चारों वीर पुत्रों को स्वतंत्रता की बलिवेदी पर चढ़ा दिया और आजीवन आपत्तियों से लड़ते रहे। इतना ही नहीं, उन्होंने निर्भीकता एवं शौर्य की संजीवनी से लाखों व्यक्तियों को अनुप्राणित भी किया। गुरु गोविंद सिंह केवल वीर योद्धा ही नहीं थे, वे उच्चकोटि के संत, महात्मा, कवि तथा विद्याप्रेमी भी थे।''

लेखक—डॉ. अशोक शील शर्मा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ज्ञानात्मक पक्ष

पाठ को पढ़ने के उपरांत छात्र—

ज्ञान— 1. मध्यकालीन, स्वतंत्रता, लोकरक्षा, संघर्ष, अग्रगण्य उल्लेखनीय, निर्भीकता, शौर्य, अनुप्राणित, संजीवनी आदि शब्दों का प्रत्यभिज्ञान करते हैं।

2. उपरोक्त शब्दों का अर्थ बताते हैं।

बोध— 1. गद्यांश में व्यक्त विचारों की अपने शब्दो में व्याख्या करते हैं।

2. गद्यांश का सारांश बताते हैं।

प्रयोग— 1. उपरोक्त शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयुक्त करते हैं।

2. गद्यांश में आए हुए संज्ञा शब्दों का चयन करते हैं।

विश्लेषण—1. गद्यांश में आए हुए अग्रगण्य, आजीवन एवं अनुप्राणित शब्दों का विश्लेषण करके उनमें प्रयुक्त उपसर्गों का उल्लेख करते हैं।

भावात्मक पक्ष

आग्रहण— भारत में स्वतंत्रता एवं लोकरक्षा के लिए गुरु गोविंद सिंह के द्वारा दिए गए बलिदान के महत्त्व को स्वीकार करते हैं।

अनुक्रिया— उपरोक्त गद्यांश में वर्णित गुरु गोविंद सिंह के बलिदानों की सूची देते हैं।

आकलन— गुरु गोविंद सिंह के गुणों को आत्मसात करने का निश्चय करते हैं।

संगठन— गुरु गोविंद सिंह के बलिदान तथा आज के नेताओं के कार्यों की पारस्परिक तुलना करते हैं।

उदाहरण 2

विषय : हिन्दी

उपविषय : विशेषण

ज्ञानात्मक पक्ष के अनुदेशनात्मक उद्देश्य **व्यावहारिक रूप में लिखना**

(i) ज्ञान (1) छात्र विशेषण की परिभाषा देते हैं।

(2) छात्र विशेषण शब्दों को पहचानते हैं।

(ii) बोध (1) छात्र विशेषण के उदाहरण देते हैं।

(2) छात्र गद्य पाठ में से विशेषण शब्दों का चुनाव करते हैं।

(iii) प्रयोग (1) छात्र विशेषण शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करते हैं।

(iv) विश्लेषण (1) छात्र गद्यांश में से विशेषण शब्दों को अलग करते हैं।

(2) छात्र संज्ञा एवं विशेषण शब्दों में अंतर बता सकते हैं।

(v) संश्लेषण (1) छात्र विशेषण के नियम का सामान्यीकरण करते हैं।

रावर्ट मेगर उपागम की सीमाएँ

(Limitations of Robert Mager's Approach)

यद्यपि राबर्ट मेगर उपागम अभिक्रमित शिक्षण-अधिगम अनुदेशन में काफी लोकप्रिय है फिर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
भी इसकी कुछ सीमाएँ हैं जो निम्नलिखित हैं :—

1. मेगर उपागम एक व्यावहारिक उपागम है, परंतु मानव अधिगम को केवल साधारण उद्दीपन अनुक्रिया अधिगम के रूप में व्यक्त नहीं किया जा सकता है।
2. मेगर ने व्यवहार के ज्ञानात्मक व भावात्मक पक्ष की ओर ध्यान केंद्रित रखा है और क्रियात्मक पक्ष की उपेक्षा की है। अत: इसका उपयोग केवल ज्ञानात्मक एवं भावात्मक उद्देश्यों को लिखने तक ही सीमित है।
3. इस उपागम में उद्देश्यों को व्यावहारिक रूप में लिखने के लिए व्यवहार से संबंधित कार्यपरक शब्दों को अधिक महत्त्व दिया है। संबंधित मानसिक प्रक्रियाओं या मानसिक योग्यताओं के बारे में कुछ भी नहीं कहा गया है। इसलिए यह विधि ज्ञानात्मक और भावात्मक उद्देश्यों को भी उचित तरीके से लिखने का प्रयोजन सिद्ध नहीं करती है।
4. ज्ञानात्मक और भावात्मक उद्देश्यों के विभिन्न वर्गों में कई कार्यपरक क्रियाओं की पुनरावृत्ति होने से विशिष्ट अनुदेशनात्मक उद्देश्य लिखते समय कार्यपरक क्रियाओं का प्रयोग करने में अनिश्चय व भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। एक ही क्रिया का कई उद्देश्यों में प्रयोग युक्तिसंगत प्रतीत नहीं होता है।
5. अंत में इन 'कार्यसचूक क्रियाओं' की प्रस्तुत की गई सूची लंबी है जैसा कि तालिका संख्या 4.03 और 4.04 में प्रदर्शित किया गया है। इतनी अधिक क्रियाओं की कक्षा-शिक्षण की दृष्टि से कोई उद्देश्यपूर्ण सार्थकता नहीं है।

2. मिलर उपागम
(Miller's Approach)

मेगर ने अपने उपागम में व्यवहार के क्रियात्मक पक्ष को उपेक्षित रखा है। राबर्ट मिलर (Miller, 1962) ने कौशल विश्लेषण का प्रयोग करते हुए मनोशारीरिक या क्रियात्मक उद्देश्यों को व्यवहारपरक शब्दावली में लिखने के लिए जिस प्रक्रिया का वर्णन किया है, संक्षेप में उसका निम्न रूप है :—

(i) उस संकेतक (Indicator) का वर्णन जो किसी सार्थक क्रिया की ओर संकेत करता है।
(ii) उस संकेतक अथवा उद्दीपक का वर्णन करना जिसके प्रति अनुक्रिया करनी होती है।
(iii) उस वस्तु या व्यक्ति को नियंत्रित करना जिसे कार्य करने की दिशा में प्रेरित किया जाता है।
(iv) उस क्रिया का वर्णन करना जिसे संपन्न किया जाना है।
(v) अनुक्रियाओं अथवा प्रतिपुष्टि की उपयुक्तता का संकेत।

मेगर की तरह मिलर ने भी क्रियात्मक उद्देश्यों को लिखने के लिए संबंधित 'कार्यपरक क्रियाओं' की सूची प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। मनोशारीरिक उद्देश्यों को व्यावहारिक रूप में लिखने के लिए हम इन कार्यपरक क्रियाओं की सहायता ले सकते हैं। मनोशारीरिक या क्रियात्मक पक्ष के हैरो (Harrow, 1972) द्वारा प्रस्तुत किए गए उद्देश्यों को व्यावहारिक रूप में लिखने के लिए संबंधित 'कार्यपरक क्रियाओं' की सूची (जिनका उल्लेख मिलर द्वारा किया गया है) निम्न रूप में प्रस्तुत की जा सकती है :—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तालिका 4.05 मनोशारीरिक पक्ष से संबंधित कार्यपरक क्रियाएँ

(Table 4.05. Associated Action Verbs for Psychomotor domain)

उद्देश्य (हैरो के वर्गीकरण पर आधारित) (Objectives based on Harrow's classification)	संबंधित कार्यसूचक क्रियापद (Associated Action Verbs)
1. सहज क्रियात्मक अंगसंचालन (Reflex Movements)	काटना (Bite), कड़ा करना (Harden), झटका देना (Jerk), लंबा करना (Lengthen), ढीला करना (Loosen), छोटा करना (Make Small), शिथिल होना (Relax), रोकना (Stop), सीधा करना (Straighten), फैलना (Stretch) आदि।
2. आधारभूत अंगसंचालन (Basic Fundamental Movement)	आ पड़ना (Be fall), पकड़ना (Catch), रेंगना (Creep), पीना (Drink), पकड़ना (Hold), कूदना (Jump), घुटनों के बल चलना (Kneel), चलाना (Move), पहुँचना (Reach), दौड़ना (Run), चलना (Walk) आदि।
3. शारीरिक योग्यताएँ (Physical Abilities)	शुरू करना (Begin), सहन करना (Bear), झुकना (Bend), व्यवहार करना (Conduct),बढ़ाना (Increase), सुधारना (Reform), चालू करना (Start), रोकना (Stop), टुकड़े-टुकड़े करना (Smash), सहारा देना या टेक लगाना (Lean) आदि।
4. प्रत्यक्षीकरण योग्यताएँ (Perceptual Abilities)	संतुलन करना (Balance), झुकाना Bend, पकड़ना (Catch), खोजना (Discover), खाना (Eat), अन्वेषण करना (Explore), खिलाना (Feed), छूकर, देखकर, सूँघकर या सुनकर पहचान करना (Identification by touching seeing, smelling or hearing), स्मृति चित्रण करना (Memory of Tracing), फेंकना (Throw), लिखना (Write) आदि।
5. कौशलयुक्त अंगसंचालन (Skilled Movements)	नृत्य करना (Dance), खोदना (Dig), गोता लगाना (Dive), चलाना (Drive), बुनाई करना (Knit),

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

	संगीत के वाद्य यंत्रों को बजाना (Play the musical organs), नाव खेना (Row), स्केटिंग करना (Skate), निशाना लगाना (Shoot), तैरना (Swim), टाइप करना (Type) आदि।
6. सुसंबद्ध या सांकेतिक संप्रेषण (Non-Discussive Communication)	नकल उतारना (Mimic), भावभंगिमा बनाना (Pose), बैठना (Sit), चित्रांकन करना (Sketch), मुस्कराना (Smile), खड़ा होना (Stand), चिढ़ाना (Tease) आदि।

3. आर.सी.ई.एम. उपागम
(R.C.E.M. Approach)

व्यवहार के तीनों पक्षों से संबंधित सभी अनुदेशनात्मक उद्देश्यों को व्यावहारिक रूप में लिखने के कार्य में मेगर व मिलर (Mager and Miller)—दोनों की विधियाँ असफल रही हैं। यदि मेगर उपागम ज्ञानात्मक व भावात्मक पक्ष के उद्देश्यों से संबंधित है तो मिलर उपागम मनोशारीरिक उद्देश्यों से संबंध रखता है। इस प्रकार इन दोनों उपागमों में से कोई भी एक विधि मानव व्यवहार के सभी पक्षों के उद्देश्यों को व्यवहारपरक शब्दावली में लिखने के प्रयोजन को सिद्ध नहीं करती है। दूसरी बात यह है कि इन दोनों उपागमों ने उद्देश्यों को व्यावहारिक रूप में लिखने के लिए व्यवहार से संबंधित 'कार्यपरक क्रिया पदों' को (जिनमें से बहुत से क्रियापदों की पुनरावृत्ति केवल एक ही पक्ष के विभिन्न वर्गों में ही नहीं, ब्रल्कि दूसरे पक्ष के वर्गों में भी हुई है) महत्त्व दिया है और अधिगम प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण कार्य करनेवाली मानसिक प्रक्रियाओं या मानसिक योग्यताओं की पूर्णतया उपेक्षा की है। इन कमियों के कारण इन दोनों उपागमों को कड़ी आलोचना का शिकार होना पड़ा है। इन कमियों को दूर करने के लिए यथासंभव अनुसंधानं कार्य किए गए। हमारे देश में भी इस दिशा में कार्य हुए। परिणामस्वरूप एक नई विधि का विकास हुआ और उसे आर.सी.ई.एम. उपागम नाम दिया गया क्योंकि इसका विकास क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर में किया गया है।

आर.सी.ई.एम. उपागम ने अंनुदेशनात्मक उद्देश्यों को व्यवहारपरक शब्दावली में लिखने के लिए 'कार्यपरक क्रिया पदों' के स्थान पर मानसिक प्रक्रियाओं या मानसिक योग्यताओं का प्रयोग किया है। इस विधि में थोड़े-से परिवर्तन के साथ ब्लूम द्वारा दिए गए उद्देश्यों के वर्गीकरण को अपनाया है और आर.सी.ई.एम. टैक्सोनोमी नाम दिया है। इसमें ब्लूम द्वारा दिए गए ज्ञानात्मक पक्ष के छः वर्गों के स्थान पर चार वर्ग किए गए हैं। अंतिम तीन वर्ग विश्लेषण और मूल्यांकन को समन्वित करके सृजनात्मकता (Creativity) नाम दिया है। दूसरा अंतर यह है कि ब्लूम द्वारा दिए गए बोध वर्ग को समझ (Understanding) नाम दिया गया है। आर.सी.ई.एम. उपागम द्वारा किए गए उद्देश्यों को इन वर्गों और उनसे संबंधित मानसिक प्रक्रियाओं या योग्यताओं को निम्न तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तालिका 4.06

आर.सी.ई.एम. उपागम के उद्देश्य व मानसिक प्रक्रियाएँ

(Objectives and mental processes in R.C.E.M. Approach)

उद्देश्य (Objectives)	मानसिक प्रक्रियाएँ या मानसिक योग्यताएँ (Mental Process or Mental Abilities)
1. ज्ञान (Knowledge)	(i) पहिचान करना (Recognise) (ii) प्रत्यास्मरण करना (Recall)
2. समझ (Understanding)	(i) संबंध देखना (See Relationship) (ii) उदाहरण देना (Cite example) (iii) भेद करना (Discriminate) (iv) वर्गीकरण करना (Classify) (v) अर्थापन करना (Interpret) (vi) पुष्टि करना (Verify) (vii) सामान्यीकरण करना (Generalise)
3. प्रयोग (Application)	(i) कारण बताना (Reason out) (ii) परिकल्पना का निर्माण करना (Formulate Hypothesis) (iii) परिकल्पना स्थापित करना (Establish Hypothesis) (iv) निष्कर्ष निकालना (Interprete) (v) पूर्वकथन करना (Predict)
4. सृजनात्मक (Creativity)	(i) विश्लेषण करना (Analyse) (ii) संश्लेषण करना (Synthesis) (iii) मूल्यांकन करना (Evaluate)

नोट :—ब्लूम व आर.सी.ई.एम. उपागम के उद्देश्यों का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए कृपया तालिका 4.01 देखें।

जैसा कि उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि ज्ञानात्मक पक्ष के उद्देश्यों के चारों वर्गों को सत्रह (17) मानसिक प्रक्रियाओं या योग्यताओं में विभाजित किया गया है। इन प्रक्रियाओं या योग्यताओं का प्रयोग करके उद्देश्यों को व्यावहारिक शब्दावली में लिखा जा सकता है। इस कार्य हेतु आस.सी.ई.एम. उपागम में 17 कथनों का उल्लेख किया है जिन्हें नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है :—

1. ज्ञान उद्देश्य (Knowledge Objectives) :—

1.1 छात्र.....पहचानने की योग्यता रखते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

1.2 छात्र......प्रत्यस्मिरण करने की योग्यता रखते हैं।

2. समझ उद्‌देश्य (Understanding objectives) :—

2.1 छात्र.....तथा......में संबंध की योग्यता रखते हैं।

2.2 छात्र.....उदाहरण देने की योग्यता रखते हैं।

2.3 छात्र.....तथा......में भेद करने की योग्यता रखते हैं।

2.4 छात्र......का वर्गीकरण करने की योग्यता रखते हैं।

2.5 छात्र......का अर्थापन करने की योग्यता रखते हैं।

2.6 छात्र......की पुष्टि करने की योग्यता रखते हैं।

2.7 छात्र......का सामान्यीकरण करने की योग्यता रखते हैं।

3. प्रयोग उद्‌देश्य (Application objectives) :—

3.1 छात्र......का कारण बताने की योग्यता रखते हैं।

3.2 छात्र......के बारे में परिकल्पना का निर्माण करने की योग्यता रखते हैं।

3.3 छात्र.....के बारे में परिकल्पना को स्थापित करने की योग्यता रखते हैं।

3.4 छात्र.....का निष्कर्ष निकालने की योग्यता रखते हैं।

3.5 छात्र......का पूर्वकथन करने की योग्यता रखते हैं।

4. सृजनात्मक उद्‌देश्य (Creativity Objectives) :—

4.1 छात्र.....का विश्लेषण करने की योग्यता रखते हैं।

4.2 छात्र.....का संश्लेषण करने की योग्यता रखते हैं।

4.3 छात्र.....का मूल्यांकन करने की योग्यता रखते हैं।

आर.सी.ई.एम. उपागम में उद्‌देश्यों को कैसे लिखा जाए ?
(How to write objectives in R.C.E.M. Approach?)

उद्‌देश्यों को लिखने की प्रक्रिया का निम्न क्रम है :—

1. सर्वप्रथम छात्र के प्रविष्टि व्यवहार को ध्यान में रखना चाहिए।

2. फिर छात्र को प्रदान किए जानेवाले अधिगम अनुभवों, पाठ्यवस्तु या उपविषय आदि के बारे में विचार करना चाहिए।

3. शिक्षण अथवा अधिगम उद्‌देश्यों पर विचार किया जाना चाहिए।

4. इसके पश्चात छात्र के प्रविष्टि व्यवहार, विषयवस्तु, तत्व और किसी विशिष्ट शिक्षण उद्‌देश्य में रखते हुए उचित मानसिक प्रक्रिया या योग्यताओं का चुनाव किया जाना चाहिए।

5. अंत में ऊपर लिखित 17 कथनों का प्रयोग किया जाना चाहिए। इसके लिए छात्र के अर्जित अधिगम अनुभव को इन कथनों के रिक्त स्थानों में भर देना चाहिए।

इस प्रकार उद्‌देश्यों को व्यावहारिक रूप में लिखने का एक उदाहरण नीचे दिए जा रहा है।

विषय हिंदी

उपविषय : विशेषण के प्रकार

1.1 छात्र एक वाक्य में प्रयुक्त विभिन्न प्रकार के विशेषण शब्दों को पहचानने की योग्यता रखते हैं।

(ज्ञान)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2.2 छात्र विभिन्न प्रकार के विशेषणों के उदाहरण देने की योग्यता रखते हैं। (समझ)

3.1 छात्र हिंदी भाषा में विशेषण के महत्त्व के कारण बताने की योग्यता रखते हैं। या छात्र कोई शब्द किसी विशेष प्रकार का विशेषण क्यों है, इस बात का कारण बताने की योग्यता रखते हैं। (प्रयोग)

4.2 छात्र 'विशेषण' की परिभाषा और अर्थ को भली-भाँति समझने के लिए विशेषण के विभिन्न प्रकारों का संश्लेषण करने की योग्यता रखते हैं। (सृजनात्मक)

क्रियात्मक पक्ष के शिक्षण उद्देश्यों का वर्गीकरण तथा उसके आधार पर उद्देश्यों को व्यवहारपरक शब्दावली में लिखने के लिए मिलर महोदय ने कार्यपरक क्रिया पदों की जो सूची दी है और आर.सी.ई.एम उपागम में जिन मानसिक प्रक्रियाओं या योग्यताओं का उल्लेख किया गया है उनकी सहायता से विज्ञान, गणित, कला-कौशल आदि अन्य विषयों के उद्देश्यों का व्यावहारिक रूप में निर्धारण किया जा सकता है परंतु भाषा शिक्षण तथा बच्चों में भाषात्मक योग्यताओं के विकास की दृष्टि से ये क्रियापद एवं मानसिक योग्यताएँ पूरी तरह से सक्षम नहीं हैं।

भाषा मानव जीवन की एक बहुत ही सहज प्रक्रिया है। समय व परिस्थिति के अनुसार खेल-खेल में अनायास ही उसकी भाषा का विकास होता चला जाता है। कोई भाषा किसी पर थोपी नहीं जा सकती है। इसका विकास तो बच्चे के अंदर से स्वयं होता है। अध्यापक उस विकास में सहायता कर सकते हैं। भाषा ही हमारे चिंतन का आधार है। यदि भाषा पर छात्र का अधिकार नहीं होता तो वह ज्ञान के अन्य क्षेत्रों में प्रगति नहीं कर सकता है।

यद्धपि भाषा एक कौशल है परंतु यह अन्य कौशलों से भिन्न है। जहाँ अन्य कौशलों में कुशल होने या न होने से व्यक्तित्व पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता है वहाँ भाषा रूपी कौशल में पारंगत हुए बिना व्यक्ति एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता है। अत: भाषा शिक्षण के क्रियात्मक पक्ष के उद्देश्यों का निर्धारण करने में हम अपनी तरफ से आवश्यकतानुसार क्रियापदों का चयन कर सकते हैं।

भाषा-विचार-विनिमय का साधन है तथा यह हमारी अभिव्यक्ति का माध्यम है। इस विचार विनिमय की प्रक्रिया में हम प्रमुख रूप से दो प्रकार की क्रियाएँ करते हैं :

(i) विचारों को ग्रहण करना

(ii) विचारों को प्रकट करना

विचारों को हम दो प्रकार से ग्रहण करते हैं—सुनकर तथा पढ़कर। इसी प्रकार विचारों को दो प्रकार से प्रकट करते हैं—बोलकर तथा लिखकर। इन चारों क्रियाओं में बच्चों का निपुण होना आवश्यक है। इसी बात को हम इस प्रकार से भी कह सकते हैं कि बच्चों का भाषा पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करने के लिए उसमें चार भाषायी कौशलों का होना आवश्यक है—(1) श्रवण कौशल (2) मौखिक अभिव्यक्ति कौशल (3) पठन कौशल (4) लेखन कौशल।

भाषा-शिक्षण के ये सभी उद्देश्य साथ-साथ चलते हैं। एक उद्देश्य की प्राप्ति के साथ दूसरे उद्देश्य की प्राप्ति अपने आप ही हो जाती है। अत: भाषा-शिक्षण करते समय अध्यापक को इन सभी उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सजग रहना चाहिए और ध्यान रखना चाहिए कि बच्चे के व्यवहार में वांछित परिवर्तन आ रहे हैं या नहीं। जैसे—यदि बच्चे ध्यानपूर्वक सुनेंगे या ध्यानपूर्वक पढ़ेंगे तभी उन्हें विषयवस्तु समझ में आएगी अर्थात श्रवण-कौशल तथा पठन-कौशल विकसित होने पर ही ज्ञानात्मक तथा भावात्मक विकास हो सकेगा। मौखिक अभिव्यक्ति और लिखित अभिव्यक्ति कौशल के होने पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ही बच्चे समझी गई तथा आत्मसात की गई विषयवस्तु के बारे में अपने विचार बोलकर या लिखकर व्यक्त कर सकेंगे और यह जाँच हो सकेगी कि बच्चे को विषयवस्तु समझ में आई है या नहीं।

इस प्रकार से स्पष्ट है कि ज्ञानात्मक तथा भावात्मक पक्ष के व्यवहार-परिवर्तन का आधार कौशलात्मक पक्ष ही है, अत: भाषा शिक्षण के अंतर्गत हमें क्रियात्मक पक्ष के लिए कौशलात्मक पक्ष का प्रयोग ही करना चाहिए। अत: क्रियात्मक पक्ष के उद्‌देश्यों को व्यवहारकपरक शब्दावली में लिखने के लिए हम इन्हें क्रियात्मक उद्‌देश्य न कहकर कौशलात्मक उद्‌देश्य का नाम देंगे। इन कौशलात्मक उद्‌देश्यों का विकास जब बच्चे में हो जाएगा तब ही उसका भाषा पर पूर्ण अधिकार हो सकेगा।

कौशलात्मक उद्‌देश्यों को व्यवहारपरक शब्दावली में कैसे लिखा जाए इसे हम निम्न उदाहरण की सहायता से आसानी से समझ सकते हैं—

विषय-हिंदी (पद्य)
प्रकरण-मीरा के पद

"मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई॥
तातमात भ्रात बंधु, आपनो न कोई।
छाँड़ि दई कुल की कानि, कहा करिहै कोई॥"

कौशलात्मक उद्‌देश्य

श्रवण-कौशल

1. छात्र अध्यापक द्‌वारा 'मीरा के पद' के सस्वर पाठ को ध्यानपूर्वक सुनते हैं।
2. छात्र 'मीरा के पद' के प्रयुक्त भ्रात, बंधु, कानि आदि शब्दों को सुनकर उनका अर्थ समझते हैं।
3. छात्र पद का सस्वर पाठ सुनकर उसका अर्थ व भाव समझते हैं।

मौखिक अभिव्यक्ति कौशल

1. छात्र उचित स्वर गति एवं उचित उतार-चढ़ाव तथा हाव-भाव के साथ अध्यापक के साथ पद बोलते हैं।
2. छात्र पद में प्रयुक्त शब्दों का अर्थ बताते हैं।
3. छात्र पद का केंद्रीय भाव ग्रहण कर उसका सारांश बताते हैं।
4. छात्र अध्यापक द्‌वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देते हैं।
5. छात्र पद को कंठस्थ करके कक्षा में उचित स्वर में सुनाते हैं।

पठन कौशल

1. छात्र शुद्‌ध उच्चारण करते हुए उचित स्वर व गति के साथ पद का सस्वर पाठ करते हैं।
2. छात्र पद को पढ़कर उसमें से रुचिकर अंश का चयन करते हैं।
3. छात्र श्रीकृष्ण के प्रति मीरा की भक्ति-भावना को समझते हैं।

लेखन कौशल

1. छात्र अक्षर-विन्यास एवं विराम चिह्नों का ध्यान रखते हुए सुंदर लेख में पद का भाव अपने शब्दों में लिखते हैं।
2. छात्र पद के रुचिकर अंश को अपनी अभ्यासपुस्तिका में लिखते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्ययन के लिए प्रश्न

1. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया पर आधारित शैक्षिक लक्ष्य, शैक्षिक उद्देश्य और अनुदेशनात्मक स्तर उद्देश्यों से क्या तात्पर्य है ? इनमें अंतर बताइए।

2. 'शैक्षिक उद्देश्यों की टैक्सोनोमी' से क्या अभिप्राय है ? कुछ प्रसिद्ध टैक्सोनोमियों का वर्णन करिए।

3. ब्लूम और उसके सहयोगियों द्वारा प्रस्तुत ज्ञानात्मक व भावात्मक पक्ष के शैक्षिक या अनुदेशनात्मक उद्देश्यों की टैक्सोनोमियों का वर्णन करिए।

4. उद्देश्यों को व्यावहारिक शब्दावली में लिखने से क्या तात्पर्य है ? इसकी क्या आवश्यकता है ? उद्देश्यों को इस प्रकार से लिखने के कौन-कौन-से मुख्य उपागमं हैं ?

5. उद्देश्यों को व्यावहारिक शब्दावली में लिखने के 'मेगर उपागम' को उचित उदाहरण प्रस्तुत करते हुए विस्तार से लिखिए। इसकी सीमाएँ भी बताइए।

6. उद्देश्यों को व्यावहारिक रूप में लिखने से संबंधित मिलर उपागम क्या है ? उदाहरण सहित स्पष्ट करें।

7. मेगर व मिलर उपागम में कौन-कौन-सी कमियाँ हैं ? इन कमियों का उल्लेख करते हुए स्पष्ट करें कि आर.सी.ई.एम. उपागम में इन कमियों को दूर करने के लिए क्या प्रयास किए गए हैं ?

8. उद्देश्यों को लिखने के आर.सी.ई.एम. उपागम की व्याख्या उचित उदाहरण सहित करें।

9. हाई स्कूल के हिंदी भाषा के पाठ्यक्रम के दो उपविषयों का चुनाव कर उनसे संबंधित उद्देश्यों को आर.सी.ई.एम. उपागम का प्रयोग करते हुए व्यवहारपरक शब्दावली में लिखें।

10. भाषा शिक्षण के कौशलात्मक उद्देश्यों को व्यवहारपरक शब्दावली में कैसे लिखा जा सकता है ? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

5

भाषायी कौशलों का शिक्षण
(Teaching of Language Skills)

भाषायी कौशलों का अर्थ (Meaning of the Term Language Skills)

मनुष्य अपने विचारों का आदान-प्रदान करने के लिएं जिस माध्यम को अपनाता है वही भाषा है। भाषा के दो रूप हैं—मौखिक एवं लिखित। मौखिक रूप का प्रयोग करने के लिए हम सुनने व बोलने की क्रिया करते हैं और लिखित रूप का प्रयोग करने के लिए पढ़ने व लिखने की। अथवा यों कहा जाए कि सुनते और बोलते समय मौखिक भाषा का प्रयोग होता है एवं पढ़ते और लिखते समय लिखित भाषा का।

बच्चा सुनकर, बोलकर, पढ़कर और लिखकर विचारों का आदान-प्रदान करता है। अतः इन योग्यताओं को विकसित करना ही भाषा-शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य है। इन्हें ही भाषा-शिक्षण के कौशलात्मक उद्देश्य कहा जाता है। ये कौशलात्मक उद्देश्य ही भाषायी कौशल कहे जाते हैं। ये चार हैं :

(1) सुनकर अर्थ ग्रहण करना यानी श्रवण कौशल (Listening Skill);

(2) पढ़कर अर्थ ग्रहण करना यानी पठन कौशल (Reading Skill);

(3) बोलकर विचार व्यक्त करना यानी मौखिक अभिव्यक्ति कौशल (Skill of Oral Expression);

(4) लिखकर विचार व्यक्त करना यानी लेखन कौशल (Writing Skill)।

प्रथम दो कौशल ग्राह्यात्मक कौशल और अगले दो कौशल अभिव्यंजनात्मक कौशल कहे जाते हैं।

छात्रों में इन चार भाषायी कौशलों को विकसित कर उनमें विचारों के आदान-प्रदान अर्थात दूसरों के भाव व विचार ग्रहण करने और अपने भाव व विचार व्यक्त करने की क्षमता व योग्यता विकसित की जाती है। छात्रों में यह क्षमता व योग्यता विकसित हुई है या नहीं इसका पता उनमें होनेवाले व्यवहारगत परिवर्तनों से लगाया जाता है।

इन भाषायी कौशलों के शिक्षण से छात्रों में जो व्यवहारगत परिवर्तन होते हैं उनका वर्णन इस पाठ्यपुस्तक के अध्याय 2 तथा 4 में हम पहले ही कर चुके हैं।

प्राथमिक स्तर पर इन कौशलों का महत्त्व—भाषा एक कौशल है। कौशल में प्रवीणता के लिए अभ्यास की आवश्यकता होती है। यदि बच्चे की छोटी आयु से ही उसे किसी कौशल का अभ्यास कराया जाता है तो वह उस कौशल पर शीघ्र ही पूर्णता के साथ अधिकार प्राप्त कर लेता है। बच्चे में अनुकरण की प्रवृत्ति होने के कारण वह कौशल का अनुकरण बड़ी तीव्रता के साथ करता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भाषायी कौशलों के शिक्षण की दृष्टि से भी बालक की शिक्षा के प्राथमिक स्तर का महत्त्वपूर्ण स्थान है। बच्चों की शैशवावस्था एवं बाल्यावस्था में अनुकरण-प्रवृत्ति बड़ी तीव्र होती है और भाषा अनुकरण से सीखी जाती है अत: प्राथमिक स्तर पर बच्चों को बहुत सुगमता व सहजता के साथ इन भाषायी कौशलों का अभ्यास कराया जा सकता है। वैसे तो अपनी इसी प्रवृत्ति के कारण, विद्यालय में आने से पूर्व ही बच्चा अपने परिवार के सदस्यों—माता-पिता, भाई-बहिन आदि से शब्दों एवं वाक्यों का ज्ञान प्राप्त कर लेता है। उसका अपना एक शब्द-भंडार होता है, उसको सुनकर विचारों का ग्रहण करना आता है, उसके पास अपनी मौखिक अभिव्यक्ति भी होती है। इतना ही नहीं, कई बच्चे तो माता-पिता के मार्गदर्शन से विद्यालय आने से पूर्व कुछ-कुछ पढ़ना-लिखना भी सीख जाते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि प्राथमिक स्तर पर पहली कक्षा में प्रवेश करने से पूर्व चारों भाषायी कौशलों का कुछ-न-कुछ ज्ञान रखते हैं। परंतु यह जरूरी नहीं कि उनका यह ज्ञान शुद्ध ही हो।

आवश्यकता इस बात की है कि अध्यापक यह पता लगाए कि कक्षा में प्रवेश करने से पूर्व बालक कितना कुछ जान चुका है। इसी पूर्व ज्ञान को आधार बनाकर चारों भाषायी कौशलों का उत्तरोत्तर विकास किया जा सकता है।

अध्यापक यह भी पता लगाए कि उसका कितना ज्ञान शुद्ध है और कितना अशुद्ध। अशुद्ध ज्ञान को शुद्ध करना होता है क्योंकि बाल्यावस्था में जो छाप मस्तिष्क पर पड़ जाती है वह अमिट होती है। अत: प्रथम कक्षा से ही बच्चे को शुद्ध उच्चारण, शुद्ध बोलने, पढ़ने-लिखने आदि का अभ्यास कराया जाए।

प्राथमिक स्तर पर बालक की आयु बहुत लचीली होती है। इस आयु में उसके अशुद्ध ज्ञान को शुद्ध करना आसान होता है। अत: चारों भाषायी कौशलों को विकसित करने की दृष्टि से प्राथमिक स्तर अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

इस आयु में बालक की मांसपेशियों में भी लचीलापन होता है। लिखित कौशल को विकसित करने की दृष्टि से सुंदर, सुडौल लेख का अभ्यास कराने के लिए यही समय सर्वथा उपयुक्त है। बालक की उँगलियों को हम विभिन्न वर्णों के लेखन की दृष्टि से जिन दिशाओं में घुमाने का अभ्यास करा देंगे वह आयुपर्यंत के लिए स्थायी प्रभाव छोड़ देगा। यदि इस समय सुडौल लेख का अभ्यास करा दिया जाए तो बालक का लेख हमेशा के लिए सुंदर व सुडौल हो जाएगा।

यही बात उच्चारण व मौखिक अभिव्यक्ति की है। यदि बालक की जिह्वा को उचित स्थान का स्पर्श करने का अभ्यास कराकर उसे शुद्ध ध्वनि-उच्चारण सिखा दिया जाएगा तो वह हमेशा ही मौखिक अभिव्यक्ति में शुद्ध उच्चारण करेगा। इसी प्रकार बोलचाल के लिए भी अवसर प्रदान कर यदि बच्चे का संकोच व हिचक दूर कर उसमें बोलने के लिए आत्मविश्वास पैदा कर दिया जाए तो वह बालक जीवन में कभी भी, किसी भी क्षेत्र में विचाराभिव्यक्ति में घबराएगा नहीं।

आवश्यकता इस बात की है कि अध्यापक का व्यवहार सहानुभूतिपूर्ण हो, बच्चे के मन से डर दूर कर दिया जाए, उसे खुलकर बोलने के अवसर प्रदान किए जाएँ तथा उसकी त्रुटियों को प्यार के साथ समझाकर दूर कराया जाए।

विद्यालय में समय-समय पर विभिन्न प्रकार की भाषा संबंधी क्रियाएँ व खेल आयोजित किए जाएँ जिनमें बच्चों को इन कौशलों के अभ्यास का अवसर मिले।

इस प्रकार सुनकर विचार व भाव ग्रहण करने, बोलकर विचार व्यक्त करने, पढ़कर अर्थ ग्रहण करने एवं लिखकर विचार व्यक्त करने की पहली सीढ़ी या नींव यह 'प्राथमिक स्तर' ही है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह प्राथमिक स्तर ही शिक्षा के भावी स्तरों का आधार है। प्राथमिक स्तर पर बालक में विकसित की गई योग्यता एवं कौशल ही माध्यमिक एवं उच्चतर स्तर तक उत्तरोत्तर विकसित होते रहते हैं। यदि प्राथमिक स्तर पर बालक किसी भी कौशल का अर्जन पूर्ण रूप से नहीं कर पाएगा तो आगे के स्तरों में उस कौशल के संबंध में वह पिछड़ा ही रहेगा। इसलिए प्राथमिक स्तर पर इन चारों कौशलों का ठीक रूप से ज्ञान एवं अभ्यास अत्यंत आवश्यक है। अध्यापक को इस विषय में बहुत सावधान रहना चाहिए।

श्रवण-कौशल शिक्षण
(Teaching of the Listening Skill)

श्रवण कौशल का अर्थ (Meaning of the term Listening Skill)

भाषा सीखने का एक स्वाभाविक क्रम है—सुनना, बोलना, पढ़ना एवं लिखना। भाषा सीखने का प्रथम चरण 'श्रवण' है। अतः श्रवण-कौशल ही अन्य कौशलों को विकसित करने का प्रथम आधार है। जो बच्चा बचपन से सुन नहीं पाता है वह बोलने में भी असफल रहता है, उसका भाषा-ज्ञान शून्य रहाता है। श्रवण-कौशल के बाद ही उसमें पढ़ने-लिखने का कौशल विकसित किया जाता है। परिभाषा की दृष्टि से सोचा जाए तो किसी भी व्यक्ति के द्वारा प्रयुक्त ध्वनियों, शब्दों एवं भावों को कानों के माध्यम से ग्रहण कर, उसका अर्थ ग्रहण करने की क्रिया 'श्रवण' कही जाती है। वक्ता जिस अभिप्राय या उद्देश्य से अपने विचारों की मौखिक अभिव्यक्ति कर रहा है, उस बात को पूरी तरह से ध्यानपूर्वक सुनकर, उसी अभिप्राय को ग्रहण करने की योग्यता ही श्रवण-कौशल है।

श्रवण-कौशल का महत्त्व (Importance of acquiring Listening Skill)

बच्चे के व्यक्तित्व के विकास में श्रवण-कौशल का अत्यधिक महत्त्व है। बच्चा जन्मोपरांत ही विभिन्न ध्वनियों को सुनने लगता है जो उसके मन-मस्तिष्क में अंकित होने लगती हैं। ये अंकित ध्वनियाँ ही बच्चे के भाषा-ज्ञान का आधार बनती हैं। अच्छी प्रकार से सुनने के कारण ही बालक इन ध्वनियों के सूक्ष्म अंतर को समझ पाता है। अतः यह श्रवण-कौशल ही अन्य भाषायी कौशलों को विकसित करने का प्रमुख आधार बनता है।

भाषा अनुकरण से सीखी जाती है। अपने परिवार में माता-पिता, भाई-बहिन व अन्य सदस्यों को बोलता हुआ देखकर व सुनकर बच्चा उसी प्रकार बोलने का प्रयास करता है। नए-नए शब्दों को सुनकर अपने शब्द-ज्ञान में वृद्धि करता है। अपने से बड़ों व अध्यापक आदि को सुनकर स्वयं भी शुद्ध उच्चारण, उचित स्वर-गति, हाव-भाव, उतार-चढ़ाव आदि के अनुसार बोलने का प्रयास करता है और इस प्रकार मौखिक अभिव्यक्ति में प्रवीणता प्राप्त करता है।

केवल मौखिक कौशल के लिए ही नहीं वरन पठन एवं लेखन-कौशल को विकसित करने के लिए भी श्रवण-कौशल की आवश्यकता होती है।

श्रवण-क्रिया के द्वारा ही बच्चा विभिन्न ध्वनियों, शब्दों आदि को पहचानता है। ये ध्वनियाँ, शब्द आदि वाचन में सहायक होते हैं। अध्यापक पुस्तक दिखाते हुए अपने मुख से एक-एक वर्ण का उच्चारण करता है और बच्चे को वर्णों से परिचित कराता है। अध्यापक के द्वारा किए गए आदर्श वाचन को सुनकर ही बच्चा भी उसी प्रकार अनुकरण करते हुए स्वयं वाचन करता है।

लेखन-कौशल को विकसित करने की दृष्टि से भी अध्यापक शब्दों को बोलते हैं और बच्चा सुनकर लिखता है जिससे वर्तनी आदि का अभ्यास होता है। इसी प्रकार उचित स्वर, गति एवं विराम के साथ बोलते हुए अध्यापक बच्चों को उचित गति से लिखने का अभ्यास कराता है। इस क्रिया को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
श्रुतलेख कहा जाता है। जो बच्चा ध्यान से नहीं सुनता है वह लिखने में पिछड़ जाता है। आगे चलकर रचना-कार्य आदि कराने के लिए भी अध्यापक पहले मौखिक रचना कराता है फिर इसे लिखित रूप देना होता है। इसके लिए भी श्रवण-कौशल आवश्यक है।

केवल भाषायी कौशल ही नहीं वरन मातृभाषा-शिक्षण के सभी उद्‌देश्यों की प्राप्ति में श्रवण-कौशल की आवश्यकता पड़ती है। बच्चा कविता को सुनकर रसास्वादन करता है। कहानी आदि को सुनकर जितना आनंद लेता है उसकी सीमा नहीं। साहित्य की विभिन्न विधाओं का अध्ययन करते समय अध्यापक के द्‌वारा की गई विषय से संबंधित व्याख्या को सुनकर ही उस विषयवस्तु को ग्रहण करता है।

विभिन्न साहित्यिक क्रियाओं का आनंद भी श्रवण द्‌वारा लिया जाता है। रेडियो, टीवी आदि के कार्यक्रमों को सुनकर ही उनसे अपना मनोरंजन करता है। व्यावहारिक जीवन में पारिवारिक व सामाजिक कार्यों को संपन्न करने के लिए सुनने का कार्य करना ही पड़ता है।

अत: शिक्षण के प्रारंभ से ही छात्र को श्रवण-कौशल में पारंगत करना आवश्यक है।

श्रवण-कौशल के उद्‌देश्य (Aims of Teaching Listening Skill)—श्रवण-कौशल के द्‌वारा छात्रों में निम्नलिखित योग्यताओं को विकसित करना होता है :

(i) छात्रों में दूसरों की बातों को ध्यानपूर्वक सुनने की आदत डालना।
(ii) दूसरों के द्‌वारा किए गए उच्चारण को सुनकर शुद्‌ध उच्चारण का अनुकरण करने के योग्य बनाना।
(iii) छात्रों में, सुनकर स्वराघात, बलाघात तथा उचित उतार-चढ़ाव के साथ बोलने व पढ़ने की योग्यता विकसित करना।
(iv) श्रुत सामग्री का अर्थ समझने की योग्यता विकसित करना।
(v) श्रुत सामग्री के रुचिकर अंशों को पहचानने की योग्यता विकसित करना।
(vi) श्रुत सामग्री के आकर्षक व रुचिकर अंशों का चयन करने की योग्यता विकसित करना।
(vii) श्रुत सामग्री का सारांश ग्रहण करने की योग्यता विकसित करना।
(viii) छात्रों को साहित्यिक गतिविधियों में भाग लेने व सुनने के लिए प्रेरित करना।
(ix) भाषा एवं साहित्य के प्रति रुचि पैदा करना।
(x) वक्ता के मनोभावों के समझने की निपुणता विकसित करना।

श्रवण-कौशल शिक्षण की विधियाँ (Methods of Teaching Listening Skill)—छात्रों में श्रवण-कौशल को विकसित करने के लिए अध्यापक निम्नलिखित विधियों, सामग्री, क्रियाओं एवं उपकरणों की सहायता ले सकता है :

(1) सस्वर वाचन (Loud Reading)—छात्र अध्यापक के द्‌वारा किए आदर्श वाचन और कक्षा के किसी छात्र द्‌वारा किए जाने वाले अनुकरण को ध्यानपूर्वक सुनकर शुद्‌ध उच्चारण, बलाघात, गति आदि का ज्ञान प्राप्त करते हैं। छात्रों से भी सस्वर वाचन कराकर अध्यापक यह पता लगा सकता है कि छात्र ध्यान से सुन रहे हैं या नहीं।

(2) प्रश्नोत्तर (Question-Answer Method)—अध्यापक को छात्रों से व्यावहारिक बातों एवं पठित सामग्री पर प्रश्न पूछने चाहिए। छात्रों के उत्तर से यह जाँच हो जाएगी कि छात्र सुनकर विषयवस्तु को ग्रहण कर रहे हैं या नहीं। अध्यापक के द्‌वारा प्रश्न पूछे जाने से छात्र भी सावधान हो जाएँगे और कक्षा में ध्यानपूर्वक अध्यापक की बात को सुनेंगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(3) कहानी कहना व सुनना (Story Telling or Listening)—पहले अध्यापक बच्चों को कहानी सुनाए और बाद में उसी कहानी को बच्चों से सुने। इससे भी पता लग जाएगा कि छात्रों ने कहानी ध्यान से सुनी है या नहीं। वैसे भी कहानी में बच्चों की रुचि होती है अत: कहानी के द्वारा बच्चों का ध्यान सुनने की तरफ आकर्षित किया जा सकता है।

(4) श्रुतलेख (Dictation)—श्रुतलेख लेखन-कौशल को विकसित करने का साधन है, परंतु इसकी सहायता से श्रवण-कौशल को भी विकसित किया जा सकता है। श्रुतलेख में बच्चों को सुनकर लिखना होता है। जो छात्र ध्यानपूर्वक सुनेगा वह पूरी सामग्री को लिख लेगा, परंतु जो छात्र ध्यान से नहीं सुनेगा उसके लेख में बीच--बीच में शब्द या वाक्यांश छूट जाएँगे। श्रुतलेख के लिए गद्यांश का चुनाव सोच-समझकर करना चाहिए।

(5) भाषण (Speech)—भाषण मौखिक कौशल को विकसित करने का साधन है; परंतु श्रवण-कौशल का प्रशिक्षण देने में भी प्रयुक्त किया जा सकता है। छात्रों को भाषण से पहले यह बता दिया जाए कि वे भाषण को ध्यान से सुनें, भाषण की समाप्ति के उपरांत उनसे प्रश्न पूछे जाएँगे। बाद में प्रश्न पूछकर यह पता लगाया जाए कि छात्रों ने भाषण को ध्यान से सुना और समझा है या नहीं।

(6) वाद-विवाद (Discussion)—श्रवण-कौशल का प्रशिक्षण देने के लिए भाषण की तरह वाद-विवाद भी एक उपयोगी क्रिया सिद्ध होती है। वाद-विवाद में भाग लेनेवाले छात्रों को हर बात ध्यानपूर्वक सुननी होती है, क्योंकि बिना सुने न तो वे प्रतिपक्षी वक्ता की बातों का उत्तर दे सकेंगे, न अपने तर्क ही प्रस्तुत कर सकेंगे। भाषा-अध्यापक को कक्षा में समय-समय पर उचित विषय का चुनाव कर वाद-विवाद का आयोजन करना चाहिए। सभी छात्रों को भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए और वाद-विवाद की समाप्ति पर सभी छात्रों से प्रश्न पूछकर यह जाँच करनी चाहिए कि वे वाद-विवाद के तर्क-वितर्कों को ध्यान से सुन रहे थे या नहीं।

(7) दृश्य-श्रव्य सामग्री का प्रयोग (Use of Audio Visual aid Material)

(i) **ग्रामोफोन एवं टेपरिकार्डर** (Gramophone and Tape-Recorder)—ग्रामोफोन एवं टेपरिकार्डर सामान्य रूप से मनोरंजन के साधन के रूप में प्रयुक्त होते हैं, परंतु श्रवण-कौशल को विकसित करने के लिए भी ग्रामोफोन एवं टेपरिकार्डर का प्रयोग एक उपयोगी रोचक साधन के रूप में किया जा सकता है। इनकी कीमत बहुत ज्यादा न होने के कारण विद्यालय में इन्हें आसानी से खरीदा जा सकता है। कहानी, कविता, महापुरुषों के भाषण, नाटक आदि सुनाकर बच्चों को साहित्य की तरफ आकर्षित किया जा सकता है। शुद्ध उच्चारण की शिक्षा देने में भी इनकी सहायता ली जा सकती है। टेपरिकार्डर के द्वारा किसी भी साहित्यिक कार्यक्रम को रिकार्ड करके जब चाहे छात्रों को सुनवाया जा सकता है। सुनवाने के पश्चात संबंधित विषय पर वार्तालाप एवं प्रश्नोत्तर द्वारा छात्रों के श्रवण-कौशल की जाँच भी जरूर करनी चाहिए।

(ii) **रेडियो** (Radio)—रेडियो के द्वारा, आकाशवाणी केंद्रों से छात्रों के लिए तरह-तरह के उपयोगी शैक्षिक एवं मनोरंजक कार्यक्रम समय-समय पर प्रसारित किए जाते हैं। श्रवण-कौशल को विकसित करने में इनकी सहायता ली जा सकती है।

(iii) **चलचित्र** (Motion Picture)—चलचित्र में आवाज सुनाई देने के साथ-साथ दृश्य भी दिखाई देता है। ऐसा लगता है कि जो कुछ दिखाई दे रहा है वह सत्य है। बच्चे हर दृश्य को बहुत ध्यान से देखते एवं सुनते हैं। अत: शैक्षिक चलचित्रों का प्रयोग भाषा-शिक्षण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

को रोचक बना देता है।

(iv) **दूरदर्शन** (Television)—चलचित्र को तो हम सिनेमा हॉल में जाकर ही देख सकते हैं, परंतु दूरदर्शन तो अब घर-घर में पहुँच चुका है। घर के कमरे में बैठे हुए हम बोलने वाले की आवाज तो सुनते ही हैं; साथ ही उसकी आकृति भी देखते हैं। श्रवण-कौशल को विकसित करने में इसका प्रयोग भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

(v) **वीडियो** (Video)—जिस तरह किसी भी वार्ता आदि को टेप कर टेपरिकार्डर द्वारा बच्चों को सुनवाया जा सकता है, उसी प्रकार किसी कार्यक्रम को रिकार्ड कर वीडियो के द्वारा दूरदर्शन (टीवी) पर दिखाया जा सकता है। विद्वानों के भाषणों एवं विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों के कैसेट लाकर बच्चों को दिखाए जा सकते हैं। इससे श्रवण-कौशल के साथ-साथ मौखिक अभिव्यक्ति कौशल को विकसित करने में भी सहायता मिलती है।

इस प्रकार उपर्युक्त साधनों एवं विधियों का प्रयोग कर हम छात्रों के श्रवण-कौशल को विकसित करने में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

मौखिक अभिव्यक्ति कौशल शिक्षण
(Teaching of the Skill of Oral Expression)

मौखिक अभिव्यक्ति का अर्थ (Meaning of the term oral expression)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह अपने विचारों का आदान-प्रदान करना चाहता है। इस कार्य के लिए वह भाषा के दोनों रूपों का प्रयोग करता है—मौखिक रूप एवं लिखित रूप। जब व्यक्ति ध्वनियों के माध्यम से, मुख के अवयवों की सहायता से, उच्चरित भाषा का प्रयोग करते हुए अपने विचारों को प्रकट करता है तब इसे मौखिक अभिव्यक्ति कहा जाता है। इसे ही बोलचाल भी कहा जाता है।

इस प्रकार मुख से व्यक्त होनेवाली भाषा मौखिक भाषा है और मुख के अवयवों के माध्यम से भावों व विचारों की अभिव्यक्ति मौखिक अभिव्यक्ति है।

मौखिक अभिव्यक्ति का महत्त्व (Importance of oral expression)

मानव-जीवन की जितनी भी बुनियादी आवश्यकताएँ हैं, उनमें भावों व विचारों की अभिव्यक्ति भी एक अनिवार्यता है। जीवन के हर क्षेत्र में मौखिक अभिव्यक्ति की आवश्यकता जान पड़ती है। इसके महत्त्व को निम्न दृष्टि से देखा जा सकता है :

1. मौखिक भाषा ही अभिव्यक्ति का सहज व सरलतम माध्यम है। मौखिक भाषा में ही मनुष्य अपने भावों को स्वाभाविक रूप से दूसरों के सामने व्यक्त कर देता है।

2. मौखिक भाषा के प्रयोग में कुशल व्यक्ति अपनी वाणी से जादू जगा सकता है। लोकप्रिय नेताओं के भाषण इस बात का प्रमाण हैं।

3. दैनिक जीवन में सभी कार्य-कलापों में मौखिक भाषा ही प्रयुक्त होती है। अपने परिवार में, समाज में अन्य सदस्यों के साथ विचारों का आदान-प्रदान करने के लिए तथा अपनी बात उनसे कहने व उनकी बात समझने के लिए भाषा के इसी रूप का प्रयोग करना होता है।

4. बालक के अंदर जिज्ञासा की प्रवृत्ति होती है। वह तरह-तरह के प्रश्न पूछकर अपनी इस जिज्ञासा को संतुष्ट करता है और प्रसन्नता का अनुभव करता है। इससे उसके स्वाभाविक विकास में सहायता मिलती है, उसके आत्मविश्वास में वृद्धि होती है और व्यक्तित्व में निखार आता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

5. मौखिक भाषा के द्वारा विचारों का आदान-प्रदान कर नई-नई बातों की जानकारी होती है और ज्ञान में वृद्धि होती है। अशिक्षित व्यक्ति बोलचाल के द्वारा ही ज्ञान अर्जित कर लेता है।

6. भाषा-शिक्षण का एक स्वाभाविक क्रम है—सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना। मौखिक भाषा का प्रयोग बालक को सुनने व बोलने में कुशल बनाता है। यह बोलचाल ही पढ़ने-लिखने के कौशल को विकसित करने का आधार बनता है।

7. विद्यालयी पाठ्यक्रम के सभी विषयों की शिक्षा में मौखिक भाषा ही प्रमुख माध्यम होती है।

8. सामाजिक जीवन में सामंजस्य स्थापित करने एवं सामाजिक संबंधों को सुदृढ़ बनाने में भी मौखिक भाषा की प्रमुख भूमिका होती है।

9. आज के युग में राजनीतिक जीवन में सफलता की दृष्टि से भी मौखिक भाषा का अपना महत्त्व है। एक नेता अपनी भाषण-कला के द्वारा ही जन-समुदाय को अपना बना लेता है और अपनी बातचीत के द्वारा अपने संपर्क में आनेवाले व्यक्तियों को प्रभावित कर लेता है।

10. वार्तालाप, बोलचाल या प्रश्नोत्तर द्वारा सीखी हुई विषयवस्तु अपना स्थायी प्रभाव छोड़ती है। अत: विद्यालय में शिक्षण-पद्धति को रोचक व प्रभावशाली बनाने में भी मौखिक भाषा का अत्यधिक महत्त्व है।

मौखिक भाषा-शिषण के उद्देश्य (Aims of Teaching the Skill of Oral Expression)

मौखिक भाषा एवं मौखिक अभिव्यक्ति के महत्त्व को देखते हुए विद्यालय में मौखिक भाषा की औपचारिक शिक्षा आवश्यक हो जाती हे। इसके शिक्षण के उद्देश्यों का वर्णन निम्न प्रकार से किया जा सकता है :

1. छात्रों को इस योग्य बनाना कि वे अपने अनुभवों, भावों व विचारों को सरलतापूर्वक, सहज ढंग से व्यक्त कर सकें।
2. छात्रों को शुद्ध उच्चारण, उचित स्वर, उचित गति एवं उचित हाव-भाव के साथ बोलना सिखाना।
3. छात्रों को इस योग्य बनाना कि वे पूछे गए प्रश्नों का उत्तर स्पष्ट रूप से ठीक-ठीक दे सकें।
4. छात्रों को निस्संकोच होकर अपने विचार व्यक्त करने के योग्य बनाना।
5. छात्रों में स्वाभाविक ढंग से परस्पर वार्तालाप करने की आदत विकसित करना।
6. छात्रों को इस योग्य बनाना कि वे अपने मन में उठनेवाली शंकाओं का समाधान निस्संकोच रूप से प्रश्न पूछकर कर सकें।
7. छात्रों को मधुरतापूर्वक शिष्टाचार के नियमों का पालन करते हुए बोलना सिखाना।
8. छात्रों को इस योग्य बनाना कि वे अपनी कही हुई बात का औचित्य सिद्ध करने के लिए उचित रूप से तर्क कर सकें।
9. छात्रों को धारा-प्रवाह, प्रभावोत्पादक वाणी में बोलना सिखाना।
10. छात्रों को उचित समय पर, उचित शब्दों का प्रयोग कर बोलने का अभ्यास कराना।

अच्छी मौखिक अभिव्यक्ति की विशेषताएँ (Characterstics of a good Oral Expression)

यों तो बालक अनुकरण द्वारा मौखिक भाषा का प्रयोग स्वत: ही करने लगता है परंतु विद्यालय में औपचारिक रूप से इस कौशल को विकसित करने का प्रयास किया जाता है। भाषा के अध्यापक को इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि वह मौखिक भाषा-कौशल को विकसित करने की दृष्टि से छात्रों को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किस तरह का बोलना सिखाए और उनके मौखिक अभिव्यक्ति-कौशल को क्या दिशा प्रदान करे। इसके लिए उसे मौखिक भाषा के निम्न गुणों की जानकारी होनी आवश्यक है :

1. **स्वाभाविकता**—बोलने में स्वाभाविकता होनी चाहिए। बनावटी बोली का प्रयोग हास्यास्पद हो जाता है। अस्वाभाविक भाषा वक्ता को अविश्वसनीय बना देती है। स्वाभाविक भाषा एवं अभिव्यक्ति विश्वसनीय होती है।

2. **स्पष्टता**—बोलने में स्पष्टता होनी चाहिए। जो भी बात कही जाए स्पष्ट व साफ होनी चाहिए। बात को घुमा-फिराकर नहीं बल्कि सीधे शब्दों में साफ-साफ कहना चाहिए।

3. **शुद्धता**—बोलते समय शुद्ध भाषा का प्रयोग करना चाहिए। उच्चारण भी शुद्ध होना चाहिए। अशुद्ध उच्चारण व अशुद्ध भाषा से वक्तव्य प्रभावहीन हो जाता है।

4. **बोधगम्यता**—जो भी बात कही जाए उसके लिए सरल व सुबोध भाषा का प्रयोग करना चाहिए। अभिव्यक्ति का लाभ तभी है जब वह श्रोता को समझ आ जाए।

5. **सर्वमान्य भाषा**—मौखिक अभिव्यक्ति में सर्वमान्य भाषा का प्रयोग करना चाहिए। अप्रचलित शब्दों के प्रयोग से वार्तालाप नीरस बन जाता है।

6. **श्रोताओं के अनुकूल भाषा**—जिस स्तर के व्यक्तियों से बात की जाए उसी प्रकार की भाषा का प्रयोग करना चाहिए। ग्रामीण व्यक्तियों के साथ अत्यंत क्लिष्ट भाषा का प्रयोग करना उचित नहीं।

7. **शिष्टता**—किसी भी व्यक्ति के साथ वार्तालाप करते समय शिष्टाचार का ध्यान रखना चाहिए। अशिष्ट मौखिक अभिव्यक्ति संबंधों का बिगाड़ देती है।

8. **अवसरानुकूलता**—अवसर के अनुसार ही भाषा का प्रयोग होना चाहिए। जीवन में विभिन्न अवसरों पर हर्ष, उल्लास, शोक, दुःख, सहानुभूति एवं प्यार आदि भावों को व्यक्त करना पड़ता है। इन भावों के अनुकूल ही उचित हाव-भाव के साथ मौखिक अभिव्यक्ति करनी चाहिए।

9. **मधुरता**—मौखिक अभिव्यक्ति में मधुर वाणी का प्रयोग करना चाहिए। वाणी की मधुरता ही व्यक्ति को मित्र बना देती है और कठोरता शत्रु। मीठी वाणी का प्रयोग कर किसी भी व्यक्ति से सहजता से काम निकाला जा सकता है।

10. **प्रवाहिकता**—मौखिक अभिव्यक्ति में उचित प्रवाह होना चाहिए। विराम-चिह्नों के उचित पालन से अभिव्यक्ति में सम्यक् गति व प्रवाह आ जाता है। कहाँ कम रुकना है, कहाँ पूर्ण विराम देना है, कहाँ प्रश्नसूचक गति देनी है, कहाँ विस्मयजनक, इन बातों के उचित पालन से अभिव्यक्ति बहुत प्रभावशाली बन जाती है।

मौखिक अभिव्यक्ति कौशल के शिक्षण की विधियाँ
(Methods of Teaching Skill of Oral Expression)

मौखिक कार्य ही भाषा-शिक्षण का मुख्य आधार होता है। मौखिक भाषा के बिना सीखना और सिखाना दोनों ही असंभव हैं। अतः प्रारंभिक स्तर से ही मौखिक भाषा की शिक्षा प्रदान की जानी आवश्यक है ताकि उच्च कक्षा तक पहुँचते-पहुँचते उनकी अभिव्यक्ति में शुद्धता, स्पष्टता, सुबोधता, मधुरता, प्रवाहिकता, स्वाभाविकता एवं प्रभावोत्पादकता पूरी तरह से विकसित हो जाए। इसके लिए अध्यापक निम्नलिखित शिक्षण-विधियों एवं साधनों का प्रयोग कर सकता है :

1. **वार्तालाप** (Conversation)—पाठ्य विषय पढ़ाते हुए या अन्य अवसरों पर छात्रों के साथ अध्यापक को वार्तालाप करना चाहिए। प्रत्येक छात्र को वार्तालाप में भाग लेने के लिए प्रेरित करना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चाहिए। वार्तालाप का विषय बच्चों के ज्ञान व अनुभव की परिधि के भीतर का होना चाहिए। यदि कोई बच्चा जिज्ञासावश प्रश्न पूछे तो उसके प्रश्न का उत्तर देकर उसकी जिज्ञासा को संतुष्ट करना चाहिए। वार्तालाप में छात्रों से भी प्रश्न पूछकर उनके मुख से उत्तर निकलवाने का प्रयास करना चाहिए।

2. सस्वर वाचन (Loud Reading)—पाठ्यपुस्तक का पाठ पढ़ाते समय पहले अध्यापक को स्वयं अनुच्छेद का वाचन करना चाहिए फिर कक्षा के छात्रों से सस्वर वाचन कराना चाहिए। सस्वर वाचन करने से छात्रों का मौखिक अभिव्यक्ति संबंधी संकोच दूर होता है।

3. प्रश्नोत्तर (Question-Answer)—छात्रों को मौखिक शिक्षा देने के लिए प्रश्नोत्तर एक अच्छी विधि है। सामान्य विषयों पर या पाठ्यपुस्तक से संबंधित पाठों पर छात्रों से प्रश्न पूछने चाहिए। छात्रों से पूर्ण वाक्य में ही उत्तर स्वीकार करना चाहिए। यदि उत्तर अपूर्ण या अशुद्ध हो तो उसे सहानुभूतिपूर्ण ढंग से पूर्ण व शुद्ध कराया जाए।

4. चित्र-वर्णन (Picture Description)— छोटे बच्चे चित्र देखने में रुचि लेते हैं। अत: किसी चित्र को दिखाकर उस पर प्रश्न पूछकर बच्चों से चित्र-वर्णन कराना चाहिए। जैसे गाय का चित्र दिखाकर गाय के बारे में बच्चों को बहुत-सी बातें बता सकते हैं। इसी प्रकार चित्र के द्वारा कहानी कही जा सकती है। मौखिक अभिव्यक्ति के लिए चित्र-वर्णन एक रोचक विधि है।

5. कहानी सुनाना व सुनना (Story Telling and Listening)—बच्चे कहानियों को बहुत पसंद करते हैं। अत: अध्यापक को पहले स्वयं कहानी सुनानी चाहिए, फिर बच्चों से उसी कहानी को सुनाने के लिए कहना चाहिए। इससे श्रवण-कौशल एवं मौखिक अभिव्यक्ति-कौशल दोनों को विकसित करने में सहायता मिलती है।

6. कविता-पाठ (Poem Recitation)—छोटे बच्चे गीत सुनने व सुनाने दोनों में ही काफी रुचि लेते हैं अत: कविताएँ कंठस्थ कराके उन्हें कविता-पाठ के लिए प्रेरित करना चाहिए। उचित हाव-भाव व अंगसंचालन के साथ कविता-पाठ करने में उन्हें बहुत आनंद का अनुभव होता है। इसलिए कविता-पाठ मौखिक अभिव्यक्ति की शिक्षा देने का एक उपयोगी साधन है।

7. अंत्याक्षरी प्रतियोगिता (Aantakshari Competition)—इस साहित्यिक क्रिया में बालक कविताओं को कंठस्थ करते हैं और प्रतियोगिता के समय पहले दल के बालक द्वारा कही गई कविता जिस वर्ण से खत्म होती है, उसी वर्ण से शुरू होनेवाली कविता सुनाते हैं। इससे बच्चों में कविता के प्रति रुचि जाग्रत होती है और मौखिक अभिव्यक्ति का अभ्यास भी होता है।

8. वाद-विवाद (Discussion)—इसमें बालक पूर्व निर्धारित विषय पर विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। कुछ बालक विषय के पक्ष में और कुछ विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत करते हैं। इस तरह भावपूर्ण ढंग से अपने विचारों का तर्कपूर्ण प्रतिपादन करने का प्रशिक्षण देने के लिए वाद-विवाद एक उत्तम साधन है।

9. अनुच्छेद-सार या पाठ का सार (Summary of the pare of lesson)—पाठ्य पुस्तक या अन्य किसी पत्रिका का कोई पाठ या रचना पढ़कर उसका सार बताने के लिए कहा जाता है। छात्र रचना की मुख्य-मुख्य बातें संक्षेप में व्यक्त करते हैं। इसी प्रकार किसी पाठ का कोई अनुच्छेद पढ़कर उसका सार बताने के लिए भी कहा जाता है।

10. स्वतंत्र आत्मप्रकाशन का अवसर (Opportuniy for self Expression)—बच्चों को भी समय-समय पर विभिन्न प्रकार के अनुभव होते रहते हैं। विभिन्न घटनाओं, दृश्यों या व्यक्तिगत

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जीवन से संबंधित इन अनुभवों को सुनाने के लिए अवसर देकर भी अध्यापक मौखिक भाषा का अभ्यास करा सकता है।

11. भाषण (Declamation Contests)—पूर्व निर्धारित कोई रोचक विषय देकर, अध्यापक छात्रों को भाषण करने का अवसर प्रदान कर सकता है। 'भाषण' मौखिक अभिव्यक्ति का एक 'सशक्त' साधन है। भाषण का विषय छात्रों के मानसिक स्तर के अनुकूल होना चाहिए। आवश्यकतानुसार छात्रों का उचित मार्गदर्शन भी करना चाहिए। समय-समय पर विभिन्न भाषण-प्रतियोगिताओं का आयोजन करके छात्रों को भाषण में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने का प्रयास भी करना चाहिए।

12. नाटक मंचन (Dramatisation)—मौखिक अभिव्यक्ति के सभी गुणों को विकसित करने के लिए नाटक एक उपयोगी साधन है। इसमें भाग लेनेवाले विद्यार्थी को पात्र के चरित्र के अनुसार उचित हाव-भाव, उतार-चढ़ाव एवं प्रवाह के साथ संवाद प्रस्तुत करने होते हैं। अत: उचित नाटक का चुनाव कर, अध्यापक को छात्रों को नाटक-मंचन में पूर्ण सहयोग देना चाहिए। इससे छात्र पूरी लगन के साथ मौखिक अभिव्यक्ति की विविध शैलियों को सीखते हैं तथा उसका अभ्यास करते हैं।

उपर्युक्त पाठ्य-क्रियाओं एवं सह-पाठ्य-क्रियाओं का आयोजन कर अध्यापक अपने छात्रों को मौखिक अभिव्यक्ति का अभ्यास करने के उचित अवसर प्रदान कर सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि उपर्युक्त क्रियाओं के लिए जो भी विषय चुना जाए, वह बच्चों के मानसिक स्तर के अनुकूल हो। अध्यापक का व्यवहार प्रेम एवं सहानुभूतिपूर्ण हो। अध्यापक स्वयं सतर्क एवं सजग रहे। छात्रों की मौखिक अभिव्यक्ति संबंधी त्रुटियों को सावधानीपूर्वक दूर किया जाए और सभी छात्रों को मौखिक अभिव्यक्ति में सक्रिय भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

पठन या वाचन-कौशल का शिक्षण
(Teaching of the Reading Skills)

वाचन का अर्थ (Meaning of the term Reading)—पढ़ने की शिक्षा के लिए वाचन व पठन दो शब्दों का प्रयोग सामान्य रूप से किया जाता है। वाचन शब्द वाक् धातु से बना है, जिसका अर्थ है—शब्द, वाणी अथवा कथन। लिखे हुए अथवा छपे हुए शब्दों का उच्चारण करना वाचन कहलाता है, परंतु यह वाचन का संकुचित अर्थ है। वास्तव में लिखित सामग्री को पढ़ते हुए अर्थ ग्रहण करने की क्रिया को पठन या वाचन कहा जाता है।

पठन एक सोद्देश्य, सार्थक तथा चिंतन-प्रधान क्रिया है। पठन करते हुए, जैसे-जैसे पढ़नेवाले की दृष्टि छपे हुए शब्दों पर घूमती है वैसे-वैसे वह उन शब्दों में निहित अर्थ एवं भाव को भी ग्रहण करता जाता है। वास्तव में यही पठन या वाचन का सही रूप है।

पठन / वाचन के रूप—सामान्यत: वाचन दो प्रकार का होता है :

(1) सस्वर वाचन

(2) मौन वचन

1. सस्वर वाचन (Loud Reading)—स्वर सहित पढ़ते हुए अर्थ ग्रहण करने को सस्वर वाचन कहा जाता है। यह वाचन की प्रारंभिक अवस्था होती है। वर्णमाला के लिपिबद्ध वर्णों की पहचान सस्वर वाचन के द्वारा ही कराई जाती है। शब्द और वाक्यों को शुद्ध उच्चारण के साथ उचित गति से पढ़ने का अभ्यास सस्वर वाचन के द्वारा ही कराया जाता है। सस्वर वाचन दो प्रकार का होता है :

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(क) व्यक्तिगत वाचन (Individual Reading)

(ख) सामूहिक वाचन (Collective Reading)

(क) व्यक्तिगत वाचन—एक व्यक्ति द्वारा आवाज़ करते हुए किए जानेवाले सस्वर वाचन को व्यक्तिगत वाचन कहा जाता है। अध्यापक के द्वारा किए जाने पर इसे आदर्श वाचन एवं छात्र द्वारा किए जाने पर अनुकरण वाचन कहा जाता है। अध्यापक के आदर्श वाचन को सुनकर छात्र वाचन करने के ढंग से परिचित होते हैं और उसी का अनुकरण कर स्वयं पढ़ने का प्रयास करते हैं। छात्रों के अनुकरण वाचन से अध्यापक को छात्रों के वाचन करने की योग्यता का ज्ञान होता है। अत: अध्यापक को अनुकरण वाचन के समय बहुत सावधान रहना चाहिए। उसे देखना चाहिए कि बच्चा कहाँ उच्चारण ठीक कर रहा है, कहाँ गलत? उचित गति, हाव-भाव, आरोह-अवरोह एवं विराम-चिह्नों का पालन ठीक से कर रहा है या नहीं?

(ख) सामूहिक वाचन—दो या दो से अधिक छात्रों द्वारा आवाज सहित किए जानेवाले वाचन को सामूहिक वाचन कहते हैं। इस वाचन से बच्चों की झिझक दूर होती है। उनमें मौखिक अभिव्यक्ति के लिए आत्मविश्वास का संचार होता है। इसे 'समवेत वाचन' भी कहते हैं। समवेत वाचन के समय अध्यापक को ध्यान रखना चाहिए कि सभी छात्र मुख से आवाज निकाल रहे हैं या नहीं। साथ ही इस बात का ध्यान रहे कि वाचन सही ढंग से हो, शोर में परिवर्तित न हो जाए।

सस्वर वाचन की उपयोगिता (Importance of Loud Reading)—जब प्राथमिक अवस्था में बच्चे में वाचन-कौशल को विकसित करने के लिए प्रयास आरंभ करते हैं तो सर्वप्रथम सस्वर वाचन ही कराया जाता है। बालक जब आवाज करते हुए पाठ्य-सामग्री को पढ़ता है तो इससे उसे आनंद की प्राप्ति होती है। धीरे-धीरे वाचन के प्रति उसकी रुचि बढ़ती जाती है। सस्वर वाचन के द्वारा ही बच्चे को शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराया जाता है। साथ ही उचित गति, बल, विराम, हाव-भाव तथा आरोह-अवरोह के साथ पढ़ने का अभ्यास होता है। जो बच्चा सस्वर वाचन में कुशल होता है वह मौखिक अभिव्यक्ति में भी कुशल होता है क्योंकि सस्वर वाचन से उसकी हिचक व संकोच समाप्त हो जाते हैं और वह आत्मविश्वास के साथ किसी के सामने अपने विचारों को व्यक्त करने में समर्थ हो जाता है।

सस्वर वाचन करते समय नए-नए शब्द बच्चा पढ़ता है, इससे उसका शब्द-भंडार बढ़ता है। नए-नए मुहावरे व लोकोक्तियों का ज्ञान होता है। विषयवस्तु को समझने का प्रयास करने से अर्थग्रहण की योग्यता बढ़ती है। नई-नई बातों की जानकारी होती है और ज्ञान में वृद्धि होती है। वाचन में रुचि विकसित होने से धीरे-धीरे स्वाध्याय की आदत विकसित होती है। कविताओं का सस्वर वाचन करने पर उनसे आनंद की प्राप्ति होती है और रसास्वादन की योग्यता विकसित होती है। स्ट्रैंग का कहना है कि "पढ़ते समय व्यक्ति की अनुभूतियाँ जाग्रत होती हैं और उसमें भावोद्रेक होता है। वह पाठ्य वस्तु को पसंद करता है या नापसंद, उससे सहमत होता है या असहमत, उसके प्रति संतोष व्यक्त करता है या असंतोष। पाठक केवल विचार ही ग्रहण नहीं करता वरन विचारों की सृष्टि भी करता है।"

अत: भाषा-शिक्षण में सस्वर वाचन का अपना विशेष महत्त्व है।

सस्वर वाचन के उद्देश्य (Aims of Loud Reading)—सस्वर वाचन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :

(i) छात्रों को वर्णमाला के लिपि-प्रतीकों का पूर्ण ज्ञान कराना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

(ii) छात्रों को [illegible] उच्चारण, उचित ध्वनिनिर्गम, उचित बल तथा प्रवाह के साथ गद्य-पद्य का सस्वर पाठ करने के योग्य बनाना।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(iii) छात्रों को उचित वाचनमुद्रा में, उचित हाव-भाव के साथ पढ़ने के योग्य बनाना।

(iv) छात्रों को नए-नए शब्दों, वाक्य-रचना एवं विभिन्न लेखन-शैलियों से परिचित कराना।

(v) छात्रों को पाठ्य-सामग्री का अर्थ ग्रहण करने के योग्य बनाना।

(vi) छात्रों को पाठ्य-सामग्री के माध्यम से मानव-जीवन के विविध पहलुओं से परिचित कराना।

(vii) छात्रों में मौखिक अभिव्यक्ति के लिए आत्मविश्वास विकसित करना।

(viii) छात्रों में अध्ययन के लिए रुचि जाग्रत करना।

(ix) छात्रों को कविता के सस्वर पाठ द्वारा कविता का रसास्वादन करने के योग्य बनाना।

(x) पाठ्य-सामग्री के केंद्रीय भाव को ग्रहण कर उसकी समीक्षा करने के योग्य बनाना।

सस्वर वाचन के गुण (Characteristics of Loud Reading)—सस्वर वाचन में निम्नलिखित गुण होने चाहिए :

(i) शुद्ध उच्चारण—सस्वर पाठ में वर्णों व शब्दों का उच्चारण शुद्ध होना चाहिए। शब्दों में हर वर्ण का उच्चारण उचित स्थान से होना चाहिए। उच्चारण की ज़रा-सी अशुद्धि अर्थ का अनर्थ कर सकती है। जैसे—ग्रह, गृह; गिरह, स्वजन-श्वजन, सम्मान, सामान, समान।

(ii) उचित ध्वनि-निर्गम—मुख के जो भी अवयव ध्वनि-निर्गम में सक्रिय होते हैं उनका ठीक-ठीक प्रयोग होना चाहिए। कंठ, तालु, मूर्धा, दंत, ओष्ठ, नासिका आदि उच्चारण-स्थानों से ध्वनि ठीक-ठीक उच्चरित होनी चाहिए।

(iii) उचित बल एवं विराम—पाठ्य-सामग्री में जिस प्रकार के भाव एवं विचार हैं उसी प्रकार से बल का प्रयोग करना चाहिए। कहाँ कम रुकना है, कहाँ अधिक, कहाँ प्रश्नसूचक ध्वनि का प्रयोग करना है, कहाँ विस्मयजनक, इन सब बातों का उचित ढंग से पालन करना चाहिए। अर्द्धविराम या पूर्णविराम का अशुद्ध प्रयोग अर्थ को बदल देता है।

(iv) उचित लय एवं गति—पाठ्य-सामग्री के भाव के अनुसार ही उचित लय, गति एवं प्रवाह का ध्यान रखते हुए वाचन करना चाहिए। न तो बहुत मंद गति से न ही बहुत तेज।

(v) उचित हाव-भाव—सस्वर वाचन करते समय पाठ्य-सामग्री के भावों के अनुसार पाठक को उचित हाव-भाव का प्रदर्शन भी करना चाहिए। शृंगार के भाव, क्रोध का भाव, वात्सल्य का भाव, वीरता का भाव आदि के अनुसार ही हाव-भाव परिवर्तित होते रहने चाहिए।

(vi) उचित वाचन मुद्रा—सस्वर वाचन करते समय पाठक खड़े होकर या बैठकर जैसे भी पढ़ रहा हो, उसकी मुद्रा ठीक होनी चाहिए। सही ढंग से खड़े होना चाहिए। रीढ़ की हड्डी सीधी होनी चाहिए। किताब आँखों से लगभग एक फुट की दूरी पर होनी चाहिए। श्रोताओं के मध्य वाचन करते हुए बीच-बीच में उनकी ओर देख लेना चाहिए।

(vii) स्वर-माधुर्य—पढ़ते समय वाणी में मधुरता होनी चाहिए। एक-एक वर्ण स्पष्ट रूप से सुनाई दे व स्वर का उतार-चढ़ाव बना रहे यही स्वर-माधुर्य है।

(viii) प्रभावोत्पादकता—वाचन में प्रभाव लाने के लिए पाठक को अपनी दृष्टिपरिधि विस्तृत बनानी चाहिए। उसकी दृष्टि केवल पुस्तक पर ही न जमी रहे। धाराप्रवाह गति से किया जाने वाला वाचन प्रभावोत्पादक होता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ix) अंगसंचालन—वाचन करते समय पाठ को अपने शारीरिक अंगों जैसे—हाथ, पैर, सिर, आँख, भौंह आदि का स्वाभाविक अंगसंचालन भी करना चाहिए। इससे वाचन में सजीवता आ जाती है। कविता-पाठ में तो अंगसंचालन कविता के भावों को स्पष्ट करके उसके प्रभाव और प्रवाह दोनों को बढ़ा देता है।

(x) स्वाभाविकता—पाठक को कृत्रिम स्वर में न बोलकर अपने स्वाभाविक स्वर में, स्वाभाविक ढंग से ही वाचन करना चाहिए।

2. मौन वाचन (Silent Reading)—लिपिबद्ध भाषा अर्थात लिखित सामग्री को बिना आवाज किए हुए मन-ही-मन में शांतिपूर्वक पढ़कर अर्थ ग्रहण करने की क्रिया को मौन वाचन कहा जाता है।

इसमें नेत्र पाठ्य-सामग्री को जल्दी-जल्दी पढ़ते हैं और मस्तिष्क उस सामग्री के अर्थ को ग्रहण करता जाता है। इसमें बिना होंठ हिलाए बच्चा मन-ही-मन में पढ़ता है।

मौन वाचन की उपयोगिता (Importance of Silent Reading)—सस्वर वाचन का अभ्यास कराने के पश्चात बच्चों को मौन वाचन का अभ्यास कराया जाता है। जीवन में ऐसे बहुत-से अवसर आते हैं जब व्यक्ति सस्वर वाचन नहीं कर सकता है, जैसे—बहुत-से लोगों की उपस्थिति में आवाज करते हुए पढ़ना अच्छा नहीं लगता। इससे दूसरों को बाधा पहुँचती है। ऐसी स्थिति में मन-ही-मन में पढ़ना जरूरी होता है। अतः हर बच्चे को मौन वाचन का अभ्यास होना जरूरी है। पुस्तकालय एवं वाचनालयों में या सार्वजनिक स्थानों पर, जहाँ जोर से पढ़ना वर्जित होता है, मौन वाचन करना पड़ता है।

मौन वाचन में नेत्र तथा मस्तिष्क सक्रिय रहते हैं परंतु उच्चारण-अवयवों को सक्रिय नहीं होना पड़ता है, अतः काफी देर तक बिना थके हुए अध्ययन किया जा सकता है।

मौन वाचन में पढ़ने की गति भी तेज़ होती है। अतः कम समय में अधिक पाठ्य सामग्री का अध्ययन किया जाता है। आँखें झटके के साथ बीच-बीच में रुकती हुई आगे बढ़ती हैं। मौन वाचन में चक्षुगति का समुचित विकास होने से दृष्टि-विराम कम होते जाते हैं और पढ़ने की गति तेज़ रहती है।

मौन पठन के समय पाठक एकाग्रचित्त होकर, ध्यान केंद्रित कर पढ़ता है, अतः इस समय ग्रहण किया गया अर्थ अधिक स्थायी होता है। साथ ही अर्थ ग्रहण करने की योग्यता का विकास होता है।

अवकाश के समय का सदुपयोग करने में भी मौन वाचन ही सहायक होता है। खाली समय में मनोरंजक पाठ्य-सामग्री का आनंद मौन वाचन के द्वारा ही लिया जाता है।

मौन वाचन से ही स्वाध्याय की आदत का विकास होता है। गहन अध्ययन वही व्यक्ति कर सकता है जिसे मौनवचन का अभ्यास है।

मौन वाचन के उद्देश्य (Aims of Silent Reading)—मौन वाचन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :

(i) छात्रों को तीव्र गति से पढ़ने का अभ्यास कराना।

(ii) छात्रों की परिचित शब्दावली को सक्रिय शब्दावली में परिवर्तित करना।

(iii) पाठ्य-सामग्री का अर्थ ग्रहण कर उसके केंद्रीय भाव को समझने के योग्य बनाना।

(iv) अवकाश के समय का सदुपयोग करना सिखाना।

(v) छात्रों में स्वाध्याय की आदत विकसित करना।

(vi) छात्रों की वाचन में रुचि जाग्रत करना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मौन वाचन के गुण एवं सावधानी
(Characteristics and Essential Precautions of Silent Reading)

मौन वाचन करते हुए आवाज बिलकुल नहीं होनी चाहिए, अत: बिना होंठ हिलाए मन-ही-मन में पढ़ना चाहिए। एकाग्रता होनी चाहिए। पाठक का चित्त एकाग्र होने पर ही पाठ्य वस्तु का अर्थ व भाव ग्रहण किया जा सकता है। सस्वर वाचन का अभ्यास कराने के उपरांत ही मौन वाचन का अभ्यास कराना चाहिए। इसी प्रकार मौन वाचन कराने से पहले कठिन शब्दों तथा कठिन स्थलों की पूर्ण व्याख्या कर देनी चाहिए जिससे भाव ग्रहण में बाधा न हो। मौन वाचन के समय कक्षा में पूर्ण शांति रहनी चाहिए।

मौन वाचन के पहले छात्रों को स्पष्ट निर्देश दे देना चाहिए, जिससे बालक उन बातों को ध्यान में रखकर मौन पाठ करें। मौन वाचन के उपरांत प्रश्न पूछकर यह जाँच कर लेनी चाहिए कि बच्चों को पाठ्य वस्तु का अर्थ व भाव समझ में आया है या नहीं तथा बच्चे ध्यान से पढ़ रहे थे या नहीं। अध्यापक की सजगता एवं सावधानी पर ही मौन वाचन की सफलता निर्भर करती है।

वाचन या पठन-कौशल शिक्षण की तकनीक एवं विधियाँ
(Methods and Techniques of Teaching Reading Skill)

पठन या वाचन भाषा का एक महत्त्वपूर्ण कौशल होने के साथ हीं विचारों के आदान-प्रदान का एक प्रभावपूर्ण माध्यम भी है। वास्तव में पठन ही ज्ञानार्जन की कुंजी है। पठन के माध्यम से ही देश-विदेश में हो रहे विकास एवं परिवर्तन से परिचित हो सकते हैं। अपने देश तथा समाज की सभ्यता तथा संस्कृति की जानकारी भी पठन द्वारा ही हो सकती है। पठन ही व्यक्ति के ज्ञान में वृद्धि कर, उसमें उचित भावनाओं का संचार करता है और जीवन के किसी भी कार्यक्षेत्र के लिए आवश्यक कौशल प्रदान करता है। अत: बच्चे में पठन-कौशल को विकसित करना भाषा-शिषण का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है।

भाषा की इकाई वाक्य, वाक्य की इकाई शब्द तथा शब्द की इकाई वर्ण है। अत: पठन-कौशल विकसित करने के लिए सबसे पहले वर्ण-परिचय कराना आवश्यक होता है। वर्णों की पहचान होने पर ही बालक शब्दों और वाक्यों का पठन कर सकेगा। पठन-कौशल की शिक्षा देने के लिए हमें निम्न प्रक्रिया एवं विधि का प्रयोग करना चाहिए।

(अ) वाचन के लिए तैयार करना—एकदम से पुस्तक देकर बच्चों को वर्ण पढ़ने के लिए कहना अमनोवैज्ञानिक माना जाता है। अत: अध्यापक का कर्त्तव्य है कि बच्चों को वर्ण पढ़ना सिखाने से पहले, उनके मन में पढ़ने अर्थात वर्णों से परिचित होने की इच्छा जाग्रत करे। रंग-बिरंगे चित्र, कहानी, कविता आदि के माध्यम से बच्चों की रुचि पढ़ने की तरफ आकर्षित की जा सकती है। जब बच्चे के मन में पढ़ने के लिए इच्छा पैदा हो जाए तब उसे वर्णों की पहचान करानी चाहिए।

(ब) अक्षर-ज्ञान कराना—बच्चों को हिंदी की वर्णमाला के विभिन्न वर्णों का ज्ञान कराने तथा उनके मेल से बननेवाले शब्दों व वाक्यों को पढ़ने का अभ्यास कराने के लिए कई प्रकार की विधियों का प्रयोग किया जाता है। अध्यापक अपनी रुचि व विधि की उपयोगिता को देखते हुए किसी भी विधि का प्रयोग कर सकता है। अक्षर-ज्ञान कराने की विभिन्न विधियाँ निम्नलिखित हैं :

1. वर्णोच्चारण विधि (Letter Recitation Method)—इस विधि में अध्यापक एक-एक वर्ण को श्यामपट्ट पर लिखकर उसका उच्चारण करता है। छात्र श्यामपट्ट पर लिखी हुई या पाठ्य-पुस्तक में छपी हुई वर्ण की आकृति को देखते हैं और अध्यापक का अनुकरण करते हुए वर्ण का उच्चारण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करते हैं। यह अत्यंत प्राचीन विधि है। वर्णों का ज्ञान देने के उपरांत मात्राओं आदि की पहचान कराकर वाचन की ओर अग्रसर किया जाता है।

गुण— 1. इस विधि से बच्चों को हिंदी वर्णमाला के हर वर्ण का तार्किक क्रम में ज्ञान होता है।

2. इसमें बच्चों को ध्वनियों के शुद्ध उच्चारण का ज्ञान होता है।

3. वर्णों की पहचान पूरी तरह से होने के उपरांत बच्चे अक्षरों को जोड़कर शब्द पढ़ते हैं। इसमें सफलता मिलने पर वाचन में उनकी रुचि विकसित होती है।

दोष—वर्ण अपने आपमें निरर्थक है। अत: बच्चे की रुचि पढ़ने में विकसित नहीं हो पाती है। यह अमनोवैज्ञानिक भी है क्योंकि शिक्षण-सूत्रों के विपरीत चलती है। अक्षर सूक्ष्म है, अज्ञात है, कठिन है। इस विधि में पहले अक्षर फिर शब्द सिखाए जाते हैं। अत: अज्ञात से ज्ञात, कठिन से सरल, सूक्ष्म से स्थूल एवं अंश से पूर्ण की ओर जाना पड़ता है। इस प्रकार यह प्रणाली अपूर्ण है।

2. अक्षर-बोध विधि (Alphabetic Method)—इस विधि में भी वर्णमाला के वर्णों का क्रमानुसार ज्ञान कराया जाता है। पहले स्वर फिर व्यंजन। वर्णों की पहचान कराने के पश्चात मात्राओं की पहचान और शब्द पढ़ना सिखाया जाता है। वर्णों का ज्ञान कराने के लिए वर्ण से बनने वाले शब्द का चित्र भी दिखाया जाता है। जैसे—'अ' से अनार।

गुण—1. इसमें वर्णों का क्रमबद्ध ज्ञान होता है।

2. वर्णों को मिलाकर शब्द पढ़ने का अभ्यास होता है।

3. मात्रा आदि का पूर्ण ज्ञान हो जाता है।

4. उच्चारण शुद्ध होता है।

5. चित्र, फ्लैश कार्ड आदि का प्रयोग होने से शिक्षण रुचिकर हो जाता है।

दोष—अक्षरों का बच्चों के जीवन के साथ कोई संबंध नहीं है। वे निरर्थक होते हैं। जब बालक चित्र के साथ वर्ण की पहचान करता है तो चित्र के अभाव में वर्ण पढ़ना मुश्किल हो जाता है। किसी प्रकार एक-एक वर्ण को मिलाकर शब्द पढ़ता है जैसे—क + म + ल = कमल, तो उसे अटक-अटककर पढ़ने का अभ्यास हो जाता है। इससे आगे चलकर उचित गति से वाचन करने में परेशानी होती है।

3. ध्वनि-साम्य विधि (Phonetic Method)—इस विधि में समान ध्वनि के वर्णों को एक साथ सिखाया जाता है। जैसे—काम, दाम, राम, शाम, चाम, नाम, नर्म, मर्म, कर्म, गर्म, धर्म, चर्म आदि।

गुण—इस विधि में एक ही वर्ण को बार-बार उच्चरित करने से ध्वनियों का खूब अभ्यास हो जाता है।

दोष—इस विधि में ध्वनि-साम्य के कारण कई शब्द ऐसे बना लिए जाते हैं जो निरर्थक होते हैं। दूसरे, इस विधि से सभी वर्णों का सिखाना मुश्किल होता है। कई शब्द या वाक्य ऐसे बना लिए जाते हैं जो बनावटी-से हो जाते हैं, जैसे—चल घर चल, बस कर, हठ मत कर, जल भर आदि।

4. देखो और कहो विधि (Look and Say Method)—इस विधि में शब्द से संबंधित वस्तु या चित्र दिखाकर पहले शब्द का ज्ञान कराया जाता है। चित्र के नीचे वस्तु का नाम लिखा होता है। चित्र परिचित होने के कारण बच्चे आसानी से शब्द से साहचर्य स्थापित कर लेते हैं। अध्यापक का अनुकरण करते हुए बच्चे शब्द का उच्चारण करते हैं। फिर शब्द के प्रारंभिक वर्ण व अन्य वर्णों की पहचान करते हैं। कई बार देखने-सुनने और बोलने से वर्णों के चित्र मस्तिष्क पर अंकित हो जाते हैं।

गुण—यह विधि मनोवैज्ञानिक है। इसमें पूर्ण से अंश की ओर, ज्ञात से अज्ञात की ओर, सरल से कठिन की ओर आदि शिक्षण-सूत्रों का पालन होता है। भाषा की इकाई वाक्य व वाक्य की इकाई शब्द

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
है। शब्द सार्थक होता है। अत: इस विधि में शब्द के द्वारा वर्ण-पहचान होने से वाचन-शिक्षण रोचक हो जाता है। वाचन-शिक्षण में दृष्टि-विराम का अत्यंत महत्त्व है। इसमें शुरू में ही दृष्टि-विराम शब्द के पश्चात होता है, वर्ण के पश्चात नहीं।

दोष—इस विधि में सभी शब्दों के वस्तु-चित्र उपस्थित करना असंभव है। बच्चे चित्र से साहचर्य स्थापित कर लेते हैं, चित्र के अभाव में शब्द पढ़ना कठिन हो जाता है। शब्दों का परिचय कराने पर भी अंतत: वर्ण-बोध कराना आवश्यक होता है।

5. वाक्य विधि (Sentence Method)—भाषा की इकाई वाक्य है। अत: इस विधि में चार्ट पर लिखा हुआ वाक्य प्रस्तुत किया जाता है और अध्यापक वाक्य पढ़ता है। बच्चे अध्यापक का अनुकरण करते हुए वाक्य का उच्चारण करते हैं। बार-बार वाक्य को पढ़ते हुए बच्चे उसके शब्दों से परिचित हो जाते हैं। फिर वाक्य में प्रयुक्त शब्दों को अलग-अलग क्रम में बच्चों के सामने रखते हैं। जैसे—

वह कलम मेरी है। कलम यह मेरी है। मेरी है यह कलम। है मेरी यह कलम।

बच्चे इन शब्दों को पहचानते हुए, वाक्य को पढ़ेंगे और वाचन का अभ्यास करेंगे।

गुण—यह विधि मनोवैज्ञानिक है। पहले वाक्य, फिर शब्द, फिर वर्ण—इस क्रम में बच्चों को वाचन का अभ्यास कराया जाता है। अत: इस विधि में बच्चा स्वाभाविक क्रम में पढ़ना सीखता है।

दोष—बच्चों की अनुभव-परिधि से संबंधित वाक्यों का निर्माण मुश्किल कार्य है। बच्चे शब्द रट लेते हैं। उनका शब्द-भंडार सीमित रह जाता है।

6. कहानी-विधि (Story Method)—बच्चों की कहानी में बहुत रुचि होती है। अत: इस विधि में छोटे-छोटे वाक्यों की एक कहानी चार्ट व चित्रों के माध्यम से बच्चों के सामने प्रस्तुत की जाती है। अध्यापक चार्ट या चित्र दिखाते हुए, चित्र के नीचे लिखे हुए वाक्य को पढ़ता है। विद्धार्थी अध्यापक का अनुकरण करते हुए उस वाक्य का उच्चारण करते हैं। धीरे-धीरे विश्लेषण द्वारा विद्यार्थी शब्दों को, फिर वर्णों को पहचानने लगते हैं।

गुण—यह वाक्य-विधि का ही विकसित रूप है। कहानी में बच्चों की रुचि होने के कारण इस विधि में वाचन रोचक हो जाता है।

दोष—वर्णों की पहचान के बिना कहानी के माध्यम से वाक्य, फिर शब्द व फिर वर्ण सिखाना बहुत कठिन कार्य है।

7. कविता-विधि (Poem Recitation Method)—बच्चे की संगीत में स्वाभाविक रुचि होती है। उसी को ध्यान में रखते हुए इस विधि का विकास किया गया। इसकी शिक्षण-प्रक्रिया कहानी-विधि जैसी ही है। कहानी के स्थान पर सरल-सरल शब्दों के वाक्यवाली कविता होती है। बच्चों से कविता का गायन कराया जाता है। धीरे-धीरे शब्दों व वर्णों की पहचान होने लगती है।

8. अनुकरण-विधि (Imitation Method)—भाषा अनुकरण से सीखी जाती है। इस विधि में बालक अध्यापक का अनुकरण करके शब्दों तथा वर्णों का उच्चारण करना सीखते हैं। अध्यापक एक-एक वाक्य, शब्द एवं वर्ण का उच्चारण करता है और बच्चे उसका अनुकरण करते हुए शब्द की ध्वनि का उच्चारण करते हैं। वैसे यह विधि हिंदी भाषा के लिए उतनी उपयोगी नहीं जितनी अंग्रेजी भाषा के लिए।

9. साहचर्य-विधि (Association Method)—इस विधि में कक्षा के कमरे की दीवार पर चित्र टाँग दिए जाते हैं। इन चित्रों में शब्द व वर्ण भी लिखे होते हैं। वैसे ही शब्द व वर्ण के कार्ड कमरे में रखे होते हैं। बच्चे दीवार पर लटके चित्र के वर्णों से मिलते हुए वर्ण के कार्ड छाँटकर निकालते हैं और

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्यापक इनका उच्चारण कर, बच्चों की इनसे पहचान कराता है। धीरे-धीरे चित्र, कार्ड एवं उच्चारण में साहचर्य स्थापित होता है और बालक को शब्दों तथा वर्णों का ज्ञान होता जाता है। बालक खेल-खेल में सक्रिय होकर वाचन करना सीख जाते हैं।

10. संयुक्त विधि (Eclectic Method)—उपर्युक्त सभी विधियों को देखने से ज्ञात होता है कि कोई भी विधि दोषरहित नहीं है। हमें सभी विधियों के गुणों का लाभ उठाना चाहिए। यदि प्रारंभ में ही वर्ण-परिचय के समय ही बच्चे की अरुचि हो गई तो आगे वाचन-अभ्यास कराना मुश्किल हो जाएगा। अत: सभी विधियों की अच्छाइयों को ग्रहण कर उनका मिश्रित रूप से प्रयोग कर वाचन-शिक्षण को रुचिकर बनाने का प्रयास करना चाहिए। इस मिश्रित रूप को ही संयुक्त विधि कह सकते हैं। इस विधि में वाचन-शिक्षण का निम्न क्रम होगा :

(i) सबसे पहले मौखिक वार्तालाप द्वारा बच्चों के मन में वाचन के लिए रुचि व उत्सुकता जाग्रत करनी चाहिए।

(ii) मौखिक वार्तालाप के समय आकर्षक चित्र व उनमें लिखे हुए शब्दों की ओर बच्चों का ध्यान आकर्षित करना चाहिए।

(iii) 'देखो और कहो' विधि की सहायता से फ्लैश कार्ड, चित्र, लकड़ी के ब्लॉक आदि का प्रयोग कर वर्णों का ज्ञान कराना चाहिए। शब्दों से वर्णों को अलग कर, फिर वर्णों से शब्द बनाकर अर्थात संश्लेषण से विश्लेषण और विश्लेषण से संश्लेषण के क्रम में वर्णों की पहचान करानी चाहिए।

(iv) फिर ध्वनि-साम्य-विधि की सहायता से एक-एक वर्ण के अनेक शब्द बनाकर वर्णों को पढ़ाना सिखाना चाहिए।

(v) इसके उपरांत वर्णमाला के सभी वर्णों को तार्किक क्रम में एक-एक कर प्रस्तुत करना चाहिए। सभी मात्राएँ यथाक्रम सिखानी चाहिए। हर वर्ण के साथ सभी मात्राएँ लगाकर भी पढ़ने का अभ्यास कराना चाहिए। जैसे—क, का, कि, की आदि। इसके बाद संयुक्त वर्णों को पढ़ना सिखाया जाए।

(vi) इसके बाद शब्द, फिर वाक्य का वाचन कराना चाहिए।

(स) वाचन-अभ्यास—सभी वर्णों तथा मात्राओं का ज्ञान होने के उपरांत सस्वर वाचन के द्वारा बच्चों को स्वतंत्र रूप से पढ़ने का अभ्यास कराना चाहिए। इसके लिए पहले अध्यापक को स्वयं 'आदर्श वाचन' करना चाहिए। अध्यापक के आदर्श वाचन को सुनकर उसका अनुकरण करते हुए कक्षा के बच्चों से अलग-अलग सस्वर वाचन कराकर बच्चों को सही ढंग से वाचन करना सिखाना चाहिए।

वाचन की सामान्य त्रुटियाँ (Common errors or faults in Reading)

वाचन एक कला है। वाचन कौशल को विकसित करने के लिए काफी अभ्यास करना जरूरी है। वाचन करते हुए बच्चे निम्न प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं :

1. अशुद्ध उच्चारण
2. अनुचित गति
3. अटक-अटककर पढ़ना
4. अनुचित मुद्रा (पुस्तक निकट लाकर या झुककर पढ़ना)
5. अनुचित वाचन-शैली
6. बिना अर्थ समझे पढ़ना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कारण (Causes)

1. दृष्टि-दोष, वाणी संबंधी दोष,
2. शब्द-भंडार की कमी
3. वाचन-अभ्यास की कमी
4. पाठ्य-सामग्री का कठिन होना
5. पाठ्य-सामग्री में छपाई संबंधी त्रुटि
6. मनोवैज्ञानिक कारण
7. कक्षा का तनावपूर्ण वातावरण
8. अध्यापक का व्यवहार
9. वाचन संबंधी मार्गदर्शन का अभाव
10. अरुचिकर पाठ्य-सामग्री
11. असावधानी।

उपाय (Remedies)

1. शारीरिक उपचार द्वारा दृष्टि-दोष व वाणी-दोष को दूर करने का प्रयास
2. शब्द-भंडार में वृद्धि करना
3. ध्वनियों का पूर्ण ज्ञान व अभ्यास
4. सस्वर वाचन
5. छात्रों के मानसिक स्तर के अनुकूल पाठ्य सामग्री का चुनाव
6. पाठ्यपुस्तकों को शुद्ध छपाई।
7. बच्चों से सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार
8. वाचन संबंधी उचित मार्गदर्शन
9. वाचन से पहले कठिन शब्दों की व्याख्या
10. सावधानी से पढ़ने का अभ्यास कराना
11. कक्षा का आकर्षक वातावरण
12. अध्यापक का आदर्श वाचन

लिपि या लेखन-कौशल का शिक्षण (Teaching of Writing Skill)

लिपि का अर्थ (Meaning of the term Script)—भाषा के दो रूप हैं—मौखिक एवं लिखित। विचारों की अभिव्यक्ति के लिए व्यक्ति जिन ध्वनियों का प्रयोग करता है वह मौखिक भाषा कहलाती है। इन्हीं ध्वनियों को जिन विशिष्ट चिह्नों के माध्यम से लिखित रूप में व्यक्त किया जाता है, उन्हें 'लिपि' कहते हैं। प्रत्येक भाषा की अपनी एक लिपि होती है। हिंदी भाषा की लिपि देवनागरी है।

लेखन-कौशल का अर्थ (Meaning of the term Writing Skill)—सामान्य रूप से लिखकर विचारों को अभिव्यक्त करना लेखन-कौशल या लिखित अभिव्यक्ति कहा जाता है। लिपि का ज्ञान प्राप्त करने के उपरांत भाषा के लिखित रूप का प्रयोग कर व्यक्ति अपने भावों और विचारों को लेखन-कौशल के द्वारा स्थायित्व प्रदान करता है। साहित्य के स्थायित्व एवं समृद्धि का मुख्य आधार यह लिखित अभिव्यक्ति ही है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लिपि की शिक्षा की आवश्यकता एवं लेखन-कौशल का महत्त्व (Importance of Teaching Writing Skill)

बच्चों में लेखन-कौशल का विकास करने के लिए लिपि की शिक्षा परम आवश्यक है। जिस तरह ध्वनियों के पूर्ण ज्ञान के बिना उच्चारण शुद्ध नहीं हो सकता एवं मौखिक अभिव्यक्ति में पूर्णता नहीं आ सकती, उसी प्रकार लिपि के ज्ञान के बिना बच्चा न तो शुद्ध वर्तनी का प्रयोग कर सकता है और न ही विचारों को लिखित रूप में अभिव्यक्त कर सकता है।

जब तक बच्चे को लिखना नहीं आता तब तक उसका भाषा पर पूर्ण अधिकार नहीं हो सकता। अतः भाषा पर पूर्ण अधिकार कराने एवं अभिव्यक्ति-कौशल को पूरी तरह विकसित करने के लिए बच्चे को लिपि का पूर्ण ज्ञान देना अति आवश्यक है।

लेखन-कौशल या लिखित अभिव्यक्ति के महत्त्व को हम निम्न रूप से स्पष्ट कर सकते हैं :

1. अपने विचारों को सुरक्षित रखने के लिए लिखित अभिव्यक्ति की आवश्यकता है। लिखकर हम अपने विचारों को सदियों के लिए स्थायित्व प्रदान कर सकते हैं।

2. जीवन के अनेक ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ केवल मौखिक अभिव्यक्ति से काम नहीं चल सकता। दूर रहनेवाले मित्र या संबंधी को अपना संदेश देने, एक-दूसरे के साथ कोई कार्य करने या अन्य कोई समाचार पहुँचाने के लिए लिखित भाषा की आवश्यकता होती है।

3. दैनिक जीवन का विवरण रखने, घर का दैनिक हिसाब-किताब रखने आदि व्यावहारिक कार्यों में लिखित भाषा का प्रयोग करना पड़ता है।

4. भाषा के दो रूप हैं—मौखिक एवं लिखित। अतः भाषा पर पूर्ण अधिकार की दृष्टि से भी लेखन-कौशल का विकास आवश्यक है।

5. शिक्षा ग्रहण करते समय पठित सामग्री को संगठित करने, प्रश्नों का उत्तर तैयार करने, पाठ का सार तैयार करने, गृहकार्य करने आदि में लेखन-कौशल की आवश्यकता होती है।

6. हमारे पूर्वजों की सभ्यता और संस्कृति को लिखित भाषा ने ही हम तक पहुँचाया है। इसी प्रकार हमारी संस्कृति आगे आनेवाली पीढ़ी तक भी लिखित भाषा के माध्यम से ही हस्तांतरित होती रहेगी।

7. लिखित भाषा बालक के हाथ और मस्तिष्क में संतुलन बनाकर रखती है। भाषा में एकरूपता लाती है।

8. लिखित भाषा ही साहित्य के भंडार में वृद्धि करती है। यदि लिपि न होती तो आज साहित्य कहाँ से आता? यदि लेखन-कौशल न होता तो नई-नई रचनाएँ कहाँ से आतीं?

9. आधुनिक शिक्षा-प्रणाली की प्रमुख विशेषता 'परीक्षा' है। इसके बिना शिक्षा-प्रणाली की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। लेखन-कौशल के द्वारा ही बच्चे की योग्यता का मूल्यांकन किया जाता है।

10. देश-विदेश में हो रहे ज्ञान-विज्ञान आदि से परिचित कराने का मुख्य साधन लिखित भाषा ही है।

11. व्यावसायिक एवं औद्योगिक प्रगति का आधार भी लिखित भाषा है। मौखिक रूप से कार्य-व्यवसाय में सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती है। हर व्यवसाय में तरह-तरह के रिकार्ड आदि लिखकर रखने पड़ते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorjal College Of Education Bantalab Jammu

12. आज तो लेखन एक स्वतंत्र व्यवसाय के रूप में भी मानव जाति का कल्याण कर रहा है। अनेक व्यक्ति अपनी लेखनी की कला से ही अपनी रोटी-रोजी की व्यवस्था कर रहे हैं।

लिपि की शिक्षा या लिखित अभिव्यक्ति-कौशल के उद्देश्य

(Aims of Teaching Writing Skill)

लेखन-कौशल के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए लेखन-कौशल की शिक्षा के निम्नलिखित उद्द्देश्य निर्धारित किए जा सकते हैं :

1. बच्चों को वर्णों की ठीक-ठीक बनावट लिखना सिखाना।
2. बच्चों को सुंदर व सुडौल लेख का अभ्यास कराना।
3. छात्रों को शुद्ध अक्षर-विन्यास का ज्ञान कराना।
4. छात्रों को वाक्य-रचना के नियमों से परिचित कराना।
5. छात्रों को विराम-चिह्नों का सही-सही प्रयोग करना सिखाना।
6. छात्रों को शब्द, सूक्ति, मुहावरे एवं लोकोक्तियों का उचित व प्रसंगानुकूल प्रयोग करना सिखाना।
7. छात्रों को विषयानुकूल भाषा-शैली का प्रयोग करना सिखाना।
8. छात्रों को अपने विचारों को तार्किक क्रम में व्यक्त करना सिखाना।
9. छात्रों में अपने अनुभवों व विचारों को लिखकर व्यक्त करने की योग्यता विकसित करना।
10. छात्रों को उचित अनुच्छेदों में विभाजित कर विचारों को व्यक्त करना सिखाना।
11. छात्रों की सृजनात्मक योग्यता को विकसित कर उन्हें मौलिक रचना करने के योग्य बनाना।
12. छात्रों में साहित्य के प्रति रुचि जाग्रत करना।
13. स्पष्ट एवं साफ-साफ लिखने की आदत को विकसित करना।
14. छात्रों में भाषा एवं साहित्य के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण विकसित करना।
15. छात्रों में सावधानीपूर्वक लिखने की आदत विकसित करना।

इस प्रकार प्राथमिक कक्षा से प्रारंभ होकर उच्च कक्षा तक लेखन-कौशल-शिक्षण चलता रहता है। इन सभी स्तरों पर उपर्युक्त लेखन-कौशल-उद्देश्यों को ध्यान में रखकर ही अध्यापक को अपने शिक्षण-कार्य की व्यवस्था करनी चाहिए।

लेखन-कौशल को विकसित करने की विधियाँ

(Methods of Developing Writing Skill)

भाषा सीखने का एक स्वाभाविक क्रम है—सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना। भाषा की शिक्षा देने के लिए प्राथमिक स्तर से ही बच्चों में इन चारों कौशलों को विकसित करने का प्रयास किया जाता है। बच्चों को पहले मौखिक भाषा की शिक्षा दी जाती है, उसके पश्चात पढ़ना सिखाया जाता है और उसके तुरंत पश्चात लेखन-कौशल का शिक्षण आरंभ किया जाता है। जैसे ही बच्चे अक्षरों का उच्चारण कर उनके लिपिबद्ध रूप को पहचानने लगते हैं वैसे ही इन अक्षरो के लिपिबद्ध रूपों को लिखना सिखाना भी शुरू कर दिया जाता है। परंतु इस कार्य में जल्दी नहीं करनी चाहिए, जब उनकी उँगलियाँ कलम पकड़ने में समर्थ हो जाएँ तब ही लिपि की शिक्षा देनी चाहिए।

लेखन-कौशल की विकसित करने के लिए अध्यापक को निम्न क्रम का पालन करना चाहिए :

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

1. प्रथम अवस्था—लिखने के लिए तैयार करना

लेखन-कौशल को विकसित करने के लिए सर्वप्रथम बच्चों को मानसिक रूप से तैयार करना चाहिए क्योंकि लिखना सिखाना शुरू करने से पहले यह जानना जरूरी होता है कि बच्चा लिखने के लिए तैयार है या नहीं। उसकी उँगलियाँ व हाथ की माँसपेशियाँ कलम पकड़ने के योग्य हैं या नहीं। लिखना सिखाना मौखिक या वाचन-कौशल से कठिन होता है। बच्चे को लिखने के लिए तैयार करने के लिए अध्यापक को निम्न प्रयास करने चाहिए :

(i) कक्षा का सुरुचिपूर्ण वातावरण—कक्षा के कमरे में आकर्षक रंग-बिरंगे चित्र एवं चार्ट टाँगने चाहिए। चार्ट में चित्र, शब्द व वर्ण बने होने चाहिए। कक्षा की दीवारों पर फर्श से 2 फुट ऊँचे श्यामपट्ट बने होने चाहिए। रंग-बिरंगी चॉक रखी होनी चाहिए। इन चार्टों व चित्रों से वर्णों की आकृतियाँ बच्चे के मानस-पटल पर अंकित हो जाती हैं और चॉक से वह मनचाही रेखाएँ खींचता है तथा चॉक पकड़ने का अभ्यास करता है।

(ii) लकड़ी, गत्ते या प्लास्टिक के बने हुए वर्णों के आकार के टुकड़े देकर बच्चों को उनके चारों तरफ उँगली फेरने के लिए कहना चाहिए। इससे बच्चे की उँगली को विभिन्न दिशाओं में घूमने का अभ्यास होता है।

(iii) जमीन पर बालू या रेत पर उँगली घुमाकर वर्णों की आकृति का अनुकरण कराना चाहिए।

(iv) पैंसिल से कागज पर या चॉक से श्यामपट्ट पर तरह-तरह की रेखाएँ खींचने का अभ्यास कराना चाहिए। इससे बच्चे को कलम या चॉक पकड़ने का अभ्यास होता है।

(v) अध्यापक श्यामपट्ट पर बड़े आकार के अक्षर लिखकर उनके चारों तरफ उँगली फेरने का अभ्यास भी बच्चों से करा सकता है।

(vi) कागज पर स्टैंसिल कटे हुए वर्णों के आकार के बीच में पैंसिल चलाने के लिए भी कहा जा सकता है।

(vii) तरह-तरह के बीज, दाने, मोती आदि की सहायता से भी खेल-खेल में वर्णों की आकृतियाँ बनाने का अभ्यास कराया जा सकता है।

इस प्रकार के विभिन्न साधनों व क्रियाओं के माध्यम से बच्चों की उँगलियों की माँसपेशियों को कलम पकड़ने तथा विभिन्न दिशाओं में घूमने का अभ्यास कराने के उपरांत ही वर्णों की रचना सिखानी चाहिए। इससे पहले बच्चों को लिखना नहीं सिखाना चाहिए क्योंकि लिखना पढ़ने से कठिन है। यदि शुरू में ही लिखने में बच्चे की अरुचि हो गई तो लेखन-कौशल का विकास कठिन हो जाएगा।

2. द्वितीय अवस्था—वर्णों की रचना सिखाना

लेखन-कौशल की शिक्षा की यह दूसरी अवस्था है। जब बच्चा लिखना सीखने को तैयार हो जाए तो उसे विधिवत रूप से वर्णमाला के सभी वर्णों को लिखना सिखाना चाहिए। वर्णों को लिखना सिखाने की कई विधियाँ हैं। उनमें से अध्यापक अपनी सुविधानुसार किसी भी विधि की सहायता ले सकता है। ये विधियाँ निम्नलिखित हैं :

(i) अनुकरण विधि—वर्ण-रचना सिखाने की यह अत्यंत प्राचीन विधि है। इस विधि में अध्यापक बच्चे की सलेट या तख्ती पर पैंसिल से वर्ण लिख देता है। बच्चे उस लिखे हुए वर्ण के ऊपर स्याही के साथ कलम चलाते हैं। कुछ दिनों तक इस प्रकार अभ्यास कराने के उपरांत अध्यापक तख्ती या सलेट पर केवल एक पंक्ति लिख देता है। फिर बच्चे शेष तख्ती या सलेट पर देख-देखकर लिखते हैं। आजकल इस विधि में तख्ती या सलेट की जगह कापी का प्रयोग होने लगा है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ii) संश्लेषणात्मक विधि—इसे रेखा विधि भी कहा जाता है। देवनागरी लिपि के सभी वर्ण रेखाओं तथा वृत्तों से बनते हैं। इस विधि में शुरू में बच्चे को विभिन्न प्रकार की रेखाएँ खींचने का अभ्यास कराया जाता है। जैसे—खड़ी रेखा, पड़ी रेखा, तिरछी रेखा, अद्र्ध वृत्त, पूर्ण वृत्त आदि। फिर रेखाओं को मिलाकर वर्ण-रचना सिखाई जाती है। जैसे 'न' सिखाना हो तो पहले एक खड़ी रेखा, (।) फिर बीच में एक पड़ी रेखा (—।) और उसके पश्चात पड़ी रेखा के बाएँ सिरे पर गोलाई 'न'। इस प्रकार बच्चों को विभिन्न वर्णों की रचना सिखाई जाती है।

(iii) पेस्टालॉजी की रचनात्मक प्रणाली—इस विधि में अक्षरों को टुकड़ों में तोड़ लिया जाता है और एक-एक टुकड़े की आकृति बनाने का अभ्यास कराया जाता है। फिर सभी टुकड़ों को मिलाकर पूरा अक्षर बनाना सिखाया जाता है। जो अक्षर सरल हैं उन्हें पहले सिखाया जाता है और कठिन अक्षरों को बाद में। परंतु हिंदी भाषा में यह विधि वैज्ञानिक नहीं मानी जाती है।

(iv) चित्र विधि—वास्तव में लिपि का विकास ही चित्रों के द्वारा हुआ है। वैसे भी बच्चा चित्र बनाने में बहुत रुचि रखता है। अत: इस विधि की सहायता से खेल-खेल में बच्चों को वर्ण-रचना सिखा दी जाती है। जैसे—म, त, प, न, ग वर्ण, मेज, कुर्सी, नल आदि के चित्र बनाकर सिखाए जा सकते हैं। धीरे-धीरे अभ्यास होने पर बच्चे अन्य वर्णों को लिखना सीख जाते हैं।

(v) मांटेसरी विधि—श्रीमती मांटेसरी 3 वर्ष की आयु के पश्चात बच्चे को वर्ण-रचना सिखाने का समर्थन करती हैं। इस विधि में सबसे पहले बच्चे को लकड़ी या गत्ते के बने अक्षर दिए जाते हैं और उन पर उँगली फेरने को कहा जाता है, फिर उनके बीच पैंसिल चलाने को कहा जाता है। जब उनकी उँगली सध जाती है तब स्वतंत्र रूप से वर्ण लिखने को कहा जाता है। परंतु देवनागरी लिपि के अभ्यास के लिए इस विधि का प्रयोग थोड़ा कठिन है। हर वर्ण की आकृति को बीच से काटना कठिन है।

इस प्रकार किसी भी विधि की सहायता से बच्चों को वर्णों की रचना करने का अभ्यास कराना चाहिए।

3. तृतीय अवस्था—शब्दों तथा वाक्यों की रचना की शिक्षा

लेखन-कौशल की शिक्षा की तीसरी अवस्था शब्दों तथा वाक्यों का लिखना सिखाना है। वर्णों की रचना आने के पश्चात बच्चे बर्ण मिलाकर शब्द बनाना और उसके पश्चात वाक्य लिखना सीखते हैं। लेखन-शिक्षण की इस अवस्था में बच्चों पर बहुत ध्यान देने की आवश्यकता है। इस समय बच्चे में लिखने से संबंधित जैसी आदतें विकसित हो जाती हैं, वे आगे भी चलती रहती हैं। अत: इस सयम बच्चे को सुंदर, सुडौल व स्पष्ट रूप से लिखने का अभ्यास कराना चाहिए।

इस समय शब्दों तथा वाक्यों को सुंदर, सुडौल व स्पष्ट रूप से लिखने का अभ्यास कराने के लिए अध्यापक को निम्न विधियों का प्रयोग करना चाहिए :

(i) सुलेख—प्रारंभ से ही छात्रों में सुलेख की योग्यता को विकसित करने का प्रयास करना चाहिए। इसके लिए अध्यापक को सुलेख पुस्तिकाओं की सहायता लेनी चाहिए। इन पुस्तिकाओं में प्रत्येक पृष्ठ के ऊपर प्रथम पंक्ति में सुंदर व मोटे आकार के वर्ण छपे होते हैं, बाद की पंक्तियों में हल्का-हल्का लिखा होता है। बच्चे उस समय कलम फेरकर वैसा ही लिखने का प्रयास करते हैं। बच्चे की कापी पर भी अध्यापक हल्का-हल्का पैंसिल से लिख देते हैं, बच्चे उस लिखे हुए पर कलम चलाते हैं। इसके लिए अध्यापक को कुछ अन्य बातों पर भी ध्यान देना चाहिए :

(क) बच्चे के लिखने के आसन का निरीक्षण करना चाहिए। कुर्सी इतनी ऊँची हो कि बैठने पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बच्चे के पैर जमीन पर सीधे रखे रहें। घुटने 90 का कोण बनाते हों। रीढ़ की हड्डी सीधी हो। कापी आँख से एक फुट की दूरी पर हो।

(ख) लेखन-सामग्री का भी निरीक्षण होना चाहिए। तख्ती चौरस व चिकनी हो। सफेद तख्ती पर काली स्याही और काली तख्ती पर खड़िया का प्रयोग होता है। स्याही ठीक घुली हो। कलम ठीक हो।

(ग) कलम पकड़ने का ढंग ठीक होना चाहिए। कलम अँगूठे व मध्य उँगली के बीच रखी हो, तर्जनी उँगली कलम के ऊपर रहे। कलम को निब से 2 सें. मी. ऊपर से पकड़ना चाहिए।

(घ) अक्षर सुडौल, सुंदर व ठीक अनुपात से सीधे-सीधे लिखने चाहिए। दो शब्दों के मध्य एक वर्ण की दूरी होनी चाहिए। दो व्याक्यों के बीच एक शब्द का व दो पंक्तियों के बीच एक पंक्ति जितना अंतर होना चाहिए। शब्द के ऊपर शिरोरेखा खींचनी चाहिए।

(ङ) बच्चों के सामने सुलेख के नमूने प्रस्तुत करने चाहिए जिससे उन्हें अपना लेख सुधारने की प्रेरणा मिले।

(ii) अनुलिपि—अनुलिपि का अर्थ है जैसा लिखा है वैसा ही लिखना। जिस प्रकार सुलेख के लिए बच्चे लिखे हुए पर कलम फेरकर उसी प्रकार लिखने का अभ्यास करते हैं, उसी तरह अनुलिपि में प्रथम पंक्ति में कुछ शब्द लिखे होते हैं, बच्चे उसे देखकर स्वतंत्र रूप से वैसा ही लिखने का प्रयास करते हैं। इसके लिए अध्यापक का अपना लेख सुंदर होना चाहिए तथा अनुलिपि की कापी का चुनाव करते समय भी देख लेना चाहिए कि उसमें शब्द तथा वाक्य सही अनुपात में छपे हैं या नहीं।

(iii) प्रतिलिपि—इसमें किसी भी छपी हुई पुस्तक में से देख-देखकर गद्यांश या पद्यांश लिखा जाता है। इसके लिए अध्यापक को यह ध्यान रखना चाहिए कि प्रतिलिपि की सामग्री बच्चे के मानसिक स्तर व रुचि के अनुकूल हो। विद्यार्थी की लेखन-सामग्री व आसन का भी निरीक्षण कर लेना चाहिए। प्रतिलिपि का संशोधन बहुत सावधानी से होना चाहिए क्योंकि प्रतिलिपि से बच्चों को शब्दों व वाक्यों के लिखने का अभ्यास होता है, वर्तनी का ज्ञान होता है, विराम-चिह्नों का प्रयोग करना आता है। अतः सावधानी से संशोधन-कार्य कर बच्चों की त्रुटियों को दूर कराने का प्रयास करना चाहिए और सावधानी से लिखने की आदत विकसित करने का प्रयास भी करना चाहिए।

(iv) श्रुतलिपि—प्रतिलिपि में बच्चे देखकर लिखते हैं, परंतु श्रुतलिपि में बिना देखे, केवल सुनकर लिखते हैं। इसमें अध्यापक बोलता जाता है और छात्र सुन-सुनकर लिखते जाते हैं। इससे विद्यार्थियों को सुनकर लिखने का अभ्यास होता है। अक्षर-विन्यास का प्रशिक्षण मिलता है। ठीक गति से सावधानीपूर्वक लिखने की योग्यता विकसित होती है। इसके लिए उचित गद्यांश का चुनाव कर, अध्यापक को उचित गति से बोलते हुए, बच्चों को लिखवाना चाहिए। बाद में संशोधन की अशुद्धियों को शुद्ध कराना चाहिए।

4. चतुर्थ अवस्था—लेखन-अभ्यास कराना

लेखन-कौशल की यह चौथी अवस्था है। अब तक बच्चों को देखकर व सुनकर सुंदर लेख के द्वारा शब्द व वाक्य लिखने का अभ्यास हो जाता है। अब बच्चों को अपने भावों व विचारों को तार्किक क्रम में, व्याकरणसम्मत भाषा का प्रयोग करते हुए लिखने का अभ्यास कराना होता है जिससे उनमें लेखन-कौशल पूरी तरह विकसित हो सके। इसके लिए कक्षा में समय-समय पर लिखित कार्य का अभ्यास कराते रहने का प्रयास करना चाहिए। बच्चों के मानसिक स्तर के अनुकूल विषय देकर उस पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
विचार व्यक्त करने, प्रश्नों का उत्तर लिखने, पठित अंश का सार लिखने आदि क्रियाओं के द्वारा लेखन-अभ्यास कराया जा सकता है।

इस प्रकार विभिन्न अवस्थाओं में विभिन्न साधनों, क्रियाओं एवं विधियों की सहायता से बच्चों में लेखन-कौशल को विकसित किया जा सकता है।

अध्ययन के लिए प्रश्न

1. भाषायी कौशलों से क्या अभिप्राय है? भाषा संबंधी चार कौशलों का उल्लेख करते हुए बताइए कि प्राथमिक स्तर पर इनके विकास का क्या महत्त्व है?

2. भाषायी कौशल कौन-कौन से हैं? उनके शिक्षण से छात्रों में किन व्यवहारगत परिवर्तनों की अपेक्षा की जा सकती है?

3. श्रवण-कौशल से आप क्या समझते हैं? मातृभाषा शिक्षण में इसका क्या महत्त्व है?

4. श्रवण-कौशल क्या है? छात्रों में इस कौशल के उचित विकास के लिए आप क्या उपाय करेंगे?

5. श्रवण-कौशल शिक्षण के क्या उद्देश्य हैं? इस कौशल को विकसित करने के लिए प्रयोग में लाई जानेवाली विधियों एवं तकनीक का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

6. "बालक के व्यक्तित्व के विकास के लिए मौखिक अभिव्यक्ति सर्वप्रथम साधन है।" इस कथन की विवेचना कीजिए।

7. मौखिक अभिव्यक्ति संबंधी कौशल से आप क्या समझते हैं? बालक के व्यक्तित्व के विकास में इसका क्या महत्त्व है?

8. अच्छी मौखिक अभिव्यक्ति की विशेषताओं का वर्णन करते हुए प्रारंभिक कक्षाओं में मौखिक अभिव्यक्ति की शिक्षण-विधियों पर प्रकाश डालिए।

9. मौखिक अभिव्यक्ति-कौशल से क्या अभिप्राय है? बालकों में इसके समुचित विकास के लिए आप क्या करना चाहेंगे?

10. मौखिक अभिव्यक्ति से क्या अभिप्राय है? मौखिक अभिव्यक्ति या मौखिक भाषा का महत्त्व बताते हुए उसके शिक्षण-उद्देश्यों को स्पष्ट करें।

11. वाचन या पठन किसे कहते हैं। इसके प्रमुख रूपों का उल्लेख करते हुए भाषा-शिक्षण में इसके महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

12. सस्वर वाचन तथा मौन वाचन की उपयोगिता तथा गुणों का उल्लेख करते हुए इनके उद्देश्यों पर प्रकाश डालिए।

13. पठन-कौशल शिक्षण से क्या अभिप्राय है? बालकों में इसके समुचित विकास करने के लिए आप क्या करना चाहेंगे?

14. अक्षर-ज्ञान कराने के लिए कौन-सी विधियाँ प्रचलित हैं? सभी विधियों की विवेचना कीजिए। हिंदी-शिक्षण के लिए कौन-सी विधि उपयोगी है और क्यों?

15. हिंदी भाषा शिक्षण में वाचन की कौन-कौन सी विधियाँ हैं? इनका सविस्तार वर्णन कीजिए।

16. वाचन करते समय बच्चे सामान्य रूप से किस प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं? उनके कारण और उन्हें दूर करने के उपायों का उल्लेख कीजिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

17. लेखन-कौशल से क्या अभिप्राय है ? उसका महत्त्व बताते हुए लेखन शिक्षण के उद्देश्यों को स्पष्ट कीजिए।

18. लिपि किसे कहते हैं ? लिपि की शिक्षा को क्यों आवश्यक माना जाता है ? लिपि शिक्षा के क्या उद्देश्य और विधियाँ हैं ?

19. लिखित अभिव्यक्ति-कौशल से आप क्या समझते हैं ? प्राथमिक स्तर पर बालकों में इसके समुचित विकास हेतु किस प्रकार आगे बढ़ा जा सकता है ? वर्णन कीजिए।

20. निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :

(i) भाषायी कौशलों के विकास का भाषा-शिक्षण में महत्त्व
(ii) बालकों में श्रवण-कौशल का विकास
(iii) मौखिक अभिव्यक्ति-कौशल शिक्षण
(iv) पठन-कौशल शिक्षण
(v) लेखन-कौशल को विकसित करना
(vi) अक्षर-ज्ञान कराने की विधियाँ
(vii) मौखिक अभिव्यक्ति का महत्त्व
(viii) वाचन की सामान्य त्रुटियाँ
(ix) लिपि शिक्षण
(x) सस्वर वाचन तथा मौन वाचन शिक्षण।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

6

हिंदी ध्वनियाँ-वर्गीकरण, उच्चारण एवं शिक्षण

(Hindi Sounds—Classification, Pronunciation and their Teachings)

ध्वनि क्या है ? (What is Sound ?)

मनुष्य ने अपने भाव, विचार एवं अनुभवों के आदान-प्रदान के लिए जिस माध्यम को स्वीकार किया है उसे ही भाषा कहते हैं। भाषा की सबसे छोटी इकाई ध्वनि ही है। हमारे मुख के अवयवों से घर्षण करती हुई जो प्राणवायु बाहर निकलती है वही ध्वनि या आवाज है। ध्वनियों की पहचान के लिए कुछ विशेष चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, ये विशेष चिह्न ही अक्षर कहलाते हैं। अक्षर अर्थात अ + क्षर, जो कभी नष्ट न हो वह अक्षर है। अक्षर को ही वर्ण भी कहते हैं। वर्ण अर्थात रंग, रूप आदि। हिंदी भाषा में प्रत्येक मूल ध्वनि के लिए अलग-अलग अक्षर या वर्ण का प्रयोग होता है।

हिंदी भाषा की प्रचलित ध्वनियाँ—वर्णों के योग से शब्द बनते हैं और शब्दों के योग से वाक्य तथा वाक्यों के योग से एक नई रचना जन्म लेती है। इस प्रकार ध्वनियाँ भाषा को भौतिक आधार प्रदान करती हैं। कुछ ध्वनियाँ मुख के किसी अवयव से टकराए बिना फेफड़े से निकलकर कंठ या नासिका से सीधा बाहर निकलती हैं वे 'स्वर' कहलाती हैं और जो ध्वनियाँ मुख के अवयवों से टकराकर निकलती हैं उन्हें 'व्यंजन' कहते हैं। इस प्रकार हिंदी भाषा की समस्त ध्वनियाँ दो वर्गों में विभाजित हैं—स्वर और व्यंजन।

स्वर (Vowel)—जब प्राणवायु बिना किसी अवरोध के मुख-द्वार से बाहर निकलती है तो जो ध्वनि उत्पन्न होती है उसे स्वर कहते हैं। स्वरों का उच्चारण किसी अन्य अक्षर की सहायता के बिना स्वतंत्र रूप से होता है। हिंदी भाषा में स्वरों की संख्या के बारे में हिंदी भाषा के वैज्ञानिकों में मतभेद है। कुछ विद्वान स्वरों की संख्या 11 बताते हैं तो कुछ 12, कुछ 13 और कुछ विद्वान 14 स्वर निर्धारित करते हैं जिनका स्पष्टीकरण निम्न प्रकार से है :

प्रथम वर्गीकरण	**द्वितीय वर्गीकरण**	**तृतीय वर्गीकरण**	**चतुर्थ वर्गीकरण**
अ	अ	अ	अ
आ	आ	आ	आ
इ	इ	इ	इ
ई	ई	ई	ई
उ	उ	उ	उ
ऊ	ऊ	ऊ	ऊ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ए	ए	ए	ए
ऐ	ऐ	ऐ	ऐ
ओ	ओ	ओ	ओ
औ	औ	औ	औ
ऋ	अं	ऋ	अं
	अः	अं	अः
		अः	ऑ
			ऋ
कुल 11 स्वर	कुल 12 स्वर	कुल 13 स्वर	कुल 14 स्वर

परंतु यदि हिंदी भाषा के प्रचलित रूप को ध्यान से देखा जाए तो आज हिंदी भाषा में कुल स्वर 12 हैं : अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, ऑ, ऋ। इनमें से अ, इ, उ मुख्य स्वर हैं, आ, ई, ऊ क्रमशः अ, इ, उ, के दीर्घ रूप हैं, ए (अ + इ), ऐ (अ + ई), ओ (अ + उ), औ (अ + ऊ) चार संधि स्वर हैं जो मुख्य स्वरों के मेल से बने हैं और 'ऑ' में अ तथा ओ के बीच का उच्चारण होता है। इसका प्रयोग उन शब्दों में होता है जिन्हें अंग्रेजी भाषा से उसी रूप में हिंदी में स्वीकार कर लिया गया है, जैसे—लॉर्ड, कॉलेज, हॉल, मॉडल, फॉल आदि। ऋ का प्रयोग ऋषि, ऋतु आदि शब्दों में होता है। अं., अः का प्रयोग स्वतंत्र रूप में नहीं होता है, केवल व्यंजनों के साथ लगाकर प्रयोग किया जाता है।

इन सभी स्वरों को मात्रा की दृष्टि से तीन भागों में बाँटा जाता है :

(i) **ह्रस्व स्वर** (Small Vowels)—जिनके उच्चारण में कम-से-कम समय लगता है जैसे—अ, इ, उ। इन्हें मुख्य स्वर भी कहा जाता है।

(ii) **दीर्घ स्वर** (Long Vowels)—जिनके उच्चारण में ह्रस्व स्वरों से दुगना समय लगता है। आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

(iii) **प्लुत स्वर** (Short Vowels)—जिनके उच्चारण में ह्रस्व स्वर से तिगुना समय लगता है। इनका प्रयोग जोर से या दूर से पुकारने वाले शब्दों में होता है। जैसे—हे३, ओ३म्। इनके लिखने में स्वर के आगे ३ का अंक बना देते हैं।

व्यंजन (Consonants)—जब प्राणवायु कंठ एवं मुख के अवयवों से टकराती हुई बाहर निकलती है तो जो ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं उन्हें व्यंजन कहते हैं। व्यंजनों का उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है। हिंदी भाषा में व्यंजनों की संख्या 33 है। ये व्यंजन तीन प्रकार के होते हैं :

(i) स्पर्श—जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा मुख के किसी भाग का स्पर्श करके वायु को पहले थोड़ा रोकती है फिर आगे निकलने देती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं। ये संख्या में 25 हैं और 5 वर्गों में विभाजित हैं :

क वर्ग—क, ख, ग, घ, ङ।

च वर्ग—च, छ, ज, झ, ञ।

ट वर्ग—ट, ठ, ड, ढ, ण।

त वर्ग—त, थ, द, ध, न।

प वर्ग—प, फ, ब, भ, म।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ii) अंतस्थ—जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा मुख के किसी भाग का पूरी तरह स्पर्श नहीं करती और वायु बिना रगड़ खाए मुख से बाहर निकल जाती है, उन्हें अंतस्थ व्यंजन कहते हैं। ये स्वरों और व्यंजनों से मध्यवर्ती स्थिति के हैं। ये संख्या में चार हैं—य, र, ल, व।

(iii) ऊष्म—इन वर्णों के उच्चारण में वायु मुख से रगड़ खाती हुई धीरे-धीरे बाहर निकलती है। अत: इन्हें ऊष्म या संघर्षी व्यंजन कहा जाता है। ये भी संख्या में चार हैं—स, श, ष, ह।

इस प्रकार इन 12 स्वरों और 33 व्यंजनों के अतिरिक्त हिंदी भाषा में कुछ अन्य ध्वनियाँ भी प्रचलित हैं जो निम्न प्रकार से हैं :

(i) संयुक्ताक्षर—हिंदी भाषा में तीन संयुक्ताक्षरों का प्रयोग होता है—क्ष, त्र, ज्ञ, जो क्रमश: क् + ष्, त + र् और ज् + ञ के योग से बने हैं। दो वर्णों के योग से बने होने के कारण इन्हें संयुक्त वर्ण या संयुक्त व्यंजन कहा जाता है। एक अन्य संयुक्त वर्ण का प्रयोग भी हिंदी भाषा में होता है—'श्र' जैसे—परिश्रम, श्रम, विश्राम आदि में, जो श् + र् के योग से बना है।

(ii) अनुस्वार और विसर्ग—अं और अः ये दो वर्ण अद्‌र्ध व्यंजन कहलाते हैं। इनकी गणना वैसे स्वरों में की जाती थी, परंतु वास्तव में इनका प्रयोग स्वर के रूप में नहीं होता है वरन ये स्वर के साथ लगते हैं अ + ं, अ + : । किसी वर्ण के साथ पहले स्वर लगता है फिर स्वर के साथ अनुस्वार 'ं' या ' : ' लगता है अतः इन्हें संयुक्त स्वर भी कह सकते हैं। जैसे—दु:ख = द् + उ + : (दु:), प्रात: में त् + अ — : (त:), नि: संदेह में न् + इ + : (नि :) आदि इसी प्रकार पतंग में त + ं (तं)।

(iii) चंद्रबिंदु—हिंदी भाषा में वर्णों के ऊपर कभी-कभी 'ँ' चिह्न का प्रयोग किया जाता है, इसे चंद्रबिंदु या आनुनासिक कहते हैं। इसके उच्चारण में वायु नासिका से निकलती है।

(iv) अन्य ध्वनियाँ—हिंदी भाषा में ड़, ढ़, व़ ये तीन ध्वनियाँ और प्रचलित हैं। इसके अलावा पाँच ध्वनियाँ क़, ख़, ग़, ज़ तथा फ़ फारसी तथा अरबी से हिंदी भाषा में मिल गई हैं।

इस प्रकार आज हिंदी भाषा की प्रचलित ध्वनियाँ 60 हैं—11 +1 =12 स्वर तथा 25 + 4 + 4 + 3 + 1 + 2 + 1 + 3 + 5 = 48 व्यंजन।

हिंदी ध्वनियों के वर्गीकरण के विभिन्न आधार
(Bases of Classifying Hindi Sounds).

हिंदी भाषा में प्रचलित सभी ध्वनियों अर्थात स्वरों एवं व्यंजनों के उच्चारण में उच्चारण-स्थान और उनके उच्चारण में लगने वाले प्रयत्न दोनों का ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसीलिए हिंदी ध्वनियों का वर्गीकरण करने के विभिन्न आधार माने गए हैं :

1. उच्चारण-स्थान के आधार पर
2. प्रयत्न के आधार पर—(क) बाह्य प्रयत्न के आधार पर
   (ख) आभ्यांतर प्रयत्न के आधार पर

1. उच्चारण-स्थान के आधार पर—ध्वनियों के उच्चारण में मुख के विभिन्न अवयवों का प्रयोग होता है। इन्हीं उच्चारण-स्थानों के प्रयोग की दृष्टि से ध्वनियों का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया गया है :

(i) कंठ्‌य—कंठ से बोले जानेवाले वर्णों को कंठ्‌य कहते हैं। अ, आ, ऑ, स्वर तथा क वर्ग के व्यंजन—क, ख, ग, घ, ङ और ह, एवं ':' कंठ्‌य ध्वनियाँ हैं।

(ii) तालव्य—जिन वर्णों का उच्चारण करने में जिह्वा को कोमल तालु का स्पर्श करना होता है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
उन्हें तालव्य ध्वनियाँ कहते हैं। इ, ई स्वर तथा च वर्ग के व्यंजन—च, छ, ज, झ, ञ और य, श एवं 'ज्ञ' तालव्य ध्वनियाँ हैं।

(iii) मूद्र्धन्य—जिन वर्णों के उच्चारण में जिह्वा को कठोर तालू पर लगाना होता है उन्हें मूद्र्धन्य ध्वनियाँ कहते हैं। ऋ, ट वर्ग के व्यंजन—ट, ठ, ड, ढ, ण और र, ष, श्र, ड़, ढ़ मूद्र्धन्य ध्वनियाँ हैं। ड़, ढ़ द्विस्पष्ट मूद्र्धन्य हैं।

(iv) दंत्य—जिन वर्णों का उच्चारण जिह्वा को दाँतों का स्पर्श करने से होता है उन्हें दंत्य ध्वनियाँ कहते हैं। त वर्ग के व्यंजन—त, थ, द, ध, न तथा ल, स, ज़, त्र दंत्य ध्वनियाँ हैं।

(v) ओष्ठ्य—जिन वर्णों के उच्चारण में दोनों होंठों का प्रयोग होता है, वे ओष्ठ्य कहलाते हैं। उ, ऊ, प वर्ग के व्यंजन—प, फ, ब, भ, म, ओष्ठ्य ध्वनियाँ हैं।

(vi) कंठोष्ठ्य—जिनके उच्चारण में कंठ एवं होंठ का प्रयोग होता है, वे कंठोष्ठ्य कहलाते हैं। ओ तथा औ कंठोष्ठ्य ध्वनियाँ हैं।

(vii) दंत्योष्ठ्य—जिनके उच्चारण में दाँत तथा होंठ का प्रयोग होता है। व तथा फ़ दंत्योष्ठ्य ध्वनियाँ हैं।

(viii) कंठतालव्य—कंठ और तालू से बोली जानेवाली ध्वनियाँ कंठतालव्य ध्वनियाँ कहलाती हैं। ए, ऐ तथा क्ष कंठतालव्य ध्वनियाँ हैं।

(viii) कंठजिह्वामूलीय—कंठ एवं जिह्वा के पश्च भाग की रगड़ से जो ध्वनियाँ उच्चरित होती हैं वे कंठजिह्वामूलीय ध्वनियाँ कहलाती हैं। क़, ख़ तथा ग़ कंठजिह्वामूलीय ध्वनियाँ हैं।

(ix) अनुनासिक—जिन ध्वनियों के उच्चारण में वायु नासिका से निकल जाती है, वे अनुनासिक ध्वनियाँ कहलाती हैं। अनुस्वार 'ं' चंद्रबिंदु 'ँ' तथा सभी वर्गों के पंचम वर्ण—ङ, ञ, ण, न, म अनुनासिक ध्वनियाँ कहलाती हैं।

2. प्रयत्न के आधार पर ध्वनियों का वर्गीकरण—हिंदी भाषा की सभी ध्वनियों—स्वर एवं व्यंजनों के उच्चारण में कंठ से पूर्व स्थित स्वरतंत्री एवं काक आदि तथा कंठ के आगे मुख के अवयव जीभ, तालू, दाँत, होंठ आदि को सक्रिय होना पड़ता है। इसे ही उच्चारण यंत्र का प्रयत्नशील होना कहा जाता है। इसी प्रयत्न के आधार पर ध्वनियों का वर्गीकरण दो प्रकार से किया जाता है :

(क) बाह्य प्रयत्न के आधार पर।

(ख) आभ्यंतर प्रयत्न के आधार पर।

(क) बाह्य प्रयत्न के आधार पर—कंठ से पूर्व स्वरतंत्री तथा काक के प्रयास से ध्वनियों का उच्चारण किए जाने को ही अर्थात मुखविवर से पहले ही किए गए प्रयत्न को बाह्य प्रयत्न कहा जाता है। स्वरतंत्री तथा काक इन दो अवयवों का पृथक-पृथक प्रयास होने के कारण दो प्रकार से ध्वनियों का वर्गीकरण होता है—स्वरतंत्री के प्रयत्न के आधार पर एवं काक के प्रयत्न के आधार पर।

स्वरतंत्री के प्रयत्न के आधार पर ध्वनियों का वर्गीकरण

स्वरतंत्री के प्रयत्न के आधार पर ध्वनियाँ दो प्रकार की होती हैं—घोष एवं अघोष।

(i) घोष—वैसे तो श्वास-प्रक्रिया में स्वरतंत्रियाँ अलग-अलग रहती हैं, परंतु ध्वनियों का उच्चारण करते समय ये स्वरतंत्रियाँ आपस में मिल जाती हैं। वायु इन्हें ढकेलते हुए बाहर निकलने का प्रयास करती है जिससे कुछ कंपन नाद अथवा घोष होता है। इस प्रकार से जिन वर्णों का उच्चारण होता है उन्हें घोष ध्वनियाँ कहते हैं।

सभी स्वर, पाँचों वर्गों के तृतीय, चतुर्थ एवं पंचम व्यंजन तथा य, र, ल, व, ह घोष ध्वनियाँ हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ii) अघोष—जिन वर्णों का उच्चारण करने में स्वरतंत्रियों के अलग-अलग रहने के कारण वायु को बाहर निकलने में कोई प्रयत्न नहीं करना पड़ता है उन्हें अघोष ध्वनियाँ कहते हैं। सभी वर्गों के प्रथम एवं द्वितीय वर्ण—क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ तथा स, श, ष अघोष ध्वनियाँ हैं।

काक के प्रयत्न के आधार पर ध्वनियों का वर्गीकरण

काक के प्रयत्न के आधार पर भी ध्वनियों को दो वर्गों में विभाजित किया जाता है—अल्पप्राण एवं महाप्राण।

(i) अल्पप्राण—जिन वर्णों के उच्चारण में अंदर से आनेवाली प्राणवायु को कम परिश्रम करना पड़ता है उन्हें अल्पप्राण ध्वनियाँ कहते हैं। वर्गों की प्रथम, द्वितीय व पंचम ध्वनियाँ य, र, ल, व सभी स्वर एवं अनुस्वार अल्पप्राण ध्वनियाँ हैं।

(ii) महाप्राण—जिन वर्णों के उच्चारण में अपेक्षाकृत अधिक परिश्रम करना पड़ता है उन्हें महाप्राण ध्वनियाँ कहते हैं। सभी वर्गों के द्वितीय एवं चतुर्थ वर्ण; स, श, ष, ह तथा विसर्ग महाप्राण ध्वनियाँ हैं।

(ख) आभ्यंतर प्रयत्न के आधार पर—कंठ के आगे मुखविवर और नासिकाविवर के बीच जो प्रयत्न होते हैं उन्हें आभ्यंतर प्रयत्न कहते हैं। इस आभ्यंतर प्रयत्न के आधार पर स्वर ध्वनियों और व्यंजन ध्वनियों को अलग-अलग वर्गों में विभाजित किया गया है।

स्वरों में वर्गीकरण—आभ्यंतर प्रयत्न में मुख-द्वार के प्रयत्न के आधार पर स्वरों को चार भागों में बाँटा गया है :

(i) संवृत स्वर—जिन स्वरों का उच्चारण करने में मुख-द्वार बहुत सँकरा हो जाता है उन्हें संवृत स्वर कहते हैं। इ, ई, उ, ऊ, संवृत स्वर हैं।

(ii) अर्द्धसंवृत स्वर—जिनके उच्चारण में मुख-द्वार आधा सिकुड़ा होता है उन्हें अर्द्धसंवृत स्वर कहा जाता है। ए, ऐ, ओ, औ अर्द्धसंवृत स्वर हैं।

(iii) विवृत स्वर—जिन स्वरों के उच्चारण में मुख-द्वार पूरा खुला रहता है वे विवृत स्वर कहलाते हैं। आ विवृत स्वर है।

(iv) अर्द्धविवृत स्वर—जिन स्वरों के उच्चारण में मुख-द्वार आधा खुला रहता है, उन्हें अर्द्धविवृत स्वर कहा जाता है। अ, ऑ अर्द्धविवृत स्वर हैं।

आभ्यंतर प्रयत्न में ही जिह्वा के प्रयत्न के आधार पर भी स्वरों को तीन भागों में बाँटा जा सकता है :

(i) अग्र—जिन स्वरों के उच्चारण में जीभ का अग्र भाग उठता है वे अग्र स्वर हैं। जैसे—इ, ई, ए, ऐ।

(ii) मध्य—जिन स्वरों के उच्चारण में जीभ का मध्य भाग उठता है वे मध्य स्वर हैं। जैसे—अ।

(iii) पश्च—जिन स्वरों के उच्चारण में जीभ का पिछला भाग उठता है वे पश्च स्वर कहलाते हैं। जैसे—आ, उ, ऊ, ओ, औ, ऑ।

व्यंजनों का वर्गीकरण—अभ्यांतर प्रयत्न के आधार पर व्यंजन ध्वनियों को निम्न भागों में बाँटा जाता है :

(i) स्पर्श व्यंजन—जिन वर्णों का उच्चारण करने में मुख-द्वार को बंद करके खोलने से वायु उच्चारण-स्थानों का सामान्य रूप से स्पर्श करती है उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं। क, ख, ग, घ, च, छ, ज, झ, ट, ठ, ड, ढ, त, थ, द, ध, प, फ, ब, भ स्पर्श ध्वनियाँ हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalah Jammu

(ii) स्पर्शसंघर्षी व्यंजन—जिन व्यंजनों का उच्चारण करने में मुख-द्वार के बंद करके खोलने पर वायु उच्चारण-स्थानों को कुछ रगड़ती हुई स्पर्श करती है, उन्हें स्पर्शसंघर्षी व्यंजन कहते हैं। च, छ, ज, झ स्पर्शसंघर्षी ध्वनियाँ हैं।

(iii) संघर्षी व्यंजन—जिन वर्णों का उच्चारण करने पर मुख-द्वार को इस प्रकार से बंद करके खोलते हैं कि वायु उच्चारण-स्थानों को बहुत रगड़ती हुई, शीत्कार की सी ध्वनि करती हुई निकलती है उन्हें संघर्षी व्यंजन कहते हैं। क़, ख़, ज़, फ़, स, श, ष और ह संघर्षी व्यंजन हैं।

(iv) अनुनासिक—जिन वर्णों का उच्चारण करने से मुख-द्वार को बंद करके इस प्रकार से खोलते हैं कि वायु नासिका विवर से निकल जाती है उन्हें अनुनासिक ध्वनियाँ कहते हैं। ङ, ञ, ण, न, म, अनुनासिक ध्वनियाँ हैं।

(v) पार्श्विक—जिन वर्णों के उच्चारण में मुख-द्वार बीच से बंद होता है और वायु दोनों ओर निकल जाती है उसे पार्श्विक ध्वनि कहते हैं। 'ल' पार्श्विक व्यंजन है।

(vi) लुंठित—जिन व्यंजनों का उच्चारण करने में मुख-द्वार जीभ के अग्रभाग से जल्दी-जल्दी बंद होता व खुलता है उन्हें लुंठित व्यंजन कहते हैं। 'र' लुंठित ध्वनि है।

(vii) उत्क्षिप्त—जिन व्यंजनों के उच्चारण में मुख-द्वार झटके से खुलता है और जिह्वा का अग्र भाग उलटकर तालु को कुछ दूरी तक स्पर्श करता है उन्हें उत्क्षिप्त ध्वनियाँ कहते हैं। ड़, ढ़ उत्क्षिप्त ध्वनियाँ हैं।

(viii) अर्द्धस्वर—जिन वर्णों के उच्चारण में मुख-द्वार सिकुड़ जाता है और वायु उच्चारण-स्थानों को प्रभावित करती हुई, स्वरों के उच्चारण की भाँति बाहर निकल जाती है वे अर्द्धस्वर व्यंजन कहलाते हैं। य तथा व अर्द्धस्वर ध्वनियाँ हैं।

ध्वनियों के वर्गीकरण के ज्ञान की आवश्यकता
(Need of Knowing about the Classification of Sounds)

भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है। मानव-समूह अपने भाव, विचार एवं अनुभवों को व्यक्त करने के लिए भाषा के मौखिक एवं लिखित रूप का प्रयोग करता है। मौखिक रूप से विचाराभिव्यक्ति में ध्वनियाँ और लिखित अभिव्यक्ति में लिपि का प्रयोग किया जाता है। इन दोनों रूपों में अभिव्यक्ति की प्रमुख इकाई वाक्य है, वाक्य की इकाई शब्द है और शब्द की इकाई वर्ण है। वर्ण का मौखिक रूप ध्वनि और लिखित रूप लिपि है।

संसार में जितनी भी भाषाएँ हैं, उन सबका अपना-अपना ध्वनि-तत्व होता है। भिन्न-भिन्न ध्वनियों के लिए अलग-अलग वर्ण या अक्षर निश्चित होते हैं। और हर वर्ण या अक्षर के उच्चारण का एक निश्चित ढंग होता है। हर वर्ण के उच्चारण में उच्चारण-अवयवों को अलग-अलग ढंग से प्रयास करना पड़ता है। इन उच्चारण-स्थानों, उच्चारण में होनेवाले प्रयत्न एवं प्रकृति आदि के आधार पर हिंदी ध्वनियों को अलग-अलग ढंग से वर्गीकृत किया गया है। हिंदी भाषा की हर ध्वनि के उच्चारण का अपना एक निश्चित ढंग है। हर ध्वनि के उच्चारण में जिह्वा को एक निश्चित ढंग से, निश्चित स्थान का स्पर्श करना होता है। मुख-विवर के अंदर हर ध्वनि के उच्चारण के लिए एक निश्चित प्रक्रिया होती है, उस प्रक्रिया में सूक्ष्म-से-सूक्ष्म परिवर्तन होने पर ध्वनि भी परिवर्तित हो जाती है। जैसे—सकल और शकल में क्रमशः स एवं श ध्वनि। 'स' का उच्चारण करने के लिए जीभ को ऊपर के दाँतों के पीछे छूने पर स ध्वनि निकलेगी जो कि दंत्य है और 'श' का उच्चारण करने के लिए जीभ को दाँतों के पीछे से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तालू का स्पर्श करना होगा। 'श' तालव्य ध्वनि है। यदि बच्चों को यह ज्ञान नहीं कराया जाएगा कि तालव्य ध्वनियाँ क़ौन-कौन सी हैं और दंत्य ध्वनियाँ कौन-कौन सी हैं तो वे ध्वनियों का शुद्ध उच्चारण कर ही नहीं सकेंगे। इसलिए यह आवश्यक है कि बच्चों को भाषा की शिक्षा देते समय सबसे पहले हिंदी की ध्वनियों के वर्गीकरण का ज्ञान दिया जाए। ध्वनियों के वर्गीकरण का ज्ञान होने पर बच्चे हर ध्वनि को अलग-अलग पहचान सकेंगे। स्वर क्या हैं, व्यंजन क्या हैं, स्वरों का उच्चारण कैसे होता है, व्यंजनों का उच्चारण कैसे होता है, व्यंजनों के उच्चारण में स्वरों की क्या भूमिका है, इन सब बातों की जानकारी कराने के लिए ध्वनियों के वर्गीकरण का ज्ञान कराना आवश्यक है।

हिंदी ध्वन्यात्मक भाषा है। इसका ध्वनि-तत्व तो बड़ा ही वैज्ञानिक है। व्यक्ति जैसा बोलता है वैसा ही लिखता है। यदि उसे ध्वनियों के वर्गीकरण का ज्ञान नहीं होगा तो उसके उच्चारण में शुद्धता नहीं होगी और उच्चारण में शुद्धता न होने पर उसका लेखन भी अशुद्ध होगा। जैसे—जब तक बच्चे को व और ब ध्वनियों के इस अंतर का ज्ञान नहीं होगा कि 'व' दंत्योष्ठ्य है (इसके उच्चारण में निचले होंठ को दाँतों का स्पर्श करना पड़ता है) तथा 'ब' ओष्ठ्य है (अर्थात दोनों होंठों के स्पर्श से जो ध्वनि निकलती है वह ब है) तब तक वे 'व' और 'ब' के उच्चारण में तो अशुद्धता करेंगे ही, साथ ही लिखते समय भी इन दोनों वर्णों में कोई भी अंतर न कर सकेंगे और व के लिए ब तथा ब के लिए व लिखने में कोई भी सावधानी नहीं रखेंगे। अत: शुद्ध उच्चारण के साथ लेखन में भी शुद्धता बनाए रखने के लिए यह जरूरी है कि बच्चों को ध्वनियों के वर्गीकरण के उच्चारण का पूर्ण ज्ञान कराया जाए।

संस्कृत में एक श्लोक है जिसका यही तात्पर्य है कि व्याकरण ज्ञान अर्थात ध्वनि, वर्ण, शब्द के ज्ञान के बिना अध्ययन करना या न करना बेकार है—

"यद्यपि बहुनाधीषे पठ तथापि पुत्र व्याकरणम्।
स्वजन: श्वजन: मा भूत सकलं शकलं सकृत्छकृत्॥"

अर्थात चाहे तुम बहुत नहीं पढ़े हो परंतु फिर भी व्याकरण अवश्य पढ़ो अर्थात ध्वनि-तत्व, शब्द आदि का अध्ययन करे बिना उच्चारण में किसी भी प्रकार की त्रुटि होने की संभावना बनी रहती है और उच्चारण की थोड़ी-सी भी अशुद्धता अर्थ में भी परिवर्तन कर देती है। जैसे स्वजन का अर्थ है अपना व्यक्ति और श्वजन का अर्थ चांडाल, स और श उच्चारण में ज़रा सा अंतर होते ही अर्थ का अनर्थ हो सकता है।

वास्तव में ध्वनियों के विस्तृत ज्ञान के बिना भाषा को ठीक प्रकार से नहीं समझा जा सकता है। भाषा पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करने की दृष्टि से भी बच्चों को ध्वनियों के वर्गीकरण का ज्ञान कराना आवश्यक है। बच्चों में प्रारंभिक वर्षों में भाषा संबंधी जिन आदतों का निर्माण हो जाता है उन्हें बाद में बदलना मुश्किल हो जाता है। अत: प्रारंभ में ही अर्थात भाषा का थोड़ा-सा ज्ञान होने के पश्चात ही बच्चों को ध्वनियों के वर्गीकरण का ज्ञान कराना आवश्यक है जिससे बच्चा अपने भाषा संबंधी प्रयोग की शुद्धता और अशुद्धता की परख कर सके।

अपनी-अपनी क्षेत्रीय या प्रांतीय भाषा का प्रयोग करनेवाले व्यक्ति जब हिंदी भाषा का प्रयोग करते हैं तब हिंदी ध्वनि विज्ञान से अपरिचित होने एवं अपनी प्रांतीय भाषा से प्रभावित होने के कारण व हिंदी ध्वनियों का अशुद्ध प्रयोग करने लगते हैं। उन्हें हिंदी ध्वनियों का शुद्ध प्रयोग करना सिखाने के लिए पहले ध्वनियों का वर्गीकरण सिखाना आवश्यक है। अर्थात उन्हें बताया जाए कि उच्चारण प्रकृति के आधार पर, उच्चारण-स्थान के आधार पर एवं बाह्य एवं आभ्यंतर प्रयत्न के आधार पर हिंदी ध्वनियों का वर्गीकरण किस प्रकार किया गया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस प्रकार ध्वनियों के वर्गीकरण का ज्ञान कराने के उपरांत ही हम उनकी अभिव्यक्ति को प्रभावशाली व सारयुक्त बना सकेंगे।

उच्चारण दोष—कारण और निराकरण

(Defects in Pronunciation—Causes and Remedial Measures)

विचारों के आदान-प्रदान के लिए हम भाषा का प्रयोग करते हैं। भाषा के दो रूप होते हैं—मौखिक रूप एवं लिखित रूप। मौखिक भाषा के प्रयोग का मुख्य आधार ध्वनियाँ हैं। प्रत्येक ध्वनि के लिए निश्चित अक्षर हैं और उनका उच्चारण-स्थान भी निश्चित है। यदि हम विचारों को प्रकट करते समय हर ध्वनि का उच्चारण उसके निश्चित स्थान और प्रयास से नहीं करेंगे तो हमारी अभिव्यक्ति दोषयुक्त हो जाएगी और मौखिक भाषा निरर्थक एवं प्रभावहीन हो जाएगी। ध्वनियों के अभाव में शब्दों या वाक्यों का अर्थात भाषा का कोई अस्तित्व नहीं है। अत: ध्वनियों के शुद्ध उच्चारण के बिना भाषा के शुद्ध रूप की रक्षा नहीं हो सकती है। इसलिए बचपन से बच्चों को शुद्ध उच्चारण की शिक्षा देना एवं अभ्यास कराना अत्यंत आवश्यक है।

लिखित भाषा भी मौखिक भाषा पर निर्भर करती है। आपने प्राय: यह अनुभव किया होगा कि हम जैस बोलते हैं वैसा ही लिखते हैं क्योंकि लिखित भाषा मौखिक भाषा की प्रतिनिधि मात्र है। यदि हमारा उच्चारण अशुद्ध होगा तो अक्षर-विन्यास अशुद्ध होना स्वाभाविक ही है। जब हम 'सुरेंद्र' का 'सुरिंदर' बोलेंगे तो सुरेंद्र कैसे लिखेंगे? अत: भाषा के स्वरूप को विकृत होने से बचाने के लिए शुद्ध उच्चारण की शिक्षा आवश्यक है।

भाषा पर बच्चों का पूर्ण अधिकार कराने के लिए उनमें चार भाषायी कौशलों का विकास करना होता है—सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना। ये चारों कौशल शुद्ध उच्चारण पर निर्भर हैं। उच्चारण शुद्ध होने पर ही हम वक्ता के मनोभावों को ठीक-ठीक ग्रहण कर सकते हैं। बोलने का मुख्य आधार तो उच्चारण है ही। पढ़ने में भी यदि उच्चारण शुद्ध नहीं होगा तो पठन दोषपूर्ण रहेगा और लेखन में तो कहा ही जाता है कि जैसा बोलोगे वैसा लिखोग़े। अत: चारों कौशलों को पूरी तरह से विकसित करने के लिए उच्चारण की शिक्षा देना आवश्यक है।

हमारे देश में प्राचीन काल से ही शुद्ध उच्चारण की शिक्षा पर विशेष बल दिया जाता रहा है। उस समय विद्यार्थियों को छ: वेदांगों की शिक्षा दी जाती थी जिनमें से एक वेदांग का नाम था 'शिक्षा'। इसमें भाषा के शुद्ध उच्चारण की शिक्षा दी जाती थी। परंतु आजकल हमारे विद्यालयों में उच्चारण की शिक्षा पर विशेष बल नहीं दिया जाता है, संपूर्ण शिक्षा-प्रणाली लिखित रूप पर आधारित होती जा रही है। इसीलिए दिन-प्रतिदिन छात्रों का भाषा-स्तर गिरता जा रहा है। उनकी मौखिक अभिव्यक्ति प्रभावहीन होती जा रही है। अत: बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति को प्रभावशाली बनाने एवं भाषा का स्तर ऊपर उठाने की दृष्टि से बच्चों को उच्चारण की शिक्षा देने के लिए विशेष प्रयास करने चाहिए।

उच्चारण संबंधी दोष (Pronunciation Errors)

विद्यालयों में छात्रों में निम्न उच्चारण संबंधी दोष प्रमुख रूप से देखने को मिलते हैं :

(i) **स्वर-वृद्धि**—शब्द में अनावश्यक रूप से स्वर की वृद्धि। जैसे—'महेंद्र' को 'महेन्दर', 'प्रयोग' का 'परयोग', 'श्री' का 'सिरी' आदि।

(ii) **व्यंजन-वृद्धि**—शब्द में अनावश्यक रूप से व्यंजन-वृद्धि। जैसे—'पुत्र' का 'पुत्तर', 'पत्र' का 'पत्तर' आदि।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(iii) **स्वरागम**—शब्द से पहले स्वर में वृद्धि। जैसे—'स्नान' का 'अस्नान', 'स्त्री' का 'इस्त्री', 'स्कूल' का 'इस्कूल' आदि।

(iv) **स्वर-लोप**—शब्द में से किसी स्वर को कम करना। जैसे—'परमात्मा' का 'प्रमात्मां', 'ईश्वर' का 'इस्वर', 'अनाज' का 'नाज' आदि।

(v) **व्यंजन-लोप**—शब्द में से किसी एक या अधिक व्यंजनों का लोप। जैसे 'मास्टरसाहब' का 'मास्साब', 'मैडम' का 'मैम' आदि।

(vi) **वर्ण-विपर्यय**—शब्द में प्रयुक्त वर्णों के स्थान में परिवर्तन। जैसे—'चाकू' का 'काचू', 'लखनऊ' का 'नखलऊ' या 'मतलब' का 'मतबल' आदि।

(vii) **शब्द-विपर्यय**—वाक्य में प्रयुक्त शब्दों के स्थान में परिवर्तन। जैसे—'बाल की खाल निकालना' के लिए 'खाल की बाल निकालना', 'कान में तेल डाल दो' के लिए 'तेल में कान डाल दो' आदि।

(viii) **इ और ई की त्रुटि**—कवि के लिए कवी, आशीर्वाद के लिए आशिर्वाद, 'कि' के लिए 'की' और 'की' के लिए 'कि' आदि।

(ix) **उ और ऊ की त्रुटि**—'परंतु' के लिए 'परंतू', 'पूर्व' के लिए 'पुर्व' आदि।

(x) **ए और ऐ की त्रुटि**—'जाता है' के लिए 'जाता हे', (मेला और मैला) 'साड़ी मैली है' के लिए 'साड़ी मेली हे' आदि।

(xi) **ओ और औ की त्रुटि**—'ओर' के लिए 'और' तथा 'और' के लिए 'ओर', 'कौन' के लिए 'कोन' आदि।

(xii) **अ और आ की त्रुटि**—'आशीर्वाद' के लिए 'अशीर्वाद'।

(xiii) **चंद्रबिंदु और अनुस्वार की त्रुटि**—साँस के लिए सांस, चाँद के लिए चांद या गंगा के लिए गँगा कहना।

(xiiv) **अनुनासिकता का दोष**—जैसे सोचना को सोंचना, चौथा का चौंथा कहना।

(xv) **अल्पप्राण और महाप्राण का भ्रम**—भोजन को बोजन, भास्कर को बास्कर, घर को गर, धोबन को दोबन आदि।

(xvi) **ऋ, र, और अर का भ्रम**—ऋषि को रिषि, ऋतु को रितु, कर्म को करम, आश्रम को आशरम, मार्ग को मारग आदि।

(xvii) **न और ण का भ्रम**—जैसे रणभूमि का रनभूमि, पानी को पाणी, प्रणाम को प्रनाम, वन का वण कहना आदि।

(xviii) **व और ब का भ्रम**—जैसे वन और बन, वानगी का बानगी, वचन का बचन आदि।

(xixi) **स, श और ष का भ्रम**—सरोज को शरोज, सुषमा को शुसमा, पाषाण का पासाण, शकल को सकल, प्रकाश को प्रकाष कहना।

(xx) **छ और क्ष का भ्रम**—कक्षा को कक्छा, लक्ष्मण को लछमण, क्षत्रिय को छत्रिय कहना।

(xxi) **ड और ड़ तथा ढ एवं ढ़ का भ्रम**—जैसे—गुड़ को गुड, पड़ना को पडना, पढ़ना को पढना, कढ़ाई को कढाई कहना।

(xxii) **अधिक या न्यून गति का दोष** अर्थात किसी शब्द, वाक्यांश या वाक्य को बहुत जल्दी या बहुत धीरे-धीरे बोलना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(xxiii) **हकलाना**—शब्द के किसी एक वर्ण पर बार-बार अटक-अटककर बोलना। जैसे त् त् त् तुम, क् क् क्या—इस प्रकार बोलना।

(xxiv) **अशुद्ध स्वराघात**—वाक्य के कई शब्दों में से गलत रूप से किसी शब्द पर जोर डालना। जैसे—'चाय पिएँगे' इस वाक्य में दो शब्द हैं, इनमें से प्रथम शब्द पर जोर डालने का अभिप्राय है कि हम चाय पिएँगे और पिएँगे पर जोर डालने का मजलब है—क्या आप चाय पिएँगे ?

कक्षा में अध्यापन कार्य करते समय अध्यापक उपर्युक्त एवं अन्य उच्चारण संबंधी दोषों का पता लगा सकता है।

उच्चारण-दोषों के कारण (Causes of Pronunciation Errors)

बच्चे उच्चारण संबंधी जो भी त्रुटियाँ करते हैं उनके निम्न कारण हो सकते हैं :

1. वर्णों के शुद्ध उच्चारण-ज्ञान का अभाव—हिंदी भाषा का ध्वनि-तत्व बड़ा ही वैज्ञानिक है। हर ध्वनि के उच्चारण का निश्चित ढंग एवं स्थान है। यदि छात्रों को हर ध्वनि के उच्चारण के सही तरीके का ज्ञान नहीं होता है तो उच्चारण संबंधी त्रुटियाँ हो जाती हैं। हिंदी वर्णमाला की हर ध्वनि का स्पष्ट ज्ञान न होने के कारण भी अशुद्ध उच्चारण करते हैं।

हिंदी की कुछ ध्वनियाँ ऐसी हैं जिनके उच्चारण में बहुत सूक्ष्म अंतर है। जैसे—व्, ब, स, श, ष, ड़, ढ, ढ़ आदि। कुछ ध्वनियों का उच्चारण भी अनिश्चित है जैसे—ञ, ङ, ऋ, क्ष, ज्ञ आदि। इन सबके उच्चारण का स्पष्ट ज्ञान न होने से छात्र उच्चारण करने में अशुद्धियाँ कर देते हैं।

2. वातावरण का प्रभाव—भाषा अनुकरण से सीखी जाती है। यदि बच्चे के माता-पिता या पास-पड़ोस के लोग अशुद्ध उच्चारण करते हैं तो बच्चा भी अशुद्ध उच्चारण करने लगता है। बच्चों को बचपन से उसी प्रकार से बोलने की आदत पड़ जाती है और फिर उन्हें सुधारना मुश्किल हो जाता है।

3. अध्यापक का अशुद्ध उच्चारण—विद्यालय में प्रवेश लेने के उपरांत बच्चे की औपचारिक शिक्षा प्रारंभ होती है। कक्षा में भाषा का अध्ययन करते हुए अध्यापक जो कुछ भी बोलता है, उसका बच्चों पर महत्त्वपर्णू प्रभाव पड़ता है। यदि अध्यापक का उच्चारण शुद्ध है तो बच्चे भी शद्ध उच्चारण सीखते हैं और यदि अध्यापक का उच्चारण अशुद्ध है तो बच्चों का उच्चारण भी अशुद्ध हो जाता है।

4. अतिशीघ्रता—बोलते समय यदि बच्चे जल्दी-जल्दी कोई बात कहने का प्रयास करते हैं तो उच्चारण अशुद्ध हो जाता है। विपर्यय-दोष या हकलाहट प्राय: अतिशीघ्रता के कारण ही होते हैं।

5. असावधानी—यदि बोलते समय बालक का ध्यान कहीं और होता है तो स, श, ष से संबंधित, अल्पप्राण-महाप्राण संबंधी, विपर्यय आदि से संबंधित त्रुटियाँ प्राय: हो जाती हैं।

6. प्रयत्नलाघव—कम प्रयास से अपना काम निकालना मानव की प्रकृति होती है। इसे ही प्रयत्नलाघव कहते हैं। इस प्रयत्नलाघव के कारण ही स्वर लोप एवं वर्ण लोप जैसी उच्चारण संबंधी त्रुटियाँ होती रहती हैं।

7. शारीरिक दोष—उच्चारण तंत्र अर्थात् कंठ, तालू, जीभ, दाँत, होंठ आदि में विकार होने पर उच्चारण संबंधी अशुद्धियाँ हो जाती हैं।

8. मनोवैज्ञानिक कारण—लज्जा, संकोच, भय, आत्महीनता, आत्मविश्वास में कमी आदि मनोवैज्ञानिक कारणों से बच्चों का उच्चारण प्राय: अशुद्ध हो जाता है।

9. स्थानीय प्रभाव—बालक जिस क्षेत्र विशेष में निवास करता है वहाँ की बोली या भाषा बच्चे के उच्चारण को प्रभावित करती हैं। एक कहावत है—'चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर वाणी'। इस स्थानीय बोली या भाषा के प्रभाव से उच्चारण अशुद्ध हो जाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

10. प्रांतीय प्रभाव—भारतवर्ष में कितने ही प्रांत हैं। प्राय: सभी की भाषा अलग-अलग है। जब एक प्रांत का निवासी किसी दूसरे प्रांत में जाकर वहाँ की भाषा का प्रयोग करता है तो उसके उच्चारण में उसके अपने प्रांत की भाषा का प्रभाव पड़ता है। हिंदी भाषा के उच्चारण में भी यह प्रभाव देखा जा सकता है। जैसे सुरेंद्र का सुरेंदर, पुत्र का पुत्तर पंजाबी का प्रभाव है। हरियाणा में बाँगरू बोली के प्रभाव के कारण मैंने को मन्ने, चलना को चाल्या, गीला को गील्ला, देश को देस, चाकू को चाक्कू बोलते हैं। राजस्थानी में पानी को पाणी, तो काश्मीरी में महाप्राण नादवर्ण न होने के कारण काश्मीरी लोग हिंदी में घर को गर, प्रभात को प्रबात बोलते हैं। इसी प्रकार अन्य भाषाभाषी लोग भी हिंदी भाषा का प्रयोग करते समय अपनी-अपनी प्रांतीय भाषाओं से प्रभावित रहते हैं और उनके उच्चारण में त्रुटि हो जाती है।

11. विदेशी भाषा का प्रभाव—अंग्रेजी, उर्दू, फारसी तथा अन्य विदेशी भाषाओं के प्रभाव से भी हिंदी भाषा के उच्चारण में त्रुटियाँ हो जाती हैं। शब्द के अंत में दीर्घ आ का उच्चारण जैसे राम का रामा, रामायण का रामायणा अंग्रेजी भाषा का प्रभाव है। इसी प्रकार खींचना और खेंचना, श्री का सिरी उर्दू भाषा का प्रभाव है।

12. दोषपूर्ण आदतें—कुछ बच्चों में बोलने से संबंधित अपनी विशिष्ट आदतें पड़ जाती हैं और उन आदतों के परिणामस्वरूप बच्चे अशुद्ध उच्चारण करते हैं। अनुनासिकता दोष का प्रमुख कारण यही है। हकलाना या तुतलाना भी बहुत कुछ उसी आदत का परिणाम है।

उच्चारण-दोषों के निराकरण के उपाय (Remedial measures for Pronunciation Errors)

जब बच्चा विद्यालय में प्रवेश लेता है तो उसके साथ वार्तालाप करने पर अध्यापक को यह ज्ञात हो जाता है कि कौन-सा बच्चा उच्चारण संबंधी कौन-सी त्रुटि करता है। इन त्रुटियों को जानने के पश्चात अध्यापक यह भी जानने का प्रयास करता है कि बच्चे उच्चारण संबंधी ये त्रुटियाँ क्यों कर रहे हैं? इस बात की जानकारी कर लेने के पश्चात ही शिक्षक बच्चों के उच्चारण को ठीक करने के लिए विभिन्न प्रकार के उपायों का प्रयोग करता है क्योंकि शुद्ध उच्चारण के साथ मौखिक अभिव्यक्ति-कौशल का विकास करना हिंदी भाषा की शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य है। बच्चों की उच्चारण संबंधी त्रुटियों को दूर करने के लिए अध्यापक निम्न उपायों का प्रयोग कर सकता है :

1. ध्वनि तत्व का ज्ञान कराना—जब बच्चों को बोलचाल की भाषा आ जाए और पढ़ने-लिखने का कार्य आरंभ हो तब बच्चों को हिंदी भाषा के ध्वनि-तत्व का पूरा ज्ञान कराना चाहिए। नागरी वर्णमाला के सभी स्वरों और व्यंजनों आदि की शिक्षा देनी चाहिए। हिंदी भाषा का ध्वनि-तत्व बड़ा ही वैज्ञानिक है। हर ध्वनि के लिए अलग-अलग वर्ण निश्चित हैं अत: बच्चों को ध्वनियों का विस्तृत एवं स्पष्ट ज्ञान कराना चाहिए। ध्वनि-तत्व का ज्ञान कराने के लिए निम्न बातों की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए :

(i) हिंदी ध्वनियों का वर्गीकरण सिखाना—ध्वनि तत्व का प्रारंभिक ज्ञान कराने के पश्चात हिंदी ध्वनियों का वर्गीकरण समझाना चाहिए। उच्चारण की प्रकृति, उच्चारण-स्थान, बाह्य प्रयत्न एवं आभ्यंतर प्रयत्न के आधार पर ध्वनियों का अलग-अलग ढंग से वर्गीकरण सिखाना चाहिए जिससे बच्चे घोष-अघोष, अल्पप्राण-महाप्राण, श्वास-नाद, ह्रस्व-दीर्घ, अनुस्वार-अनुनासिक, संवृत-विवृत आदि ध्वनियों का अंतर समझ जाएँ और उनके अनुसार उच्चारण कर सकें। यह ज्ञान प्राथमिक स्तर के उपरांत कराना चाहिए।

(ii) हिंदी की विशेष ध्वनियों का अभ्यास कराना—हिंदी भाषा में कुछ ध्वनियाँ ऐसी हैं जिनमें अत्यंत सूक्ष्म अंतर है। इस अंतर का स्पष्ट ज्ञान बच्चों को कराना चाहिए। जैसे—न और ण, व और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
ब, स, श और ष, ड और ड़, ढ और ढ़, क्ष और छ आदि। इन ध्वनियों के बारे में बच्चों को उच्चारण करने का ढंग विधिवत् रूप से स्पष्ट कराना चाहिए जैसे 'व' के उच्चारण में निचला होंठ दाँतों का स्पर्श करता है तो दोनों होठों के स्पर्श से 'ब' ध्वनि उच्चरित होती है। इसी प्रकार 'स' के उच्चारण में जीभ की नोक दाँतों के पीछे स्पर्श करती है और 'श' के उच्चारण में जिह्वाग्र कोमल तालु को रगड़ती हुई स्पर्श करती है तथा 'ष' में जिह्वा कठोर तालु पर आघात करती है। इसी प्रकार उन्हें यह भी बताना चाहिए कि ड और ढ ध्वनियाँ मूर्द्धन्य हैं और जब इनके नीचे बिंदी लग जाती है—ड़ और ढ़ तो इनका उच्चारण द्विस्पृष्ट हो जाता है। जैसे डलिया, लड़ना, ढोलक, पढ़ाई। जो व्यंजन स्वररहित होते हैं उनका उच्चारण बहुत हल्का होता है। जो शब्द अकारांत होते हैं उनके अ का उच्चारण अलग से नहीं होता है, जैसे—राम, काम, चाल, पढ़, नल आदि, परंतु यदि शब्द के अंत में 'य' अक्षर हो तो 'अ' का उच्चारण स्पष्ट रूप से होता है। जैसे—'पय', 'मय' आदि।

(iii) उच्चारण-स्थानों का ज्ञान कराना—ध्वनियों का उच्चारण करने में मुख के हर अवयव का अपना-अपना महत्त्व होता है। मुख के जिस अवयव के प्रयोग से जो ध्वनि बोली जाती है वह उस ध्वनि का उच्चारण-स्थान कहलाता है। हर ध्वनि का अपना एक निश्चित उच्चारण-स्थान है अतः बच्चों को इस बात का ज्ञान कराना चाहिए कि किस अवयव के किस स्थान पर स्पर्श करने से कौन-सी ध्वनि निकलती है। उच्चारण-स्थान के गलत प्रयोग से ध्वनि कैसे अशुद्ध हो जाती है, इसके लिए अध्यापक निम्न साधनों की सहायता ले सकता है :

(क) सिर और ग्रीवा का एक मॉडल, जिसमें हर उच्चारण अवयव को स्पष्ट रूप से दिखाया गया हो।

(ख) ध्वनितंत्र का चित्र।

(ग) दर्पण, जिसमें बालक अपनी जिह्वा का विभिन्न उच्चारण-स्थानों पर स्पर्श करते हुए देख सकें।

(घ) ग्रामोफोन, लिंग्वाफोन तथा टेपरिकार्डर, जिसके द्वारा बालकों को शुद्ध उच्चरित शब्दों तथा वाक्यों को सुनवाकर उसी प्रकार से उच्चारण करने का अभ्यास कराया जा सके।

2. उच्चारण-अंग की चिकित्सा—इस प्रकार से अभ्यास कराते समय यदि यह पता लगे कि किसी बच्चे के किसी उच्चारण-अंग में दोष है तो उसे शीघ्र ही डाक्टर के पास ले जाकर उसके उस उच्चारण-अंग की चिकित्सा करानी चाहिए। श्वास-नलिका, कंठ, जीभ, ओष्ठ, तालु, दाँत, नाक आदि में किसी प्रकार का दोष होने पर शुद्ध उच्चारण की आशा व्यर्थ है। यह दोष दूर होने पर ही बच्चे को शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराया जा सकता है।

3. शुद्ध बोलने वालों की संगत—भाषा अनुकरण से सीखी जाती है और अपने साथ रहनेवाले व्यक्तियों के उच्चारण का बच्चे पर बहुत प्रभाव पड़ता है। अतः यह प्रयास करना चाहिए कि बच्चे ऐसे लोगों की संगत करें जो शुद्ध उच्चारण करते हों।

4. अध्यापक को शुद्ध बोलना चाहिए—कक्षा में अध्यापक के बोलने का बच्चे पर बहुत प्रभाव पड़ता है। उसका आदर्श वाचन, अभिव्यक्ति आदि बच्चों के द्वारा ध्यानपूर्वक सुने जाते हैं, अतः अध्यापक को अपने उच्चारण पर बहुत ध्यान देना चाहिए।

5. प्रेम एवं सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार—कई बार बच्चा भय, संकोच, डर आदि के कारण अशुद्ध उच्चारण करता है अतः उसके भय, डर, संकोच एवं आत्महीनता को दूर करने के लिए उसके साथ प्रेम,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सहानुभूति एवं प्रोत्साहनजनक व्यवहार करना चाहिए और उसको शुद्ध बोलने के लिए प्रेरित करना चाहिए। इससे भी उसके उच्चारण-दोष को दूर किया जा सकता है।

6. आवृत्ति एवं पुनरावृत्ति विधि का प्रयोग—कहते हैं ''करत-करत अभ्यास के जड़ मति होत सुजान।'' भाषा तो वैसे भी एक कौशल है और कौशल में जितना अभ्यास कराया जाए उतना ही निखार आता है। बच्चे जिन वर्णों का अशुद्ध उच्चारण करते हैं उनके शुद्ध उच्चारण का बार-बार अभ्यास कराने से उच्चारण-दोष को दूर किया जा सकता है और अभ्यास के लिए आवृत्ति एवं पुनरावृत्ति के नियम का पालन किया जा सकता है। पूरे शब्द की बार-बार आवृत्ति कराना एक मनोवैज्ञानिक प्रणाली है।

7. विश्लेषण विधि का प्रयोग—जो शब्द बहुत बड़े हैं अर्थात समस्त शब्द हैं उनको अलग-अलग टुकड़ों में बाँटकर उनका उच्चारण और फिर पूरे शब्द का उच्चारण कराना ही विश्लेषण विधि कहलाता है। जैसे—

हिमाच्छादित	हि + म् + आ + च् + छा + दि + त।
महिषासुर	म + हि + षा + सु + र।
चयनिका	च + य + नि + का।

8. अनुकरण विधि का प्रयोग—भाषा अनुकरण से सीखी जाती है अतः कक्षा में अध्यापक को भाषा के हर कालांश में शुद्ध उच्चारण करना चाहिए और बच्चों को उसका अनुकरण करने को कहना चाहिए। अध्यापक स्वयं मुख के विभिन्न अवयवों का संचालन करते हुए विभिन्न ध्वनियों के उच्चारण का प्रदर्शन करे और छात्र अध्यापक को देखते हुए उसी प्रकार अपने मुखावयवों का संचालन करें या ध्वनियों का उच्चारण करें।

9. पुस्तक के शुद्ध पाठ पर जोर देना—भाषा के कालांश में गद्य, पद्य, नाटक, कहानी आदि पढ़ाते हुए अध्यापक को पहले स्वयं आदर्श पाठ कराना चाहिए फिर बच्चों से अलग सस्वर पाठ कराना चाहिए और उसी समय उनकी उच्चारण संबंधी त्रुटियों को दूर कराना चाहिए।

10. शुद्ध उच्चारण के लिए सावधानी की आदत डालना—छात्रों में इस प्रकार की आदत शुरू से विकसित करने का प्रयास करना चाहिए कि वे जब भी बोलें, सतर्कता एवं सावधानी के साथ बोलें तथा दूसरों को सुनते समय भी सावधान रहें। वक्ता के उच्चारण में होनेवाली अशुद्धि को पहचानें और उसकी ओर संकेत करें। यदि उच्चारण के संबंध में कोई शंका हो तो अध्यापक से पूछकर उसका निवारण करें।

11. बल, विराम तथा सस्वर अभिव्यक्ति का अभ्यास—अध्यापक को कक्षा में बच्चों को उचित बल, विराम तथा ठीक स्वर से बोलने एवं पढ़ने का अभ्यास कराना चाहिए। वाक्य में किस शब्द पर अधिक बल जगाना है, कहाँ कम, कहाँ ज्यादा विराम देना है और उचित प्रवाह एवं गति से कैसे बोलना है, इस बात का अभ्यास कराने से उच्चारण संबंधी कई दोषों को दूर किया जा सकता है।

12. भाषण एवं वाद-विवाद प्रतियोगिताएँ—भाषण एवं वाद-विवाद प्रतियोगिताएँ मौखिक अभिव्यक्ति में प्रशिक्षित करने के लिए महत्त्वपूर्ण साधन हैं। इनमें शुद्ध उच्चारण का बहुत महत्त्व है। अतः विद्यालय में समय-समय पर भाषण, वाद-विवाद एवं अभिव्यक्ति संबंधी अन्य क्रियाओं का आयोजन कर बच्चों को शुद्ध उच्चारण के अभ्यास का अवसर प्रदान करना चाहिए।

13. उच्चारण प्रतियोगिताएँ—कक्षा के बच्चों को दो दलों में बाँटकर कक्षा के अंतर्गत ही उच्चारण प्रतियोगिता का आयोजन किया जा सकता है। अध्यापक श्यामपट्ट पर एक-एक शब्द लिखकर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक-एक टोली के सदस्य से उच्चारण करने के लिए कहता है और अधिक शब्दों का शुद्ध उच्चारण करनेवाली टोली विजेता घोषित कर दी जाती है। इस प्रकार की क्रियाएँ बच्चों को उच्चारण करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।

14. वैयक्तिक एवं सामूहिक विधि—यदि कोई बच्चा अशुद्ध उच्चारण करता है तो उसके व्यक्तिगत कारण का पता लगाकर व्यक्तिगत रूप से उसका उच्चारण शुद्ध कराने का प्रयास करना चाहिए। किसी शब्द विशेष का उच्चारण कराने के लिए सामूहिक ड्रिल आदि के द्वारा भी शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराया जा सकता है।

15. सभी विषयों के कालांशों में सावधानी—किसी भी कौशल का अर्जन करने के लिए अभ्यास की आवश्यकता होती है। शुद्ध उच्चारण में कुशलता प्राप्त करने के लिए केवल भाषा के कालांश में ही नहीं वरन विद्यालय के सभी विषयों के कालांशों में बच्चों को शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराने की आवश्यकता है। यदि केवल भाषा का अध्यापक ही शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराए और शेष सभी कालांशों में अन्य विषयों के अध्यापक इस ओर ध्यान न दें तो छात्रों का उच्चारण शुद्ध करना मुश्किल है। सभी विषयों के अध्यापकों को शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराने में भाषा-अध्यापक की सहायता करनी चाहिए और इसके लिए अपने-अपने कालांशों में छात्रों के शुद्ध उच्चारण पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

16. अभिभावकों को शुद्ध उच्चारण के लिए प्रेरित करना—बच्चे दिन के 24 घंटे में से लगभग 6 या 7 घंटे विद्यालय में रहते हैं और शेष समय घर पर व्यतीत करते हैं। यदि केवल विद्यालय में शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराया जाए और घर पर कोई भी ध्यान न दे तो विद्यालय के प्रयास का पूरा-पूरा लाभ नहीं होगा। इसके लिए अध्यापकों को बच्चों के माता-पिता तथा अभिभावकों को शुद्ध उच्चारण के प्रति सचेत करना चाहिए तथा बच्चों को शुद्ध उच्चारण सिखाने में सहयोग देने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

17. कठिन वर्णों को बोलने का पृथक अभ्यास—कई बच्चे वैसे तो ठीक बोलते हैं परंतु किसी-किसी विशेष ध्वनि का उच्चारण ठीक से नहीं कर पाते हैं या किसी विशेष ध्वनि पर अटक-अटककर बोलने लगते हैं। ऐसे बच्चों के साथ उत्साहवर्धक व्यवहार करते हुए कठिन अक्षरों को बोलने का अभ्यास कराना चाहिए। इसके लिए कभी-क्भी अनुप्रासबहुल वाक्यों का प्रयोग किया जा सकता है। जैसे—चारु चंद की चंचल किरणें या दावा द्रुम दंड पर चीता मृग झुंड पर, भूषण वितंड पर जैसे मृगराज है या छछिया भर छाछ पै नाच नचावै आदि।

इसी प्रकार जिस वर्ण को बोलने में बच्चा अटकता हो, उसको बार-बार बुलवाया जाए तथा उस वर्ण की बारहखड़ी का अभ्यास भी कराया जाए। जैसे—ड, डा, डि, डी, डु, डू, डे, डै, डो, डौ, डं, डः। इसी प्रकार किसी भी वर्ण के साथ सभी स्वरों का अलग-अलग योग कर बारहखड़ी के उच्चारण का अभ्यास कराया जा सकता है।

इस प्रकार से उपर्युक्त उपायों का पालन तथा अभ्यास करने से छात्रों के उच्चारण संबंधी दोषों को दूर किया जा सकता है।

अध्ययन के लिए प्रश्न

1. हिंदी भाषा की प्रचलित ध्वनियाँ कौन-कौन सी हैं ? इन ध्वनियों के वर्गीकरण करने के क्या-क्या आधार हैं ? वर्णन कीजिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2. हिंदी की प्रचलित ध्वनियाँ कौन-कौन सी हैं ? इन ध्वनियों को बाह्य प्रयत्न और आभ्यांतर प्रयत्न की दृष्टि से किन वर्गों में वर्गीकृत किया गया है ? हिंदी-शिक्षण में ध्वनियों के वर्गीकरण के ज्ञान की क्या आवश्यकता है ?

3. हिंदी की प्रचलित ध्वनियों को उच्चारण-स्थान की दृष्टि से किस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है ? स्पष्ट करें।

4. आप अपनी कक्षा के बालकों को सामान्यत: किस प्रकार की उच्चारण संबंधी अशुद्धियाँ करते हुए देखते हैं ? इन अशुद्धियों को दूर करने के लिए आप क्या प्रयास करेंगे ?

5. हिंदी ध्वनियों का वर्गीकरण प्रस्तुत कीजिए और उच्चारण सुधारने की विधियों का वर्णन कीजिए।

6. हिंदी भाषा की ध्वनियों का वर्गीकरण प्रस्तुत कीजिए। ध्वनियों का ज्ञान छात्रों को मौखिक भाषा सिखाने में किस प्रकार सहायक हो सकता है ?

7. ''भाषा के समुचित ज्ञान के लिए सही उच्चारण का ज्ञान होना आवश्यक है।'' इस कथन की विवेचना कीजिए।

8. विद्यार्थियों के उच्चारण में अशुद्धियाँ होने के क्या कारण हो सकते हैं ? इन अशुद्धियों को दूर करने के उपायों पर प्रकाश डालिए।

9. निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :—

(i) हिंदी भाषा की ध्वनियाँ

(ii) हिंदी भाषा की ध्वनियों का वर्गीकरण,

(iii) हिंदी-शिक्षण में ध्वनियों के ज्ञान की आवश्यकता,

(iv) हिंदी में उच्चारण दोष के कारण और निराकरण,

(v) हिंदी में उच्चारण-शिक्षण,

(vi) हिंदी भाषा में बालकों के द्वारा की जानेवाली उच्चारण संबंधी त्रुटियाँ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

7

अक्षर-विन्यास या वर्तनी—त्रुटियाँ, कारण एवं निवारण
(Spelling Errors—Causes and Remedial Measures)

हिंदी भाषा की शिक्षा में वर्तनी अर्थात अक्षर-विन्यास का बहुत महत्त्व है। शुद्ध भाषा वर्तनी पर बहुत कुछ निर्भर करती है। भाषा के दो रूप हैं—मौखिक एवं लिखित। जहाँ मौखिक भाषा की शुद्धता के लिए उच्चारण की शुद्धता आवश्यक है, वहीं लिखित भाषा को सशक्त, सार्थक, प्रभावशाली एवं शुद्ध बनाए रखने के लिए शुद्ध अक्षर-विन्यास आवश्यक है। अशुद्ध अक्षर-विन्यास अभिव्यक्ति के अर्थ एवं भाव को ही बदल देता है। मेला की जगह मैला लिख दिया जाए या परिणाम की जगह परिमाण लिख दिया जाए तो हम सोच सकते हैं कि हमारी अभिव्यक्ति कितनी प्रभावहीन हो जाएगी। अशुद्ध बर्तनी केवल लिखित अभिव्यक्ति को ही प्रभावहीन नहीं बनाती अपितु मौखिक अभिव्यक्ति को भी प्रभावित करती है। अशुद्ध बर्तनी से हमारा उच्चारण अशुद्ध होता है और उच्चारण अशुद्ध होने से मौखिक अभिव्यक्ति हास्यास्पद बन जाती है।

हिंदी भाषा का स्वरूप बड़ा वैज्ञानिक है। हिंदी को जैसा बोलते हैं, वैसा ही लिखते हैं और जैसा लिखते हैं वैसा ही बोलते हैं। अर्थात हिंदी भाषा में उच्चारण और वर्तनी एक-दूसरे पर पूर्ण निर्भर हैं। एक की अशुद्धि से दूसरा अपने आप अशुद्ध हो जाता है। इसलिए हिंदी भाषा-शिक्षण में वर्तनी की शिक्षा का बहुत महत्त्व है।

हिंदी ध्वनि-प्रधान भाषा है। प्रत्येक ध्वनि के लिए अलग-अलग लिपि-चिह्न हैं। हर ध्वनि का वर्ण निश्चित है। यदि हर वर्ण के रूप को बच्चे के स्मृति-पटल पर अंकित कर दिया जाए तो अक्षर-विन्यास संबंधी त्रुटियाँ नहीं होंगी। इसीलिए ध्वनियों का ज्ञान पूरी तरह से कराने के लिए यह जरूरी है कि उच्चारण की शिक्षा के साथ-साथ बर्तनी की शिक्षा भी दी जाए। इससे ध्वनियों के मौखिक रूप के साथ-साथ लिखित रूप पर भी बच्चों का पूर्ण अधिकार हो जाएगा और उनकी अभिव्यक्ति सशक्त एवं प्रभावशाली बन सकेगी।

हिंदी में अक्षर-विन्यास संबंधी त्रुटियाँ (Spelling Errors in Hindi)—वैसे तो देवनागरी लिपि की वर्णमाला ध्वनियों पर आधारित है, अत: हिंदी भाषा में अक्षर-विन्यास की त्रुटियाँ होने की संभावना कम होनी चाहिए, परंतु फिर भी कक्षा में छात्रों के लेखन में निम्न प्रकार की अक्षर-विन्यास संबंधी त्रुटियाँ पाई जाती हैं :

1. मात्रा संबंधी अशुद्धियाँ—हिंदी भाषा में शब्दों में ह्रस्व एवं दीर्घ दो प्रकार की मात्राओं का प्रयोग होता है। यदि छात्र इन मात्राओं को उनके निश्चित स्थान पर नहीं लगाते तो मात्रा संबंधी अशुद्धि हो जाती है। मात्रा संबंधी ये अशुद्धियाँ निम्न प्रकार की पाई जाती हैं :

(क) ह्रस्व एवं दीर्घ मात्राओं का अशुद्ध प्रयोग, जैसे—परंतू (परंतु), प्रभू (प्रभु), भक्ती (भक्ति), कवी (कवि), कुरुप (कुरूप), अराम (आराम)आदि।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation;Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ख) अनावश्यक मात्राएँ लगाना, जैसे प्रदर्शिनी (प्रदर्शनी)।

(ग) मात्राओं का लोप, जैसे—मधर (मधुर), मालन (मालिन), अशीर्वाद (आशीर्वाद)।

(घ) मात्राओं के स्थान में परिवर्तन, जैसे—कवियत्री (कवयित्री), पश्चीम (पश्चिम) आदि।

(ङ) ए तथा ऐ का अशुद्ध प्रयोग, जैसे—लिऐ (लिए), चाहिऐ, (चाहिए) आदि।

(च) ए तथा ये का अशुद्ध प्रयोग, जैसे—चाहिये (चाहिए), गये (गए) आदि।

(छ) ई तथा यी का अशुद्ध प्रयोग, जैसे—खायी (खाई), रायी (राई), भायी (भाई) आदि।

(ज) आ तथा वा का अशुद्ध प्रयोग जैसे—हुवा (हुआ), जावेगा (जाएगा)।

2. ऋ तथा रि, एवं र और अर की अशुद्धियाँ, जैसे—रिषि (ऋषि), रिण (ऋण), पूरण, (पूर्ण), द्रश्य (दृश्य), गिरह (गृह), परयोग (प्रयोग) आदि।

3. वर्णों का लोप, जैसे—उदेश्य (उद्देश्य), अध्यन (अध्ययन), स्वाधाय (स्वाध्याय)।

4. वर्णों का अनावश्यक प्रयोग, जैसे—तुम्हने (तुमने), सनान (स्नान), यतन (यत्न), राजेंदर (राजेंद्र), इस्नान (स्नान) आदि।

5. वर्णों के स्थान में परिवर्तन, जैसे—षुसमा (सुषमा), विषेश (विशेष), आर्दश (आदर्श), आदि।

6. न और ण की अशुद्धियाँ, जैसे—गुन (गुण), शरन (शरण), रनभूमि (रणभूमि), पाणी (पानी) आदि।

7. क्ष और छ की अशुद्धियाँ, जैसे—छमा (क्षमा), परीछा (परीक्षा), लछमन (लक्ष्मण) आदि।

8. व और ब की अशुद्धि, जैसे—बिद्या (विद्या), बन (वन), वनना (बनना), वसंत (बसंत), बिधाता (विधाता) आदि।

9. श और ष की अशुद्धि, जैसे—भाशा (भाषा), कश्ट (कष्ट), उपदेष (उपदेश), शरोज (सरोज), पुरुश (पुरुष) आदि।

10. 'स' की अशुद्धियाँ, जैसे—रासता (रास्ता), निससहाय (निस्सहाय) आदि।

11. ष और ख की अशुद्धि, जैसे—पुरुख (पुरुष), बरखा (वर्षा) आदि।

12. अनुस्वार की अशुद्धियाँ, इसमें भी कई प्रकार की त्रुटियाँ होती हैं। जैसे—अनुस्वार का स्थान परिवर्तन सतं (संत), या अनुस्वार का लोप—गगा (गंगा) एवं अनुस्वार के स्थान पर चंद्रबिंदु और चंद्रबिंदु के स्थान पर अनुस्वार, जैसे—आंख (आँख), चांद (चाँद), हंसी (हँसी) आदि।

13. ड, ड़ तथा ढ, ढ़ का अशुद्ध प्रयोग, जैसे—ड़लिया (डलिया), पडा (पड़ा), पढना (पढ़ना), ढ़कना (ढकना) आदि।

14. संयुक्त वर्णों की अशुद्धियाँ, जैसे—चिन्ह (चिह्न), प्रहलाद (प्रह्लाद), पुत्तर (पुत्र) आदि।

15. विसर्ग का लोप जैसे—दुख (दुःख) अंतसाक्ष्य (अंतःसाक्ष्य), प्राय (प्रायः), अधपतन (अधःपतन) आदि।

16. शिरोरेखा का अशुद्ध प्रयोग, जैसे—घबराना (घबराना), मारतभाता (भारतमाता), भाला (माला), माला (भाला), या अभाव जैसे—कभलनयन (कमलनयन), ररवना (रखना) आदि।

17. अल्पप्राण एवं महाप्राण की त्रुटि, जैसे—गर (घर), बास्कर (भास्कर), प्रबात (प्रभात) आदि।

18. अनुस्वार एवं अनुनासिक का अशुद्ध प्रयोग, जैसे—अहिन्सा (अहिंसा), अन्क (अंक), झन्डा (झंडा) आदि।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अक्षर-विन्यास संबंधी इन अशुद्धियों के अलावा छात्र संधि, समास, विभक्ति, लिंग एवं वचन संबंधी अन्य कई त्रुटियाँ भी करते हैं। अध्यापक का कर्तव्य है कि कक्षा में पढ़ाते समय छात्रों की उन अशुद्धियों को पहचानने, उनके कारणों का पता लगाए और उन्हें दूर करने के प्रयास करे।

अक्षर-विन्यास की अशुद्धियों के कारण (Causes of Spelling Errors)

बच्चे लिखित-कार्य करते समय अक्षर-विन्यास संबंधी विभिन्न प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं। इनके बहुत-से कारण होते हैं। मुख्य कारण निम्नलिखित हैं :

1. लिपि का अपूर्ण ज्ञान—यदि बच्चों को देवनागरी लिपि का पूर्ण ज्ञान नहीं होता है तो वे अक्षर-विन्यास संबंधी विभिन्न त्रुटियाँ करते हैं। व और ब, ड और ड़, ढ और ढ़, अनुस्वार और चंद्रबिंदु, स, श, ष, रेफ संबंधी तथा अन्य विभिन्न प्रकार की त्रुटियों का मुख्य कारण लिपि का अपूर्ण ज्ञान है।

2. मात्राओं का अपूर्ण ज्ञान—लिपि के साथ ध्वनियों का ज्ञान कराते समय यदि बच्चों को यह न समझाया जाए कि प्रत्येक व्यंजन के साथ विभिन्न स्वर किस प्रकार से मिलते हैं, उन्हें अलग-अलग कैसे लिखा जाता है, तो वे मात्राओं का शुद्ध प्रयोग नहीं कर पाते हैं। परंतु को परन्तू और रश्मि को रश्मी जैसी त्रुटियाँ इसी कारण से होती हैं।

3. अशुद्ध उच्चारण—हिंदी भाषा ध्वनिप्रधान वैज्ञानिक भाषा है। इसे जैसा बोलते हैं वैसा ही लिखते हैं। इसमें प्रत्येक ध्वनि के लिए अलग-अलग वर्ण हैं। यदि बच्चे में उच्चारण-दोष होता है तो उसकी वर्तनी भी अशुद्ध हो जाती है।

4. असावधानी—यदि लिखते समय बच्चे का ध्यान कहीं और है, तो अक्षर-विन्यास संबंधी कई त्रुटियाँ हो जाती हैं। वर्णलोप, स्थान-परिवर्तन, मात्राओं की अशुद्धियाँ आदि विभिन्न दोष प्रायः इसी कारण से होते हैं। बच्चे की थोड़ी-सी असावधानी से 'म' का 'भ' या 'भ' का 'म' हो जाता है।

5. अतिशीघ्रता—असावधानी की तरह अतिशीघ्रता से भी लिपि का पूर्ण ज्ञान होते हुए भी अक्षर-विन्यास की त्रुटियाँ हो जाती हैं। अतिशीघ्रता में ड़ का ड, ढ़ का ढ, ब का व शिरोरेखा का अभाव, हलंत का अभाव, बिंदु का स्थान-परिवर्तन, वर्णलोप आदि त्रुटियाँ होना स्वाभाविक ही है।

6. व्याकरण का अपूर्ण ज्ञान—यदि बच्चों को व्याकरण संबंधी नियमों का पूर्ण ज्ञान नहीं होता है तब भी अक्षर-विन्यास संबंधी बहुत-सी त्रुटियाँ हो जाती हैं। जैसे—व्याकरण का नियम है कि विसर्ग के पश्चात ट आने पर विसर्ग का ष् हो जाता है कः + ट्-कष्ट। इसकी जानकारी न होने के कारण ही छात्र कष्ट का कश्ट लिख देते हैं। एकवचन से बहुवचन बनाने पर इकरांत व उकरांत शब्दों में दीर्घ ई या ऊ क्रमशः ह्रस्व इ या उ हो जाते हैं। इस नियम का ज्ञान न होने के कारण ही लड़कियाँ को लड़कीयाँ या वस्तुएँ को वस्तूएँ या बधुएँ को बधूएँ लिख देते हैं।

7. अध्यापक की अयोग्यता—भाषा तो अनुकरण से सीखी जाती है। छात्र तो अध्यापक का अनुकरण करते हैं। यदि अध्यापक श्यामपट्ट पर लेखन-कार्य करते समय अशुद्ध लिखता है तो छात्र भी वैसा ही लिखने लगते हैं।

8. अध्यापक द्वारा मार्गदर्शन का अभाव—छात्रों के लेखन-कार्य की जाँच करते समय यदि अध्यापक उनके लिखित कार्य में हुई अशुद्धियों को चिह्नित नहीं करते और उनको ठीक करने के बारे में छात्रों का मार्गदर्शन नहीं करते हैं तो छात्र उसी प्रकार से अशुद्ध लिखते रहते हैं।

9. लेखन-कार्य का अभाव—बहुत-से अध्यापक संशोधन कार्य को अतिरिक्त बोझा मानकर इससे बचने के लिए छात्रों से लेखन-कार्य बहुत कम कराते हैं। अतः छात्रों को लिखने का अवसर ही नहीं मिल पाता है और यदि कभी लिखना पड़ता है तो विभिन्न प्रकार की अशुद्धियाँ होती रहती हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

10. संशोधन अभ्यास का अभाव—वैसे तो संशोधन कार्य ही सावधानीपूर्वक नहीं होता है और यदि अध्यापक छात्रों के लिखित कार्य का संशोधन सावधानीपूर्वक करते भी हैं और उनकी त्रुटियों को चिह्नित कर भी देते हैं तो छात्र उनके शुद्ध रूप का अभ्यास करने से कतराते हैं। अत: एक बार हुई वर्तनी की त्रुटियाँ प्राय: बार-बार होती रहती हैं।

11. प्रांतीयता का प्रभाव—प्रांतीय भाषा के प्रभाव के कारण उच्चारण संबंधी त्रुटियाँ तो होती ही हैं, इनका प्रभाव छात्रों की वर्तनी पर भी पड़ता है। यदि राजिंदर बोलते हैं तो राजिंदर ही लिखते हैं। इसी प्रकार पानी को पाणी बोलेंगे या पाषाण को पाषान बोलेंगे तो पाणी और पाषान ही लिखेंगे। इस प्रकार पंजाबी, राजस्थानी, बंगाली आदि प्रांतीय भाषाओं के प्रभाव के कारण अक्षर-विन्यास की त्रुटियाँ होती रहती हैं।

12. सांवेगिक कारण—कई बार किसी विशेष कारण से मानसिक रूप से अस्वस्थ होने या सांवेगिक तनाव होने की स्थिति में लिखते समय संतुलन नहीं रह पाता है और वर्तनी की अशुद्धियाँ हो जाती हैं।

13. बौद्धिक न्यूनता—ध्वनिप्रतीक लिपि-चिह्न छात्रों के स्मृति-पटल पर अंकित हो जाते हैं और छात्र उन्हें अपनी स्मृति के आधार पर शुद्ध रूप में लिखता रहता है, परंतु यदि किसी छात्र में बौद्धिक न्यूनता है अर्थात उसकी धारणा, प्रत्यास्मरण एवं प्रत्यभिज्ञान शक्ति कमजोर है तो शुद्ध रूप सीख लेने के पश्चात भी छात्र उसे अपनी स्मृति में धारण नहीं कर पाता है और वर्तनी की भूलें करता रहता है।

14. शारीरिक दोष—शरीर में किसी प्रकार का विकार होने पर भी अशुद्ध वर्तनी का प्रयोग होता है। जैसे—श्रवणेंद्रिय कमजोर होने पर ठीक से न सुनने के कारण कुछ-का-कुछ लिखते हैं तथा नेत्रेंद्रिय कमजोर होने पर साफ-साफ न देख पाने के कारण अशुद्ध लिखते हैं।

अक्षर-विन्यास या वर्तनी की अशुद्धियों को दूर करने के उपाय
(Measures for removing Spelling Errors)

अक्षर-विन्यास की अशुद्धियाँ छात्रों की लिखित अभिव्यक्ति को प्रभावहीन बना देती हैं। अतः अध्यापक का कर्तव्य है कि बच्चों में होनेवाली अक्षर-विन्यास की अशुद्धियों और उनके कारणों का पता लगाए तथा उनको दूर करने के लिए यथासंभव प्रयास करे। वर्तनी संबंधी अशुद्धियों को दूर करने के लिए अध्यापक निम्न उपाय कर सकता है :

1. लिपि का पूर्ण ज्ञान—अक्षर-विन्यास की त्रुटियों को दूर करने के लिए छात्रों को लिपि का पूर्ण व स्पष्ट ज्ञान देना आवश्यक है। वैसे तो देवनागरी लिपि वैज्ञानिक है, प्रत्येक ध्वनि के लिए अलग-अलग वर्ण हैं, परंतु इसकी कुछ विशेषताएँ भी हैं, जैसे ह्रस्व इ की मात्रा व्यंजन के पहले 'ि' लगती है और दीर्घ ई की मात्रा व्यंजन के बाद में 'ी' लगती है। इसी प्रकार उ की मात्रा व्यंजनों के नीचे 'ु' लगती है परंतु यही मात्रा र में बीच में (रु, रू) लगती है। इसी प्रकार रेफ (र्) का प्रयोग कई प्रकार से होता है। इन सबका पूर्ण ज्ञान कराना चाहिए।

2. बारहखड़ी का अभ्यास—मात्राओं का शुद्ध प्रयोग सिखाने के लिए हर व्यंजन के साथ सभी स्वरों की मात्रा लगाकर उनका अभ्यास कराना चाहिए, जैसे—

क, का, कि, की, कु, कू, के, कै, को, कौ, कं, कः।

इससे बच्चों को प्रत्येक मात्रा का ठीक-ठीक प्रयोग करना आता है।

3. व्याकरण का पूर्ण ज्ञान—छात्रों को व्याकरण के सभी नियमों जैसे—एकवचन से बहुवचन बनाने, लिंग-परिवर्तन करने, संधि, अनुस्वार, चंद्रबिंदु, उपसर्ग, प्रत्यय, कारक विभक्तियाँ आदि का पूर्ण व स्पष्ट ज्ञान कराना चाहिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4. शुद्ध उच्चारण की शिक्षा—शुद्ध उच्चारण लेखन का आधार है, अतः छात्रों को शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराना चाहिए। उच्चारण में शुद्धता आते ही बहुत-सी वर्तनी संबंधी त्रुटियाँ तो अपने आप ही दूर हो जाती हैं।

5. लिखने का अभ्यास—छात्रों को लिखने का अभ्यास अधिक-से-अधिक कराना चाहिए। बच्चे जितना अधिक लिखित कार्य करेंगे उतना ही शुद्ध वर्तनी का अभ्यास हो सकेगा।

6. लिखित कार्य का संशोधन—छात्र जो भी लिखित कार्य करें, अध्यापक को उसका संशोधन सावधानीपूर्वक करना चाहिए। विपरीत रंग की स्याही का प्रयोग कर छात्रों की वर्तनी संबंधी त्रुटियों को चिह्नित करना चाहिए और उनके शुद्ध रूप को पाँच या दस बार लिखवाकर उसका अभ्यास कराना चाहिए।

7. सावधानीपूर्वक लिखने की आदत डालना—यदि बच्चे सावधान होकर लिखेंगे तो वर्तनी संबंधी त्रुटियाँ बहुत-कुछ स्वयमेव ही दूर हो जाएँगी।

8. तीव्र गति से लिखने का अभ्यास कराना—छात्रों को परीक्षा-भवन आदि में कम समय में अधिक लिखना पड़ता है, अतः उन्हें पहले से ही तीव्र गति से लिखने का अभ्यास कराना चाहिए, क्योंकि गति तीव्र होने पर, जल्दी-जल्दी लिखने पर उनकी वर्तनी की त्रुटियाँ नहीं होंगी। इसके लिए छात्रों को सुलेख, अनुलिपि, प्रतिलिपि एवं श्रुतिलिपि का अभ्यास कराना चाहिए।

9. वाचन का अभ्यास—छात्रों को सस्वर एवं मौन वाचन का अधिक-से-अधिक अभ्यास कराना चाहिए। वाचन से छात्र वर्तनी के शुद्ध रूप को पुस्तकों में देखते हैं और वे शुद्ध रूप उनके मानस-पटल पर अंकित हो जाते हैं तथा लिखते समय प्रत्यास्मरण द्वारा उस शुद्ध वर्तनी का प्रयोग वे आसानी से कर लेते हैं।

10. अध्यापक का शुद्ध लेखन—अध्यापक छात्रों का आदर्श होता है। वे अध्यापक के व्यवहार का पूरी तरह से अनुकरण करते हैं। अतः अध्यापक को लिखते समय बहुत सावधान रहना चाहिए और श्यामपट्ट पर या छात्रों की उत्तर-पुस्तिकाओं पर शुद्ध वर्तनी का प्रयोग करना चाहिए।

11. शब्दकोश का प्रयोग—छात्रों को शुद्ध वर्तनी का ज्ञान कराने के लिए अध्यापक को चाहिए कि वह उन्हें शब्दकोश का प्रयोग करने के लिए प्रेरित करे। शब्दकोश को पढ़ने से छात्रों को नए-नए शब्दों का ज्ञान होगा, उनका शब्द-भंडार बढ़ेगा और वे शुद्ध अक्षर-विन्यास का अभ्यास कर सकेंगे।

12. विश्लेषण विधि का प्रयोग—हिंदी भाषा के शब्द-भंडार में बहुत-से शब्द ऐसे हैं जिनकी वर्तनी छात्रों के लिए कठिन होती है। शब्दों का निर्माण भी विभिन्न प्रकार से होता है। अतः उनको सरलीकृत रूप में सिखाने के लिए उन शब्दों का विश्लेषण कर, उनकी वर्तनी की शिक्षा देनी चाहिए अर्थात शब्दों को अलग-अलग खंडों में विभाजित कर, उनका अभ्यास कराना चाहिए।

13. शब्द-पुस्तिकाएँ बनवाना—छात्रों के शब्दकोश में वृद्धि करने के लिए उनको शब्द-पुस्तिकाएँ बनाने के लिए प्रेरित करना चाहिए। इनमें छात्रों को उन शब्दों को लिखने के लिए कहना चाहिए जिनकी वर्तनी छात्र प्रायः अशुद्ध करते हैं। अधिक-से-अधिक शुद्ध वर्तनी का संग्रह करनेवाले छात्रों को पुरस्कृत कर प्रेरित भी किया जा सकता है।

14. शारीरिक उपचार—यदि किसी छात्र में श्रवण या नेत्र संबंधी कोई दोष हो, तो विद्यालय की तरफ से या फिर छात्रों के माता-पिता को सूचित कर उनका उपचार कराना चाहिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

15. अध्यापक का व्यवहार—छात्रों को शुद्ध लिखने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए अध्यापक को छात्रों के साथ प्रेम एवं सहानुभूतिपूर्ण तथा प्रोत्साहजनक व्यवहार करना चाहिए।

16. व्यक्तिगत ध्यान देना—कक्षा में कुछ छात्र वर्तनी में विशेष रूप से कमजोर होते हैं। ऐसे छात्रों की तरफ अध्यापक को व्यक्तिगत ध्यान देना चाहिए। उनकी वर्तनी संबंधी व्यक्तिगत कठिनाइयों को जानकर अलग से उन्हें स्पष्ट करना चाहिए तथा उनके शुद्ध रूप का अभ्यास कराना चाहिए।

17. सामान्य त्रुटियों को सामूहिक रूप से समझाना—वर्तनी संबंधी जो त्रुटियाँ प्राय: बहुत से छात्र करते रहते हैं, उनको अलग से छाँट लेना चाहिए और उनकी एक सूची बनाकर उन्हें अलग-अलग वर्गों में बाँट लेना चाहिए तथा कक्षा में श्यामपट्ट का प्रयोग करते हुए उन त्रुटियों को स्पष्ट करना चाहिए और उनका शुद्ध रूप लिखना चाहिए तथा सामूहिक रूप से सभी छात्रों को उसका अभ्यास कराना चाहिए।

18. खेल विधि का प्रयोग—अक्षर-विन्यास की शिक्षा देने के लिए अध्यापक छोटी कक्षा के छात्रों के लिए खेल विधि का प्रयोग भी कर सकता है। छात्रों को दो समूहों में बाँटकर अक्षर-विन्यास संबंधी विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन कर वर्तनी संबंधी अशुद्धियों को दूर किया जा सकता है। जैसे—

(i) दोनों समूह के छात्रों में से एक-एक को बुलाकर श्यामपट्ट पर बारी-बारी से कुछ शब्द लिखवाए जाएँ और अधिक शब्दों को शुद्ध लिखनेवाले को विजयी घोषित किया जाए।

(ii) शब्दों की लिखित अंत्याक्षरी कराई जाए। छात्रों के दो समूह बनाकर बारी-बारी से एक समूह के छात्र को बुलाकर श्यामपट्ट पर शब्द लिखवाया जाए, फिर लिखे हुए शब्द के अंतिम वर्ण से प्रारंभ होनेवाला कोई शब्द दूसरे समूह के छात्र से लिखवाया जाए।

(iii) शब्दों के वर्णों का क्रम बदलकर श्यामपट्ट पर लिखा जाए और छात्रों से उचित क्रम में वर्णों को व्यवस्थित कर शब्द लिखने को कहा जाए।

(iv) शब्दों के बीच में से वर्ण हटाकर छात्रों से रिक्त स्थान पूर्ति करने को कहा जाए। जैसे—क.....त्री, प्र....नी (कवयित्री, प्रदर्शनी) आदि।

(v) छात्रों को कुछ शब्द दिखाए जाएँ फिर उन्हें हटाकर छात्रों से उन शब्दों को लिखने को कहा जाए।

(vi) श्यामपट्ट पर कुछ वर्ण लिखकर उनकी सहायता से शब्द बनाने के लिए कहा जाए।

इस प्रकार उपर्युक्त उपायों का प्रयोग कर अध्यापक छात्रों की वर्तनी संबंधी त्रुटियों को दूर कर उन्हें शुद्ध लिखने का अभ्यास कर सकता है।

अध्ययन के लिए प्रश्न

1. अक्षर-विन्यास या वर्तनी की त्रुटियों से क्या अभिप्राय: है ? हिंदी भाषा में किस प्रकार की वर्तनी त्रुटियाँ पाई जाती हैं ? विस्तार से वर्णन कीजिए।

2. हिंदी भाषा में अक्षर विन्यास या वर्तनी संबंधी त्रुटियों के लिए उत्तरदायी कारणों की चर्चा कीजिए।

3. हिंदी भाषा में पाई जानेवाली अक्षर-विन्यास या वर्तनी संबंधी त्रुटियों पर प्रकाश डालते हुए इन्हें दूर करने के उपायों की चर्चा कीजिए।

4. आपने शिक्षण अभ्यास के दौरान विद्यार्थियों को हिंदी भाषा में किस प्रकार की अशुद्धियाँ करते हुए देखा है ? इनके निराकरण के लिए क्या कुछ किया जा सकता है ?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

8

हिंदी शब्द-स्रोत, रचना एवं शिक्षण

(Hindi Words-Sources, Composition and Teaching)

शब्द और शब्द-भंडार (Words and Vocabulary)

भाषा की इकाई वाक्य है और वाक्य की इकाई शब्द है। शब्द एक या एक से अधिक वर्णों के मेल से बनी हुई वह सार्थक ध्वनि है जो अपने स्वतंत्र रूप में या किसी वाक्य में प्रयुक्त होने से एक निश्चित अर्थ का बोध कराती है। जिस भाषा का शब्द-भंडार जितना सशक्त एवं समृद्ध होता है वह भाषा भी उतनी ही समृद्धिशाली एवं प्रभावयुक्त होती है। हिंदी भाषा का शब्द-भंडार बहुत ही सशक्त, समृद्ध एवं व्यापक है। इन शब्दों के विभिन्न स्रोतों तथा रचना आदि के आधार पर भाषा-वैज्ञानिकों ने हिंदी के शब्द-भंडार को कई वर्गों में विभाजित किया है।

हिंदी शब्दों का वर्गीकरण (Classification of Hindi Words)

हिंदी शब्दों के वर्गीकरण के कई आधार हैं जो निम्नलिखित हैं :

अर्थ के आधार पर, उत्पत्ति के आधार पर, प्रयोग के आधार पर एवं व्युत्पत्ति के आधार पर।

(क) अर्थ के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण (Classification based on the meaning of the words)—सामान्य रूप से अर्थ के आधार पर शब्द के दो भेद होते हैं :

(i) सार्थक शब्द (Meaningful words)—वे शब्द जिनका कुछ-न-कुछ अर्थ होता है, सार्थक कहलाते हैं। हिंदी भाषा में इन्हीं शब्दों का महत्त्व होता है।

(ii) निरर्थक शब्द (Meaningless words)—निरर्थक शब्द वे शब्द है जिनका कोई अर्थ नहीं होता है। साहित्यिक भाषा का ऐसे शब्दों से कोई संबंध नहीं होता है।

हिंदी भाषा के शब्द-भंडार में जितने भी शब्द हैं उनमें से कई शब्द तो एक ही निश्चित अर्थ का बोध कराते हैं और कई शब्द अलग-अलग स्थिति में अलग-अलग अर्थ का बोध कराते हैं। अर्थ की इस भिन्नता का मूल कारण शब्द-शक्तियाँ होती हैं। शब्द-शक्तियाँ तीन होती हैं—अभिधा, लक्षणा तथा व्यंजना। ये शब्द-शक्तियाँ एक शब्द के भिन्न-भिन्न अर्थों का बोध कराती हैं।

एक ही शब्द के अर्थ में इस अंतर के आधार पर शब्दों को तीन भागों में बाँटा जा सकता है :

(i) वाचक शब्द—जब शब्द का केवल वाच्यार्थ निकलता है तो उसे वाचक शब्द कहते हैं। जैसे—मोहन ने गाय पाल रखी है। इस वाक्य में 'गाय' शब्द से पशु विशेष का बोध होता है, अत: गाय यहाँ वाचक शब्द है। अभिधा शब्द-शक्ति शब्द के वाच्ययार्थ का बोध कराती है।

(ii) लाक्षणिक शब्द—लक्षणा शब्द-शक्ति शब्द के लाक्षणिक अर्थ का बोध कराती है और लाक्षणिक अर्थ का बोध करानेवाले शब्द को लाक्षणिक शब्द कहा जाता है। जैसे—उसकी बेटी तो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
बिलकुल गाय है। इस वाक्य में गाय शब्द पशु-विशेष का नहीं परंतु पशु के गुण सीधेपन का बोध कराता है। यहाँ गाय शब्द लाक्षणिक शब्द है।

(iii) व्यंजक शब्द—व्यंजना शब्द-शक्ति शब्द के किसी अन्य व्यंग्यार्थ का बोध कराती है और ऐसे व्यंग्यार्थ का बोध करानेवाले शब्दों को व्यंजक शब्द कहा जाता है। जैसे—किसी बच्चे को पिटकर आने पर उससे कहा जाए 'वाह मेरे शेर!', तो इस वाक्य में शेर शब्द न तो शेर नामक पशु का और न ही उसके गुण वीरता का बोध करा रहा है वरन उससे बिलकुल विपरीत कायरता का बोध करा रहा है। अतः इस वाक्य में शेर शब्द व्यंजक शब्द है।

(ख) उत्पत्ति के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण—हिंदी भाषा की शब्दावली की उत्पत्ति के अनेक स्रोत हैं। कुछ शब्द संस्कृत भाषा से शुद्ध रूप में ले लिए गए हैं, तो कुछ शब्दों को उनके संस्कृत रूप से थोड़ा बदलकर स्वीकार कर लिया गया है और कुछ शब्द विदेशी भाषाओं से आ गए हैं तो कुछ शब्द दो भाषाओं के मेल से बने हैं। शब्दों की इस उत्पत्ति या स्रोत के आधार पर शब्दों को निम्न भागों में बाँटा जा सकता है :

(i) तत्सम शब्द—जो शब्द संस्कृत भाषा से उसी रूप में ग्रहण कर लिए गए हैं वे तत्सम शब्द कहलाते हैं। जैसे—जल, गगन, पवन, अग्नि, गृह आदि।

(ii) तद्भव शब्द—जो शब्द संस्कृत भाषा से कुछ परिवर्तन के साथ हिंदी भाषा में ग्रहण किए गए हैं उन्हें तद्भव शब्द कहते हैं। जैसे—हाथ (हस्त), घी (घृत), पत्थर (प्रस्तर), जीभ (जिह्वा), कान (कर्ण) आदि।

(iii) देशज शब्द—जो शब्द हिंदी में अपने देश की अन्य भाषाओं से लिए गए हैं उन्हें देशज शब्द कहा जाता है। जैसे—चालू, बाजू (मराठी से), उपन्यास, नितांत (बँगला से), इसी प्रकार चिड़िया, गाड़ी, खिड़की आदि शब्द भी देशज शब्द हैं।

(iv) विदेशी शब्द—विदेशी भाषाओं से लिए गए शब्द विदेशी शब्द कहलाते हैं। जैसे—स्कूल, स्टेशन, टिकट, पैन आदि अंग्रेजी से, आदमी, किताब, चश्मा, बाजार, इमारत, सिफारिश, औरत आदि उर्दू-फारसी से लिए गए हैं।

(v) द्विज शब्द—वे शब्द जो दो भाषाओं के मेल से बने हैं। जैसे—डबल रोटी (अंग्रेजी + हिंदी) रोशनलाल (उर्दू + हिंदी), अमर उजाला (हिंदी + उर्दू) आदि।

(vi) ध्वन्यानुकरण शब्द—वे शब्द जो पशु-पक्षियों की बोलियों या पदार्थों की ध्वनि के अनुकरण से बने हैं। जैसे—टर-टर, चीं-चीं, भौं-भौं, म्याऊँ-म्याऊँ, काँव-काँव, टप-टप, खट-खट, गप-गप, चपर-चपर आदि।

(ग) प्रयोग के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण—जब शब्दों को वाक्यों में प्रयुक्त किया जाता है तो कुछ शब्द वाक्य की आवश्यकता के अनुसार अपने रूप को बदल लेते हैं कुछ नहीं। इस आधार पर शब्दों के दो भेद होते हैं :

(i) विकारी शब्द—जो शब्द वाक्य में अर्थानुसार या लिंग, वचन एवं कारक आदि के अनुसार अपने रूप को बदल लेते हैं उन्हें विकारी शब्द कहा जाता है। संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया और विशेषण शब्द विकारी होते हैं। जैसे—मैं पुस्तक पढ़ रही हूँ। इसी वाक्य को यदि लिंग बदलकर कहा जाए तो 'मैं पुस्तक पढ़ रहा हूँ' और यदि वचन बदलकर कहा जाए तो 'हम सब पुस्तकें पढ़ रहे हैं' रूप होगा।

(ii) अविकारी शब्द—जो शब्द किसी भी अवस्था में अपने रूप को नहीं बदलते हैं उन्हें अविकारी शब्द कहा जाता है। जैसे—धीरे-धीरे, किंतु, और, अरे, हाँ आदि। क्रिया-विशेषण, संबंधबोधक,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
समुच्चयबोधक एवं विस्मयादिबोधक शब्द अविकारी शब्द होते हैं।

(घ) व्युत्पत्ति के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण—व्युत्पत्ति से अभिप्राय शब्द-रचना प्रक्रिया से है। अर्थात शब्द का मूल रूप क्या था और बाद में किस प्रकार से शब्द-विशेष का निर्माण हुआ, इसे ही शब्द-व्युत्पत्ति कहते हैं। इस आधार पर शब्दों के निम्न भेद हैं :

(i) रूढ़ शब्द—वे शब्द जिनके खंड नहीं किए जा सकें रूढ़ शब्द कहलाते हैं। जैसे—शेर, हाथ, पैर, गेंदा, मुँह आदि।

(ii) यौगिक शब्द—जो शब्द दो या दो से अधिक शब्दों या शब्दांशों के मेल से बने हैं और जिनमें हर शब्दांश का पृथक अर्थ होता है उन्हें यौगिक शब्द कहते हैं। जैसे—पीतांबर, हिमालय, सुव्यवस्था, गणेश आदि।

(iii) योगरूढ़ शब्द—वे शब्द जो दो या अधिक शब्दों या शब्दांशों के मेल से बने हैं परंतु जिनका अर्थ रूढ़ हो गया है अर्थात जो अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर विशेष अर्थ को प्रकट करते हैं, योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं। जैसे—लंबोदर (लंबा + उदर), इस शब्द में दोनों शब्द अपने सामान्य अर्थ को बताकर एक विशेष अर्थ गणेश जी का बोध करा रहे हैं अत: लंबोदर शब्द योगरूढ़ शब्द है।

इस प्रकार उपर्युक्त विभिन्न तरीकों से हम हिंदी भाषा के शब्दों का वर्गीकरण कर सकते हैं। इस वर्गीकरण को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि हिंदी का शब्द-स्रोत अक्षुण्ण है। हिंदी भाषा का जन्म संस्कृत से हुआ है। अत: संस्कृत से हिंदी भाषा ने अगणित शब्द ग्रहण किए हैं। संस्कृत भाषा में एक धातु में प्रत्यय आदि के योग से एक शब्द के अनेक शब्द बन जाते हैं जैसे—पठ् धातु से पाठक, पठनीय, पठितव्य, पाठ्य, सुपाठ्य, पठन, पठति एवं पठामि आदि और यही संस्कृत हिंदी भाषा का मूल स्रोत है। अत: हिंदी भाषा की शब्दावली भी असीमित है। केवल संस्कृत ही नहीं हिंदी तो अन्य सभी देशी-विदेशी भाषाओं से भी शब्दों को उसी रूप में या कुछ परिवर्तन के साथ ग्रहण करती रही है। जैसे—स्कूल, स्टेशन अंग्रेजी से उसी रूप में तो अस्पताल (हास्पिटल) कुछ परिवर्तन के साथ हिंदी भाषा के शब्द-भंडार का अंग बन चुका है। इस प्रकार से हिंदी भाषा का शब्द-भंडार-स्रोत असीमित है।

हिंदी भाषा के शब्दों की रचना
(Composition of Hindi Words)

हिंदी शब्द-रचना से तात्पर्य (Meaning of the term Composition of Hindi Words)

हिंदी भाषा का शब्द-भंडार असीमित है। इसका मूल स्रोत संस्कृत भाषा है। अत: एक ओर हिंदी संस्कृत भाषा से प्रभावित होती रही है तो दूसरी ओर अपनी समकालीन विभिन्न देशी-विदेशी भाषाओं के प्रभाव से अपने भंडार को विकसित करती रही है। विभिन्न भाषाओं के शब्द इसमें इस तरह से घुल-मिल गए हैं कि वे आज किसी अन्य भाषा के शब्द न लगकर हिंदी भाषा के शब्द ही प्रतीत होते हैं। जैसे स्कूल, स्टेशन, अब अंग्रेजी के न लगकर हिंदी भाषा के शब्द ही लगने लगे हैं। कुछ शब्द संस्कृत के मूलरूप में आ गए हैं, तो कुछ थोड़े-से परिवर्तन के साथ हिंदी शब्द-भंडार का अंग बन गए हैं। हिंदी भाषा के शब्दों के वर्गीकरण में हमने देखा कि हिंदी के कुछ शब्द तो हर स्थिति में अपने एक ही रूप में स्थायी रहते हैं तो कुछ शब्द कर्त्ता, लिंग, वचन के अनुसार अपने रूप को बदलते रहते हैं। एक ही शब्द विभिन्न प्रकार के अन्य शब्दों या शब्दांशों के साथ मिलकर अलग-अलग रूप धारण कर लेता है। इस प्रकार विभिन्न शब्दों या शब्दांशों के योग से नए-नए शब्दों का निर्माण होता रहता है। इसे ही हिंदी शब्द-रचना कहते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिंदी शब्द-रचना की विधियाँ (Methods of Hindi Words Composition)

हिंदी शब्द-रचना की चार मुख्य विधियाँ हैं :

(क) उपसर्गों के योग से शब्द-रचना अर्थात शब्दों के पूर्व शब्दांश लगाने से।

(ख) प्रत्ययों के योग से शब्द-रचना अर्थात शब्दों के पीछे शब्दांश लगाने से।

(ग) दो या दो से अधिक शब्दों या शब्दांशों के योग से अर्थात-संधि द्वारा।

(घ) दो या दो से अधिक शब्दों के योग से अर्थात समास द्वारा।

(क) उपसर्ग के योग से शब्द-रचना—जो शब्दांश शब्द से पूर्व लगकर उस शब्द के अर्थ में विशेष परिवर्तन कर देते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं। जैसे—'कार' शब्द के पहले उप शब्दांश लगकर 'उपकार' शब्द बना है, जिसका अर्थ कार या उप से सर्वथा भिन्न है।

हिंदी शब्द-रचना में मूलतः संस्कृत के उपसर्गों का प्रयोग होता है। कुछ उपसर्ग हिंदी भाषा के अपने हैं परंतु वे संस्कृत के ही अपभ्रंश रूप हैं और इनका प्रयोग तद्भव शब्दों के पहले होता है। कुछ उपसर्ग उर्दू भाषा से भी लिए गए हैं। कुछ अव्यय एवं विशेषण शब्द भी उपसर्गों की तरह प्रयुक्त होते हैं। कुछ शब्द एक से अधिक उपसर्गों के योग से भी बने हैं।

कुछ उपसर्ग और उनसे बनने वाले शब्दों के उदाहरण दिए जा रहे हैं।

संस्कृत उपसर्गों से बनने वाले शब्द (Hindi Words evolved from Sanskrit Prefixes)

उपसर्ग	अर्थ	शब्द
अप	बुरा, न्यूनता	अपशब्द, अपमान, अपवाद, अपकीर्ति, अपव्यय आदि।
अव	पतन, अनादर, हीनता	अवनत, अवसाद, अवज्ञा, अवगुण आदि।
आ	सीमा, ओर, कमी, सहित	आजन्म, आजीवन, आगमन, आरंभ, आदान आदि।
अति	अधिक	अत्यंत, अत्यधिक, अतिशय, अत्युक्ति, आदि।
अधि	श्रेष्ठता, ऊँचाई	अध्यक्ष, अधिपति, अधिकार, अधिकृत, अधिकरण आदि।
अभि	सामने, चारों ओर	अभिमान, अभिज्ञान, अभिमुख, अभिसार, अभ्यास आदि।
अनु	पश्चात, सदृश	अनुशासन, अनुगमन, अनुभव, अनुरूप, अनुकरण आदि।
उप	छोटा, समीप, सदृश	उपमंत्री, उपाध्यक्ष, उपवन, उपमान, उपासना आदि।
उत्	ऊपर, उत्कर्ष	उद्भव, उत्कर्ष, उद्गम, उत्पत्ति, उत्सव, उत्थान आदि।
दुर	कठिन, बुरा	दुर्बल, दुर्गम, दुराचार, आदि।
दुस्	दुष्टता, कठिनाई	दुष्कर्म, दुश्चरित्र, दुष्कर आदि।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उपसर्ग	अर्थ	शब्द
नि	भीतर, बाहर, नीचे	नियुक्त, निरोग, निमग्न, निवास, निपात, निगम आदि।
निर	रहित, निषेध	निराधार, निर्दोष, निर्मल, निर्भय निर्जीव, निरपराध आदि।
निस्	निषेध	निश्चय, निष्काम, निष्तेज, निष्कपट, निस्तार आदि।
परा	विपरीत, अनादर	पराभव, पराजय, परास्त, पराक्रम आदि।
परि	अधिक, आसपास	परिजन, परिमाण, पर्याप्त, परिपूर्ण आदि।
प्र	यश, उत्कर्ष, अधिक	प्रताप, प्रभाव, प्रबल, प्रस्थान, प्रचार, प्रकाश आदि।
प्रति	समान, प्रत्येक, विरोध	प्रत्यक्ष, प्रत्येक, प्रतिदिन, प्रतिकूल, प्रतिनिधि आदि।
वि	भिन्नता, विशेषता, रहित	विराम, विदेश, वियोग, विशुद्ध, विज्ञान आदि।
सम्	अच्छा, संयोग, पूर्णता	सम्मुख, संहार संगति, संन्यास, संग्राम, संस्कृत आदि।
सु	सुंदर, अच्छा	सुगंध, सुकर्म, सुपुत्र, सुगम, सुभाषित, सुरक्षित आदि।

अव्यय एवं विशेषण रूपी उपसर्गों से बने शब्द

(Words evolved from Adjectives and Prepositions)

अधस्	नीचे	अधोगति, अध:पतन, अधोमुखी
अंत:	अंदर	अंतर्गत, अंत:करण, अंतर्भाव
अमा	निकट	अमावस्या, अमात्य
अलम्	सुंदर	अलंकृत
आविर	प्रकट	आविर्भाव, आविष्कार
इत	यह, ऐसा	इत्यादि, इतिहास, इतिवृत्त
कु	बुरा	कुपुत्र, कुपथ, कुकर्म, कुविचार
का	बुरा	कायर, कापुरुष
कद	बुरा	कदाचार, कदाचित
चिर	सदैव	चिरंजीव, चिरकाल, चिरस्थायी
तिरस्	तुच्छ	तिरस्कार, तिरोहित
न	अभाव	नास्तिक, नगण्य
नाना	अनेक	नानाविधि, नानारूप
पुरस्	सामने	पुरस्कार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उपसर्ग	अर्थ	शब्द
पुनर्	फिर	पुनर्जन्म, पुनर्गमन, पुनरुक्ति, पुनर्वास, पुनर्मिलन
पुरा	पहले	पुरातन, पुरातत्व
प्राक्	पहले का	प्राक्कथन
प्रात:	सवेरा	प्रात:काल, प्रात:स्मरणीय
प्रादुर्	प्रकट	प्रादुर्भाव
बहिर	बाहर	बहिर्मुख, बहिर्गमन, बहिष्कार
स	सहित	सप्रेम, सफल, सरस
सत्	अच्छा	सत्कर्म, सन्मार्ग, सज्जन
सह	साथ	सहपाठी, सहयोग
स्व	अपना	स्वजन, स्वदेश, स्वजातीय, स्वधर्म
स्वयम्	अपने आप	स्वयंवर, स्वयंसिद्ध, स्वयंसेवक आदि

हिंदी के उपसर्गों से बने शब्द (Words evolved from Hindi Prefixes)

अ	अभाव	अबला, अमूल्य, अस्थायी, अगणित, अगण्य
अठ	आठ	अठमासा, अठगुनी
अन	अभाव	अनादर, अनपढ़, अनमेल, अनहित, अनजाना
अध	आधा	अधमरा, अधकचरा, अधपका, अधखिला
उन	एक कम	उन्नीस, उनतीस, उनतालीस, उनचास
औ	हीन, रहित	औगुन
क	बुरा, नीच	कपूत
कु	बुरा	कुसंग, कुढंग, कुपुत्र
नि	निषेध, अभाव	निरोग, निडर, निकम्मा, निधड़क
दु	दो	दुगुना, दुपहिया, दुबारा, दुतल्ला, दुमंजिला
ति	तीन	तिगुना, तिराहा, तिकोना, तिमाही
चौ	चार	चौराहा, चौमुख, चौपाल, चौकोर, चौकन्ना, चौमासा
पच	पाँच	पचमेल, पचगुना, पंचमुखी
छ	छ:	छमाही, छक्का।
बिन	अभाव	बिनदेखा, बिनसुना, बिनकहा
भर	पूरा, ठीक	भरपूर, भरपेट, भरमार, भरसक
स	सहित	सकुशल, सप्रेम, सरस, सबल
सु	अच्छा	सुपुत्र, सुजान, सुमधुर, सुगृहिणी आदि।

उर्दू उपसर्गों से शब्द-रचना (Hindi words evolved form Urdu Prefixes)

कम	थोड़ा	कमजोर, कमउम्र, कमसिन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उपसर्ग	अर्थ	शब्द
खुश	उत्तम	खुशबू, खुशनसीब, खुशदिल, खुशहाल
गैर	निषेध	गैरकानूनी, गैरजात, गैरहाजिर, गैरसरकारी
दर	में	दरअसल, दरम्यान, दरखास्त
ना	अभाव	नादान, नाजुक, नालायक, नापसंद, नाचीज
ब	साथ और, में	बदौलत, बकौल
बा	अनुसार	बाकायदा, बामुलाहजा
बद	बुरा	बदनाम, बदमिजाज, बदहजमी, बदकिस्मत
बे	रहित	बेअकल, बेशर्म, बेपरवाह, बेरहम, बेइलाज
बर	ऊपर	बरखास्त, बरदाश्त
बिला	बिना	बिलानागा, बिलाकहे, बिलाकसूर
ला	अभाव	लापरवाह, लाइलाज, लाजवाब, लाचार, लावारिस।
सर	मुख्य	सरताज, सरपंच, सरदा़र, सरकार
हम	समान	हमवतन, हमउम्र, हमराज, हमपेशा, हमदर्द
हर	प्रति	हर रोज, हर दिन, हर माह, हर वर्ष, हर समय, हर क्षण।

एक से अधिक उपसर्गों से शब्द-निर्माण

(Words evolved from more than one Prefixes)

जैसे)— प्रत्युपकार = प्रति + उप + कार
समालोचना = सम + आ + लोचना
व्यवहार = वि + अव + हार
दुर्व्यवहार = दुर + वि + अव + हार
समन्वय = सम् + अनु + अय

(ख) प्रत्यय के योग से शब्द-रचना (Words evolved with the help of Suffixes)

जो शब्दांश शब्दों के पीछे मिलकर, उसके अर्थ को परिवर्तित कर देते हैं उन्हें प्रत्यय कहा जाता है। प्रत्ययों के योग से एक शब्द विभिन्न शब्दों में परिवर्तित हो सकता है। जैसे चलना शब्द में अ, क, आऊ, अन, आई प्रत्यय लगने से क्रमशः चाल, चालक, चलाऊ, चलन, चलाई शब्द बन जाते हैं और सभी शब्द अलग-अलग अर्थ को प्रकट करते हैं।

उपसर्ग की तरह प्रत्यय भी कुछ तो संस्कृत भाषा से ग्रहण किए गए हैं, कुछ हिंदी के अपने हैं और कुछ उर्दू भाषा से लिए गए हैं। इन सभी प्रत्ययों को दो भागों में बाँटा जाता है :

(i) कृत प्रत्यय, (ii) तद्धित प्रत्यय

(i) कृत प्रत्यय—जो प्रत्यय क्रिया पदों के पीछे लगते हैं उन्हें कृत प्रत्यय कहा जाता है। इन कृत प्रत्ययों के योग से जो शब्द बनते हैं उन्हें कृदंत शब्द कहा जाता है। ये कृदंत शब्द पाँच प्रकार के होते हैं :

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

1. कर्तृवाचक, 2. कर्मवाचक, 3. भाववाचक, 4. करणवाचक, और 5. क्रियावाचक।

1. कर्तृवाचक कृदंत शब्द—(वे शब्द जिनसे क्रिया को करनेवाले का पता लगता है।)

क्रियापद	**प्रत्यय**	**कर्तृवाचक शब्द**
त्यज	ई	त्यागी
भिक्ष्	उ, उक	भिक्षु, भिक्षुक
गै	अक	गायक
नै	अक	नायक
नी	ता	नेता
सृप	अ	सर्प
दा	ता	दाता
तैरना	आक	तैराक
चलना	क	चालक
बंध	उ, आव	बंधु, बांधव
दुष्	ई	दोषी
वास	इंदा	वाशिंदा

2. कर्मवाचक कृदंत शब्द—(जो सकर्मक क्रिया के सामान्य भूतकालीन रूप को प्रकट करते हैं।)

शास् + य	=	शिष्य; कृत + य = कृत्य
भू + त	=	भूत
जृ + न (ण)	=	जीर्ण; खिद् + न = खिन्न
लिखना + हुआ	=	लिखा हुआ
पढ़ना + हुआ	=	पढ़ा हुआ
जाना + हुई	=	जानी हुई
ओढ़न + ना	=	ओढ़ना

3. भाववाचक कृदंत शब्द—(जो किसी भाव या क्रिया के व्यापार को प्रकट करते हैं।)

क्रुध + अ	=	क्रोध	रुद्र + अ	=	रौद्र
गम् + अन	=	गमन	भू + अन	=	भवन
पूज् + आ	=	पूजा	भिक्ष् + आ	=	भिक्षा
गम् + ति	=	गति	शक् + ति	=	शक्ति
विद् + या	=	विद्या	शिक्ष् + आ	=	शिक्षा
दौड़ता + अ	=	दौड़	भरना + अ	=	भार
घेरना + आ	=	घेरा	फेरना + आ	=	फेरा
लड़ना + आई	=	लड़ाई	चढ़ना + आई	=	चढ़ाई
हँसना +ई	=	हँसी	बोलना + ई	=	बोली
बूढ़ा होना + आपा	=	बुढ़ापा			
मोटा होना + आपा	=	मोटापा			

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समझना + औता = समझौता

मलना + इश = मालिश

4. कर्णवाचक कृदंत शब्द—(वे शब्द जो किसी क्रिया के साधन का बोध कराते हैं।)

क्रियापद	प्रत्यय	कृदंत शब्द
कहना	आनी	कहानी
झाड़ना	ऊ	झाड़ू
कसना	औटी	कसौटी
झूलना	आ	झूला
बेलना	न	बेलन

5. क्रियावाचक कृदंत शब्द—(वे शब्द जो क्रिया के होने का भाव प्रकट करते हैं।)

क्रियापद	प्रत्यय	कृदंत शब्द
लिखना	ता हुआ	लिखता हुआ
खाना	ते हुए	खाते हुए
पढ़ना	ती हुई	पढ़ती हुई

(ii) तद्धित प्रत्यय—जो प्रत्यय क्रियापदों को छोड़कर अन्य शब्दों अर्थात संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण शब्दों के साथ मिलकर नए शब्द बनाते हैं; उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं। तद्धित प्रत्ययों के योग से बननेवाले शब्दों को तद्धितांत शब्द कहते हैं। ये शब्द भी पाँच प्रकार के होते हैं :

1. कर्तृवाचक, 2. गुणवाचक, 3. भाववाचक, 4. अपत्यवाचक, 5. स्त्रीवाचक तद्धितात शब्द।

1. कर्तृवाचक तद्धितांत शब्द—तद्धित प्रत्ययों के योग से बने ऐसे शब्द जो किसी कार्य के कर्त्ता का बोध कराते हैं, कर्तृवाचक तद्धितांत शब्द कहलाते हैं।

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण पद	प्रत्यय	कर्तृवाचक शब्द
पूजा	आरी	पुजारी
कृपा	आल	कृपाल
कृपा	आलू	कृपालू
झगड़ा	आलू	झगड़ालू
स्व	मिन्	स्वामिन्
नर	आयन	नारायण
कोतवाली	वाल	कोतवाल
लूट	रा	लुटेरा

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण पद	प्रत्यय	कर्तृवाचक शब्द
लकड़ी	हारा	लकड़हारा
मदद	गार	मददगार
सौदा	गर	सौदागर
पेश	कार	पेशकार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2. गुणवाचक तद्धितांत शब्द— तद्धित प्रत्ययों के योग से बने ऐसे शब्द जिनसे किसी गुण का बोध होता है, गुणवाचक तद्धितांत शब्द कहलाते हैं। जैसे—

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण शब्द	प्रत्यय	गुणवाचक शब्द
तेज	स्वी	तेजस्वी
शीत	ल	शीतल
रूप	वत्	रूपवान
अग्र	इम	अग्रिम
जाति	इय	जातीय
कुल	ईन	कुलीन
मल	इन	मलिन
मधु	र	मधुर
भूख	आ	भूखा
बंगाल	ई	बंगाली
बहुत	ऐरा	बहुतेरा
मास	इक	मासिक
परलोक	इक	पारलौकिक
अफसर	शाही	अफसरशाही
ताकत	वर	ताकतवर
खौफ	नाक	खौफनाक

3. भाववाचक तद्धितांत शब्द—तद्धित प्रत्ययों के योग से बने ऐसे शब्द, जिनसे किसी भाव का बोध होता है, भाववाचक तद्धितांत शब्द कहलाते हैं।

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण शब्द	प्रत्यय	भाववाचक तद्धितांत शब्द
बंधु, नर	त्व	बंधुत्व, नरत्व
गुरु, जड़	त्व	गुरुत्व, जड़त्व
गुरु, लघु	अ	गौरव, लाघव
गुरु, लघु, मधुर	ता	गुरुता, लघुता मधुरता
प्रभु, अमर, एक	ता	प्रभुता, अमरता, एकता
मर्म	इक	मार्मिक
मधुर, ईश्वर	य	माधुर्य, ऐश्वर्य

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण पद	प्रत्यय	भाववाचक तद्धितांत शब्द
मेल, लेख	वट	मिलावट, लिखावट
कड़ुवा	आहट	कड़ुवाहट
मोटा	आपा, पन	मोटापा, मोटापन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इंसान, हैवान	इयत इंसानियत,	हैवानियत
नेक, बद, मंद	ई	नेकी, बदी, मंदी

4. अपत्यवाचक तद्धितांत शब्द—तद्धित प्रत्ययों के योग से बने जो शब्द पितृत्व, मातृत्व या प्रमुख स्रोत का बोध कराते हैं, उन्हें अपत्यवाचक तद्धितांत शब्द कहा जाता है।

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण पद	प्रत्यय	अप्रत्यवाचक शब्द
राधा, गंगा	एय	राधेय, गांगेय
द्रौपदी, कुंती	एय	द्रौपदेय, कौंतेय
रघु,	अ	राघव
दशरथ	इ	दाशरथि
तालु	य	तालव्य
बहिन	जा	भानजा
कैद	खाना	कैदखाना
थूक	दान	थूकदान

5. स्त्रीवाचक तद्धितांत शब्द—वे शब्द जिनसे नारीत्व का बोध होता है, स्त्रीवाचक तद्धितांत शब्द कहलाते हैं।

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण पद	प्रत्यय	स्त्रीवाचक शब्द
पुजारी, भिखारी	इन	पुजारिन, भिखारिन
नाग, कहार	इन	नागिन, कहारिन
प्रिय, सुत, आचार्य, भवदीय	आ	प्रिया, सुता, आचार्या, भवदीया
नर, हंस, पुत्र, मृग	ई	नारी, हँसी, पुत्री, मृगी
बच्छ, लोटा	इया	बछिया, लुटिया
देवर, जेठ	आनी	देवरानी, जेठानी
मोर, शेर	नी	मोरनी, शेरनी
पंख	ड़ी	पंखड़ी

(ग) संधि के योग से शब्द-रचना—हिंदी शब्द-भंडार में ऐसे बहुत से शब्द हैं जो संधि के द्वारा बने हैं। अत: हमें यह जानना भी आवश्यक है कि संधि क्या है, उसके कितने भेद हैं और किस प्रकार शब्दों का निर्माण होता है।

संधि क्या है ? (What is Disjuction?)

सपीपस्थ दो वर्णों के मेल से जो परिवर्तन होता है उसे संधि कहते हैं। विभिन्न प्रकार के वर्णों के मेल के अलग-अलग नियम हैं अत: संधि के भी तीन प्रकार हैं :

(1) स्वर संधि, (2) व्यंजन संधि, (3) विसर्ग संधि।

1. स्वर संधि—दो स्वरों के मेल से जो परिवर्तन होता है उसे स्वर संधि कहते हैं। स्वर संधि के पाँच भेद हैं :

(i) दीर्घ स्वर संधि—जब प्रथम शब्द के अंत में ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, हो और दूसरे शब्द के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
शुरू में ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ हो तो क्रमशः दीर्घ, आ, ई, ऊ हो जाता है, तो उसे दीर्घ स्वर संधि कहते हैं। जैसे :

शिवालय	=	शिव + आलय	=	अ + आ = आ
मुख्याध्यापक	=	मुख्य + अध्यापक	=	अ + आ = आ
रवींद्र	=	रवि + इंद्र	=	इ + इ = ई
लघूर्मि	=	लघु + उर्मि	=	उ + उ = ऊ

(ii) गुण स्वर संधि—पहले शब्द के अंत में ह्रस्व या दीर्घ 'अ' हो और दूसरे शब्द के शुरू में ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ हो तो क्रमशः ए, ओ और अर् हो जाता हैं, इसे गुण स्वर संधि कहते हैं। जैसे :

महेश	=	महा + ईश	आ + ई = ए
सुरेंद्र	=	सुर + इंद्र	अ + इ = ए
महोत्सव	=	महा + उत्सव	आ + उ = ओ
देवर्षि	=	देव + ऋषि	आ + ऋ = अर्

(iii) वृद्धि स्वर संधि—प्रथम शब्द के अंत में ह्रस्व या दीर्घ 'अ' हो और दूसरे शब्द के शुरू में ए, ऐ, ओ, औ तो क्रमशः ऐ और औ हो जाता है, इसे वृद्धि स्वर संधि कहते हैं। जैसे :

तथैव	तथा + एव	आ + = ऐ
मतैक्य	मत + एक्य	अ + ए = ऐ
परमौषधि	परम + औषधि	अ + औ = औ
महौषधि	महा + औषधि	आ + औ = औ

(iv) यण स्वर संधि—ह्रस्व या दीर्घ इ, उ और ऋ के बाद ह्रस्व या दीर्घ असमान स्वर (अ, ए,) आने पर क्रमशः य, व और र् हो जाने पर यण स्वर संधि होती है। जैसे :

यद्यपि	यदि + अपि	इ + आ = य
इत्यादि	इति + आदि	इ + आ = या
स्वागतम्	सु + आगतम्	उ + आ = वा
मात्राज्ञा	मातृ + आज्ञा	ऋ + आ = रा
प्रत्येक	प्रति + एक	इ + ए = ये
अंवेषण	अनु + एषण	उ + ए = वे

(v) अयादि स्वर संधि—ह्रस्व या दीर्घ ए, ओ के साथ ह्रस्व या दीर्घ 'अ' 'ई' के मिलने पर क्रमशः अय, आय, अव, आव हो जाने पर अयादि स्वर संधि होती है। जैसे :

नयन	ने + अन	ए + अ = अय
नायक	नै + अक	ऐ + अ = आय
भवन	भो + अन	ओ + अ = अव
पावक	पो + अक	औ + अ = आव
नाविक	नौ + इक	औ + इ = आव
पवित्र	पौ + इत्र	ओ + इ = वि

II. व्यंजन संधि—व्यंजन के साथ स्वर या व्यंजन का मेल होने पर जो परिवर्तन होता है उसे व्यंजन संधि कहते हैं। व्यंजन संधि में यह परिवर्तन कुछ नियमों के आधार पर होता है, जो निम्न प्रकार से हैं :

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(i) वर्गों के प्रथम वर्ण (क, च, ट, त, प) से परे कोई स्वर या वर्गों के तृतीय या चतुर्थ वर्ण या य, र, ल, व का मेल हो तो प्रथम वर्ण के स्थान पर उसी वर्ग का तृतीय वर्ण हो जाता है। जैसे :

सदानंद	सत् + आनंद	त + आ = दा
वागीश	वाक् + ईश	क + ई = गी
जगदीश	जगत् + ईश	त + ई = दी
षडानन	षट् + आनन	ट् + आ = डा

2. त् या द से परे च, छ, श्, हो तो त् या द् के स्थान पर च् हो जाता है। जैसे :

उच्चारण = उत् + चारण, उच्छ्वास = उत् + श्वास

यदि त् या द् के बाद ज, झ हो तो त् द् का ज् हो जाता है। जैसे :

सज्जन = सत् + जन

यदि त् या द् के बाद ट् या ठ् हो तो त् या द् का ट् हो जाता है, जैसे :

तट्टीका = तत् + टीका

यदि त् या द् के बाद ड, ढ हो तो त् या द् का ड् हो जाता है, जैसे :

उडड्यन = उत् + डयन

3. वर्गों के प्रथम वर्ण के बाद यदि वर्ग का पंचम वर्ण हो तो प्रथम वर्ण के स्थान पर उसी वर्ग का तृतीय अथवा पंचम वर्ण हो जाता है, जैसे :

जगद्नाथ या जगन्नाथ = जगत् + नाथ

तन्मय या तद् मय = तत् + मय

4. स् के साथ चवर्ग के किसी वर्ण का मेल होने पर स् का श् हो जाता है। जैसे :

दुस् + चरित्र = दुश्चरित्र

कस् + चित् = कश्चित्

5. स के बाद टवर्ग का कोई वर्ण हो तो स् का ष् हो जाता है। जैसे :

दुष्ट = दुस् + ट।

6. किसी स्वर के साथ छ का मेल होने पर छ का च्छ हो जाता है। जैसे :

आच्छादित + आ + छादित, परिच्छेद = परि + छेद।

7. पहले शब्द के अंत में ष और दूसरे के शुरू में त या थ हो तो त का ट तथा थ का ठ हो जाता है। जैसे :

आकृष्ट = आकृष् + त्, षष्ठ = षष् + थ।

8. वर्गों के प्रथम वर्ण (क, च, ट, त, प) से परे न या म् वर्ण हो तो वर्ग के प्रथम वर्ण के स्थान पर उसी वर्ग का पंचम वर्ण हो जाता है। जैसे :

वाङ्मय = वाक् + मय

षण्मास = षट् + मास

जगन्नाथ = जगत् + नाथ

9. त् से परे यदि ह हो तो त् का द् और ह् का ध् हो जाता है। जैसे :

उद्धार = उत् + हार उद्धरण = उत् + हरण

10. म् से परे पाँचों वर्गों का कोई भी व्यंजन हो तो म् के स्थान पर उस वर्ण के वर्ग का अंतिम व्यंजन हो जाता है जैसे :

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सम् + कल्प = संकल्प, सङ्कल्प। किम् + कर = किङ्कर, किंकर।

किम् + चित् किञ्चत् किंचित्। सम् + चय = सञ्चय संचय।

सम् + बंध = संबंध। परम् + तु = परंतु।

यदि म् से परे म हो तो म् का द्वित्व हो जाता है। जैसे :

सम् + मान + सम्मान, सम् + मिलन = सम्मिलन।

यदि म् से परे, य, र, ल, व, स, श, ष, ह में से कोई व्यंजन हो तो म् का अनुस्वार हो जाता है, जैसे :

सम् + लग्न = संलग्न सम् + सार = संसार

सम् + योग = संयोग सम् + शय = संशय

सम् + रक्षा = संरक्षा सम् + शोधन = संशोधन

सम् + वाद = संवाद सम् + हार = संहार

11. श्र, र, ष से परे यदि न हो तो न का ण हो जाता है, जैसे :

प्र + नाम = प्रणाम कृष + न = कृष्ण

परि + नाम = परिणाम ऋ + न = ऋण

निष + नात = निष्णात विष् + नु = विष्णु

12. पहले पद के अंत में अ आ से भिन्न कोई स्वर हो और द्वितीय पद के शुरू में स हो तो स का ष हो जाता है जैसे :

अभि + सेक = अभिषेक, वि + सम = विषम, नि + सिद्ध = निषिद्ध।

III. विसर्ग संधि—विसर्ग (:) के साथ किसी स्वर या व्यंजन का मेल होने पर जो परिवर्तन होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं। यह परिवर्तन कुछ नियमों के आधार पर होता है, जो निम्न प्रकार से हैं :

1. विसर्ग से पहले अ और उसके परे वर्गों के तीसरे, चौथे, पाँचवें वर्ग, 'अ' अथवा य, र, ल, व में से कोई वर्ण हो तो अ और विसर्ग का 'ओ' हो जाता है जैसे :

अधः + गति = अधोगति वयः + वृद्ध = वयोवृद्ध

मनः + अनुकूल = मनोकुल मनः + विज्ञान = मनोविज्ञान

मनः + बल = मनोबल यशः + दा = यशोदा

तेजः + राशि = तेजोराशि

2. विसर्ग से पहले अ और आ को छोड़कर कोई स्वर हो और बाद में र हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है और वह स्वर दीर्घ हो जाता है। जैसे :

निः + रोग = नीरोग निः + रस = नीरस।

3. विसर्ग से पहले अ, आ हो और परे कोई अन्य स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है। जैसे :

अतः + एव = अतएव।

4. विसर्ग से पूर्व अ, आ को छोड़कर कोई अन्य स्वर हो और परे वर्गों के तृतीय, चतुर्थ, एवं पंचम वर्ण य, र, ल, व या कोई हो तो विसर्ग का र हो जाता है। जैसे :

दुः + आशा = दुराशा निः + धन = निर्धन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

निः + आशा = निराशा　　　दुः + आचार = दुराचार

दुः + जन = दुर्जन　　　आशीः + वाद = आशीर्वाद

5. विसर्ग से पहले कोई स्वर और परे च्, छ् या श् हो तो विसर्ग का श् हो जाता है। जैसे :

निः + चिंत = निश्चिंत　　　दुः + चरित्र = दुश्चरित्र

निः + छल = निश्छल　　　कः + चित् = कश्चित्

दुः + शासन = दुश्शासन

6. विसर्ग से पूर्व कोई स्वर और परे त् या स् हो तो विसर्ग का स् हो जाता है। जैसे :

नमः + ते = नमस्ते　　　दुः + साहस = दुस्साहस

दुः + तर = दुस्तर　　　निः + संतान = निस्संतान

7. यदि विसर्ग के पूर्व इ, उ और बाद में 'क, ख, ट, ठ, प, फ,' में से कई वर्ण हो तो विसर्ग का ष् हो जाता है। जैसे :

धनुः + टंकार = धनुष्टंकार　　　निः + कलंक = निष्कलंक

चतुः + पाद = चतुष्पाद　　　निः + फल = निष्फल

परंतु कभी-कभी विसर्ग के बाद प, फ होने पर कोई परिवर्तन नहीं होता है। जैसे :

अंतः + पुर = अंतःपुर।

(घ) समास के द्वारा शब्द-रचना—जब दो या दो से अधिक शब्द मिलकर नए शब्द का निर्माण करते हैं तो इस क्रिया को समास कहा जाता है। समास द्वारा निर्मित शब्द समस्त शब्द कहलाते हैं। समास छः प्रकार के होते हैं। इनका वर्णन आगे किया जा रहा है।

I. तत्पुरुष समास—जिस समास में प्रथम पद गौण व द्वितीय पद प्रधान होता है, और प्रथम पद कर्त्ता व संबोधन कारक को छोड़कर किसी अन्य कारक का होता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। शेष छः कारकों के आधार पर तत्पुरुष समास छः प्रकार का होता है :

(i) कर्म तत्पुरुष—पहला पद कर्म कारक होता है, जैसे—ग्रामगत, सुखातीत, धर्मगत, आशातीत, स्वर्गप्राप्त, जलपिपासु।

(ii) कारण तत्पुरुष—पहला पद कारण कारक का होता है, जैसे—धर्मांध, रेलयात्रा, आँखोंदेखा, ईश्वरदत्त, वाल्मीकिकृत, रोगग्रस्त।

(iii) संप्रदान तत्पुरुष—पहला पद संप्रदान कारक का होता है। जैसे—हवनसामग्री, परीक्षाभवन, वरमाला, यज्ञशाला, कार्यशाला।

(iv) अपादान तत्पुरुष—पहला पद अपादान कारक का होता है। जैसे—पदच्युत, पथभ्रष्ट, धनहीन, भयभीत, जन्माध, करमुक्त।

(v) संबंध तत्पुरुष—पहला पद संबंध कारक का होता है। जैसे—राजपुरुष, राजपुत्र, गुरुभक्त, गंगाजल, माखनचोर, देवमंदिर आदि।

(vi) अधिकरण तत्पुरुष—पहला पद अधिकरण कारक का होता है। जैसे—दानवीर, कलाप्रवीण, नीतिनिपुण, वाक्पटु आदि।

इन छः प्रकारों के अलावा तत्पुरुष समास का एक भेद और भी होता है। वह है—निषेधवाचक तत्पुरुष। इसमें पहला पद निषेधवाचक होता है। जैसे :

अनपढ़, अनंत, अनादर, अनादि, अनजाना, अनहित आदि।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

II. कर्मधारय समास—इसमें पहला पद विशेषण तथा दूसरा पद विशेष्य होता है। कभी-कभी दोनों पद विशेष्य भी होते हैं। जैसे :

पीतांबर, कमलनयन, मुखकमल, परमानंद, महापुरुष, वज्रदेह आदि।

III. द्विगु समास—इसमें पहला पद संख्यावाचक एवं दूसरा पद प्रधान होता है। जैसे—पंचवटी, त्रिलोक, षडानन, दशानन, नवरत्न, चौराहा, नवरात्रि, दुमुँहा, पंचानन, चौमासा, त्रिनेत्र आदि।

IV. द्वंद्व समास—इसमें दोनों पद प्रधान होते हैं और विग्रह करने पर 'और' संयोजक अव्यय से जुड़े होते हैं। जैसे—माता-पिता, दिन-रात, राजा-प्रजा, राजा-रंक, भाई-बहिन, गुरु-शिष्य आदि।

V. बहुब्रीहि समास—इस समास में कोई भी पद प्रधान नहीं होता है वरन कोई अन्य शब्द प्रधान होता है जो विग्रह करने पर अलग ही अर्थ का बोध कराता है। जैसे—दशानन (रावण), लंबोदर (गणेश), कहासुनी (झगड़ा) आदि।

VI. अव्ययीभाव समास—इसमें पहला पद अव्यय होता है और प्रधान होता है। इस प्रकार बने शब्द क्रियाविशेषण की तरह प्रयुक्त होते हैं। जैसे—यथाक्रम, यथाविधि, आजन्म, प्रतिदिन, प्रत्येक, धीरे-धीरे, हर रोज, रातोंरात, यथाशक्ति, भरपेट, बेखटके, बेशक आदि।

हिंदी रचना-शिक्षण (Teaching of Hindi Words Composition)

कक्षा में छात्रों के शब्द-भंडार में वृद्धि करने के लिए उपर्युक्त चारों विधियों का ज्ञान एवं अभ्यास कराना आवश्यक है। इसके लिए हमें निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए :

1. छात्रों के मानसिक स्तर एवं अधिगम क्षमता के आधार पर उपसर्ग, प्रत्यय, संधि एवं समास शिक्षण का आयोजन करना चाहिए। किस कक्षा में इनका ज्ञान कितना-कितना दिया जाए, इसके बारे में पूरी तरह से सोच-विचार कर पाठ्यक्रम को व्यवस्थित कर लेना चाहिए।

2. उपसर्ग, प्रत्यय, संधि एवं समास पढ़ाते समय छात्रों के जीवन से संबंधित उदाहरणों का प्रयोग करना चाहिए।

3. शिक्षण-सूत्रों का पालन करते हुए शिक्षण को रोचक बनाने का प्रयास करना चाहिए।

4. दृश्य-श्रव्य शिक्षण सामग्री के प्रयोग द्वारा शिक्षण में सरसता व सजीवता लाने का प्रयास करना चाहिए।

5. एक-एक उपसर्ग, प्रत्यय आदि का अभ्यास कराने के लिए कई-कई उदाहरण प्रस्तुत करने चाहिए।

6. छात्रों को बराबर क्रियाशील रखने का प्रयास करना चाहिए।

7. व्याकरण शिक्षण की प्रभावशाली विधियों का प्रयोग कर इनका अभ्यास कराना चाहिए। आगमन विधि इसके लिए सर्वश्रेष्ठ विधि मानी जाती है।

8. छात्रों के सम्मुख उदाहरण प्रस्तुत कर उनका विश्लेषण कराकर नियम निकलवाना चाहिए और फिर छात्रों को वैसे ही अन्य उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

9. भाषा के अन्य पाठों को पढ़ाते समय अनौपचारिक रूप में इनका प्रयोगात्मक अभ्यास कराना चाहिए।

10. इसका अभ्यास कराने के लिए लिखित कार्य अधिक-से-अधिक कराना चाहिए।

इसकी पाठ-योजना कैसे बनाई जाए, इसके लिए व्याकरण-शिक्षण अध्याय में समास की पाठ-योजना देखी जा सकती है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्ययन के लिए प्रश्न

1. हिंदी शब्द-स्रोत से आपका क्या अभिप्राय है ? हिंदी शब्द-स्रोत के वर्गीकरण पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

2. हिंदी शब्द-रचना के विभिन्न तत्वों एवं प्रकारों का उल्लेख करते हुए पाँच उपसर्गों एवं पाँच प्रत्ययों के योग से दस शब्द बनाइए।

3. हिंदी में शब्दों की रचना किस प्रकार होती है ? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

4. उपसर्ग किसे कहते हैं ? हिंदी भाषा में प्रयुक्त कोई पाँच उपसर्ग और उनसे बने दो-दो शब्द लिखिए।

5. प्रत्यय किसे कहते हैं ? हिंदी भाषा में प्रयुक्त कोई पाँच प्रत्यय और उनसे बने दो-दो शब्द लिखिए।

6. हिंदी शब्द-रचना से आप क्या समझते हैं ? हिंदी शब्द-रचना के विभिन्न तरीके क्या हैं ? आप इनकी शिक्षा बालकों को किस प्रकार देगे ?

7. निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :—

(i) हिंदी शब्द-स्रोत,
(ii) हिंदी की शब्द-सूची का वर्गीकरण,
(iii) हिंदी में शब्द-रचना,
(iv) हिंदी शब्द रचना में प्रत्यय और उपसर्ग,
(v) तत्सम और तद्भव शब्द,
(vi) संधि के योग से हिंदी शब्द-रचना,
(vii) समास के द्वारा हिंदी शब्द-रचना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

9

हिंदी वाक्य-विश्लेषण, रचना एवं विरामचिह्न
(Hindi Sentences-Analysis, Composition and Punctuation)

वाक्य—अर्थ एवं महत्त्व (Sentence—Meaning and Significance)

विचारों की अभिव्यक्ति का प्रमुख साधन भाषा है। भाषा की इकाई वाक्य है क्योंकि व्यक्ति वाक्यों के माध्यम से ही अपने विचारों एवं अनुभवों को प्रकट करते हैं। यदि हम ध्यान से देखें तो स्पष्ट होगा कि बालक वाक्य द्वारा ही बोलना सीखता है, यह बात दूसरी है कि उसका वाक्य एक शब्द का होता है। जैसे यदि वह 'लोटी' या 'मम' कहता है तो वास्तव में वह पूर्ण वाक्य को व्यक्त कर रहा होता है कि मुझे रोटी दो, भूख लगी है या प्यास लगी है, पानी दो। बच्चे के विचारों का प्रारंभिक आदान-प्रदान वाक्यों में ही होता है। शब्द और वर्ण तो वह बाद में सीखता है। इसीलिए भाषा की प्रथम इकाई वाक्य है। भाषा का प्रारंभ शब्दों से न होकर शब्द-वाक्यों से होता है। वाक्य के बिना भाषा पंगु है। अतः भाषा की शिक्षा में वाक्य-शिक्षण का महत्त्वपूर्ण स्थान है। वाक्य-रचना में कुशल व्यक्ति ही अपने विचारों को प्रभावशाली रूप से व्यक्त कर सकता है।

जब दो या दो से अधिक शब्दों को इस तरह से प्रस्तुत किया जाता है कि उससे भावों को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त किया जा सके तो उसे वाक्य कहते हैं। वैसे तो वाक्य एक शब्द से लेकर कितने भी शब्दों का हो सकता है। परंतु वास्तव में पदों के उस समूह को वाक्य कहते हैं जिनमें भाव अच्छी तरह से स्पष्ट हों। कोई भी वक्ता या लेखक वाक्यों में ही अपने अनुभवों, विचारों एवं भावों को अभिव्यक्त करता है। रचना की सरलता, सुंदरता, स्पष्टता, गंभीरता तथा प्रभावोत्पादकता वाक्य-रचना पर निर्भर करती है। हम कह सकते हैं कि—"ध्वनियों या लिपि-प्रतीकों का ऐसा समूह, जिसमें व्यक्ति की भावनाएँ, विचारधाराएँ तथा अनुभव पूर्ण रूप से अभिव्यक्त होते हैं, वाक्य कहा जाता है।"

एक वाक्य में निम्नलिखित बातों का होना आवश्यक होता है :

1. आकांक्षा 2. योग्यता 3. शब्दक्रम।

1. आकांक्षा—वाक्य के एक पद को सुनने या पढ़ने के पश्चात श्रोता या पाठक के मन में वक्ता या लेखक के विचारों को आगे जानने की अर्थात वाक्य के अगले पद सुनने या पढ़ने की जिज्ञासा उत्पन्न होती है, इसे ही 'आकांक्षा' कहते हैं। जैसे—"सीता गाना गा रही है।" वाक्य में प्रथम पद 'सीता' सुनते या पढ़ते ही श्रोता या पाठक के मन में जिज्ञासा उत्पन्न होती है और पूरा वाक्य "गाना गा रही है" सुनने या पढ़ने के बाद ही यह जिज्ञासा शांत होती है। इसे ही आकांक्षा कहते हैं।

2. योग्यता—वाक्य में जिन शब्दों का प्रयोग होता है उनमें अर्थ व्यक्त करने की सामर्थ्य को 'योग्यता' कहते हैं। जैसे उपर्युक्त वाक्य "सीता गाना गा रही है।" में अर्थ व्यक्त करने की पूर्ण योग्यता है। क्योंकि प्रत्येक पद का अर्थ स्पष्ट है और शब्द व अर्थ में उचित संबंध है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3. शब्दक्रम—दो या दो से अधिक शब्दों के समूह को वाक्य कहते हैं। वाक्य में प्रयुक्त इन शब्दों में उचित क्रम का होना भी आवश्यक है। शब्दों के उचित क्रम के अभाव में वाक्य अपने अर्थ को यथार्थ रूप में प्रकट करने की सामर्थ्य खो देते है। उचित शब्दक्रम से युक्त वाक्य ही अर्थ को सही तरह से स्पष्ट करता है। जैसे—''रहा हूँ मैं खाना खा'' वाक्य उचित शब्दक्रम के अभाव में निरर्थक हो गया है। इसी को यदि ''मैं खाना खा रहा हूँ'' इस क्रम में व्यक्त किया जाए तो यह ठीक-ठीक अर्थ का बोध कराता है। अत: उचित शब्दक्रम वाक्य की सार्थकता के लिए आवश्यक है।

इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि आकांक्षा, योग्यता एवं शब्दक्रम से युक्त ऐसा पद-समूह, जो अपने अर्थ, भाव को स्पष्ट करने में पूर्णत: समर्थ हो, वाक्य कहलाता है।

वाक्य के अंग (Components of the Sentence)—प्रत्येक वाक्य के दो अंग होते हैं—1. उद्देश्य 2. विधेय।

1. उद्देश्य—किसी भी वाक्य में जिसके बारे में कुछ कहा जाता है उसे वाक्य का उद्देश्य कहते हैं। जैसे—''राष्ट्रपिता बापू ने देश को अंग्रेजी दासता से मुक्त कराया।'' इस वाक्य में राष्ट्रपिता बापू के बारे में कुछ कहा गया है, अत: इसमें ''राष्ट्रपिता बापू'' उद्देश्य है। उद्देश्य से तात्पर्य वाक्य में कर्त्ता से है। किसी वाक्य में उद्देश्य में केवल कर्त्ता ही होता है और किसी वाक्य में कर्त्ता के साथ कर्तृ विशेषण भी होते हैं। इन्हें कर्त्ता का विस्तार कहते हैं। जैसे—उपर्युक्त वाक्य में ''बापू'' कर्त्ता है और ''राष्ट्रपिता'' कर्त्ता का विशेषण है अत: ''राष्ट्रपिता'' कर्त्ता का विस्तार है।

2. विधेय—वाक्य में कर्त्ता के बारे में जो कुछ कहा जाता है वह विधेय कहलाता है। उपर्युक्त वाक्य में ''देश को अंग्रेजी दासता से मुक्त कराया'' यह कथन ''राष्ट्रपिता बापू'' के बारे में कहा गया है अत: विधेय है। वाक्य में कभी-कभी केवल क्रिया ही विधेय होती है और कभी-कभी क्रिया के साथ उसका कर्म, क्रिया-विशेषण आदि भी होते हैं। अत: विधेय के कुछ भाग हैं जो निम्न हैं :

1. क्रिया
2. कर्म (यदि क्रिया सकर्मक है तो)
3. कर्म का विस्तार
4. क्रिया का पूरक
5. क्रिया-विशेषण अथवा क्रिया का विस्तार

वाक्यों के प्रकार (Kinds or Types of Sentences)—भाषा का प्रयोग वाक्य के रूप में ही होता है। जिन वाक्यों के रूप में हम अपने विचार प्रकट करते हैं ये वाक्य व्याकरण, अर्थ, रूप आदि की दृष्टि से भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं। इन वाक्यों के वर्गीकरण के कई आधार हैं :

(क) व्याकरण के आधार पर
(ख) अर्थ के आधार पर
(ग) साहित्य के आधार पर
(घ) क्रिया के आधार पर

(क) व्याकरण के आधार पर वाक्यों का भेद (Types of Sentence according to Grammar)—व्याकरण के नियमों के आधार पर वाक्य-रचना की जाती है। वाक्यों की रचना के आधार पर वाक्यों के तीन भेद किए जाते हैं।

1. सरल वाक्य (Simple Sentence)—जिस वाक्य में केवल एक ही क्रिया होती है, उसे सरल वाक्य कहते हैं। जैसे—राम पुस्तक पढ़ता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2. मिश्रित वाक्य (Mixed Sentence)—जिस वाक्य में एक मुख्य वाक्य के साथ, एक या अधिक उपवाक्य जुड़े होते हैं, उसे मिश्रित वाक्य कहते हैं। जैसे—"अध्यापक की आज्ञा पाते ही सभी छात्र खड़े हो गए।" इस वाक्य में "अध्यापक की आज्ञा पाते ही" मुख्य वाक्य है और "सभी छात्र खड़े हो गए" उपवाक्य है जो कि मुख्य वाक्य के साथ जुड़ा है।

3. संयुक्त वाक्य (Compound Sentence)—जिस वाक्य में एक से अधिक मुख्य वाक्य एवं उपवाक्य संयोजक अवयवों द्वारा जुड़े रहते हैं उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं। जैसे—"अध्यापक की आज्ञा पाते ही सभी छात्र खड़े हो गए और कुछ ही क्षणों में खेल के मैदान में पहुँच गए।" इस वाक्य में 'और' संयोजक द्वारा दो मिश्रित वाक्यों को संयुक्त किया गया है।

(ख) अर्थ के आधार पर वाक्यों के भेद (Types of Sentences according to their meaning)—अर्थ के आधार पर वाक्य के निम्न आठ भेद किए जाते हैं :

1. विधिवाचक वाक्य—जिस वाक्य में किसी बात के होने का बोध हो उसे विधिवाचक वाक्य कहते हैं। जैसे—"वह पत्र लिख रहा है।" इस वाक्य में पत्र लिखने का आभास हो रहा है।

2. निषेधवाचक वाक्य—जिस वाक्य में किसी बात के न होने का बोध हो उसे निषेधवाचक वाक्य कहते हैं। जैसे—"वह पत्र नहीं लिख रहा है।"

3. आज्ञासूचक वाक्य—जिस वाक्य में किसी प्रकार की आज्ञा देने का आभास हो, वह आज्ञासूचक या आज्ञार्थक वाक्य कहलाता है। जैसे—पत्र लिखो।

4. प्रश्नवाचक वाक्य—जिस वाक्य में किसी प्रकार का प्रश्न पूछा जाता है, उसे प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं। जैसे—"क्या वह पत्र लिख रहा है?"

5. विस्मयादिबोधक वाक्य—जिस वाक्य में आश्चर्य प्रकट किया जाए, उसे विस्मयादिबोधक वाक्य कहते हैं। जैसे—अच्छा! उसने पत्र लिखा!

6. इच्छाबोधक वाक्य—जिस वाक्य में किसी प्रकार की इच्छा को व्यक्त किया जाता है, उसे इच्छाबोधक वाक्य कहा जाता है। जैसे—"तुम उसे पत्र लिखो, तुम्हें सफलता अवश्य मिलेगी।"

7. संदेहसूचक वाक्य—जिस वाक्य में किसी प्रकार का संदेह प्रकट हो, उसे संदेहसूचक वाक्य कहते हैं। जैसे—"हो सकता है तुम्हारे पत्र लिखने से काम बन जाए।"

8. संकेतार्थक वाक्य—जिस वाक्य में किसी बात को संपूर्ण रूप से स्पष्ट न कर केवल उसका संकेत होता है, उसे संकेतार्थक वाक्य कहते हैं। जैसे—"यदि तुम मेहनत से पढ़ोगे तो अवश्य सफलता प्राप्त करोगे।"

(ग) साहित्य के आधार पर वाक्यों के भेद (Types of Sentences on Literary basis)—साहित्यिक दृष्टि से वाक्यों के तीन भेद किए जाते हैं :

1. संयत वाक्य—जो वाक्य आदि से अंत तक श्रोता या पाठक की जिज्ञासा को बनाए रखते हैं और अपने अर्थ को स्पष्ट करने में पूरी तरह से समर्थ होते हैं, उन्हें संयत वाक्य कहा जाता है। जैसे — "मानव एक बुद्धिजीवी और चिंतनशील प्राणी है, जो अपने जीवन में कुछ विशेष कार्य करने के लिए प्रयत्नशील रहता है।"

2. शिथिल वाक्य—ऐसे वाक्यों में महत्त्वपूर्ण भाग पहले आ जाता है अत: आगे पढ़ने के लिए पाठक के मन में कोई जिज्ञासा नहीं रह जाती है। जैसे—"हमारा देश कृषि-प्रधान देश है, यहाँ के अधिकांश लोग खेती-बाड़ी करते हैं।"

3. संतुलित वाक्य—संतुलित वाक्य में उपवाक्य या वाक्यांश आपस में जुड़े रहते हैं और प्रत्येक वाक्यांश का अपना अस्तित्व होता है। जैसे—"विज्ञान मानव जीवन के लिए लाभप्रद है या हानिप्रद, यह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक विचारणीय प्रश्न है। जैसे फूलों के साथ काँटे रहते हैं, निर्मल जल के साथ कीचड़ रहता है, सर्प में मणि के साथ विष रहता है और संयोग के साथ वियोग जुड़ा रहता है वैसे ही विज्ञान में लाभ के साथ हानि भी निहित है।''

(घ) क्रिया की दृष्टि से वाक्यों के भेद (Types of Sentence based on Verbs used)—क्रिया की दृष्टि से वाक्य निम्न तीन प्रकर के होते हैं :

1. कर्तृप्रधान वाक्य—जिन वाक्यों में कर्त्ता प्रधान होता है तथा कर्म का होना या न होना आवश्यक नहीं है, उन्हें कर्तृप्रधान वाक्य कहते हैं। जैसे—मोहन पढ़ता है या मोहन पुस्तक पढ़ता है।

2. कर्मप्रधान वाक्य—जिन वाक्यों में क्रिया कर्मप्रधान होती है अर्थात जिन वाक्यों में कर्म का होना आवश्यक है उन्हें कर्मप्रधान वाक्य कहते हैं। जैसे—''सीता खाना पकाती है।'' इस वाक्य में पकाना क्रिया खाना कर्म से संबंधित है।

3. भावप्रधान वाक्य—जिन वाक्यों में क्रिया प्रधान होती है, उन्हें भावप्रधान वाक्य कहते हैं। जैसे—''भिखारी की दीन दशा को देखकर वह रो पड़ा।''

इस प्रकार उपर्युक्त विभिन्न आधारों के अनुसार वाक्यों को विभिन्न प्रकारों में बाँटा जा सकता है।

वाक्य-रचना
(Sentence Composition)

वाक्य-रचना क्या है? (Meaning of Sentence Composition?)

विचाराभिव्यक्ति का प्रमुख साधन भाषा है और भाषा की प्रथम इकाई वाक्य है। सुगठित वाक्य ही हमारी अभिव्यक्ति को प्रभावशाली बनाता है। वाक्य की थोड़ी-सी भी शिथिलता अभिव्यक्ति को प्रभावहीन बना देती है। अत: अपनी बात को मौखिक या लिखित रूप से अभिव्यक्त करते समय वक्ता या लेखक को वाक्य-रचना के संबंध में बहुत अधिक सावधान रहने की आवश्यकता होती है।

शब्दों के अर्थ, भाव, प्रयोग, क्रम एवं विभक्ति आदि को ध्यान में रखते हुए उनको व्यवस्थित किया जाता है, इसे ही वाक्य-रचना कहते हैं। वाक्यों की सुगठित रचना पर ही किसी भी अभिव्यक्ति की स्पष्टता, सुबोधता, सुंदरता एवं सशक्तता निर्भर करती है। यदि वाक्य में प्रत्येक शब्द अपने उचित स्थान पर रखा गया है तब तो वाक्य-रचना ठीक कहलाती है, परंतु एक भी शब्द का अनुचित प्रयोग होते ही वाक्य-रचना शिथिल एवं दोषपूर्ण हो जाती है एवं वक्ता या लेखक के अभिप्राय को ही परिवर्तित कर देती है।

वाक्य-रचना के नियम (Rules regarding Sentence Composition)

प्रत्येक भाषा में वाक्य-रचना के अपने कुछ नियम होते हैं। हिंदी भाषा में भी वाक्य-रचना के पदक्रम, क्रिया, विभक्ति, विराम-चिह्न आदि से संबंधित कुछ विशेष नियम हैं जिनका पालन करने पर ही वाक्य-रचना शुद्ध रूप में की जा सकती है। ये नियम निम्न प्रकार से हैं :

1. शब्दों के उचित प्रयोग से संबंधित कुछ विशेष बातों का ध्यान रखना चाहिए अर्थात वाक्य में जो भी शब्द प्रयुक्त हों वे सरल हों, सार्थक हों एवं भावार्थ के अनुसार हों। कर्णकटु तथा अप्रचलित शब्दों का प्रयोग नहीं होना चाहिए।

2. शब्दों का पदक्रम ठीक होना चाहिए। जब तक कोई शब्द किसी वाक्य का अंश नहीं बनता तब तक वह शब्द कहलाता है और जब वह वाक्य में प्रयुक्त हो जाता है तब उसे वाक्य का पद कहा जाता है। वाक्य-रचना में पदक्रम पर विशेष ध्यान देना चाहिए। इसे वाक्य-विन्यास भी कहा जाता है अर्थात वाक्य में प्रयुक्त शब्दों का परस्पर संबंध, पारस्परिक निर्भरता एवं क्रम ठीक होना चाहिए तभी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
वाक्य अपने भाव और अर्थ को ठीक प्रकार से व्यक्त कर सकता है। पदक्रम के संबंध में निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिए :

(क) हिंदी भाषा में वाक्य में पदक्रम के बारे में सामान्य नियम यह है कि पहले कर्त्ता, फिर कर्म, फिर क्रियापद रखा जाता है। जैसे :

''सीता गाना गा रही है।''

(ख) वाक्य में कर्त्ता का विस्तार कर्त्ता से पहले, कर्म का विस्तार कर्म से पहले और क्रिया का विस्तार क्रिया से पहले आता है। जैसे—

''विद्‌यालय के प्रधानाचार्य सातवीं कक्षा के बच्चों को बहुत डाँट रहे थे।''

(ग) विशेषण शब्द विशेष्य से पहले आते हैं। जैसे—
अच्छे लड़के कभी भी शरारत नहीं करते।

(घ) द्‌विकर्मक क्रियाओं में गौण कर्म पहले और मुख्य कर्म बाद में आता है। जैसे—
''सेठ ने भिखारी को दस रुपए दिए।''

(ङ) क्रिया-विशेषण क्रिया से पहले आते हैं। जैसे—
वह धीरे-धीरे पढ़ रहा है।

(च) प्रश्नवाचक पद व्यक्ति, वस्तु, स्थान, समय या कार्य के पहले प्रयुक्त होते हैं। जैसे—
तुम कौन-सी पुस्तक पढ़ रहे हो ?
क्या आप दिल्ली जाएँगे ?
राम किस दिन जाएगा ?
तुम किस स्थान पर अपना कारखाना स्थापित करोगे ?
तुम क्या कर रहे हो ?

(छ) संबोधन अवयव वाक्य के प्रारंभ में प्रयुक्त होता है। जैसे—
माँ, भोजन दो।

(ज) विस्मयादिबोधक अवयव वाक्य के प्रारंभ में लगते हैं। जैसे—
हाय! यह क्या हो गया ?
अच्छा! वह पास हो गया।

इस प्रकार पदक्रम के नियमों का पालन करते हुए ही वाक्य-रचना करनी चाहिए। वैसे उचित पदक्रम के अभाव में वाक्य-रचना करने पर भी वाक्य का अर्थ तो निकल ही आता है परंतु वे वाक्य सुनने या पढ़ने में अच्छे नहीं लगते हैं।

3. वाक्य-रचना करते समय वाक्य के दोनों अंग उद्‌देश्य एवं विधेय का ठीक प्रकार से प्रयोग करना चाहिए। जिसके बारे में कोई बात कही जा रही है उसे उद्‌देश्य कहते हैं और किसी के बारे में जो बात कही जा रही है उसे विधेय कहते हैं। (इनका विस्तृत वर्णन वाक्य के अंग के अंतर्गत किया गया है।) इन दोनों अंगों का उचित ध्यान रखते हुए वाक्य-रचना करनी चाहिए।

4. वाक्य-रचना करते समय यह भी ध्यान रखना चाहिए कि हम वाक्य के माध्यम से क्या बात प्रकट करना चाहते हैं। उसके अनुसार ही वाक्य-गठन होना चाहिए। अर्थात वाक्य के प्रकार का ध्यान रखते हुए ही वाक्य-रचना करनी चाहिए।

5. वाक्य-रचना करते समय विभक्ति का प्रयोग ठीक ढंग से करना चाहिए। वाक्य के पदों में पारस्परिक संबंध बताने के लिए संज्ञा और सर्वनाम शब्दों के साथ जिन शब्दों का प्रयोग होता है उन्हें विभक्ति कहते हैं। विभक्तियाँ आठ होती हैं और हर विभक्ति का सूचक एक शब्द होता है जिसे संज्ञा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

या सर्वनाम शब्द के साथ लगाने पर वाक्य के अन्य शब्दों के साथ उनका संबंध दृष्टिगोचर होता है। ये निम्न हैं—

विभक्ति		**सूचक शब्द**
प्रथमा	(कर्त्ता)	ने
द्‌वितीया	(कर्म)	को
तृतीया	(करण)	से
चतुर्थी	(संप्रदान)	के लिए
पंचमी	(अपादान)	से (अलग होने के अर्थ में)
षष्ठी	(संबंध)	का, की, के
सप्तमी	(अधिकरण)	में, पर
अष्टमी	(संबोधन)	हे, अरे, अहो

वाक्य-रचना करते समय विभक्तियों को संज्ञा से अलग करके तथा सर्वनाम के साथ जोड़कर लिखना चाहिए। कुछ लोग विभक्ति को संज्ञा या सर्वनाम से अलग करके लगाने का समर्थन करते हैं।

6. वाक्य-रचना करते समय कर्त्ता और कर्म लगाने के बाद उनके द्‌वारा की जानेवाली क्रिया को स्पष्ट करना होता है। क्रिया का संबंध कर्त्ता या कर्म के साथ होता है। अत: कर्त्ता या कर्म के लिंग और वचन के अनुसार ही क्रिया का रूप लगाया जाता है। इसके लिए निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए :

(क) लिंग—हिंदी भाषा में दो लिंग होते हैं—पुल्लिंग और स्त्रीलिंग।

जो शब्द पुरुष जाति का बोध कराते हैं वे पुल्लिंग और जो स्त्री जाति का बोध कराते हैं वे स्त्रीलिंग कहलाते हैं।

(ख) वचन—हिंदी भाषा में वचन भी दो होते हैं—एकवचन और बहुवचन।

जो शब्द एक वस्तु का बोध कराते हैं वे एकवचन और जो दो या दो से अधिक वस्तुओं का बोध कराते हैं वे बहुवचन के अंतर्गत आते हैं।

हिंदी वाक्य-रचना में क्रिया कर्त्ता या कर्म के लिंग एवं वचन के अनुसार ही अपने रूप का परिवर्तित कर लेती है, वक्ता या लेखक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए।

जैसे—राम पढ़ता है, सीता पढ़ती है।

लड़का जाता है, लड़के जाते हैं।

(ग) यदि कर्त्ता के साथ 'ने' लगा हो तो क्रिया कर्म के लिंग और वचन के अनुसार लगती है। जैसे—

राम ने पुस्तक पढ़ी। सीता ने गाना गाया।

राम ने दो केले खाए। सीता ने आम खाया।

(घ) यदि कर्त्ता के साथ 'ने' तथा कर्म के साथ 'को' लगा होता है तो क्रिया पुल्लिंग एकवचन में होती है जैसे—

मैंने राम को थप्पड़ मारा। सीता ने पुस्तक को पढ़ा।

(ङ) जिन वाक्यों में 'ने' रहित अनेक कर्त्ता हों और उनके लिंग समान हों तथा एकवचन हों, तो क्रिया लिंगानुसार बहुवचन में होती है। जैसे—

सीता और गीता पढ़ रही हैं।

राम और श्याम जा रहे हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(च) जिन वाक्यों में 'ने' रहित, भिन्न-लिंगी और अलग-अलग वचन के अनेक कर्त्ता हों, तो क्रिया अंतिम कर्त्ता के अनुसार होती है। जैसे—

दो पुरूष और चार महिलाएँ जा रही हैं।

(छ) यदि कर्त्ता भिन्न लिंगी और ने रहित हों तो क्रिया पुल्लिंग बहुवचन की होती है। जैसे—

गुरु और शिष्य जा रहे हैं।

भाई-बहिन खाना खा रहे हैं।

(ज) यदि वाक्य में 'ने' रहित अनेक कर्त्ता हों और वे अथवा, या, आदि विभाजक अवयवों से विभक्त किए जा रहे हों तो क्रिया अंतिम कर्त्ता के लिंग व वचन के अनुसार होती है। जैसे—

राम या सीता गाना गाएगी।

(झ) अपने से बड़ों के लिए क्रिया बहुवचन की ही प्रयुक्त होती है। जैसे—

अध्यापक जी पढ़ाएँगे।

(ञ) वाक्य में द्विकर्मक क्रिया होने पर क्रिया का रूप मुख्य कर्म के लिंग व वचन के अनुसार होता है। जैसे—

राम ने सीता को पुस्तक दी।

राम ने सीता को पैन दिया।

7. हिंदी भाषा में वाक्य-रचना करते समय यह भी ध्यान रखना चाहिए कि जिस रूप में कोई कथन कहा जाता है, उसे उसी रूप में दोहराया जाता है। जैसे—

शेर दहाड़कर बोला, मैं तुम्हें खा जाऊँगा।

तुमने कहा था कि मैं नहीं जाऊँगा।

8. वाक्य-रचना करते समय वक्ता या लेखक को यह भी ध्यान रखना चाहिए कि वह वाक्य में उन्हीं शब्दों का चयन करे जो उसके विचारों, भावां या अनुभवों को ठीक-ठीक प्रकट कर सकें। अप्रचलित या बहुत कठिन शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

9. वैसे तो साहित्यिक रचनाओं में लंबे-लंबे संयत वाक्य अच्छे माने जाते हैं परंतु वाक्य का एक गुण लाघवत्व भी है। इससे अभिव्यक्ति में सौंदर्य व सशक्तता आ जाती है। अत: वाक्य-रचना करते समय लाघवत्व का ध्यान रखना चाहिए। जैसे—

''महात्मा गांधी हमारे राष्ट्रपिता थे, बापू थे, जननायक थे और हमारे सच्चे पथ-प्रदर्शक थे।''

10. वाक्य-रचना करते समय वाक्यों के आवश्यक तत्वों—आकांक्षा, योग्यता व शब्दक्रम का पूरी तरह से ध्यान रखना चाहिए।

11. वाक्य में 'भाषा-प्रवाह' का भी पूरा ध्यान रखना चाहिए। वाक्यों की रचना इस प्रकार से की जाए कि श्रोता या पाठक रचना को सुनते-सुनते या पढ़ते-पढ़ते ऊबे नहीं वरन रचना में आदि से अंत तक उसकी रुचि व उत्सुकता बनी रहे।

12. वाक्य-रचना करते समय विराम-चिह्नों के उचित प्रयोग पर भी पूरा-पूरा ध्यान देना चाहिए। विराम-चिह्न वाक्य को सशक्त, शुद्ध, स्पष्ट व सुंदर बनाते हैं। श्रोता या पाठक को अपनी बात अच्छी तरह से समझाने के लिए वक्ता या लेखक अपनी मौखिक या लिखित अभिव्यक्ति में बीच-बीच में कहीं-कहीं थोड़ा-बहुत रुकता है, इस रुकने को विराम कहते हैं और इस विराम को स्पष्ट करने के लिए कुछ चिह्न-विशेष का प्रयोग करते हैं। इन्हें विराम-चिह्न कहते हैं। इन विराम-चिह्नों का ठीक-ठीक प्रयोग होना चाहिए। इनका विस्तृत विवरण हम आगे दे रहे हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस प्रकार से वाक्य-रचना करते समय उपर्युक्त बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए और सावधानीपूर्वक इन नियमों का पालन करते हुए वाक्य-रचना करनी चाहिए तभी वाक्य, भावों तथा विचारों को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करने में समर्थ हो सकेंगे। यदि हम उपर्युक्त बातों का ध्यान रखते हुए व्याकरणसम्मत नियमानुसार और भाव व विचारानुसार शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य-रचना करेंगे तो निश्चित रूप से हमारी अभिव्यक्ति प्रभावशाली एवं सशक्त हो सकेगी।

हिंदी वाक्यों में प्रयुक्त विराम-चिह्न

विचारों को मौखिक या लिखित रूप से अभिव्यक्त करते समय हम बीच-बीच में रुकते हैं। बोलते समय हम अपनी वाणी में आरोह, अवरोह व बलाघात लाकर या क्षणिक रुककर अपने भावों को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करने का प्रयास करते हैं, इससे श्रोता को बात सुनने और समझने में आसानी होती है। इसी प्रकार लिखते समय अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए बीच-बीच में कुछ चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, इन विशेष चिह्नों को ही विराम-चिह्न कहा जाता है।

''हिंदी भाषा में मौखिक या लिखित अभिव्यक्ति के समय वाक्य में प्रयुक्त शब्दों का पारस्परिक संबंध स्पष्ट करने, भाव विचार को अलग-अलग भागों में बाँटने, वाणी में उचित स्वराघात लाने तथा अभिव्यक्ति में अधिक सरलता एवं स्पष्टता लाने के लिए लिपि-चिह्नों के अतिरिक्त जिन विशेष चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें विराम-चिह्न कहते हैं।''

हिंदी भाषा में जिन विराम-चिह्नों का प्रयोग होता है, वे निम्नलिखित हैं :

1. पूर्ण विराम (Full stop)—वाक्य के पूरा होने पर जो चिह्न लगाया जाता है, उसे पूर्ण विराम कहते हैं। पूर्ण विराम का चिह्न (।) है। आजकल कुछ लोग पूर्ण विराम के लिए (।) के स्थान पर (.) का प्रयोग भी करने लगे हैं। जैसे—राम पढ़ता है। राम पढ़ता है. (हिंदी में यह प्रयोग अच्छा नहीं लगता है)।

2. अल्प विराम (Comma)—जब वाक्य में भावाभिव्यक्ति करते समय बहुत कम रुकना पड़े तो अल्प विराम लगाया जाता है। अल्प विराम का चिह्न (,) है। जैसे—राम, लक्ष्मण और सीता वन गए।

3. अर्द्ध विराम (Semicolon)—जब वाक्य में अल्प विराम से कुछ अधिक रुकना पड़े तब अर्द्ध विराम लगाते हैं। अर्द्ध विराम का चिह्न (;) है। इसका प्रयोग उदाहरणसूचक 'जैसे' शब्द से पूर्व प्राय: किया जाता है। जैसे :

''किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम को संज्ञा कहते हैं; जैसे—राम, मोहन, पुस्तक, मेज, दिल्ली आगरा आदि।''

4. प्रश्नसूचक विराम (Sign of Interrogation)—जिस वाक्य में कोई प्रश्न पूछा जाता है उसके अंत में प्रश्नसूचक चिह्न (?) लगाया जाता है। जैसे—''क्या सीता गाना गाएगी ?''

5. विस्मयादिबोधक विराम (Sign of Exclamation)—जिस वाक्य में हर्ष, शोक, भय, चिंता या आश्चर्य आदि के भावों को प्रकट किया जाता है या किसी व्यक्ति विशेष को संबोधित किया जाता है, उसमें विस्मयादिबोधक विराम-चिह्न (!) लगाया जाता है जैसे—

''राम! खड़े हो जाओ।'' ''वाह! कितनी सुंदर साड़ी है!''

''हाय! यह क्या हो गया।'' अथवा ''हाय, यह क्या हो गया!''

''अच्छा! वह पास हो गया।'' अथवा ''अच्छा, वह पास हो गया!''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

6. अपूर्ण विराम (Colon)—जब किसी बात को कुछ अलग करके बताना हो तब अपूर्ण विराम (:) का चिह्न लगाया जाता है, जैसे—किसी ने ठीक ही कहा है : 'पराधीन सपनेहु सुख नाहीं'

7. योजक एवं विभाजक (Hyphen)—योजक या विभाजक चिह्न (-) का प्रयोग निम्न स्थलों पर होता है—

(क) वाक्य में पुनरुक्ति या शब्द-युग्मों में—धीरे-धीरे, जल्दी-जल्दी।

(ख) द्वन्द्व समास युक्त शब्दों में—माता-पिता, राजा-प्रजा आदि।

(ग) 'के बीच में' अर्थ प्रकट करने के लिए—अर्जुन-कृष्ण संवाद, लक्ष्मण-परशुराम संवाद आदि।

(घ) संख्याओं को अक्षरों में लिखा जाने पर—चार-पाँच लोग, दो-तिहाई।

8. रेखिका (Dash)—रेखिका (—) का प्रयोग निम्न स्थलों पर होता है :

(क) शीर्षक और उपशीर्षक के आगे—

(ख) जहाँ उदाहरण देना हो—

(ग) वक्ता के वाक्यों को उद्धृत करने से पूर्व, जैसे—

अध्यापक ने कहा—"बच्चो, खड़े हो जाओ।"

(घ) किसी अवतरण को उद्धृत करते समय लेखक के नाम के पूर्व, जैसे—'अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी'—गुप्त जी।

9. द्वि-बिंदु-रेखिका (Two points dash)—किसी विषय या बात को समझाने के लिए या उदाहरण देने के लिए द्वि-बिंदु-रेखिका (:—) का प्रयोग किया जाता है; जैसे :

संज्ञा किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध कराती है; जैसे:—राम, पुस्तक, दिल्ली आदि।

10. अवतरण चिह्न (Inverted Comma)—इसका प्रयोग निम्न स्थानों पर होता है—

(क) किसी का कथन उसी के शब्दों में उद्धृत करने में अवतरण चिह्न (" ") का प्रयोग होता है, जैसे—कालिदास ने कहा—"शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्"

(ख) कहावतों को लिखते समय—

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है—"लालच बुरी बला है।"

(ग) किसी वाक्य में पुस्तक, व्यक्ति आदि का नाम लिखने में :

'रामचरित मानस' हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि है।

11. संक्षेपक—किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थान के नाम को संक्षेप में लिखने के लिए संक्षेपक (०) चिह्न का प्रयोग होता है जैसे—

प्रधानमंत्री—प्र० मं०, उत्तर प्रदेश—उ० प्र० आदि।

12. हंस पद—लिखते समय वाक्य में जब कोई पद छूट जाता है तो हंसपद (^) का निशान लगाकर उस पंक्ति के ऊपर वह शब्द लिख देते हैं, जैसे—

"राम ने अपनी बहिन को ^पत्र लिखा।"

13. कोष्ठक (Brackets)—कभी-कभी वाक्य में किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान के अन्य नामों को स्पष्ट करने के लिए उन्हें कोष्ठक चिह्न ( ) का प्रयोग कर उसके अंदर लिख देते हैं, जैसे—

"बापू (महात्मा गांधी) ने देश की आजादी के लिए सर्वस्व बलिदान कर दिया।"

नाटक आदि में पात्रों की अभिनय मुद्रा को स्पष्ट करने के लिए कोष्ठक ( ) का प्रयोग करते हैं जैसे—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मोहन (झुककर) : ''मैंने आपकी आज्ञा शिरोधार्य की।''

14. इतिश्री (The End)—किसी रचना के अंत में इतिश्री (—०—) विराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि विराम-चिह्न अनेक प्रकार के होते हैं और इनका प्रयोग वाक्य एवं रचना को प्रभावशाली, सशक्त, स्पष्ट एवं सुबोध बनाता है। अध्यापक को इन विराम-चिह्नों का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए और अपनी अभिव्यक्ति में इनका सावधानीपूर्वक पालन भी करना चाहिए जिससे उसके छात्रों को भी शुद्ध भाषा का अनुकरण करने का अवसर मिल सके।

वाक्य-विश्लेषण
(Sentence-Analysis)

वाक्य-विश्लेषण क्या है ? (What is sentence-analysis?)

वक्ता या लेखक अपने विचारों को वाक्यों में व्यक्त करते हैं तो वाक्य छोटे-छोटे भी हो सकते हैं और लंबे भी। कुछ वाक्य सरल वाक्य होते हैं तो कुछ मिश्रित और संयुक्त। वाक्यों में कर्त्ता, कर्म, क्रिया आदि प्रयुक्त होते हैं। वाक्यों में इन सबको अलग-अलग करके उनका परस्पर संबंध बताना ही वाक्य विश्लेषण कहलाता है। अर्थात ''वाक्य के अंगों को अलग-अलग करके उनके पारस्परिक संबंध को स्पष्ट करना वाक्य-विश्लेषण है।'' इसे वाक्य-विग्रह भी कहते हैं।

वाक्य-विश्लेषण के द्वारा छात्रों को वाक्य के रूप, वाक्य के अंग तथा प्रत्येक शब्द की व्याकरणसम्मत स्थिति का पूर्ण एवं स्पष्ट ज्ञान हो जाता है। इसीलिए व्याकरण की शिक्षा देते समय वाक्य-विश्लेषण के द्वारा छात्रों को शुद्ध वाक्य-रचना का ज्ञान कराना जरूरी होता है।

वाक्य-विश्लेषण में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है

(Points to be Remembered in Analysis)

1. वाक्य के अंगों का छात्रों को पूर्ण ज्ञान कराना चाहिए। वाक्य के दो अंग हैं—उद्देश्य एवं विधेय।

जिसके बारे में बात कही जा रही है उसे उद्देश्य कहते हैं और जो बात कही जा रही है उसे विधेय कहते हैं।

उद्देश्य के भी अपने अंग हैं—(i) कर्त्ता (ii) कर्त्ता का विस्तार

विधेय के भी अपने अंग हैं— (ii) क्रिया (ii) क्रिया का विस्तार

(iii) कर्म (iv) कर्म का विस्तार

(v) पूरक (अपूर्ण क्रिया का पूर्ण कर्त्ता शब्द)

2. वाक्य के अंगों का ज्ञान कराने के पश्चात छात्रों को सरल, मिश्रित आदि वाक्य के प्रकारों का ज्ञान कराना चाहिए। एक ही क्रियावाले छोटे वाक्य को सरल वाक्य कहते हैं और जिस वाक्य के कई उपखंड होते हैं उसे मिश्रित वाक्य कहते हैं। मिश्रित वाक्य में मुख्य वाक्य क्या होता है, उपवाक्य क्या होता है, इसका ज्ञान कराना आवश्यक है।

3. इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि यह बात जरूरी नहीं कि सभी वाक्यों में उद्देश्य और विधेय की उपर्युक्त सातों बातें अवश्य हों। जितनी बातें वाक्य में हों उतनी का ही वर्णन, वाक्य-विश्लेषण करते समय कर देना चाहिए।

4. मिश्रित वाक्य का विश्लेषण करते समय सबसे पहले प्रधान वाक्य और आश्रित वाक्यों को अलग-अलग करना चाहिए, फिर योजक शब्द और फिर सरल वाक्य की तरह विश्लेषण करना चाहिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सरल और मिश्रित वाक्यों का विग्रह निम्न प्रकार से करके बताना चाहिए :

वाक्य	वाक्य भेद	योजक	उद्देश्य		विधेय				
			कर्त्ता	कर्त्ता का विस्तार	क्रिया	कर्म	कर्म का विस्तार	पूरक	क्रिया विशेषण
वे बालक शिष्ट होते हैं	—मुख्य वाक्य		बालक	वे	होते हैं	—	—	शिष्ट	—
जो बड़ों की बात मानते हैं।	—उपवाक्य		जो	—	मानते हैं	बात	बड़ों की	—	—
परिश्रमी बच्चे किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त करते हैं।	सरल वाक्य	—	बच्चे	परिश्रमी	प्राप्त करते हैं	सफलता	—	किसी भी कार्य में	—
भगीरथ ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की।	सरल वाक्य	—	भगीरथ ने	—	पूरी की	प्रतिज्ञा	अपनी	—	—
वह धीरे-धीरे पत्र लिखता है।	सरल वाक्य	—	वह	—	लिखता है	पत्र	—	—	धीरे-धीरे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिंदी वाक्य-रचना शिक्षण (Teaching of Hindi Sentence Compostion)

यह तो स्पष्ट ही हो चुका कि भाषा की इकाई वाक्य है। मानव समाज में रहकर परस्पर विचारों का आदान-प्रदान करता है जो कि उसके स्वाभाविक विकास व सामंजस्य के लिए अत्यावश्यक है। विचारों के आदान-प्रदान के लिए मनुष्य सार्थक ध्वनि-समूहों का प्रयोग करता है और ये ध्वनि-समूह ही पहले शब्द और फिर वाक्य का निर्माण करते हैं। यदि एक व्यक्ति अपनी बात मौखिक या लिखित रूप से दूसरे व्यक्ति तक पहुँचाना चाहता है तो यह नितांत आवश्यक है कि उसके वाक्य जहाँ अर्थपूर्ण हों वहाँ भावपूर्ण भी हों। क्योंकि निरर्थक वाक्यों को तो कोई भी व्यक्ति समझने में असमर्थ रहेगा, साथ ही यदि वाक्य भावशून्य होगा तो सुनने या पढ़नेवाले पर उसका कोई भी प्रभाव नहीं पड़ सकेगा। अर्थात अर्थ ग्रहण करने के पश्चात ही व्यक्ति भावों की गहराई तक पहुँचने का प्रयास करता है।

इस प्रकार वाक्य ही भाषा का वह चरम अवयव है जिसके द्वारा हम अपने भावों और विचारों को अभिव्यक्त करते हैं। अत: वाक्य के बिना भाषा पंगु है और भाषा के अभाव में मानव-समाज मृतप्राय है क्योंकि ऐसी स्थिति में मनुष्य न तो अपने विचार और भाव अभिव्यक्त कर सकेगा और न ही वह अन्य व्यक्तियों के भावों तथा विचारों को ग्रहण कर सकेगा। इस प्रकार से यह स्पष्ट ही है कि विचारों की प्रभावोत्पादक, सार्थक, सशक्त एवं स्पष्ट अभिव्यक्ति के लिए त्रुटि-रहित वाक्य-रचना का ज्ञान व्यक्ति को अवश्य होना चाहिए। शुद्ध वाक्य-रचना के द्वारा ही मौखिक या लिखित रचना सरल, सुबोध, स्पष्ट, सुंदर, गंभीर तथा प्रभावशाली बन सकती है।

अत: भाषा की शिक्षा देते हुए अध्यापक को बहुत ही सतर्कता के साथ वाक्य-रचना की विधिवत शिक्षा देनी चाहिए और शुद्ध वाक्य-रचना का अभ्यास भी कराना चाहिए। इसके लिए अध्यापक को निम्नलिखित प्रयास करने चाहिए—

1. वस्तुत: वाक्य-रचना-शिक्षण व्याकरण-शिक्षण का ही अंग है। अत: वाक्य-रचना-शिक्षण के लिए अध्यापक को उन्हीं विधियों का प्रयोग करना चाहिए जो व्याकरण-शिक्षण के लिए उपयुक्त मानी जाती हैं। जैसे—

आगमन विधि, निगमन विधि, समवाय विधि, भाषा साहचर्य विधि, खेल विधि, प्रयोग विधि आदि।

2. व्याकरण पढ़ाते समय अन्य नियमों के साथ-साथ ही वाक्य-रचना से संबंधित विभिन्न नियमों, तत्वों आदि का पूर्ण ज्ञान देना चाहिए। जैसे—

वाक्य क्या है ? वाक्य के कितने भेद हैं ? वाक्य के कितने अंग हैं ? वाक्य-विश्लेषण क्या है ? वाक्य-विन्यास क्या है ? वाक्य-विन्यास में कौन-कौन-से तत्व होते हैं (कर्त्ता, कर्म, क्रिया, इनके विशेषण, योजक आदि) ?

विराम-चिह्न कौन-कौन-से हैं और उनका प्रयोग कैसे और कहाँ किया जाता है ? इन सब बातों का विस्तृत ज्ञान छात्रों को कराना चाहिए।

3. वाक्य-रचना-तत्वों के पूर्ण ज्ञान के पश्चात वाक्य-रचना का अभ्यास कराना चाहिए। व्याकरण के कालांश में स्वतंत्र रूप से वाक्य-रचना का अभ्यास कराने के साथ-साथ भाषा की अन्य विधाओं का शिक्षण करते हुए भी वाक्य-रचना का अभ्यास कराना चाहिए जैसे—

(क) गद्य-शिक्षण के समय—कहानी, निबंध, नाटक आदि के पाठ पढ़ाते हुए,

(ख) मौखिक या लिखित रचना के समय—पत्र, कहानी, प्रस्ताव आदि लिखवाते हुए, तथा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ग) व्याकरण-शिक्षण के समय भी वाक्य-रचना का अभ्यास कराया जाना चाहिए।

(क) (i) गद्य-शिक्षण के समय कहानी, नाटक, निबंध आदि की विषयवस्तु से संबंधित प्रश्न पूछकर छात्रों को पूरे वाक्य में उत्तर देने के लिए कहना।

(ii) पढ़ाए गए पाठ का सार छात्रों से मौखिक रूप से कहलवाना या लिखवाना।

(iii) शब्दों की व्याख्या करने पर, उन शब्दों को अपने-अपने वाक्य में प्रयुक्त करवाना।

(iv) पढ़ाए गए पाठ से रुचिकर अंश कहलवाना या लिखवाना।

(v) पठित गद्यांश में प्रयुक्त वाक्यों के अलग-अलग भेद पूछना।

(vi) गद्यांश के वाक्यों को सरल वाक्यों में परिवर्तित करवाना।

(ख) मौखिक या लिखित रचना के समय निम्न कार्य कराए जा सकते हैं :

(i) रचना के लिए रुचिकर विषय का चुनाव कर छात्रों से अपने शब्दों में रचना-कार्य करने के लिए कहना।

(ii) पत्र लिखवाना।

(iii) निबंध लिखवाना।

(iv) कहानी कहलवाना या लिखवाना।

(v) संक्षेपीकरण या विस्तारीकरण करवाना।

(vi) अपठित गद्यांश आदि का सार लिखने को कहना।

(vii) रूपरेखा के आधार पर कहानी, निबंध आदि लिखने को कहना।

(ग) व्याकरण-शिक्षण में वाक्य-रचना से संबंधित निम्न कार्य कराए जा सकते हैं :

(i) सरल वाक्यों की रचना करवाना।

(ii) अपूर्ण वाक्यों को पूरा करवाना।

(iii) वाक्यों में लिंग एवं वचन के अनुसार परिवर्तन करवाना।

(iv) शब्दों को अव्यवस्थित क्रम में रखकर उचित क्रम में करने को कहना।

(v) अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करवाना।

(vi) मिश्रित वाक्य-रचना करवाना।

(vii) संयुक्त वाक्य-रचना करवाना।

(viii) विभक्तियों का ठीक-ठीक प्रयोग करवाना।

(ix) वाक्यों में काल के अनुसार क्रिया का प्रयोग करवाना।

(x) वाक्य-विश्लेषण करवाना।

(xi) विराम-चिह्नों का शुद्ध प्रयोग करवाना।

(xii) समानार्थक शब्दों को अलग-अलग वाक्यों में प्रयुक्त करवाना।

इस प्रकार भाषा की शिक्षा देते हुए वाक्य-रचना संबंधी विभिन्न प्रकार के अभ्यास-कार्य कराए जा सकते हैं और इन अभ्यास-कार्यों के द्वारा बच्चों को शुद्ध वाक्य-रचना की शिक्षा दी जा सकती है।

4. ऊपर बताए गए वाक्य-रचना संबंधी अभ्यास-कार्य कराते हुए छात्रों की वाक्य-रचना संबंधी त्रुटियों को पहचानने का प्रयास भी करना चाहिए और उन त्रुटियों को पहचानकर उचित रूप से उनका संशोधन करते हुए उन्हें दूर करने का प्रयास करना चाहिए। छात्र वाक्य-रचना संबंधी निम्न त्रुटियाँ सामान्य रूप से करते हैं :

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(i) शिथिल वाक्य
(ii) शब्दों का अनुचित क्रम
(iii) निरर्थक शब्दों का प्रयोग
(iv) शब्दों की अनावश्यक पुनरुक्ति करना
(v) विरोधी शब्दों का प्रयोग
(vi) विभक्तियों का अशुद्ध प्रयोग
(vii) अस्पष्ट वाक्य
(viii) अप्रचलित या कर्णकटु शब्दों का प्रयोग
(ix) अत्यधिक क्लिष्ट शब्दों का प्रयोग
(x) जटिल वाक्य
(xi) विराम-चिह्नों का अशुद्ध प्रयोग या विराम-चिह्नों का अभाव
(xii) लिंग, वचन आदि के अनुसार क्रिया के प्रयोग का अभाव
(xiii) वाक्यों में प्रयुक्त शब्दों में अशुद्ध अक्षर-विन्यास
(xiv) अधूरे शब्दों का प्रयोग।

5. वाक्य-रचना संबंधी उपर्युक्त त्रुटियों को जानने के पश्चात, उन्हें दूर करने के लिए छात्रों को अधिक-से-अधिक लिखित कार्य कराना चाहिए। उन्हें मौखिक अभिव्यक्ति के अधिक-से-अधिक अवसर प्रदान करने चाहिए।

6. प्रश्न का उत्तर हमेशा पूर्ण वाक्य में लेना चाहिए।

7. जहाँ तक संभव हो, छात्रों को कर्णप्रिय, सरल, प्रचलित एवं अवसरानुकूल शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य-रचना का अभ्यास कराना चाहिए।

8. छात्रों को कम-से-कम शब्दों में अधिक-से-अधिक भाव व्यक्त करने के योग्य बनाने का प्रयास भी करना चाहिए।

9. अध्यापक को प्रेम एवं सहानुभूतिपर्ण व्यवहार प्रदर्शित करते हुए, छात्रों को शुद्ध वाक्य-रचना के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

10. विद्यालय में समय-समय पर मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति संबंधी क्रियाएँ एवं प्रतियोगिताएँ आयोजित करना चाहिए और विजित छात्रों तथा प्रतियोगी छात्रों—सभी को उनके प्रदर्शन के अनुसार पुरस्कृत करना चाहिए।

11. छात्रों को अच्छे-अच्छे लेखकों की रचनाओं को पढ़ने का अवसर प्रदान करना चाहिए।

12. छात्रों को अपने भाव एवं विचार स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त करने के अवसर भी प्रदान करने चाहिए।

इस प्रकार से छात्रों को मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति के उचित अवसर प्रदान कर तथा सावधानी के साथ उनकी त्रुटियों को पहचानकर और साथ-ही-साथ उनमें सुधार लाकर हम छात्रों को शुद्ध, स्पष्ट, सुंदर, कलात्मक एवं प्रभावोत्पादक वाक्य-रचना करने में कुशल एवं सक्षम बना सकते हैं।

अध्ययन के लिए प्रश्न

1. वाक्य किसे कहते हैं ? वाक्य के अंगों पर प्रकाश डालते हुए बताइए कि वाक्य कितने प्रकार के होते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2. वाक्य से क्या अभिप्राय है ? हिंदी में वाक्य-रचना के सामान्य नियम क्या हैं ? उनका पालन करना क्यों आवश्यक है ?

3. वाक्य की परिभाषा देते हुए हिंदी वाक्य-रचना पर प्रकाश डालिए।

4. हिंदी भाषा में कौन-कौन-से विराम-चिह्नों का प्रयोग होता है ? विस्तार से लिखिए। वाक्य-रचना में शिक्षक को कौन-कौन-सी सावधानियाँ बरतनी चाहिए ?

5. वाक्य-विश्लेषण से क्या अभिप्राय है ? वाक्य-विश्लेषण में किन-किन बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए ?

6. हिंदी में प्रयुक्त विराम-चिह्नों का उल्लेख कीजिए और उदाहरणों द्वारा उनका प्रयोग स्पष्ट कीजिए।

7. निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :

(i) वाक्य के अंग

(ii) हिंदी वाक्यों में प्रयुक्त विराम-चिह्न

(iii) हिंदी वाक्य-रचना

(iv) हिंदी वाक्य-रचना के नियम

(v) वाक्य-विश्लेषण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

10

कविता-शिक्षण
(Teaching of Poetry)

कविता क्या है ? (What is Poetry ?)

सामान्य रूप से जो रचना छंदोबद्ध होती है उसे कविता कहा जाता है। कविता के लिए काव्य एवं पद्य—इन दो शब्दों का प्रयोग भी किया जाता है। इन सभी समानार्थक शब्दों में थोड़ा-थोड़ा अंतर है। काव्य शब्द अत्यंत व्यापक है। संस्कृत साहित्य में संपूर्ण साहित्य को काव्य कहा जाता है। काव्य के दो रूप माने जाते हैं—गद्यकाव्य एवं पद्यकाव्य। गद्यकाव्य दृश्य भी होता है और श्रव्य भी परंतु पद्य-काव्य श्रव्यकाव्य कहा जाता है। जहाँ गद्य एवं पद्य दोनों का मिश्रित प्रयोग है उसे चंपूकाव्य कहा जाता है। पद्य शब्द का प्रयोग छंदोबद्ध रचना के लिए किया जाता है। इसमें गति, यति, लय आदि का पूरा-पूरा ध्यान रखा जाता है। कविता छंदोबद्ध भी हो सकती है और छंदरहित भी। इस प्रकार प्रत्येक पद्य-रचना कविता हो सकती है परंतु प्रत्येक कविता पद्य हो, यह आवश्यक नहीं। आज की नई कविता में छंद या लय का किसी भी प्रकार ध्यान नहीं रखा जाता है, इसे पद्य नहीं कहा जा सकता। कविता के स्वरूप के बारे में भिन्न-भिन्न विद्वानों के भिन्न-भिन्न मत हैं।

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार—'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' अर्थात रसयुक्त वाक्य ही काव्य है।

आचार्य आनंदवर्धन के अनुसार—'काव्यस्य आत्मा ध्वनिः' अर्थात काव्य की आत्मा ध्वनि है।

पंडित जगन्नाथ के अनुसार—'रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्' अर्थात रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करनेवाला शब्द काव्य है।

आचार्य कुंतल के अनुसार—'वक्रोक्ति काव्यस्य जीवितम्' अर्थात वक्र उक्ति काव्य का जीवन है।

आचार्य श्यामसुंदर दास के अनुसार—कलात्मक रीति से सजी हुई भाषा, जिसमें भावों की व्यंजना हो, कविता कहलाती है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कविता के रागात्मक तत्व एवं प्रयोजन को स्पष्ट करते हुए, कविता के बारे में अपना मत व्यक्त करते हुए कहा—

"हृदय की मुक्ति-साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द-विधान करती आई है उसे कविता कहते हैं।"

पाश्चात्य विद्वान् **वर्डस्वर्थ** के अनुसार—"शांति के समय स्मरण किए गए प्रबल मनोवेगों का स्वच्छंद प्रवाह कविता है।"

मैथ्यू ऑर्नल्ड के अनुसार—"कविता मूल रूप में जीवन की आलोचना है।"

कविता की इन सभी परिभाषाओं को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि कुछ विद्वान् कविता में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रागात्मकता को महत्त्व देते हैं तो कुछ विद्वान् छंद, अलंकार एवं ध्वनि आदि को। इस प्रकार कविता के दो पक्ष माने जाते हैं—भावपक्ष और कलाकक्ष। भावपक्ष का संबंध काव्य की आत्मा से है और कलापक्ष का संबंध काव्य के शरीर से। सभी विद्वानों के विचारों का विवेचन करने के पश्चात हम कह सकते हैं कि—

—कविता में ताल, लय एवं संगीत की प्रधानता होती है।

—कविता सरस होती है।

—कविता एक प्रबल अनुभूति है।

—कविता में जीवन का समन्वय होता है।

—कविता में कल्पना का सम्मिश्रण होता है।

—कविता में सत्यं, शिवं एवं सुंदरम् की भावना होती है।

कविता-शिक्षण का महत्त्व (Importance of Poetry Teaching)

कहा जाता है—'जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि।' वास्तव में सूर्य तो बाह्य जगत को प्रकाशित करता है, परंतु कवि मानव हृदय को झंकृत कर देता है। कविता मानव को रसमग्न कर, आनंद से भर देती है। कविता-पाठ मानव को भौतिक स्तर से ऊपर उठाकर आध्यात्मिक स्तर पर पहुँचा देता है। इसके अध्ययन से मनुष्य को सुख-दुखादि की अनुभूति उसकी अधिकतम सीमा में होती है। यह सीधी मानव के हृदय पर चोट करती है। तभी तो कहते हैं—जो शक्ति तलवार में नहीं वह कलम में होती है। सचमुच यह शक्ति कलम में नहीं अपितु उसके द्वारा लिखी गई कविता में होती है।

साहित्य समाज का दर्पण कहलाता है। साहित्य का अधिकांश भाग उसका काव्य साहित्य है। भारत के काव्य साहित्य में यहाँ के समाज की संस्कृति, दर्शन, धर्म, आदर्श, मूल्य आदि सभी को प्रभावपूर्ण शैली में, यथार्थ रूप में अभिव्यक्त किया गया है। तुलसीकृत, 'रामचरितमानस' भारतीय जनमानस का प्रिय काव्य है। मैथिलीशरण गुप्त की 'भारतभारती' ने अंग्रेजों की दासता से मुक्त होने के लिए, भारतीय नवयुवकों में स्वतंत्रता की जो चिनगारी सुलगाई, उसकी कोई तुलना नहीं। महाराज जयसिंह को राजकार्य की ओर उन्मुख करने के लिए जो कार्य उनका कोई भी सभासद नहीं कर सका, वह कार्य बिहारी के एक दोहे ने कर दिया।

अत: भाषा की शिक्षा प्रदान करते समय जहाँ बच्चों को निबंध, कहानी नाटक आदि विभिन्न साहित्यिक विधाओं का अध्ययन कराया जाता है, वहाँ कविता का अध्ययन भी आवश्यक हो जाता है। यह बच्चों को सौंदर्यानुभूति एवं रसानुभूति की भावना को विकसित कर उनमें रागात्मकता का संचार करती है। बच्चों को मानव-जीवन के विविध पक्षों से परिचित कराती है। उन्हें समाज की विभिन्न समस्याओं से परिचित कराकर, उनका समाधान करने के लिए प्रेरित करती है। उन्हें समाज-विशेष के जीवन, दर्शन एवं धर्म से परिचित कराकर देश, जाति एवं धर्म के प्रति उनमें स्थायी भावों का निर्माण करती है। उनकी कल्पना-शक्ति को विकसित कर उनमें सरसता को प्रवाहित करती है। यह बच्चों की सात्विक भावनाओं को जाग्रत करके उन्हें मानव-कल्याण के लिए प्रेरित करती है।

गद्य एवं पद्य में अंतर (Distinction between Prose and Poetry)

जैसा कि पहले स्पष्ट किया गया है पद्य छंदोबद्ध रचना होती है परंतु गद्य छंदोबद्ध रचना नहीं होती है। पद्य में लय, यति, गति आदि का पूरा-पूरा ध्यान रखा जाता है, परंतु गद्य में यह आवश्यक नहीं। पद्य का संबंध व्यक्ति के हृदय से होता है और गद्य का संबंध व्यक्ति के विचारों से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

होता है। परंतु इसका यह अर्थ नहीं कि गद्य भाव-रहित है और पद्य विचार-रहित। तात्पर्य यह है कि पद्य में विचारों की अभिव्यक्ति होते हुए भी भावों की प्रधानता होती है और गद्य मुख्यत: विचार-प्रधान होता है। पद्य में कवि कल्पना की उड़ान भरता है जबकि गद्य में लेखक यथार्थ के धरातल को नहीं छोड़ पाता है। गद्य की तुलना में पद्य में रोचकता का अंश अधिक होता है।

कविता-शिक्षण के उद्देश्य (Aims of Poetry Teaching)

किसी भी विषय का शिक्षण प्रयोजन-रहित नहीं होता है। साहित्य की अन्य विधाओं की तरह कविता-शिक्षण के भी अपने लक्ष्य होते हैं। यों तो ये लक्ष्य कविता विशेष और कक्षा-विशेष के छात्रों के मानसिक स्तर पर आधारित होते हैं, परंतु सामान्य रूप से इन उद्देश्यों को हम निम्नलिखित रूप से स्पष्ट कर सकते हैं—

1. छात्रों को पूर्ण मनोयोग से कविता-पाठ सुनने के योग्य बनाना।
2. छात्रों को कविता-पाठ सुनाकर उसका अर्थ ग्रहण करने एवं भावानुभूति करने के योग्य बनाना।
3. छात्रों को उचित गति, आरोह-अवरोह एवं भावानुसार कविता-पाठ करने के योग्य बनाना।
4. छात्रों को कविता-पाठ कर उसका अर्थ ग्रहण करने एवं रसानुभूति करने के योग्य बनाना।
5. छात्रों में कविता के रस की अनुभूति कर उसके सौंदर्य की अनुभूति करने और अंत में परमानंदानुभूति करने की क्षमता विकसित करना।
6. छात्रों में कविता को पढ़कर अपने शब्दों में उसका अर्थ एवं भाव स्पष्ट करने की योग्यता विकसित करना।
7. छात्रों की कल्पना-शक्ति को विकसित करना।
8. कविता-पाठ के द्वारा छात्रों की रागात्मक वृत्तियों का परिष्कार करना।
9. कविता और साहित्याध्ययन में छात्रों की रुचि उत्पन्न करना।
10. छात्रों को शब्द-योजना, शब्द-शक्तियों, छंदों, अलंकारों, रसों आदि काव्य-तत्वों का ज्ञान कराना।
11. छात्रों को कविता के माध्यम से मानव-जीवन के विविध पक्षों का ज्ञान कराना।
12. कविताओं के द्वारा छात्रों को अपने देश व समाज की संस्कृति, धर्म तथा दर्शन से परिचित कराना।
13. छात्रों की सृजनात्मक शक्तियों को विकसित कर उन्हें कविता की रचना करने के लिए प्रेरित करना।
14. छात्रों को कविता की समीक्षा करने के योग्य बनाना।
15. छात्रों को विभिन्न काव्य-शैलियों से परिचित कराना।
16. छात्रों को इस योग्य बनाना कि वे कवि की भावनाओं के साथ अपनी भावनाओं का तादात्म्य स्थापित कर सकें।
17. छात्रों की चित्तवृत्तियों का परिष्कार कर उनमें उच्च आदर्शों का निर्माण करना।
18. छात्रों में अपनी सभ्यता, संस्कृति एवं सामाजिक आदर्शों के अनुकूल आचरण करने की प्रवृत्ति विकसित करना।

कविता-शिक्षण के इन सामान्य उद्देश्यों के साथ हमें यह भी देखना पड़ता है कि किसी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कविता-विशेष को पढ़ाने से बच्चों को भाषा एवं विषय का ज्ञान दिया जा सकता है तथा उस कविता के द्वारा छात्रों में किन रुचियों और अभिवृत्तियों का विकास किया जाएगा। इन बातों का निर्धारण हर कविता के लिए अलग-अलग होता है। इन्हें कविता-शिक्षण के विशिष्ट लक्ष्य कहा जाता है। ये निम्न हो सकते हैं—

1. कविता-विशेष में वर्णित भावों को समझने में छात्रों की सहायता करना।

2. छात्रों को इस योग्य बनाना कि कविता-विशेष में वर्णित भावों व विचारों को समझकर उन्हें आत्मसात कर सकें।

3. छात्रों को इस योग्य बनाना कि वे कविता-विशेष में व्यक्त की गई जीवन की व्याख्या को समझ सकें।

4. छात्रों को कविता-विशेष में वर्णित कवि का संदेश ग्रहण करने के योग्य बनाना।

5. छात्रों को कवि-विशेष की काव्य-शैली एवं रचनाओं से परिचित कराना।

6. छात्रों को कवि-विशेष की अन्य रचनाएँ पढ़ने के लिए प्रेरित करना।

7. छात्रों को कविता एवं कवि-विशेष की काव्यगत समीक्षा करने के योग्य बनाना।

किसी भी पद्य पाठ की पाठ-योजना बनाते समय तथा कक्षा में पढ़ाते समय अध्यापक को इन सामान्य और विशेष उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए यथासंभव प्रयत्नशील रहना पड़ता है ताकि अध्ययन-अध्यापन की प्रक्रिया सार्थक दृष्टि से आगे बढ़ती रहे।

कविता शिक्षण की विधियाँ
(Methods of Teaching Poetry)

कविता पढ़ाने की अनेक विधियाँ हैं। अध्यापक अपने कविता-शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए छात्रों के मानसिक एवं बौद्धिक स्तर के अनुरूप किसी भी प्रणाली को अपना सकता है। ये विधियाँ निम्नलिखित हैं :

1. गीत-विधि (Method of Singing)—कविता-शिक्षण की इस विधि में सर्वप्रथम अध्यापक ताल, लय एवं स्वर के साथ स्वयं बालगीत का पठन करता है। इसके बाद बच्चों को अध्यापक का अनुकरण करने के लिए कहा जाता है। छात्र और अध्यापक मिलकर हाथ से ताल देते हुए बालगीत को लय के अनुसार गाते हैं।

यह विधि प्रारंभिक कक्षाओं में बच्चों को कविता सिखाने के लिए बहुत उपयोगी होती है। बच्चों को संगीत बहुत प्रिय होता है। उन्हें गीत गाने में बहुत आनंद आता है। अत: गीत-विधि से सिखाई गई कविता उन्हें आसानी से याद हो जाती है। शैशवावस्था में बच्चे जिन बालगीतों को खेल-खेल में गाते हैं, उनकी बच्चों के हृदय पर अमिट छाप पड़ती है। गीत गाने से बच्चों के हृदय झंकृत होते हैं और उनका भावात्मक विकास उचित रूप से होता है।

इस विधि का पूरा फायदा उठाने के लिए यह जरूरी है कि अध्यापक बहुत सावधानी के साथ बालगीतों का चुनाव करे। ये बालगीत सरल तुकबंदियाँ होते हैं। वाक्य छोटे-छोटे और सरल भाषा में होते हैं। इस कविता में वर्णित बातें बच्चों के जीवन, वातावरण एवं अनुभव की परिधि के भीतर की होती हैं। ये मनोरंजक होने चाहिए एवं इनमें योग्यता होनी चाहिए। उदाहरण के लिए निम्न कविता ली जा सकती है :

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"सड़क बनी है लंबी-चौड़ी
इस पर जाती मोटर दौड़ी।
सब बच्चे पटरी पर जाओ,
बीच सड़क पर कभी न जाओ।
जाओ तो दब जाओगो,
चोट लगेगी पछताओगे।"

2. अभिनय-विधि (Dramatisation Method)—यह विधि गीत-विधि का ही विकसित रूप है। बहुत से बालगीत अभिनय-प्रधान होते हैं। बच्चों की भी अभिनय में स्वाभाविक रुचि होती है। अत: ऐसे बालगीतों का चयन कर, बच्चों से बालगीत में वर्णित विषय के अनुसार अंगसंचालन कराते हुए वाचन कराया जाता है। इस विधि में पहले अध्यापिका या अध्यापक कविता का सस्वर पठन करते हुए अंगसंचालन करते हैं और बच्चे उन्हें ध्यान से सुनते व देखते हैं। तदुपरांत अध्यापक का अनुकरण करते हुए छात्र बालगीत को गाते हैं औंर उसी तरह अभिनय करते हैं।

इस विधि का प्रयोग व्यक्तिगत व सामूहिक दोनों रूपों में किया जा सकता है। जिन बालगीतों में कई पात्र होते हैं, उनमें शिक्षण के लिए बच्चों को अलग-अलग पात्र की भूमिका में खड़ा कर दिया जाता है और वे बच्चे अपनी-अपनी भूमिका के अनुसार कविता की पंक्ति का साभिनय पठन करते हैं।

सामूहिक रूप से इस विधि का प्रयोग करने के लिए बच्चे शिक्षक का अनुकरण करते हुए कविता का सामूहिक रूप से साभिनय पठन करते हैं। जैसे निम्न कविता को सामूहिक अभिनय द्वारा पढ़ाया जा सकता है—

"यह भारतवर्ष हमारा है, हमको प्राणों से प्यारा है।
है यहाँ हिमालय खड़ा हुआ, संतरी सरीखा अड़ा हुआ।
गंगा की निर्मल धारा है, यह भारतवर्ष हमारा है।"

इस बालगीत में सभी छात्र एक साथ अपना दाहिना हाथ उठाकर सामने घुमाते हुए अपने वक्षस्थल की ओर लाते हैं (यह दर्शाने के लिए कि भारतवर्ष हमारा है)। फिर बाएँ हाथ को ऊपर की ओर घुमाते हुए वक्षस्थल की ओर लाते हैं (यह बताने के लिए कि यह देश हमें अपने प्राणों से भी ज्यादा प्यारा है)। उत्तर दिशा की ओर हाथ उठाकर इशारा करते हुए (हिमालय के खड़े होने का संकेत करने के लिए) फिर सामने की ओर सावधान होने की स्थिति में दृढ़तापूर्वक मुट्ठी बाँधकर (संतरी की तरह खड़ा होने का संकेत करने के लिए) अभिनय करते हैं। इसके बाद अपने एक हाथ या दोनों हाथों को सामने, नीचे की ओर लहराते हुए, अभिनय करके यह दर्शाते हैं कि यहाँ गंगा की निर्मल धारा बह रही है।

जब बच्चे इस प्रकार गीत गाते हुए अभिनय करते हैं तब बच्चों की प्रसन्नता और उत्साह तो देखते ही बनता है। वास्तव में इस विधि से कविता की शिक्षा देने से बच्चों की कविता में रुचि विकसित होती है, उन्हें कविता आसानी से कंठस्थ हो जाती है, उनके गायन व अभिनय की स्वाभाविक रुचि संतुष्ट होती है, कक्षा में जीवन बना रहता है और बच्चे सक्रिय रहते हैं। इस विधि के सफल प्रयोग के लिए यह जरूरी है कि बालगीतों का चुनाव सावधानीपूर्वक हो, इसका प्रयोग केवल छोटी कक्षाओं तक सीमित रहे और इस बात का ध्यान रखा जाए कि बच्चे अनावश्यक अंगसंचालन न करें।

3. शब्दार्थ-कथन विधि—पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं के उपरांत प्राय: सभी अध्यापक कविता पढ़ाने के लिए इसी विधि का प्रयोग करते हैं। इस विधि में सर्वप्रथम अध्यापक या तो स्वयं कविता का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
पठन करता है या कुछ छात्रों से उसका पठन करवा लेता है और साथ-साथ उसका अर्थ बताता जाता है। अथवा कविता की एक-एक पंक्ति को पढ़ाते हुए, उसमें आए कठिन शब्दों का अर्थ बताकर, पूरी पंक्ति का सरल गद्यानुवाद कर देता है। उदाहरण के लिए माखनलाल चतुर्वेदी की प्रसिद्ध कविता 'पुष्प की अभिलाषा' पढ़ाते हुए अध्यापक सर्वप्रथम इस कविता की प्रथम पंक्ति का वाचन करेगा —''चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ।'' फिर सुरबाला का अर्थ देवकन्या बताकर, संपूर्ण पंक्ति का सरलार्थ इस प्रकार करेगा—''इस पंक्ति में श्री माखनलाल चतुर्वेदी एक पुष्प के माध्यम से कह रहे हैं कि मैं देवकन्या के गहनों अर्थात आभूषणों में गुँथना नहीं चाहता हूँ।'' इसी प्रकार सभी पंक्तियों का वाचन करते हुए सरलार्थ करा दिया जाता है।

यह विधि कविता-शिक्षण के लिए बिलकुल भी उपयोगी नहीं है। इसमें छात्र निष्क्रिय श्रोता के रूप में बैठे रहते हैं और कविता-शिक्षण नीरस हो जाता है। छात्रों को कविता का अर्थ तो समझ आ जाता है परंतु कविता की भावानुभूति एवं रसानुभूति उन्हें नहीं हो पाती है।

4. व्याख्या विधि (Method of Explanation)—इस विधि में अध्यापक कविता का सस्वर पठन करने या बच्चों से पठन करवाने के उपरांत स्वयं या छात्रों की सहायता से कविता के सभी आवश्यक स्थलों की व्याख्या करता है। छात्रों से प्रश्न पूछकर उनके उत्तरों की सहायता से कविता का अर्थ स्पष्ट करने के साथ उनमें निहित प्रसंगों की चर्चा भी करता है। कविता में प्रयुक्त छंद, अलंकार एवं रस आदि का स्पष्टीकरण करता है और कवि के साथ छात्रों का रागात्मक संबंध स्थापित कराते हुए उन्हें कविता की भावानुभूति एवं रसानुभूति करने में सहायता करता है।

माध्यमिक एवं उच्च दोनों स्तरों की कक्षाओं में कविता-शिक्षण के लिए यह विधि अत्यंत उपयोगी मानी जाती है। यह विधि छात्रों को सक्रिय रखती है। कविता का भावानुकूल वाचन होने से कविता-शिक्षण सरस बना रहता है। आवश्यक प्रसंगों आदि की व्याख्या होने से छात्रों को कविता का अर्थ एवं भाव ग्रहण करने में सुगमता हो जाती है। आवश्यकता इस बात की है कि अध्यापक पठन और व्याख्या केवल स्वयं ही न करे बल्कि वह छात्रों की सहायता से ही कविता की व्याख्या करे और छात्रों से कविता का भावानुकूल पठन कराए।

5. खंडान्वय-विधि (Part or Factor Method)— इस विधि में सर्वप्रथम अध्यापक स्वयं या छात्रों से कविता का सस्वर पाठ करवाता है। तत्पश्चात संपूर्ण कविता को छोटे-छोटे क्रमिक खंडों में विभाजित कर लिया जाता है। हर खंड पर एक या अधिक प्रश्नों का निर्माण कर लिया जाता है। ध्यान यह रखा जाता है कि इन प्रश्नों का आपस में संबंध हो। अध्यापक क्रमपूर्वक एक-एक प्रश्ना छात्रों से पूछता है और छात्र प्रश्नों का उत्तर देते हैं। इन उत्तरों के माध्यम से अध्यापक कविता के भाव को स्पष्ट कर देता है। छात्रों के द्वारा अपेक्षित उत्तर न दिए जाने पर अध्यापक स्वयं कविता के अर्थ एवं भाव का स्पष्टीकरण कर देता है। उदाहरण के लिए कबीरदास जी का ''गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूँ पाँय'' दोहा पढ़ाने के लिए निम्न प्रकार से प्रश्नों का निर्माण किया जा सकता है।

प्रश्न 1. कबीर के सामने कौन दो महान विभूतियाँ खड़ी हुई हैं?

2. इन दोनों को अपने सामने उपस्थित देखकर कवि के मन में क्या संशय पैदा हो रहा है?

3. यह संशय पैदा क्यों हो रहा है?

4. 'चरण-स्पर्श' किस बात का प्रतीक है?

5. अंत में कवि क्या निर्णय लेता है?

6. गुरु के चरण-स्पर्श करने का निर्णय क्यों लेते हैं?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आवश्यकता पड़ने पर अध्यापक अपने कथन के द्वारा दोहे के भाव को स्पष्ट कर सकता है।

यह प्रणाली मनोवैज्ञानिक मानी जाती है। इसमें 'पूर्ण से अंश एवं सरल से कठिन की ओर' शिक्षण-सूत्रों का पालन किया जाता है। प्रश्नोत्तर के माध्यम से कविता-शिक्षण होने के कारण छात्रों को बराबर सक्रिय रहना पड़ता है। कक्षा में जीवन रहता है। छात्रों को भावानुभूति एवं रसानुभूति में सहायता मिलती है। पाठ के विकास में छात्रों का सक्रिय सहयोग होने के कारण कविता-शिक्षण को अधिक-से-अधिक रोचक बनाया जा सकता है।

6. व्यास-विधि (Detailed Discussion Method)—यह विधि व्याख्या-विधि का ही विकसित रूप है। इसे व्यास-विधि इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसमें अध्यापक कविता पढ़ाते समय उसी पद्धति का अनुकरण करता है जिसे कथावाचक व्यास गद्दी पर बैठकर कथा कहने के लिए अपनाते हैं। दूसरे, इसमें हर दृष्टि से कविता का व्यास अर्थात विस्तार किया जाता है।

जिस तरह कथावाचक कथा के एक-एक भाव या स्थल को स्पष्ट करने के लिए अनेक उदाहरण एवं दृष्टांत देते हैं, एक-एक शब्द के गूढ़ अर्थ को समझाने का प्रयास करते हैं, भाषा एवं भाव के हर तत्व की विस्तृत व्याख्या करते हैं, उसी प्रकार इस विधि में अध्यापक कविता के अर्थ एवं भाव को स्पष्ट करने के लिए उसमें छिपी पौराणिक, ऐतिहासिक आदि कथाओं को स्पष्ट करता है, प्रसंगों की व्याख्या करता है, कविता की भाषा एवं शैली का विस्तृत विवेचन करता है, कविता के तत्वों—भाव, छंद, अलंकार, रस आदि का दार्शनिक विवेचन करता है और इस तरह कविता के संपूर्ण भाव को स्पष्ट कर देता है।

यह विधि केवल उच्च कक्षाओं में कविता-शिक्षण के लिए उपयोगी मानी जाती है। इसके लिए अध्यापक को कविता संबंधी सभी तत्वों की विस्तृत जानकारी होना आवश्यक है। इसमें अध्यापक को अधिक सक्रिय रहना पड़ता है, छात्र निष्क्रिय हो जाते हैं। अत: इसके सफल प्रयोग के लिए यह आवश्यक है कि अध्यापक कविता पढ़ाते समय बीच-बीच में छात्रों का सक्रिय सहयोग लेता रहे। अध्यापक इस बात का भी ध्यान रखे कि कविता-शिक्षण रोचक होने के स्थान पर कहीं दुरूह न हो जाए। अंतर्कथाओं, उदाहरणों, दृष्टांतों आदि का प्रयोग छात्रों को कविता के भाव हृदयंगम कराने के लिए किया जा रहा है, कविता को नीरस बनाने के लिए नहीं। एक निश्चित परिधि में रहकर इस विधि का प्रयोग माध्यमिक कक्षाओं में भी किया जा सकता है।

7. तुलना-विधि (Comparative Method)—इस विधि में अध्यापक पढ़ाई जानेवाली कविता की तुलना उसी भाषा की अथवा अन्य भाषाओं की समानार्थक कविताओं के साथ करता हुआ पाठ्य कविता का स्पष्टीकरण करता है। वास्तव में यह कोई नवीन विधि नहीं है अपितु सभी पूर्ववर्णित विधियों का ही परिवर्तित रूप है। किसी भी विधि से कविता पढ़ाते हुए किसी अन्य समानार्थक कविता से तुलना की जा सकती है।

इस विधि का प्रयोग प्राथमिक स्तर पर नहीं किया जाता है। माध्यमिक एवं उच्च स्तर पर इस विधि का प्रयोग किया जाना चाहिए। इस विधि का प्रयोग करने के लिए अध्यापक को साहित्य का विस्तृत ज्ञान होना आवश्यक है। अर्थ में समानता रखनेवाली विभिन्न कविताओं की जानकारी आवश्यक है। कविता के तत्वों का भी विस्तृत ज्ञान आवश्यक है, क्योंकि तुलना करते समय दोनों कविताओं के भाषा एवं भाव संबंधी सभी समान एवं असमान तत्वों की व्याख्या करनी पड़ती है।

छात्रों को विस्तृत ज्ञान देने की दृष्टि से यह विधि उपयोगी है, परंतु इसका प्रयोग करते समय छात्रों के आयु-स्तर, योग्यता एवं भाषा संबंधी ज्ञान को ध्यान में रखना आवश्यक है। अध्यापक को पाठ्य कविता की तुलना उस समानार्थक कविता से करनी चाहिए जिसका उसे पर्याप्त ज्ञान हो। अध्यापक को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
दोनों कविताओं की समानताओं एवं असमानताओं का निष्पक्ष विवेचन करना चाहिए। साथ ही तुलना करते समय अध्यापक को विषय से भटकना नहीं चाहिए।

8. समीक्षा-विधि (Critical Analysis Method)—यह विधि भी व्याख्या-विधि का विस्तृत एवं परिवर्तित रूप है। इसमें कविता की समीक्षात्मक व्याख्या की जाती है अर्थात कविता का भावपक्ष एवं कलापक्ष दोनों के दृष्टिकोण से आलोचनात्मक विवेचन किया जाता है। अध्यापक छात्रों को संदर्भ-ग्रंथों एवं समीक्षा-ग्रंथों के नाम बता देता है और छात्र स्वयं उन ग्रंथों का अध्ययन कर पाठ्य कविता की भाषा, भाव, रस, अलंकार आदि के गुण-दोषों का विवेचन करते हैं।

इस विधि का प्रयोग उच्च कक्षाओं में किया जाता है जबकि छात्रों को समीक्षा के सिद्धांतों का ज्ञान करा दिया गया हो और उनमें काव्य-सिद्धांतों की कसौटी पर कविता को परखने की क्षमता विकसित हो चुकी हो।

कविता के रसपाठ एवं बोधपाठ में अंतर

(Distinction between Appreciation lessons and Knowledge lessons of the Poetry)

कविता-शिक्षण के उद्देश्यों का वर्णन करते समय यह स्पष्ट किया गया था कि कविता-शिक्षण के द्वारा सर्वप्रथम छात्रों में ध्यानपूर्वक कविता-पाठ सुनने एवं स्वयं उचित ताल, लय आरोह-अवरोह तथा भावानुसार कविता-पाठ करने की योग्यता का विकास किया जाता है ताकि छात्र कविता के अर्थ को ठीक-ठीक ग्रहण कर सकें। जब तक छात्रों को कविता के अर्थ का बोध नहीं होता तब तक वे उस कविता के भाव की अनुभूति नहीं कर सकते और भावानुभूति के बिना रसानुभूति और रसानुभूति के अभाव में आनंदानुभूति भी नहीं हो सकती। अर्थात कविता-शिक्षण का प्रथम सोपान अर्थानुभूति, दूसरा सोपान भावानुभूति, तीसरा सोपान रसानुभूति और चौथा सोपान आनंदानुभूति है। और यदि संभव हुआ तो इसके बाद पाँचवाँ सोपान भी है—परमानंदानुभूति।

कविता-शिक्षण के प्रथम दो सोपानों के लिए जिस प्रकार का कविता-शिक्षण होता है उसे बोधपाठ कहते हैं तथा अगले दो या तीन सोपानों के लिए होनेवाले कविता-शिक्षण के पाठ को रसपाठ कहा जा सकता है। परंतु इन दोनों पाठों को अलग-अलग करना उचित नहीं। ये तो कविता-शिक्षण के सोपान हैं। कविता के अर्थ का बोध होने के उपरांत उसी पाठ से छात्रों को काव्य की रसानुभूति एवं आनंदानुभूति कराई जाती है। जब तक छात्रों को कविता में प्रयुकत शब्दों के अर्थ तथा उनमें निहित भावों को नहीं समझाया जाता तब तक उन्हें रसानुभूति एवं आनंदानुभूति हो ही नहीं सकती है। अर्थात कविता के अर्थ को समझे बिना कविता-शिक्षण के लक्ष्यों को पूर्णता के साथ प्राप्त नहीं किया जा सकता। कविता-शिक्षण के अंतिम लक्ष्य तक पहुँचने के लिए प्राथमिक लक्ष्यों को प्राप्त करना आवश्यक है। बच्चों को कविता के भाव के अनुरूप सस्वर पाठ के योग्य बनाना रसपाठ का कार्य है, अतः इन दोनों पाठों को अलग-अलग नहीं किया जा सकता है। दोनों पाठों के सफलतापूर्वक शिक्षण से ही कविता-शिक्षण के लक्ष्यों को पूरी तरह से प्राप्त किया जा सकता है। कविता-शिक्षण को रोचक, सरस एवं प्रभावशाली बनाने में दोनों पाठों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। ये दोनों पाठ एक-दूसरे के पूरक हैं।

कविता-शिक्षण में प्रयुक्त सोपान

(Various Steps involved in Teaching of Poetry)

हिंदी भाषा की शिक्षा में कविता-शिक्षण का महत्त्वपूर्ण स्थान है। कविता की शिक्षा के द्वारा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छात्रों को अपने देश, जाति तथा समाज के दर्शन तथा धर्म से परिचित कराकर, उनकी रुचियों तथा अभिवृत्तियों को सामाजिक आदर्शों के अनुकूल बनाने का प्रयास किया जाता है, परंतु इन सबकी प्राप्ति इतनी आसान नहीं। इसके लिए कविता का प्रभावशाली शिक्षण आवश्यक है। कविता-शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए निम्नलिखित सोपानों का पालन करना चाहिए :

1. प्रस्तावना—यह कविता-शिक्षण का प्रथम सोपान है। प्रस्तावना के द्वारा ही छात्रों के अर्जित ज्ञान के साथ नवीन ज्ञान जोड़ा जाता है और नए पाठ की तरफ आकर्षित किया जाता है। अत: प्रस्तावना रोचक, सरल, प्रेरक, आकर्षक एवं अनुकूल होनी चाहिए। प्रास्तावना द्वारा ही कविता-शिक्षण के अनुरूप वातावरण का निर्माण किया जाता है। यह अनेक प्रकार से की जा सकती है। अध्यापक को छात्रों के स्तर तथा पाठ्य कविता के भाव के अनुसार किसी भी उचित ढंग का चुनाव कर लेना चाहिए।

(i) कवि-परिचय द्वारा—इसमें कवि ने कविता क्यों लिखी, इसके बारे में तथा कवि के बारे में बताया जाता है। यह ढंग उच्च कक्षाओं के लिए उपयुक्त है, निम्न या माध्यमिक के लिए नहीं।

(ii) कविता के भावों का संक्षिप्त परिचय देकर।

(iii) कविता के अनुकूल वातावरण का निर्माण करके।

(iv) समानार्थक कविता की कुछ पंक्तियों का वाचन करके।

(v) कविता से संबंधित प्रसंग या घटना का वर्णन करके।

(vi) कविता से संबंधित प्रश्नोत्तर द्वारा।

(vii) मूल कविता के पाठ द्वारा।

प्रस्तावना किसी भी ढंग से की जाए, यह संक्षिप्त एवं प्रेरक होनी चाहिए।

उद्देश्य-कथन—प्रस्तावना में छात्रों को मूल कविता की तरफ आकर्षित करने के लिए प्रश्न आदि के बाद अध्यापक को अपने उद्देश्य की घोषणा भी करनी होती है। उद्देश्य-कथन के बिना प्रस्तावना पूरी नहीं होती है। अत: अध्यापक को रोचक एवं उत्साहजनक ढंग से उद्देश्य की घोषणा करनी चाहिए।

2. प्रस्तुति—कविता-शिक्षण का मूल भाग यह 'प्रस्तुतीकरण' सोपान है। इस सोपान के अंतर्गत ही छात्रों को कविता की भावानुभूति एवं रसानुभूति कराई जाती है। इसमें अध्यापक को सबसे पहले आदर्श पठन करना होता है, उसके बाद छात्रों द्वारा अनुकरण पठन, फिर शब्दार्थ-कथन, भाव-व्याख्या, भाव-विश्लेषण एवं सौंदर्यानुभूति करानी चाहिए।

(क) आदर्श पठन—कविता-शिक्षण का महत्त्वपूर्ण पक्ष आदर्श पठन है। रायबर्न ने कहा है कि कविता चाहे किसी भी कक्षा में पढ़ाई जाए, अध्यापक का सबसे पहला कार्य यह है कि वह कविता का सस्वर वाचन करे। अध्यापक की वाचन-क्षमता पर ही यह निर्भर है कि छात्रों को कविता का क्या लाभ प्राप्त हुआ है। कविता श्रव्य काव्य है। अध्यापक के आदर्श पठन को सुनकर ही छात्र कविता के भाव को समझ जाते हैं। अत: अध्यापक को अपने वाचन को प्रभावशाली बनाने के लिए निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए :

(i) पढ़ाई जानेवाली कविता अध्यापक को पहले कई बार पढ़ लेनी चाहिए।

(ii) कविता का वाचन भावानुकूल होना चाहिए।

(iii) कविता उचित लय, हाव-भाव एवं आरोह-अवरोह के साथ पढ़नी चाहिए।

(vi) कविता-पाठ करते समय उचित एवं स्वाभाविक अंगसंचालन भी करना चाहिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(v) वाचन करते समय पुस्तक पकड़ने का ढंग, खड़े होने का ढंग आदि भी आकर्षक एवं प्रभावशाली होने चाहिए।

वैसे तो अध्यापक को एक बार ही वाचन करना चाहिए, यदि आवश्यकता हो तो अध्यापक दूसरी बार भी वाचन कर सकता है, परंतु इससे ज्यादा बार-बार नहीं करना चाहिए।

(ख) अनुकरण वाचन—अध्यापक के आदर्श वाचन के पश्चात छात्रों द्वारा अनुकरण वाचन कराना चाहिए। पहले किसी योग्य भावानुकूल वाचन करनेवाले छात्र से कविता का सस्वर वाचन कराना चाहिए। यदि छात्र अनुकरण वाचन में उच्चारण संबंधी कोई अशुद्धि करे तो उसे बीच में टोकना नहीं चाहिए बल्कि बाद में आदर्श पठन द्वारा शुद्ध करने का प्रयास करना चाहिए। बीच में टोकने से स्वर-प्रवाह में बाधा पड़ती है। बाद में अन्य छात्रों से भी वाचन कराना चाहिए।

कविता-शिक्षण में मौन वाचन नहीं होता है।

(ग) शब्दार्थ-कथन—छात्रों द्वारा कविता का अनुकरण पठन किए जाने के पश्चात अध्यापक को कविता में प्रयुक्त कठिन शब्दों का अर्थ स्पष्ट करना चाहिए। अर्थ के लिए केवल उन्हीं शब्दों को चुनना चाहिए जो भाव एवं सौंदर्य को निखारते हों। शब्द-भंडार में वृद्धि करना कविता-शिक्षण का उद्देश्य नहीं है। अत: शब्दों की विस्तृत व्याख्या या व्याकरण के नियमों की व्याख्या के लिए कविता-शिक्षण में कोई स्थान नहीं। प्रतीकात्मक या लाक्षणिक शब्दों का अर्थ भी संक्षिप्त रूप से बता देना चाहिए।

(घ) भाव-विश्लेषण एवं सौंदर्यानुभूति—कविता श्रव्य काव्य है, यह आनंदानुभूति का विषय है। यदि कविता-शिक्षण से छात्रों को आनंद की अनुभूति होती है तो उसे सफल मानना चाहिए। आनंदानुभूति के लिए अर्थानुभूति तथा भावानुभूति के अभाव में कविता के संगीत-पक्ष का आनंद तो लिया जा सकता है परंतु उसकी आत्मा अर्थात अर्थ और भाव का नहीं। अत: कविता-पठन एवं विश्लेषणात्मक प्रश्नों की सहायता से बच्चों को कवि के भावों की अनुभूति करानी चाहिए और उसके लिए प्रतीकात्मक, लाक्षणिक, ध्वन्यात्मक शब्द-योजना का विश्लेषण भी करना चाहिए। कविता में यदि कोई धार्मिक या पौराणिक प्रसंग हो तो रोचक ढंग से उसका संक्षिप्त वर्णन भी करना चाहिए।

कविता के भावों की अनुभूति पूरी तरह से कराने के लिए उसके कलापक्ष के सौंदर्य की अनुभूति आवश्यक है। कलापक्ष का ज्ञान कराए बिना भावपक्ष की अनुभूति होना असंभव है। इसके लिए काव्य के निम्न सौंदर्य-तत्वों का विश्लेषण कराना चाहिए :

(i) ध्वनि-सौंदर्य—अध्यापक को अपने सस्वर वाचन एवं छात्रों के अनुकरण वाचन के द्वारा कविता के ध्वनि-सौंदर्य को स्पष्ट करना चाहिए। कविता श्रव्य काव्य है। सुनकर ही कविता के रस की अनुभूति होती है। वर्णों का लालित्य, वर्णावृत्ति, ताल, लय, आरोह-अवरोह, छंद आदि ध्वनि-सौंदर्य के तत्व हैं। आदर्श पठन के द्वारा छात्रों का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहिए।

(ii) शैली-सौंदर्य—कविता में शब्द-शक्तियों, काव्यगुणों—माधुर्य, ओज तथा प्रसाद, अलंकारों एवं प्रतीकों आदि का यथास्थान प्रयोग शैली-सौंदर्य के अंतर्गत आते हैं। संक्षिप्त कथन एवं प्रश्न आदि के द्वारा इस ओर छात्रों का ध्यान आकृष्ट करना चाहिए।

(iii) कल्पना-सौंदर्य—कविता जीवन की आलोचना है परंतु कवि इसे अपनी कल्पना के रंग में रंग यथार्थ धरातल से कहीं दूर पहुँचाकर असंभव को संभव, अमूर्त को मूर्त तथा भूत को वर्तमान बना देता है। अध्यापक को चाहिए कि वह कविता-पठन, व्याख्या एवं काल्पनिक प्रश्न आदि के माध्यम से छात्रों के लिए कवि-कल्पना के द्वार खोल दे ताकि छात्र कवि के कल्पना-लोक में प्रवेश कर कविता का रसास्वादन एवं आनंदानुभूति कर सकें।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(iv) विचार-सौंदर्य—कविता भाव-प्रधान होने के साथ-साथ कवि के विचारों का भी वहन करती है। वह कवि के विचार छात्रों तक पहुँचाती है। अत: अध्यापक को कवि के विचार भी छात्रों तक पहुँचाने का प्रयास करना चाहिए। उसके विचारों के सौंदर्य की व्याख्या भी करनी चाहिए।

यहाँ हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि प्राथमिक कक्षाओं में केवल भाव-सौंदर्य को ही स्पष्ट किया जाए। इसके लिए सर्वोत्तम साधन सस्वर वाचन है। निम्न माध्यमिक कक्षाओं में प्रश्नोत्तर की सहायता से अर्थानुभूति एवं भावानुभूति करानी चाहिए। माध्यमिक कक्षाओं में उपर्युक्त वर्णित सभी प्रकार के सौंदर्य की अनुभूति कराने का प्रयास करना चाहिए। परंतु यह अनुभूति सरल होनी चाहिए। काव्य-तत्वों के शास्त्रीय ज्ञान के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए। हाँ, उच्च कक्षाओं में कविता के सौंदर्य की अनुभूति कराने के लिए ध्वनि-सौंदर्य, शैली-सौंदर्य, कल्पना-सौंदर्य एवं विचार-सौंदर्य की अनुभूति कराने के लिए उनसे संबंधित शास्त्रीय नाम आदि का ज्ञान भी कराना चाहिए। इतना ध्यान अवश्य रखा जाए कि इन काव्य-तत्वों का उतना ही स्पष्टीकरण किया जाए जितना कि पाठ्य कविता के सौंदर्य की अनुभूति के लिए आवश्यक है।

भाव-विश्लेषण एवं सौंदर्यानुभूति के लिए अध्यापक को पाठ्य कविता की समभावी किसी अन्य कविता का पठन भी करना चाहिए। इससे बच्चे एक ही भाव को विविध रूपों में देखकर कविता की ओर आकर्षित होते हैं और कक्षा में काव्यात्मक वातावरण बना रहता है।

(ङ) द्‌वितीय आदर्श वाचन—कविता के अर्थ एवं भाव का विश्लेषण करने के पश्चात कविता का रसास्वादन कराने के लिए अध्यापक को पुन: सस्वर पठन करना चाहिए क्योंकि अर्थ समझने के पश्चात जब छात्र कविता का भावानुसार सस्वर पाठ सुनते हैं तब उन्हें कविता के रस की अनुभूति अपनी पूर्णता के साथ होती है।

(च) पुनः अनुकरण वाचन—यह जानने के लिए कि छात्रों ने कविता के सौंदर्य को कितना ग्रहण किया है, छात्रों से कविता का पाठ फिर से करवाना चाहिए। छात्रों का सस्वर पाठ इस बात को स्पष्ट कर देगा कि छात्रों ने कविता के भाव को कहाँ तक ग्रहण किया है।

3. अर्थग्रहण एवं सौंदर्यबोध परीक्षण—अध्यापक को छोटे-छोटे प्रश्न पूछकर यह पता लगाना चाहिए कि छात्रों ने कविता के अर्थ एवं सौंदर्य को कहाँ तक ग्रहण किया है, वे कविता के सौंदर्य का मूल्यांकन कहाँ तक कर सकते हैं और उनमें कविता की व्याख्या करने की क्षमता का विकास कहाँ तक हुआ है।

4. रचनात्मक कार्य—कक्षा में काव्यात्मक वातावरण को अंत तक बनाए रखने के लिए अपने शिक्षण की समाप्ति पर अध्यापक बच्चों से कविता के मार्मिक स्थलों या कविता से संबंधित भाव की अन्य कविताओं आदि को कंठस्थ करने के लिए प्रेरित कर सकता है।

कविता के प्रति रुचि बढ़ाने का साधन

(Means of Inculcating Interest in the Poetry)

मानव-जीवन में सरसता प्रवाहित करने का एक उत्तम साधन कविता है। किसी भी जाति के विकास एवं प्रगति में उसके साहित्य का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है और किसी भी भाषा के साहित्य में कविता का सर्वाधिक महत्त्व होता है। कविता वैसे भी किसी भी समाज एवं उसकी संस्कृति के सत्य का दिग्दर्शन कराती है। कविता बालक के संवेगों को जाग्रत कर उनकी अभिवृत्तियों को परिष्कृत करती है। इसलिए यह जरूरी है कि कविता के प्रति छात्रों की रुचि विकसित की जाए। उन्हें कविता-अध्ययन के लिए आकर्षित किया जाए। विद्यालय में विभिन्न प्रकार की क्रियाओं को आयोजित कर अध्यापक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
कविता के प्रति छात्रों की रुचि विकसित कर सकता है। ये क्रियाएँ एवं साधन निम्न हो सकते हैं :

1. कविता का प्रभावशाली सस्वर पाठ—कविता श्रव्य काव्य है। इसका जितना अधिक आनंद कविता-श्रवण कर प्राप्त किया जा सकता है, उतना किसी अन्य साधन से नहीं। जब बच्चे उचित लय, हाव-भाव एवं आरोह-अवरोह के साथ किए गए कविता-पाठ को सुनते हैं तो आनंद से झूम उठते हैं। उनका हृदय काव्यानंद के सरोवर में गोते लगाने लगता है। अत: कक्षा में अध्यापक व छात्रों के द्‌वारा किया गया कविता का सस्वर वाचन कविता में अभिरुचि बढ़ाने का सबसे सरलतम साधन है। इसके लिए कविता का चयन बहुत सावधानी के साथ होना चाहिए। कविता बच्चों के मानसिक स्तर एवं रुचि के अनुकूल होनी चाहिए।

2. कविता कंठस्थ करना—कविता-शिक्षण करते हुए अध्यापक को छात्रों से कविताएँ कंठस्थ करने का आग्रह करना चाहिए। पाठ्य कविता के अतिरिक्त समभावी अन्य कविताओं को या उसी कवि की अन्य कविताओं को कंठस्थ करने के लिए भी प्रेरित करना चाहिए। जब छात्र कविताएँ कंठस्थ करके विभिन्न अवसरों पर वार्तालाप करते हुए कविताओं का प्रयोग करते हैं तो उससे उन्हें अत्यानंद की अनुभूति होती है और अधिक-से-अधिक कविताओं को कंठस्थ करने के लिए प्रेरणा भी मिलती है।

3. कविताओं का संग्रह करना—छात्रों को किसी भी कविता को पढ़ाने पर उसके कवि के अन्य काव्य-ग्रंथों के बारे में परिचय देकर अध्यापक को छात्रों को काव्य-संग्रह करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। किस कवि की कौन-कौन-सी कविताएँ उनके लिए रुचिकर हो सकती हैं, कौन-सी संग्रह करने के योग्य हैं, इस बारे में छात्रों का मार्गदर्शन करना चाहिए। छात्रों द्‌वारा किए गए काव्य-संग्रह का समय-समय पर निरीक्षण कर उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए क्योंकि काव्य-संग्रह छात्रों की कविता के प्रति अभिरुचि का प्रतीक है।

4. कवि जयंती—विद्‌यालय में समय-समय पर प्रमुख-प्रमुख कवियों की जयंती का आयोजन करना चाहिए। इस अवसर पर संबंधित कवि के जीवन, उसकी रचनाओं एवं उसकी काव्य-रचना-शैली आदि पर चर्चा की जानी चाहिए।

5. कवि-समादर—कभी-कभी विद्‌यालय में किसी कवि को आमंत्रित कर उसका अभिनंदन करना चाहिए और छात्रों को उससे परिचित कराना चाहिए। उससे उसकी रचनाएँ एवं व्यक्तिगत अनुभव भी सुने जा सकते हैं।

6. कवि-सम्मेलन—विद्‌यालय में साहित्यिक परिषद के द्‌वारा कभी-कभी विभिन्न स्तरों के कवि-सम्मेलनों का आयोजन कर मूल कवियों के मुख से उनकी कविताएँ छात्रों को सुनवाकर, कविता के प्रति उनकी अभिरुचि बढ़ाई जा सकती है।

7. कविगोष्ठी—कभी-कभी विद्‌यालय में कविगोष्ठी का आयोजन भी कराना चाहिए। इसमें छात्र कवि साहित्यिक विशेषताओं पर विचार-विमर्श करते हैं और स्वरचित कविताएँ भी सुनाते हैं।

8. कवि-दरबार—कई परिस्थितियों में मूल कवियों को आमंत्रित कर कवि-सम्मेलनों का आयोजन एक कठिन कार्य प्रतीत होता है। ऐसी स्थिति में कवि-दरबार का आयोजन किया जा सकता है। इसमें छात्र विभिन्न कवियों की वेशभूषा धारण कर रंगमंच पर एकत्रित होते हैं और उन्हीं कवियों की कविता का पाठ करते हैं। जब छोटे-छोटे बच्चे सूर, तुलसी, मीरा, प्रसाद, निराला आदि की वेशभूषा धारण कर उचित अभिनय के साथ उनकी कविताओं का पाठ करते हैं तो कुछ समय के लिए वे अतीत को वर्तमान में परिवर्तित कर देते हैं। इसे देखकर अन्य छात्र भी उनकी कविताओं की तरफ आकर्षित होते हैं।

9. अंत्याक्षरी प्रतियोगिता—यह एक साहित्यिक क्रिया है। इसमें छात्रों को दो दलों में बाँट

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दिया जाता है। पहले दल का एक छात्र किसी कविता की कुछ पंक्तियों की लयात्मक प्रस्तुति करता है, फिर दूसरे दल का कोई छात्र, पहले दल के छात्र द्वारा प्रस्तुत की गई कविता की पंक्ति के अंतिम वर्ण से प्रारंभ होनेवाली किसी कविता की कुछ पंक्तियाँ उचित हाव-भाव के साथ प्रस्तुत करता है। यह क्रम चलता रहता है और जब किसी दल का कोई छात्र कविता की प्रस्तुति नहीं कर पाता है तो दूसरे दल का छात्र उस वर्ण से प्रारंभ होनेवाली काव्य पंक्तियाँ प्रस्तुत करता है। ऐसी स्थिति में पहले दल के अंक कम हो जाते हैं और दूसरे दल के अंक बढ़ जाते हैं। एक निश्चित समय तक यह प्रक्रिया चलते रहने के पश्चात प्रतियोगिता-समाप्ति की घोषणा करके दोनों दलों के प्राप्तांकों की गणना कर ली जाती है। अधिक अंक प्राप्त करनेवाले दल को विजयी घोषित कर दिया जाता है।

बालकों की कविता के प्रति रुचि बढ़ाने का यह एक उत्तम साधन है।

10. विभिन्न अवसरों पर कविता-पाठ—विद्यालय में समय-समय पर अनेक प्रकार के उत्सव एवं कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इन अवसरों पर छात्रों को कविता-पाठ के लिए प्रेरित कर, कविता के प्रति उनकी अभिरुचि बढ़ाई जा सकती है।

11. समस्या-पूर्ति—इस क्रिया में छात्रों को कविता की एक पंक्ति के रूप में कोई समस्या दी जाती है। छात्रों को उस समस्या या प्रश्न का उत्तर देते हुए कविता पूरी करनी होती है। इस क्रिया के लिए छात्रों में सृजनात्मक प्रतिभा का होना आवश्यक है। सभी छात्र तो कवि नहीं बनते परंतु इस क्रिया का आयोजन कर प्रतिभाशाली छात्रों की काव्य-सृजन संबंधी योग्यता को विकसित होने का अवसर प्रदान किया जा सकता है। अन्य छात्र भी इसमें दर्शक या श्रोता बनकर इसका आनंद उठा सकते हैं।

12. कविता-पाठ-प्रतियोगिता—विद्यालय में साहित्यिक प्रतियोगिताओं का आयोजन करते हुए, कविता-पाठ-प्रतियोगिता का आयोजन कर छात्रों को सस्वर कविता-पाठ करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

13. सुभाषित प्रतियोगिता—हिंदी काव्य साहित्य में अनेकों सुभाषित, सूक्तियाँ आदि पाए जाते हैं। अभिव्यक्ति में इन सुभाषितों का प्रयोग, अभिव्यक्ति को स्वाभाविक और प्रभावशाली बना देता है। अत: सुभाषितों को कंठस्थ कराने की दृष्टि से विद्यालय में सुभाषित प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया जा सकता है।

14. विषय-विशेष पर कविता-पठन—छात्रों को कोई भी एक विषय देकर, उससे संबंधित कविताओं का पठन कराया जाता है। छात्र उस विषय की कविताओं को ढूँढ़ने के लिए काव्य-रचनाओं का अध्ययन करते हैं तथा उचित कविता का चयन कर, उसे याद करते हैं और भावानुसार पाठ करते हैं।

इस प्रकार उपर्युक्त क्रियाओं और साधनों का विद्यालय में समय-समय पर आयोजन कर कविता की तरफ छात्रों की अभिरुचि को आसानी से बढ़ाया जा सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि स्वयं अध्यापक की रुचि इन क्रियाओं में होनी चाहिए। छात्रों को इन क्रियाओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए तभी छात्र उत्साहपूर्वक सक्रिय रूप में इन क्रियाओं में भाग लेंगे और उनकी रुचि कविता में बढ़ सकेगी।

गद्य-शिक्षण तथा कविता-शिक्षण के उद्देश्यों में अंतर (Distinction between aims of Teaching Poetry and Prose)—हिंदी कविता-शिक्षण के उद्देश्यों का गद्य-शिक्षण के उद्देश्यों से अंतर स्पष्ट करने के लिए सर्वप्रथम दोनों साहित्यिक विधाओं के उद्देश्यों को स्पष्ट करना आवश्यक है। ऊपर हमने हिंदी कविता-शिक्षण के उद्देश्यों को स्पष्ट कर दिया है। हिंदी गद्य-शिक्षण के उद्देश्यों का वर्णन हम गद्य-शिक्षण नामक आगे ग्यारहवें अध्याय में करेंगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस प्रकार दोनों विधाओं के शिक्षण-उद्देश्यों को पूरी तरह से जान लेने के पश्चात इनके अंतर को निम्न रूप से स्पष्ट किया जा सकता है :

1. गद्य-शिक्षण में छात्रों की शुद्ध उच्चारण की योग्यता को विकसित करना होता है, परंतु पद्य-शिक्षण में नहीं। पद्य का उद्देश्य तो केवल भावानुसार वाचन का अभ्यास कराना है।

2. गद्य-शिक्षण में छात्रों के शब्द-भंडार में वृद्धि की जाती है परंतु पद्य-शिक्षण में नहीं। पद्य में छात्रों को शब्द-सौंदर्य आदि की अनुभूति कराने का प्रयास किया जाता है।

3. गद्य-शिक्षण का एक उद्देश्य छात्रों को देवनागरी लिपि का ज्ञान व अभ्यास कराना है, परंतु कविता-शिक्षण में ऐसा नहीं है।

4. गद्य-शिक्षण में छात्रों के सूक्ति-भंडार को भी विकसित करने का प्रयास किया जाता है, परंतु पद्य-शिक्षण का यह उद्देश्य नहीं है। पद्य में तो छात्रों को ध्वनि-सौंदर्य, शैली-सौंदर्य आदि का ज्ञान कराया जाता है।

5. गद्य-शिक्षण के द्वारा छात्रों के व्यावहारिक ज्ञान का विकास किया जाता है जबकि पद्य-शिक्षण द्वारा मानव-जीवन के सत्य से परिचित कराने का प्रयास किया जाता है।

6. गद्य-शिक्षण में छात्रों को मौन वाचन की कला में निपुण कराने का प्रयास किया जाता है जबकि पद्य-शिक्षण में मौन वाचन के लिए कोई स्थान नहीं।

7. गद्य-शिक्षण में विभिन्न गद्य-शैलियों से परिचित कराया जाता है तो पद्य-शिक्षण में काव्यशैली और उसके तत्वों का ज्ञान दिया जाता है।

8. गद्य-शिक्षण का उद्देश्य भाषा के शुद्ध प्रयोग का ज्ञान कराना है जबकि पद्य-शिक्षण का उद्देश्य काव्य का रसास्वादन कराना होता है।

9. गद्य-शिक्षण का उद्देश्य छात्रों की बौद्धिक, तार्किक एवं मानसिक शक्तियों को विकसित करना है, परंतु पद्य-शिक्षण का उद्देश्य छात्रों की रागात्मक वृत्तियों को परिमार्जित करना और उनको कविता का रसास्वादन करने और सौंदर्य का अनुभव करने के योग्य बनाना है।

इस प्रकार से हम देखते हैं कि गद्य-शिक्षण के उद्देश्यों से पद्य-शिक्षण के उद्देश्यों में काफी अंतर है।

कविता की पाठ-योजना
(Planning a Poetry Lesson)

हिंदी-शिक्षण में कविता का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसके माध्यम से हिंदी-शिक्षण के विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति होती है। कविता-शिक्षण संबंधी विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति तभी संभव है जबकि इसकी पाठ-योजना बनाते समय सभी आवश्यक बातों का पूरी तरह से ध्यान रखा जाए। इन बातों को ध्यान में रखते हुए, पद्य-शिक्षण के लिए एक अच्छी पाठ-योजना बनाई जा सकती है। इसे निम्न पाठ-योजना द्वारा अच्छी तरह से समझा जा सकता है :

पाठ-योजना

छात्राध्यापक / छात्राध्यापिका का अनुक्रमांक :

कक्षा : नवम

विषय : हिंदी (कविता)

कालांश : द्वितीय

उपविषय : मातृभूमि

कालांश की अवधि : 30 मि.

छात्रों की औसत आयु : 14 वर्ष

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

अनुदेशनात्मक सामग्री : Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

1. एक चार्ट जिस पर ''पुष्प की अभिलाषा'' कविता की निम्न पंक्तियाँ लिखी हुई हैं :

''मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक।''

2. मातृभूमि कविता की कुछ हस्तलिखित प्रतियाँ।

अनुदेशनात्मक उद्देश्य :

1. बच्चे अध्यापिका के द्वारा किए गए सस्वर पाठ को ध्यानपूर्वक सुनते हैं।
2. बच्चे उचित स्वर एवं लय में कविता का सस्वर पाठ करते हैं।
3. बच्चे कविता का श्रवण कर उसका अर्थ और भाव समझने का प्रयास करते हैं।
4. बच्चे कविता में प्रयुक्त शब्द—नीलांबर, परिधान, हरितपट, मेखला, रत्नाकर, प्रवाह, मंडन, बंदीजन, खगवृंद, अभिषेक, पयोद, बलिहारी, मोद एवं सर्वेश आदि शब्दों का अर्थ बताते हैं।
5. छात्राएँ कविता में वर्णित भाव एवं अर्थ को अपने शब्दों में व्यक्त करती हैं।
6. छात्राएँ कविता के सौंदर्य एवं रस का अनुभव करती हैं।
7. छात्राओं के मन में मातृभूमि के प्रति श्रद्धा की भावना विकसित होती है।
8. छात्राएँ देशभक्तिपूर्ण अन्य कविताएँ प्रस्तुत करती है।

प्रारंभिक व्यवहार—छात्राएँ अपनी अभिव्यक्ति में मानक भाषा का प्रयोग करती हैं। उन्होंने मातृभूमि और देशभक्ति से संबंधित अन्य कविताएँ पढ़ी हैं।

प्रस्तावना—छात्राध्यापिका चार्ट पर लिखी हुई कविता द्वारा पाठ्यवस्तु को प्रस्तावित करेंगी :

प्रश्न 1. प्रस्तुत पंक्तियों में पुष्प माली से क्या प्रार्थना कर रहा है ?

2. पुष्प माली से किस पथ पर स्वयं को फेंके जाने की बात कर रहा है ?

3. पुष्प मातृभूमि के प्रति किस प्रकार से अपनी श्रद्धा व्यक्त कर रहा है ?

4. मातृभूमि ने हम पर क्या-क्या उपकार किए हैं ?

5. हमारी भारत मातृभूमि का सौंदर्य किस प्रकार का है ?

उद्देश्य कथन—छात्राध्यापिका घोषणा करेगी कि आज हम राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'मातृभूमि' नामक कविता का अध्ययन करेंगे, जिसमें अपनी मातृभूमि के प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण किया गया है।

प्रस्तुतीकरण—पाठ का विकास बच्चों के सक्रिय सहयोग से किया जाएगा।

पद्यांश— ''नीलांबर परिधान हरित पट पर सुंदर है,
सूर्य चंद्र युग मकुट, मेखला रत्नाकर है।
नदियाँ प्रेम प्रवाह, फूल तारे मंडन हैं,
बंदी-जन खग-वृंद, शेषफन सिंहासन हैं।
करते अभिषेक पयोद हैं, बलिहारी इस वेष की,
हे मातृभूमि, तू सत्य ही सगुण मूर्ति सर्वेश की।
जिसकी रज में लोट-लोट कर बड़े हुए हैं,
घुटनों के बल सरक-सरक कर खड़े हुए हैं।
परमहंस सम बाल्यकाल में सब सुख पाए,
जिसके कारण धूल भरे हीरे कहलाए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हम खेलें-कूदें हर्षयुत, जिसकी प्यारी गोद में,
हे मातृभूमि तुझको निरख, मग्न क्यों न हो मोद में।''

शिक्षण-बिंदु	छात्राध्यापिका क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ
कवि-परिचय	छात्राध्यापिका मातृभूमि कविता के रचयिता श्री मैथिलीशरण गुप्त का संक्षिप्त परिचय देगी। श्री मैथिलीशरण गुप्त का जन्म चिरगाँव जिला झाँसी में हुआ था। आपने देशभक्ति से ओत-प्रोत काव्यों की रचना खड़ी बोली में की। साकेत, यशोधरा, भारतभारती, जयद्रथवध, नहुष आदि आपके प्रसिद्ध काव्य-ग्रंथ हैं। आपको राष्ट्रकवि की उपाधि से विभूषित किया गया था। सन् 1964 में आपका स्वर्गवास हुआ था। (छात्राध्यापिका आवश्यक बिंदुओं को श्यामपट्ट पर लिखेगी)	छात्राएँ ध्यानपूर्वक सुनेंगी।
कविता का सार	छात्राध्यापिका कविता का सार स्पष्ट करेगी : राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित मातृभूमि कविता देशप्रेम की भावना से ओत-प्रोत है। इस कविता में मातृभूमि के प्राकृतिक सौंदर्य का गुणगान किया गया है। कवि कहता है कि प्रकृति के प्रत्येक अंग ने मातृभूमि का भिन्न-भिन्न रूपों से श्रृंगार किया है।	छात्राएँ ध्यानपूर्वक देखेंगी और अपनी कापी में नोट करेंगी। छात्राएँ ध्यानपूर्वक सुनेंगी।
	छात्राध्यापिका छात्राओं से अपनी पाठ्यपुस्तक स्वाति का पृष्ठ नं. 56 खोलने के लिए कहेगी और जिनके पास पाठ्यपुस्तक नहीं होगी उन्हें कविता की हस्तलिखित प्रतियाँ वितरित करेगी।	छात्राएँ अपनी-अपनी पाठ्य पुस्तक खोलेंगी।
आदर्श वाचन	छात्राध्यापिका उचित हाव-भाव एवं आरोह-अवरोह के साथ संपूर्ण कविता का सस्वर पठन करेगी।	छात्राएँ ध्यानपूर्वक सुनेंगी।
अनुकरण वाचन	छात्राध्यापिका कक्षा की दो-तीन छात्राओं से अलग-अलग पद्यांशों का वाचन करने के लिए निर्देश देगी और उनके वाचन को ध्यानपूर्वक सुनेगी तथा उनके पठन दोषों को दूर करेगी।	छात्राएँ अध्यापिका के आदेशानुसार उचित स्वर एवं लय के साथ वाचन करेंगी। शेष छात्राएँ ध्यानपूर्वक सुनेंगी।
शब्दार्थ कथन	छात्राध्यापिका कविता में आए हुए कठिन शब्दों	छात्राएँ शब्दार्थों को ध्यानपूर्वक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिक्षण-बिंदु	छात्राध्यापिका क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ
	का अर्थ बताएगी और उन्हें श्यामपट्ट पर लिखेगी। **शब्द** **अर्थ** परिधान वस्त्र, पहनावा युग दोनों मेखला तगड़ी, करधनी रत्नाकार समुद्र प्रवाह बहाव मंडन आभूषण बंदीजन गुणगान करनेवाले चारण खगवृंद पक्षियों का समूह पयोद बादल सर्वेश ईश्वर रज धूल परमहंस आत्मज्ञानी, महान पुरुष मोद प्रसन्नता	सुनेंगी और श्यापट्ट पर लिखे हुए शब्दार्थों को अपनी कापी उतारेंगी।
भाव-विश्लेषण एवं सौंदर्यानुभूति	छात्राध्यापिका प्रश्नों और कथन की सहायता से कविता के भाव को स्पष्ट कर सौंदर्यानुभूति कराएगी। छात्राध्यापिका कविता के प्रथम अंश का पठन करेगी और प्रश्न पूछेगी : **प्रश्न**—1. हमारे देश की धरती कैसी है ? 2. आकाश का रंग कैसा होता है ? 3. इस कविता में नीलांबर परिधान से क्या तात्पर्य है ? 4. हरित पट से कवि का क्या अभिप्राय है ? 5. सूर्य-चंद्र किस आभूषण के रूप में मातृभूमि का श्रृंगार कर रहे हैं ? 6. मातृभूमि की तगड़ी किसे बताया गया है ? 7. 'नदियाँ प्रेम प्रवाह'—इन शब्दों द्वारा कवि क्या कहना चाहता है ? 8. फूल और तारों को मातृभूमि का आभूषण क्यों बताया गया है ?	छात्राएँ अध्यापिका के प्रश्नों का उत्तर देंगी और कविता के भाव तथा सौंदर्य का अनुभव करेंगी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिक्षण-बिंदु	छात्राध्यापिका क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ
	9. पक्षियों के समूह को बंदीजन क्यों कहा गया है ? 10. मातृभूमि का सिंहासन क्या है ?	
	छात्राध्यापिका-कथन—प्रस्तुत कविता में कवि श्री मैथिलीशरण गुप्त ने मातृभूमि की कल्पना एक सुंदर नारी के रूप में की है। मातृभूमि हरी-भरी शस्यश्यामला भूमि के रूप में हरा अधोवस्त्र और नीले आकाश के रूप में ऊपरी वस्त्र धारण किए हुए है। सूर्यचंद्र दोनों मातृभूमि के मस्तक पर मुकुट की तरह सुशोभित हो रहे हैं और तीनों तरफ फैला हुआ सागर मानो उसकी कमर की करधनी है। फूल तारे उसके अन्य आभूषण है। नदियों के जल के रूप में मातृभूमि मानो अपने पुत्रों के लिए अपने प्रेम को प्रवाहित कर रही है। एक अन्य कविता में कवि ने मातृभूमि की दया के प्रवाह का चित्रण इस प्रकार किया है :	छात्राएँ ध्यान से सुनेंगी।
तुलनात्मक पंक्तियाँ	''मातृभूमि करती है सबका, लालन सदा मत्युपर्यंत, जिसके दया प्रवाहों का नहिं, होता सुपने में भी अंत'' (छात्राध्यापिका इन पंक्तियों को श्यामपट्ट पर लिखेगी।)	छात्राएँ इन पंक्तियों को अपनी कापी में उतारेंगी।
	11. 'प्रेम-प्रवाह' में कौन-सा अलंकार है ? 12. अभिषेक कैसे किया जाता है ? 13. मातृभूमि का अभिषेक कौन कर रहा है ? 14. कवि ने मातृभूमि को किसकी सगुण मूर्ति कहा है ?	छात्राएँ प्रश्नों का उत्तर देंगी।
	छात्राध्यापिका-कथन—यहाँ मातृभूमि को ईश्वर को साकार मूर्ति के रूप में चित्रित किया गया है। वास्तव में मातृभूमि ईश्वर	छात्राएँ मनोयोगपूर्वक सुनेंगी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिक्षण-बिंदु	छात्राध्यापिका क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ
समानांतर कविता से तुलना	की तरह ही हमारा पालन-पोषण करती है। वाल्मीकि रामायण में श्रीराम मातृभूमि को स्वर्ग से भी महान बताते हैं : ''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।'' एक अन्य कविता में भी कवि मातृभमि को स्वर्गलोक से भी ज्यादा प्यारी बताकर मातृभूमि के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करता है : ''ऐसी मातृभूमि है मेरी, स्वर्गलोक से भी प्यारी। जिसके पद कमलों पर मेरा, तन मन धन सब बलिहारी॥''	
	(छात्राध्यापिका समानांतर कविता की पंक्तियों को श्यामपट्ट पर लिखेगी।)	छात्राएँ पंक्तियाँ अपनी कापी में उतारेंगी।
	जिसकी रज में.....क्यों न हो मोद में। छात्राध्यापिका द्वितीय पद का पठन करेगी और प्रश्न पूछेगी तथा अधूरे उत्तरों को पूर्ण करेगी : 1. ''रज में लोट-लोट कर बड़े हुए हैं'' इन शब्दों द्वारा कवि क्या कहना चाहता है ? 2. सीधा खड़ा होकर चलने से पहले बच्चा कैसे चलता है ? 3. 'परम हंस सम.....सब सुख पाए'—से कवि का क्या अभिप्राय है ?	छात्राएँ ध्यान से सुनेंगी और प्रश्नों का उत्तर देंगी।
	छात्राध्यापिका-कथन—बचपन में बच्चे धरती पर ही खेलते हैं। पहले घुटनों के बल चलना सीखते हैं, फिर खड़े होकर चलने लगते हैं। जिस प्रकार आत्मज्ञानी संत हर स्थिति में सुख का अनुभव करता है उसी प्रकार बाल्यावस्था में बच्चे भी धरती पर अपने साथियों के साथ खेलते हैं और हर तरह से संसार की चिंता से मुक्त होकर सुख का अनुभव करते हैं।	छात्राएँ ध्यानपूर्वक सुनेंगी।
	4. बच्चे किसकी गोद में प्रसन्नता के साथ खेलते हैं ?	छात्राएँ प्रश्नों का उत्तर देंगी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिक्षण-बिंदु	छात्राध्यापिका क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ
	5. मातृभूमि के प्रति हमारे मन में कैसी भावना होनी चाहिए? **छात्राध्यापिका-कथन**—जिस मातृभूमि ने हमारा पालन-पोषण किया और हमें जिंदगी की सभी सुख-सुविधाएँ दीं उसके लिए हमारे मन में श्रद्धा की भावना होनी चाहिए। एक कविता में कवि कहता है :	छात्राएँ पूर्ण मनोयोग से सुनेंगी।
समानांतर कविता	यह पुण्य भूमि भारत मही, हम इसकी संतान हैं। कर इसकी सेवा हृदय से, पा सकते सम्मान हैं। (छात्राध्यापिका इन पंक्तियों को श्यामपट्ट पर लिखेगी।)	छात्राएँ काव्य पंक्तियों को अपनी कापी में लिखेंगी।
पुनः आदर्श वाचन	छात्राध्यापिका भाव-ग्रहण और पूर्ण रसास्वादन के लिए कविता का पुनः सस्वर वाचन करेगी।	छात्राएँ ध्यानपूर्वक सुनेंगी और रसास्वादन करेंगी।
पुनः अनुकरण वाचन	कक्षा में काव्यात्मक वातावरण उत्पन्न करने के लिए कक्षा की दो-तीन छात्राओं से अलग-अलग पदों का सस्वर वाचन करने के लिए निर्देश देगी।	छात्राएँ अध्यापिका के आदेशानुसार कविता-पाठ करेंगी और काव्य-पाठ का आनंद लेंगी।
अर्थ-ग्रहण एवं सौंदर्य-बोध परीक्षण	छात्राओं ने कविता के अर्थ और भाव को समझा है या नहीं इस बात की जाँच करने के लिए छात्राध्यापिका निम्न प्रश्न पूछेगी : 1. मातृभूमि का परिधान क्या है? 2. मातृभूमि किसकी सगुण मूर्ति है? 3. हम किसकी रज में लोट-लोटकर बड़े हुए हैं? 4. हम धूल भरे हीरे क्यों कहलाए? 5. ''बाल्यकाल में परमहंस सम सब सुख पाए'' इस पंक्ति से क्या अभिप्राय है? 6. इस कविता से हमें क्या प्रेरणा मिलती है?	छात्राएँ प्रश्नों का उत्तर देंगी।
गृह-कार्य	छात्राध्यापिका कविता का भाव अपने शब्दों में घर से लिखकर लाने तथा ऐसी ही कुछ अन्य कविताएँ कंठस्थ करने के लिए कहेगी।	छात्राएँ घर से कविता का भाव अपने शब्दों में लिखकर लाएँगी तथा मातृभूमि से संबंधित कविताएँ याद करेंगी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्ययन के लिए प्रश्न

1. कविता क्या है ? गद्य से यह किस प्रकार भिन्न है ? स्पष्ट कीजिए।

2. हिंदी-शिक्षण में कविता-शिक्षण के स्थान एवं महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

3. कविता से क्या अभिप्राय है ? माध्यमिक विद्‌यालयों में हिंदी कविता-शिक्षण के उद्‌देश्यों पर प्रकाश डालिए।

4. कविता-शिक्षण के लिए प्रयोग में लाई जानेवाली विभिन्न विधियों का विस्तार सहित वर्णन कीजिए।

5. कविता-शिक्षण की कौन-कौन-सी विधियाँ प्रचलित हैं ? प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर पर आप किन विधियों का प्रयोग करना चाहेंगे और क्यों ?

6. हिंदी कविता-शिक्षण के उद्‌देश्यों एवं विधियों पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालिए।

7. हिंदी-शिक्षण में कविता-शिक्षण का क्या महत्त्व है ? रसपाठ एवं बोधपाठ का अंतर स्पष्ट करते हुए कविता-शिक्षण की विधियों का उल्लेख कीजिए।

8. कविता से आप क्या समझते हैं ? कविता-शिक्षण के विभिन्न सोपानों का वर्णन कीजिए।

9. कविता के प्रति छात्रों की अभिरुचि विकसित करने के लिए आप किन-किन उपायों को काम में लाना चाहेंगे ? स्पष्ट कीजिए।

10. हिंदी कविता-शिक्षण के उद्‌देश्यों का वर्णन कीजिए तथा गद्‌य-शिक्षण के उद्‌देश्यों के साथ इनका अंतर बताइए।

11. सफल कविता-शिक्षण की दृष्टि से माध्यमिक कक्षाओं के पाठ्‌यक्रम में सम्मिलित कोई एक कविता लेकर उसकी पाठ-योजना तैयार कीजिए।

12. निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :

(i) हिंदी कविता-शिक्षण का महत्त्व

(ii) हिंदी कविता-शिक्षण के उद्‌देश्य

(iii) हिंदी कविता-शिक्षण की विधियाँ

(iv) कविता-शिक्षण में सस्वर वाचन का महत्त्व

(v) कविता के प्रति रुचि बढ़ाने के उपाय

(vi) कविता और गद्‌य-शिक्षण के उद्‌देश्यों में अंतर

(vii) कविता-शिक्षण की खंडान्वय और व्यास विधियाँ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

11

गद्य-शिक्षण
(Teaching of Prose)

गद्य क्या है ? (What is Prose?)

गद्य, हिंदी साहित्य की वह विधा है जिसमें छंद, लय, अलंकार एवं रसविधान आदि का निर्वाह करना आवश्यक नहीं। गद्य में तथ्यों एवं विचारों को, सर्वमान्य भाषा के माध्यम से ज्यों-का-त्यों प्रस्तुत किया जाता है। इसीलिए गद्य में बुद्धिपक्ष की प्रबलता रहती है। गद्य साहित्य की अनेक विधाएँ हैं—निबंध, कहानी, नाटक, उपन्यास, आत्मचरित्र, जीवनी, संस्मरण आदि। संस्कृत में एक सूक्ति प्रचलित है—'गद्यं कवीनां निकषं वदंति' अर्थात गद्य को कवियों (साहित्यकारों) की कसौटी कहा जाता है क्योंकि कविता में तो छंद एवं लय का निर्वाह करने के लिए, कवि शब्दों को तोड़-मरोड़कर मनमाना प्रयोग कर लेता है, उसकी यह त्रुटि क्षम्य भी हो जाती है, परंतु गद्य में लेखक तभी सफल माना जाता है जब वह विचारों को त्रुटि-रहित सर्वमान्य भाषा में प्रस्तुत करता है। लेखक को व्याकरणसम्मत भाषा का प्रयोग करना पड़ता है। हाँ उपन्यासकार, कहानीकार एवं नाटककार लेखक अवश्य बोलचाल की चलती हुई भाषा का प्रयोग कर सकता है।

गद्य साहित्य का महत्त्व (Importanceof Prose Teaching in Hindi)

हिंदी भाषा के साहित्य के दो रूप हैं—पद्य और गद्य। साहित्य का पद्य रूप ही मानव-जीवन को सरसता प्रदान कर, उसकी रागात्मक वृत्तियों को परिमार्जित करता है तथा मानव को जीवन के मूल्यों एवं सत्य से परिचित कराकर उन्हें अपनाने के लिए प्रेरित करता है। पद्य की तरह मानव-जीवन में गद्य का भी कम महत्त्व नहीं। कहा जाता है, "ज्ञानराशि का संचित कोष साहित्य है" तो साहित्य के गद्य रूप ने ही मानव-जीवन की संपूर्ण ज्ञानराशि को सुरक्षित रखा हुआ है। आज मानव-जाति का संपूर्ण इतिहास, सभ्यता, संस्कृति एवं ज्ञान-विज्ञान साहित्य के गद्य रूप ने ही सँभालकर रखा हुआ है और गद्य ही इस ज्ञान-विज्ञान को एक पीढ़ी को हस्तांतरित कर देता है। गद्य ने ही साहित्य को समाज का दर्पण बनाया हुआ है।

गद्य रूप के प्रयोग से ही मानव-जाति विचारों का आदान-प्रदान करती है इसीलिए गद्य हामरे लिए अपरिहार्य वस्तु की तरह है। इसके बिना हम एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकते हैं। गद्य की अनेक विधाओं—कहानी, नाटक, उपन्यास, संस्मरण आदि से संबंधित रचनाएँ व्यक्ति का मनोरंजन करती हैं। उनके अवकाश के समय का सदुपयोग करने व दिल बहलाने में प्रमुख साधन का कार्य करती हैं। आज बस, रेल या हवाई जहाज में यात्रा करनेवाले प्राय: हर यात्री के हाथ में, यात्रा के समय को आनंद से व्यतीत करने के लिए, कोई-न-कोई पुस्तक अवश्य देखी जा सकती है जिनमें गद्य रूप का ही अधिकाधिक प्रयोग होता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिंदी भाषा-शिक्षण में तो गद्य साहित्य का विशेष महत्त्व है क्योंकि भाषा-शिक्षण के अधिकांश उद्देश्यों की प्राप्ति गद्य-रूप के द्वारा ही संभव है। भाषा-शिक्षण के चारों प्रमुख कौशलों—सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना का विकास गद्य रूप के प्रयोग से ही किया जा सकता है। शुद्ध उच्चारण का अभ्यास, पठन-कला का अभ्यास, शब्द-भंडार में वृद्धि, सूक्ति, मुहावरे एवं लोकोक्तियों का ज्ञान, इन सभी के लिए गद्य साहित्य की प्रमुख भूमिका होती है। गद्य शिक्षा के द्वारा ही बच्चों को अक्षर-विन्यास, वाक्य-रचना, भाषा के शुद्ध रूप का प्रयोग एवं विभिन्न लेखन-शैलियों आदि का ज्ञान कराया जाता है। गद्य रूप का अध्ययन बच्चों की वृत्तियों को परिष्कृत करने में भी सहायक होता है और उनके चरित्र का निर्माण करता है। गद्य रूप के पठन से ही बच्चे अपने ज्ञान की वृद्धि करते हैं और देश-विदेश के तथ्यों एवं घटनाओं से परिचित होते हैं।

गद्य साहित्य की विभिन्न विधाओं में निबंध विधा का तो विशेष महत्त्व है। निबंध में विषयवस्तु को बड़े तार्किक क्रम में प्रस्तुत किया जाता है अतः शब्द-योजना, विचारों की प्रभावशाली अभिव्यक्ति एवं भाषा के सर्वमान्य रूप का ज्ञान देने की दृष्टि से गद्य रूप का विशेष महत्त्व है। गद्य रूप के द्वारा ही बच्चों के जीवन के विविध पक्षों एवं क्षेत्रों का ज्ञान कराया जाता है, साहित्य में उनकी रुचि जाग्रत की जाती है और उनकी अभिवृत्तियों को उचित दिशा प्रदान की जाती है।

अतः हिंदी भाषा की शिक्षा में गद्य की शिक्षा का अनिवार्य स्थान है। इसके बिना हिंदी पाठ्यक्रम या पाठ्यपुस्तक की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

गद्य-शिक्षण के उद्देश्य (Aims of Teaching Prose)

अध्यापक को गद्य पाठों की शिक्षा देते समय बच्चों के स्तर, पाठ्यवस्तु एवं प्राप्त समय के अनुसार निम्न उद्देश्यों को सामान्यतः ध्यान में रखना चाहिए :

1. छात्रों को शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराना।
2. छात्रों को उचित गति, स्वर एवं उतार-चढ़ाव के अनुसार सस्वर वाचन करने के योग्य बनाना।
3. छात्रों को मौन वाचन में निपुण करना।
4. छात्रों में स्वाध्याय की आदत विकसित करना।
5. छात्रों के शब्द-भंडार, सूक्ति-भंडार, लोकोक्ति एवं मुहावरों के भंडार में वृद्धि करना।
6. छात्रों को पठन करते हुए लिखित सामग्री का अर्थ ग्रहण करने के योग्य बनाना।
7. छात्रों को लिपि का ज्ञान कराना।
8. छात्रों को पूर्ण मनोयोग से सुनने एवं सुनकर अर्थ ग्रहण करने के योग्य बनाना।
9. छात्रों को मौखिक एवं लिखित रूप से विचारों को व्यक्त करने के योग्य बनाना।
10. छात्रों को विविध गद्य-शैलियों से परिचित कराना।
11. छात्रों की निरीक्षण, बोध, कल्पना एवं विवेचना आदि शक्तियों को विकसित करना।
12. छात्रों की साहित्य में रुचि जाग्रत करना।
13. छात्रों को गद्य साहित्य का अध्ययन कर, उससे आनंद प्राप्त करने के योग्य बनाना।
14. छात्रों की सृजनात्मक शक्तियों को विकसित करना।
15. छात्रों को गद्य का अध्ययन कर, उसकी समीक्षा करने के योग्य बनाना।
16. छात्रों को गद्य पाठों द्वारा सांस्कृतिक मूल्यों, ऐतिहासिक घटनाओं, पौराणिक कथानकों,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
सत्यों, धार्मिक विश्वासों, सामाजिक स्थितियों एवं मानव-जीवन के विविध पक्षों का ज्ञान कराकर उनके ज्ञान-विज्ञान में वृद्धि करना।

17. छात्रों में समाज, जाति, धर्म एवं देश के प्रति सम्मान का भाव जाग्रत करना।

18. छात्रों में स्वस्थ अभिवृत्तियों को विकसित कर उनका चारित्रिक विकास करना।

19. छात्रों को गद्य साहित्य की समीक्षा करने के योग्य बनाना।

गद्य-शिक्षण के इन सभी सामान्य उद्देश्यों को पाठ्य-निबंध, कक्षा के स्तर और बच्चों की अधिगम-क्षमता और प्राप्त समय के आधार पर निश्चित किया जाना चाहिए।

गद्य-शिक्षण में गहन एवं विस्तृत अध्ययन
(Intensive and Extensive study in Prose Teaching)

गद्य साहित्य का अध्ययन दो रूपों में कराया जा सकता है।

(i) गहन एवं सूक्ष्म अध्ययन—इसमें पाठ्यवस्तु का गहन एवं सूक्ष्म रूप से अध्ययन कराया जाता है। कठिन शब्दों की विस्तृत व्याख्या, मुहावरे-लोकोक्तियों की व्याख्या, शुद्ध उच्चारण का अभ्यास, विचार एवं भावों की व्याख्या आदि सभी कार्य विस्तार में किए जाते हैं। इसी से इसे गहन या सूक्ष्म अध्ययन कहा जाता है। गद्य के निबंधात्मक पाठ सूक्ष्म अध्ययन के लिए ही होते हैं। इस अध्ययन में गद्य-शिक्षण का प्रयोग इसी गहन एवं सूक्ष्म अध्ययन के संदर्भ में किया गया है।

(ii) विस्तृत एवं स्थूल अध्ययन—गद्य साहित्य की अन्य विधाएँ जैसे—कहानी, नाटक, उपन्यास, एकांकी, आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण आदि से संबंधित पाठ विस्तृत एवं स्थूल अध्ययन के लिए होते हैं। इनके द्वारा छात्रों में तीव्र पठन-गति का विकास एवं विचार ग्रहण करने की योग्यता का विकास तथा साहित्याध्ययन में रुचि जाग्रत करने का प्रयास किया जाता है।

गद्य-शिक्षण की विधियाँ
(Methods of Teaching Prose)

गद्य साहित्य का सर्वोत्तम रूप है। इसमें विचारों को प्रभावशाली ढंग से व्याकरणसम्मत सर्वमान्य भाषा में प्रस्तुत किया जाता है। लेखक तथ्यों को प्रस्तुत करते हुए उन्हें सत्य सिद्ध करने के लिए उदाहरण एवं उद्धरण भी प्रयुक्त करता है। इसके अध्ययन से बच्चों के शब्द, सूक्ति, लोकोक्ति एवं मुहावरों के कोश में वृद्धि होती है, उन्हें सर्वमान्य एवं व्याकरणसम्मत भाषा का ज्ञान होता है, उनकी बोध, कल्पना, निरीक्षण एवं विवेचना शक्ति का विकास होता है, उनके विचारों में क्रमबद्धता आती है, साहित्य में उनकी रुचि विकसित होती है और वृत्तियों का समाजीकरण होता है। परंतु ये सभी लाभ तभी प्राप्त हो सकते हैं जबकि बच्चों को गद्य पाठों की शिक्षा रोचक ढंग से दी जाए। गद्य की शिक्षा देने के लिए जिन विधियों को विकसित किया गया है, वे निम्न हैं :

1. अर्थकथन विधि (Meaning Explanation Method)—विद्यालय में हिंदी गद्य की शिक्षा देने की यह परंपरागत विधि है। इस विधि में अध्यापक सर्वप्रथम गद्यांशों का क्रमिक रूप से मौखिक पठन करता है और इसके बाद गद्यांश में आए कठिन शब्दों का अर्थ बताता है और बाद में सभी वाक्यों के सरलार्थ बताता हुआ संपूर्ण गद्यांश का अर्थ स्पष्ट कर देता है। इस विधि में सभी कार्य शिक्षक को ही करना पड़ता है। छात्र निष्क्रिय श्रोता बने रहते हैं। अत: यह विधि अमनोवैज्ञानिक मानी जाती है। इसमें छात्रों को स्वयं सोचने-विचारने के अवसर प्राप्त न होने के कारण, छात्रों में न तो पढ़कर अर्थ ग्रहण करने की क्षमता का विकास होता है और न अपने विचारों को उचित रूप से व्यक्त करने की क्षमता का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
विकास हो पाता है। इस विधि से अध्ययन करने से गद्य-शिक्षण के उद्देश्यों को भी पूरी तरह से प्राप्त करना असंभव है।

2. व्याख्या-विधि (Explanation Method)—व्याख्या-विधि अर्थकथन-विधि का ही विकसित रूप है। इस विधि में अध्यापक मौखिक पठन करने के उपरांत कठिन शब्दों का अर्थ व गद्यांश का सरलार्थ कराते हुए शब्दों और भावों की व्याख्या भी करता है। शब्दों की व्याख्या करते हुए शब्दों में उपसर्ग, प्रत्यय, संधि व समास आदि की व्याख्या करता है, शब्दों के पर्यायवाची व विपरीतार्थक स्पष्ट करता है, शब्दों का विस्तार करता है, उनमें छिपे प्रसंगों या कथानकों को स्पष्ट करता है और भावों को स्पष्ट करने के लिए उनकी विस्तृत व्याख्या भी करता है। इस प्रणाली में भी अधिकांश कार्य अध्यापक को करना पड़ता है। छात्र-निष्क्रिय श्रोता ही बने रहते हैं। इस वधि के सही प्रयोग के लिए छात्रों का सक्रिय सहयोग लेने का प्रयास करना चाहिए।

3. प्रश्नोत्तर-विधि (Question-Answer Method)—इस विधि को विश्लेषण-विधि भी कहा जाता है। यह व्याख्या प्रणाली का ही परिमार्जित रूप है। इस विधि में व्याख्या-विधि की तरह ही शब्दों और भावों की व्याख्या की जाती है, अंतर इतना है कि इसमें शब्दों और भावों की व्याख्या करने के लिए प्रश्न व उत्तर की सहायता ली जाती है। अध्यापक बच्चों के पूर्व-ज्ञान के आधार पर प्रश्न पूछता हुआ उन्हें नवीन ज्ञान की तरफ अग्रसर करता है। छात्रों को प्रश्न सुनकर स्वयं सोचने व उत्तर देने का अवसर प्रदान करता हुआ बराबर सक्रिय रखने का प्रयास करता है। माध्यमिक स्तर पर गद्य की शिक्षा के लिए यह विधि सर्वोत्तम मानी जाती है। इसके सफल प्रयोग के लिए यह आवश्यक है कि छात्रों के उत्तर में पूर्णता न होने पर अध्यापक को स्वयं अपने कथन द्वारा शब्द व भाव की व्याख्या करनी चाहिए। इस विधि से शिक्षा देने से शिक्षण में रोचकता बनी रहती है।

4. समीक्षा-विधि (Critical Evaluation Method)—इस विधि का प्रयोग उच्च माध्यमिक या उच्च कक्षाओं में किया जाता है। इस विधि का प्रयोग तभी करना चाहिए जब बच्चों को निबंध के तत्वों का ज्ञान, और भाषायी कौशलों में विकास पूरी तरह से हो जाए। इस विधि में पाठ्यवस्तु का पठन कर भाषायी तत्वों के आधार पर उसके गुण-दोषों की परख की जाती है। इसके पहले गद्य पाठ के अर्थ एवं भाव का स्पष्टीकरण अत्यंत आवश्यक है। इसमें अध्यापक छात्रों को पाठ्यवस्तु का भाव स्पष्ट कर उसके भाषायी तत्वों का ज्ञान प्रदान करता है और उनके आधार पर छात्रों से पाठ्यवस्तु के गुण-दोषों की परख अर्थात समीक्षा करने के लिए कहता है। साथ ही आवश्यक संदर्भ-ग्रंथों एवं रचनाओं के बारे में भी बताता है जिनका अध्ययन कर छात्र पाठ्यवस्तु के गुण-दोषों का विवेचन कर सकें। इस विधि में छात्रों को स्वयं काफी कार्य करना पड़ता है, अध्यापक तो उनका मार्गदर्शन करता है। बच्चों में स्वाध्याय की आदत विकसित करने में यह विधि विशेष रूप से सहायक होती है।

5. संयुक्त-विधि (Eclectic Method)—माध्यमिक स्तर पर इन सभी प्रणालियों का आवश्यकतानुसार मिश्रित रूप से प्रयोग करके भी हम गद्य-शिक्षण को प्रभावशाली बना सकते हैं। भाषायी कौशल एवं ज्ञान प्रदान करने के लिए व्याख्या एवं विश्लेषण-प्रणाली को संयुक्त रूप से अपनाया जाए। साथ में, भाषायी तत्वों का शास्त्रीय विवेचन करने के लिए समीक्षा-प्रणाली को अपनाया जाए। इस संयुक्त प्रयोग से बच्चों को गद्य-पाठों की शिक्षा बहुत ही रोचक, आकर्षक एवं प्रभावशाली ढंग से दी जा सकेगी।

इस प्रकार अध्यापक गद्य-पाठ की शिक्षा देने के लिए अपनी आवश्यकतानुसार किसी एक विधि का अलग से या सभी विधियों का संयुक्त रूप से प्रयोग कर सकता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गद्य-शिक्षण में प्रयुक्त सोपान

(Steps Involved in Prose Teaching)

गद्य-शिक्षण से संबंधित पाठ कभी तो छोटे-छोटे होते हैं और कभी लंबे। इन पाठों को प्राय: कक्षा के एक ही कालांश में पढ़ाना कठिन होता है। यदि पाठ छोटा है तो एक ही कलांश में उसे पढ़ाया जा सकता है परंतु यदि पाठ लंबा है तो उसे कालांश की अवधि के अनुसार विभिन्न इकाइयों में बाँटकर, उनकी अलग-अलग शिक्षण-योजना तैयार करनी चाहिए। गद्य की शिक्षण-योजना तैयार करने के लिए प्राय: सभी विद्वान शिक्षाशास्त्री हरबर्ट की पंचपद प्रणाली को अपनाने का समर्थन करते हैं। परंतु हरबर्ट की पंचपद प्रणाली के पाँच सोपानों—प्रस्तावना, प्रस्तुतीकरण, तुलना, नियमीकरण और अभ्यास में से तृतीय व चतुर्थ सोपान गद्य पाठ के शिक्षण के लिए उपयोगी नहीं हैं। अत: गद्य पाठ के सफल शिक्षण के लिए हम हरबर्ट की पंचपद प्रणाली को थोड़े से परिवर्तन के साथ स्वीकार कर सकते हैं। इसके लिए निम्न शिक्षण-क्रम अर्थात निम्न सोपानों को अपनाया जा सकता है :

1. प्रस्तावना
   - (अ) पूर्वज्ञान-परीक्षा
   - (आ) उद्देश्य-कथन
2. प्रस्तुतीकरण
   - (अ) वाचन
   - (आ) व्याख्या
   - (इ) विचार-विश्लेषण
3. कक्षा-कार्य-निरीक्षण
4. आवृत्ति
5. गृह-कार्य

इन सोपानों का विस्तृत विवेचन निम्न प्रकार से है :

1. प्रस्तावना—बच्चों को नया पाठ पढ़ने को तैयार करने एवं उसके प्रति रुचि जाग्रत करने के लिए अध्यापक नवीन पाठ को बच्चों के पूर्वज्ञान से जोड़ने का प्रयास करता है। बच्चों के पूर्वज्ञान की परीक्षा लेने व उसका संबंध नवीन पाठ से जोड़ने के लिए अध्यापक विभिन्न क्रियाओं एवं साधनों की सहायता लेता है। अध्यापक छात्रों के पूर्वाान की परीक्षा निम्न प्रकार से ले सकता है :

(i) प्रश्नोत्तर द्वारा—नवीन पाठ से संबंधित पूर्वज्ञान पर आधारित कुछ प्रश्न पूछकर छात्रों को यथा पाठ पढ़ने के लिए तैयार किया जाता है।

(ii) शिक्षोपकरणों द्वारा—नवीन ज्ञान से संबंधित कोई वस्तु, चित्र, चार्ट या मॉडल आदि की सहायता से छोटी कक्षाओं में पाठ की प्रस्तावना की जा सकती है। जैसे रानी लक्ष्मीबाई का पाठ पढ़ाने के लिए, रानी लक्ष्मीबाई का चित्र दिखाकर प्रश्न करते हुए पाठ की प्रास्तावना की जा सकती है।

(iii) समस्या द्वारा—पाठ से संबंधित किसी समस्या को प्रस्तुत करके पाठ के प्रति छात्रों मे कौतूहल उत्पन्न किया जा सकता है।

(iv) पूर्वकथा द्वारा—जैसे गांधीजी की आत्मकथा के एक अंश 'हाई स्कूल में' नामक पाठ को पढ़ाने के लिए गांधीजी के जीवन की पूर्वकथा को संक्षेप में सुनाकर या उस पर प्रश्न पूछकर पाठ की प्रस्तावना की जा सकती है।

(v) लेखक परिचय द्वारा—जैसे 'गांधीजी की आत्मकथा' नामक पाठ को पढ़ाने के लिए संक्षेप में गाँधीजी का परिचय देते हुए कहा जा सकता है आज हम उन्हीं के द्वारा लिखित उनकी आत्मकथा के एक अंश का अध्ययन करेंगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(vi) समभावी काव्य पंक्तियों द्वारा—पाठ्यवस्तु के भाव एवं विचार से संबंधित कविता की कुछ पंक्तियों को प्रस्तुत कर प्रश्न करते हुए पाठ की प्रस्तावना की जा सकती है। जैसे 'साहित्य की महत्ता' नामक पाठ को पढ़ाने के लिए निम्न पंक्तियों को प्रस्तुत किया जा सकता है :

''अंधकार है वहाँ, जहाँ आदित्य नहीं है।
मुर्दा है वह देश जहाँ साहित्य नहीं है॥''

उपर्युक्त वर्णित किसी भी विधि का प्रयोग कर पाठ की प्रस्तावना की जा सकती है। मुख्य बात तो यह है कि वह बच्चों के पूर्वज्ञान पर आधारित होनी चाहिए। उसमें 'सरल से कठिन की ओर' तथा 'ज्ञात से अज्ञात की ओर' शिक्षण-सूत्रों का पालन होना चाहिए।

उद्देश्य-कथन—पूर्वज्ञान-परीक्षा के अंत में सरल, संक्षिप्त एवं रोचक भाषा में अध्यापक को नवीन पाठ के मुख्य उद्देश्य को स्पष्ट कर देना चाहिए। पाठ का शीर्षक बताते हुए पाठ्य पुस्तक की पृष्ठ संख्या भी बता देनी चाहिए, जिससे बच्चे आसानी से पाठ को खोल सकें।

2. प्रस्तुतीकरण—उद्देश्य-कथन के पश्चात अध्यापक को छात्रों के सम्मुख नवीन पाठ को प्रस्तुत करना चाहिए। पाठ को प्रस्तुत करने के लिए अध्यापक को तीन प्रकार की क्रियाएँ संपन्न करनी होती हैं जिन्हें वाचन शिक्षण के अंग भी कहा जाता है। ये क्रियाएँ हैं :

(अ) वाचन (आ) व्याख्या (इ) विचार-विश्लेषण

(अ) वाचन—वाचन गद्य-शिक्षण का महत्त्वपूर्ण अंग है। इसमें बहुत सावधानी की आवश्यकता होती है। निम्न तीन प्रकार के वाचन की व्यवस्था अध्यापक को करनी होती है :

(i) आदर्श वाचन (ii) अनुकरण वाचन (iii) मौन वाचन

(i) आदर्श वाचन—अध्यापक द्वारा किए जानेवाले वाचन को आदर्श वाचन कहा जाता है। इसी का अनुकरण कर छात्र स्वयं वाचन करना सीखते हैं अत: नए गद्यांश से परिचित होते हैं और पाठ्य सामग्री के केंद्रीय भाव को ग्रहण करने का प्रयास करते हैं अत: आदर्श वाचन प्रत्येक दृष्टि से आदर्श होना चाहिए। आदर्श वाचन करते समय अध्यापक को बाएँ हाथ में गद्य पुस्तक पकड़नी चाहिए, दायाँ हाथ आवश्यक संचालन के लिए स्वतंत्र रखना चाहिए। एकदम सीधा खड़ा होना चाहिए। शुद्ध उच्चारण, विराम-चिह्नों, उचित हाव-भाव एवं उतार-चढ़ाव का ध्यान रखते हुए स्वाभाविक एवं प्रफुल्लित मुखमुद्रा में अध्यापक को गद्यांश का सस्वर पठन करना चाहिए।

(ii) अनुकरण वाचन—छात्रों के द्वारा किया जानेवाला सस्वर वाचन अनुकरण वाचन कहलाता है। छात्रों के उच्चारण को शुद्ध करने, उन्हें वाचन-कला में निपुण करने तथा पढ़ते हुए अर्थ ग्रहण करने की योग्यता का विकास करने आदि उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अध्यापक द्वारा आदर्श पाठ के उपरांत कक्षा में दो, तीन छात्रों से अलग-अलग अनुकरण वाचन कराया जाता है। छात्रों द्वारा अनुकरण वाचन करने के समय अध्यापक को बहुत सावधान रहकर पूरी कक्षा को ध्यान से देखते रहना चाहिए जिससे सभी छात्र अपनी-अपनी पुस्तक में देखते हुए वाचन को ध्यान से सुनें।

उच्चारण-संशोधन—अनुकरण वाचन के समय छात्र जो भी उच्चारण या पठन संबंधी अशुद्धि करते हैं उन्हें छात्रों की सहायता से ही शुद्ध कराने का प्रयास करना चाहिए।

(iii) मौन वाचन—वाचन का तीसरा प्रकार मौन वाचन है। परंतु यह कठिन शब्दों की व्याख्या के उपरांत कराया जाता है। गद्यांश के अर्थ एवं भाव को समझने के लिए छात्रों से गद्यांश को मन में पढ़ने और समझने के लिए कहा जाता है। मौन वाचन के समय अध्यापक को संपूर्ण कक्षा पर दृष्टिपात

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
करते रहना चाहिए कि सभी छात्र शांतिपूर्वक गद्यांश को पढ़ रहे हैं या नहीं। पठन पूरा होने के उपरांत पाठ्यपुस्तक को बंद करने का आदेश दे देना चाहिए और प्रश्न पूछने चाहिए।

(आ) व्याख्या—अनुकरण वाचन एवं उच्चारण संबंधी अशुद्धियों को दूर करने के पश्चात छात्रों के भाषा संबंधी ज्ञान एवं मानसिक स्तर को देखते हुए गद्यांश में आए कठिन शब्दों, मुहावरों एवं लोकोक्तियों तथा कठिन वाक्यांशों की भी व्याख्या करनी चाहिए ताकि छात्र गद्यांश के अर्थ एवं भाव को सुगमता से ग्रहण कर सकें। शब्दों को छाँटकर श्यामपट्ट पर लिख देना चाहिए और निम्नलिखित युक्तियों की सहायता से उन कठिन शब्दों का अर्थ छात्रों से ही निकलवाने का प्रयास करना चाहिए :

(i) प्रत्यक्ष वस्तु प्रदर्शन—अध्यापक वास्तविक वस्तु को दिखाकर शब्द का अर्थ छात्रों से निकलवा सकता है। जैसे 'जलज' का अर्थ बताने के लिए कमल के फूल को दिखाया जा सकता है।

(ii) चित्र, रेखाचित्र, मानचित्र दिखाकर—जैसे पर्णकुटी का अर्थ बताने के लिए पत्तों से बनी कुटिया का चित्र, त्रिकोण, डेल्टा, प्रत्यंचा आदि शब्दों के लिए क्रमशः त्रिकोण का डेल्टा का एवं धनुष का रेखाचित्र श्यामपट्ट पर बनाकर अर्थ बताया जा सकता है। इसी प्रकार सतपुड़ा, विंध्याचल आदि शब्दों को स्पष्ट करने के लिए मानचित्र का प्रयोग किया जा सकता है।

(iii) प्रतिमूर्ति द्वारा—कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनसे संबंधित पदार्थ कक्षा में लाना असंभव होता है। उनके अर्थ बताने के लिए उनकी प्रतिमूर्ति को कक्षा में प्रदर्शित किया जा सकता है। जैसे—व्याघ्र, वनराज आदि शब्दों के लिए इनके मॉडल दिखाने चाहिए।

(iv) अभिनय या अंगसंचालन द्वारा—मुस्कान, अट्टहास, त्यौरी चढ़ाना, घूरना आदि शब्दों की व्याख्या अंगसंचालन द्वारा सुगमता से की जा सकती है।

(v) वाक्य-प्रयोग द्वारा—बहुत-से शब्द ऐसे होते हैं जिनका अर्थ स्पष्ट करने के लिए उन्हें वाक्य में प्रयोग करना आवश्यक होता है। जैसे—'निवृत्त' शब्द का अर्थ बताने के लिए यह वाक्य—"अच्छे बच्चे प्रातःकाल अपने दैनिक कार्यों से निवृत्त होकर पढ़ने बैठ जाते हैं" बताकर अर्थ को स्पष्ट किया जा सकता है।

(vi) पर्यायवाची शब्द द्वारा—नवीन शब्द के समानार्थी सरल शब्दों का प्रयोग कर नवीन शब्द का अर्थ निकलवाया जा सकता है। जैसे—पारावार के लिए समुद्र, सागर आदि, भास्कर के लिए सूर्य, रवि आदि शब्दों को प्रस्तुत किया जा सकता है।

(vii) विपरीतार्थक शब्द द्वारा—कठिन शब्दों के विपरीतार्थक सरल शब्दों का प्रयोग करके भी कठिन शब्द का अर्थ स्पष्ट किया जा सकता है। जैसे—'दुर्जन' शब्द का अर्थ बताने के लिए 'सज्जन' का, 'अवनति' का अर्थ बताने के लिए 'उन्नति' और 'तिमिर' का अर्थ बताने के लिए 'प्रकाश' शब्द को प्रस्तुत किया जा सकता है।

(viii) व्युत्पत्ति द्वारा—अनेक शब्द ऐसे होते हैं जो बिगड़ते-बिगड़ते नया रूप धारण कर लेते हैं या किसी बोली से हिंदी भाषा में आ गए हैं, ऐसे शब्दों का अर्थ बताने के लिए उन शब्दों की व्युत्पत्ति बतानी चाहिए। जैसे धावक शब्द का अर्थ बताने के लिए धाव् धातु बताकर उसका अर्थ दौड़ना और 'क' प्रत्यय जिसका अर्थ करनेवाला अर्थात दौड़ने वाला आदि को स्पष्ट किया जा सकता है।

(ix) शब्द-विग्रह द्वारा—हिंदी भाषा में दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से भी अनेक शब्दों का निर्माण हुआ है। ऐसे शब्दों का निर्माण उपसर्ग, प्रत्यय, संधि व समास के द्वारा हुआ है। इनका अर्थ स्पष्ट किया जा सकता है। जैसे :

(क) उपसर्ग को अलग करके—प्रबल = प्र + बल, सुकर्म = सु + कर्म, पुनर्जन्म = पुनः + जन्म, सहपाठी = सह + पाठी आदि।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ख) प्रत्यय को अलग करके—जैसे—बुद्धिजीवी = बुद्धि + जीवी, विशेषज्ञ = विशेष + ज्ञ, धनवान = धन + वान आदि।

(ग) संधि-विच्छेद द्वारा—जैसे—अन्नाभाव = अन्न + अभाव, परमेश्वर = परम + ईश्वर, हिमाच्छादित = हिम + आच्छादित आदि।

(घ) समास-विग्रह द्वारा—जैसे—पदच्युत = पद से च्युत, यथाशक्ति = शक्ति के अनुसार, ध्यानमग्न = ध्यान में मग्न आदि। विग्रह-विधि में पहले दोनों शब्दों का अलग-अलग बनाया जाए, फिर उन्हें मिलाकर नवीन अर्थ से परिचित कराया जाए तथा वैसे ही कुछ अन्य शब्द बनाकर उनका अभ्यास कराया जाए।

(x) परिभाषा बताकर—कुछ शब्दों का अर्थ बताने के लिए उसकी परिभाषा बताकर अर्थ स्पष्ट किया जाता है। जैसे—पारस का अर्थ बताने के लिए इसकी परिभाषा ''वह धातु जिससे स्पर्श होने पर लोहा सोना बन जाता है'' बतानी चाहिए।

(xi) अर्थविस्तार-विधि—जैसे—श्रमजीवी का अर्थ बताने के लिए—''वह व्यक्ति जो मेहनत करके अपनी रोटी कमाता है'' बताना।

(xii) अनुवाद करना—जो शब्द अन्य भाषाओं से हिंदी में आए हैं उनका अर्थ स्पष्ट करने के लिए उनका हिंदी में अनुवाद करना चाहिए, जैसे—Hospital का अस्पताल या चिकित्सालय, Post Office का डाकघर आदि।

(xiii) प्रसंग-कथन द्वारा—कुछ शब्द ऐसे हैं, जिनका अर्थ स्पष्ट करने के लिए उन शब्दों के पीछे छिपी ऐतिहासिक, पौराणिक आदि घटनाओं को स्पष्ट करना आवश्यक होता है। जैसे—भागीरथी, सत्यवादी आदि शब्दों का अर्थ स्पष्ट करने के लिए इनसे संबंधित पौराणिक कथानकों को बताना अनिवार्य हो जाता है।

(xiv) व्याख्या द्वारा—कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनका अर्थ एक-दो शब्दों में नहीं बताया जा सकता है। इनके लिए प्रसंगानुसार विस्तृत व्याख्या करना आवश्यक है जैसे—पार्थ, नोबल पुरस्कार, शहीद, विधा आदि।

इस प्रकार कठिन शब्दों की व्याख्या करने के साथ-साथ गद्यांश में प्रयुक्त मुहावरे एवं लोकोक्तियों का अर्थ भी स्पष्ट करना होता है। वाक्य प्रयोग विधि की सहायता से मुहावरों की व्याख्या की जा सकती है, जैसे, 'आँख का तारा' मुहावरे का अर्थ बताने के लिए इसे वाक्य में प्रयुक्त किया जा सकता है—''सोहन अपनी माँ का एकलौता पुत्र होने के कारण उसकी आँखों का तारा है।'' इसी तरह प्रसंग-कथन द्वारा भी मुहावरे का अर्थ स्पष्ट किया जा सकता है जैसे, 'घर का भेदी लंका ढावे' का अर्थ बताने के लिए विभीषण की कथा सुनानी चाहिए। कहानी-विधि के द्वारा भी मुहावरे का अर्थ स्पष्ट किया जा सकता है, जैसे, 'अभिमानी का सिर नीचा' मुहावरे का अर्थ स्पष्ट करने के लिए खरगोश व कछुए की कहानी सुनाना। लाक्षणिक अर्थ स्पष्ट करके भी मुहावरों की व्याख्या की जा सकता है जैसे, 'अंधे की लाठी' का लाक्षणिक अर्थ बताते हुए अर्थ स्पष्ट करना 'एकमात्र सहारा'।

इस प्रकार से कठिन शब्दों, मुहावरों एवं लोकोक्तियों की व्याख्या करनी चाहिए।

व्याख्या के उपरांत छात्रों से गद्यांश को मन में पढ़ने के लिए कहना चाहिए ताकि वे गद्यांश के भाव एवं विचार को समझने का प्रयास करें।

(ङ) विचार-विश्लेषण एवं बोध-परीक्षण—छात्रों में वाचनयोग्यता व शब्द-भंडार को विकसित करने के उद्देश्य के साथ-साथ उनकी अर्थग्रहण करने की योग्यता व विचार-शक्ति को भी विकसित

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
करना गद्य-शिक्षण का उद्देश्य होता है। अतः अध्यापक को छात्रों की सहायता से पाठ्य वस्तु के विचारों का विश्लेषण करना चाहिए। प्रश्नोत्तर, स्वकथन, कहानी एवं व्याख्या आदि के द्वारा छात्रों को विचार करने के अधिक-से-अधिक अवसर प्रदान करने चाहिए। उदाहरण, दृष्टांत और तुलना आदि की सहायता से पाठ्य वस्तु के विचारों एवं तथ्यों को स्पष्ट करना चाहिए। इसके लिए पाठ्य वस्तु पर आधारित प्रश्न क्रमबद्ध रूप से पूछने चाहिए। छात्रों से पूर्ण वाक्य में उत्तर लेना चाहिए। छात्रों की बोध-क्षमता, विचार-शक्ति, कल्पना-शक्ति एवं सृजनात्मक योग्यता को विकसित करनेवाले प्रश्न पूछने चाहिए। विचार विश्लेषण के पश्चात छात्रों की अर्थग्रहण-योग्यता का परीक्षण भी करना चाहिए। छात्रों ने पाठ्य सामग्री को एवं प्रदत्त भाषायी ज्ञान को किस सीमा तक ग्रहण किया है इस बात की जाँच करने के लिए सरल, स्पष्ट एवं स्तरानुकूल प्रश्न पूछने चाहिए।

3. कक्षाकार्य-निरीक्षण—अध्यापक को कठिन शब्दों की व्याख्या एवं विचारों का विश्लेषण करते समय श्यामपट्ट का अधिक-से-अधिक प्रयोग करना चाहिए। बाद में छात्रों से इन कठिन शब्दों एवं व्याख्या आदि को अपनी अभ्यास-पुस्तिका में उतारने के लिए कहा जाता है। जब छात्र अपनी अभ्यास-पुस्तिका में श्यामपट्ट-कार्य लिखते हैं तो अध्यापक कक्षा में घूम-घूमकर छात्रों का निरीक्षण करता है और उनके पास जाकर लिखित कार्य में सुधार के लिए सुझाव भी देता है।

4. आवृत्ति—छात्रों को जो भी कुछ पढ़ाया गया है उसे उन्होंने पूरी तरह से ग्रहण किया है या नहीं, यह जानने का प्रयास किया जाता है। इसके लिए अध्यापक कुछ शब्दों के अर्थ, पाठ्यवस्तु से संबंधित एक-दो प्रश्न एवं लेखक के संबंध में कोई प्रश्न पूछ सकता है। छात्रों से नवीन शब्दों को वाक्य में प्रयोग करने के लिए भी कहना चाहिए। पढ़ाए गए पाठ का छात्रों पर क्या प्रभाव पड़ा है इस बात की जाँच करने के लिए कुछ कल्पनाजन्य प्रश्न भी पूछने चाहिए, जैसे—यदि तुम उस परिस्थिति में होते तो क्या करते? या उस घटना से तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है आदि।

5. गृह-कार्य—छात्रों की लिखित अभिव्यक्ति की जाँच करने एवं कक्षा में पढ़ाए गए पाठ का अभ्यास कराने के उद्देश्य से छात्रों को पाठ से संबंधित कुछ प्रश्न गृह-कार्य के रूप में देने चाहिए। छात्रों की मानसिक क्षमता एवं घर पर प्राप्त समय का अनुमान लगाकर ही गृह-कार्य देना चाहिए।

गद्य-शिक्षण की एक पाठ-योजना
(A Lesson Plan in Prose Teaching)

गद्य-शिक्षण छात्रों के शब्द-भंडार में वृद्धि करने, उनको शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराने, उनकी वाचन में निपुणता विकसित करने, उनकी अर्थग्रहण-योग्यता विकसित करने और उनकी मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति में परिपक्वता लाने की सर्वोत्तम विधा है। परंतु गद्य-शिक्षण द्वारा क्षात्रों में इन योग्यताओं का विकास तभी हो सकता है जब उसके लिए एक अच्छी पाठ-योजना का निर्माण किया जाए। निम्न रूप से गद्य-शिक्षण की पाठ-योजना का निर्माण किया जा सकता है :

पाठ-योजना

छात्राध्यापक का अनुक्रमांक :

विषय—**हिंदी (गद्य)** — **कक्षा**—दसम्

उपविषय—स्वामी विवेकानंद — **कलांश**—प्रथम

अवधि—40 मि.

दिनांक...........

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Swami Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुदेशनात्मक उद्देश्य :

1. छात्र अध्यापक द्वारा किए गए पाठ के सस्वर वाचन को ध्यानपूर्वक सुनेंगे और समझने का प्रयास करते है।

2. छात्र स्वामी विवेकानंद नामक पाठ के प्रथम दो गद्यांशों का उचित स्वर गति, शुद्ध उच्चारण एवं उचित हाव-भाव के साथ सस्वर पाठ करते हैं।

3. छात्र गद्यांश में आए हुए शब्दों, जैसे—नवजागरण, शंखध्वनि, अद्वितीय, दिव्य संदेश, उत्थान, उद्घोष, अनुयायी एवं आध्यात्मिक पिपासा आदि का शुद्ध उच्चारण करते हैं।

4. छात्र उपर्युक्त शब्दों का अर्थ बताते हैं तथा उनका अपने वाक्यों में प्रयोग करते हैं।

5. छात्र उपर्युक्त गद्यांश को पूर्ण मनोयोग से मन में पढ़ते हैं तथा अर्थ ग्रहण करते हैं।

6. छात्र स्वामी विवेकानंद के प्रारंभिक जीवन के बारे में गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देते हैं।

7. छात्र स्वामी विवेकानंद के प्रति सम्मान का भाव प्रकट करते हैं।

अनुदेशनात्मक सामग्री :

1. स्वामी विवेकानंद का चित्र
2. रामकृष्ण परमहंस का चित्र
3. शंख का मॉडल या चित्र या वास्तविक शंख

प्रारंभिक व्यवहार—छात्र अपनी अभिव्यक्ति में मानक भाषा का प्रयोग करते हैं। उन्होंने स्वामी विवेकानंद का नाम सुना है तथा वे स्वामी विवेकानंद के बारे में भी थोड़ा-बहुत जानते हैं।

प्रस्तावना—छात्रों को स्वामी विवेकानंद का चित्र दिखाकर निम्न प्रश्न पूछे जाएँगे :

1. यह किस महापुरुष का चित्र है?
2. इनके गुरु कौन थे? (छात्रों को रामकृष्ण परमहंस का चित्र दिखाया जाएगा)
3. रामकृष्ण मिशन की स्थापना किसने की?
4. अमरीका में हुए सर्वधर्म सम्मेलन में भारत की ओर से किस महापुरुष ने भाग लिया था?

उद्देश्य-कथन—बच्चो! स्वामी विवेकानंद एक महान संत, विचारक एवं समाज-सुधारक थे जिन्होंने अपने ज्ञान के कारण भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी सम्मान प्राप्त किया और भारत को गौरवावित किया। आज हम मुंशी प्रेमचंद द्वारा रचित 'स्वामी विवेकानंद' नामक पाठ के प्रथम दो गद्यांशों का अध्ययन करेंगे।

गद्यांश—भारत के नवजागरण की शंखध्वनि करनेवाले महापुरुषों में स्वामी विवेकानंद का स्थान अद्वितीय है। उनका दिव्य संदेश भारत के लिए ही नहीं, अपितु संपूर्ण विश्व के लिए नए आध्यात्मिक उत्थान का उद्घोष था।

स्वामी विवेकानंदजी का जन्म सन् 1863 ई. में हुआ। बचपन में उनका नाम नरेंद्रनाथ था। वे प्रारंभ से ही होनहार दिखाई देते थे। उन्होंने अंग्रेजी स्कूल में शिक्षा पाई और सन 1884 ई. में बी.ए. की डिग्री प्राप्त की। बचपन से ही उनके अंदर एक प्रबल आध्यात्मिक भूख थी। कुछ दिनों तक वे ब्रह्म समाज के अनुयायी रहे। वह नित्य प्रर्थना में सम्मिलित होते थे। गला बहुत ही अच्छा होने के कारण कीर्तन समाज में उनका बड़ा आदर था पर ब्रह्म समाज के सिद्धांत उनकी प्यास न बुझा सके। अत: सत्य की खोज में वे इधर-उधर भटकने लगे। उन दिनों स्वामी रामकृष्ण परमहंस के प्रति लोगों की बड़ी श्रद्धा थी। नवयुवक नरेंद्रनाथ ने भी उनके सत्संग से लाभ उठाना प्रारंभ किया और धीरे-धीरे उनके

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उपदेशों से वे इतने प्रभावित हुए कि उनकी भक्तमंडली में सम्मिलित हो गए। उस सच्चे गुरु से अध्यात्म तत्व और वेदांत रहस्य पाकर युवक नरेंद्र की आध्यात्मिक पिपासा शांत हुई। उनकी गुरुभक्ति पूजा की सीमा तक पहुँच गई थी। जब कभी वे परमहंस जी की चर्चा करते तो एक-एक शब्द से उनकी श्रद्धा और सम्मान टपकता था।

प्रस्तुतीकरण—पाठ का विकास छात्रों के सक्रिय सहयोग से किया जाएगा।

शिक्षण-बिंदु	छात्राध्यापक क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ
लेखक-परिचय	छात्राध्यापक सर्वप्रथम संक्षेप में पाठ के लेखक के बारे में बताएगा और आवश्यक बिंदुओं को श्यामपट्ट पर लिखेगा— 'स्वामी विवेकानंद' नामक पाठ के लेखक कथाकार मुंशी प्रेमचंद जी हैं। उनका वास्तविक नाम धनपतराय था और हिंदी में प्रेमचंद के नाम से लिखते थे। समाज की विभिन्न समस्याओं को उन्होंने अपनी रचनाओं का विषय बनाया। हिंदी कथा साहित्य तथा उपन्यास लेखन के क्षेत्र में उनका विशेष योगदान रहा। उन्हें उपन्यास सम्राट की उपाधि से विभूषित किया गया। गोदान, कर्मभूमि, रंगभूमि, निर्मला आदि उनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं।	छात्र ध्यानपूर्वक सुनेंगे और श्यामपट्ट पर लिखे बिंदुओं को अपनी कापी में उतारेंगे।
पाठ का सार	छात्राध्यापक बच्चों को पाठ का सार बताएगा—इस पाठ में स्वामी विवेकानंद के बारे में बताया गया है। बचपन से ही उनके अंदर एक आध्यात्मिक भूख थी। स्वामी परमहंस के संपर्क में आने पर उनकी ज्ञान-पिपासा शांत हुई। उन्होंने अपने विचारों से भारत को ही नहीं बल्कि विश्व के अन्य देशों को भी प्रेरित किया। उन्होंने भाईचारे और मानवता की सेवा का दिव्य संदेश विश्व को दिया।	छात्र ध्यानपूर्वक सुनेंगे।
	छात्राध्यापक बच्चों से अपनी पाठ्यपुस्तक हिंदी गद्य भाग का पृष्ठ संख्या 38 खोलने के लिए कहेगा और जिन बच्चों के पास पुस्तक नहीं होगी उनको गद्यांश की हस्तलिखित प्रतियाँ वितरित करेगा।	छात्र अपनी-अपनी हिंदी की गद्य पुस्तक का पृष्ठ संख्या 38 खोलेंगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिक्षण-बिंदु	छात्राध्यापक क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ
आदर्श वाचन	छात्राध्यापक शुद्ध उच्चारण एवं विराम-चिह्नों को ध्यान में रखते हुए उचित स्वर और भावानुसार गद्यांश का वाचन करेगा।	छात्र ध्यान से सुनेंगे।
अनुकरण वाचन	कक्षा के कतिपय छात्रों से एक-एक करके गद्यांश का सस्वर पठन करने के लिए निर्देश देगा। अध्यापक छात्रों के वाचन को ध्यानपूर्वक सुनेगा और उनके उच्चारण संबंधी दोषों आदि को नोट करेगा।	छात्र अध्यापक के आदेशानुसार गद्यांश का सस्वर वाचन करेंगे।
उच्चारण-संशोधन	अध्यापक बच्चों की उच्चारण संबंधी अशुद्धियों को उन्हीं के सहयोग से ठीक कराएगा।	छात्र शुद्ध उच्चारण का अभ्यास करेंगे।
शब्द-व्याख्या	अध्यापक छात्रों की सहायता से गद्यांश में आए हुए शब्दों के अर्थ एवं भाव विभिन्न विधियों के प्रयोग से स्पष्ट करेगा और उन्हें श्यामपट्ट पर लिखेगा।	छात्र पूछी गई बातों का विचार करके उत्तर देंगे।

शब्द	अर्थ	विधि का नाम	विधि का प्रयोग
नवजागरण	नई जागृति	संधि-विच्छेद	नव + जागरण नई + जागृति
शंखध्वनि	शंख की आवाज (चारों तरफ फैलाना)	विग्रह एवं व्याख्या (शंख का चित्र दिखाएगा)	शंख की ध्वनि जिस प्रकार शंख की ध्वनि जोर से चारों तरफ सुनाई देती है उसी तरह चारों तरफ फैला संदेश शंखध्वनि कहा जाता है।
अद्वितीय	जिसके समान दूसरा न हो	विग्रह	अ + द्वितीय नहीं +दूसरा
उद्घोष	ऊँचे स्वर में घोषणा / गर्जन	वाक्य-प्रयोग	सब ने मिलकर ''भारतमाता की जय'' का उद्घोष किया।
उत्थान	ऊँचे उठना	विलोम शब्द	पतन (नीचे गिरना)
अनुयायी	पीछे चलने वाले	वाक्य-प्रयोग	लक्ष्मण,राम के अनुयायी थे।
वेदांतरहस्य	वेदों में वर्णित बातों का गूढ़ अर्थ	व्याख्या	चारों वेदों में जिन बातों का वर्णन किया गया है उनका गूढ़ अर्थ / भाव

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आध्यात्मिक पिपासा	अध्यात्म को जानने की प्यास	व्याख्या एवं वाक्य प्रयोग	"रामकृष्ण परहंस के उपदेशों से विवेकानंद की आध्यात्मिक पिपासा शांत हुई।" आत्मा परमात्मा के रहस्य को जानने की इच्छा।

शिक्षण-बिंदु	छात्राध्यापक क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ
मौन पठन	अध्यापक बच्चों से गद्यांश को मन में पढ़ने और उसका अर्थ समझने के लिए कहेगा तथा देखेगा कि सभी छात्र पूर्ण मनोयोग से पढ़ रहे हैं।	सभी छात्र शांतिपूर्वक गद्यांश को मन में पढ़ेंगे।
बोध परीक्षा एवं विचार-विश्लेषण	अध्यापक गद्यांश में व्यक्त किए गए विचारों को स्पष्ट करने के लिए छात्रों से निम्न प्रश्न पूछेगा और बीच-बीच में अपने कथन के द्वारा विचारों का विश्लेषण करेगा : **प्रश्न**—1. भारत में नवजागरण की शंखध्वनि से लेखक का क्या अभिप्राय है ? 2. लेखक ने विवेकानंद के संदेश के लिए किस विशेषण का प्रयोग किया है ? 3. स्वामी विवेकानंद का दिव्य संदेश संपूर्ण विश्व के लिए किस बात का उद्घोष था ?	छात्र अध्यापक के प्रश्नों का उत्तर देंगे।
	अध्यापक-कथन—स्वामी विवेकानंद ने आध्यात्मिक मूल्यों के माध्यम से भारत में एक नवीन जागृति लाने का प्रयास किया और इसी बात का सर्वत्र प्रचार किया। इसीलिए लेखक ने उनके संदेश को दिव्य संदेश कहा है क्योंकि आध्यात्मिक विकास से मानव जाति उन्नति के चरम शिखर पर पहुँच सकती है।	छात्र ध्यानपूर्वक सुनेंगे।
	4. स्वामी विवेकानंद का जन्म किस सन् में हुआ ? 5. विवेकानंद का बचपन का क्या नाम था ? 6. उन्होंने बी.ए. की डिग्री कब प्राप्त की ? 7. प्रारंभ में वे किस समाज के अनुयायी रहे ? 8. कीर्तन समाज में उनका बड़ा आदर क्यों था ?	छात्र प्रश्नों का उत्तर देंगे।

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिक्षण-बिंदु	छात्राध्यापक क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ
	9. वे इधर-उधर क्यों भटकने लगे ? 10. विवेकानंद किसके उपदेशों से प्रभावित हुए ? 11. नरेंद्र ने आध्यात्मिक भूख शांत करने के लिए क्या-क्या कार्य किए ? 12. नरेंद्र की आध्यात्मिक भूख कब शांत हुई ?	
	अध्यापक कथन—स्वामी विवेकानंद को युवावस्था से ही वेदांत रहस्य जानने की आध्यात्मिक पिपासा थी। वे सत्य की खोज में इधर-उधर घूमते रहे। स्वामी रामकृष्ण परमहंस के संपर्क में आने पर विवेकानंद को अध्यात्म तत्व और वेदांत रहस्य का ज्ञान हुआ तब उनकी ज्ञान-पिपासा शांत हुई।	छात्र ध्यानपूर्वक सुनेंगे।
	13. किसकी चर्चा करते हुए विवेकानंद की वाणी से श्रद्धा और सम्मान व्यक्त होता था ? 14. विवेकानंद की गुरुभक्ति किस सीमा तक पहुँच गई थी ?	छात्र उत्तर देंगे।
	अध्यापक-कथन—गुरु के प्रति श्रद्धा और भक्ति शिष्य का एक सहज व्यवहार माना जाता है। स्वामी विवेकानंद जब भी अपने गुरु रामकृष्ण परमहंस की बात करते थे तो उनके एक-एक शब्द में गुरु के प्रति श्रद्धा और सम्मान भरा हुआ दिखाई देता था। सच्चे गुरु का स्थान तो ईश्वर से भी महान माना गया है। कबीरदास जी ने तो कहा भी है—	छात्र ध्यानपूर्वक सुनेंगे।
व्याख्यात्मक पंक्तियाँ	''गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागूं पांय। बलिहारी गुरु आपने, जिन गोविंद दियो मिलाय।'' (अध्यापक इन पंक्तियों को श्यामपट्ट पर लिखेगा।)	
कक्षा कार्य एवं निरीक्षण	छात्राध्यापक बच्चों से श्यामपट्ट पर लिखे हुए शब्द, अर्थ एवं व्याकरण संबंधी कार्य तथा व्याख्यात्मक पंक्तियाँ अपनी-अपनी	छात्र श्यामपट्ट पर लिखे शब्द अर्थ आदि अपनी-अपनी कापियों में उतारेंगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिक्षण-बिंदु	छात्राध्यापक क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ
	कापी में लिखने के लिए कहेगा और देखेगा कि सब छात्र अपनी-अपनी अभ्यास-पुस्तिकाओं में श्यामपट्ट कार्य ठीक-ठीक लिख रहे हैं।	
अर्थग्रहण परीक्षण	पठित गद्यांश का अर्थ बच्चों ने समझा है या नहीं इस बात की जाँच करने के लिए छात्राध्यापक निम्न प्रश्न पूछेगा : 1. भारत के नवजारण का उद्घोष करनेवाले महापुरुषों में स्वामी विवेकानंद का नाम अद्वितीय क्यों है ? 2. विवेकानंद ने किस भाषा के स्कूल में शिक्षा प्राप्त की ? 3. विवेकानंद किसकी भक्तमंडली में सम्मिलित हो गए ? 4. विवेकानंद ने अपनी आध्यात्मिक पिपासा को शांत करने के लिए क्या-क्या कार्य किए ? 5. उनकी आध्यात्मक पिपासा कैसे शांत हुई ?	छात्र प्रश्नों का उत्तर देंगे।
गृह-कार्य	अध्यापक छात्रों को निम्न प्रश्न देगा और फिर उन उत्तरों की जाँच करेगा— 1. इस गद्यांश का सार अपने शब्दों में लिखो। 2. निम्न शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो : अद्वितीय, उत्थान, उद्घोष, सत्संग, श्रद्धा और सम्मान।	छात्र इन प्रश्नों का उत्तर घर से लिखकर लाएँगे।

अध्ययन के लिए प्रश्न

1. हिंदी-शिक्षण में गद्य-साहित्य और उसकी शिक्षा का क्या महत्त्व है ? गद्य-शिक्षण के लिए अपेक्षित उद्देश्यों का उल्लेख कीजिए।

2. माध्यमिक स्तर पर गद्य-शिक्षण के लिए कौन-कौन-सी विधियाँ काम में लाई जा सकती हैं ? संक्षेप में वर्णन कीजिए।

3. गद्य-शिक्षण से संबंधित पाठ-योजना बनाते हुए आवश्यक सोपानों का विस्तार से उल्लेख कीजिए।

4. गद्य क्या है ? गद्य-साहित्य के अध्ययन में सम्मिलित उसके दो रूपों—गहन एवं विस्तृत अध्ययन में अंतर स्पष्ट कीजिए।

5. माध्यमिक स्तर पर गद्य-शिक्षण के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए गहन एवं सूक्ष्म अध्ययन के लिए निर्धारित गद्य-पाठ की शिक्षण विधियों एवं सोपानों की विवेचना कीजिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

6. गद्य-पाठ में आए हुए कठिन शब्दों की व्याख्या किन-किन विधियों से की जा सकती है ? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

7. घद्य-शिक्षण में विचार-विश्लेषण का क्या महत्त्व है ? यह ठीक प्रकार कैसे कराया जा सकता है ? स्पष्ट करें।

8. सफल गद्य-शिक्षण हेतु माध्यमिक स्तर की किसी भी कक्षा के पाठ्यक्रम में शामिल गद्य-पाठ के एक गद्यांश की पाठ-योजना तैयार कीजिए।

9. निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :

(i) हिंदी-शिक्षण में गद्य-शिक्षण का स्थान एवं महत्त्व
(ii) माध्यमिक स्तर पर गद्य शिक्षण के उद्देश्य
(iii) गद्य-शिक्षण की प्रमुख विधियाँ
(iv) गद्य-शिक्षण में गहन एवं विस्तृत अध्ययन
(v) गद्य-शिक्षण में कठिन शब्दों की व्याख्या
(vi) गद्य-शिक्षण में बच्चों की उच्चारण-अशुद्धियाँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

12

कहानी-शिक्षण
(Teaching of Story)

कहानी क्या है ? (What is Story?)

कहानी गद्य साहित्य की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा है। यह विधा गद्य की अन्य विधाओं से इस रूप में भिन्न होती है कि इसमें लेखक की सारी शक्ति किसी घटना, भाव या समस्या की अभिव्यक्ति पर केंद्रित रहती है। कहानी क्या है—इसके बारे में विभिन्न विद्वानों ने अपने अलग-अलग विचार प्रस्तुत किए हैं। मुंशी प्रेमचंद के अनुसार—"गल्प (कहानी) एक ऐसी रचना है जिसमें जीवन के किसी एक अंश या एक मनोभाव को प्रकट करना ही लेखक का उद्देश्य होता है। उसके चरित्र, उसकी शैली, उसका कथान्यास सब उसी एक भाव को पुष्ट करते हैं।"

डॉ. श्यामसुंदरदास ने कहानी को परिभाषित करते हुए कहा है—"आख्यायिका एक निश्चित लक्ष्य या प्रभाव को लेकर चलनेवाला नाटकीय आख्यान है।"

पाश्चात्य विद्वान चार्ल्स बैरेट के अनुसार—"कहानी एक लघु वर्णनात्मक गद्य-रचना है जिसमें वास्तविक जीवन को कलात्मक रूप में प्रस्तुत किया जाता है।"

इस प्रकार उपर्युक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट होता है कि—

(i) कहानी एक लघु गद्य-रचना है।

(ii) कहानी में जीवन की वास्तविकता होती है।

(iii) कहानी में नाटकीयता का समावेश होता है।

(iv) उसका एक निश्चित लक्ष्य होता है।

(v) उसमें प्रभाव की एकता होती है।

(vi) उसमें संघर्ष एवं कौतूहल होता है।

(vii) वह पाठकों का मनोरंजन करने की क्षमता रखती है।

उपर्युक्त परिभाषाओं व विशेषताओं को देखने से कहानी के कुछ तत्वों का पता चलता है जो कि निम्नलिखित हैं :

(i) कथावस्तु—कहानी का कोई-न-कोई एक कथानक होता है। लेखक जीवन के किसी एक अंश, मनोभाव या घटना को लेकर ही कहानी की रचना करता है।

(ii) पात्र एवं चरित्र-चित्रण—कहानी में एक या एक से अधिक पात्र होते हैं जिनके चरित्र को लेकर कहानी आगे बढ़ती है।

(iii) कथोपकथन—कहानी के पात्रों की मनोदशा को स्पष्ट करने, पात्रों की भावना या कहानी की घटना को आगे बढ़ाने के लिए, पात्र आपसी वार्तालाप करते हैं, यही कथोपकथन कहलाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(iv) भाषा-शैली—पात्रों के वार्तालाप या लेखक द्वारा घटना का वर्णन करने के लिए भाषा-शैली का प्रयोग किया जाता है। यह भाषा सरल, सरस तथा स्वाभाविक होनी चाहिए।

(v) देशकाल और वातावरण—कहानी जिस समय के समाज या वातावरण से संबंध रखती है उसे देशकाल कहते हैं। कहानी के लक्ष्य की स्पष्टता के लिए देशकाल का स्पष्ट चित्रण आवश्यक है।

(vi) उद्देश्य—कहानी वैसे तो मनोरंजन प्रदान करती है परंतु इसके अलावा भी कहानी का कोई-न-कोई निश्चित उद्देश्य होता है। अत: वह अपने उद्देश्य की प्राप्ति में सफल होनी चाहिए।

मातृभाषा की शिक्षा में कहानी कहने का महत्त्व
(Importance of Story telling in Teaching of Mother tongue)

मानव-जीवन में कहानियों का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। एक ओर तो ये व्यक्ति का मनोरंजन करती हैं और दूसरी ओर ये व्यक्ति का चरित्र-निर्माण करने और मानव-जीवन के विविध पक्षों का ज्ञान प्रदान करने में भी सहायता करती हैं।

मातृभाषा की शिक्षा में तो कहानी का अत्यधिक महत्त्व है। छोटे-छोटे बच्चे कहानी कहने और सुनने में बहुत रुचि रखते हैं। जो बातें उन्हें अच्छी नहीं लगतीं, उन्हें भी कहानी के माध्यम से रोचक बनाकर प्रस्तुत किया जा सकता है। छोटे-छोटे बच्चे जब कहानी सुनते या पढ़ते हैं तो इतने तल्लीन हो जाते हैं कि उन्हें अपने आसपास का ज़रा भी ध्यान नहीं रहता है। यह वैज्ञानिक सत्य है कि जिस कार्य में मन लगता है, उसमें ध्यान भी लगता है और जिसमें ध्यान केंद्रित होता है, उस कार्य को पूरा करने में सफलता भी अधिक मिलती है। इसलिए आज केवल भाषा में ही नहीं अपितु इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र, विज्ञान, गणित आदि की शिक्षा देने के लिए भी कहानियों का प्रयोग किया जाता है। जिस तरह शिक्षण की प्रश्नोत्तर, भाषण आदि प्रणालियाँ होती हैं उसी तरह से कहानी-प्रणाली भी आज मान्य व प्रचलित है।

हिंदी के गद्य रूप की एक महत्त्वपूर्ण विधा होने के नाते मातृभाषा की शिक्षा में तो कहानी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। मातृभाषा के अंग—गद्य, पद्य, व्याकरण, रचना, नाटक, आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण आदि किसी भी अंग की शिक्षा देते समय कहानियों का प्रयोग शिक्षण को सरस, सुगम, आकर्षक एवं रुचिकर बना देता है।

किसी भी गद्य-पाठ को पढ़ाते समय कहानी का प्रयोग नीरस-से-नीरस गद्य-पाठ को रुचिकर बना देता है और कठिन-से-कठिन तथ्य को आसानी से स्पष्ट कर देता है। गद्य-पाठ में अनेक ऐसे शब्द प्रयुक्त होते हैं जिनसे संबंधित अंतर्कथा बताए बिना गद्यांश का भाव स्पष्ट नहीं किया जा सकता है।

इसी प्रकार पद्य-शिक्षण में भी कविता में छिपी हुई अंतर्कथा को स्पष्ट किए बिना कविता के अर्थ एवं भाव को स्पष्ट नहीं किया जा सकता है। जैसे मैथिलीशरण गुप्त रचित यशोधरा काव्य के एक अंश 'पश्चाताप' नामक कविता को पढ़ाते समय गौतम बुद्ध और यशोधरा की कहानी तथा गौतम बुद्ध के गृहत्याग संबंधी घटना का वर्णन किए बिना इस कविता के भाव को स्पष्ट नहीं किया जा सकता है। इस घटना को सुनने के पश्चात ही छात्र कविता के रस और सौंदर्य का अनुभव पूरी तरह से कर सकेंगे।

व्याकरण की शिक्षा में भी कुछ शब्दों की व्युत्पत्ति, मुहावरे, लोकोक्ति, विराम-चिह्नों का प्रयोग आदि की शिक्षा देते समय कहानी के प्रयोग से व्याकरण जैसे नीरस विषय को भी सरस बनाया जा सकता है। जैसे को तैसा, लालच बुरी बला है, घर का भेदी लंका ढाए, हवाई किले बनाना आदि बहुत से मुहावरे एवं लोकोक्तियों को कहानी के माध्यम से बहुत अच्छी तरह से स्पष्ट किया जा सकता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रचना की शिक्षा के समय तो कहानी विधि सर्वोत्तम होती ही है। होली, दीपावली, रक्षाबंधन आदि पर निबंध लिखवाते समय क्रमश: प्रह्लाद, हिरण्यकशिपु, होलिका की कथा, रामचंद्र के चौदह वर्ष पश्चात बनवास से लौटने की कथा एवं वीर रानी पद्मावती और हुमायूँ की कहानी सुनाकर ही इन पर्वों का महत्त्व स्पष्ट किया जा सकता है।

इसी प्रक़ार नाटक, आत्मकक्षा, जीवनी एवं संस्मरण की शिक्षा देते समय उनसे संबंधित कथानकों एवं आगे-पीछे की घटनाओं को सुनाने से शिक्षण रुचिकर बन जाता है।

उपर्युक्त साहित्यिक विधाओं के शिक्षण को रोचक बनाने के साथ-साथ कहानी मातृभाषा-शिक्षण के विभिन्न उद्देश्यों को प्राप्त करने में भी सहायक होती है। कहानी सुनने और कहने से बच्चों में श्रवण-कौशल एवं मौखिक अभिव्यक्ति-कौशल का विकास होता है। कहानी पढ़ने और लिखने से बच्चों में वाचन एवं लेखन-कौशल को विकसित करने में सहायता मिलती है। इस तरह कहानी छात्रों में भाषायी कौशलों को विकसित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य करती है।

कहानी सुनने, कहने, पढ़ने व लिखने से बच्चों के भाषा संबंधी ज्ञान में भी वृद्धि होती है। उन्हें नए-नए शब्दों, मुहावरों एवं लोकोक्तियों का व्यावहारिक रूप से प्रयोग करने का अभ्यास होता है।

भाषाज्ञान के साथ-साथ कहानी के द्वारा बच्चों के सामान्य ज्ञान में भी वृद्धि होती है। कहानियों के माध्यम से जीवन के विविध पक्षों का ज्ञान होता है। पशु, पक्षी, एवं मानव के स्वभाव व गुण-दोषों का ज्ञान भी प्राप्त होता है।

यह ज्ञान बच्चों की सोचने, विचार करने, तर्क करने एवं निर्णय लेने आदि मानसिक शक्तियों को विकसित कर उनका स्वस्थ मानसिक विकास करने में सहायक होता है।

बचपन से ही हर बालक कहानी सुनने व कहने में बहुत रुचि रखता है। अत: कहानी के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने से छात्रों की पढ़ने में रुचि विकसित होती है। शिक्षण उनके लिए नीरस न होकर रोचक हो जाता है और वे अध्ययन करने में रुचि लेने लगते हैं। अध्ययन के प्रति यह रुचि धीरे-धीरे साहित्यिक अभिरुचि को भी विकसित करती है। अभिरुचि होने के कारण, बच्चे जब भी खाली होते हैं, वे किसी-न-किसी पुस्तक या पत्र-पत्रिका को लेकर पढ़ने बैठ जाते हैं। इससे उनका स्वस्थ मनोंरजन तो होता ही है, साथ ही खाली समय का सदुपयोग भी होता है। इतना ही नहीं, जो अध्यापक अपने शिक्षण में कहानी आदि का प्रयोग करता है, उसका शिक्षण बच्चों को अच्छा लगता है और वे उस अध्यापक के साथ भावात्मक रूप से जुड़ा हुआ अनुभव करने लगते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि कहानी कहने से अध्यापक व छात्रों के बीच स्वाभाविक संबंध विकसित करने में सहायता मिलती है। इसीलिए रायर्वन कहते हैं—"प्रत्येक अध्यापक को प्रयत्न करना चाहिए कि वह एक अच्छी कहानी सुनानेवाला बन जाए। किसी भी निपुण अध्यापक को कोई बात इतनी सहायता नहीं करती जितनी कि कहानी सुनाने की निपुणता।" बास्तव में छोटी कक्षाओं के लिए तो शिक्षक को कहानी सुनाने में निपुण होना आवश्यक है। वह कहानी सुनाने में छोटे-छोटे बालकों के संपर्क में आता है, जो उसकी देखरेख में छोड़े जाते हैं। एक अच्छी कहानी बच्चों के हृदय पर प्रभाव डालती है और उनके ध्यान को खींचती है। बच्चों को कहानी सुनाकर नीरस-से-नीरस उपदेश भी सरसता से दिया जा सकता है। कहानी की घटनाओं में समाविष्ट नैतिक उपदेश बच्चों के मन की गहराई तक उतर जाता है और इस तरह कहानी बच्चों के नैतिक विकास एवं चारित्रिक निर्माण में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

अंत में हम कह सकते हैं कि मातृभाषा की शिक्षा में कहानी कहने का महत्त्वपूर्ण स्थान है, बिना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहानी कहे मातृभाषा के किसी भी रूप का शिक्षण सरस, रुचिकर एवं प्रभावशाली बनाया ही नहीं जा सकता।

परंतु मातृभाषा की शिक्षा में कहानी की उपयोगिता तभी है जब कि कहानी का चयन ठीक प्रकार से हो और उसको बच्चों के सम्मुख सही ढंग से प्रस्तुत किया जाए।

कहानी-शिक्षण के उद्‌देश्य
(Aims of Story Teaching)

कहानी गद्‌य साहित्य की एक विधा है। इसका शिक्षण विस्तृत एवं स्थूल अध्ययन के लिए किया जाता है। गद्‌य (निबंध) पाठ में बच्चों को जो भाषायी ज्ञान दिया जाता है उसी के व्यावहारिक प्रयोग का अभ्यास करने के लिए कहानी-शिक्षण का आयोजन किया जाता है। वैसे कहानी का मुख्य उद्‌देश्य छात्रों का मनोरंजन करना और आनंद प्रदान करना है। सीताराम चतुर्वेदी ने कहानी के उद्‌देश्य पर प्रकाश डालते हुए लिखा है—"कहानी का प्रमुख उद्‌देश्य आनंद देना है। जिस प्रकार गंगा-स्नान करने के लिए जानेवाले भक्त का मुख्य उद्‌देश्य गंगा-स्नान करना होता है, किंतु इसके साथ-साथ उसे देव-दर्शन भी मिल जाता है...उसी प्रकार पाठशाला में कहानी कहने का प्रधान उद्‌देश्य तो बच्चों को आनंद देना है, भले ही उसमें नीति, व्यवहार, शिष्टाचार आदि के उपदेश निकल आएँ और छात्रों को प्रभावित करें।" संक्षेप में कहानी कहने के उद्‌देश्य को हम निम्नलिखित क्रम में स्पष्ट कर सकते हैं :

(i) छात्रों के शब्द, सूक्ति, मुहावरे एवं लोकोक्ति भंडार को सक्रिय बनाना।

(ii) छात्रों में ध्यानपूर्वक सुनने व सुनकर अर्थ ग्रहण करने के कौशल को विकसित करना।

(iii) छात्रों को स्वयं कहानी कहने एवं मौखिक रूप से विचारों को व्यक्त करने के योग्य बनाना।

(iv) छात्रों की साहित्य में अभिरुचि विकसित करना।

(v) छात्रों का स्वस्थ मनोरंजन करना एवं आनंद प्रदान करना।

(vi) छात्रों को कहानी की विविध शक्तियों से परिचित कराना।

(vii) छात्रों की कल्पना एवं स्मरण शक्ति का विकास करना।

(viii) छात्रों को मानव-जीवन के विविध पक्षों, पौराणिक कथाओं, ऐतिहासिक घटनाओं, सामाजिक दशाओं, पशु-पक्षी मानव-स्वभाव, सांस्कृतिक मूल्यों एवं धार्मिक विश्वासों से परिचित कराना।

(ix) पाठ्‌य विषय के प्रति छात्रों की जिज्ञासा तथा रुचि उत्पन्न करना।

(x) पाठ्‌य विषय के सूक्ष्म तथा कठिन तथ्यों को सरल व बोधगम्य बनाना।

(xi) छात्रों में ध्यान न एकाग्रता से अध्ययन करने की आदत डालना।

(xii) छात्रों को स्वयं कहानी की रचना करने के लिए प्रेरित करना अर्थात छात्रों की सृजनात्मक शक्ति को विकसित करना।

(xiii) छात्रों में देश, जाति तथा धर्म के प्रति स्थायी भाव बनाना।

(xiv) छात्रों की वृत्तियों को परिमार्जित कर उनका चरित्र-निर्माण करना।

(xv) छात्रों में सामाजिकता एवं मानव-प्रेम की भावना का विकास करना।

कहानी कहने व सुनने के उपर्युक्त शिक्षण-उद्‌देश्यों की प्राप्ति तभी संभव है जबकि बच्चों को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुनाने के लिए कहानी का चयन बहुत सावधानी के साथ किया जाए एवं अध्यापक बच्चों के सम्मुख कहानी को रोचक ढंग से प्रस्तुत करे।

कहानी का चयन (Selection of the Story)

कहानी-शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य बच्चों का मनोरंजन करना और उन्हें आनंद प्रदान करना है। यों तो कहानी का शिक्षण साध्य एवं साधन दोनों रूपों में किया जाता है परंतु यहाँ कहानी की शिक्षा साध्यरूप में देने के संबंध में विचार किया जा रहा है क्योंकि साधन रूप में कहानी का प्रयोग शिक्षण को सरस, सुगम व रोचक बनाने के लिए किया जाता है और साध्य रूप में कहानी शिक्षण को सरस बनाने के साथ-साथ छात्रों के चरित्र-निर्माण में सहायक होती है और छात्रों में विभिन्न भाषायी कौशलों एवं योग्याताओं को विकसित करती है तथा मनोरंजन भी करती है।

इन सभी उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए यह आवश्यक है कि कहानी का चुनाव बहुत सोच-विचारकर, सावधानीपूर्वक किया जाए। अध्यापक को कहानी का चुनाव करने के लिए निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए :

(i) कहानी की भाषा छात्रों के बौद्धिक स्तर के अनुसार हो।

(ii) कहानी की विषयवस्तु बच्चों के आसपास के वातावरण से संबंधित हो। प्रारंभिक स्तर पर पशु-पक्षियों से संबंधित काल्पनिक कहानियाँ और माध्यमिक स्तर पर साहसिक, ऐतिहासिक एवं सामाजिक कहानियाँ कही जा सकती हैं।

(iii) छात्रों के चरित्र का निर्माण करनेवाली शिक्षाप्रद कहानियों का चयन हो।

(iv) कहानियाँ घटना-प्रधान हों।

(v) कहानियाँ ऐसी हों जिनमें वार्तालाप की अधिकता हो एवं संवाद चुटीले हों।

(vi) कहानी का कथानक अधिक जटिल नहीं होना चाहिए। कथानक स्वाभाविक हो।

(vii) कहानी में शब्द-योजना सरल एवं वाक्य छोटे-छोटे हों।

(viii) कहानी छात्रों की रुचियों से संबंधित हो।

(ix) कहानी में क्रिया की प्रधानता होनी चाहिए। क्रिया-प्रधान कहानी में हर समय नवीनता बनी रहती है और छात्र यह जानने को उत्सुक रहते हैं कि इस क्रिया का क्या परिणाम होगा।

(x) कहानी का शीर्षक छोटा, स्पष्ट, सारगर्भित एवं औत्सुक्यपूर्ण होना चाहिए।

इस प्रकार कहानी का चयन करते समय छात्रों के मानसिक, बौद्धिक एवं शारीरिक विकास के साथ-साथ कहानी की भाषा-शैली को भी ध्यान में रखना चाहिए।

प्राथमिक स्तर पर बच्चों को पशु-पक्षियों की कहानियाँ सुनानी चाहिए क्योंकि ये बच्चों के आसपास के वातावरण से संबंधित होती हैं। इस समय बच्चे आश्चर्यजनक घटनाओं को सुनने में भी रुचि लेते हैं अत: परियों आदि की कहानी भी सुनाई जा सकती है। परंतु बच्चों को डरने या भयभीत करनेवाली कहानियों नहीं सुनानी चाहिए।

निम्न माध्यमिक स्तर के बच्चों को सत्य पर आधारित कहानियाँ सुनानी चाहिए क्योंकि संवेगों में अस्थिरता होती है और विश्वास में थोड़ी भी कमी होने पर वे उस कहानी में रुचि नहीं लेते हैं। माध्यमिक स्तर पर बच्चे साहस से भरी हुई, वीर कृत्योंवाली, आश्चर्यजनक खोजों एवं आदर्श कार्यों से संबंधित कहानियों को सुनने में अधिक आनंद लेते हैं। अत: इस स्तर पर महापुरुषों के आदर्श चरित्र से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
संबंधित एवं आश्चर्यजनक साहसिक कार्य करनेवाले वीरों की कहानियाँ सुनानी चाहिए। इनसे उनमें देश, जाति और समाज के प्रति स्थायी भावों का निर्माण होता है।

उच्च माध्यमिक स्तर पर आते-आते बच्चे का मानसिक विकास काफी हो जाता है। उसमें बौद्धिक व मानसिक स्थिरता आने लगती है। वह मन के अंतर्द्वंद्व, समाज के संघर्ष आदि को समझने लगता है। अत: इस समय सामाजिक समस्याओं से युक्त सामाजिक कहानियाँ, मन के अंतर्द्वंद्वों से युक्त मनोवैज्ञानिक कहानियाँ आदि सुनानी चाहिए व पढ़ने के लिए भी देनी चाहिए।

इस प्रकार सही ढंग से, सोच-विचारकर किया गया कहानी का चुनाव कहानी के उद्देश्यों को प्राप्त करने में पूरी तरह से सहायक होता है और मातृभाषा-शिक्षण को आकर्षक व सुरुचिपूर्ण बनाता है।

कहानी कहना या सुनाना (Telling of the Story or Listening)

कहानी के उद्देश्यों की प्राप्ति और उसका महत्त्व कहानी कहने के ढंग पर निर्भर करता है। अत: अध्यापक को पूरी तैयारी के साथ विश्वास, उत्साह और सच्चाई के साथ कहानी सुनानी चाहिए। कहानी सपलतापूर्वक कहने के लिए अध्यापक को निम्न बातों को ध्यान में रखनां चाहिए :

(i) कहानी को सफलतापूर्वक सुनाने के लिए सर्वप्रथम तो इस बात की आवश्यकता है कि अध्यापक की स्वयं की रुचि कहानी में होनी चाहिए। यदि अध्यापक की कहानी में रुचि नहीं तो वह कभी भी बच्चों को ठीक ढंग से कहानी नहीं सुना सकेगा।

(ii) कहानी सुनाने से पूर्व अध्यापक को पूरी कहानी स्वयं एक बार पढ़कर उसकी भाषा, शैली, भाव आदि पर विचार कर लेना चाहिए।

(iii) कहानी सुनाने से पूर्व अध्यापक को कहानी सुनाने का अभ्यास कर लेना चाहिए। चाहे तो वह कहानी कहने के अपने ढंग को आडियो टेप पर रिकार्ड करके, पहले उसे स्वयं सुनकर, उसमें आवश्यक सुधार कर सकता है।

(iv) कहानी कहते समय अध्यापक का स्वर इतना ऊँचा होना चाहिए कि कक्षा के सभी बच्चों को कहानी की हर बात पूरी तरह से सुनाई दे।

(v) कहानी कहने की गति भी बच्चों के स्तर के अनुसार होनी चाहिए। छोटी कक्षाओं में मंद गति और माध्यमिक कक्षाओं में अपेक्षाकृत कुछ तीव्र गति से कहानी सुनानी चाहिए।

(vi) कहानी कहते समय छात्रों की दैनिक बोलचाल की भाषा का प्रयोग करते हुए कहानी सुनानी चाहिए। बीच-बीच में पात्रों के संवाद को मूल भाषा में प्रस्तुत करना चाहिए।

(vii) कहानी सुनाते समय अध्यापक को उचित हाव-भाव का प्रदर्शन भी करना चाहिए। वीर भावों को कहते समय वाणी में जोश लाते हुए और करुणा या दया के भावों को व्यक्त करने के लिए वाणी को नीचा करते हुए यथाभाव को अभिव्यक्त करने का प्रयास करना चाहिए।

(viii) कहानी कहते समय ऐसी भाषा का प्रयोग करना चाहिए जिसे छात्र आसानी से समझ सकें। ध्यान रखना चाहिए कि कहानी का उद्देश्य छात्रों का मनोरंजन करना है, भाषाज्ञान में वृद्धि नहीं। अत: सरल, सुबोध एवं सुगम भाषा-शैली का प्रयोग करना चाहिए। कहानी कहते समय विराम-चिह्नों के उचित प्रयोग पर ध्यान देना चाहिए। वाणी में उचित स्वराघात व बलाघात भी होना आवश्यक है।

(ix) कहानी हमेशा मौखिक रूप से सुनानी चाहिए। कभी भी पुस्तक में से पढ़कर कहानी नहीं सुनानी चाहिए।

(x) कहानी इस प्रकार से सुनानी चाहिए कि एक के बाद एक घटनाएँ प्रवाह के साथ प्रस्तुत

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
होती जाएँ। इससे छात्र मंत्रमुग्ध होकर कहानी सुनते रहते हैं और कहानी का पूरा चित्र उनकी आँखों के सम्मुख उपस्थित होता जाता है।

(xi) अध्यापक को स्वयं कथा के वातावरण, पृष्ठभूमि आदि का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए।

(xii) अध्यापक को कहानी सुनाते समय बच्चों पर भी दृष्टि रखनी चाहिए कि वे कथा को ध्यान से सुन रहे हैं या नहीं।

(xiii) कहानी सुनाते समय बीच-बीच में छात्रों से एक-दो प्रश्न भी कर लेना चाहिए जिससे छात्रों का ध्यान कहानी की तरफ बना रहे।

(xiv) कहानी सुनाने के पश्चात छात्रों से कुछ प्रश्न पूछकर या छात्रों से कहानी सुनाने के लिए कहकर पाठ की पुनरावृत्ति भी कर लेनी चाहिए।

इस प्रकार से उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखकर कहानी कहनी चाहिए। ऐसी कहानी छात्रों के हृदय को स्पर्श करती है और छात्रों को आनंद भी प्रदान करती है। कहानी कहना भी एक कला है। पं. सीताराम चतुर्वेदी के शब्दों में हम कह सकते हैं कि ''कहानी से ज्ञान की परिधि का विकास भले ही न हो, एक तथ्य भले ही न बताया जाए किंतु यदि बालक के हृदय को कहानी के भाव मथ दें तो समझ लो कि कहानी सार्थक हो गई, उसका उद्देश्य पूरा हो गया।''

कहानी के मौखिक शिक्षण संबंधी सोपान
(Steps involved in the Oral Teaching of Story)

हिंदी भाषा के पाठ्यक्रम में कहानी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। छोटे-छोटे बच्चे कहानी को मौखिक रूप से सुनने और स्वयं कहने में बहुत रुचि लेते हैं। अत: कहानी सुनाकर बच्चों में सभी भाषायी कौशलों को विकसित करने में सहायता मिलती है। कहानी के कथानकों से बच्चों के संवेगों में स्थिरता लाकर उनकी चारित्रिक अभिवृत्तियों को भी परिमार्जित किया जा सकता है। छात्रों का मनोरंजन करने के साथ-साथ कहानी छात्रों की साहित्यिक अभिरुचि को भी विकसित करती है, परंतु कहानी के इन सब उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि अध्यापक कहानी का मौखिक शिक्षण सुव्यवस्थित रूप से आकर्षक ढंग से करे। प्रभावशाली मौखिक शिक्षण के लिए यह भी जरूरी है कि अध्यापक कहानी की एक पाठ-योजना बनाए और पूरी तैयारी करने के बाद कहानी सुनाए। कहानी के मौखिक शिक्षण की पाठ-योजना बनाने के लिए अध्यापक को निम्न सोपानों का पालन करना चाहिए :

1. प्रस्तावना—सर्वप्रथम कक्षा में उचित वातावरण का निर्माण करने, कहानी के प्रति छात्रों की जिज्ञासा जाग्रत करने तथा कहानी की तरफ छात्रों को आकर्षित करने के उद्देश्य से छात्रों से छोटे-छोटे प्रश्न पूछकर उनके पूर्वज्ञान की परीक्षा करनी चाहिए। इसके बाद कहानी के केंद्रीय भाव के बारे में बताते हुए, उद्देश्य की घोषणा करनी चाहिए। उद्देश्य की घोषणा में कहानी का शीर्षक बताना चाहिए।

2. प्रस्तुतीकरण—इस सोपान में ही अध्यापक को मौखिक रूप से कहानी छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत करनी होती है। कहानी-शिक्षण का यह महत्त्वपूर्ण सोपान है। इस समय अध्यापक को पूरी तैयारी के साथ उचित स्वर, उचित गति एवं उचित हाव-भाव के साथ कहानी सुनानी चाहिए।

3. बोध परीक्षण या छात्रों से कहानी सुनना—स्वयं कहानी सुनाने के पश्चात छात्रों से कहानी पूरी या संक्षेप में सुननी चाहिए। यदि किसी छात्र को कहानी के बारे में कोई बात समझ में नहीं आई हो तो उसे पुन: समझाने का प्रयास करना चाहिए।

4. आवृत्ति—पूरी कहानी पर छोटे-छोटे प्रश्न पूछकर कहानी की दोहराई करनी चाहिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

5. गृह-कार्य—अंत में अभ्यास के लिए गृह-कार्य के रूप में कहानी के केंद्रीय भाव पर एक प्रश्न लिखने को या कहानी का संक्षेप में अपने शब्दों में लिखने को कहा जा सकता है। घर में परिवार के सदस्यों को कहानी सुनाने के लिए भी कहा जा सकता है।

कहानी के मौखिक शिक्षण की एक पाठ-योजना
(A Lesson Plan for the Oral Teaching of a Story)

कहानी की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए, कहानी के प्रभावशाली मौखिक शिक्षण के लिए पूर्व वर्णित सोपानों का पालन करते हुए एक आदर्श पाठ-योजना निम्न प्रकार से बनाई जा सकती है :

पाठ-योजना

छात्राध्यापिका का अनुक्रमांक : **कक्षा**—चौथी

विषय—हिंदी (कहानी-मौखिक शिक्षण) **अवधि**—30 मि.

उपविषय—लोमड़ी और कौआ **औसत आयु**— + 9 वर्ष

अनुदेशात्मक उद्देश्य :

1. छात्रों में ध्यानपूर्वक सुनने और सुनकर अर्थ ग्रहण करने की योग्यता का विकास करना।
2. छात्रों को मित्रता, परोपकार, त्याग आदि शब्दों का सक्रिय प्रयोग करना सिखाना।
3. छात्रों को उचित हाव-भावानुसार मौखिक अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करना।
4. छात्रों की कहानी कहने, कहानी सुनने एवं साहित्य का अध्ययन करने में रुचि जाग्रत करना।
5. छात्रों का मनोंरजन करना।
6. छात्रों में सहयोग, प्यार एवं सच्ची मित्रता आदि से संबंधित अभिवृत्तियों को विकसित करना।

अनुदेशात्मक सामग्री—लोमड़ी तथा कौए की कहानी से संबंधित चार्ट।

प्रारंभिक व्यवहार—छात्र लोमड़ी तथा कौए को पहचानते हैं। उन्होंने पशु-पक्षियों की कई कहानियाँ सुनी व पढ़ी हैं। वे अपनी मौखिक अभिव्यक्ति में मानक भाषा का प्रयोग करते हैं।

प्रस्तावना—छात्रों को एक चित्र (जिसमें लोमड़ी अपने मुँह में नारियल दबाए हुए है) दिखाते हुए निम्नलिखित प्रश्न किए जाएँगे—(बच्चे प्रश्न का उत्तर देंगे।)

1. इस चित्र में यह कौन-सा जानवर है ? (लोमड़ी)
2. लोमड़ी के मुख में क्या दबा है ? (नारियल)
3. लोमड़ी नारियल को अपने मुँह में क्यों दबाए है ? (खाने के लिए)
4. लोमड़ी ने नारियल कैसे तोड़ा होगा ?

उद्देश्य-कथन—बच्चों, आज मैं आपको एक कहानी सुनाऊँगी, जिसमें यह बताया गया है कि लोमड़ी ने नारियल कैसे तोड़ा। कहानी का शीर्षक है—'मित्रता' या 'लोमड़ी और कौआ।'

प्रस्तुतीकरण—छात्रो को बराबर सक्रिय रखने का प्रयास किया जाएगा।

कहानी सुनाना—छात्राध्यापिका कहानी के भावों के अनुसार उचित स्वर, उचित गति एवं उचित भाषा-शैली में बच्चों को कहानी सुनाएगी। (बच्चे ध्यानपूर्वक सुनेंगे।)

पाठ्य कहानी—''बच्चो, एक समय की बात है, एक जंगल में बहुत से जानवर रहते थे। वह सभी आपस में हिल-मिलकर रहते थे। उसी जंगल में एक वृक्ष पर एक कौआ रहता था और एक झाड़ी के भीतर एक लोमड़ी रहती थी। लोमड़ी और कौए में बहुत मित्रता थी। वे कभी भी विपत्ति आने पर एक-दूसरे की सहायता करते थे। इस प्रकार वे एक-दूसरे के दुख को आपस में बाँट लेते थे और सुख से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
रहते थे। यदि लोमड़ी को कुछ भोजन प्राप्त होता तो वह कौए को खिलाती और यदि कौए को कोई खाद्य पदार्थ मिलता तो वह लोमड़ी के लिए जरूर लाता।

एक बार लोमड़ी को कहीं से एक नारियल मिला। नारियल बहुत सख्त था अत: लोमड़ी उसे तोड़ नहीं पाई। वह उसे खाने के लिए बड़ी बेचैन हो रही थी क्योंकि उसे नारियल की बड़ी भीनी-भीनी महक आ रही थी। अचानक लोमड़ी के मस्तिष्क में एक विचार कौंधा। वह अपने मित्र कौए के पास गई और नारियल को पेड़ के नीचे रखकर कौए से बोली—मित्र, मुझे यह नारियल मिला है। तुम इस नारियल को अपनी चोंच में दबाकर उड़ो और बहुत ऊँचे आकाश में पहुँचकर इसे अपनी चोंच से छोड़ दो। ऊँचाई से गिरने पर इसका ऊपर का कड़ा छिलका टूट जाएगा और गिरी निकल आएगी। उस गिरी को हम दोनों मिलकर खा लेंगे। कौए को लोमड़ी की बात बहुत अच्छी लगी और वह नारियल को अपनी चोंच में दबाकर उड़ने लगा। आकाश में बहुत ऊँचे पहुँचकर उसने नारियल को नीचे गिरा दिया। गिरने से जैसा लोमड़ी ने कहा था वैसा ही हुआ। नारियल फूट गया और गिरी निकल आई। लोमड़ी और कौए दोनों ने नारियल की गिरी को बाँटकर खाया और अपने-अपने स्थान को चले गए।

शिक्षा—सहयोग से सभी कार्यों में सफलता मिलती है।

बोध प्रश्न—छात्राध्यापिका बच्चों की बोध-शक्ति की जाँच के लिए प्रश्न पूछेंगी और बच्चें प्रश्नों का उत्तर देंगे।

1. बच्चो, लोमड़ी कहाँ रहती थी?
2. कौआ कहाँ रहता था?
3. एक बार लोमड़ी को क्या मिला?
4. क्या लोमड़ी नारियल को तोड़ सकी?
5. वह नारियल लेकर कहाँ गई?
6. बच्चो, तुम नारियल कैसे तोड़ोगे?
7. लोमड़ी ने कौए से क्या कहा?
8. कौए ने लोमड़ी की बात सुनकर क्या किया?
9. कौए की चोंच से नारियल गिरने पर क्या हुआ?
10. गिरी का लोमड़ी और कौए ने क्या किया?
11. इस कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

छात्रों से कहानी सुनना—बोध-परीक्षा के उपरांत छात्रों से अपने शब्दों में कहानी सुनाने को कहा जाएगा। (छात्र अपने शब्दों में कहानी सुनाएँगे।)

पुनरावृत्ति—छात्रों से कहानी सुनने के बाद कहानी से संबंधित दो-चार प्रश्न पूछकर पाठ को दोहराया जाएगा :

1. लोमड़ी और कौए का एक-दूसरे के प्रति कैसा व्यवहार था?
2. 'एक-दूसरे के दुःख को आपस में बाँटने' से क्या अभिप्राय है?
3. हमें अपने कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए कैसा व्यवहार करना चाहिए?

गृह-कार्य—छात्रों से कहानी अपने माता-पिता को सुनाने एवं लिखकर लाने के लिए कहा जाएगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्ययन के लिए प्रश्न

1. कहानी किसे कहते हैं ? मातृभाषा की शिक्षा में कहानी कहने के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।
2. ''मातृभाषा-शिक्षण में कहानी कहने का महत्त्वपूर्ण स्थान है।'' प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर पर हिंदी-शिक्षण के संबंध में इस कथन की विवेचना कीजिए।
3. हिंदी-शिक्षण में कहानी के उद्देश्य स्पष्ट करते हुए बताइए कि कहानी कहते समय किन-किन मुख्य बातों को ध्यान में रखना चाहिए ? विशेषतया यह बताइए कि किस स्तर पर कैसी कहानी कही जानी चाहिए।
4. मातृभाषा-शिक्षण में कहानी-शिक्षण के क्या उद्देश्य हैं ? इन उद्देश्यों को पूरा करने के लिए कहानी के चयन एवं कहानी कहने के उचित ढंग पर प्रकाश डालिए।
5. एक अच्छी कहानी के गुणों के आधार पर यह बताइए कि कहानी-शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु माध्यमिक स्तर पर आप किस प्रकार की कहानियों का चुनाव करना चाहेंगे ?
6. कहानी-शिक्षण की कौन-कौन-सी विधियाँ प्रचलित हैं ? माध्यमिक कक्षाओं में कहानी-शिक्षण किस विधि से करना उचित है और क्यों ?
7. हिंदी-शिक्षण में कहानी सुनाने का क्या महत्त्व है ? हिंदी कहानी के मौखिक शिक्षण संबंधी सोपानों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
8. हिंदी की किसी कहानी के मौखिक शिक्षण के लिए एक पाठ-योजना बनाइए।
9. निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :
   (i) कहानी कहने का भाषा-शिक्षण में महत्त्व
   (ii) कहानी-शिक्षण के उद्देश्य
   (iii) कहानी कहने की विधियाँ
   (iv) अच्छी कहानी के गुण एवं विशेषताएँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

13

नाटक-शिक्षण
(Teaching of Play/Drama)

नाटक क्या हैं ? (What is Play or Dramma?)

नाटक गद्य साहित्य की प्राचीनतम विधा है। इसे दृश्य काव्य भी कहा जाता है। इसके आदि आचार्य, भरतमुनि माने जाते हैं। उनके अनुसार नाटक एक प्रयोग है जिसमें किसी प्रसिद्ध ऐतिहासिक या कल्पित कथा के आधार पर, रंगमंच पर अभिनय प्रस्तुत कर दर्शकों का मनोविनोद किया जाता है। दशरूपकाचार्य धनंजय ने किसी भी अवस्था के अनुकरण को नाटक कहा है—"अवस्थानुकृतिर्नाट्यम्"।

वास्तव में नाटक किसी भी पौराणिक, ऐतिहासिक, सामाजिक अथवा काल्पनिक घटना की शब्दमय अभिव्यक्ति है।

मातृभाषा की शिक्षा में नाटक का महत्त्व

(Importance of Play/Drama in the Teaching of Mother Tongue)

साहित्य की सभी विधाओं में नाटक का सर्वोपरि स्थान है। अन्य विधाओं में पाठक या श्रोता के मन तक उतनी सुगमता से नहीं पहुँचा जा सकता है जितनी सुगमता से नाटक द्वारा। नाटक में अमूर्त भावों को भी मूर्त बनाकर जिस ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है अन्य विधाओं में नहीं। नाट्याचार्य भरतमुनि ने तो यहाँ तक कहा है कि ऐसा कोई ज्ञान, योग, कर्म, शिल्प, शास्त्र, विद्या या कला नहीं है जिसे नाटक के माध्यम से प्रकट न किया जा सके।

'काव्येषु नाटकं रम्यम्'—संस्कृत के इस वाक्य से नाटक का महत्त्व स्पष्ट हो जाता है। रमणीय विधा होने के कारण नाटक दर्शकों को आनंद तो प्रदान करता ही है, पर इसके साथ-साथ मानव-जीवन के विविध पक्षों का ज्ञान भी देता है। नाटक-शिक्षण से शिक्षण-प्रक्रिया में सरसता आती है। छात्रों की अभिनय की प्रवृति को संतुष्ट होने का अवसर मिलता है और इससे उनका मानसिक व बौद्धिक विकास भी संतुलित रूप से होता है। बच्चों को अच्छे आचरण और व्यवहार की शिक्षा जितनी सुगमता से नाटक द्वारा दी जा सकती है उतनी किसी अन्य माध्यम से नहीं। शिक्षण-प्रक्रिया में दृश्य-श्रव्य साधनों का प्रयोग शिक्षण को रोचक बनाने का सर्वोत्तम तरीका है। नाटक में भी किसी घटना या चरित्र को रंगमंच पर दिखाकर उसे आसानी से समझाया जा सकता है।

विभिन्न भाषायी कौशलों के विकास में भी नाटक की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। नाटक के संवाद सुनने से छात्रों में श्रवण-कौशल को विकसित करने में सहायता मिलती है। नाटक के संवाद छात्रों को उचित स्वर, गति, उचित हाव-भाव एवं आरोह-अवरोह के साथ मौखिक अभिव्यक्ति का प्रशिक्षण देते हैं। आगे चलकर वाचन एवं लेखन-कौशल को विकसित करने में भी इनसे सहायता मिलती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छात्रों के भाषायी ज्ञान में वृद्धि करने में भी नाटक सहायक होते हैं। छात्रों को नाटक से नए-नए शब्दों और उनके वाक्यों में उचित स्थान पर प्रयोग का, सूक्तियों, मुहावरों व लोकोक्तियों के उचित प्रयोग, विचाराभिव्यक्ति एवं परस्पर वार्तालाप करने के ढंग का ज्ञान होता है।

नाटक में व्यक्त मानव-जीवन की विभिन्न विरोधी परिस्थितियाँ बच्चों को प्रतिकूल परिस्थितियों का साहस के साथ सामना करना सिखाती हैं। इनसे बच्चों को मानव-जीवन के विविध पक्षों का ज्ञान होता है। उन्हें अपने देश की संस्कृति से परिचित होने का अवसर मिलता है और शिष्टाचार की शिक्षा भी मिलती है।

नाटक छात्रों की साहित्य में अभिरुचि विकसित करते हैं और उनकी सृजनात्मक शक्तियों को भी विकसित करने में सहायता करते हैं। नाटक बच्चों में सामाजिक अभिवृत्तियों को विकसित करने में भी सहायता करते हैं।

नाटक-शिक्षण के उद्देश्य (Aims of Teaching Play / Drama)—वैसे तो नाटक मनोरंजन का प्रमुख साधन है, परंतु जैसे कि ऊपर स्पष्ट किया गया है नाटक मातृभाषा से संबंधित विभिन्न कौशलों को विकसित करने एवं बच्चों के ज्ञान में वृद्धि करने में भी सहायक होता है। नाटक के इस महत्त्व को देखते हुए नाटक-शिक्षण के उद्देश्यों को निम्न रूप से स्पष्ट किया जा सकता है :

(i) छात्रों की पूर्ण मनोयोग से सुनने एवं सुनकर अर्थ ग्रहण करने की योग्यता का विकास करना।
(ii) छात्रों को शुद्ध उच्चारण, उचित गति एवं उचित स्वर में बोलने का अभ्यास कराना।
(iii) छात्रों की भावानुसार उचित हाव-भाव प्रदर्शित करते हुए मौखिक अभिव्यक्ति की योग्यता का विकास करना।
(iv) छात्रों में भावानुसार उचित गति एवं हाव-भाव के साथ नाटक का सस्वर पठन करने की योग्यता विकसित करना।
(v) छात्रों को अवसरानुकूल शिष्टाचार के नियमों का पालन करते हुए वार्तालाप करना सिखाना।
(vi) छात्रों के शब्द एवं सूक्ति-भंडार को विकसित करना।
(vii) छात्रों को मुहावरे एवं लोकोक्तियों का उचित प्रयोग करना सिखाना।
(viii) छात्रों की निरीक्षण, कल्पना, बोध एवं विवेचना शक्ति को विकसित करना।
(ix) छात्रों को अवसरानुकूल शब्दावली का प्रयोग करना सिखाना।
(x) छात्रों को नाटक-लेखन-शैली से परिचित कराना।
(xi) छात्रों को मानव-जीवन के विविध पक्षों से परिचित कराना।
(xii) छात्रों को मानव-स्वभाव एवं विभिन्न प्रकार के मानवीय चरित्रों से परिचित कराना।
(xiii) छात्रों की आत्मप्रदर्शन की प्रवृत्ति को संतुष्ट करना।
(xiv) छात्रों को पौराणिक कथाओं, ऐतिहासिक घटनाओं एवं सामाजिक दशाओं से परिचित कराना।
(xv) छात्रों को देश, काल एवं परिस्थिति के अनुसार आचरण करने की शिक्षा देना।
(xvi) छात्रों की साहित्य में रुचि विकसित करना।
(xvii) छात्रों का मनोरंजन करना तथा उन्हें आनंद प्रदान करना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(xviii) छात्रों की सृजनात्मक शक्तियों को विकसित करना।

(xix) छात्रों की अनुकरण की मूल प्रवृत्ति का उदात्तीकरण करना।

(xx) छात्रों की वृत्तियों का परिमार्जन कर, उच्च सामाजिक आचरण करने की अभिवृत्ति विकसित करना।

(xxi) छात्रों को अभिनय कला एवं नाट्यमंचन की विभिन्न तकनीकों से परिचित कराना।

(xxii) छात्रों में नाटक की समीक्षा करने की योग्यता विकसित करना।

विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर नाटक-शिक्षण के क्या उद्देश्य हों, इस बात का निर्णय नाटक, कक्षा का स्तर एवं प्राप्त समय आदि के आधार पर किया जाना चाहिए। जैसे, प्राथमिक स्तर पर नाटक-शिक्षण का उद्देश्य छात्रों का मनोरंजन करना तथा उन्हें उचित हाव-भावानुसार वार्तालाप की शिक्षा देना है तो माध्यमिक स्तर पर इन उद्देश्यों के साथ-साथ मानव-जीवन के विविध पक्षों से परिचित कराना एवं नाटक के गुण-दोषों को परखने की योग्यता का विकास करना है। उच्च स्तर पर इन दोनों स्तरों के उद्देश्य के साथ-साथ छात्रों की सृजनात्मक योग्यता, स्वस्थ अभिवृत्तियों का विकास तथा समीक्षात्मक आलोचना करने की योग्यता का विकास करना भी नाटक-शिक्षण का उद्देश्य है।

नाटक-शिक्षण की विधियाँ
(Methods of Teaching Play / Drama)

मातृभाषा हिंदी के पाठ्यक्रम में नाटक-शिक्षण को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। नाटक की शिक्षा के द्वारा छात्रों में भाषा संबंधी विभिन्न योग्यताओं को विकसित करने के लिए सक्रिय अवसर प्रदान किए जाते हैं और छात्रों के ज्ञान में वृद्धि करने का प्रयास भी किया जाता है। नाटक-शिक्षण के इन सभी उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए अध्यापक नाटक की शिक्षा देते समय अपनी रुचि, सुविधा एवं विधि की उपयोगिता को ध्यान में रखकर निम्न विधियों में से किसी भी विधि का प्रयोग कर सकता है :

1. अर्थ कथन प्रणाली (Method of Telling the Meaning)—इस प्रणाली में अध्यापक स्वयं नाटक का सस्वर वाचन करके या कक्षा के एक या अधिक छात्रों से नाटक का सस्वर वाचन कराकर, स्वयं उसका अर्थ बताता है। उसका उद्देश्य छात्रों को नाटक की कथावस्तु का अर्थ बताना होता है। अन्य पक्षों पर उसका ध्यान नहीं होता है।

यह प्रणाली ठीक नहीं क्योंकि इससे नाटक-शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं हो पाती है। इसमें नाटक-शिक्षण नीरस हो जाता है।

2. आदर्श नाट्य पठन प्रणाली (Method of Model Reading)—इस विधि में अध्यापक नाटक के सभी पात्रों के संवादों को उचित हाव-भाव एवं अंगसंचालन के साथ सस्वर वाचन द्वारा कक्षा में प्रस्तुत करता है। बीच-बीच में आवश्यकतानुसार कठिन स्थलों की व्याख्या भी करता है।

नाटक-शिक्षण के उद्देश्यों की दृष्टि से यह प्रणाली उचित ही है, परंतु यह प्रणाली अमनोवैज्ञानिक है क्योंकि इसमें सारा कार्य अध्यापक को स्वयं करना पड़ता है। छात्र तो बस मूक दर्शक एवं श्रोता की भूमिका का निर्वाह करते हैं। उन्हें सक्रिय होने का अवसर नहीं मिल पाता है।

3. व्याख्या प्रणाली (Explanation Method)—इस प्रणाली में अध्यापक नाटक के सभी तत्वों—कथावस्तु, पात्र एवं चरित्र-चित्रण, कथोपकथन, भाषा-शैली, उद्देश्य, अभिनेयता, देशकाल एवं वातावरण आदि की दृष्टि से व्याख्या करता है। इस प्रणाली से छात्रों को नाटक के तत्वों का विस्तृत ज्ञान

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

होता है, परंतु नाटक-शिक्षण के अन्य उद्देश्यों की प्राप्ति में यह विधि सहायक नहीं होती है। छात्रों को सक्रिय होने का अवसर नहीं मिल पाता है, अत: अमनोवैज्ञानिक भी है। वैसे उच्च स्तर पर इस प्रणाली का प्रयोग किया जा सकता है।

4. विश्लेषण प्रणाली (Analysis Method)—इसे प्रश्नोत्तर प्रणाली भी कहते हैं। यह व्याख्या प्रणाली का ही परिवर्धित रूप है। इसमें अध्यापक छात्रों से प्रश्न पूछकर नाटक के तत्वों तथा नाटक के भावों की व्याख्या करता है। यह विधि मनोवैज्ञानिक है। इसमें छात्र सक्रिय रहते हैं। इस प्रणाली का प्रयोग माध्यमिक एवं उच्च दोनों स्तरों पर किया जा सकता है।

5. रंगमंच प्रणाली (Method of Stage Acting)—इस प्रणाली में नाटक को अध्यापक की देखरेख में रंगमंच पर प्रस्तुत किया जाता है। छात्र पात्रों के संवादों को याद करके अभिनय का अभ्यास करके और पात्रों के अनुकूल वेशभूषा धारण करके नाटक को रंगमंच पर प्रस्तुत करते हैं। इससे नाटक-शिक्षण के सभी उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

वैसे तो नाटक-शिक्षण के लिए यह सर्वोत्तम प्रणाली है और शिक्षण के सभी स्तरों पर इसका प्रयोग किया जा सकता है, परंतु समय, धन और शक्ति के उपयोग की दृष्टि से यह प्रणाली पूरी तरह से उपयोगी नहीं है। पूर्ण सत्र में पाठ्यक्रम के एक-दो नाटक का मंचन तो हो सकता है परंतु सभी नाटकों को रंगमंच पर प्रस्तुत करना संभव नहीं।

6. कक्षाभिनय (Method of Acting in the Class)—यह रंगमंच प्रणाली का ही परिवर्तित रूप है। इस प्रणाली में कक्षा के छात्र बिना किसी प्रकार की साज-सज्जा के कक्षा में ही विभिन्न पात्रों के संवाद उचित हाव-भाव के साथ प्रस्तुत करते हैं। यह प्रणाली नाटक-शिक्षण के उद्देश्यों को कुछ सीमा तक प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होती है, परंतु इसके सफल प्रयोग के लिए यह जरूरी है कि कक्षाभिनय के पहले कठिन स्थलों की व्याख्या की जाए।

यह प्रणाली शिक्षण के सभी स्तरों पर प्रयुक्त की जा सकती है। यह एक मनोवैज्ञानिक एवं उद्देश्यपूर्ण प्रणाली है। इसमें छात्र सक्रिय रहते हैं और भाषायी कौशलों में प्रशिक्षण भी प्राप्त करते हैं। परंतु यह प्रणाली रंगमंच पर अभिनय के बिना अधूरी है अत: वर्ष में कभी-कभी रंगमंच पर भी नाटकों को प्रस्तुत किया जाना चाहिए जिससे छात्रों को नाट्यकला का पूरा-पूरा ज्ञान मिल सके।

7. समीक्षा-प्रणाली (Critical Evaluation Method)—इस प्रणाली में अध्यापक प्रश्नोत्तर, व्याख्या एवं कथन के माध्यम से नाटक के तत्वों की समीक्षा करता है। नाटक के तत्वों को ध्यान में रखते हुए नाटक के गुण-दोषों का विवेचन किया जाता है। परंतु इस प्रणाली का प्रयोग करने से पहले छात्रों को नाटक के तत्वों का पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है। उच्च कक्षाओं में इसका प्रयोग उपयोगी है।

8. संयुक्त प्रणाली (Eclectic Method)—उपर्युक्त सभी प्रणालियों के कुछ दोष हैं तो कुछ गुण भी हैं। अत: नाटक-शिक्षण को सरस, रोचक एवं प्रभावशाली बनाने के लिए अध्यापक को इन सभी प्रणालियों का मिला-जुला रूप अपनाना चाहिए। सभी प्रणालियों के इस मिले-जुले रूप को ही संयुक्त प्रणाली कहा जाता है। इसके लिए अध्यापक को सबसे पहले स्वयं नाटक का आदर्श वाचन करना चाहिए। उसके बाद पात्रों की संख्या के अनुसार छात्रों को खड़ा करके उनसे अलग-अलग पात्र के संवाद अभिनय सहित पढ़वाने चाहिए। इस कक्षाभिनय के पश्चात छात्रों के स्तर के अनुरूप नाटक के कठिन स्थलों की व्याख्या करनी चाहिए, उन्हें पात्रों की चारित्रिक विशेषता से परिचित कराना चाहिए तथा नाटक के उद्देश्य की समीक्षा भी करनी चाहिए। समय और सुविधा के अनुसार वर्ष में कभी-कभी नाटक का मंचन भी करना चाहिए। इस प्रकार सभी विधियों के संयुक्त रूप का प्रयोग कर अध्यापक अपने नाटक-शिक्षण को रोचक, सरस, उद्देश्यपूर्ण एवं प्रभावशाली बना सकता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नाटक-शिक्षण के समय ध्यान रखने योग्य बातें
(Points to be kept in view during Drama Teaching)

नाटक की शिक्षा देते समय अध्यापक को निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए :

(i) अध्यापक की स्वयं की रुचि नाटक में होनी चाहिए।

(ii) अध्यापक को नाट्यकला का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए।

(iii) नाटक का चुनाव छात्रों की आयु, मानसिक एवं बौद्धिक स्तर के अनुसार होना चाहिए।

(iv) नाटक पढ़ाते समय छात्रों को सक्रिय रखने का प्रयास करना चाहिए।

(v) अध्यापक को उचित भावानुसार हाव-भाव प्रदर्शित करते हुए नाटक का आदर्श वाचन करना चाहिए।

(vi) नाटक में आए कठिन स्थलों की व्याख्या छात्रों के सक्रिय सहयोग से करनी चाहिए।

(vii) छात्रों की कल्पना-शक्ति को जाग्रत करने का प्रयास करना चाहिए।

(viii) अध्यापक का व्यवहार प्रेम एवं सहानुभूति पूर्ण होना चाहिए।

(ix) नाटक-शिक्षण प्रारंभ करने से पूर्व कक्षा में उचित वातावरण का निर्माण करना चाहिए। नाटक पढ़ने के लिए छात्रों की उत्सुकता को बढ़ाना चाहिए।

(x) नाटक पढ़ाते समय संपूर्ण कक्षा पर दृष्टिपात करते रहना चाहिए ताकि सभी बच्चों का ध्यान अध्यापक की तरफ बना रहे।

(xi) छात्रों की नाटक में रुचि विकसित करने के लिए विद्यालय में कभी-कभी नाटक प्रतियोगिता का आयोजन करते रहना चाहिए।

(xii) नाटक से पूर्व उसकी पृष्ठभूमि को स्पष्ट कर देना चाहिए।

(xiii) नाटक प्रारंभ करने से पूर्व छात्रों को नाटककार का परिचय भी देना चाहिए।

(xiv) नाटक के पात्रों एवं चरित्र की स्पष्ट रूपरेखा खींचनी चाहिए।

(xv) नाटक पढ़ाने के उपरांत प्रश्न पूछकर यह जाँच करनी चाहिए कि छात्रों ने नाटक को कितना समझा है।

इन बातों को ध्यान में रखकर अध्यापक अपने नाटक-शिक्षण को सफल बना सकता है।

नाटक-शिक्षण हेतु एक पाठ-योजना
(A Lesson Plan for the Teaching of Play / Drama)

मातृभाषा-शिक्षण में नाटक साहित्य की एक प्रमुख विधा होने के कारण महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। प्रभाव की दृष्टि से इसकी कोई तुलना नहीं। इसे पढ़ाने के लिए आदर्श नाट्य पठन प्रणाली, कक्षाभिनय, विश्लेषण प्रणाली आदि का मिलाजुला रूप अच्छा रहता है। इसे ही ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद द्वारा प्रकाशित किशोर भारती भाग 1 पुस्तक में से 'अशोक का शस्त्रत्याग' नामक नाटक की पाठ-योजना पाठ के मूल रूप सहित प्रस्तुत की जा रही है।

पाठ्य नाटक
अशोक का शस्त्र-त्याग

(प्रात:काल का समय। शस्त्रसज्जित अशोक घोड़े पर बैठे हैं। उनके पास उनका सेनापति है। सामने कलिंग-दुर्ग है, जिसके फाटक बंद हैं।)

अशोक— मेरे वीर सैनिको! आज चार साल से युद्ध हो रहा है, फिर भी हम इस कलिंग

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

को जीत नहीं पाए हैं। उसके किले दुर्ग पर मगध की पताका नहीं फहरा रही है। कलिंग के महाराज मारे गए हैं। उनके सेनापति पहले ही कैद हो चुके हैं, फिर भी कलिंग आत्मसमर्पण नहीं कर रहा है। आओ, आज हम अपनी मातृभूमि की शपथ लेकर प्रण करें कि या तो हम कलिंग के दुर्ग पर अधिकार कर लेंगे या सदा के लिए मृत्यु की गोद में सो जाएँगे।

सब सैनिक— (तलवार खींचकर) मगध की जय! सम्राट अशोक की जय!

(सहसा दुर्ग का फाटक खुल जाता है। सब आश्चर्य से उधर देखने लगते हैं। उनकी तलवारें खिंची-की-खिंची रह जाती हैं। शस्त्रसज्जित स्त्रियों की विशाल सेना फाटक के बाहर निकलने लगती है। सेना के आगे पुरुष भेष में एक वीरांगना है, जो सैनिक भेष में साक्षात चंडी-सी दिखाई देती है। यह कलिंग महाराज की लड़की पद्मा है। स्त्रियों की सेना अशोक की सेना से कुछ दूरी पर रुक जाती है। अशोक के सिपाही मंत्रमुग्ध से देखते रह जाते हैं। अशोक भी चकित रह जाते हैं।)

पद्म— (ओग बढ़कर अपनी सेना से) बहिनो! तुम वीर कन्या, वीर भगिनी और वीर पत्नी हो। मुझे तुमसे कुछ नहीं कहना है। जिस सेना ने तुम्हारे पिता, भाई, पुत्र और पति की हत्या की है, वह तुम्हारे सामने खड़ी है। आज उसी से तुम्हें लोहा लेना है। तुम प्रण करो कि जननी जन्मभूमि को पराधीन होते देखने के पहले तुम सदा के लिए अपनी आँखें बंद कर लोगी।

अशोक— (स्वतः) यह कौन है? क्या साक्षात दुर्गा कलिंग की रक्षा करने के लिए युद्धभूमि में उतर आई है? शेष सैनिक भी सभी स्त्रियाँ हैं। क्या स्त्रियों से भी युद्ध करना होगा? क्या अशोक को स्त्रियों का भी वध करना होगा? ना! ना! मैं स्त्री-वध नहीं करूँगा। मुझे विजय नहीं चाहिए। मैं यह पाप नहीं करूँगा। मैं शस्त्र नहीं चलाऊँगा। (प्रकट में) सैनिको, स्त्रियों पर हाथ न उठाना। (आगे बढ़कर) तुम कौन हो देवी?

पद्मा— मैं कलिंग महाराज की कन्या हूँ। मैं हत्यारे अशोक की सेना से लड़ने आई हूँ। जब तक मैं हूँ, मेरी ये वीरांगनाएँ हैं, कलिंग के भीतर कोई पैर नहीं रख सकता। कहाँ है अशोक, कहाँ है मेरे पिता का हत्यारा! मैं उससे द्वंद्वयुद्ध करना चाहती हूँ।

अशोक— अशोक तो मैं ही हूँ राजकुमारी! दोषी मैं ही हूँ। परंतु तुम स्त्री हो, तुम्हारी सेना भी स्त्रियों की है। मैं स्त्रियों पर शस्त्र नहीं चलाऊँगा।

पद्मा— क्यों महाराज?

अशोक— शास्त्र की आज्ञा है, राजकुमारी!

पद्मा— और शास्त्र की आज्ञा है कि तुम निरपराधियों की हत्या करो! शास्त्र की आज्ञा है कि तुम अपनी विजय-लालसा पूरी करने के लिए लाखों माताओं की गोद सूनी कर दो! लाखों स्त्रियों की माँग का सिंदूर पोंछ दो! फूँक दो उस शास्त्र को जो तुम्हें यह सिखाता है। मैं तुमसे शास्त्र सीखने नहीं आई हूँ, शस्त्रों से युद्ध करने आई हूँ। तुम हत्यारे हो, मैं अपनी बलि चढ़ाकर तुम्हारी खून की प्यास बूझाने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
आई हूँ। अपने सिपाहियों से कहो कि तलवार उठाएँ, कलिंग की स्त्रियाँ तुमसे कुछ नहीं चाहतीं, केवल युद्ध चाहती हैं।

(अशोक सिर झुका लेते हैं।)

क्यों, सिर क्यों झुका लिया, महाराज? मैं युद्ध चाहती हूँ। आज आपके भीषण युद्ध की पूर्णाहुति होगी।

अशोक— बहुत हो चुका, राजकुमारी! मैं अब युद्ध नहीं करूँगा। कभी युद्ध नहीं करूँगा। (तलवार नीचे फेंक देते हैं।)

पद्मा— (अपने सैनिकों से) तुम भी अपनी तलवारें नीचे फेंक दो। आज से अशोक तुम्हें कभी किसी पर आक्रमण करने की आज्ञा नहीं देगा। फेंक दो अपनी तलवारें।

(सभी सैनिक अपनी-अपनी तलवारें फेंक देते हैं)।

पद्मा— (आगे बढ़कर) मैं भुलावे में नहीं आ सकती, महाराज! मैं तुमसे युद्ध करूँगी। मुझे अपने पिता का बदला लेना है।

अशोक— (सिर झुककर) तो लीजिए बदला, राजकुमारी! मैं अपराधी हूँ। जिस अशोक ने लाखों का सिर काटा है और जिस अशोक का सिर आज तक किसी के आगे नहीं झुका, वह आपके आगे नत है। काट लीजिए इस सिर को। मैं हथियार नहीं उठाऊँगा। मेरी प्रतिज्ञा अटल है।

(अशोक सिर झुकाकर खड़े हो जाते हैं।)

पद्मा— तो जाइए, महाराज! स्त्रियाँ भी निहत्थों पर वार नहीं करेंगी। आप अपनी प्रतिज्ञा की रक्षा के लिए जीवित रहिए। (अपनी स्त्रियों की सेना के साथ दुर्ग में चली जाती है।)

दृश्य-परिवर्तन

(अशोक और उसके सभी सरदार पीले वस्त्र धारण किए हुए हैं। उनके सामने एक बौद्ध भिक्षु बैठे हैं।)

बौद्ध-भिक्षु— (अशोक से) कहो, मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि....

अशोक— मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि....

बौद्ध-भिक्षु— जब तक मेरे शरीर में प्राण रहेंगे, अहिंसा ही मेरा धर्म होगा।

अशोक— जब तक मेरे शरीर में प्राण रहेंगे, अहिंसा ही मेरा धर्म होगा।

बौद्ध-भिक्षु— मैं सबसे प्रेम करूँगा और मेरी करुणा का सदाव्रत आप सबको मिलेगा।

अशोक— मैं सबसे प्रेम करूँगा और मेरी करुणा का सदाव्रत आप सबको मिलेगा।

बौद्ध-भिक्षु— प्रतिज्ञा करो कि जब तक जीवित रहूँगा, अपनी प्रजा की भलाई करूँगा। सब प्राणियों को सुख और शांति पहुँचाने का प्रयत्न करूँगा। सब धर्मों को समान दृष्टि से देखूँगा।

अशोक— मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं शक्ति भर आपकी आज्ञा का पालन करूँगा।

बौद्ध-भिक्षु— बोलो—

बुद्धं शरणं गच्छामि।
धम्मं शरणं गच्छामि।
संघं शरणं गच्छामि।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सभी— (बोलते हैं)

बुद्धं शरणं गच्छामि।
धम्मं शरणं गच्छामि।
संघं शरणं गच्छामि।

(पटाक्षेप)

पाठ-योजना

छात्राध्यापिका का अनुक्रमांक

विषय—हिंदी (नाटक) **कक्षा**—छठी

उपविषय—अशोक का शस्त्र-त्याग **अवधि**—40 मिनट

दिनांक...... **औसत आयु**—+11 वर्ष

अनुदेशानात्मक उद्देश्य

(i) छात्र पताका, आत्मसमर्पण, मंत्रमुग्ध, वीरांगना, द्वंद्वयुद्ध, नत, अटल आदि शब्दों का व्यावहारिक रूप से प्रयोग करते हैं।

(ii) छात्र लोहा लेना, गोद सूनी होना, माँग का सिंदूर पोंछना, खून की प्यास बुझाना आदि मुहावरों का प्रयोग अपने वाक्यों में करते हैं।

(iii) छात्र भावानुसार उच्चारण करते हैं।

(iv) छात्र अशोक के शस्त्र-त्याग की घटना से परिचित होते है।

(v) छात्रों को अशोक के बौद्धधर्म ग्रहण करने के कारण एवं परिस्थिति का ज्ञान होता है।

(vi) छात्र युद्ध से होनेवाली हानियों से परिचित होते हैं तथा उनके मन में युद्ध के प्रति घृणा का भाव पैदा होता है।

(vii) छात्र भारतीय नारी की वीरता व उसके चरित्र से परिचित होते हैं।

अनुदेशनात्मक सामग्री

(i) राष्ट्रीय ध्वज और उसमें बने अशोक चक्र का चित्र।

(ii) अशोक स्तंभ का मॉडल

(iii) योद्धाओं सहित रथ का चित्र

(iv) कुश्ती लड़ते हुए योद्धाओं का चित्र।

प्रारंभिक व्यवहार—छात्रों को यह ज्ञान है कि सम्राट अशोक अहिंसा के पुजारी कैसे बने और उन्होंने प्रजा की भलाई के क्या कार्य किए।

प्रस्तावना—(छात्रों को राष्ट्रीय ध्वज का चित्र दिखाकर निम्नलिखित प्रश्न पूछे जाएँगे :)

(i) इस झंडे में कितने रंग हैं?

(ii) इसके बीच में क्या बना हुआ है?

(iii) यह चक्र किस महान सम्राट की याद दिलाता है?

(iv) यह चक्र कहाँ से लिया गया है? (अशोक स्तंभ का मॉडल दिखाते हुए)

(v) अशोक के द्वारा लड़े गए इतिहास-प्रसिद्ध युद्ध का नाम क्या था?

(vi) कलिंग के युद्ध का अशोक पर क्या प्रभाव पड़ा?

उद्देश्य-कथन—कलिंग युद्ध के भीषण नर-संहार ने अशोक के हृदय को बदल दिया था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसे तलवार से सदैव के लिए घृणा हो गई और उसके स्थान पर बौद्धधर्म के सत्य, प्रेम व अहिंसा के सिद्धांत का वह पुजारी बन गया। आज हम इसी घटना से संबंधित एक नाटक का अध्ययन करेंगे, जिसका शीर्षक है 'अशोक का शस्त्र-त्याग'।

प्रस्तुतीकरण—छात्रों से उनकी हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक किशोर भारत भाग के अध्याय 22, पृष्ठ नं. 105 को खोलने के लिए कहा जाएगा और पाठ का विकास बच्चों के सक्रिय सहयोग से किया जाएगा।

आदर्श नाट्य पठन—सर्वप्रथम छात्राध्यापिका पात्रों का नाम, दृश्यादि के विषय में दिए संकेत आदि का पठन करते हुए नाटक के कथानक के भावानुसार उचित वाचिक एवं आंगिक अभिनय करते हुए नाटक का आदर्श पठन करेगी। (छात्र ध्यानपूर्वक सुनेंगे)

कक्षाभिनय अर्थात अभिनयात्मक पठन—कक्षा के विद्यार्थियों को नाटक के विभिन्न पात्रों अशोक, पद्मा, सैनिक, बौद्ध भिक्षु आदि की भूमिकाएँ देकर पात्रानुसार अलग-अलग सस्वर वाचन करने को कहा जाएगा। (बच्चे आदेशानुसार वाचन करेंगे।)

शब्द-व्याख्या—छात्राध्यापिका विभिन्न विधियों की सहायता से कठिन शब्दों की व्याख्या करेगी और श्यामपट्ट पर लिखेगी।

शब्द	अर्थ	विधि	प्रयोग
पताका	ध्वज	चित्र-प्रदर्शन	सभी योद्धाओं के रथ पर उनकी पताकाएँ फहरा रही हैं।
आत्मसमर्पण	अपने आपको समर्पित करना	संधि-विच्छेद	आत्म+समर्पण = अपने आपको + समर्पित करना।
मंत्रमुग्ध	वशीभूत होना	वाक्य-प्रयोग	झाँकी की शोभा को सभी मंत्र-मुग्ध होकर देखते रहे।
वीरांगना	वीर स्त्री	संधि-विच्छेद	वीर + अंगना = बहादुर + स्त्री
नत	झुका हुआ	रेखाचित्र	बड़ों को नतमस्तक होकर प्रणाम करो।
द्वंद्व युद्ध	दो व्यक्तियों के बीच में होने वाली कुश्ती	चित्र-प्रदर्शन	कुश्ती का चित्र दिखाकर = यहाँ ये व्यक्ति द्वंद्व युद्ध कर रहे हैं।

आदर्श पठन—छात्राध्यापिका द्वारा नाटक का सस्वर पठन किया जाएगा। (बच्चे पूर्ण मनोयोग से सुनेंगे)।

विचार-विश्लेषण—छात्राध्यापिका बच्चों से प्रश्न पूछेगी और बच्चे प्रश्नों का उत्तर देंगे।

(i) इस नाटक की कथावस्तु किस घटना से संबंधित है?

(ii) अशोक कितने वर्ष तक कलिंग युद्ध लड़ता रहा?

(iii) अशोक ने अपने सैनिकों से क्या कहा?

(iv) अशोक ने अपने सैनिकों को क्या कहकर संबोधित किया?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(v) अशोक के उत्साहवर्धक शब्दों को सुनकर सैनिकों ने क्या कहा ?

(vi) 'मगध की जय', 'सम्राट अशोक की जय'—यह जयघोषणा सैनिकों की किस विशेषता की प्रतीक है ?

(vii) अचानक किस दुर्ग का फाटक खुला ?

(viii) दुर्ग का फाटक खुलते ही अशोक ने क्या देखा ?

(ix) पद्मा कौन थी ?

(x) पद्मा क्या कहकर अपनी सेना की स्त्रियों को प्रेरणा देती है ?

(xi) पद्मा के इन शब्दों से उसके चरित्र की किस विशेषता का पता चलता है ?

(xii) पद्मा और उसकी स्त्री सेना को देखकर अशोक अपने मन में क्या सोचता है ?

(xiii) अशोक अपने सैनिकों से क्या कहता है ?

(xiv) अशोक पद्मा से क्या पूछता है ?

(xv) पद्मा क्या कहकर अशोक को अपना परिचय देती है ?

(xvi) 'मैं स्त्रियों पर शस्त्र नहीं चलाऊँगा', ऐसा अशोक ने क्यों कहा ?

(xvii) पद्मा अशोक को युद्ध के लिए क्या कहकर ललकारती है ?

(xviii) पद्मा की बातें सुनकर अशोक की क्या दशा हो जाती है ?

(xix) अशोक ने युद्ध न करने का निश्चय क्यों किया ?

(xx) बदले का बड़ा अच्छा अवसर पाने पर भी पद्मा ने अशोक को जीवित क्यों छोड़ दिया ?

(xxi) बौद्ध भिक्षु ने अशोक से क्या प्रतिज्ञाएँ कराईं ?

(xxii) इस नाटक से क्या प्रेरणा मिलती है ?

द्वितीय आदर्श पठन—छात्राध्यापिका द्वारा साभिनय पठन। (बच्चे ध्यानपूर्वक सुनेंगे।)

पुनरावृत्ति—1. अशोक ने कलिंग पर आक्रमण क्यों किया ?

2. कलिंग युद्ध का क्या परिणाम हुआ ?

3. कलिंग युद्ध के भीषण परिणाम को देखकर अशोक के मन में क्या परिवर्तन आया ?

4. अशोक ने किस धर्म को स्वीकार कर लिया ?

5. अशोक ने बौद्धधर्म को ग्रहण करते समय क्या प्रतिज्ञा की ?

कक्षा-कार्य और निरीक्षण—छात्राध्यापिका बच्चों से श्यापट्ट कार्य को अपनी-अपनी अभ्यास पुस्तिका में उतारने के लिए कहेगी और उनका निरीक्षण करेगी।

गृहकार्य—इस नाटक से हमें क्या शिक्षा मिलती है ? इस प्रश्न का उत्तर घर से लिखकर लाना।

अध्ययन के लिए प्रश्न

1. मातृभाषा-शिक्षण में नाटक-शिक्षण का क्या महत्त्व है ? विभिन्न शिक्षण-स्तरों पर नाटक की शिक्षा द्वारा किन उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है ? स्पष्ट करें।

2. मातृभाषा शिक्षण में नाटक-शिक्षण की कौन-कौन-सी विधियाँ प्रचालित हैं ? आप किसे उपयुक्त समझते हैं और क्यों ?

3. नाटक-शिक्षण की विभिन्न प्रणालियों का विस्तार से वर्णन कीजिए। नाटक शिक्षण के समय अध्यापक को किन विशेष बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4. मातृभाषा शिक्षण के विभिन्न स्तरों पर नाटक की शिक्षा देने के लिए प्रयुक्त विभिन्न विधियों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

5. हिंदी की विभिन्न विधाओं में नाटक का क्या स्थान है ? माध्यमिक स्तर पर नाटक-शिक्षण की विधियों का वर्णन कीजिए।

6. माध्यमिक स्तर पर नाटक-शिक्षण हेतु आपके द्वारा शिक्षण अभ्यास के दौरान पढ़ाए गए किसी भी नाटक की एक पाठ-योजना तैयार कीजिए।

7. निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :

(i) मातृभाषा शिक्षण में नाटक का महत्त्व

(ii) माध्यमिक स्तर पर नाटक-शिक्षण के उद्देश्य

(iii) नाटक-शिक्षण की प्रणालियाँ

(iv) नाटक-शिक्षण

(v) हिंदी की विभिन्न विधाओं में नाटक का स्थान

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

14

व्याकरण-शिक्षण
(Teaching of Grammar)

व्याकरण क्या है ? (What is Grammar ?)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसने अपने विचारों के आदान-प्रदान के लिए कुछ सार्थक ध्वनि-प्रतीकों को अपनाया। ये ध्वनि-प्रतीक ही भाषा कहलाए। अलग-अलग स्थान पर रहनेवाले प्राणियों ने इस भाषा को अलग-अलग रूप में ग्रहण किया। कालांतर में विभिन्न भाषाओं के सर्वमान्य रूप का विश्लेषण करके कुछ नियम निकाले गए। ये नियम ही संपूर्ण रूप में व्याकरण कहलाए। अतः व्याकरण वह शास्त्र है जो भाषा से संबंधित नियमों का ज्ञान कराता है। किसी भाषा की संरचना का सिद्धांत अथवा नियम ही उसका व्याकरण है। भाषा यदि साध्य है तो व्याकरण उसका साधन है। पंतजलि मुनि ने अपने 'महाभाष्य' में व्याकरण को 'शब्दानुशासन' कहा है। अर्थात शब्दों पर अनुशासन रखने वाले शास्त्र को व्याकरण कहा जाता है।

अंग्रेजी विद्वान् डा. स्वीट ने व्याकरण को 'भाषा का व्यावहारिक विश्लेषण' कहा है।

व्याकरण ऐसा शास्त्र है जो यह बताता है कि किसी वाक्य में कौन-सा शब्द कहाँ रहना चाहिए। व्याकरण भाषा के सर्वमान्य रूप का संरक्षण करता है। परंतु फिर भी भाषा व्याकरण के नियमों से इधर-उधर हट ही जाती है। इस परिवर्तित भाषा के लिए व्याकरण संबंधी उपनियमों का निर्माण किया जाता है। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि पहले किसी भाषा का विकास हुआ और फिर उसका व्याकरण बना। अतः भाषा में परिवर्तन एवं विकास के साथ-साथ उसका व्याकरण भी परिवर्तित एवं विकसित होता रहता है।

हिंदी-शिक्षण में व्याकरण-शिक्षण का महत्त्व (Importance of Teaching Grammar in Hindi Teaching)—व्याकरण भाषा का सहचर है। भाषा रूपी भवन की रचना शब्द रूपी ईंट और व्याकरण रूपी सीमेंट के समुचित योग से ही संभव है। भाषा में वाक्य, वाक्य में शब्द तथा शब्द में वर्णों की स्थिति का निर्धारण व्याकरण की सहायता से ही होता है। व्याकरण की सहायता से ही हम वर्ण-रचना, शब्द-रचना, वाक्य-रचना तथा भाषा-व्यवस्था संबंधी अन्य नियमों का ज्ञान प्राप्त करते हैं। वैस तो अनुकरण द्वारा बालक-बोलचाल की भाषा को सीख लेता है, उसके लिए उसे व्याकरण सीखने की कोई आवश्यकता नहीं होती है, लेकिन कुछ समय उपरांत विचारों की शुद्ध अभिव्यक्ति के लिए उसे भाषा के सर्वमान्य रूप का प्रयोग करना होता है। शुद्ध उच्चारण, शुद्ध शब्दावली, वाक्य-रचना, विराम-चिह्नों का उचित प्रयोग आदि की आवश्यकता होती है। इन सबके ज्ञान के लिए व्याकरण का अध्ययन आवश्यक होता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

व्याकरण भाषा को अव्यवस्थित और उच्छृंखल होने से बचाता है। अत: भाषा के स्वरूप शुद्ध रखने, उसे विकृतियों से बचाने तथा प्रभावशाली रचना के लिए व्याकरण की शिक्षा आवश्यक है।

व्याकरण में प्रवीण अध्यापक पूर्ण आत्मविश्वास के साथ भाषा का प्रयोग करता है। व्याकरण-ज्ञान के कारण वह छात्रों की भाषा संबंधी त्रुटियों को पूर्ण विश्वास के साथ दूर करता है क्योंकि भाषा की अशुद्धियों को व्याकरण के बिना दूर नहीं किया जा सकता है। व्याकरण का ज्ञान केवल अपनी मातृभाषा ही नहीं वरन् अन्य भाषाओं को सीखने में भ सहायक सिद्ध होता है। प्रत्येक भाषा का अपना ध्वनि-विचार, शब्द-विचार एवं अर्थ-विचार होता है। इनके बिना भाषा का पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं किया जा सकता। इनका ज्ञान व्याकरण की सहायता से ही होता है।

अत: हिंदी भाषा के पाठ्यक्रम में प्रत्येक स्तर पर व्याकरण का शिक्षण किसी-न-किसी में आवश्यक ही है।

व्याकरण-शिक्षण पर विद्वानों का मत—व्याकरण-शिक्षण के महत्त्व और उपयोगिता संबंध में विद्वानों में परस्पर मतभेद है।

कुछ विद्वानों के अनुसार भाषा की शिक्षा का प्रारम्भ ही उसके व्याकरण की शिक्षा से किया जाना चाहिए। उनका कहना है कि व्याकरण-ज्ञान के बिना भाषा का प्रयोग करना असम्भव है। भाषा में बोलने व लिखने की शुद्धता व्याकरण-ज्ञान के बिना आ ही नहीं सकती। बिना व्याकरण के किसी का भाषा पर पूर्ण अधिकार हो ही नहीं सकता। ये विद्वान् व्याकरण को साधन न मानकर साध्य मानते हैं।

परंतु कुछ विद्वान् इसके विपरीत तर्क प्रस्तुत करते हैं। उनके अनुसार भाषा अनुकरण से सीखी जाती है, इसके लिए व्याकरण के नियमों को रटने की कोई आवश्यकता नहीं। उनका कहना है कि व्याकरण एक नीरस विषय है, बच्चे बिना सोचे-समझे व्याकरण के नियमों को रट लेते हैं, उनका व्यावहारिक प्रयोग उनकी बुद्धि से परे होता है। अत: व्याकरण के नियमों की शिक्षा देना बच्चों के समय को बरबाद करना है।

व्याकरण-शिक्षण के विषय में उपर्युक्त दोनों मत एकांगी है। प्रथम मत के अनुसार यदि हम भाषा को व्याकरण के नियमों में बाँध देंगे तो भाषा का विकास रूक जाएगा। व्याकरण भाषा को सुव्यवस्थित रखता है अत: वह भाषा के शुद्ध रूप को बनाए रखने में एक साधन का कार्य करता है, परंतु यदि हम उसे साधन न मानकर साध्य मान लेंगे तो भाषा-शिक्षण नीरस हो जाएगा।

दूसरी तरफ यदि दूसरे मत को माना जाए तो व्याकरण में नियमों को पूरी तरह से उपेक्षित कर दिया जाएगा। यदि व्याकरण संबंधी नियमों का पालन नहीं किया गया तो भाषा का न कोई सर्वमान्य रूप होगा, न उस पर कोई नियन्त्रण होगा। उसका स्वरूप विकृत हो जाएगा और तब अर्थ और भाव को समझना मुश्किल हो जाएगा। अत: व्याकरण-शिक्षण के विषय में हम एक तीसरे मत का प्रतिपादन कर सकते हैं जिसके अनुसार व्याकरण को साध्य न मानकर साधन माना जाए। हमारा उद्देश्य तो बच्चों को भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान कराना है। भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान कराने के लिए हम जिन साधनों एवं क्रियाओं की सहायता लेते हैं उनमें से एक साधन व्याकरण भी है। भाषा-शिक्षण में व्याकरण के नियमों को रटवाने की बजाय उसके व्यावहारिक प्रयोग पर बल देना चाहिए। भाषा-ज्ञान एवं प्रयोग के आधार पर व्याकरण के नियमों का ज्ञान कराया जाए। वैसे तो बच्चा अनुकरण द्वारा ही भाषा के शुद्ध प्रयोग से परिचित होने लगता है, किंतु इस शुद्ध प्रयोग को पुष्ट एवं वैज्ञानिक बनाने के लिए व्याकरण की शिक्षा देना अनिवार्य हो जाता है। अत: अध्यापक को अपने अनुभव एवं विवेक के आधार पर व्याकरण की शिक्षा देनी चाहिए। अन्त में हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि भाषा-शिक्षण में व्याकरण की शिक्षा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
अनिवार्य है, परंतु व्याकरण इस ढंग से पढ़ाई जाए जिससे वह शिक्षक की सहायक मात्र हो। उसकी सेविका हो, शासिका नहीं।

व्याकरण-शिक्षण के उद्देश्य (Aims of Grammar Teaching)

व्याकरण भाषा की अनुगामिनी है। भाषा के विवेचन के आधार पर ही व्याकरण के नियम निर्धारित होते हैं, फिर व्याकरण के ये नियम ही भाषा के स्वरूप को अव्यवस्थित और विकृत होते से बचाते हैं तथा भाषा के सर्वमान्य रूप की सुरक्षा करते हैं। ये बालक को अपने विचार सर्वमान्य भाषा में प्रकट करने के योग्य बनाते हैं। पं. लज्जाशंकर झा का मत है कि "भाषा के शुद्ध रूप को समझने और पहचानने में समर्थ बनाना ही व्याकरण-शिक्षण का उद्देश्य है।" इस दृष्टि से व्याकरण-शिक्षण के उद्देश्य को निम्नलिखित ढंग से स्पष्ट किया जा सकता है :

(i) छात्रों को ध्वनियों, ध्वनियों के सूक्ष्म अंतर एवं उच्चारण के नियमों का ज्ञान कराना।
(ii) छात्रों को शब्द-योजना, शब्दों के शुद्ध रूप एवं वर्तनी का ज्ञान कराना।
(iii) छात्रों को वाक्य-रचना के नियम, विराम-चिह्नों का शुद्ध प्रयोग आदि का ज्ञान कराना।
(iv) छात्रों को शब्द, सूक्ति, मुहावरे एवं लोकोक्ति का प्रसंगानुकूल अर्थ निकालकर, स्वराघात एवं बलाघात के अनुसार अर्थ ग्रहण करने के योग्य बनाना।
(v) छात्रों को मौखिक अभिव्यक्ति के समय सर्वमान्य भाषा का प्रयोग करने के योग्य बनाना।
(vi) छात्रों को लिखित अभिव्यक्ति के समय शुद्ध वर्तनी लिखने, शुद्ध वाक्य-रचना करने एवं विराम-चिह्नों का शुद्ध प्रयोग करने के योग्य बनाना।
(vii) छात्रों को भाषा के गुण-दोषों की परख करने के याग्य बनाना।
(viii) छात्रों की शुद्ध भाषा का प्रयोग करने व शुद्ध भाषा सीखने मे रुचि उत्पन्न करना।
(ix) छात्रों में शुद्ध भाषा के प्रति आस्था विकसित करना।
(x) छात्रों की चिन्तन एवं तर्क शक्ति का विकास करना।
(xi) छात्रों में मानसिक अनुशासन स्थापित करना।
(xii) भाषा के व्याकरण-संगत रूप को सुरक्षित रखना।

औपचारिक एवं अनौपचारिक व्याकरण-शिक्षण
(Formal and Informal Grammar Teaching)

भाषा अनुकरण से सीखी जाती है। परिवार में पालन-पोषण होते समय बच्चा परिवार के सदस्यों की भाषा का सहज अनुकरण करके सुनना व बोलना सीखता है, फिर विद्यालय में प्रविष्ट होने पर अध्यापक के बोलने, पढ़ने व लिखने के ढंग का अनुकरण करता है और इस प्रकार अनुकरण करके भाषा-ज्ञान प्राप्त करता है। परंतु बच्चें की भाषा त्रुटि-रहित है या नहीं इसका ज्ञान ज्ञान उसे नहीं होता है। बच्चे की भाषा को प्रभावशाली बनाने के लिए उसे भाषा के सर्वमान्य रूप को सिखाना पड़ता है और भाषा के सर्वमान्य रूप को सीखने के लिए, उसके व्याकरण को जानना आवश्यक है। भाषा के प्राय: सभी विद्वान् इस बात से तो सहमत हैं कि बच्चे को भाषा के व्याकरण का ज्ञान कराया जाए, परंतु यह ज्ञान किस सीमा तक कराया जाए इस बारे में उनमें मतभेद है। इस मतभेद ने ही व्याकरण से संबंधित दो रूपों को जन्म दिया है :

(i) औपचारिक व्याकरण ;
(ii) अनौपचारिक व्याकरण।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(i) औपचारिक व्याकरण—मातृभाषा की शिक्षा देते समय जब व्याकरण के नियमों को व्यवस्थित रूप से बच्चों को सिखाया जाता है तो इसे व्याकरण का औपचारिक शिक्षण कहते हैं। इसमें व्याकरण की एक पाठ्यपुस्तक भी होती है और विधिवत ढंग से क्रमपूर्वक व्याकरण के नियमों, उपनियमों, उनके भेदों तथा उपभेदों का ज्ञान कराया जाता है।

औपचारिक व्याकरण का शिक्षण तभी प्रारम्भ करना चाहिए जब बच्चे का मातृभाषा पर काफी अधिकार हो जाए। उनका मानसिक व बोद्धिक विकास इतना हो जाए कि वे व्याकरण के अमूर्त नियमों को आसानी से समझ सकें। अत: औपचारिक व्याकरण की शिक्षा कक्षा छठी से पहले नहीं देनी चाहिए। परंतु बच्चों के मानसिक स्तर एवं भाषा-ज्ञान के आधार पर ही किसी भी कक्षा के लिए व्याकरण कें पाठ्यक्रम का निर्धारण होना चाहिए। इस प्रकार माध्यमिक स्तर से ही औपचारिक व्याकरण की क्रमबद्ध शिक्षा प्रारम्भ होनी चाहिए।

(ii) अनौपचारिक व्याकरण—यह तो सभी मानते हैं कि बच्चा भाषा अनुकरण से सीखता है और हमारा उद्देश्य भी बच्चों को भाषा का ज्ञान कराना है, उनमें भाषायी कौशलों को विकसित करना है, उन्हें भाषा का शुद्ध प्रयोग सिखाना है। व्याकरण भाषा के इसी शुद्ध रूप की रक्षा करती है। यदि बालक व्याकरण के नियमों की जानकारी के बिना ही भाषा के शुद्ध रूप का प्रयोग करना सीख जाता है तो व्याकरण के नियमों की क्या आवश्यकता ? विद्वानों का मत है कि व्याकरण का शिक्षण व्यावहारिक या प्रयोगात्मक रूप में ही करना चाहिए अर्थात बच्चों को अनुकरण कराने के लिए परिवार के सदस्यों व अध्यापकों आदि को उनके सामने सर्वमान्य एवं व्याकरणसम्मत भाषा का प्रयोग करना चाहिए। प्रायोगिक रूप से जितना भी हो सके, व्यावहारिक व्याकरण की शिक्षा देने का प्रयत्न किया जाए।

इस प्रकार व्याकरण के नियमों की विधिवत शिक्षा दिए बिना भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान कराना ही अनौपचारिक व्याकरण-शिक्षण है। जब तक बच्चें का भाषा पर काफी अधिकार नहीं होता और उनका मानसिक व बौद्धिक विकास भी पूरी तरह नहीं होता तब तक बच्चें को बिना नियम बताए ही अनौपचारिक रूप से व्याकरण की शिक्षा देनी चाहिए क्योंकि व्याकरण का उद्देश्य भाषा के शुद्ध यप का प्रयोग सिखाना है और इस उद्देश्य की पूर्ति अभ्यास-द्वारा अच्छी प्रकार से की जा सकती है। व्याकरण का निर्माण होने से पहले भाषा का विकास हुआ है। लार्ड मैकाले ने कहा था —"मनुष्य उसी भाषा का पूर्ण पण्डित हो सकता है जिसे उसने पहले और जिसका व्याकरण उसके बाद सीखा हो।"

माध्यमिक स्तर पर व्याकरण-शिक्षण की विधियाँ
(Methods of Grammar Teaching at the Secondary Stage)

व्याकरण को शिक्षा देते समय अध्यापक को एक बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि प्रत्येक स्तर पर व्याकरण-शिक्षण एक-से ढंग से नहीं होता है। प्राथमिक स्तर पर बालक अनुकरण द्वारा भाषा सीखता है। छोटे-छोटे बच्चे व्याकरण के नीरस नियमों को नहीं सीख सकते। अत: प्राथमिक स्तर पर व्याकरण के नियम बताए बिना अभ्यास के द्वारा बच्चों की भाषा संबंधी त्रुटियों को दूर कराया जाए।

कक्षा 6 तक आते-आते अर्थात निम्न माध्यमिक स्तर पर बच्चे का भाषा पर पर्याप्त अधिकार हो जाता है। उनका बौद्धिक, मानसिक व सामाजिक विकास भी इतना हो जाता है कि वे सरल नियमों की जानकारी बच्चो को करानी चाहिए। अध्यापक को यह ध्यान रखना चाहिए कि इस स्तर पर बच्चे का मानसिक विकास इतना नहीं होता कि वे संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि के भेदों-उपभेदों आदि को समझ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
सकें। अत: इस स्तर पर इन नियमों के भेदों को नहीं पढ़ाना चाहिए। कक्षा 7 एवं 8 में इनके भेदों को पढ़ाया जाना चाहिए।

माध्यमिक स्तर पर आते-आते बच्चों का मानसिक विकास पूरी तरह से हो जाता है। संश्लेषण एवं विश्लेषण करने के योग्य हो जाते हैं। अत: इस स्तर पर पूर्व कक्षाओं में पढ़ाए गए व्याकरण के नियमों का अधिक से अधिक अभ्यास कराने के साथ, नियमित अर्थात औपचारिक व्याकरण का ज्ञान पूरी तरह से कराना चाहिए। इस समय छात्र यह समझ सकते हैं कि उनके बोलने एवं लिखने के कुछ नियम होते हैं जो उनकी अभिव्यक्ति की शुद्धता की परख करते हैं। वे समझ सकेंगे कि उनकी भाषा शुद्ध है या नहीं। अत: इस स्तर पर किसी उपयुक्त प्रणाली के माध्यम से बच्चों को व्याकरण के नियमों की विधिवत जानकारी देनी चाहिए। व्याकरण-शिक्षण के लिए निम्न प्रणालियाँ प्रयोग में लाई जाती है—

1. **निगमन प्रणाली** (Deductive Method)—इस प्रणाली में अध्यापक बच्चों को पहले व्याकरण के नियम बताता है फिर उनके उदाहरण देकर नियम को स्पष्ट करता है। बच्चे इन नियमों को बिना सोचे-समझे रट लेते हैं। अधिकांश विद्वान् इस प्रणाली को अमनोवैज्ञानिक मानते हैं क्योंकि यह प्रणाली शिक्षण-सूत्रों के विपरीत चलती है। 'ज्ञात से अज्ञात की ओर' के स्थान पर 'अज्ञात से ज्ञात की ओर' जाती है। 'उदाहरण से नियम की ओर' के स्थान पर 'नियम से उदाहरण की ओर' के स्थान पर 'नियम से उदाहरण की ओर' जाती है।

यह प्रणाली दो रूपों में देखने को मिलती है :

(i) सूत्र प्रणाली, (ii) पुस्तक प्रणाली।

(i) सूत्र प्रणाली—यह प्रणाली विशेष रूप से संस्कृत भाषा में प्रयुक्त की जाती है। इसमें व्याकरण के नियम सूत्र रूप में परिवर्तित कर दिए जाते हैं। छात्र इन सूत्रों को बिना सोचे-समझे रट लेते हैं। आजकल हिन्दी-शिक्षण में इसका प्रयोग न के बराबर है। अमनोवैज्ञानिक, नीरस तथा अरुचिकर प्रणाली होने के कारण इसका प्रयोग नहीं करना चाहिए।

(ii) पुस्तक प्रणाली—यह प्रणाली भी सूत्र प्रणाली का ही परिवर्तित रूप है। इस प्रणाली में व्याकरण के नियमों का ज्ञान कराने के लिए पुस्तकें होती हैं। पुस्तक में एक-एक अध्याय में एक-एक नियम, उसके उदाहरण तथा अभ्यास के लिए प्रश्न दिए होते हैं।

छात्रों को नियमों का अभ्यास कराने की दृष्टि से पुस्तक सहायक का कार्य करती है और परीक्षा की तैयारी करने में भी बच्चों की सहायता करती है। परंतु यह प्रणाली भी अमनोवैज्ञानिक एवं अरुचिकर है। छात्रों को निरीक्षण, चिन्तन और नियमीकरण का अवसर नहीं मिलता है। यह शिक्षण-सूत्रों के भी प्रतिकूल है। अत: इस विधि से छात्रों को व्याकरण के नियमों को सीखने के बाद भी बच्चे इनका प्रयोग करने में समर्थ नहीं हो पाते हैं।

2. आगमन प्रणाली (Inductive Method)—यह प्रणाली निगमन विधि की एकदम उल्टी है। इसमें पहले छात्रों के सम्मुख उदाहरण प्रस्तुत किए जाते हैं फिर उन उदाहरणों का विश्लेषण कर, उनकी सहायता से छात्रों से नियम निकलवाए जाते हैं। फिर पुन: उदाहरण प्रस्तुत कर नियम का परीक्षण किया जाता है। इस प्रकार इस प्रणाली के चार सोपान हैं :

(i) उदाहरणों का प्रस्तुतीकरण, (ii) उदाहरणों का विश्लेषण (iii) नियमीकरण, और (iv) परीक्षण।

यह प्रणाली मनोवैज्ञानिक है। इसमें सरल से कठिन की ओर, ज्ञात से अज्ञात की ओर, स्थूल से सूक्ष्म की ओर, विशिष्ट से सामान्य की ओर आदि शिक्षण-सूत्रों का पालन होता है। इस प्रणाली में छात्र

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
स्वयं करके, अपने अनुभव के आधार पर व्याकरण के नियमों को सीखते हैं अतः ये नियम छात्रों के मानस-पटल पर अंकित हो जाते हैं। नियम सीखने में आरम्भ से अन्त तक छात्रों की जिज्ञासा एवं उत्सुकता बनी रहती है। इसमें छात्रों को निरीक्षण, चिन्तन एवं सामान्यीकरण करने का अवसर मिलता है जिससे उनका मानसिक विकास भी होता है। अतः अभी स्तरों पर व्याकरण की शिक्षा के लिए यह एक उत्तम प्रणाली है।

3. समवाय प्रणाली (Correlation Method)—इस प्रणाली को सहयोग प्रणाली के नाम से भी जाना जाता है। इस प्रणाली में भाषा के अन्तर्गत मौखिक या लिखित कार्य कराते समय, गद्य की पाठ्यपुस्तक पढ़ाते समय या रचना-कार्य कराते समय प्रासंगिक रूप से व्याकरण के नियमों का ज्ञान कराया जाता है। इस विधि की उपयोगिता इस बात में है कि एक तो व्याकरण के नियमों के उदाहरण अन्यस्थान से न लेकर पाठ्यपुस्तक के पाठों से ही लिए जाते हैं, दूसरे, व्याकरण की शिक्षा अलग कालांश में न देकर गद्य, रचना आदि पढ़ाते समय दे दी जाती है।

व्याकरण की व्यावहारिक शिक्षा देने के लिए यह एक स्वाभाविक और रुचिकर विधि है परंतु इससे व्याकरण की नियमित शिक्षा नहीं दी जा सकती हैं। इस विधि से व्याकरण की शिक्षा देने में व्याकरण के नियमों का तार्किक एवं व्यवस्थित ज्ञान नहीं दिया जा सकता है। इस विधि का एक दोष और भी है कि इसमें मूलपाठ से भटक जाने का भय बना रहता है। गद्य पाठ, रचना पाठ या मौखिक अभिव्यक्ति के समय व्याकरण के नियमों का ज्ञान कराते समय ऐसा भी हो सकता है कि गद्य, रचना या मौखिक पाठ व्याकरण का पाठ बन जाए। व्याकरण के नियमों का विधिवत ज्ञान कराने के पश्चात अभ्यास के लिए इस विधि का प्रयोग किया जा सकता है।

4. भाषा संसर्ग प्रणाली (Language contact Mehtod)—जो विद्वान् व्याकरण को एक कठिन व नीरस विषय मानते हैं उनके मतानुसार बच्चों को व्याकरण के नियमों की जानकारी अलग से देने की कोई आवश्यकता नहीं है। व्याकरण-शिक्षण का उद्देश्य छात्रों को भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान कराना ही है। अतः इस प्रणाली के अनुसार बच्चों को ऐसे लेखकों की रचनाएँ पढ़ने के लिए दी जाएँ जिनका भाषा पर पूर्ण अधिकार हो। बच्चों को ऐसे लोगों के साथ वार्तालाप करने का अवसर दिया जाए जो मौखिक अभिव्यक्ति में शुद्ध भाषा का प्रयोग करते हों। इस प्रकार इस प्रणाली में व्याकरण के नियमों का ज्ञान कराए बिना, भाषा के शुद्ध रूप का अनुकरण करने का अवसर प्रदान कर छात्रों को भाषा के शुद्ध रूप का प्रयोग करना सिखाया जाता है। प्राथमिक स्तर पर बच्चों को व्यावहारिक व्याकरण का ज्ञान देने के लिए तो यह विधि उपयोगी है परंतु व्याकरण का तार्किक ज्ञान कराने के लिए अन्य विधियों की सहायता लेनी होगी। इस विधि में एक तो बच्चों को व्याकरण के नियमों का ज्ञान हो ही नहीं पाएगा और यदि होगा भी तो बहुत समय लगेगा। दूसरे व्याकरण के नियमों का व्यवस्थित ज्ञान भी नहीं हो पाएगा। नियमों की जानकारी के अभाव में भाषा की शुद्धता या अशुद्धता का निर्णय लेना भी असंभव ही है।

5. प्रयोग या विश्लेषण-प्रणाली (Method of Use or Analysis)—इस प्रणाली में उदाहरणों की व्याख्या तथा उनके प्रयोग के आधार पर व्याकरण के नियमों का ज्ञान कराया जाता है। इसीलिए इसे प्रयोग या विश्लेषण विधि कहा जाता है। इस प्रणाली में व्याकरण-शिक्षण की आगमन व निगमन दोनों विधियों का समन्वित रूप से प्रयोग किया जाता है।

सर्वप्रथम छात्रों के संमुख उदाहरणों को प्रस्तुत किया जाता है फिर उनका विश्लेषण कर नियमीकरण कराया जाता है। यहाँ तक आगमन विधि का पालन होता है। नियमीकरण के उपरान्त नियम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

की पड़ताल करने के लिए पुनः कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए जाते हैं और नियम का प्रयोग कराया जाता है अर्थात नियम से उदाहरण की ओर बढ़कर निगमन विधि का पालन किया जाता है।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस प्रकार उदाहरण से नियम की ओर और फिर नियम से उदाहरण की ओर बढ़ते हुए व्याकरण के नियमों का ज्ञान कराया जाता है। इस प्रणाली से छात्र सक्रिय रहते हुए, सरस एवं रोचक ढंग से बिना रटे हुए व्याकरण के नियमों को सीखते हैं। अतः व्याकरण-शिक्षण की यही सर्वोत्तम विधि है।

व्याकरण-शिक्षण को सरस एवं रुचिकर कैसे बनाया जाए ?
(How to make teaching of Grammar Simple and interesting?)

व्याकरण एक ऐसा शास्त्र है जो भाषा के स्वरूप को शुद्ध बनाए रखता है। बच्चों को भाषा के सर्वमान्य रूप के प्रयोग का ज्ञान व्याकरण की सहायता से ही होता है। अतः बच्चों का भाषा पर पूर्ण अधिकार कराने की दृष्टि से उन्हें व्याकरण की शिक्षा देना आवश्यक है। परंतु आजकल व्याकरण-शिक्षण की दशा अत्यंत शोचनीय है। बच्चे बिना सोचे-समझे व्याकरण के नियमों को रट लेते हैं, भाषा के व्यावहारिक प्रयोग के समय उनका प्रयोग नहीं कर पाते हैं। व्याकरण उन्हें नीरस व कठिन विषय लगता है। अतः बच्चों को व्याकरण की शिक्षा देने के लिए यह जरूरी है कि पहले व्याकरण-शिक्षण को रुचिकर बनाया जाए, इसके लिए हम निम्न प्रयास कर सकते हैं :

(i) प्रारम्भिक कक्षाओं में बच्चों को व्याकरण की व्यावहारिक शिक्षा दी जाए। व्यावहारिक व्याकरण की शिक्षा भाषा संसर्ग विधि की सहायता से दी जाए।

(ii) छात्रों को भाषा का पर्याप्त ज्ञान होने के पश्चात निम्न माध्यमिक स्तर पर आगमन विधि की सहायता से नियमित व्याकरण की शिक्षा दी जाए। समवाय विधि के द्वारा उन सीखे गए नियमों के अभ्यास का अवसर प्रदान किया जाए।

(iii) व्याकरण का पाठ्यक्रम बच्चों के मानकिस स्तर के अनुकूल बनाया जाए।

(iv) पाठ्यपुस्तकों में गद्य पाठों की रचना इस प्रकार से हो जिससे व्याकरण के नियमों कोपाठ के साथ समन्वित करके पढ़ाया जा सके।

(v) व्याकरण के नियमों को छात्रों से ही निकलवाया जाए, रटने की प्रवृत्ति की उपेक्षा की जाए।

(vi) बच्चों के भाषा संबंधी ज्ञान को ध्यान में रखते हुए, उनके सामने सरल या उत्तरोत्तर कठिन रचनाएँ प्रस्तुत की जाएँ।

(vii) गद्य पाठ या रचना पाठ के समय समवाय करते समय व्याकरण के नियमों पर उतना ही बल दिया जाए जितना आवश्यकत हो। शिक्षण करते समय मूल उद्देश्य से कहीं दूर न भटक जाएँ।

(viii) व्याकरण-शिक्षण को दृश्य-श्रव्य सामग्री के प्रयोग से रोचक बनाया जाए।

(ix) व्याकरण के नियम निकलवाने के लिए जो उदाहरण दिए जाएँ वे बच्चों के जीवन से संबंधित हों।

(x) ज्ञात से अज्ञात, मूर्त से अमूर्त, विशिष्ट से सामान्य, सरल से कठिन, उदाहरण से नियम, अनुभव से तर्क आदि शिक्षण-सूत्रों का पालन पर शिक्षण को सरस व प्रभावशाली बनाया जाए।

(xi) व्याकरण अपने आप में एक नीरस विषय है अतः कक्षा में परिस्थितियों व क्रियाओं में बदलाव लाते हुए व्याकरण की शिक्षा दी जाए जिससे छात्र ऊबें नहीं।

(xii) बच्चों को सिखाए गए नियमों का अभ्यास कराने के लिए रोचक एवं भिन्न-भिन्न प्रकार का अभ्यास कार्य कराया जाए। जैसे—वाक्य-निर्माण, रिक्त स्थान पूर्ति, वचन-परिवर्तन, लिंग-परिवर्तन, पर्यायवाची शब्द, विलोम शब्द, संज्ञा-परिवर्तन, स्थान विशेष के लिए उपयुक्त शब्दों का चुनाव, अशुद्ध शब्दों व वाक्यों को शुद्ध करना आदि।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(xiii) छात्रों के अभ्यास कार्य का संशोधन सावधानीपूर्वक करना चाहिए। उनकी अशुद्धियों को शुद्ध करने का प्रयास करना चाहिए।

(xiv) छात्रों के साथ अध्यापक का व्यवहार प्रेम एवं सहानुभूतिपूर्ण हो।

(xvii) छात्रों को सीखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। विभिन्न प्रकार की व्याकरण संबंधी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाए।

इन बातों का ध्यान देकर अध्यापक अपने व्याकरण-शिक्षण को रोचक, सरस व प्रभावशाली बना सकता है।

व्याकरण-शिक्षण में प्रयुक्त एक पाठ-योजना
(A Lesson Plan meant for Teaching Grammar)

माध्यमिक कक्षाओं तक आते-आते बच्चों को भाषा का पर्याप्त ज्ञान हो जाता है। उनका मानसिक व बौद्धिक विकास इतना हो जाता है कि वे व्याकरण के नियमों के भेदों-उपभेदों का विश्लेषण आसानी से समझ सकते हैं। इस स्तर पर प्रयोग या विश्लेषण विधि (आगमन विधि व निगमन विधि का समन्वित प्रयोग) की सहायता से बच्चों को व्याकरण के नियमों का ज्ञान सरसता, रोचकता व सुगमता से कराया जा सकता है। इस विधि की सहायता लेकर व्याकरण की शिक्षा देने हेतु पाठ-योजना का निर्माण कैसे किया जाता है। यह स्पष्ट करने के लिए आगे एक उदाहरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

दिनांक............

कक्षा—आठवीं

छात्राध्यापक का अनुक्रमांक................

औसत आयु—13+वर्ष

विषय—हिंदी (व्याकरण)

कालांश—द्वितीय

उपविषय—द्वन्द्व और द्विगु समास

अवधि—40 मि०

अनुदेशनात्मक उद्देश्य

1. छात्र द्वन्द्व एवं द्विगु समासयुक्त शब्दों को पहचानते हैं।
2. छात्र द्वन्द्व एवं द्विगु समासयुक्त शब्दों का विश्लेषण कर करते हैं।
3. छात्र दिए गए शब्दों का संश्लेषण करते हैं।
4. छात्र इन दोनों समासों के उदाहरण देते हैं।
5. छात्र इन दोनों समासों में तुलना करते हैं।
6. छात्र इन दोनों समासों में अंतर बताते हैं।
7. छात्र द्वन्द्व व द्विगु समाज की परिभाषा बताते हैं।।
8. छात्र इन समासों की परिभाषा आदि का प्रत्यास्मरण करते हैं।
9. छात्र इनके अशुद्ध रूपों की त्रुटियाँ बताते हैं।
10. छात्र समास के उदाहरण देने व समास-विग्रह करने में रुचि लेते हैं।

अनुदेशनात्मक सामग्री

1. लपेट श्यामपट्ट पर लिखे हुए वाक्य
2. भारत का मानचित्र
3. सीता स्वयंवर का चित्र

प्रारम्भिक व्यवहार—छात्रों को समास की परिभाषा का पूर्ण ज्ञान है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रस्तावना—छात्राध्यापक भारत का मानचित्र बच्चों को दिखाते हुए प्रश्न पूछेगा और उत्तर श्यामपट्ट पर लिखेगा तथा वाक्यों पर आधारित प्रश्न पूछेगा—

1. गंगा-यमुना कहाँ से निकलती हैं ?

वाक्य—''गंगा-यमुना हिमालय पर्वत से निकलती हैं।''

2. (सीता स्वयंवर का चित्र दिखाते हुए) बच्चों, इस चित्र में क्या दिखाया गया है ?

वाक्य—''सीता स्वयंवर में शिव का धनुष टूटते ही उसकी टंकार त्रिभुवन में गूँज उठी।''

3. बच्चों, प्रथम वाक्य में सामासिक पद कौनसा हैं ?
4. दूसरे वाक्य में सामासिक पद कौनसा है ?
5. गंगा-यमुना शब्द में समास क्यों है ?
6. त्रिभुवन में समास क्यों हैं ?
7. समास के कितने भेद होते हैं ?

उद्देश्य-कथन—अन्तिम प्रश्न का उत्तर प्राप्त होने या न होने पर छात्राध्यापक घोषणा करेगा—बच्चें, समास के छः भेद होते हैं-द्वन्द्व, द्विगु, तत्पुरुष, अव्ययीभाव, कर्मधारय और बहुब्रीहि। आज हम इनमें से द्वन्द्व समास और द्विगु समास के बारे में पढ़ेंगे।

प्रस्तुतीकरण—पाठ का विकास बच्चों के सक्रिय सहयोग से, आगमन-निगमन विधि का प्रयोग करते हुए किया जाएगा।

शिक्षण-बिन्दु	छात्राध्यापक क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ
द्वन्द्व समास का ज्ञान उदाहरणों का प्रस्तुतीकरण एवं निरीक्षण	छात्राध्यापक लपेट श्यामपट्ट पर लिखे हुए कुछ वाक्य छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत करेगा— 1. रामायण में राजा-प्रजा, पिता-पुत्र, गुरु-शिष्य और स्वामी-सेवक के संबंधों का आदर्श रूप दिखाया गया है। 2. गंगा-यमुना भारत की पवित्र नदियाँ हैं। अब बच्चों से इन वाक्यों को पढ़ने के लिए कहेगा।	छात्र श्यामपट्ट पर लिखे वाक्य देखेंगे। छात्र वाक्यों को पढ़ेंगे।
उदाहरणों का विश्लेषण	छात्राध्यापक उदाहरणों का विश्लेषण करने के लिए बच्चों से प्रश्न पूछेगा और उत्तरों को श्यामपट्ट पर लिखेगा— 1. प्रथम वाक्य में सामाजिक पद कौन-कौनसे हैं ? 2. 'राजा-प्रजा', इस सामासिक पद में कौनसा शब्द छिपा हुआ है ?	बच्चे प्रश्नों का उत्तर देंगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिक्षण-बिन्दु	छात्राध्यापक क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ
	3. पिता-पुत्र शब्द का विग्रह कैसे करोगे ? 4. गुरु-शिष्य शब्द में संबंध बताने वाले किस शब्द का लोप हुआ है ? 5. स्वामी-सेवक का विग्रह करो। 6. द्वितीय वाक्य में सामाजिक पद कौनसा है ? 7. गंगा-यमुना सामाजिक पद में कौन सा शब्द छिपा हुआ है ? छात्राध्यापक बताएगा कि ये सभी द्वन्द्व समास के उदाहरण हैं। श्यामपट्ट कार्य (प्रश्नोत्तर के साथ-साथ किया जाएगा)	छात्र समझने की प्रयास करेंगे।
	सामाजिक पद — **समाज विग्रह** — **लुप्त हुआ शब्द** राजा-प्रजा — राजा और प्रजा — और पिता-पुत्र — पिता और पुत्र — और गुरु-शिष्य — गुरु और शिष्य — और स्वामी-सेवक — स्वामी और सेवक — और गंगा-यमुना — गंगा और यमुना — और	छात्र श्यामपट्ट-कार्य को प्रश्नोत्तर के साथ-साथ अपनी-अपनी पुस्तिकाओं में लिखेंगे।
सामान्यीकरण	जिस सामाजिक पद के बीच में 'और' शब्द का लोप होता है, उसे कौनसा समास कहते हैं ? **छात्राध्यापक-कथन**—"जिस सामाजिक पद के बीच में 'और' शब्द का लोप होता है उसे द्वन्द्व समास कहते हैं। इसमें दोनों पद प्रधान होते हैं।"	छात्र ध्यानपूर्वक सुनेंगे।
प्रयोग एवं अभ्यास	अध्यापक नियम का परीक्षण और अभ्यास कराने के लिए लपेट श्यामपट्ट पर लिखे हुए कुछ वाक्य प्रस्तुत करेगा और उनमें विग्रहित पदों के स्थान पर सामाजिक पदों का प्रयोग करने के लिए कहेगा—	छात्र वाक्यों को ध्यान से पढ़ेंगे और विग्रहित पदों के स्थान पर सामाजिक पदों का प्रयोग कर पुनः वाक्य रचना करेंगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिक्षण-बिन्दु	छात्राध्यापक क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ
	1. वह रात और दिन कार्य में लगा	(रात-दिन)
	2. हानि और लाभ की चिन्ता नहीं करनी चाहिए	
	3. भाई और बहिन को प्यार से रहना चाहिए।	(भाई-बहिन)
	4. यश और अपयश की चिन्ता नहीं करनी चाहिए।	(यश-अपयश)
द्विगु समास का ज्ञान उदाहरणों का प्रस्तुतीकरण	छात्राध्यापक लपेट श्यामपट्ट पर लिखे हुए वाक्य छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत करेगा और उनसे सामाजिक पद छाँटने के लिए कहेगा तथा श्यामपट्ट पर लिखेगा। वाक्य—1. दशानन लंका का राजा था। 2. आर्यों ने सर्वप्रथम सप्तसिन्धु प्रदेश में प्रवेश किया। 3. चौराहे पर सिपाही खड़ा है।	छात्र वाक्यों को देखेंगे और उनमें से सामाजिक पद छाँटेंगे।
उदाहरणों का विश्लेषण	छात्राध्यापक, सामाजिक पदों का विश्लेषण करने के लिए छात्रों से प्रश्न पूछेगा और उनके उत्तरों को श्यामपट्ट पर लिखेगा 1. प्रथम वाक्य में सामाजिक पद कौन सा है? 2. 'दशानन' शब्द का क्या अर्थ है? 3. इसमें प्रथम पद व्याकरण की दृष्टि से क्या है? 4. दूसरे वाक्य में सामाजिक पद कौन सा है? 5. 'सप्तसिन्धु' पद में कौन से दो शब्द मिले हैं? 6. 'सात नदियाँ' पद में प्रथम पद व्याकरण की दृष्टि से क्या है? 7. तीसरे वाक्य में सामाजिक पद क्या है? 8. 'चौराहा' शब्द का विग्रह करो। 9. इसमें प्रथम पद व्याकरण की दृष्टि से क्या है?	छात्र प्रश्नों का उत्तर देंगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिक्षण-बिन्दु	छात्राध्यापक क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ
	श्यामपट्ट-कार्य (प्रश्नोत्तर के साथ-साथ किया जाएगा)	
	सामाजिक पद — **समाज विग्रह** — **प्रथम पद**	
	दशानन — दस मुखों वाला — दस (संख्यावाची)	
	सप्तसिन्धु — सात नदियों वाला — सात (संख्यावाची)	
	चौराहा — चार राहों वाला — चार (संख्यावची)	
सामान्यीकरण	छात्राध्यापक स्पष्ट करेगा कि जिस सामाजिक पद में प्रथम पद द्‌वितीय पद की संख्या बताता है उसे द्विगु समास कहते हैं।	छात्र ध्यानपूर्वक सुनेंगे।
नियमीकरण	अब वह बच्चों से द्विगु समास की परिभाषा बताने के लिए कहेगा और बच्चों द्‌वारा बताई गई परिभाषा में त्रुटि होने पर उसे ठीक करेगा और श्यामपट्ट पर लिखेगा। परिभाषा—''जिस सामाजिक पद में प्रथम पद संख्यावाचक होता है और उत्तर पद प्रधान होता है, उसे द्विगु समास कहते हैं।''	छात्र परिभाषा बताएँगे।
प्रयोग एवं अभ्यास	अध्यापक कुछ वाक्य श्यामपट्ट पर लिखकर विग्रहित पदों के स्थान पर सामाजिक पद लिखने के लिए बच्चों से कहेगा— चार आने का दही लाओ। (चवन्नी) अकबर की सभा में नौ रत्नों का बहुत सम्मान होता था। (नवरत्न) कथा के पहले नौ ग्रहों की पूजा की जाती है। (नवग्रह)	बच्चे विग्रहित पदों के सामाजिक पद श्यामपट्ट पर लिखेंगे।
कक्षा-कार्य एवं निरीक्षण	अध्यापक छात्रों से श्यामपट्ट-कार्य को अपनी-अपनी अभ्यास-पुस्तिकाओं में उतारने के लिए कहेगा और उनका निरीक्षण करेगा।	छात्र श्यामपट्ट-कार्य को अपनी-अपनी काफी में उतारेंगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिक्षण-बिन्दु	छात्राध्यापक क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ
पुनरावृत्ति	पाठ को दोहराने के लिए अध्यापक निम्न प्रश्न पूछेगा : देंगे। 1. जब दो शब्दों के बीच 'और' शब्द होता है तो वहाँ कौनसा समास होता है ? 2. द्विगु समास किसे कहते हैं ? 3. द्विगु समास का एक उदाहरण दो।	छात्र प्रश्नों का उत्तर
गृह-कार्य	अध्यापक बच्चों को घर से करके लाने के लिए निम्न प्रश्न देगा और उनकी कापियों की जांच करेगा : 1. निम्न समस्त पदों का विग्रह करो और उनके सामने समास का नाम लिखो— षडानन, पंचवटी, त्रिगुण, माखन-रोटी, खीर-पूड़ी, दाल-भात, अष्टांग, दिन-रात, त्रिदेव, चतुर्भुज।	बच्चे घर से प्रश्न का उत्तर लिखकर लाएंगे।

अध्ययन के लिए प्रश्न

1. किसी भी भाषा के व्याकरण से आप क्या समझते हैं ? भाषा-शिक्षण में व्याकरण-शिक्षण के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

2. भाषा-शिक्षण में व्याकरण की शिक्षा का क्या महत्त्व है ? माध्यमिक स्तर पर व्याकरण-शिक्षण के उद्देश्यों पर प्रकाश डालिए।

3. "व्याकरण-शिक्षण के बिना भाषा-शिक्षण अधूरा है।" इस कथन के औचित्य पर प्रकाश डालिए।

4. व्याकरण-शिक्षण के दो रूपों 'औपचारिक तथा अनौपचारिक' का विस्तार से वर्णन कीजिए।

5. औपचारिक एवं अनौपचारिक व्याकरण-शिक्षण से आप क्या समझते हैं ? माध्यमिक स्तर पर मातृभाषा की शिक्षा देते समय आप व्याकरण-शिक्षण किस प्रकार करेंगे ?

6. व्याकरण-शिक्षण की विभिन्न विधियों का उल्लेख करते हुए बताइए कि किस विधि को सर्वोत्तम समझते हैं और क्यों ?

7. मातृभाषा-शिक्षण में व्याकरण की नियमित शिक्षा कब शुरू करनी चाहिए ? अपने उत्तर की तर्कसहित पुष्टि कीजिए।

8. व्याकरण की परिभाषा दीजिए। वर्तमान युग में व्याकरण की शिक्षा के संबंध में विद्वानों के क्या मत है ? व्याकरण-शिक्षण की विधियों का उल्लेख कीजिए।

9. हिन्दी-शिक्षण में व्याकरण का स्थान और कार्य क्या है ? हमारे विद्यालयों में हिन्दी-व्याकरण-शिक्षण के लिए अपनाई जानेवाली विधियों के गुण-दोषों का वर्णन कीजिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

10. व्याकरण-शिक्षण के उद्देश्यों की चर्चा करते हुए व्याकरण-शिक्षण को रुचिकर बनाने के उपायों का वर्णन कीजिए।

11. व्याकरण का विषय विद्यार्थियों को शुष्क और नीरस क्यों लगता है ? उसे सरस और रुचिकर बनाने के लिए आप क्या करना चाहेंगे ?

12. माध्यमिक स्तर पर बालकों को व्याकरण की शिक्षा देने हेतु किसी एक विषय पर पाठ-योजना तैयार कीजिए।

13. निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :

(i) मातृभाषा-शिक्षण में व्याकरण का स्थान एवं महत्त्व

(ii) व्याकरण-शिक्षण के उद्देश्य

(iii) व्याकरण-शिक्षण की विधियाँ

(iv) व्याकरण-शिक्षण को रुचिकर बनाने के उपाय

(v) अनौपचारिक एवं औपचारिक व्याकरण-शिक्षण

(vi) व्याकरण-शिक्षण की भाषा-संसर्ग विधि

(vii) व्याकरण-शिक्षण की आगमन विधि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

15

रचना-शिक्षण

(Teaching of Composition)

रचना का अर्थ (Meaning of the term Composition)

रचना का शाब्दिक अर्थ है सजाना अथवा सँवारना। किसी भी माध्यम से भावनाओं और विचारों की कलात्मक एवं व्यवस्थित अभिव्यक्ति को रचना कहा जाता है। भाषा के क्षेत्र में, अपने भावों तथा विचारों को शब्द-समूहों के रूप में सजाने अथवा सँवारने को रचना कहते हैं। सामान्य शब्दों में भाषागत प्रकाशन ही रचना है। भाषा के अन्तर्गत रचना शब्द का प्रयोग दो रूपों में होता है—संज्ञा रूप में और क्रिया रूप में। संज्ञा रूप में गद्य-पद्य के रूप में प्रस्तुति रचना है तथा क्रिया रूप में अपने भाव, विचार तथा अनुभवों को शब्द-समूहों में व्यवस्थित करने, सजाने या सँवारने को रचना कहते हैं।

मनुष्य अपने विचारों की अभिव्यक्ति दो प्रकार से करता है—बोलकर (मौखिक रूप में) एवं लिखकर (लिखित रूप में)। अतः रचना के भी दो रूप होते हैं—(i) मौखिक रचना—जब व्यक्ति बोलकर अपने विचारों को प्रकट करता है और (ii) लिखित रचना—जब व्यक्ति लिखकर अपने विचारों को व्यक्त करता है। बच्चा अपने मौखिक रचना शुरू करता है। और बाद में लिखित रचना। हम कह सकते हैं कि मौखिक रचना लिखित रचना का आधार है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि—"अपने विचारों को सार्थक, तार्किक कलात्मक एवं सोद्देश्यपूर्ण ढंग से व्यक्त करना ही रचना है।"

रचना-शिक्षण क्या है? (What do we mean by teaching of Composition?)—जब हम भाषा-शिक्षण के उद्देश्यों की बात करते हैं तो बच्चों में सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने के कौशल का विकास करने के उद्देश्य के साथ-साथ बच्चों में अपने विचारों को प्रभावशाली ढंग से प्रकट करने की योग्यता का विकास करने के उद्देश्य को भी अपने सामने रखते हैं। बच्चे के अन्दर जब तक अपने विचारों को प्रभावशाली रूप से अभिव्यक्त करने की योग्यता विकसित नहीं होती हैह तब तक उसका भाषा पर पूर्ण अधिकार नहीं हो पाता है। इसीलिए भाषा-शिक्षण में रचना-शिक्षण को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

"बच्चों को अपने भावों, विचारों तथा अनुभवों ढंग से मौखिक एवं लिखित रूप से अभिव्यक्त करने का प्रशिक्षण देना ही रचना-शिक्षण है।"

छात्रों को अवसरानुकूल शब्दावली का प्रयोग करते हुए, शुद्ध उच्चारण, शुद्ध वर्तनी, विषयानुकूल भाषा-शैली का प्रयोग करने, उचित स्वर एवं उचित गति से विचारों को अभिव्यक्त करने, भावानुकूल हाव-भाव का प्रदर्शन करने, व्याकरणसम्मत भाषा का प्रयोग करने एवं शब्दों, मुहावरों लोकोक्तियों का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
उचित प्रयोग करने एवं विचारों को सुसम्बद्ध रूप से व्यक्त करने की योग्यता का विकास करना ही रचना-शिक्षण है।

रचना-शिक्षण का महत्त्व (Importance of the teaching of Composition)

भाषा एक कौशल है। इस कौशल पर पूर्ण अधिकार प्राप्त कराने के लिए बच्चों में सुनने, बोलने, पढ़ने एवं लिखने के कौशल का विकास करना आवश्यक है क्योंकि भाषा का प्रयोग दो रूपों में होता है—मौखिक एवं लिखित। मौखिक रूप पर अधिकार करने के लिए सुनना और बोलना तथा लिखित रूप पर अधिकार करने के लिए पढ़ना और लिखना—इन चारों कौशलों को विकसित करना भाषा की शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है। इन चारों कौशलों में से बोलने और लिखने अर्थात मौखिक रूप से तथा लिखित रूप से विचारों को अभिव्यक्त करने के कौशल का विकास रचना-शिक्षण द्वारा किया जाता है। रचना की शिक्षा के द्वारा ही बच्चों को शुद्ध उच्चारण करते हुए, अवसरानुकूल शब्दावली एवं विषयानुकूल भाषा-शैली में उचित हाव-भाव के साथ बोलने का अभ्यास कराया जाता है। इसी प्रकार शब्दों की शुद्ध वर्तनी, सुलेख, व्याकरणसम्मत वाक्य-रचना, विषयानुकूल भाषा-शैली, मुहावरों एवं लोकोक्तियों का उचित प्रयोग करते हुए सुंदर लेख में अपने विचारों को व्यक्त करने का अभ्यास भी रचना-शिक्षण द्वारा ही कराया जाता है।

अतः बच्चों की अभिव्यक्ति में पूर्णता लाने की दृष्टि से रचना-शिक्षण का भाषा की शिक्षा में अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है।

विभिन्न स्तरों पर रचना-शिक्षण के उद्देश्य (Aims of Composition teaching at various stages)—भाषा तो विचार-विनिमय का प्रमुख साधन है। भाषा ही मनुष्य को एक सामाजिक प्राणी बनाए रखने में प्रमुख माध्यम का कार्य करती है। यह भाषा वैसे तो बच्चा स्वाभाविक रूप से अनुकरण करता हुआ सीख जाता है, परन्तु उसके इस भाषा-ज्ञान में निखार व पूर्णता लाना ही भाषा-शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है। विद्यालयी शिक्षा के प्राथमिक स्तर से ही बच्चे कोम भाषा की शिक्षा देना प्रारम्भ कर दिया जाता है। धीरे-धीरे उसके भाषायी कौशलों में निखार लाया जाता है। छात्रों को शब्दों, सूक्तियों, मुहावरों, लोकोक्तियों, वाक्य-रचना, वाक्य-रचना के नियमों, विराम-चिह्नों, विभिन्न लेखन-शैलियों आदि का क्रमबद्ध ज्ञान कराया जाता है ताकि उनकी अभिव्यक्ति में क्रमबद्धता एवं प्रभावपूर्णता आ सके। बच्चों को इन सब भाषायी तत्वों का क्रमिक ज्ञान धीरे-धीरे उनकी क्षमता व योग्यतानुसार कराया जाता है। इन सभी तत्वों आदि का ज्ञान कराना तथा भाषायी क्षमताओं कोम क्रमबद्धरूप से विकसित करना ही रचना-शिक्षण के उद्देश्य हैं। इन उद्देश्यों को विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर क्रमिक रूप से छात्रों की मानसिक क्षमता, रुचि आदि को ध्यान में रखते हुए विकसित करने का प्रयास करना चाहिए। रचना-शिक्षण के ये उद्देश्य निम्नलिखित हैं :

1. छात्रों को उचित गति से सुंदर, सुडौल और स्पष्ट लेख लिखने में प्रशिक्षित करना।
2. छात्रों को शब्दों, सूक्तियों, मुहावरों एवं लोकोक्तियों का उचित प्रयोग कर सकने के योग्य बनाना।
3. छात्रों को व्याकरणसम्मत भाषा का प्रयोग कर सकने के योग्य बनाना।
4. छात्रों में अपने विचारों को क्रमबद्ध रूप से प्रकट करने की क्षमता विकसित करना।
5. छात्रों की मौखिक एवं लिखत अभिव्यक्ति में स्पष्टता एवं शुद्धता लाना।
6. छात्रों में ऐसी योग्यता उत्पन्न करना कि वे जो कुछ भी विचार या भाव प्रकाशित करें उनमें एक उचित तारतम्य हो।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

7. छात्रों को लेखन की विभिन्न शैलियों से परिचित करना।

8. छात्रों की निरीक्षण, तर्क, कल्पना, तथा विवेक-शक्तियों को विकसित करना।

9. छात्रों को विषयानुकूल भाषा-शैली का व्यावहारिक प्रयोग करने के योग्य बनाना।

10. छात्रों को कम-से-कम भाषा में अधिक से अधिक विचार व्यक्त करने के योग्य बनाना।

11. छात्रों की सृजनात्मक शक्ति का विकास पर साहित्य-सृजन के लिए प्रेरणा देना।

12. छात्रों में अध्ययन, चिन्तन एवं मनन की अभिवृत्ति का निर्माण करना।

13. छात्रों की अभिव्यक्त में मौलिकता लाना।

14. छात्रों को साहित्य की विविध विधाओं के तत्वों से परिचित कराकर, उनका अध्ययन करने एवं उनका भंडार विकसित करने की क्षमता विकसित करना।

(यहाँ हमने रचना-शिक्षण के उद्देश्यों को सामान्य रूप से स्पष्ट किया है। वैसे मौखिक-कौशल एवं लेखन-कौशल के अध्यायों में मौखिक रचना एवं लिखित रचना के उद्देश्यों को अलग-अलग स्पष्ट किया जा चुका है।)

इस प्रकार से हम देखते है कि रचना-शिक्षण के सभी उद्देश्य बच्चों में रचनात्मक शैलियों के विकास के मूल उद्देश्य से संबधित हैं। अध्यापकों का कर्त्तव्य है कि वे कक्षा में उचित वातावरण का निर्माण कर तथा उचित रचना-शिक्षण विधि एवं प्रक्रिया को अपनाकर छात्रों की सृजनात्मक शक्ति को पहचानें एवं उन्हें विकसित करने में पूर्ण सहयोग प्रदान करें जिससे छात्र केवल पूर्व प्रचलित लेखन-शैली का प्रयोग ही न करें बल्कि रचना-कार्य में इतने कुशल जो जाएँ कि अपनी स्वतन्त्र लेखन-शैली का निर्माण करें और साहित्य-भंडार को विकसित करने में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करें।

रचना-शिक्षण में प्रयुक्त विभिन्न प्रणालियाँ
(Various Techniques Employed for the Teaching of Composition)

रचना-शिक्षण का उद्देश्य है छात्रों को अपने भावों और विचारों को उचित भाषा में क्रमबद्ध रूप से अभिव्यक्त करना सिखाना। विचारों की अभिव्यक्ति दो रूपों में होती है—मौखिक एवं लिखित। अत: रचना के भी दो रूप होते हैं—एक 'मौखिक रचना' अर्थात बोलकर अपने भावों व विचारों को उचित क्रम में व्यक्त करना और दूसरा 'लिखित रचना' अर्थात लिपि के माध्यम के उचित भाषा-शैली का प्रयोग कर विचारों को व्यक्त करना।

मौखिक रचना लिखित रचना का आधार होती है। किसी भी विषय पर रचना-कार्य कराते समय अध्यापक छात्रों से पहले मौखिक रूप से रचना करवाता है तदुपरान्त उस मौखिक रचना को लिपिबद्ध करने का आदेश देता है। बच्चों को ठीक प्रकार से रचना-कार्य का प्रशिक्षण देने के लिए अनेक प्रणालियों का विकास किया गया है। अध्यापक को छात्रों के मानसिक स्तर, कक्षा एवं विषय को ध्यान में रखते हुए किसी उपयुक्त प्रणाली का चुनाव कर अपने रचना-शिक्षण को प्रभावशाली, उद्देश्यपूर्ण एवं सफल बनाने का प्रयास करना चाहिए।

रचना-शिक्षण की ये प्रणालियाँ निम्नलिखित हैं :

1. प्रश्नोत्तर प्रणाली (Question-Answer Method)—रचना-शिक्षण की यह प्राचीनतम एवं सर्वाधिक प्रचलित प्रणाली है। जिस विषय पर रचना-कार्य कराना हो, उससे संबंधित प्रश्न अध्यापक बच्चों से पूछता है और छात्र उन प्रश्नों का उत्तर देते हैं। अध्यापक प्रश्न इस क्रम में पूछता है कि छात्रों को संबंधित विषय पर क्रमबद्ध रूप से विचार करने का अवसर मिलता है। इस प्रकार इस

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विधि में पहले मौखिक रचना की जाती है और उसके बाद लिखित रचना करने को कहा जाता है। रचना में होनेवाली त्रुटियों को बाद में ठीक कराया जाता है।

इस विधि में छात्र व अध्यापक दोनों ही सक्रिय रहते हैं अत: रचना-शिक्षण की यह एक उपयुक्त प्रणाली है। किसी भी स्तर पर रचना-कार्य के लिए इस प्रणाली का प्रयोग किया जा सकता है।

परंतु इस प्रणाली का प्रयोग करते समय अध्यापक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि रचना का विषय बच्चों के अनुभव-सीमा के भीतर का हो, प्रश्न छोटे व स्पष्ट हों, सभी बच्चों को प्रश्नों का उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित किया जाय, प्रश्नों का उत्तर पूर्ण वाक्य में लिया जाए, छात्रों को भी प्रश्नों पूछने की छूट हो, उनकी शंकाओं का उचित समाधान किया जाए एवं छात्रों के उत्तरों में त्रुटि होने पर उन्हीं की सहायता से उन त्रुटियों को दूर कराने का प्रयास भी किया जाए।

2. चित्र वर्णन प्राणाली (Picture Illstration Method)—इस प्रणाली में, जिस विषय पर रचना-कार्य कराना होता है, उससे संबंधित चित्र कक्षा में बच्चों के सामने प्रस्तुत किया जाता है। अध्यापक चित्र से संबंधित प्रश्न क्रमपूर्वक बच्चों से पूछता है और बच्चे चित्र का अवलोकन कर अध्यापक के प्रश्नों का उत्तर देते हैं। चित्र के अंग-प्रत्यंग पर प्रश्न पूछने के बाद अन्त में बच्चों से अपने शब्दों में चित्र का वर्णन करने के लिए कहा जाता है। मौखिक अभिव्यक्ति के उपरान्त छात्रों से लिखित अभिव्यक्ति के लिए कहा जाता है।

प्राथमिक स्तर एवं माध्यमिक स्तर पर रचना-कार्य कराने के लिए यह विधि सर्वोत्तम है। इस विधि में बच्चे रचना के प्रारंभ से अन्त तक क्रियाशील रहते हैं अत: उनकी रुचि बनी रहती है। इस विधि में छात्रों की निरीक्षण एवं कल्पना-शक्ति विकसित होती है। छोटे बच्चों की तर्कशक्ति एवं अभिव्यक्ति-शक्ति का विकास करने के लिए तो यह विधि बहुत ही उत्तम है।

इस विधि के सफल प्रयोग के लिए यह आवश्यक है कि चित्र स्पष्ट एवं पूर्ण हो। चित्र का विषय बच्चों के मानसिक स्तर के अनुकूल, सरल एवं परिचित हो।

3. भाषायन्त्र प्रणाली (Language Instruments Method)—यह रचना-शिक्षण की एक ऐसी प्रणाली है जिसमें छोटे-छोटे बच्चें खेल-खेल में रचना करना सीख जाते हैं। इस विधि में चार उपकरणों की आवश्यकता होती है—ग्रामोफोन मशीन या टेपरिकार्डर, रचना का रिकार्ड या कैसेट, चित्र एवं सहायक पुस्तक। पहले टेपरिकार्डर पर रचना का कैसेट लगाकर उसे चालू कर किया जाता है, सामने दीवार संबंधित चित्र टांगकर, अध्यापक कैसेट से निकलने वाले वाक्यों के अनुसार संकेतक से चित्र पर संकेत करता चलता है। बच्चे चित्र देखते से प्रश्न पूछकर रचना को दोहराता है और छात्रों से रचना लिखने के लिए कहता है। बाद में संबंधित पुस्तक से वे अपनी रचना की तुलना करते हैं और अपनी त्रुटियाँ दूर करते हैं।

इस विधि में बच्चे आँख, कान, हाथ का सक्रिय प्रयोग करते हैं अत: रचना में उनकी रुचि बनी रहती है, परंतु यह विधि खर्चीली बहुत है और छोटे-छोटे बच्चों से अपनी त्रुटियाँ अपने आप दूर करने की आशा करना व्यर्थ है।

4. उद्बोधक प्रणाली (Educing Method)—इस प्रणाली में प्रश्नोत्तर एवं दृश्य-श्रव्य साधन आदि का प्रयोग करके छात्रों की कल्पना एवं विचार शक्ति को प्रेरित कर संबंधित विषय की सामग्री को बच्चों से ही निकलवाया जाता है। कक्षा में ऐसी परिस्थितियों का निर्माण किया जाता है कि छात्र स्वयं संबंधित विषय पर विचार प्रस्तुत करते हैं। अध्यापक छात्रों के विचारों को क्रमबद्ध करके उन्हें लिखित रचना करने के लिए कहता है। महापुरुषों के जीवन-चरित, आत्मकक्षा, दृश्यों का वर्णन,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऐतिहासिक एवं भौगोलिक वर्णन आदि से संबंधित विषयों पर रचना-कार्य कराने में यह विधि सहायक होती है।

निम्न माध्यमिक एवं उससे आगे की कक्षाओं में रचना-कार्य कराने के लिए इस प्रणाली का प्रयोग किया जा सकता है।

5. रूपरेखा प्रणाली (Outline Method)—इस प्रणाली में कहानी, निबंध या अन्य विषयों पर रचना-कार्य कराने के लिए संबंधित विषय की रूपरेखा छात्रों के संमुख प्रस्तुत की जाती है। छात्र उस रूपरेखा के आधार पर स्वयं सोचकर रचना-कार्य करते हैं। यह प्रणाली तार्किक क्रम में विचारों को व्यक्त कर रचना-कार्य करने के लिए तो उपयुक्त है परंतु स्वतन्त्र अभिव्यक्ति की दृष्टि से यह उपयुक्त नहीं। यह विधि माध्यमिक एवं उच्च दोनों स्तरों पर रचना-कार्य कराने के लिए उपयोगी है।

6. अनुकरण प्रणाली (Imitation Method)—इस प्रणाली में छात्रों के संमुख भाषा एवं शैली की दृष्टि से त्रुटि-रहित कोई रचना प्रस्तुत की जाती है। छात्र उस रचना का अध्ययन एवं मनन करते हैं। फिर उसी रचना से मिलती-जुलती कोई दूसरी रचना छात्र स्वयं करते हैं। जैसे—''यदि मैं शिक्षक होता'' रचना का अनुकरण कर छात्र ''यदि मैं परीक्षक होता'' विषय पर रचना-कार्य कर सकते हैं। इस विधि का प्रयोग माध्यमिक एवं उच्च स्तर पर रचना-कार्य कराने के लिए किया जा सकता है।

7. शब्द-प्रधान विधि (Words Dominated Method)—इस विधि में अध्यापक रचना में प्रयुक्त होनेवाले सभी प्रमुख शब्दों, सूक्तियों, मुहावरों एवं लोकोक्तियों को बच्चों के संमुख रखता है और फिर उनको वाक्यों में प्रयुक्त कर रचना करने का आदेश देता है।

8. प्रवचन प्रणाली (Lecture Method)—इस प्रणाली में अध्यापक रचना के विषय पर छात्रों के संमुख अपना व्याख्यान अर्थात भाषण प्रस्तुत करता है और छात्रों को उस विषय पर रचना करने का आदेश देता है। छात्र अध्यापक के प्रवचन को सुनकर उसके आधार पर तथा अपने विचारों को उसमें मिश्रित कर स्वयं रचना-कार्य करते हैं। स्वतन्त्र अभिव्यक्ति की योग्यता को विकसित करने की दृष्टि से यह एक उपयोगी विधि है।

9. विचार-विमर्श प्रणाली (Method of Exchanging Ideas)—इस प्रणाली में अध्यापक छात्रों को किसी विषय पर अध्ययन एवं विचार करके आने के लिए कहता है। छात्र उस विषय पर तैयारी करके कक्षा में आते हैं। बाद में इसी विचार-विमर्श के आधार पर पाठ्य विषय पर रचना करने के लिए कहा जाता है। सामाजिक, राजनीतिक एवं शैक्षिक विषयों आदि पर रचना-कार्य करने के लिए उच्चमाध्यमिक स्तर पर इस प्रणाली का प्रयोग किया जा सकता है।

10. मन्त्रणा प्रणाली (Guidance Method)—इस प्रणाली में अध्यापक रचना के विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करने के पश्चात छात्रों को विषय से संबंधित पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकों के बारे में बताता है। छात्र उन पत्र-पत्रिकाओं एवं पुस्तकों का अध्ययन कर स्वयं रचना करते हैं। किसी भी विषय से संबंधित विभिन्न दृष्टिकोणों का अध्ययन करने, विचार करने एवं स्वतन्त्र रूप से विचारों को अभिव्यक्त करने की दृष्टि से यह विधि एक उपयोगी विधि है।

11. स्वाध्याय प्रणाली (Self-Study Method)—इस प्रणाली में पूरा कार्य छात्रों को स्वयं करना होता है। अध्यापक केवल रचना का विषय ही छात्रों को बताता है। रचना करने के लिए पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं आदि की खोज छात्र स्वयं करते हैं और उनका अध्ययन कर स्वयं संबंधित विषय पर रचना करते हैं। इस विधि का प्रयोग उच्च कक्षाओं में किया जा सकता है। जब बच्चे स्वयं सोचने और निर्णय लेने के योग्य हो जाते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

12. तर्क या वाद-विवाद प्रणाली (Discussion Method)—विवादग्रस्त विषयों पर रचना-कार्य कराने के लिए उच्च कक्षाओं में इस विधि का प्रयोग किया जा सकता है। सहशिक्षा, जातिप्रथा, दहेजप्रथा, मूर्तिपूजा आदि विषयों पर रचना-कार्य कराने के लिए कक्षा के छात्रों को दो भागों में बाँटकर रचना के विषय के पक्ष एवं विपक्ष में विचार प्रस्तुत करने के लिए कहा जाता है। छात्र विषय के पक्ष या विपक्ष में बोलते हुए अपने विचारों को सत्य सिद्ध करने के लिए तर्क प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार वाद-विवाद पूरा होने के पश्चात छात्रों को विषय पर रचना-कार्य करने के लिए कहा जाता है। इसमें छात्र अपने पक्ष का मंडल (समर्थन) एवं विपक्ष का खंडन करता है अत: इसे 'खंडन-मंडल विधि' भी कहा जाता है।

13. समवाय प्रणाली (Correl Method)—इस प्रणाली में भाषा साहित्य की अन्य विधाओं गद्य, कहानी, नाटक, निबंध, जीवनी, आत्मकथा आदि पढ़ाते समय छात्रों को ऐसे प्रश्न दिए जाते हैं जिनका उत्तर छात्रों को एक रचना के रूप में देना पड़ता है। छात्र निबंधात्मक शैली में प्रश्न का उत्तर लिखते हैं और इस तरह उन्हें रचना करने का अवसर मिलता है। माध्यमिक एवं उच्च कक्षाओं में इस प्रणाली का प्रयोग रचना-शिक्षण के लिए किया जा सकता है।

14. समीक्षा प्रणाली (Critical Evaluation Method)—इस प्रणाली में अध्यापक कहानी, निबंध, नाटक, उपन्यास, गद्य, जीवनी आदि के तत्वों तथा रचना-कौशल के सिद्धान्तों को स्पष्ट करता है और छात्रों को किसी भी विषय पर समीक्षात्मक रचना करने का आदेश देता है। छात्र संबंधित विधा के तत्वों के आधार पर विषय पर समीक्षात्मक निबंध लिखते हैं। यह विधि उच्च कक्षाओं में बच्चों की लिखित अभिव्यक्ति में सुधार लाने के लिए प्रयुक्त की जा सकती है।

इस प्रकार छात्रों के बौद्धिक एवं मानसिक स्तर को ध्यानप में रखते हुए किसी भी उपयुक्त प्रणाली का प्रयोग कर छात्रों को रचना करने में प्रशिक्षित किया जा सकता है। किसी भी प्रणाली का प्रयोग करते समय इस बात का ध्यान अवश्य रखा जाए कि मौखिक रचना लिखित रचना का आधार है। अत: लिखित रचना कराने से पहले छात्रों को मौखिक रूप से विचारों को अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदापन किया जाए, तभी छात्रों की रचनात्मक योग्यता का विकास उचित रूप से हो सकेगा। छात्रों में स्वतन्त्र अभिव्यक्ति की योग्यता विकसित करने के लिए अध्यापक ऊपर लिखित किसी भी रचना-शिक्षण प्रणाली का प्रयोग कर सकता है। ये शिक्षण-प्रणालियाँ रचनात्मक योग्यता को विकसित करने के लिए साधन हैं, साध्य नहीं हैं।

रचना में मौलिकता कैसे लाई जाए ?
(How to bring Originality in the Composition?)

रचना-शिक्षण का उद्देश्य एक ओर तो छात्रों को शब्दों, सूक्यिों, मुहावरों एवं लोकोक्तियों का उचित प्रयोग करते हुए, अपने भावों एवं विचारों को उचित रूप से अभिव्यक्त करने के योग्य बनाना है तो दूसरी तरफ उन्हें अपने विचारों को क्रमबद्ध रूप से, व्यावहारिक भाषा का प्रयोग करते हुए, मौलिक चिंतन एवं मौलिक अभिव्यक्त की क्रिया में प्रशिक्षित करना है। मौलिक चिंतन एवं मौलिक अभिव्यक्ति ही साहित्य के भंडार में वृद्धि करने का एकमात्र है। छात्रों की अभिव्यक्ति में मौलिकता लाने के लिए निम्नलिखित उपाय अपनाये जा सकते हैं :

1. छात्रों की अभिव्यक्ति में मौलिकता लाने के लिए सबसे पहले तो छात्रों में अभिव्यक्ति के लिए आत्मविश्वास पैदा करना चाहिए। उसके मन से भय, हिचक या संकोच की भावना को दूर करने के लिए अध्यापक को छात्रों के साथ प्रेम, सहानुभूतिपूर्ण एवं प्रोत्साहनजनक व्यवहार करना चाहिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2. कक्षा में छात्रों को लिखित कार्य करने के अधिक से अधिक अवसर दिए जाएँ।

3. छात्रों को विभिन्न घटनाओं, दृश्यों, वस्तुओं आदि का निरीक्षण करने, कल्पना करने और विचार करने के अधिक से अधिक अवसर प्रदान किए जाएँ।

4. छात्रों की स्वाध्याय में रुचि जाग्रत की जाए। उन्हें अध्ययन, चिंतन, मनन एवं अभिव्यक्ति के अधिक से अधिक अवसर दिए जाएँ।

5. छात्रों को अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतन्त्रता दी जाए।

6. छात्रों केम सम्मुख विभिन्न लेखन-शैलियों के उदाहरण प्रस्तुत किए जाएँ और उन्हें अपनी रुचि के अनुसार किसी भी शैली का चयन करने की स्वतन्त्रता दी जाए।

7. छात्रों को अपनी बात अपने ढंग से कहने की पूरी-पूरी छूट होनी चाहिए।

8. समय-समय पर विभिन्न प्रकार की कहानी, निबंध, कविता आदि लेखन संबंधी प्रतियोगिता आयोजित कर छात्रों में रचना के प्रति रुचि जाग्रत करनी चाहिए।

9. विद्यालय-पत्रिका का आयोजन भी मौलिक रचना का एक अच्छा अवसर प्रदान करता है।

10. रचना-कार्य कराने से पहले विचार-विमर्श, वाद-विवाद आदि के द्वारा छात्रों को मौलिक अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करना चाहिए। बाद में इसी अभिव्यक्ति के आधार पर लिखित रचना कराई जा सकती है।

इस प्रकार से कक्षा में उचित वातावरण का निर्माण कर तथा मौलिक अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान कर अध्यापक छात्रों की रचना में मौलिकता लाने में सफलता प्राप्त कर सकता है।

रचना-शिक्षण को रुचिकर कैसे बनाय जाए ?
(How to inculcate interest in the Composition?)

छात्रों को अपने भावों एवं विचारों को सर्वमान्य भाषा का प्रयोग करते हुए मौखिक एवं लिखित रूप से अभिव्यक्त करने के योग्य बनाना भाषा-शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के बिना छात्रों का भाषा पर पूर्ण अधिकार नहीं हो सकता है। इस उद्देश्य की प्राप्ति रचना-शिक्षण की विभिन्न प्रणालियों का प्रयोग करता है, परंतु इन प्रणालियों का प्रयोग करते हुए छात्रों का ध्यान रचना की तरफ आकर्षित करने के लिए अध्यापक को अपने रचना-शिक्षण को सार्थक, उद्देश्यपूर्ण, प्रभावशाली तथा रुचिकर बनाने का प्रयास भी करना चाहिए। इसके लिए शिक्षक निम्न उपाय अपना सकता है :

1. रचना का विषय छात्रों के मानकिस स्तर के अनुकूल हो। छोटी कक्षाओं में रचना का विषय बालकों की पाठ्यपुस्तक से संबंधित हो। बच्चों के प्रत्यक्ष अनुभवों से संबंधित विषय उनकी रुचि के अनुकूल होते हैं अत: रचना के लिए ऐसे ही विषयों का चुनाव किया जाए। प्राथमिक स्तर पर मेले, रेलवे स्टेशन, घर-परिवार आदि पर निबंध, माता-पिता, भाई आदि को पुत्र, प्रधानध्यापक को अवकाश माँगने के लिए प्रार्थना-पत्र, छोटी वर्णनात्मक कहानी, महापुरुष का जीवन-चरित्र आदि पर रचना-कार्य कराया जा सकता है।

माध्यमिक स्तर पर जीवनोपयोगी पत्र, सामाजिक तथा धार्मिक विषयों पर लेख, समारोहों का आँखेंदेखा वर्णन, कल्पनाप्रधान लेख, रूपरेखा के आधार पर कहानी लिखवाना आदि कार्य कराये जा सकते हैं।

इसी प्रकार उच्च माध्यमिक स्तर पर उच्चकोटि के वर्णनात्मक एवं कल्पनात्मक लेख, संक्षेपीकरण एवं विस्तरीकरण लेख, पढ़ाए गए पाठ का सार एवं भावार्थ, प्रश्नों के निबंधात्मक उत्तर आदि रचना के रूप में लिखवाए जा सकते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab-Jammu

2. प्रारंभ में रचना में बच्चों के दैनिक जीवन में प्रयुक्त होनेवाले बोलचाल के शब्दों का प्रयोग कराना चाहिए। इसी प्रकार पहले से ज्ञात शब्दों तथा मुहावरों आदि का प्रयोग कराते हुए ही रचना करानी चाहिए। नए शब्दों एवं मुहावरों का प्रयोग कम होना चाहिए।

3. रचना-शिक्षण में शिक्षण-सूत्रों का ध्यान रखना चाहिए। जैसे—ज्ञात से अज्ञात की ओर, सरल से कठिन की ओर, मूर्त से अमूर्त की ओर, पूर्ण से अंश की ओर आदि। अर्थात छात्रों से प्रारंभ में छोटे-छोटे सरल वाक्य लिखवाने चाहिए फिर लम्बे-लम्बे मिश्रित वाक्य। शुरु से ज्ञात विषयों पर रचना-कार्य कराना चाहिए फिर धीरे-धीरे कल्पनात्मक, विचारात्मक, आलोचनात्मक आदि विषयों पर लेखन-कार्य कराना चाहिए। प्रारम्भ में रचना का आकार छोटा होना चाहिए। धीरे-धीरे लंबी रचना करानी चाहिए।

4. रचना कराने से पहले छात्रों में स्वाध्याय की प्रवृत्ति विकसित करनी चाहिए, क्योंकि अध्ययन से ही विचारों को संग्रह होता है और अभिव्यक्ति में पूर्णता आती है।

5. लिखित रचना कराने से पहले कक्षा में मौखिक रचना करानी चाहिए। मौखिक रचना ही लिखित रचना का आधार है।

6. रचना-शिक्षण करते समय छात्रों को अधिक से अधिक सक्रिय रखने का प्रयास करना चाहिए।

7. दृश्य-श्रव्य सामग्री के प्रयोग से रचना को आकर्षक, सजीव व सरस बनाने का प्रयास करना चाहिए।

8. अध्यापक की रचना-कार्य में रुचि होनी चाहिए। रुचि के साथ-साथ रचना-कार्य में अध्यापक की प्रवीणता भी होनी चाहिए। तभी वह छात्रों को रचना-कार्य के लिए प्रेरित कर सकेगा।

9. रचना-कार्य में छात्रों की रुचि जाग्रत करने के लिए विद्यालय में समय-समय पर मौखिक रचना एवं लिखित रचना में संबंधित क्रियाओं की प्रतियोगिताएँ आयोजित करनी चाहिए।

10. विद्यार्थी जो भी रचना करे, उसका संशोधन अध्यापक को सावधानलीपूर्वक करना चाहिए। छात्रों की भाषा एवं व्याकरण सम्मत अशुद्धियों को दूर अपने के लिए ध्यानपूर्वक लेखन-कार्य की जाँच करनी चाहिए। जाँच करते समय छात्रों को हतोत्साहित नहीं करना चाहिए।

रचना की शिक्षा देते समय ऊपर वर्णित सभी बातों को ध्यान में रखने से रचना को उद्देश्यपूर्ण, प्रभावशाली और रोचक बनाया जा सकता है।

अच्छी रचना के लिए अपेक्षित गुण एवं विशेषताएँ
(Characteristics of a Good Composition)

रचना-शिक्षण का मुख उद्देश्य छात्रों को अपने भाव एवं विचारों को अभिव्यक्ति करने में कुशल बनाना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अध्यापक छात्रों को रचना-कार्य की शिक्षा देते हैं। रचना-शिक्षण करते समय अध्यापक को यह ध्यान रखना चाहिए कि बच्चों को रचना के बारे में जो भी अभ्यास कराया जाए वह रचना के गुणों की दृष्टि से ठीक हो। इसके लिए उसे एक अच्छी रचना के गुणों की जानकारी होनी चाहिए। एक अच्छी रचना की निम्न विशेषताएँ हैं :

1. लिखित रचना में लेख स्वच्छ तथा सुंदर चाहिए। अक्षरों की बनावट सुडौल होनी चाहिए। वाक्य सीधी पंक्तियों में लिखे जाने चाहिए।

2. रचना से जिन शब्दों का प्रयोग किया जाए वे वर्तनी आदि की दृष्टि से शुद्ध हों।

3. रचना में वाक्य-विन्यास ठीक होना चाहिए। वाक्यों में शब्दों को प्रयोग उचित स्थान पर हो। अनावश्यक रूप से शब्दों की आवृत्ति न की जाए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4. रचना में विराम-चिह्नों का उचित प्रयोग हो।

5. रचना में अनावश्यक और निरर्थक शब्दों का प्रयोग न हो।

6. रचना में विभक्तियों का अव्यवस्थित प्रयोग न हो।

7. रचना में बोलचाल के शब्दों का प्रयोग किया जाए।

8. रचना की भाषा सीधी-सादी, सरल, सुबोध तथा विषय के अनुकूल हो।

9. रचना का आकार न बहुत छोटा हो, न बहुत लंबा।

10. रचना में अप्रासंगिक बातों को स्थान न दिया जाए। इस बात का ध्यान रखा जाए कि लिखते समय छात्र विषय से बँधे रहें।

11. रचना में सभी भाव एवं विचार उचित रूप से क्रमानुसार व्यक्त किए जाएँ।

12. रचना को भिन्न-भिन्न अनुच्छेदों में विभाजित करना चाहिए। एक अनुच्छेद में एक ही भाव होना चाहिए।

13. रचना में विचारों को पूर्णता के साथ स्पष्ट रूप से व्यक्त किया जाए।

14. रचना में विचारों का विरोधाभाव न हो अर्थात एक ही रचना में एक स्थान पर एक विचार का समर्थन और दूसरे स्थान पर उसी का विरोध अनुचित है।

रचना में होनेवाली अशुद्धियाँ (Composition Errors)

जब अध्यापक छात्रों के द्वारा की गई लिखित रचना की जाँच करते हैं तो उन्हें मुख्यतः निम्न प्रकार की अशुद्धियाँ देखने को मिलती हैं :

1. अक्षरों की अशुद्ध बनावट अर्थात रचना में प्रयुक्त वर्णों में सुडौलता का अभाव होता है।

2. छात्रों का लेख खराब एवं गंदा होता है।

3. किसी-किसी रचना में बिना प्रयोजन ही शब्दों को दोहरा दिया जाता है। इसे शाब्दिक द्विरुक्ति दोष कहा जाता है। जैसे—''श्याम अभी तक वापिस नहीं लौटा''। इस वाक्य में वापिस शब्द की कोई आवश्यकता नहीं क्योंकि लौटा शब्द प्रयोजन को पूरा करता है। इसे शब्दों का निरर्थक प्रयोग भी कहते हैं।

4. बच्चे प्रायः रचना करते समय अक्षर-विन्यास की त्रुटियाँ करते हैं!

5. कई बार शब्दों का प्रयोग इस प्रकार कर दिया जाता है कि लेखक का भाव तो कुछ और होता है और पाठक कुछ और समझता है।

6. शब्दों, मुहावरों एवं लोकोक्तियों का अशुद्ध प्रयोग।

7. वाक्यों की अशुद्ध रचना—इससे भाव स्पष्ट नहीं हो पाते हैं।

8. व्याकरण संबंधी अशुद्धियाँ (वचन, लिंग, क्रिया, काल आदि की)।

9. विराम-चिह्नों का अशुद्ध प्रयोग।

10. भावों तथा विचारों की अस्पष्टता।

11. विचारों में क्रमबद्धता का अभाव।

12. रचना में अनावश्यक एवं अप्रासंगिक विचारों का समावेश।

13. रचना का उचित अनुच्छेदों में विभाजित न होना।

14. रचना के विचारों में विरोधाभास।

रचना-संबंधी अशुद्धियों के कारण (Causes of Composition Errors)—लिखित

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
रचना-संबंधी उपर्युक्त अशुद्धियों को दूर करने के लिए हमें यह पता लगाना आवश्यक है कि बच्चे रचना में ये त्रुटियाँ क्यों करते हैं ? रचना की त्रुटियों के निम्न कारण हो सकते हैं :

1. **रचना करने में अतिशीघ्रता**—बहुत जल्दी-जल्दी लिखने से छात्रों का लेख खराब हो जाता है। मात्राएँ आदि छूट जाती हैं। कभी-कभी विराम-चिह्न आदि भी लगाने से रह जाते हैं।

2. **रचना करते समय असावधानी**—असावधानी अशुद्धियों की जननी है। लिखित कार्य करते समय सावधान न होने से अनेक त्रुटियाँ हो जाती हैं।

3. **भाषा एवं व्याकरण संबंधी अज्ञानता**—यदि छात्रों को भाषा का पूर्ण ज्ञान या व्याकरण के नियमों की पूर्ण जानकारी नहीं है तब भी रचना में विभिन्न प्रकार की त्रुटियाँ होती है।

4. अध्यापक ने छात्रों को रचना के बारे में जो भी निर्देश दिए हैं यदि उनके बारे में कोई शंका हो जाए तो निर्देशों में अस्पष्टता के कारण भी त्रुटियाँ हो जाती है।

5. **स्वाध्याय का अभाव**—स्वाध्याय से ही छात्रों में विचारों की पूर्णता व स्पष्टता आती है और यदि छात्रों में स्वाध्याय की आदत नहीं होती हैं तो उनकी रचना में विचारों संबंधी अनेक दोष आ जाते हैं।

6. **मौखिक रचना का अभाव**—मौखिक रचना लिखित रचना का आधार है। लिखित रचना से पहले मौखिक रचना न होने पर भी विषय एवं विचारों संबंधी त्रुटियाँ रचना में आ जाती हैं।

7. **अध्यापक की रचना में अरुचि**—यदि अध्यापक की स्वयं रचना में रुचि नहीं होती है तो वह छात्रों की रुचि भी रचना-कार्य में नहीं बना पाता है। परिणामस्वरूप रचना करते समय छात्रों का मन न होने के कारण अशुद्धियाँ हो जाती हैं।

8. **संशोधन कार्य का अभाव**—लिखित कार्य का संशोधन ठीक से न होने के कारण छात्र अपनी अशुद्धियों को नहीं जान पाते हैं और रचना करत समय उन्हें दोहराते रहते हैं।

9. **लेखन-कार्य एवं गृह-कार्य का अभाव**—छात्रों को कक्षा में लिखित कार्य एवं गृह-कार्य न दिए जाने के कारण लिखने का अभ्यास नहीं हो पाता है और अभ्यास के अभाव में अनेक त्रुटियाँ होती रहती हैं।

लिखित रचना का संशोधन या लिखित रचना में होनेवाली अशुद्धियों को दूर करने के उपाय (Correction of Written Composition)

रचना-शिक्षण करते समय हम चाहे जितना भी रचना-कार्य क्यों न करा दें परंतु उसमें होनेवाली अशुद्धियों के सुधार के अभाव में उस रचना-कार्य का कोई भी लाभ नहीं। अत: रचना में होनेवाली अशुद्धियों को दूर करने के लिए अध्यापक को बहुत ही सावधानी की आवश्यकता है। बच्चों की रचना-संबंधी अशुद्धियों को दूर करने के लिए अध्यापक को बहुत ही सावधानी की आवश्यकता है। बच्चों की रचना-संबंधी अशुद्धियों को दूर करने के लिए अध्यापक निम्न उपाय काम में ला सकता है :

1. लिखित रचना के संशोधन पर विशेष ध्यान देना चाहिए। रचना की अशुद्धियों को कक्षा में बच्चों के सामने ही ठीक करना चाहिए, जिन अशुद्धियों को प्राय: सभी बच्चे करते हैं उन्हें सामूहिक रूप से श्यामपट्ट का प्रयोग करके ठीक कराया जाए और जो अशुद्धियाँ किसी-किसी छात्र द्वारा की गई हैं उन्हें छात्रों को व्यक्तिगत रूप से समझाकर शुद्ध कराया जाए।

2. वैसे तो लिखित रचना का संशोधन करना एक कठिन कार्य है क्योंकि एक अध्यापक तीन, चार या इससे भी अधिक कक्षाओं को पढ़ाता है और इन सबके रचना-कार्य के संशोधन के लिए समय निकालना कठिन है, फिर भी अध्यापक को विद्यालय में और यदि विद्यालय में समयाभाव हो तो घर पर यह कार्य संपन्न करना चाहिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3. बच्चों को लिखित कार्य करने का अधिक से अधिक अवसर देना चाहिए जिससे बच्चों को लिखने का अभ्यास हो।

4. छात्रों में सावधानी से लिखने की आदत विकसित करनी चाहिए।

5. लिखित रचना कराने से पहले मौखिक रचना अवश्य करानी चाहिए। मौखिक रचना की त्रुटियों को उसी समय दूर कर देना चाहिए। इससे लिखित रचना में कम अशुद्धियाँ होंगी।

6. अशुद्धियाँ कम हों, इसके लिए लिखित रचना कराने से पहले ही सामान्य अशुद्धियों को कक्षा में स्पष्ट कर देना चाहिए।

7. जो छात्र अधिक अशुद्धियाँ करते हों उन पर व्यक्तिगत ध्यान देना चाहिए।

8. छात्रों के प्रति अध्यापक का व्यवहार सहानुभूतिपूर्ण होना चाहिए। उसे झुँझलाना नहीं चाहिए। बच्चों की पूरी रचना को नहीं काटना चाहिए।

9. छात्रों की अशुद्धियों को धीरे-धीरे धैर्य के साथ दूर करने के प्रयास करना चाहिए।

10. अशुद्धियों को ठीक कराने के उपरांत परीक्षण करते रहना चाहिए कि छात्र वही अशुद्धि दोबारा तो नहीं कर रहा है।

11. जाँच-कार्य की प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए अध्यापक को संशोधन करने के लिए अशुद्धियों से संबंधित कुछ संकेत-चिह्न बना लेने चाहिए और इस संकेत-चिह्नों को छात्रों को भी समझा देना चाहिए जिससे रचना-पुस्तिका में कोई भी संकेत-चिह्न लगाए जाने पर वे पहचान लें कि उनकी रचना में किस प्रकार की अशुद्धि हुई है। ये संकेत-चिह्न निम्न प्रकार के हो सकते हैं :

वर्तनी अशुद्धि के लिए—व

व्याकरण की अशुद्धि के लिए—व्या

विराम-चिह्न की अशुद्धि के लिए—वि

निरर्थक शब्द-प्रयोग की अशुद्धि के लिए—नि

अप्रासंगिक बातों के समावेश के लिए—अ

अस्पष्टता के लिए— ?

भाषा की अशुद्धि के लिए—भा

वाक्य में कुछ छूटने के लिए— ^

अनावश्यक शब्द या बात के लिए—×

छात्रों की अशुद्धियों को बताने के उपरांत तुरंत ही उनका शुद्ध प्रयोग करवाना चाहिए। भूल का सुधार तुरंत हो जाने से बच्चों को याद बनी रहती है।

12. संशोधन-कार्य कक्षा के बच्चों के मानसिक स्तर और आवश्यकता के अनुसार करना चाहिए।

13. छात्रों की अशुद्धियों को दूर करवाने के पश्चात विधिवत रूप से अभ्यास-कार्य कराना चाहिए। अभ्यास से बहुत-सी अशुद्धियाँ स्वतः ही दूर हो जाती हैं।

14. लापरवाह छात्रों का पता लगाकर उन पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

इस प्रकार से अध्यापक को धीरे-धीरे सावधानी के साथ छात्रों की रचना-संबंधी अशुद्धियों को दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

कहानी-रचना-शिक्षण कहानी-शिक्षण से किस प्रकार भिन्न है ?
(How Teaching of Story Composition differ with Story Teaching?)

कहानी गद्ध साहित्य की एक प्रमुख विधा है। इसका प्रमुख उद्देश्य बच्चों का मनोरंजन करना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और उन्हें आनंद प्रदान करना है। उद्देश्य के साथ-साथ कहानी बच्चों को जीवन के विभिन्न पक्षों से परिचित कराकर जीवनोपयोगी शिक्षा भी प्रदान करती है। भाषा में कहानी का शिक्षण या लिखित कहानी का मौखिक शिक्षण दो रूपों में होता है—एक तो किसी लेखक द्वारा लिखित कहानी का मौखिक शिक्षण या लिखित शिक्षण, दूसरे, छात्रों को स्वयं कहानी की रचना करने का शिक्षण। इन दोनों रूपों के शिक्षण में बहुत भिन्नता है, इसे निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है :

1. कहानी-शिक्षण में अध्यापक या तो पाठ्यपुस्तक में से पढ़कर कहानी की शिक्षा देता है या मौखिक रूप से स्वयं कहानी सुनाकर छात्रों को कहानी शिक्षा देता है। परंतु कहानी-रचना-शिक्षण में छात्रों को स्वयं कहानी लिखने का अभ्यास कराया जाता है।

2. कहानी-शिक्षण में कहानी के वाचन पर अधिक जोर दिया जाता है या कहानी कहने और सुनने पर, परंतु कहानी रचना-शिक्षण में कहानी लिखने का अभ्यास कराया जाता है।

3. कहानी-शिक्षण का उद्देश्य अभिव्यक्ति की योग्यता का विकास है, परंतु कहानी-रचना-शिक्षण में छात्र स्वयं कहानी की रचना करते हैं।

4. कहानी-शिक्षण में छात्र पूर्वलिखित या वर्णित कहानी को सुनते और कहते हैं, परंतु कहानी-रचना-शिक्षण में छात्र स्वयं कहानी की रचना करते हैं।

5. कहानी-शिक्षण में छात्र कहानी सुनकर कहानी से संबंधित प्रश्नों का उत्तर देते हैं, परंतु कहानी-रचना-शिक्षण में चित्र, रूपरेखा आदि की सहायता से कल्पना का प्रयोग करके एक नई कहानी की रचना करते हैं।

कहानी-रचना-शिक्षण की विधि एवं संपान

(Methods and steps involved in the teaching of story Composition)

कहानी-रचना-शिक्षण के लिए अध्यापक निम्न शिक्षण-विधियों का प्रयोग कर सकता है :

1. चित्र-वर्णन प्रणाली
2. भाषा यन्त्र प्रणाली
3. प्रश्नोत्तर प्रणाली
4. रूपरेखा प्रणाली

(इन सभी प्रणालियों का विस्तृत वर्णन इसी अध्याय के अन्तर्गत किया जा चुका है।)

इन्हीं विधियों में से किसी एक से एक से अधिक विधियों के मिश्रित प्रयोग से निम्न सोपानां का पालन करते हुए कहानी-रचना की शिक्षा दी जा सकती है :

1. प्रस्तावना—अनुमानित पूर्वज्ञान एवं पूर्वज्ञान परीक्षा
2. उद्देश्य—कथन
3. प्रस्तुतीकरण
4. मौखिक अभिव्यक्ति
5. लिखित अभिव्यक्ति
6. कक्षा-कार्य एवं निरीक्षण
7. गृह-कार्य

यहाँ इन्हीं सोपानों के आधार पर चित्र-वर्णन एवं प्रश्नोत्तर विधि का प्रयोग करते हुए एक कहानी-रचना की पाठ-योजना प्रस्तुत की जा रही है :

Aagamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पाठ-योजना

छात्राध्यापक का अनुक्रमांक.......... **कक्षा**—छठी

विषय—हिंदी (कहानी-रचना) **अवधि**—30 मिनट

उपविषय—बगुला और केकड़ा दिनांक.............

अनुदेशनात्मक-उद्देश्य

1. छात्र सरोवर, ग्रीष्म, केकड़ा आदि शब्दों का प्रयोग अपने वाक्यों में करते हैं।
2. छात्र वाक्य-रचना करने का अभ्यास करते हैं।
3. छात्र प्रश्नों का उत्तर देते हैं।
4. छात्र व्याकरण सम्मत शुद्ध भाषा का प्रयोग करते हैं।
5. छात्र कहानी कहने एवं लिखने का अभ्यास करते हैं।
6. छात्रों में दूसरों से सावधान रहने एवं विपत्ति में हिम्मत से काम लेने की अभिवृत्ति का विकास होता है।

अनुदेशनात्मक सामग्री

1. बगुला एवं केकड़े का मॉडल।
2. कहानी से संबंधित कुछ चार्ट।

ये निम्न स्थितियाँ प्रदर्शित करते हों।

चार्ट नं. 1—एक तालाब, तालाब में मछलियाँ व उसके किनारे बैठा बगुला।

चार्ट नं. 2—तालाब, उसके किनारे पेड़ पर बैठा बगुला, उसके मुँह में मछली।

चार्ट नं. 3—उड़ते हुए बगुले का चार्ट, बगुले की गर्दन को केकड़े ने पकड़ा हुआ है और नीचे कुछ हड्डियाँ पड़ी हैं।

चार्ट नं. 4—जमीन पर बगुला पड़ा है, पास में सरोवर व पेड़ है, केकड़ा सरोवर की तरफ जा रहा है।

प्रारम्भिक व्यवहार—छात्रों ने बगुले व केकड़े का नाम सुना है। वे सरल प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं।

प्रस्तावना—छात्राध्यापक पाठ की प्रस्तावना करने के लिए बच्चों से निम्न प्रश्न पूछेगा और बच्चे उत्तर देंगे—

1. (बगुले का मॉडल दिखाते हुए) यह किस पक्षी का मॉडल है?
2. बगुला प्राय: कहाँ रहता है?
3. यह क्या खाता है?
4. (केकड़े का मॉडल दिखाते हुए) यह किस जीव का मॉडल है?
5. केकड़ा कहाँ रहता है?

उद्देश्य-कथन—छात्राध्यापक अपने उपविषय की घोषणा करेगा—बच्चों, बगुला एक बहुत ही चालाक जलचर होता है। वह बहुत चालाकी से मछलियों को मारकर खा जाता है। आज हम एक कहानी की रचना करेंगे जिसमें बताया गया है कि बगुले की चालाकी का क्या परिणाम हुआ।

प्रस्तुतीकरण—कहानी की रचना के लिए चित्र वर्णन प्रणाली एवं प्रश्नोत्तर प्रणाली की सहायता ली जाएगी। साथ-साथ अध्यापक श्यामपट्ट पर कहानी की संक्षिप्त रूपरेखा भी देता जाएगा। अन्त में छात्रों से मौखिक चित्र वर्णन एवं रूपरेखा के आधार पर कहानी स्वयं लिखने को कहा जाएगा।

(चार्ट नं. 1 प्रदर्शित करते हुए, बच्चों से प्रश्न पूछे जाएँगे। बच्चे उत्तर देंगे।)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रश्न—1. (सरोवर की ओर संकेत करते हुए) चार्ट में यह क्या दिखाई दे रहा है ? (तालाब)

2. (सरोवर में मछलियाँ को दिखाते हुए) तालाब में ये कौनसे जीव दिखाई दे रहे हैं ? (मछलियाँ)

3. (बगुला दिखाते हुए) तालाब के किनारे यह कौन बैठा है ? (बगुला)

4. बगुला अपना पेट कैसे भरता है ? (पानी के कीड़े- मकीड़े खाकर)

छात्राध्यापक द्वारा पूर्तिकथन—(बच्चे ध्यान से सुनेंगे) बहुत समय पहले एक जंगल में एक सरोवर था। उस सरोवर में बहुत पानी भरा रहता था। उसमें बहुत सी मछलियाँ रहती थीं। वहीं सरोवर के किनारे एक बगुला भी रहता था। वह हर समय मछलियों को खाने की ताक में रहता, परंतु अपने प्रयत्न में सफल न हो पाता। एक बार ग्रीष्म ऋतु में गर्मी के कारण सरोवर का जल सूखने लगा। बगुले ने मछलियों को खाने का उपाय सोचा। वह उदास मन होकर सरोवर के किनारे बैठा गया। मछलियों ने उसकी उदासी का कारण पूछाद्ध बगुले ने कहा कि यह सरोवर सूखता जा रहा है। पानी खत्म होने से तुम सब मर जाओगी। पास ही में एक दूसरा सरोवर है। उसमें बहुत जल है। मैं तुम्हें उसमें ले जाना चाहता हूँ। बगुले की यह बात सुनकर मछलियाँ दूसरे सरोवर में जाने को तैयार हो गई।

(चार्ट नं. 2 प्रदर्शित करते हुए) बच्चों से निम्न प्रश्न पूछे जाएँगे : (बच्चे उत्तर देंगे।)

प्रश्न—1. (तालाब तथा पेड़ दिखाते हुए) ये क्या दिखाई दे रहे हैं ? (तालाब व पेड़)

2. पेड़ के ऊपर कौन बैठा है ? (बगुले की ओर सकेंत करते हुए)

3. बगुले की चोंच में क्या दबा है ?

छात्राध्यापक द्वारा पूर्तिकथन—(बच्चे ध्यान से सुनेंगे) जब मछलियाँ दूसरे सरोवर में जाने को तैयार हो गई तो बगुला प्रतिदिन एक-एक करके मछलियों को ले जाता और पेड़ पर बैठकर उनको खा जाता। इस प्रकार उसने सभी मछलियों को खा लिया। वह मछलियों की हड्डियाँ व काँटे पेड़ के नीचे जमीन पर डाल देता।

(चार्ट नं. 3 प्रदर्शित करते हुए) छात्रों से निम्न प्रश्न पूछे जाएँगे (बच्चे प्रश्नों के उत्तर देंगे)

प्रश्न—1. (उड़ते हुए बगुले की ओर संकेत करते हुए) बगुला क्या कर रहा है ?

2. बगुले की गर्दन को किसने पकड़ा हुआ है ?

3. केकड़े ने बगुले की गर्दन को क्यों पकड़ रखा है ?

4. यह नीचे क्या पड़ा हुआ है ?

छात्राध्यापक द्वारा पूर्तिकथन—(बच्चे ध्यान से सुनेंगे) जब बगुले ने सारी मछलियाँ खा लीं तो सरोवर में केवल एक केकड़ा बच गया। बगुले ने सोचा इस केकड़े को भी खा लूँ। अत: वह केकड़े से बोला—केकड़े भाई, सारी मछलियाँ तो दूसरे सरोवर में पहुँच गई हैं, आओ, तुम्हें भी वहीं ले चलूँ। केकड़ा मान गया और उसने बगुले की गर्दन पकड़ ली। बगुला केकड़े को लेकर उड़ चला। थोड़ी दूर उड़ने के बाद केकड़े ने नीचे जमीन पर कुछ हड्डियाँ पड़ी देखीं तो बगुले से उनके बारे में पूछा। बगुला बोला—मैं सब मछलियाँ खा चुका हूँ। ये उन्हीं की हड्डियाँ हैं। अब मैं तुम्हें भी खाऊँगा।

(चार्ट नं. 4 प्रदर्शित करते हुए) छात्राध्यापक बच्चों से निम्न प्रश्न पूछेगा और बच्चे उत्तर देंगे।

प्रश्न—1. (सरोवर व पेड़ की ओर संकेत करते हुए) चार्ट में यह क्या दिखाई दे रहा है ? **(सरोवर व पेड़)**

2. (जमीन पर बगुला दिखाते हुए) जमीन पर यह कौन पड़ा है ? (बगुला)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3. (सरोवर की तरफ जाते हुए केकड़े की ओर संकेत करते हुए) यह कौन है ? (केकड़ा)

4. बगुला नीचे कैसे गिरा ? (केकड़े के द्वारा गर्दन दबाए जाने से)

छात्राध्यापक द्वारा पूर्तिकथन—(बच्चे ध्यान से सुनेंगे) बगुले की बात सुनकर केकड़ा एकदम से घबड़ा गया परंतु उसने हिम्मत नहीं हारी। एक क्षण सोचा और अपने दाँतों से बगुले की गर्दन दबा दी। कष्ट के मारे बगुला नीचे गिर पड़ा। नीचे गिरते ही केकड़ा सरोवर में चला गया।

प्रश्न—1. बच्चों, इस कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है ? (विपत्ति में हिम्मत नहीं हारनी चाहिए।)

मौखिक अभिव्यक्ति—बच्चों से कहानी अपने शब्दों में सुनाने को कहा जाएगा और साथ-साथ मौखिक अभिव्यक्ति-संबंधी अशुद्धियों को दूर किया जाएगा।

लिखित अभिव्यक्ति—बच्चों से कहानी अपनी-अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखने को कहा जाएगा।

कक्षा-कार्य एवं निरीक्षण—छात्र अपनी-अपनी कापी में कहानी लिखेंगे और छात्राध्यापक कक्षा का निरीक्षण करेगा कि सभी बच्चे अपना-अपना कार्य ठीक से कर रहे हैं।

गृह-कार्य—बच्चों से पूरी कहानी घर से लिखकर लाने को कहा जाएगा।

श्यामपट्ट-कार्य—पाठ के विकास के लिए छात्रों से पूछे गए प्रश्नों के उत्तरों को संक्षेप में रूपरेखा के रूप में श्यामपट्ट पर लिखा जाएगा।

निबंध-रचना-शिक्षण
(Teaching Essay Compostion)

निबंध का अर्थ (Meaning of the term Essay)—निबंध शब्द दो शब्दों से मिलकर बना—नि + बंध अर्थात भली प्रकार से बँधा हुआ। इस प्रकार निबंध गद्य साहितय की वह विधा है जिसमें भावों व विचारों को उचित क्रम में, सर्वमान्य भाषा का प्रयोग करते हुए, व्यक्त किया जाता है। यदि गद्य कवियों की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी है। निबंध कई प्रकार के होते हैं—वर्णनात्मक, विवरणात्मक, विचारात्मक तथा भावात्मक।

निबंध की भाषा व्याकरणसम्मत होनी चाहिए। वाक्य सरल व गठन की दृष्टि से शुद्ध होने चाहिए। विचारों में क्रमबद्धता होनी चाहिए। वाक्य एक-दूसरे से जुड़े होने चाहिए। तथ्यों, भावों व घटनाओं में स्पष्टता होनी चाहिए।

निबंध के तीन भाग या अंग होते हैं (Parts or Components of an Essay)

(i) **भूमिका या प्रस्तावना**— इस भाग में पाठक को विषय का परिचय देकर विषय की ओर आकर्षित किया जाता है।

(ii) **विषय-प्रसार या मध्य भाग**—यह निबंध का मूल भाग है। इस भाग में ही निबंध के सभी विचारों का स्पष्टीकरण किया जाता है।

(iii) **उपसंहार**—यह निबंध का अंतिम भाग है। इसमें समस्त निबंध का सार होता है। यह स्वाभाविक, संक्षिप्त एवं संगत होना चाहिए। विषय से होनेवाले लाभ या हानि की प्रस्तुति इसी भाग में की जाती है।

निबंध-शिक्षण के उद्देश्य (Aims of Essay Teaching)—निबंध-शिक्षण के उद्देश्य रचना-शिक्षण के उद्देश्य ही हैं, जिनका वर्णन हम इसी अध्याय में पहले ही कर चुके हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निबंध-रचना की पाठ-योजना (Lesson-Planning of Essay Composition)— निबंध-शिक्षण के उद्देश्यों को पूरी तरह से प्राप्त करने के लिए जरूरी है कि निबंध की पाठ-योजना अच्छी तरह से सोच-विचारकर बनाई जाए। यहाँ पर 'वर्षाऋतु' पर एक पाठ-योजना प्रस्तुत की जा रही है। इसमें प्रश्नोत्तर एवं व्याख्या-विधि का प्रयोग किया गया है। बीच-बीच में चित्रों का प्रयोग भी किया गया है और श्यामपट्ट कार्य के रूप में रूपरेखा प्रणाली को भी अपनाया गया है।

पाठ-योजना

छात्राध्यापिका का अनुक्रमांक......... — **कक्षा**—नवीं

विषय—हिंदी (निबंध) — **समय**—30 मिनट

उपविषय—'वर्षा ऋतु' — **औसत आयु**—14+वर्ष

दिनांक............

अनुदेशनात्मक सामग्री :
1. नृत्य करते हुए मोर का चित्र
2. चारों तरफ छाई हुई हरियाली का चित्र

अनुदेशनात्मक उद्‌देश्य : पाठोपरान्त छात्र अपने शब्दों में लिखकर वर्णन करते हैं कि—
1. हमारे देश में कितनी ऋतुएँ होती हैं ?
2. वर्षा ऋतु किस मौसम के बाद आती है ?
3. वर्षा ऋतु किस मास से किस मास तक रहती है ?
4. हम वर्षा ऋतु का स्वागत कैसे करते हैं ?
5. वर्षा ऋतु आने पर प्रकृति में क्या परिवर्तन आते हैं ?
6. वर्षा का दृश्य कैसा होता है ?
7. किसानों को वर्षा से क्या लाभ होता है ?
8. वर्षा ऋतु में कौन कौन से मुख्य त्यौहार आते हैं ?
9. वर्षा ऋतु में कौन कौन सी बीमारियाँ फैलती हैं ?
10. वर्षा से बाढ़ आने का खतरा कैसे होता है ?
11. छात्र उपरोक्त तथ्यों को निबंधात्मक रूप में क्रमबद्ध रूप से उचित भाषा में लिखते हैं।

प्रारम्भिक व्यवहार : बच्चे प्रतिवर्ष वर्षा ऋतु में वर्षा का आनंद लेते हैं। वे अपनी अभिव्यक्ति में मानक भाषा का प्रयोग करते हैं।

पूर्वज्ञान-परीक्षण : या प्रस्तावना
1. भारत में कितनी ऋतुएँ आती हैं ?
2. उन ऋतुओं के नाम क्या हैं ?
3. ग्रीष्म ऋतु के बाद किस ऋतु का आगमन होता है ?

उद्‌देश्य-कथन : छात्रों से सन्तोषजनक उत्तर मिलने पर छात्राध्यापिका घोषणा करेगी कि आज हम वर्षा ऋतु पर निबंध की रचना करेंगे।

प्रस्तुतीकरण : पाठ को पढ़ाने में भाषण एवं प्रश्नोत्तर विधि का प्रयोग किया जाएगा। निबंध को तीन भागों में बाँटकर पढ़ाया जाएगा।

(1) भूमिका, (2) मध्यभाग, तथा (3) उपसंहार—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Sangeeta

शिक्षण-बिन्दु	छात्राध्यापिका क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ
भूमिका : भारत का कृषिप्रधान देश है जहाँ क्रम से छः ऋतुएँ आती हैं। वर्ष में ग्रीष्म, वर्षा, शरद, शिशिर, पतझड़, वसन्त का आगमन होता है। इनमें से वर्षा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसका कारण है कि भारत कृषिप्रधान देश है। हमारी कृषि प्रायः वर्षा पर ही निर्भर है। जिस साल वर्षा नहीं होती, उस साल अकाल पड़ जाता है। अतः वर्षा ऋतु हमारे देश के लिए जीवनदायिनी है।	भाषण विधि के द्वारा छात्राध्यापिका निबंध की भूमिका बताएगी और प्रश्न पूछेगी— भारत में कितनी ऋतुएँ आती हैं ? उन ऋतुओं के नाम बताओ। भारतीय कृषि में वर्षा का क्या महत्त्व है ? छात्राध्यापिका आवश्यक बिन्दुओं को श्यामपट्ट पर लिखेगी। छात्राध्यापिका वर्षा ऋतु से पहले के मौसम के बारे में बताएगी और प्रश्न पूछेगी।	छात्राएँ ध्यानपूर्वक सुनेंगी। छात्राएँ प्रश्नों का उत्तर देंगी।
भीषण गर्मी : ग्रीष्म में जब भगवान सूर्य उग्र रूप धारण कर लेते हैं, तब उसके प्रखर तेज से पृथ्वी अंगार बन जाती है। छाया भी छाया को ढूँढ़ने लगती है। यह भीषण गर्मी मानव को कृत्रिम साधनों का प्रयोग करने के लिए विवश कर देती है। न दिन को चैन न रात को। लोग गर्मी से व्याकुल हो जाते हैं।	बच्चो! जब मई-जून की तेज गर्मी होती है, तब आप कैसा अनुभव करते हैं ?	छात्राएँ ध्यान से सुनेंगी और प्रश्नों का उत्तर देंगी।
गर्मी से व्याकुल होकर व्यक्ति इन्द्र देवता की ओर आँखें लगाए एकटक निहारते रहते हैं। किसान अकाल के भय से चिंतित रहते हैं। जगह-जगह पर इन्द्रदेवता को प्रसंन करने के लिए गीत गाए जाते हैं : ''काले मेघा पानी दे, पानी दे गुड़धानी दे।''	विषय का समवाय करती हुई छात्राध्यापिका पूछेगी, जब आप गर्मी से परेशान हो जाते हैं, तो आपकी क्या इच्छा होती है ?	

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिक्षण-बिन्दु	छात्राध्यापिका क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ
वर्षा का आरंभ : हमारे देश में वर्षा ऋतु आषाढ़ मास से आरंभ होती है व आश्विन मास में समाप्त हो जाती है। प्रखंड ग्रीष्म में जब जल वाष्प बनकर ऊपर उठता है, तो यही जल आकाश में जाकर मेघ का रूप धारण कर लेता है। यही फिर वर्षा के रूप में जमीन पर आ जाता है।	छात्राध्यापिका वर्षा के प्रारंभ के बारे में बताएगी और प्रश्न पूछेगी : वर्षा कब आरम्भ होती है ? छात्राध्यापिका बच्चों द्वारा दिए गए उत्तरों को संक्षेप में श्यामपट्ट पर लिखेगी।	छात्राएँ ध्यानपूर्वक सुनेंगी। और प्रश्नों का उत्तर देंगी।
वर्षा का स्वागत : वर्षा आने पर लोग उसका स्वागत करते हैं तथा अभिनन्दन के गीत गाते हैं। जब मेघ पृथ्वी पर बरस पड़ता है, तो चारों ओर हर्ष की लहर दौड़ जाती है। क्या मनुष्य, क्या पशु-पक्षी, सभी वर्षा का सहर्ष स्वागत करते हैं। बच्चे वर्षा में नहाकर खुश होते हैं। पक्षीराज मयूर आकाश में छाई हुई काली घटाओं को देखकर नृत्य करने लगता है। अपनी सुध-बुध भूलकर नृत्य में मग्न हो जाता है। संसार को तपाने वाली लुएँ न जाने कहाँ चली जाती हैं।	अध्यापिका वर्षा ऋतु के स्वागत व दृश्य के बारे में बताएगी और पूछेगी— बच्चो! आप वर्षा का स्वागत कैसे करते हैं ? नृत्यु करते हुए मोर का चित्र दिखाकर पूछा जाएगा कि बच्चो बताओ! मोर इतना मग्न होकर क्यो नाच रहा है ? जब वर्षा ऋतु आती है तो कैसा दृश्य होता है ?	बच्चे ध्यान से सुनेंगे और प्रश्न का उत्तर देंगे। बच्चे चित्र देखेंगे और प्रश्न का उत्तर देंगे। छात्राएँ ध्यानपूर्वक सुनेंगी और प्रश्न का उत्तर देंगी।
सुंदर दृश्य : वर्षा का दृश्य मनमोहक होता है। आकाश में काले-काले मेघ छा जाते हैं। उस समय ऐसा लगता है—मानो बड़े-बड़े पर्वत	भाषण विधि का प्रयोग करते हुए छात्राध्यापिका वर्षा के सुंदर दृश्य का वर्णन करेगी।	छात्राएँ ध्यानपूर्वक सुनेंगी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिक्षण-बिन्दु	छात्राध्यापिका क्रियाएं	छात्र क्रियाएँ
हवा में उड़ रहे हों। कभी तो कभी बादल गरजते हैं, बिजली कड़कती है फिर वर्षा की झड़ी लग जाती है।		
प्रकृति में परिवर्तन और किसानों के लिए लाभदायक : वर्षा आते ही पृथ्वी का रंग बदल जाता है। सूखी हुई वनस्पति पानी मिलने पर हरी हो जाती है। चारों ओर हरियाली छा जाती हैं।	बच्चों को हरियाली का चित्र दिखाकर पूछा जाएगा कि क्या वर्षा होने पर प्रकृति में परिवर्तन होता है ?	बच्चे चित्र देखेंगे और प्रश्न का उत्तर देंगे।
कृषक वर्षा के आने पर प्रसन्न हो जाता है और खेतों में हल चलाने लगता है। पुरवैया अपना राग अलापने लगती है। पशुओं के लिए हरा चारा हो जाता है, जिसे चरकर गाएँ, भैंसे खूब दूध देती हैं। इसलिए किसानों के घरों में दूध की कमी नहीं होती। ग्वाले पशुओं को चराना छोड़कर बागों में आनंद मनाते हैं।	भाषण विधि का प्रयोग करते हुए छात्राध्यापिका वर्षा होने से प्रकृति में आए परिवर्तन और किसानों को इससे लाभ को स्पष्ट करेगी।	बच्चे ध्यानपूर्वक सुनेंगे।
तीज का त्यौहार : ऐसे ही मौसम में तीज का त्यौहार आता है। युवतियाँ रंगबिरंगे वस्त्र पहनकर झूला झूलती हैं। वे सावन का स्वागत करती हैं। कभी-कभी आकाश में इन्द्रधनुष की निराली छटा बालकों का मनोरंजन बन जाती है।	विषय का दैनिक जीवन से समवाय करते हुए छात्राध्यापिका पूछेगी कि आप तीज का त्यौहार कैसे मानते हैं ? छात्राध्यापिका वर्षा ऋतु में होनेवाली हानियों के बारे में बताएगी और पूछेगी।	छात्राएँ प्रश्न का उत्तर देंगी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिक्षण-बिन्दु	छात्राध्यापिका क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ
वर्षा से हानियाँ—		
(1) स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव : जहाँ वर्षा से अनेक लाभ हैं, वहाँ इससे हानियाँ भी हैं। गड्ढों के जल से मच्छर उत्पन्न हो जाते हैं, इससे मलेरिया आदि का प्रकोप हो जाता है। ऐसे में पाचन-क्रिया शिथिल हो जाती है। फोड़े-फुंसियाँ इस ऋतु की सौगात हैं, जिससे बहुत कम लोग बच पाते हैं।	वर्षा से स्वास्थ्य पर कैसा प्रभाव पड़ता है ? इस ऋतु में कौन-कौन-सी बीमारियाँ अधिक हो जाती हैं ? मलेरिया कैसे होता है ?	छात्राएँ ध्यानपूर्वक सुनेंगी और प्रश्नों का उत्तर देंगी।
(2) बाढ़ आने का खतरा : ज्यादा वर्षा आने पर बाढ़ का खतरा रहता है। बाढ़ से गाँव के गाँव नष्ट हो जाते हैं, मकान गिर जाते हैं, लोग बेघर हो जाते हैं, कई बार तो लोगों को जान से भी हाथ धोना पड़ता है।	नदियों में बाढ़ क्यों आती है ? भाषण विधि का प्रयोग करते हुए छात्राध्यापिका वर्षा से आने वाली बाढ़ और उसके परिणाम बताएगी।	
उपसंहार : इन हानियों के होते हुए भी वर्षा मानवजीवन के लिए वरदान है। इन सब बातों को देखने हुए यह मानना पड़ता है कि वसन्त ऋतुओं का राजा है तो वर्षा ऋतुओं की रानी है।	वर्षा वरदान है या अभिशाप ? पाठ के विकास के साथ-साथ अध्यापिका छात्रों द्वारा दिए प्रश्नों के उत्तरों को श्यामपट्ट पर संक्षेप में लिखेगी। पाठ को दोहराने के लिए छात्राध्यापिका निम्न प्रश्न पूछेगी :	छात्राएँ प्रश्नों का उत्तर देंगी।
पुनरावृत्ति प्रश्न—	1. वर्षा ऋतु कब आरम्भ होती है ? 2. वर्षा ऋतु में कौन-कौन से त्यौहार आते हैं ?	

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिक्षण-बिन्दु	छात्राध्यापिका क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ
	3. किसानों के लिए वर्षा ऋतु कैसे लाभदायक है ? 4. इससे स्वास्थ्य पर कैसा प्रभाव पड़ता है ? 5. वर्षा से बाढ़ आने का खतरा कैसे रहता है ?	
कक्षा-कार्य एवं निरीक्षण	बच्चों से श्यामपट्ट-कार्य अपनी नोट बुक में लिखने को कहा जाएगा। जब बच्चे लिख रहे होंगे तब छात्राध्यापिका कक्षा का निरीक्षण करेगी व बच्चों को आवश्यक निर्देश देगी।	छात्राएँ श्यामपट्ट कार्य को अपनी अभ्यासपुस्तिका में उतारेंगी।
गृहकार्य	बच्चों! घर से वर्षा ऋतु पर एक सुंदर-सा निबंध लिखकर लाना।	छात्राएँ घर से निबंध लिखकर लाएँगी।

पत्र-लेखन-शिक्षण
(Teaching of Writing Letters)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। सामाजिक होने के कारण वह आपस में एक-दूसरे के साथ विचारों का आदान-प्रदान करता है। अपने अनुभव एवं सुख-दुःख दूसरों के सम्मुख प्रकाशित करता है एवं दूसरों के अनुभव और सुख-दुःख को बाँटता है। मशीनीकरण एवं औद्योगिकरण ने व्यक्तियों को सुदूर स्थानों में अपने परिचितों से अलग होकर रहने को बाध्य कर दिया है। इन सुदूर स्थानो में रहनेवाले अपने परिचित मित्रों एवं संबंधियों के साथ संपर्क बनाए रखने का एक उपाय पत्र-लेखन भी है। पत्र लिखकर ही हम आपस में अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। पत्रों के द्वारा ही अपने परिचितों को किसी विशेष अवसर पर आने के लिए आमंत्रित करते हैं तो पत्र के द्वारा ही किसी कष्ट या विपत्ति की सूचना देते हैं। सामान्य जीवन के कुशल समाचार भी पत्र द्वारा प्रेषित करते हैं। अत: पत्रों का हमारे जीवन में बहुत महत्त्व है।

पत्र हमारी प्रत्यक्ष बातचीत का स्थानापन्न है अत: पत्र में भावों व विचारों की प्रस्तुति बहुत ही सरल व सुबोध रूप में होनी चाहिए। हमारे पत्र का संबंधित व्यक्ति पर सही प्रभाव तभी पड़ता है जब पत्र में विचारों को उचित भाषा-शैली में व्यक्त किया गया हो, पत्र के विचारों में सही तारतम्य हो और जिस उद्देश्य से पत्र लिखा गया है वह उद्देश्य पूरी तरह से व्यक्त हो। इसीलिए हिंदी भाषा की शिक्षा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
में पत्र-लेखन-शिक्षण का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। पत्र-लेखन भी एक कला है। अन्य भाषायी कौशलों के विकास के साथ-साथ प्राथमिक स्तर से ही बच्चों में पत्र-लेखन-कौशल का विकास किया जाना भी आवश्यक है।

पत्र-लेखन के प्रकार (Types of Letter)—सामान्य रूप से पत्र-लेखन दो प्रकार का होता है।

(क) व्यक्तिगत पत्र (ख) कार्यालय पत्र

विद्यालय में छात्रों को प्राय: व्यक्तिगत पत्रों का लिखना ही सिखाया जाता है क्योंकि कार्यालय पत्र तो विभिन्न प्रकार के सरकारी, गैर सरकारी एवं अर्ध सरकारी कार्यालयों में लिखे जाते हैं। उनका शिक्षण विद्यालय में किया जाना उचित नहीं।

व्यक्तिगत पत्र—ये पत्र निम्न प्रकार के होते हैं—

(i) पारिवारिक पत्र—इन पत्रों में अपने परिवार के सदस्यों, परिचितों, मित्रों आदि को परिवार-संबंधी बातों की सूचना दी जाती है।

(ii) सामाजिक पत्र—विभिन्न प्रकार के समारोहों एवं अवसरों पर इस प्रकार के पत्र लिखे जाते हैं। जैसे, शादी-विवाह आदि अवसरों पर निमंत्रण या बधाई के लिए पत्र, शोक के अवसरों पर संवदेना प्रकट करनेवाले पत्र आदि।

(iii) व्यावसायिक पत्र—अपने व्यवसाय से संबंधित मामलों के बारे में व्यवसाय से संबंधित व्यक्तियों को ये पत्र लिखे जाते हैं।

(iv) आवेदन पत्र—नौकरी आदि प्राप्त करने के लिए ये पत्र लिखे जाते हैं।

(v) पदाधिकारियों के नाम पत्र—किसी भी प्रकार की समस्या या परेशानी होने या किसी संस्था आदि से कोई सहायता लेने के लिए संबंधित पदाधिकारी को ये पत्र लिखे जाते हैं।

(vi) संपादक के नाम पत्र—अपने पास-पड़ोस की किसी समस्या या किसी कार्यालय से परेशान किए जाने पर समाचार-पत्र में उस बात को छपवाने के लिए इस प्रकार के पत्र लिखे जाते हैं। इनका उद्‌देश्य जनता, संबंधित विभाग एवं सरकार का ध्यान उस परेशानी की तरफ आकर्षित करना होता है।

पत्र लिखते समय ध्यान में रखने योग्य बातें—पत्र लिखते समय एक अच्छे पत्र की सभी विशेषताओं का ध्यान रखा जाता है जो कि निम्नलिखित हैं :

1. पत्र की भाषा सरल, स्वाभाविक एवं रोचक होनी चाहिए।

2. पत्र में विचारों की अभिव्यक्ति इस प्रकार होनी चाहिए कि ऐसा प्रतीत हो मानो पत्र लिखने वाला सामने बैठा हुआ अपनी बात कह रहा हो।

3. पत्र में आवश्यक बातों का ही उल्लेख होना चाहिए। एक ही बात को बार-बार दोहराना नहीं चाहिए।

4. बातों का अनावश्यक विस्तार नहीं करना चाहिए। संक्षेप में अपनी बात कह देनी चाहिए।

5. पत्र में जो बात कही जाए, स्पष्ट होनी चाहिए। पढ़ने वाला पत्र पढ़ते ही पत्र का भाव समझ जाए।

6. पत्र के वाक्य छोटे-छोटे तथा प्रभावशाली होने चाहिए।

7. पत्र में विराम-चिह्नों आदि का शुद्‌ध प्रयोग होना चाहिए।

8. पत्र में सभी तथ्य पूरी तरह से लिखे जाने चाहिए। कोई भी बात छूट न जाए। यदि पत्र में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
किसी बात का उत्तर दिया जा रहा हो, तो हर बात का उत्तर अलग-अलग अनुच्छेदों में होना चाहिए।

9. पारिवारिक सदस्यों को लिखे गए पत्र में आत्मीयता झलकनी चाहिए।

10. पत्र लिखते समय पत्र में शिष्टाचार के नियमों का सदैव ध्यान रखना चाहिए।

पत्र के भाग (Componets of a Letter)

पत्र-लेखन आज के जीवन में एक उपयोगी कला है। सभी प्रकार के पत्रो में सामान्यत: निम्नलिखित भाग होते हैं।

1. पत्र के प्रेषक का पता—पत्र के ऊपर दाएँ तरफ कोने में पत्र लिखने वाले का पता लिखा जाता है।

2. तिथि—प्रेषक के पते के नीचे पत्र लिखने की तारीख लिखी जाती है।

3. संबोधन—पत्र के बायीं तरफ ऊपर कोने में तिथि की सीध में जिस व्यक्ति को पत्र लिखा जा रहा है उसके लिए संबोधनसूचक शब्द का प्रयोग करते हैं। बड़ों के लिए आदरणीय, पूज्यनीय, माननीय, श्रद्धेय आदि, छोटों के लिए प्रिय आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है। व्यावसायिक पत्रों में महोदय, श्रीमान् आदि शब्द लिखे जाते हैं।

4. अभिवादन—संबोधन के बाद अगली पंक्ति में अभिवादनसूचक शब्द लिखा जाता है। जैसे बड़ों को सादर प्रणाम, सादर चरण स्पर्श, अपने से आयु में छोटों के लिए खुश रहो, शुभाशीष आदि तथा मित्रों के लिए सप्रेम नमस्ते आदि अभिवादन शब्दों का प्रयोग किया जाता है। व्यावसायिक पत्रों में अभिवादनशील शब्दों का प्रयोग नहीं किया जाता है।

5. पत्रारंभ—पत्र को प्रारंभ करने वाली सामान्य कुशलता आदि से संबंधित बातें लिखी जाती हैं।

6. मूल विषय या कलेवर—जिस उद्देश्य से पत्र लिखा जा रहा है उससे संबंधित सभी बातों को क्रमानुसार अलग-अलग अनुच्छेदों में बाँटकर लिखा जाता है।

7. पत्र की समाप्ति—सभी महत्त्वपूर्ण बातों को लिखने के उपरांत पत्र के अंत में एक-दो वाक्य शिष्टाचार संबंधी लिखे जाते हैं। जैसे—शेष कुशल है, त्रुटियों को क्षमा करें, पत्रोत्तर शीघ्र दें, धन्यवाद आदि।

8. आत्मनिर्देश—अंत में पत्र के दाएँ कोने में अपने लिए निर्देश लिखा जाता है। जैसे आपका पुत्र, आपका आज्ञाकारी शिष्य, तुम्हारा शुभचिंतक, शुभेच्छु, शुभाकांक्षी, तुम्हारा अभिन्न मित्र, भवदीय, प्रार्थी, निवेदक आदि।

9. हस्ताक्षर—आत्मनिर्देशक लिखने के उपरांत लिखने वाला अपने हस्ताक्षर करता है या अपना नाम लिखता है।

10. पत्र पाने वाले का पता—निश्चित स्थान पर पत्र पाने वाले का पता लिखा जाता है।

पत्र लिखने की शिक्षा देने की विधि (Teaching of Letter Writing)—पत्र में लिखने वाले की आत्माभिव्यक्ति होती है। पत्र का संबंधित व्यक्ति पर उचित प्रभाव तभी पड़ता है जब पत्र में उचित भाषा-शैली का प्रयोग किया गया हो और पत्र के विचारों में क्रमबद्धता और उचित तारतम्य हो। बच्चों में पत्र-लेखन की योग्यता विकसित करने के लिए निबंध, कहानी आदि की रचना करने की शिक्षा देने के साथ-साथ पत्र-लेखन की शिक्षा भी देनी चाहिए।

बच्चों में भाषा संबंधी योग्यता तथा विचाराभिव्यक्ति की योग्यता विकसित होने के साथ ही पत्र-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लेखन की शिक्षा देने प्रारंभ कर देना चाहिए। अध्यापक छात्रों को पत्र-लेखन की शिक्षा देने के लिए निम्न विधि का प्रयोग कर सकता है :

1. सर्वप्रथम छात्रों के मानसिक स्तर के अनुसार पत्र-लेखन के लिए उपयुक्त विषय का चुनाव करना चाहिए। प्रारंभ में सरल व छोटे पत्र लिखवाने चाहिए, बाद में लंबे पत्र लिखवाने चाहिए।

2. बच्चों के समक्ष पत्र का एक आदर्श नमूना प्रस्तुत कर छात्रों को पत्र के विभिन्न भागों से परिचित कराना चाहिए।

3. पत्र के विभिन्न भागों का परिचय देने के लिए अध्यापक को प्रदर्शन विधि एवं प्रश्नोत्तर विधि का प्रयोग करना चाहिए। आदर्श नमूना दिखाते हुए प्रारंभिक, मध्य एवं अंतिम भाग से संबंधित प्रश्न क्रमानुसार पूछने चाहिए।

4. छात्रों के द्वारा दिए जाने वाले उत्तरों को श्यामपट्ट पर लिखना चाहिए।

5. सभी छात्रों को सक्रिय रहने व उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

6. छात्रों के द्वारा पत्र-रचना संबंधी कोई त्रुटि होने पर उसी समय उसे ठीक कराना चाहिए।

7. पत्र की भाषा-शैली सरल व स्वाभाविक होनी चाहिए।

8. पत्र पूरा कराने के उपरांत छात्रों से अपने आप पत्र लिखने के लिए कहना चाहिए।

9. छात्रों के द्वारा लिखे गए पत्र की उसी समय सावधानीपूर्वक जाँच करनी चाहिए और उचित संशोधन करना चाहिए।

10. छात्रों को पत्र सुंदर लेख में लिखने के लिए प्रेरित करना चाहिए जिससे पत्र पढ़ने वाला पत्र को ठीक से पढ़ सके।

इस प्रकार छात्रों को विभिन्न प्रकार के पत्र लिखने का अभ्यास कराना चाहिए।

अध्ययन के लिए प्रश्न

1. रचना एवं रचना-शिक्षण से आप क्या समझते हैं? मातृभाषा-शिक्षण में रचना की क्या उपयोगिता है? स्पष्ट करते हुए विभिन्न स्तरों पर रचना-शिक्षण के उद्देश्यों का उल्लेख कीजिए।

2. ''मौखिक रचना लिखित रचना की आधारशिला होती है।'' इस कथन की विवेचना कीजिए।

3. मौखिक रचना से आप क्या समझते हैं? प्राथमिक स्तर पर मौखिक रचना शिक्षण हेतु किन-किन साधनों एवं विधियों का प्रयोग करेंगे? स्पष्ट कीजिए।

4. रचना से आप क्या समझते हैं? प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर रचना-शिक्षण किस प्रकार से किया जाना चाहिए?

5. लिखित रचना-शिक्षण की कौन-सी प्रणालियाँ हैं? माध्यमिक कक्षाओं में आप किन-किन प्रणालियों अथवा विधियों को काम में लाना चाहेंगे और क्यों?

6. रचना-शिक्षण से क्या अभिप्राय है? रचना-शिक्षण की कौन-कौन-सी प्रणालियाँ हैं? इसका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करें।

7. रचना-शिक्षण की प्रमुख प्रणालियों की चर्चा करते हुए बच्चों की लिखित रचना में मौलिकता लाने के उपायों का उल्लेख कीजिए।

8. रचना-शिक्षण से क्या अभिप्राय है? माध्यमिक कक्षाओं में विद्यार्थियों में रचना शिक्षण के प्रति रुचि बढ़ाने के उपाए बताएँ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

9. एक अच्छी रचना की विशेषताएँ बताते हुए, रचना में होनेवाली अशुद्धियों और उन्हें दूर करने के उपाए बताएँ।

10. रचना-शिक्षण में संशोधन कार्य का महत्त्व बताते हुए स्पष्ट करें कि छात्र रचना में मुख्यतया किस प्रकार की अशुद्धियाँ करते हैं ? इन अशुद्धियों को कैसे दूर किया जा सकता है ?

11. कहानी-शिक्षण एवं कहानी-रचना-शिक्षण का अंतर स्पष्ट करते हुए कहानी-रचना-शिक्षण की विधि एवं सोपानों पर प्रकाश डालें।

12. निबंध किसे कहते हैं ? निबंध-शिक्षण के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए किसी विषय पर निबंध-रचना की एक पाठ-योजना तैयार कीजिए।

13. हिंदी-शिक्षण में पत्र-लेखन का क्या महत्त्व है ? पत्र-लेखन कितने प्रकार का होता है ? पत्र लिखते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

14. किसी पत्र के मुख्य भागों का वर्णन करते हुए बताइए कि आप बालकों को पत्र लिखने की शिक्षा किस प्रकार देंगे ?

15. निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :

(i) मातृभाषा-शिक्षण में रचना शिक्षण का महत्त्व

(ii) रचना-शिक्षण के उद्देश्य

(iii) रचना-शिक्षणी की विभिन्न प्रणालियाँ

(iv) लिखित रचना कार्य का संशोधन

(v) बच्चों की रचना कार्य में मौलिकता लाने के उपाय

(vi) बच्चों की रचनात्मक कार्य में रुचि उत्पन्न करने के उपाय

(vii) हिंदी-शिक्षण में पत्र-रचना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

16

सूक्ष्म शिक्षण द्वारा शिक्षण-कौशलों का विकास

(Development of Teaching Skills through Microteaching)

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के अंतर्गत चलनेवाले अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का अगर ठीक तरह से मूल्यांकन किया जाए तो यह अनुभव करने में कोई दिक्कत नहीं होगी कि इस प्रशिक्षण में अगर कोई दोष या कमी सबसे ज्यादा खटकती है तो वह शिक्षण-कला के क्रियात्मक अभ्यास (Practice Teaching) को लेकर ही है। इसका नियोजन क्रियान्वयन और मूल्यांकन तीनों ही स्तरों का कार्य काफी निराशाजनक है। शिक्षण-कार्य से संबंधित विभिन्न कौशलों (Teaching Skills) से परिचय और उनका विकास किए बिना ही प्रशिक्षणार्थियों को विभिन्न विद्यालयों में वास्तविक कक्षा-शिक्षण के लिए भेजना उतना ही अविवेकपूर्ण कार्य है, जितना किसी तैराक को बिना तैराकी सिखाए छलांग लगवा देना। शैक्षिक तकनीकी द्वारा इन कमियों और दोषों को दूर करने के लिए कुछ नवाचारों (Innovations) को विकसित किया गया है। सूक्ष्म शिक्षण इसमें से एक का प्रतिनिधित्व करता है। इस अध्याय में हम इसके अर्थ एवं प्रक्रिया से परिचित होने का प्रयास करेंगे।

सूक्ष्म-शिक्षण—अर्थ एवं परिभाषाएँ
(Micro-Teaching-Meaning and Definitions)

1. एलन (D. W. Allen, 1966)—सूक्ष्म-शिक्षण से तात्पर्य शिक्षा क्रिया के उस सरलीकृत लघु रूप से है जिसे थोड़े विद्यार्थियोंवाली कक्षा के सामने अल्प समय में संपन्न किया जाता है।

"Micro-teaching is a scaled down teaching encounter in class size and time."

(Allen, 1-66)

2. मैक एलीज़ एवं अन्विन (Mc Allese and Unwin, 1970)—शिक्षक प्रशिक्षार्थी द्वारा सरलीकृत वातावरण में किए गए शिक्षण-व्यवहारों को तत्काल प्रतिपुष्टि प्रदान करने के लिए क्लोज़ सर्किट टेलीविज़न के प्रयोग को प्रायः सूक्ष्म शिक्षण कहा जाता है।

3. क्लिफ्ट एवं उसके सहयोगी (Clift, et al, 1976)—सूक्ष्म शिक्षण अध्यापक प्रशिक्षण की वह विधि है जिसमें शिक्षण अभ्यास को छोटे आकार की कक्षा में अल्प समय तक सीमित कर शिक्षण परिस्थिति को एक सरलतम और अधिक नियंत्रित रूप प्रदान किया जाता है।

4. बी. के. पासी एवं एम. एस. ललिता (B. K. Passi and M. S. Lalita, 1976)—सूक्ष्म शिक्षण वह प्रशिक्षण तकनीक है जिसके छात्राध्यापकों से यह अपेक्षा की जाती है कि उनके द्वारा किसी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
एक संप्रत्यय को थोड़े से विद्यार्थियों को अल्प समय में विशिष्ट शिक्षण-कौशलों का प्रयोग करके पढ़ाया जाए।

5. एल.सी.सिंह (L. C. Singh, 1971)—सूक्ष्म शिक्षण, शिक्षण का वह सरलीकृत लघु रूप है जिसमें किसी अध्यापक द्वारा किन्हीं पाँच विद्यार्थियों के समूह को 5 से 20 मिनट तक की अल्प विधि में पाठ्यक्रम की एक छोटी इकाई का शिक्षण प्रदान किया जाता है। इस प्रकार की परिस्थिति, किसी अनुभवी अथवा अनुभवहीन अध्यापक को नवीन शिक्षण-कौशलों का अर्जन करने और पूर्व-अर्जित कौशलों में सुधार लाने के लिए उपयोगी अवसर प्रदान करती है।

"Micro-teaching is a 'scaled down teaching encounter' in which a teacher teaches a small unit to a group of 5 pupils for a small period of 5 to 20 minutes. Such a situation offers a helpful setting for an experienced or inexperienced teacher to acquire new teaching skills and to refine old ones."

(Singh, L. C. 1977)

6. एन. के. जंगीरा एवं अजीत सिंह (N. K. Jangira and Ajit Singh, 1982)—सूक्ष्म शिक्षण एक छात्राध्यापक के लिए प्रशिक्षण का वह प्रारूप है जिसमें सामान्य कक्षा-शिक्षण की जटिलताओं को निम्न उपायों द्वारा कम करने का प्रयास किया जाता है—

—एक समय में एक ही शिक्षण-कौशल का अभ्यास करना।

—पाठ्यवस्तु को किसी एक संप्रत्यय तक ही सीमित रखना।

—कक्षा में विद्यार्थियों की संख्या को घटाकर 5 और 10 के बीच रखना।

"Micro teaching is a training setting for the student teacher where complexities of the normal classroom teaching are reduced by—

Practising one component skill at a time,
limiting the content to a single concept,
reducing the size to 5-10 pupils, and
reducing the duration of the lesson to 5-10 minutes."

(Jangira and Ajit Singh, 1982)

निष्कर्ष (Conclusions)—उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर सूक्ष्म-शिक्षण की विशेषताओं और प्रकृति के बारे में कुछ निम्न निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं—

1. सूक्ष्म शिक्षण को अध्यापक प्रशिक्षण और विशेषतया शिक्षण-कला के अभ्यास-क्षेत्र में अपेक्षाकृत एक नवीन प्रयोग अथवा नवाचार (Innovation) के रूप में देखा जाना चाहिए।

2. यह अध्यापकों को शिक्षण कौशलों का अभ्यास कराने हेतु अपनायी गई एक प्रशिक्षण तकनीक (Training Technique) है, अतः इसे किसी भी अवस्था में शिक्षण तकनीक (Teaching Technique) नहीं समझा जाना चाहिए।

3. यह शिक्षण का अति लघु और सरलीकृत रूप है जिसमें वास्तविक शिक्षण की जटिलताओं को कम करने के हर संभव प्रयत्न किए जाते हैं।

4. सूक्ष्म शिक्षण पाठ की समाप्ति के तुरंत बाद ही एक अध्यापक को उसका शिक्षण कैसा रहा, इस बात की जानकारी मिल जाती है। इस प्रकार की जानकारी पर्याप्त प्रतिपुष्टि प्रदान करने में काफी सहायक होती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

5. शिक्षण कार्य में अनेक अति विशिष्ट कौशलों (Very specific teaching skills) का समावेश होता है। परांपरागत शिक्षण-प्रशिक्षण द्वारा इन कौशलों में प्रवीण होना संभव नहीं है। सूक्ष्म शिक्षण ही एक ऐसी तकनीक है जो इन कौशलों में पारंगत होने का अवसर देती है।

6. सूक्ष्म शिक्षण एक बहुत ही वैयक्तिक प्रशिक्षण तकनीक है जिसमें एक समय में एक ही व्यक्ति को बहुत ही नियंत्रित परिस्थितियों में किसी एक कौशल का अभ्यास करने का अवसर मिलता है।

सूक्ष्म शिक्षण की उपरोक्त विशेषताओं के संदर्भ में इसकी परिभाषा अब निम्न रूप में की जा सकती है।

''सूक्ष्म शिक्षण से अभिप्राय एक ऐसी विशिष्ट प्रशिक्षण तकनीक है जिसके द्वारा कक्षा-आकार, समय और विषय-सामग्री को अल्प मात्रा में सीमित कर अनुभवहीन अथवा अनुभवी अध्यापकों को कुछ विशिष्ट शिक्षण-कौशलों के अभ्यास का समुचित अवसर देकर उनकी शिक्षण-कला में निखार लाने का प्रयास किया जाता है।''

सूक्ष्म शिक्षण प्रक्रिया
(Micro-Teaching Process)

सूक्ष्म शिक्षण प्रक्रिया निम्न तीन अवस्थाओं में संपन्न होती है—

1. सूक्ष्म शिक्षण पूर्वावस्था या ज्ञानार्जन अवस्था (Pre-active phaseor knowledge acquistion phase)

2. सूक्ष्म शिक्षण अवस्था या कौशल-अर्जन अवस्था (Interactive-phase or Skill acquisition phase)

3. सूक्ष्म शिक्षण उत्तरावस्था या कौशल-उपयोग अवस्था (Post-active phase or Transfer phase)

उपरोक्त अवस्थाओं के आधार पर यदि अच्छी तरह सोचा जाए तो सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास पाठों के लिए अपनायी जानेवाली कार्य-पद्धति में अपने देश की परिस्थितियों के संदर्भ में निम्न सोपानों का समावेश होना चाहिए।

1. सूक्ष्म शिक्षण के बारे में सैद्धांतिक ज्ञान देना (Orientation about micro teaching)—प्रारंभ में छात्राध्यापक को सूक्ष्म शिक्षण संबंधी आवश्यक सैद्धांतिक जानकारी की दृष्टि से निम्न बातें बताई जानी चाहिए।

(i) सूक्ष्म शिक्षण का अर्थ एवं संप्रत्यय।
(ii) सूक्ष्म शिक्षण का महत्त्व अथवा उपयोग।
(iii) सूक्ष्म शिक्षण की कार्य-पद्धति।
(iv) सूक्ष्म शिक्षण तकनीक को अपनाए जाने के लिए आवश्यक परिस्थितियाँ एवं साधन।

2. शिक्षण-कौशलों की चर्चा (Discussion of Teaching skills)—इस सोपान के अंतर्गत निम्न बातों का ज्ञान कराया जाना चाहिए—

(i) शिक्षण का शिक्षण-कौशल घटकों (Component teaching skills) के रूप में विश्लेषण।
(ii) शिक्षण कार्य में इन शिक्षण-कौशलों के उपयोग अथवा महत्त्व के विषय में चर्चा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(iii) शिक्षण कौशलों के अंतर्गत शामिल अध्यापक व्यवहार संबंधी घटकों (Component teaching behaviour) की चर्चा।

3. किसी विशिष्ट कौशल का चयन (Selection of a particular teaching skill)—सूक्ष्म शिक्षण में किसी एक समय में एक शिक्षण कौशल का ही अभ्यास कराया जाता है। इसलिए छात्राध्यापकों को अभ्यास हेतु किसी एक कौशल का चुनाव करने के लिए प्रेरित किया जाता है। उन्हें इस कौशल का अभ्यास करने के लिए आवश्यक जानकारी एवं सामग्री भी प्रदान की जाती है। इस प्रकार की जानकारी प्राप्त करने के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT) से पर्याप्त सामग्री मिल सकती है।

4. आदर्श पाठ (Presentation of a model demonstration lesson)—इस सोपान के अंतर्गत प्रशिक्षणार्थियों के सामने शिक्षण-कौशल का अभ्यास कराने से संबंधित एक आदर्श पाठ प्रस्तुत किया जाता है। इस आदर्श पाठ के माध्यम से छात्राध्यापकों से यह आशा की जाती है कि वे शिक्षण कौशल से संबंधित आवश्यक क्रियाओं और शिक्षक व्यवहार का अच्छी तरह अनुकरण कर लें। उपलब्ध साधन, परिस्थितियों और अभ्यास कराए जानेवाले शिक्षण-कौशल को ध्यान में रखते हुए एक आदर्श पाठ को विभिन्न विधियों द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है, जैसे—

(i) सूक्ष्म शिक्षण के आदर्श पाठ की विस्तृत लिखित योजना छात्राध्यापकों को दी जा सकती है।

(ii) उसे वीडियो टेप पर रिकार्ड करके फिल्म रूप में दिखाया जा सकता है।

(iii) उसे टेप रिकार्डर पर टेप करके छात्राध्यापकों को सुनाया जा सकता है।

(iv) किसी विशेषज्ञ अथवा शिक्षक प्रशिक्षक के द्वारा वास्तविक रूप में इस पाठ को पढ़ाकर दिखाया जा सकता है।

5. आदर्श पाठ निरीक्षण एवं समालोचना (Observation and criticism of the Model Lesson)—आदर्श पाठ जिस रूप में भी विद्यार्थियों द्वारा देखा, सुना अथवा पढ़ा जाता है, उसका उनके द्वारा सावधानी से विश्लेषण किया जाता है। इस कार्य के लिए उन्हें आदर्श पाठ देने से पहले ही यह बता दिया जाता है कि उन्हें क्या-क्या नोट करना है। पर्यवेक्षण करने से संबंधित निरीक्षण अनुसूची अथवा प्रपत्र (Observation Schedule) भी उन्हें पहले ही वितरित कर दिए जाते हैं और इन प्रपत्रों की समुचित प्रयोग विधि भी उन्हें समझा दी जाती है। इस प्रकार का पर्यवेक्षण जहाँ एक ओर छात्राध्याकों को आवश्यक शिक्षण-कौशल अर्जित करने में सहायता करता है वहाँ दूसरी ओर आदर्श पाठ प्रस्तुत करनेवाले व्यक्ति को भी इससे आवश्यक प्रतिपुष्टि (Feed-back) मिल सकती है।

6. सूक्ष्म पाठ-योजना तैयार करना (Preparation of micro lesson plan)—इस सोपान के अंतर्गत छात्राध्यापकों से यह आशा की जाती है कि वे संबंधित शिक्षण-कौशल का अभ्यास करने के लिए किसी उचित उपविषय का चुनाव करके एक आदर्श पाठ-योजना तैयार करें। इस कार्य के लिए वे अपने-अपने प्राध्यापकों से परामर्श कर सकते हैं और शिक्षण प्रशिक्षण पर उपलब्ध सामग्री और पुस्तकों का अध्ययन भी कर सकते हैं।

7. सूक्ष्म शिक्षण संबंधी उचित परिस्थितियों का आयोजन (Creation of Micro-teaching Setting)—इस सोपान के अंतर्गत एक शिक्षण-कौशल का अभ्यास करने हेतु आवश्यक सुविधाएँ जुटाने एवं उचित परिस्थितियों के निर्माण करने का प्रबंध किया जाता है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT) ने भारतीय परिवेश के संदर्भ में निम्न प्रारूप सुझाया है—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(i) छात्रों की संख्या—5 से 10 तक

(ii) छात्र—वास्तविक या सहपाठी छात्राध्यापक।

(iii) पर्यवेक्षणकर्त्ता—शिक्षक प्रशिक्षक और सहपाठी छात्राध्यापक।

(iv) सूक्ष्म पाठ की अवधि—6 मिनट।

(v) सूक्ष्म शिक्षण चक्र (Micro-teaching cycle) की अवधि = 36 मिनट। इस अवधि का विभाजन इस प्रकार से है—

शिक्षण सत्र (Teaching Session) :	6 मिनट
प्रतिपुष्टि सत्र (Feed-back Session) :	6 मिनट
पुनर्योजना सत्र (Re-plan Session) :	12 मिनट
पुनः अध्यापन सत्र (Reteach Session) :	6 मिनट
पुनः प्रतिपुष्टि सत्र (Refeed-back Session) :	6 मिनट
कुल समय :	**36 मिनट**

8. शिक्षण सत्र (Practice of the Skill-Teach Session)—इस सोपान के अंतर्गत छात्राध्यापक 5 से लेकर 10 विद्यार्थियों अथवा सहपाठी छात्राध्यापक की कक्षा में अपने तैयार सूक्ष्म पाठ को 6 मिनट पढ़ाता है। पर्यवेक्षण का कार्य शिक्षक, प्रशिक्षक और सहपाठी छात्राध्यापकों दोनों के द्वारा निर्धारित निरीक्षण प्रपत्र (Observation Schedule) के माध्यम से किया जाता है। कुछ परिस्थितियों में इस कार्य के लिए वीडियो टेप अथवा ऑडियो टपे की सहायता भी ली जा सकती है।

9. प्रतिपुष्टि प्रदान करना (Providing Feed back)—सूक्ष्म शिक्षण की सबसे अधिक उपयोगिता उसके इस गुण में है कि इसके द्वारा एक अध्यापक को अपने पढ़ाए हुए पाठ के विषय में तत्काल प्रतिपुष्टि प्राप्त हो सकती है। किसी शिक्षण-कौशल से संबंधित शिक्षण घटकों (Component teaching behaviour) का प्रयोग उसके द्वारा किस रूप में किया गया है, इसका ज्ञान होने पर इन व्यवहारों का उपयुक्त परिमार्जन एवं संशोधन किया जा सकता है। अपने देश की परिस्थितियों में इस प्रकार की प्रतिपुष्टि प्रायः शिक्षक प्रशिक्षक और सहपाठी छात्राध्यापकों से जो एक पर्यवेक्षक के रूप में कार्य करते हैं, मिलती है। अगर संभव ह़ो सके तो वीडियो टेप, ऑडियो टेप और क्लोज़ सर्किट टेलीविज़न आदि की भी सहायता इस कार्य हेतु ली जा सकती है।

10. पुनः पाठ योजना बनाना (Replanning—Replan Session)—विभिन्न स्रोतों से प्राप्त प्रतिपुष्टि के आधार पर छात्राध्यापक अपने सूक्ष्म शिक्षण पाठ की पुनः योजना बनाता है। इस कार्य के लिए उसे 12 मिनट का समय मिलता है। इस सत्र को पुनर्योजना सत्र (Replan Session) कहा जाता है।

11. पुनः अध्यापन (Re-teaching / Re-teach Session)—6 मिनट के इस सत्र में पुनर्निर्मित पाठ योजना के आधार पर पुनर्व्यवस्थित शिक्षण परिस्थितियों में छात्राध्यापक अपने सूक्ष्म शिक्षण पाठ को एक बार फिर पढ़ाता है। इस सत्र को पुनः शिक्षण सत्र (Re-teach Session) का नाम दिया जाता है।

12. पुनः प्रतिपुष्टि प्रदान करना (Providing Re-feed back / Re-feed back Session)—पुनः पढ़ाए गए पाठ का शिक्षण प्रशिक्षक और सहयोगी छात्राध्यापकों द्वारा एक बार फिर पर्यवेक्षण किया जाता है और परिणामस्वरूप दुबारा आवश्यक प्रतिपुष्टि प्रदान की जाती है। यह सत्र 6 मिनट का होता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

13. सूक्ष्म शिक्षण चक्र की पुनरावृत्ति (Repetition of the micro teaching cycle)— किसी शिक्षण-कौशल का अभ्यास करने के लिए प्रयुक्त सूक्ष्म शिक्षण चक्र में योजना से लेकर पढ़ाने, प्रतिपुष्टि प्रदान करने, पुन: योजना बनाने, पुन: शिक्षण करने और पुन: प्रतिपुष्टि प्रदान करने आदि से संबंधित विभिन्न कार्यों का समावेश होता है। इनके आपसी संबंध को निम्न चित्र द्वारा समझा जा सकता है।

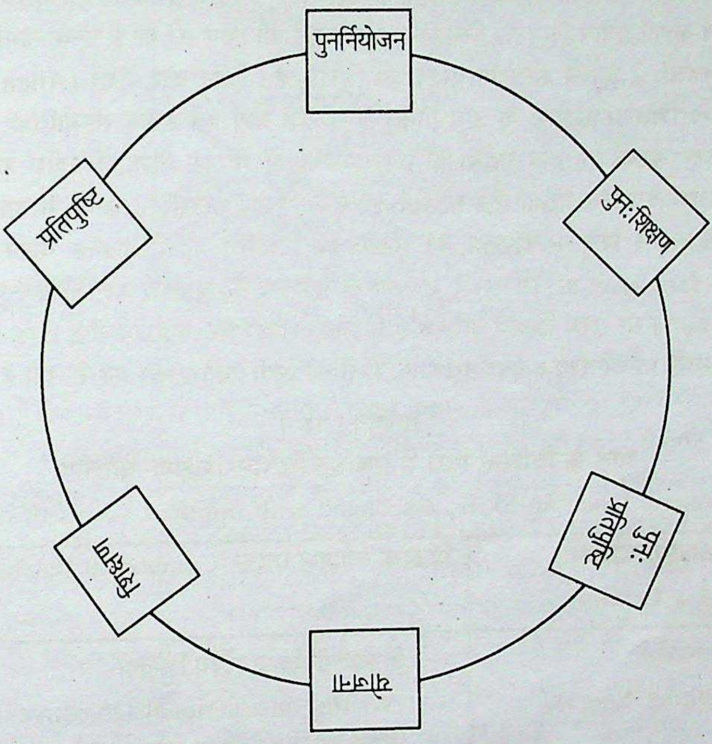

चित्र : सूक्ष्म शिक्षण चक्र

एक छात्राध्यापक किसी विशेष शिक्षण-कौशल के लिए प्रयुक्त एक सूक्ष्म शिक्षण चक्र की तब तक पुनरावृत्ति करता रहता है जब तक कि वह उस कौशल में पूर्णतया पारंगत न हो जाए।

14. शिक्षण-कौशलों का एकीकरण (Integration of Teaching Skills)—यह सोपान उन सभी शिक्षण-कौशलों को एकीकृत या समन्वित करने (Integration) से संबंधित है जिन्हें पृथक्-पृथक् रूप में सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास द्वारा छात्राध्यापक अर्जित करते हैं। शिक्षण-कौशलों को इस प्रकार एकीकृत करना काफी आवश्यक होता है क्योंकि वास्तविक शिक्षण में कभी भी शिक्षण-कौशलों का पृथक्-पृथक् उपयोग नहीं किया जाता। एकीकृत रूप में ही इनका उपयोग होता है। इस कार्य की चर्चा इसी अध्याय में आगे की जाएगी।

शिक्षण में निहित कौशलों की पहचान
(Identification of Teaching Skills)

शिक्षण के विश्लेषणात्मक स्वरूप (Analytical concept of teaching) के अनुसार, शिक्षण अनेक विशिष्ट शिक्षण कौशलों से युक्त एक जटिल कार्य है। प्रत्येक शिक्षण-कौशल में उसकी अपनी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रकृति के अनुरूप अनुदेशनात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति से संबंधित विभिन्न शिक्षण-व्यवहार घटकों (Component teaching behaviours) का समावेश होता है। इन शिक्षण-व्यवहारों का यथेष्ट परिमार्जन करना ही सूक्ष्म-अभ्यास प्रक्रिया का प्रमुख उद्देश्य है। इस अभ्यास के परिणामस्वरूप एक छात्राध्यापक विभिन्न शिक्षण-कौशलों में प्रवीणता अर्जित कर एक सफल अध्यापक बन सकता है।

शिक्षण कार्य से संबंधित विभिन्न शिक्षण-कौशलों का पता लगाने के लिए अनुसंधानकर्त्ताओं एवं शिक्षाविदों ने काफी प्रयत्न किए हैं। जिन शिक्षण-कौशलों की खोज की गई है उनके नामों और संबंधित शिक्षण-व्यवहारों में काफी समानता देखने को मिलती है। ऐलन और रॉयन (Allen and Ryan, 1969) ने 14 शिक्षण-कौशलों के नाम गिनाए हैं जबकि बोर्ग एवं उसके सहयोगियों (Borg et al 1970) ने यह संख्या 18 तक पहुँचा दी है। भारतवर्ष में भी इस दिशा में प्रयास हुए हैं। बड़ोदा विश्वविद्यालय के उच्च शिक्षा केंद्र (CASE) में किए गए अनुसंधान कार्यों के आधार पर पासी (Passi, 1976) ने शिक्षण-कौशलों की संख्या 21 निर्धारित की है जबकि जंगीरा और उसके सहयोगियों (Jangira et al, 1979) ने 20 कौशल बतालाए हैं। बतलाए गए कौशल, यही होंगे, यह ज़रूरी नहीं है। किसी सूक्ष्म शिक्षण परिस्थिति में इनकी संख्या घट-बढ़ सकती है। एक अध्यापन पाठ के विभिन्न स्तरों पर आवश्यक इन शिक्षण-कौशलों की सूची आगे प्रस्तुत की जा रही है।

तालिका 16.1

पाठ के विभिन्न स्तरों से संबंधित विभिन्न शिक्षण-कौशल

(Component Teaching Skills associated with different stages of a lesson)

पाठ स्तर अथवा व्यवस्था (Stage of a Lesson)	**शिक्षक कौशल घटक** (Component Teaching Skills)
I. नियोजन स्तर (Planning Stage)	1. अनुदेशनात्मक उद्देश्य लिखना (Writing instructional Objectives)
	2. विषय-वस्तु का चयन करना (Selecting the Content)
	3. विषय-वस्तु का संगठन (Organising the content)
	4. दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्री का चयन (Selection of the Audio-Visual aid material)
II. प्रस्तावना स्तर (Introductory Stage)	5. उचित परिस्थितियाँ पैदा करना या विन्यास प्रेरण (Creating set for introducing the lesson or Set Induction)
	6. पाठ को प्रस्तावित करना (Introducing the lesson)
	(a) प्रश्न कौशल (Questioning skills)
III. प्रस्तुतीकरण स्तर (Presentation Stage)	7. कक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों का निर्माण (Structuring class-room questions)
	8. प्रश्नों की प्रवाहशीलता (Fluency in questioning)
	9. खोजपूर्ण प्रश्न (Probing questions)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

	10. प्रश्नों का पूछा जाना और उनका कक्षा में वितरण (Questions—delivery and distribution) 11. उच्च स्तरीय प्रश्नों का प्रयोग (Use of higher order questions) 12. विकेंद्रीय प्रश्न (Divergent questions) 13. अनुक्रिया प्रबंध (Response management) **(b) प्रस्तुतीकरण कौशल** (Presentation Skills) 14. पाठ गति (Pacing of the lesson) 15. व्याख्यान देना (Lecturing) 16. व्याख्या करना (Explaining) 17. वार्तालाप करना (Discussing) 18. प्रदर्शन करना (Demonstrating) 19. उदाहरणों द्वारा दृष्टांत देना (Illustrating with examples) **(c) सहायक साधन-प्रयोग कौशल** (Aid-using skills) 20. सहायक सामग्री का प्रयोग (Using teaching aids) 21. श्यामपट्ट का प्रयोग (Using black-board) 22. उद्दीपन परिवर्तन (Stimulus variation) 23. मौन तथा अशाब्दिक संकेत (Pausing or silence and non-verbal cues) 24. पुनर्बलन (Reinforcement) **(d) प्रबंधात्मक कौशल** (Managerial Skills) 25. छात्र संभागिता संवर्धन (Promoting pupil participation) 26. ध्यानयुक्त छात्र-व्यवहारों का अभिज्ञान (Recognising attending pupil's behaviours) 27. कक्षा कक्ष प्रबंध (Class Room Management)
IV. पाठ-समापन स्तर (Clossing Stage)	28. पाठ समापन (Achieving closrue) 29. नियोजित पुनरावृत्ति (Planned repetition) 30. गृह-कार्य देना (Giving assignments) 31. विद्यार्थियों की प्रगति का मूल्यांकन करना (Evaluating the pupils's progress) 32. विद्यार्थियों की अधिगम कठिनाइयों का निदान एवं उपचार (Diagnosing pupil's learning difficulties and taking remedial measures)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सूक्ष्म शिक्षण द्वारा शिक्षण-कौशलों का अभ्यास

(Practising Teaching Skills Through Micro-Teaching)

सूक्ष्म शिक्षण का प्रयोजन उन सभी विशिष्ट शिक्षण कौशलों का विकास करना है जिनकी एक शिक्षक को अपनी शिक्षण-कला को निखारने हेतु बराबर आवश्यकता रहती है। इन्हें उचित रूप में विकसित करने हेतु पर्याप्त अभ्यास की आवश्यकता होती है। सूक्ष्म शिक्षण प्रक्रिया जिसकी विस्तृत जानकारी दी जा चुकी है, उसके आधार पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का विधिवत आयोजन कर तथा विभिन्न शिक्षण-कौशलों से संबंधित सूक्ष्म शिक्षण पाठ योजनाएँ तैयार कर उचित अभ्यास कराने से इस दिशा में वांछित सफलता प्राप्त की जा सकती है। आगे हम कुछ महत्त्वपूर्ण शिक्षण-कौशलों और उनमें निहित विशिष्ट शिक्षण-व्यवहारों की चर्चा करते हुए उनसे संबंधित सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास कार्य की विस्तृत जानकारी लेने का प्रयत्न करेंगे।

A. व्याख्या कौशल

(Skill of explaining)

कौशल का अर्थ (Meaning of the Skill)

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में बहुत से तथ्य, संप्रत्यय, नियम अथवा सिद्धांत ऐसे होते हैं जिन्हें अच्छी तरह स्पष्ट करना और बोधगम्य बनाने हेतु उनकी व्याख्या (Explain) करना आवश्यक हो जाता है। इस दृष्टि से व्याख्या कौशल का अर्जन एक अध्यापक के लिए काफी ज़रूरी है। व्याख्या करने से तात्पर्य विषय वस्तु पर आधारित उन कथनों से है जो आपस में पूरी तरह संबंधित, क्रमबद्ध और सार्थक होते हैं। **इस तरह व्याख्या कौशल को एक ऐसी तकनीक अथवा युक्ति के रूप में समझा जा सकता है जिसके द्वारा किसी संप्रत्यय, विचार या प्रनियम को अच्छी तरह बोध गम्य बनाने के लिए परस्पर संबंधित, क्रमबद्ध और सार्थक कथनों की भली-भाँति सहायता ली जा सके।**

कौशल के भाग (Parts of the Skill)

इस कौशल के प्रयोग में सभी प्रकार की मौखिक अभिव्यक्ति का ही सहारा लेना होता है और इसके मुख्य रूप से दो भाग होते हैं—

(i) विद्यार्थियों की आयु, परिपक्वता, पूर्व ज्ञान और पढ़ाई जानेवाली विषय वस्तु या संप्रत्यय के अनुरूप उचित कथनों का चयन।

(ii) चयन किए हुए कथनों को एक-दूसरे से संबंधित करना और फिर उन्हें संप्रत्यय और विषय विशेष को ठीक प्रकार समझाने के लिए कुशलतापूर्वक प्रयोग में लाना। जहाँ तक व्याख्या कौशल में प्रयुक्त कथनों की प्रकृति का प्रश्न है, ये प्राय: तीन प्रकार के हो सकते हैं—

(a) वर्णनात्मक कथन (Descriptive Statements)—यह कथन दिए हुए संप्रत्यय या प्रनियम का वर्णन करने के काम आते हैं।

(b) अर्थात्मक कथन (Interpretive Statements)—इन कथनों की सहायता से किसी संप्रत्यय या प्रनियम का अर्थ समझने में सहायता मिलती है।

(c) कारण बताने वाले कथन (Reasons giving Statements)—इनके द्वारा किसी संप्रत्यय, घटना और नियम के बारे में क्यों, कैसे और क्या जैसे प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने में आसानी होती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कौशल घटक (Components of the Skill)

किसी संप्रत्यय या विचार विशेष की व्याख्या करने से संबंधित कौशल में वांछित और अवांछित दोनों प्रकार के शिक्षण-व्यवहारों का समावेश होता है। अतः इस कौशल का अभ्यास कराने में इस बात का ध्यान रखा जाता है कि वांछित व्यवहारों की आवृत्ति अधिक-से-अधिक हो और अवांछित व्यवहारों को घटाते-घटाते बिलकुल ही समाप्त करने का प्रयास किया जाए। इन सभी वांछित और अवांछित व्यवहारों को नीचे एक तालिका में प्रदर्शित किया जा रहा है।

व्याख्या कौशल घटक (Componets of Skill of Explaining)

वांछित व्यवहार (Desirable Behaviours)	अवांछित व्यवहार (Undesirable Behaviours)
1. उपयुक्त प्रारंभिक और निष्कर्ष कथनों का प्रयोग।	1. निरर्थक कथनों का प्रयोग।
2. व्याख्या सेतुओं का प्रयोग।	2. कथनों में निरंतरता या तारतम्य का अभाव।
3. आवश्यक बिंदुओं पर ध्यान देना।	3. प्रवाहिकता का अभाव।
4. बोध-परीक्षण।	4. अनुपयुक्त शब्दावली और अस्पष्ट शब्दों अथवा मुहावरों का प्रयोग।

आइए अब इन सभी व्यवहार घटकों का अर्थ समझा जाए।

वांछित व्यवहार (Desirable Behaviours)

1. उपयुक्त प्रारंभिक और निष्कर्ष कथनों का प्रयोग (Using appropriate Beginning and Concluding Statements)—प्रारंभिक कथनों के द्वारा प्रारंभ में ही यह घोषणा की जाती है कि अध्यापक को किस विचार या संप्रत्यय विशेष की व्याख्या करनी है। इस घोषणा से विद्यार्थी व्याख्या को सुनने और समझने के लिए मानसिक रूप से तैयार हो जाते हैं। दूसरी ओर निष्कर्ष कथनों का प्रयोग व्याख्या के तुरंत बाद व्याख्या को सार रूप में प्रस्तुत करने के लिए किया जाता है।

2. व्याख्या सेतुओं का प्रयोग (Using Explaining Links)—किसी संप्रत्यय और नियम आदि की व्याख्या करने के लिए काम में लाए जानेवाले विभिन्न कथनों में निरंतरता या तारतम्य बनाए रखने हेतु इन शब्द-सेतुओं का प्रयोग किया जाता है। इन शब्द-सेतुओं (Links) के कुछ उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं।

अतः इसलिए, जैसा कि, परिणामस्वरूप, फलस्वरूप, क्योंकि, ताकि, इसके बजाए, अपेक्षाकृत , दूसरी ओर, ऐसा इसलिए है कि, जबकि, अर्थात आदि।

3. आवश्यक बिंदुओं पर ध्यान देना (Covering Essential Points)—किसी संप्रत्यय अथवा प्रनियम को समझने से संबंधित व्याख्या अपने आपमें अधिक-से-अधिक पूर्ण होनी चाहिए। जो भी मुख्य और आवश्यक बातें संप्रत्यय या प्रनियम को भली-भाँति स्पष्ट करके अधिक-से-अधिक बोध-गम्य बना सकें, उनकी ओर पूरा-पूरा ध्यान दिया जाना चाहिए।

4. बोध-परीक्षण (Testing Pupil's Understanding)—जिस उद्देश्य से लेकर व्याख्या की जाए वह ठीक प्रकार से पूरा हुआ है या नहीं, उचित बोधात्मक प्रश्नों की सहायता से इसका पता लगाया जाना चाहिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अवांछित व्यवहार (Undesirable Behaviour)

1. निरर्थक कथनों का प्रयोग (Using Irrelevant statement)—ऐसे कथनों का प्रयोग, जिनके द्वारा संबंधित संप्रत्यय अथवा प्रनियम की व्याख्या करने में कोई सहायता नहीं मिलती, इस श्रेणी में आता है। ये कथन अस्पष्टता एवं अव्यवस्था उत्पन्न कर विद्यार्थियों को लक्ष्य से दूर ले जाते हैं।

2. कथनों में निरंतरता या तारतम्य का अभाव (Lacking Continuity in Statement)—इस प्रकार के व्यवहार में किसी संप्रत्यय अथवा प्रनियम की व्याख्या हेतु प्रयोग में लाए जानेवाले कथनों में निरंतरता या तारतम्य का अभाव पाया जाता है। इन कथनों को जोड़ने के लिए जो वाक्य अथवा शब्द होते हैं या तो उन्हें नदारद पाया जाता है अथवा कथनों में पारस्परिक संबंद्धता और क्रम-संबंधी अभाव नज़र आता है।

3. प्रवाहिकता का अभाव (Laking fluency)—जितने कथन किसी संप्रत्यय अथवा सिद्धांत की व्याख्या करने के लिए प्रयोग में लाए जाएँ उनमें बिना किसी रुकावट के एक स्वाभाविक गति और प्रवाह देखने को मिलना चाहिए। इसका अभाव होने पर शिक्षक व्यवहार में निम्न बातें देखने को मिलती हैं—

(i) वह स्पष्ट रूप से नहीं बोल पाता।
(ii) अपूर्ण अथवा अधूरे वाक्य बोलता है।
(iii) वाक्य और कथन को पूरा न कर बीच में ही उसे नए सिरे से बोलने और सुधारने का प्रयत्न करता है।
(iv) अस्थिर विचारों और अनुपयुक्त शब्दों एवं प्रश्नों का प्रयोग करता है।

4. अनुपयुक्त शब्दावली, अस्पष्ट शब्दों और मुहावरों का प्रयोग (Using Inappropriate vocabulary, vague words and phrases)—इस प्रकार के अवांछित अध्यापक-व्यवहार में निम्न बातें शामिल हो सकती हैं—

(i) विद्यार्थियों के लिए सर्वथा अपरिचित अथवा उनके स्तर से अधिक कठिन शब्दावली का प्रयोग।
(ii) ऐसे अस्पष्ट और निरर्थक शब्दों का प्रयोग करना जिनसे व्याख्या कार्य में बाधा पहुँचे जैसे मतलब यह है कि, अर्थात, मसलन, हालाँकि, वास्तव में, संभवतया, बिलकुल, समझे कि नहीं, यह जानते ही हो, आदि।
(iii) गलत और बिना मौके के अनुपयुक्त मुहावरों का प्रयोग करना।

तालिका 16.2

व्याख्या कौशल संबंधित निरीक्षण अनुसूची एवं रेटिंग स्केल

(Observation Schedule Cum Rating Scale for the Skill of Explaining)

छात्राध्यापक का नाम—

विषय : उपविषय :

कक्षा : सत्र : शिक्षण / पुनः शिक्षण

दिनांक : पर्यवेक्षक :

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

टैलियाँ और विशेष निरीक्षण (Tallies and Specific observation)	व्यवहार घटक (Component of Behaviour)	रेटिंग स्केल : गुणात्मक मूल्यांकन (Qualitative Evaluation)
	वांछित व्यवहार (Desirable behaviour)	निराशाजनक से अत्यधिक सर्वोत्तम (Extremely weak to Excellent)
हाँ / नहीं	1. उपयुक्त प्रारंभिक कथनों का प्रयोग।	0 1 2 3 4 5 6
हाँ / नहीं	2. उपयुक्त निष्कर्ष कथनों का प्रयोग	0 1 2 3 4 5 6
टैलियाँ लगाना	3. व्याख्या सेतुओं (links) का प्रयोग।	0 1 2 3 4 5 6
हाँ / नहीं	4. आवश्यक बिंदुओं पर ध्यान देना	0 1 2 3 4 5 6
हाँ / नहीं	5. बोध-परीक्षण	0 1 2 3 4 5 6
	अवांछित व्यवहार (Undesirable Behaviour)	अत्यधिक—बिलकुल नहीं
टैलियाँ लगाना	1. निरर्थक कथनों का प्रयोग	0 1 2 3 4 5 6
टैलियाँ लगाना	2. कथनों में निरंतरता या तारतम्य का अभाव या तारतम्य शब्दावली का प्रयोग	0 1 2 3 4 5 6
हाँ / नहीं	3. प्रवाहिकता का अभाव	0 1 2 3 4 5 6
टैलियाँ लगाना	4. अनुपयुक्त शब्दावली का प्रयोग	0 1 2 3 4 5 6
टैलियाँ लगाना	5. निरर्थक एवं अस्पष्ट शब्दों का प्रयोग	0 1 2 3 4 5 6
टैलियाँ लगाना	6. अनुपयुक्त एवं बिना अवसर मुहावरों का प्रयोग	0 1 2 3 4 5 6

व्याख्या कौशल के अभ्यास के लिए आदर्श सूक्ष्म पाठ-योजना
(Micro-teaching Plan for Practising Skill of Explaining)

छात्राध्यापक का अनुक्रमांक — कक्षा—नवम

विषय—हिंदी — अवधि—6 मि.

उपविषय—''सूर की काव्यगत विशेषताएँ'' — सत्र—शिक्षण

छात्राध्यापक—बच्चो कल हमने सूरदास जी द्वारा रचित दो पदों का अध्ययन किया था। आज हम उन्हीं के आधार पर सूरदास जी की काव्यगत विशेषताओं का अध्ययन करेंगे।

सूरदास जी की प्रमुख रचना 'सूरसागर' है जोकि 12 स्कंधों में विभक्त है और इन 12 स्कंधों में कुल 4032 पद हैं। उनकी दूसरी रचना 'साहित्यलहरी' मानी जाती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सूरदास जी ने अपनी रचनाओं में प्रमुख रूप से श्रीकृष्ण की लीलाओं का चित्रण किया है। विशेषकर श्रीकृष्ण की बाललीला का वर्णन तो इतना सजीव किया है कि पढ़कर ऐसा लगता है जैसे श्रीकृष्ण हमारे सामने अपनी बालसुलभ क्रीडाएँ प्रदर्शित कर रहे हैं। ये पद वात्सल्य रस के अनुपम उदाहरण हैं। इसके अतिरिक्त शृंगार रस का चित्रण भी सूर ने अपनी रचनाओं में किया है। उनके द्वारा किया गया गोपी विरह का वर्णन वियोग शृंगार का अतुलनीय उदाहरण है।

सूर ने अपनी रचनाओं में ब्रजभाषा का प्रयोग किया है। वैसे तो सूर की शैली जयदेव और विद्यापति की तरह गेय शैली है परंतु उनकी शैली काव्य और संगीत के अद्भुत समन्वय के कारण बड़ी ही निराली है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सूर हिंदी साहित्यकारों के जगमगाते हुए नक्षत्र हैं।

अच्छा बच्चो अब मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगी, आप सोचकर उनके उत्तर देना।

छात्राध्यापिका क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ
1. बच्चो सूरदास जी की रचनाओं के नाम बताओ।	सूरसागर, सूर लहरी
2. सूर ने अपनी रचनाओं में प्रमुख रूप से किसका वर्णन किया है ?	श्रीकृष्ण का
3. सूर ने किस रस का सजीव चित्रण किया है ?	वात्सल्य रस का
4. सूर ने किस भाषा में काव्य रचना की ?	ब्रज भाषा में
5. सूर ने शृंगार रस के किस पक्ष का अत्यंत सुंदर चित्रण किया है ?	वियोग शृंगार का

B. उद्दीपक परिवर्तन कौशल
(Skill of Stimulus Variation)

अर्थ (Meaning of the Skill)—सामान्यतया एक शिक्षक अपने विद्यार्थियों से कोई अपेक्षित अनुक्रिया (Response) की प्राप्ति के लिए किसी विशेष उद्दीपक (Stimulus) का प्रयोग करता है। प्रश्न पूछना, श्यामपट्ट की ओर इशारा करना, चित्र या वस्तु दिखाना आदि इसी प्रकार के उद्दीपक हैं जिनकी सहायता से वह विद्यार्थियों का ध्यान अपनी ओर तथा विषयवस्तु की ओर आकर्षित तथा केंद्रित करने का प्रयास करता है। उसका यह प्रयास उस मदारी के समान होता है जो कई प्रकार के साधन अपनाकर दर्शक-वर्ग को अपनी ओर आकर्षित करता है और फिर उनके ध्यान तथा रुचि को अपने कार्यों में बनाए रखता है। उसके इन सब कार्यों में एक बात देखने को मिलती है कि न तो वह ध्यान आकर्षित करने या रुचि बनानेवाले किसी साधन या करतब को काफी लंबे समय तक दिखाने का प्रयास करता है और न वह हर समय एक जैसे करतब दिखाता है। अपने साधनों या करतबों में आवश्यकतानुसार परिवर्तन लाने में ही उसकी सफलता निहित होती है। ठीक यही बात शिक्षक और उसके शिक्षण पर भी लागू होती है। किसी एक उद्दीपक को लंबे समय तक उपयोग करने अथवा उसकी पुनरावृत्ति करते रहने से उसकी प्रभावशीलता समाप्त हो जाती है। अरुचि होने अथवा ध्यान हटने का भी वह कारण बन सकता है। इस अवस्था में उद्दीपकों के प्रयोग में परिवर्तन लाना,अध्यापक के लिए उपयोगी सिद्ध होता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है। इस तरह से उद्दीपक परिवर्तन कौशल से अभिप्राय उस शिक्षण तकनीक अथवा कौशल से है जिसके द्वारा एक अध्यापक अपने विद्यार्थियों का ध्यान कक्षा-गतिविधियों की ओर आकर्षित एवं केंद्रित करने हेतु उपयोग में लाए जानेवाले विभिन्न उद्दीपकों के प्रयोग में अपेक्षित परिवर्तन लाने में अधिक-से-अधिक सफल हो सकता है।

कौशल घटक (Component of the Skill)

उद्दीपक परिवर्तन कौशल में शिक्षण व्यवहार संबंधी निम्न घटकों का समावेश होता है—

(1) संचलन, (2) हाव-भाव, (3) वाक-संरूप परिवर्तन, (4) केंद्रण, (5) अंत:क्रिया शैली परिवर्तन, (6) मौन विराम, (7) मौखिक-दृश्य बदलाव, (8) विद्यार्थियों का क्रियात्मक सहयोग।

आइए अब इन घटकों का अर्थ समझा जाए।

1. संचलन (Movement)—गतिशील वस्तुएँ स्थिर वस्तुओं की अपेक्षा ज्यादा अच्छी तरह से ध्यान आकर्षित करती हैं। इस स्थिति में कक्षा में पढ़ाते समय एक अध्यापक को कभी भी एक ही जगह, एक ही स्थिति में रहकर नहीं पढ़ाना चाहिए। उसे आवश्यकतानुसार हिल-डुलकर, इधर-उधर चलकर हाथ-पैर हिलाकर, खड़े होने की स्थिति में परिवर्तन लाकर अपने शारीरिक संचलन (Physical movements) में पर्याप्त विविधता लाने का प्रयत्न करना चाहिए। परंतु यहाँ इस बात का ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिए कि अनावश्यक इधर-उधर घूमने, हिलने-डुलने और बहुत अधिक संचलन से बजाए लाभ के हानि की अधिक संभावना होती है। अध्यापक की ऐसी गतिविधियाँ हास्य अथवा ध्यान भंग करने का कारण बन सकती हैं। अत: एक अध्यापक को उपयुक्त संचलन व्यवहार में पर्याप्त कुशलता अर्जित करने का प्रयत्न करना चाहिए।

2. हाव-भाव (Gestures)—अपने शिक्षण में अध्यापक जो बात अपने विद्यार्थियों से मौखिक रूप में कहना चाहता है, उसमें उसके हाव-भाव और मुद्रा का काफी सहयोग रहता है। यह अशाब्दिक और संकेतमयी भाषा वह सब कुछ कह जाती है, जिसे और तरह से संप्रेषित करना उतना संभव नहीं होता। बहुत बड़ा, बहुत छोटा, गोल, चपटा आदि वह सब बताने के लिए एक अध्यापक हाथों के संकेत से बहुत अच्छी अभिव्यक्ति कर सकता है। संचालन, मुखमुद्रा, हाथ-पैरों तथा अन्य अंगों द्वारा किए गए संकेत एवं इशारे आदि सभी इस श्रेणी में आते हैं। इनके द्वारा छात्रों के ध्यान को क़क्षा शिक्षण में आकर्षित एवं केंद्रित करने का कार्य अच्छी तरह से किया जा सकता है।

3. वाक-संरूप परिवर्तन (Change in Voice)—इस कौशल घटक का संबंध उस शिक्षण व्यवहार से है जिसके अंतर्गत एक शिक्षक अपनी आवाज़ में चढ़ाव-उतार लाने, उसकी गति को कम या अधिक करने और अपने बोलने या उच्चारण के ढंग में विशेष परिवर्तन लाने से संबंधित क्रियाएँ करता है। वाक-कला में लाए गए परिवर्तन विद्यार्थियों का ध्यान कक्षा-कार्य की ओर आकर्षित एवं केंद्रित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

4. केंद्रण (Focusing)—इस घटक का संबंध व्यवहार संबंधी उन क्रियाओं से है जिनके द्वारा विद्यार्थियों का ध्यान वस्तु, शब्द, विचार, संप्रत्यय या प्रनियम आदि किसी विशेष बिंदु पर केंद्रित करने में सहायता मिलती है। इस प्रकार की व्यवहार क्रियाएँ निम्नलिखित हो सकती हैं—

(a) मौखिक कथनों का प्रयोग जैसे—इस मानचित्र में यहाँ देखिए, श्यामपट्ट पर लिखे वाक्य में इस शब्द पर विचार कीजिए आदि।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

(b) हाव-भाव (Gestures) का प्रयोग।
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
(c) मौखिक कथन और हाव-भाव दोनों का प्रयोग।

5. अंत:क्रिया शैली परिवर्तन (Change in interaction styles)—कक्षा में चल रही संप्रेषण प्रक्रिया (Communication Process), अंत:क्रिया (Interaction) कहलाती है। इस अंत:क्रिया के मुख्यतया तीन रूप अथवा शैलियाँ देखने को मिलती हैं—

(i) अध्यापक-विद्यार्थी अंत:क्रिया (Pupil-teacher interaction)—इसमें अध्यापक और किसी एक विद्यार्थी के बीच संप्रेषण चलता है।

(ii) अध्यापक-कक्षा अंत:क्रिया (Teacher-class interaction)—इसमें किसी एक छात्र के स्थान पर संपूर्ण कक्षा के साथ अध्यापक का संप्रेषण चलता है।

(iii) विद्यार्थी-विद्यार्थी अंत:क्रिया (Pupil-Pupil interaction)—इसमें संप्रेषण क्रिया विद्यार्थियों के बीच ही चलती है। यहाँ अध्यापक का कार्य तो ऐसी परिस्थितियाँ पैदा करना और इस क्रिया पर उचित नियंत्रण रखना होता है।

एक प्रकार की कक्षा अंत:क्रिया शिक्षण अधिगम को नीरस और प्रभावहीन बना सकती है। अत: एक अध्यापक को अंत:क्रिया प्रयोग में विविधता लाने की कला में पर्याप्त कुशलता अर्जित करने का प्रयत्न करना चाहिए।

6. मौन-विराम (Pausing)—पढ़ाते-पढ़ाते अगर कोई अध्यापक अचानक ही थोड़ी देर के लिए मौन धारण कर ले और इस प्रकार उसके शिक्षण में कुछ देर के लिए विराम आ जाए तो इस क्रिया को मौन-विराम की संज्ञा दी जाती है। ध्यान आकर्षित एवं केंद्रित करने की यह एक उपयोगी तकनीक है। यह एक ऐसी ही बात है कि कमरे में टिक-टिक करती हुई दीवारघड़ी अगर एकदम चुप हो जाए तो हमारा ध्यान बरबस उसकी ओर आकर्षित हो जाता है। इस दृष्टि से एक अध्यापक को मौन-विराम युक्ति का कक्षा-शिक्षण में ध्यान आकर्षित एवं केंद्रित करने हेतु प्रयोग में लाने का अभ्यास करना चाहिए। साधारणतया इस दिशा में दो या तीन सैकेंड का अल्प मौन ही अधिक प्रभावशाली रहता है।

7. मौखिक-दृश्य बदलाव (Aural-visual Switching)—अपने कक्षा शिक्षण में प्राय: या तो अध्यापक मौखिक रूप से अपनी बात कहता है अथवा इसके लिए दृश्य-साधनों का प्रयोग करता है। इन दोनों में से किसी एक ही माध्यम का लगातार प्रयोग पाठ को नीरस एवं प्रभावहीन बना सकता है। अत: एक अध्यापक को अभिव्यक्ति के इन माध्यमों में यथानुकूल परिवर्तन लाते रहना चाहिए। इन परिवर्तनों के निम्न तीन रूप हो सकते हैं—

(i) मौखिक से दृश्य (From aural to visual)

(ii) दृश्य से मौखिक (From visual to aural)

(iii) मौखिक और दृश्य दोनों माध्यमों का एक साथ प्रयोग

8. विद्यार्थियों का क्रियात्मक सहयोग (Physical involvement of the students)—कक्षा शिक्षण में विद्यार्थी कई तरह से अपना क्रियात्मक सहयोग प्रदान करते हैं। उनको श्यामपट्ट पर कुछ लिखने अथवा समझने के लिए बुलाया जाता है, प्रयोगों एवं परीक्षणों में उनकी सहायता ली जाती है, दृश्य-श्रव्य सामग्री और साधनों के प्रयोग में भी वे आवश्यक मदद पहुँचाते हैं और किसी शिक्षण संप्रत्यय या विचार से संबंधित अभिनय / रसानुभूति अथवा क्रिया-पाठों में अपना सहयोग प्रदान करते हैं आदि। इस प्रकार के विभिन्न क्रियात्मक सहयोगों में यथेष्ट विविधता एवं परिवर्तन लाने से एक अध्यापक को शिक्षण वस्तु पर विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित एवं केंद्रित करने में पर्याप्त सहायता मिल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

सकती है। अत: शिक्षण कौशल के रूप में इस घटक का भी पूर्ण अभ्यास किया जाना चाहिए।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तालिका 16.3

उद्दीपक परिवर्तन कौशल संबंधी निरीक्षण अनुसूची एवं रेटिंग स्केल

(Observation Schedule cum Rating Scale for the Skill of Stimulus Variation)

उद्दीपक परिवर्तन कौशल के अभ्यास हेतु सूक्ष्म शिक्षण पाठों के पर्यवेक्षण एवं मूल्यांकन के लिए रेटिंग स्केल युक्त निरीक्षण अनुसूची का निम्न प्रारूप काम में लाया जा सकता है—

अध्यापक का नाम :—

कक्षा : उपविषय :—

सत्र : शिक्षण/पुन: शिक्षण पर्यवेक्षक :—

टैलियाँ (Tallies)	व्यवहार घटक (Component of Behaviour)	रेटिंग (व्यवहार घटकों के संदर्भ में गुणात्मक मूल्यांकन) अत्यधिक..................सर्वोत्तम निराशाजनक
अलग-अलग व्यवहार घटकों की आवृत्ति के संदर्भ में टैलियाँ लगाना	1. संचलन	0 1 2 3 4 5 6
	2. हाव-भाव	0 1 2 3 4 5 6
	3. वाक-संरूप परिवर्तन	0 1 2 3 4 5 6
	4. केंद्रण	0 1 2 3 4 5 6
	5. अंत:क्रिया शैली परिवर्तन	0 1 2 3 4 5 6
	6. मौन-विराम	0 1 2 3 4 5 6
	7. मौखिक-दृश्य बदलाव	0 1 2 3 4 5 6
	8. विद्यार्थियों का क्रियात्मक सहयोग	0 1 2 3 4 5 6

उद्दीपक परिवर्तन कौशल के अभ्यास के लिए आदर्श सूक्ष्म पाठ-योजना

(Micro Lesson Plan for the Practice of the Skill of Stimulus Variation)

छात्राध्यापिका का नाम — कक्षा नवम

विषय—हिंदी (पद्य) — अवधि 6 मि.

उपविषय—'सूर की काव्यगत विशेषताएँ' — दिनांक —

सत्र — शिक्षण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छात्राध्यापिका क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ
—बच्चो पिछले कालांश में आपने सूर के पदों का अध्ययन किया था। उन्हीं के आधार पर आज हम सूर की काव्यगत विशेषताओं का अध्ययन करेंगे।	छात्र ध्यान से सुनते हैं।
(श्यामपट्ट के समीप जाकर उपविषय लिखती है) एक चार्ट पर लिखी पंक्तियाँ दिखाते हुए तथा पंक्ति पढ़कर ''मैया मोरी कबहुँ बढ़ेगी चोटी''	अवलोकन छात्र देखते हैं और सुनते हैं
—(सारी कक्षा से) बच्चो वह पद किसके द्वारा लिखा गया है ? (मौन)	
— रमा—तुम बताओ !	सूरदास द्वारा
—गीता से—सूर द्वारा रचित कोई अन्य पद बताओ (छा. आ. गीता द्वारा बताई गई पंक्ति को श्यामपट्ट पर लिखती है।)	गीता बताती है— ''मैया मोरी मैं नहिं माखन खायो''
सारी कक्षा से—सूर ने अपनी रचनाओं में मुख्य रूप से किसका वर्णन किया है ?	श्रीकृष्ण का
—मीना अब तुम बताओ सूरदास ने श्रीकृष्ण के किस रूप का अत्यंत सुंदर चित्रण किया है ?	बाल रूप का
—छात्राध्यायपिका—(श्री कृष्ण का मक्खन खाते हुए चित्र दिखाते हुए) बच्चो सूरदास जी ने अपने पदों में श्रीकृष्ण की बाललीला का इतना सुंदर वर्णन किया है जिसे पढ़ते ही हमारे सम्मुख वह चित्र सजीव हो उठता है। (हाथों को घुमाते हुए) ऐसा लगता है मानो श्रीकृष्ण हमारे सामने बाललीला कर रहे हैं।	छात्र चित्र देखते हैं और अ. कथन को ध्यान से सुनते हैं।
—अच्छा श्रीकृष्ण की बाललीला का कोई अन्य पद सुनाओ ! (गीता से श्यामपट्ट पर पद लिखने को कहती है) (गीता श्यामपट्ट पर पद लिखती है)	एक छात्रा पद सुनाती है ''मैया मोहि दाऊ बहुत खिझायौ''
—बच्चो बताओ बाललीला के पदों में किस रस का वर्णन किया गया है ?	वात्सल्य रस का
—शाबाश, अच्छा ! यह बताओ सूरदास ने अपनी रचना में किस भाषा का प्रयोग किया है ? (मौन-विराम) छा. अ. कथन—सूरदास ने ब्रजभाषा में काव्य-रचना की है।	ध्यान से सुनते हैं।

C. प्रश्न कौशल (Skill of Questioning)

अर्थ एवं परिभाषा (Meaning and Definition)

प्रश्न पूछना एक ऐसी कला है जो प्राचीन काल से ही शिक्षा देने के लिए प्रयोग में लाई जा रही

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है। जिस समय मुद्रण कला का आविष्कार नहीं हुआ था तब गुरु अपने शिष्यों को विभिन्न प्रश्नों के द्वारा ही शिक्षा दिया करते थे। आज के समय में भी, जबकि शिक्षा के क्षेत्र में इतने आधुनिक तथा वैज्ञानिक तकनीकी उपकरणों का प्रयोग किया जाने लगा है, प्रश्न कला का महत्त्व कम नहीं हुआ है बल्कि कक्षा अंत:क्रिया की दृष्टि से और भी ज्यादा हो गया है। कक्षा में विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान की जानकारी, विद्यार्थियों के ज्ञान वं अवबोध का स्तर, उनकी विषय के प्रति रुचि प्राप्त ज्ञान का स्तर, शिक्षण विधि को सफलता तथा अपने अध्यापन की प्रभावशीलता आदि की जानकारी प्रश्नों के द्वारा ही प्राप्त की जाती है। वास्तव में प्रश्न कौशल अध्यापक के लिए एक ऐसा उत्तम साधन है जिसके द्वारा अध्यापक तथा छात्र में उचित अंत:क्रिया होती है और छात्रों को पढ़ने के लिए एवं कक्षा में ध्यान केंद्रित करेन के लिए प्रेरित किया जा सकता है। इस प्रकार से शिक्षण की संपूर्ण प्रक्रिया प्रश्न पूछने की कला से संबंधित है। बोसिंग (Bossing) महोदय का कहना है—''प्रश्न करने की कला का महत्त्व स्वीकारे बिना कोई भी शिक्षण विधि सफलतापूर्वक लागू नहीं की जा सकती है।''

अत: एक शिक्षक को अन्य कौशलों की तरह प्रश्न पूछने के कौशल में पारंगत होना आवश्यक है। शिक्षण प्रशिक्षण से इस कौशल को शीघ्रतापूर्वक तथा आसानी से सीखा जा सकता है। उपरोक्त वर्णन के आधार पर अगर आगे सोचा जाए तो प्रश्न कौशल की परिभाषा निम्न शब्दों में दिया जाना ठीक रहेगा।

कक्षा में छात्रों का ध्यान शिक्षण बिंदुओं पर केंद्रित रखने के लिए, छात्रों को सक्रिय बनाए रखने के लिए, उनके ज्ञान तथा अभिरुचि का परीक्षण करने के लिए उनकी विचाराभिव्यक्ति शील, स्मृति एवं कल्पनाशीलता को प्रेरित करने के लिए तथा शिक्षण के दौरान सीखी गई पाठ्यवस्तु का मूल्यांकन करने के लिए शिक्षक द्वारा—''सार्थक, संक्षिप्त, स्पष्ट विशिष्ट व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध प्रश्नों का कक्षा में समुचित रूप से प्रस्तुतीकरण ही प्रश्न कौशल कहा जाता है।''

प्रश्न कौशल के घटक (Elements or components of questioning skill)

प्रश्न कौशल के अर्थ को यदि ध्यान से देखा जाए तो उससे इसके घटकों का ज्ञान हो जाता है। इसमें हमें प्रश्न कौशल के दो पहलू दृष्टिगोचर होते हैं पहला है प्रश्नों का निर्माण और दूसरा है प्रश्नों का कक्षा में प्रस्तुतीकरण। अत: प्रश्न कौशल के घटकों को हम दो वर्गों में विभाजित कर सकते हैं। आगे हम इनका वर्णन कर रहे हैं।

(क) प्रश्न निर्माण—प्रश्नों का निर्माण करते समय हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि कक्षा के सभी विद्यार्थी प्रश्नों को आसानी से समझ जाएँ। प्रश्नों के निर्माण से संबंधित निम्न तत्वों को ध्यान में रखना चाहिए :—

(i) सार्थकता एवं प्रासंगिकता (Relevancy) प्रश्न पाठ्यवस्तु से संबंधित होना चाहिए। शिक्षक को ऐसा प्रश्न पूछना चाहिए जो पढ़ाई गई पाठ्यवस्तु से संबंधित हो। अप्रासंगिक तथ्यों वाले प्रश्नों से छात्र भ्रमित हो जाते हैं और प्रश्न का उत्तर नहीं दे पाते हैं।

(ii) स्पष्टता (Clarity)—प्रश्न स्पष्ट भाषा में पूछना चाहिए। भाषा के माध्यम से ही हम अपनी बात बच्चों के सामने रखते हैं। यदि उसमें स्पष्टता नहीं होगी तो वे नहीं समझ पाएँगे कि शिक्षक उनसे क्या पूछ रहा है?

(iii) संक्षिप्तता (Precise or concisness) प्रश्न छोटे होने चाहिए। उनमें अनावश्यक शब्दों का प्रयोग नहीं होना चाहिए। अच्छा प्रश्न वही है जिसमें नपे-तुले शब्दों का प्रयोग करते हुए छात्र को सोचने तथा उत्तर देने के लिए प्रेरित किया जाए। जैसे—''क्या आप बता सकते हैं, रामचरित मानस की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
रचना किसने की थी?'' इस प्रकार के शब्दों के प्रयोग से प्रश्न अनावश्यक रूप से लंबा हो जाता है तथा छात्रों का समय भी नष्ट होता है। इस प्रश्न को शुद्ध और संक्षिप्त रूप में इस प्रकार पूछा जा सकता है— ''रामचरित मानस की रचना किसने की थी?'' इसके साथ यह भी ध्यान रखा जाए कि संक्षिप्तता के लिए प्रश्न इतना छोटा भी न कर दिया जाए कि छात्र प्रश्न को ही न समझ सकें। जैसे:—''राम क्या है।'' इसमें यह स्पष्ट नहीं कि क्या बताना है। प्रश्न का सही रूप है—''व्याकरण की दृष्टि से राम शब्द क्या है?'' अत: प्रश्न संक्षिप्त होने के साथ स्पष्ट भी होना चाहिए।

(iv) विशिष्टता (Specificity)—विशिष्टता से अभिप्राय है प्रश्न का विशेष विषयवस्तु से संबंध। एक प्रश्न में एक ही बात पूछी जानी चाहिए। यदि एक प्रश्न में एक से अधिक बातें पूछी जाएँगी तो छात्र परेशानी में पड़ जाएँगे और ठीक प्रकार से उत्तर नहीं दे पाएँगे। विशिष्टता के लिए एक और बात का ध्यान रखना चाहिए कि प्रश्न ऐसा हो जिसका एक निश्चित उत्तर हो। अनेक उत्तरवाले प्रश्नों का उत्तर देने में छात्र गड़बड़ा जाएँगे और सही उत्तर नहीं दे पाएँगे। जैसे—1. ''मनुष्य को जीवन के लिए किन-किन चीजों की आवश्यकता होती है और कैसे?'' इस बात को पूछने के लिए प्रश्न इस प्रकार बनाना चाहिए। ''मनुष्य को जीवित रहने के लिए किन-किन चीजों की आवश्यकता होती है? (भोजन, जल, वायु आदि) 2. इन आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए क्या करना चाहिए?''

(v) व्याकरणिक शुद्धता (Grammatical Correctness)—प्रश्नों का निर्माण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि प्रश्न की भाषा व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध हो। यदि प्रश्न की भाषा गलत होगी तो छात्र प्रश्न को नहीं समझ पाएँगे और भ्रमित हो जाएँगे। ऐसा होने पर छात्र या तो उत्तर नहीं दे पाएँगे या उत्तर सोचने में एड़ी-चोटी का जोर लगाएँगे जिससे समय व्यर्थ नष्ट होगा। इससे प्रश्नों की प्रवाहिकता पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। जैसे—आप कहाँ पढ़ते हो? इस प्रश्न को ठीक भाषा में इस प्रकार कहा जा सकता है—''आप किस विद्यालय में पढ़ते हैं?''

प्रश्न निर्माण करते समय काल, कारक, वचन, लिंग आदि का ध्यान भी रखना चाहिए। जैसे— ''सम्राट अशोक का जन्म कहाँ हुआ है?'' यह प्रश्न काल की दृटि से ठीक नहीं। इस प्रश्न के लिए भूतकाल का प्रयोग करना चाहिए, जैसे—''सम्राट अशोक का जन्म कहाँ हुआ था?''

(ख) प्रश्नों का प्रस्तुतीकरण (Presentation of questions in the Class) :—कक्षा में बच्चों से प्रश्न पूछे जाते हैं। प्रश्न पूछने की प्रक्रिया यदि ठीक होगी तो बच्चे प्रश्न को आसानी से समझ जाते हैं और उसका उत्तर शीघ्र ही दे देते हैं। प्रश्न पूछने की उचित प्रक्रिया की दृष्टि से निम्न तत्वों को ध्यान में रखना चाहिए।

(i) अध्यापक का स्वर (Voice of the teacher)— : प्रश्न पूछते समय अध्यापक की आवाज इतनी ऊँची होनी चाहिए कि कक्षा के सभी बच्चों को प्रश्न का प्रत्येक शब्द साफ-साफ सुनाई दे। प्रश्न के भाव को स्पष्ट करने के लिए भी अपने स्वर को ऊँचा-नीचा करना चाहिए।

(ii) प्रश्न पूछने की गति (Speed and pause in asking questions) :— प्रश्न पूछते समय अध्यापक को यह ध्यान रखना चाहिए कि उत्तर देने में छात्र को कुछ क्षण सोचने के लिए चाहिए क्योंकि बच्चों की सोचने की गति अध्यापक की गति से धीमी होती है। अत: एक प्रश्न पूछने के बाद कुछ क्षण बच्चों को सोचने के लिए देने के उद्देश्य से अध्यापक को पूरी कक्षा में इधर-उधर देखना चाहिए फिर छात्रों से उत्तर बताने का आदेश देना चाहिए। जैसे :—

अध्यापक—सूरदास जी की प्रमुख रचना का नाम बताओ।

(कुछ क्षण इधर-उधर देखकर गीता की ओर इशरा करता है)

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गीता—सूरदास जी की प्रमुख रचना सूर सागर है।

अध्यापक—ठीक। सूरसागर की रचना सूरदास जी ने किस भाषा में की?

(पुन: पूरी कक्षा पर दृष्टिपात करते हुए मधु की ओर इशारा करके)

(iii) प्रश्नों का वितरण (Distibution of questions) : प्रश्न पूरी कक्षा को संबोधित करके पूछना चाहिए। किसी एक बच्चे को संबोधित करके नहीं। कक्षा के सभी विद्यार्थियों को यह लगना चाहिए कि प्रश्न उन सभी से पूछा जा रहा है। पूछने के बाद कभी उत्तर देने के इच्छुक छात्र से तो कभी अनिच्छुक छात्र से उत्तर देने के लिए कहना चाहिए। सभी छात्रों को यह महसूस होना चाहिए कि उनमें से किसी से भी उत्तर देने के लिए कहा जा सकता है। इससे छात्रों का ध्यान बराबर कक्षा में विषय की तरफ बना रहता है।

(iv) अध्यापक व्यवहार (Teacher Behaviour) :—प्रश्न पूछते समय अध्यापक का व्यवहार एक दम स्वाभाविक होना चाहिए। उसकी वाणी शांत, संयत तथा मधुर होनीं चाहिए। अध्यापक को न तो प्रश्न दोहराना चाहिए और न ही छात्रों के द्वारा दिए गए उत्तरों को दोहराना चाहिए। इससे समय नष्ट होता है और छात्रों में एक बार में प्रश्न न सुनने की आदत-सी पड़ जाती है। हाँ, यदि जरूरत महसूस हो तो छात्रों को पुनर्बलन देने के लिए ही उत्तर को दोहराना चाहिए।

बच्चों के मानसिक स्तर का ध्यान रखते हुए रोचक तथा नवीनता लिए हुए प्रश्न पूछे जाने चाहिए। एक बात का और ध्यान रखना चाहिए कि 'हाँ' या 'ना' में उत्तर देनेवाले प्रश्न भी नहीं पूछे जाएँ। जैसे—"क्या तुलसीदास जी उच्चकोटि के कवि थे?" इस प्रकार के प्रश्नों में बच्चे उत्तर का अंदाजा लगाकर हाँ या नहीं कह देते हैं। सोचने का प्रयास नहीं करते हैं। यह प्रश्न इस प्रकार से पूछा जा सकता है—"तुलसीदास जी को उच्चकोटि का कवि क्यों माना जाता है?" इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए छात्रों को सोचना पड़ेगा तथा उदाहरण देकर उत्तर स्पष्ट करना होगा।

इस प्रकार से यह स्पष्ट है कि प्रभावशाली शिक्षण के लिए अध्यापक में प्रश्न कौशल का होना आवश्यक है और इसे अभ्यास द्वारा अर्जित किया जा सकता है।

प्रश्न कौशल का अभ्यास करने के लिए आगे एक सूक्ष्म पाठ योजना बनाकर दिखाई जा रही है। छात्राध्यापक इसी प्रकार से अन्य प्रकरणों पर पाठ-योजना का निर्माण कर सकते हैं।

प्रश्न कौशल के अभ्यास के लिए सूक्ष्म पाठ-योजना

छात्राध्यापिका का अनुक्रमांक / नाम	कक्षा छठी
विषय — हिंदी (व्याकरण)	अवधि 6 मि.
उपविषय — सर्वनाम	दिनांक —
	शिक्षणसत्र — शिक्षण

अध्यापक क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ
—बच्चो संज्ञा की परिभाषा बताओ।	बच्चे उत्तर देते हैं— किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध कराने-वाले शब्दों को संज्ञा कहते हैं।
—रमा संज्ञा के कुछ उदाहरण दो।	राम, पुस्तक, आगरा, रोहतक आदि।
—गीता ये शब्द संज्ञा क्यों हैं?	क्योंकि ये शब्द व्यक्ति, वस्तु और स्थान का बोध करा रहे हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

—एक चार्ट पर लिखे हुए तीन वाक्य बच्चों को दिखाकर पूछती है कि इनमें बच्चों को क्या त्रुटि नजर आ रही है—	
मोहन छठी कक्षा में पढ़ता है। मोहन आज अस्वस्थ है। मोहन की माँ मोहन को डॉक्टर के पास ले गई है।	इन वाक्यों में मोहन शब्द बार-बार आया है। इससे ये वाक्य अटपटे लगते हैं और इनका सौंदर्य नष्ट हो रहा है।
—पूरी कक्षा से—इन वाक्यों को प्रभावशाली बनाने के लिए इनमें क्या परिवर्तन करना चाहिए?	दूसरे वाक्य में मोहन के स्थान पर 'वह' तथा तीसरे वाक्य में मोहन के स्थान पर उसकी तथा उसको / उसे शब्द आना चाहिए।
—'मोहन' शब्द व्याकरण की दृष्टि से क्या है?	'संज्ञा'
—जो शब्द संज्ञा शब्दों की पुनरुक्ति को दूर करने के लिए उनके स्थान पर प्रयुक्त किए जाते हैं, उन्हें क्या कहते हैं?	'सर्वनाम'
—सर्वनाम शब्दों के प्रयोग से क्या लाभ होता है? मीना तुम बताओ।	(मीना हाथ उठाती है) सर्वनाम शब्द वाक्यों में होनेवाली संज्ञा की पुनरुक्ति को दूर करके उसकी सुंदरता बढ़ाते हैं।
—सर्वनाम के कुछ उदाहरण दो।	वह, उसका, उसे, तुम, मैं, हम आदि
—संज्ञा और सर्वनाम में क्या अंतर है?	संज्ञा शब्द व्यक्ति, वस्तु और स्थान का बोध कराते हैं जबकि सर्वनाम शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त किए जाते हैं।
—बच्चो! सर्वनाम शब्दों का प्रयोग संबोधन में नहीं होता है क्योंकि किसी को पुकारते समय हम उसका नाम या उपनाम लेकर ही पुकारते हैं। सर्वनाम द्वारा कभी किसी को नहीं पुकारा जाता है।	ध्यान से सुनते हैं।
—यदि तुम्हें अपने मित्र राम को बुलाना हो तो तुम कैसे पुकारोगे?	राम! सुनो या मित्र! इधर आओ।

तालिका 16.4

निरीक्षण अनुसूची एवं निर्धारण मापनी

(Observation Schedule cum Raling Scale)

छात्राध्यापक का अनुक्रमांक —

कक्षा —

विषय — हिन्दी (व्याकरण)

अवधि

उपविषय — (सर्वनाम)

दिनांक

शिक्षण कौशल — (प्रश्न कौशल)

निरीक्षक / पर्यवेक्षक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कौशल के घटक (Components of the Skill)	(Tallies)	निर्धारण मापनी (Raling Scale)
प्रश्न निर्माण (Struclure of the question)		
(i) प्रासंगिकता / सार्थकता (Relvenacy)		0 1 2 3 4 5 6
(ii) संक्षिप्तता (Conciseness)		0 1 2 3 4 5 6
(iii) स्पष्टता (Clarily)		0 1 2 3 4 5 6
(iv) विशिष्टता (Specificity)		0 1 2 3 4 5 6
(v) व्याकरणिक शुद्धता (Grammatic Correctliness)		0 1 2 3 4 5 6
प्रश्नों का प्रस्तुतीकरण (Presentation of questions)		
(i) आवाज (Voice)		0 1 2 3 4 5 6
(ii) गति एवं (Speed & विराम Pause)		0 1 2 3 4 5 6
(iii) प्रश्नों का वितरण		0 1 2 3 4 5 6
(क) पूरी कक्षा को (Whole Class)		0 1 2 3 4 5 6
(ख) उत्तर के लिए इच्छुक छात्रों को (to Student Volinters)		0 1 2 3 4 5 6
(ग) उत्तर के लिए अनिच्छुक विद्यार्थियों को To Student Non Volunteers		0 1 2 3 4 5 6

टिप्पणी (यदि कोई हो)

पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर—

नोट — निर्धारण मापनी पर बिंदु निम्न प्रदर्शन करते हैं :—

0 न्यूनतम सफलता	3 औसत सफलता
1. बहुत कम सफलता	4 औसत से कुछ अधिक सफलतां
2. कम सफलता	5 अधिक सफलता
	6. अधिकतम सफलता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दृष्टांत या उदाहरण देने का कौशल

(Skill of illustrating with examples)

कौशल का अर्थ (Meaning of the Skill)

अपने शिक्षण के दौरान अध्यापक के सामने कई बार ऐसी परिस्थितियाँ आती हैं कि अच्छे-से-अच्छे ढंग से वर्णन और व्याख्या करने से वह किसी सिद्धांत, प्रनियम, संप्रत्यय या अमूर्त विचार अपने छात्रों को स्पष्ट नहीं कर पाता। ऐसी स्थिति का सामना करने के लिए वह निम्न प्रकार आगे बढ़ सकता है—

(i) वह एक उदाहरण से अपना कार्य प्रारंभ कर सकता है और इसे किसी अमूर्त विचार अथवा संप्रत्यय को स्पष्ट करने के लिए दृष्टांत रूप में प्रयोग कर सकता है।

(ii) इसके पश्चात कुछ अन्य उदाहरणों को दृष्टांत रूप में काम में लाया जा सकता है।

(iii) इन उदाहरणों की सहायता से विचार या संप्रत्यय संबंधी कुछ विशेष नियमों और सिद्धांतों की रचना हेतु छात्रों को आवश्यक सहायता दी जा सकती है।

(iv) सामान्यीकृत नियम अथवा सिद्धांत से संबंधित कुछ अन्य उदाहरण देने के लिए छात्रों से कहा जा सकता है ताकि यह पता चल सके कि उन्होंने सिद्धांत अथवा नियम को पूरी तरह समझ लिया है या नहीं।

जिस प्रक्रिया की चर्चा ऊपर की पंक्तियों में की गई है उसका संबंध दृष्टांत कौशल के प्रयोग से है। उदाहरणों से तात्पर्य उन परिस्थितियों अथवा वस्तुओं से होता है जिनके द्वारा किसी विचार, संप्रत्यय अथवा प्रनियम के अस्तित्व का अथवा उसके प्रयोग का प्रमाण मिलता है।

उदाहरणों की सहायता से दृष्टांत देने का कार्य निम्न रूपों में संपन्न हो सकता है—

(i) शाब्दिक या मौखिक रूप जैसे तुलना करना, घटना या कहानी सुनाना।

(ii) अशाब्दिक रूप जैसे वस्तुएँ, मॉडल, चित्र, चार्ट, रेखाचित्र, मानचित्र, नमूने, प्रयोग आदि का प्रदर्शन करना।

उदाहरणों के भली-भाँति प्रयोग के लिए यह आवश्यक है कि एक अध्यापक इस कार्य को एक कौशल के रूप में अर्जित करे। उदाहरण संबंधी इस दृष्टांत कौशल की परिभाषा निम्न प्रकार दी जा सकती है :—

परिभाषा (Definition)

'दृष्टांत कौशल' किसी अमूर्त विचार, संप्रत्यय अथवा प्रनियम को समझाने और उसका उपयोग करने के लिए एक अध्यापक द्वारा अपनाई गई यह कला अथवा तकनीक है जिसके द्वारा उसे समुचित उदाहरणों के चयन करने, उनके दृष्टांत रूप में प्रयोग करने और उनके द्वारा अपने विद्यार्थियों को वांछित निष्कर्ष और सामान्यीकरण तक पहुँचाने में पूरी-पूरी सहायता मिलती है।

कौशल घटक (Components of the Skill)

दृष्टांत कौशल से संबंधित मुख्य व्यवहार घटक (Component behaviours) निम्न हैं :

1. सार्थक उदाहरणों का निर्माण (Formulating relevant examples)
2. सरल उदाहरणों का निर्माण (Formualting simple examples)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3. रोचक उदाहरणों का निर्माण (Formulating interesting examples)

4. उदाहरण देने के लिए उचित माध्यम का उपयोग (Using appropriate media for examples)

5. आगमन-निगमन उपागम का प्रयोग (Making use of Inductive-deductive approach)

आइए अब इन व्यवहारों का ठीक से अर्थ समझा जाए।

1. सार्थक उदाहरणों का निर्माण (Formulating relevant examples)—किसी उदाहरण को सार्थक तभी समझा जा सकता है जबकि वह पढ़ाए जा रहे संप्रत्यय या प्रनियम के लिए एक अच्छा दृष्टांत सिद्ध हो सके और उसकी सहायता से उस संप्रत्यय या प्रनियम को ठीक प्रकार समझा जा सके :

2. सरल उदाहरणों का निर्माण (Formulating simple examples)—सरल उदाहरणों से तात्पर्य उन उदाहरणों से है जो विद्यार्थी के पूर्व ज्ञान पर आधारित होते हैं और उनके परिपक्वन स्तर (Level of Maturing) से मेल खाते हैं। एक अध्यापक द्वारा प्रस्तुत उदाहरण इस प्रकार के हैं या नहीं, इसका अनुमान निम्न बातों से लगाया जा सकता है—

(i) शिक्षण क्रिया में विद्यार्थियों के भाग लेने का क्या स्तर है ?

(ii) उदाहरणों के प्रस्तुत करने और उन्हें प्रयोग में लाने हेतु अध्यापक द्वारा पूछे गए प्रश्नों के जो उत्तर विद्यार्थी दे रहे हैं, वे कितने सही और सार्थक हैं।

3. रोचक उदाहरणों का निर्माण (Formulating interesting examples)—एक उदाहरण को रोचक तभी कहा जा सकता है जबकि वह किसी विचार, संप्रत्यय या प्रनियम को ठीक प्रकार समझने के लिए विद्यार्थियों की रुचि, ज्ञान और जिज्ञासा को आकर्षित कर उसे बराबर बनाए रखने में सहायता कर सके। विद्यार्थियों के लिए किस प्रकार के उदाहरण रोचक होंगे यह उनकी आयु, परिपक्वता और पूर्व अनुभवों पर निर्भर करता है। कोई अध्यापक अपने शिक्षण कार्य में रोचक उदाहरण का प्रयोग कर रहा है या नहीं, इसका अनुमान विद्यार्थियों द्वारा प्रदर्शित व्यवहार और कक्षा के समग्र वातावरण और अनुशासन आदि से लगाया जा सकता है।

4. उदाहरणों के लिए उचित माध्यम का प्रयोग (Using of Appropriate media for examples)—उदाहरणों को शाब्दिक अथवा अशाब्दिक, दोनों प्रकार के विभिन्न माध्यमों जैसे कहानी, चुटकुले, मुहावरे और नमूने, मॉडल, मानचित्र तथा प्रयोग प्रदर्शन आदि के रूप में विद्यार्थियों के सामने प्रस्तुत किया जा सकता है। अच्छे परिणामों के लिए यह आवश्यक होता है कि एक विशेष उदाहरण को उसी के अनुरूप उचित माध्यम में प्रस्तुत किया जाए। यह चुनाव करने के लिए निम्न बातों की ओर ध्यान देकर चलना होता है :—

(i) पढ़ाए जाने वाले विषय अथवा उपविषय की प्रकृति।

(ii) विद्यार्थियों की आयु, परिपक्वन और विकास का स्तर।

(iii) विद्यार्थियों द्वारा अर्जित पूर्व अनुभव।

5. आगमन-निगमन उपागम का प्रयोग (Making use of Inductive-deductive approach)—दृष्टांत कौशल के उपयोग को दो मुख्य भागों में बाँटा जा सकता है—

(i) किसी संप्रत्यय को समझना अथवा किसी प्रनियम और सिद्धांत आदि की स्थापना करना।

(ii) प्रनियम की स्थापना और सिद्धांत को प्रयोग में लाना। इन दोनों में से पहले कार्य के लिए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जहाँ आगमन विधि का प्रयोग उपयुक्त रहता है वहाँ दूसरे के लिए निगमन विधि ठीक रहती है। इस तरह से पूरे कार्य को करने के लिए आगमन और निगमन दोनों विधियों अथवा उपागमों का प्रयोग करना होता है। इस दृष्टि से दृष्टांत कौशल का उचित विकास करने के लिए एक अध्यापक को आगमन और निगमन दोनों उपायों के समन्वित रूप का प्रयोग करने का पूरा-पूरा अभ्यास करना चाहिए। हिंदी शिक्षण में दृष्टांत या उदाहरण कौशल के अभ्यास हेतु किस प्रकार की सूक्ष्म पाठ योजना बनाना उपयुक्त रहेगा यह स्पष्ट करने के लिए आगे मार्गदर्शन हेतु दो सूक्ष्म पाठ-योजनाएँ प्रस्तुत की जा रही हैं।

उदाहरण देने के कौशल की सूक्ष्म पाठ योजना—1

छात्राध्यापक का अनुक्रमांक —	कक्षा-आठवीं
विषय हिंदी (व्याकरण)	अवधि-6 मि.
प्रकरण-द्वंद्व समास	सत्र — शिक्षण
	दिनांक —

छात्राध्यापक क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ
छात्राध्यापक चार्ट पर लिखा हुआ एक वाक्य बच्चों के सामने प्रस्तुत करेगा— ''रामायण में राजा-प्रजा, पिता-पुत्र, गुरु-शिष्य, भाई-भाई और स्वामी-सेवक के संबंधों का आदर्श रूप दिखाया गया है।''	बच्चे ध्यान से देखेंगे और वाक्य को पढ़ेंगे।
अध्यापक बच्चों से निम्न प्रश्न पूछेगा तथा सामासिक पद और बच्चों के उत्तर श्याम पट्ट पर लिखेगा।	बच्चे उत्तर देंगे
1. राजा-प्रजा इस पद में कौन सा शब्द छिपा हुआ है?	और
2. 'पिता-पुत्र' शब्द का विग्रह करो।	पिता और पुत्र
3. 'गुरु-शिष्य' में संबंध बताने के लिए किस शब्द का लोप हुआ है?	और
4. 'भाई-भाई' शब्द में कौन सा शब्द छिपा है?	और
5. 'स्वामी-सेवक' शब्द का विग्रह करो।	स्वामी और सेवक
अध्यापक बताएगा कि ये सभी द्वंद्व समास के उदाहरण हैं क्योंकि इनमें 'और' शब्द छिपा हुआ है।	
(इस प्रकार अध्यापक सरल उदाहरणों की सहायता से बच्चों से नियम प्रतिपादित करा सकता है।)	बच्चे नियम बताने का प्रयास करेंगे।
अध्यापक बच्चों से द्वंद्व समास का नियम बताने के लिए कहेगा— ''जिन सामासिक पदों के बीच में 'और' शब्द का	

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लोप होता है उसे द्वंद्व समास कहते हैं। इसमें दोनों पद प्रधान होते हैं।"	
अध्यापक नियम का परीक्षण और अभ्यास कराने के लिए निम्न उदाहरण प्रस्तुत करेगा और विग्रहित पदों के स्थान पर सामासिक पद बनाने के लिए कहेगा—	
गंगा-यमुना हिमालय पर्वत से निकलती हैं।	गंगा और युमना
राम रात-दिन पढ़ाई में लगा रहता है।	रात और दिन
हमें हानि-लाभ की चिंता नहीं करनी चाहिए।	हानि और लाभ
भाई-बहिन को प्यार से रहना चाहिए।	भाई और बहिन

उदाहरण कौशल की सूक्ष्म पाठ-योजना—2

छात्राध्यापक अनुक्रमांक— कक्षा-नवम

विषय — हिंदी (रचना) अवधि-6 मि.

प्रकरण — वन्यप्राणी संरक्षण सत्र-शिक्षण

दिनांक —

छात्राध्यापक क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ
अध्यापक कक्षा को एक चित्र दिखाता है जिसमें लकड़ी के लट्ठे खींचते हुए दो हाथी तथा एक आदमी खड़ा हुआ चित्रित है।	(बच्चे ध्यान पूर्वक चित्र देखते हैं।)
अध्यापक चित्र दिखाकर निम्न प्रश्न पूछता है—	बच्चे प्रश्नों का उत्तर देते हैं—
—यह हाथी क्या कर रहा है?	लकड़ी के लट्ठे को खींच रहा है।
—दूसरा हाथी क्या कर रहा है?	लकड़ी के लट्ठे को सूंड से ऊपर उठा रहा है।
—क्या यह आदमी लकड़ी के लट्ठे उठा सकता है?	नहीं
—(दूसरा चित्र दिखाते हुए जिसमें कपड़ों की भारी पोटली लादे गधा व एक बालक दिखाए गए हैं)	(बच्चे उत्सुकतापूर्वक चित्र देखते हैं)
—यह गधा क्या कर रहा है?	यह कपड़ों का भारी गट्ठर पीठ पर लादे जा रहा है।
—यह बालक इस बड़े गट्ठर को अपनी पीठ पर लेकर जा सकता है?	नहीं
—इस बालक के लिए यह गधा क्या कर रहा है?	सहायता या मदद
—और वे हाथी उस आदमी की क्या कर रहे थे?	सहायता
—तीसरा चित्र जिसमें एक ऊँट एक गाड़ी को खीच रहा है उस पर कुछ लोग बैठे हैं	(बच्चे ध्यान से चित्र देखते हैं)
—यह ऊँट क्या कर रहा है?	गाड़ी खींच रहा है।
—इस पर कितने लोग बैठे हैं?	सात लोग

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

—यह ऊँट इन लोगों की क्या कर रहा है ? अध्यापक स्पष्ट करेगा—बच्चो इस तरह हमने देखा कि ये जानवर मनुष्य की मदद करते हैं। उनमें मनुष्य से ज्यादा शक्ति होती है और इस तरह से हम अपने कार्यों के लिए उनकी शक्ति का उपयोग करते हैं। जब पशु हमारे लिए इतना उपयोगी प्राणी है तो हमें उनके प्रति प्रेम और दया का भाव रखना चाहिए। जानवरों को मारना नहीं चाहिए बल्कि उनका संरक्षण करना चाहिए।	मदद बच्चे ध्यानपूर्वक सुनते हैं।

दृष्टांत कौशल का सूक्ष्म शिक्षण पाठों के द्वारा अभ्यास कराने के दौरान निरीक्षण हेतु जो अनुसूची काम में लाई जा सकती है उसका प्रारूप कुछ निम्न प्रकार का हो सकता है

तालिका 16.5

दृष्टांत कौशल से संबंधित निरीक्षण अनुसूची एवं रेटिंग स्केल

अध्यापक का नाम :

विषय : उपविषय

कक्षा : सत्र : शिक्षण / पुन: शिक्षण

दिनांक : पर्यवेक्षक :

टैलियाँ (Tallies)	**व्यवहार घटक** (Component of Behaviour)	**रेटिंग** **(व्यवहार का गुणात्मक मूल्याँकन)** (Qualitative Evaluation of Behaviour)						
प्रत्येक व्यवहार घटक की आवृत्ति के संदर्भ में टैलियाँ लगाना		अत्यधिक.................. निराशाजनक						सर्वोत्तम
	उदाहरणों की सार्थकता	0	1	2	3	4	5	6
	उदाहरणों की सरलता	0	1	2	3	4	5	6
	उदाहरणों की रोचकता	0	1	2	3	4	5	6
	माध्यमों की उपयुक्तता	0	1	2	3	4	5	6
	विधि अथवा उपागम की उपयुक्तना	0	1	2	3	4	5	6

अध्ययन के लिए प्रश्न

1. सूक्ष्म शिक्षण से क्या अभिप्राय है ? इसकी प्रकृति एवं विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

2. विभिन्न सोपानों और उनमें निहित क्रियाओं का उल्लेख करते हुए सूक्ष्म शिक्षण प्रक्रिया का विस्तार से वर्णन कीजिए।

3. शिक्षण कौशलों की पहिचान से क्या आशय है ? हिंदी शिक्षण में अधिकतर काम में आनेवाले किन्हीं चार शिक्षण कौशलों का उल्लेख कीजिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4. प्रश्न कौशल क्या है ? एक सूक्ष्म पाठ-योजना द्वारा इस कौशल से संबंधित शिक्षण व्यवहारों के उचित विकास पर प्रकाश डालिए।

5. उद्दीपक परिवर्तन कौशल से आप क्या समझते हैं ? एक सूक्ष्म पाठ-योजना द्वारा इस कौशल से संबंधित शिक्षण व्यवहारों के उचित विकास पर प्रकाश डालिए।

6. व्याख्या कौशल के अर्थ, कौशल घटक एवं कौशल व्यवहारों के विकास पर विस्तार से चर्चा कीजिए तथा प्रतिपुष्टि एवं मूल्यांकन हेतु एक प्रारूप भी प्रस्तुत कीजिए।

7. दृष्टांत या उदाहरण देने के कौशल के अर्थ, कौशल घटक एवं कौशल व्यवहारों के विकास पर विस्तार से चर्चा कीजिए तथा प्रतिपुष्टि एवं मूल्यांकन हेतु एक प्रारूप भी प्रस्तुत कीजिए।

8. हिंदी शिक्षण में प्रयुक्त निम्न शिक्षण कौशलों के विकास हेतु उपयुक्त सूक्ष्म पाठ-योजनाएँ प्रस्तुत कीजिए।

(a) व्याख्या कौशल (Skill of Explaining)

(b) दृष्टांत कौशल (Skill of Illustration)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

17

इकाई-योजना एवं दैनिक पाठ-योजना निर्माण
(Unit Planning and Daily Lesson-Planning)

इकाई-योजना का अर्थ (Meaning of Unit-Planning)

शिक्षण एक सोद्देश्य प्रक्रिया है। शिक्षण-कार्य करते हुए अध्यापक को अपनी शिक्षण-प्रक्रिया को इस प्रकार से नियोजित करना होता है जिससे उसे शिक्षण लक्ष्यों की प्राप्ति में सफलता मिले। जिस प्रकार जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए सभी कार्यों के बारे में पहले से योजना बनानी पड़ती है, उसी प्रकार शिक्षण करते समय भी अध्यापक को शिक्षण-कार्य के बारे में पहले से पूरी योजना बनानी होती है।

जिस प्रकार जीवन में किसी वस्तु को समझने के लिए यह आवश्यक है कि पहले उसका संपूर्ण रूप हमारे सामने उपस्थित हो, फिर हम उसके एक-एक भाग को समझने का प्रयास करते हैं। ठीक इसी तरह शिक्षण-प्रक्रिया में पहले संपूर्ण पाठ्यक्रम को देखते हैं, फिर उसको छोटे-छोटे भागों में बाँटते हैं। यह पाठ्यक्रम अपने आपमें एक बड़ी इकाई है और उसके विभिन्न भाग उसकी उप-इकाइयाँ कहलाते हैं। पूरे पाठ को हम एक एकाई मान लेते हैं। पाठ की लंबाई और कालांश की अवधि के आधार पर पाठ को उप-खंडों में बाँट लेते हैं। ये उप-खंड भी उप-इकाई कहलाते हैं।

इन्हीं इकाइयों और उप-इकाइयों के आधार पर संपूर्ण पाठ्यक्रम को वार्षिक, मासिक, साप्ताहिक एवं दैनिक पाठ-योजना का आधार बनाया जाता है और शिक्षण-क्रिया को पूर्ण रूप से नियोजित किया जाता है। इस प्रकार साधारण शब्दों में इकाई-योजना का अर्थ है—"शिक्षण-सामग्री को इकाइयों में आयोजित करना।"

शिक्षण के पूरे सत्र में किस कक्षा को, किस विषय का कितना ज्ञान देना है और क्या क्रियाएँ करानी हैं, यह प्रारंभ में ही निश्चित कर लिया जाता है। इसी प्रकार यह भी निर्धारित होता है कि विद्यालय पूर्ण सत्र में कितने दिन लगेगा, पढ़ाई के लिए कितने दिन मिलेंगे तथा किस विषय को कितने घंटे मिलेंगे। इस आधार पर पूर्ण सत्र के लिए अध्यापक अपने विषय की वार्षिक योजना बना लेते हैं। इसमें विषय के पूर्ण पाठ्यक्रम को विभिन्न इकाइयों में बाँट लिया जाता है। साथ ही यह भी निर्धारित कर लिया जाता है कि हर इकाई को पढ़ाने में कितना समय लगेगा, उसके क्या उद्देश्य होंगे, उसे पढ़ाने में किन शिक्षण-विधियों का पालन होगा, किस-किस सहायक सामग्री का प्रयोग किया जाएगा, अध्यापक व छात्रों को क्या क्रियाएँ करनी होंगी।

"इकाई-योजना शिक्षा की वह विधि है, जिसके द्वारा विषय-वस्तु को, शिक्षण-विधियों को तथा शिक्षण-युक्तियों को इस ढंग से गठित किया जाता है कि सीखने और सिखाने की परिस्थितियों को प्रभावी बनाया जा सके।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भाषा-शिक्षण में इकाइयों का निर्माण (Developing units in Language Teaching)

इकाइयों का निर्माण करते समय बच्चों के मानसिक स्तर, रुचि एवं आवश्यकताओं का ध्यान रखना चाहिए। विद्यालय में उपलब्ध समय, साधन एवं उपकरण का भी ध्यान रखते हुए, तार्किक क्रम में इकाइयों का निर्माण करना चाहिए।

भाषा के संपूर्ण पाठ्यक्रम को गद्य, पद्य, कहानी, नाटक, व्याकरण एवं रचना आदि इकाइयों में वर्गीकृत करना चाहिए। तत्पश्चात् पाठ्य-पुस्तक से गद्य-पद्य आदि के पाठों के आधार पर इकाइयों का निर्माण करना चाहिए। सामान्य रूप से एक पाठ की एक इकाई बनानी चाहिए फिर उसे खंडों, उपखंडों में विभाजित किया जा सकता है। व्याकरण में नियमों के आधार पर इकाइयों का निर्माण करना चाहिए। इसी प्रकार रचना-शिक्षण में रचना के विषयों की समानता के आधार पर इकाइयों का निर्माण करना चाहिए, जैसे—निबंध-रचना, पत्र-रचना, कहानी-रचना आदि।

अध्यापक अपनी सुविधा के आधार पर किसी एक पाठ की एक एकाई या कई समान पाठों की एक इकाई बना सकता है, जैसे पद्य की पुस्तक में भक्त कवियों के पाठों की एक इकाई, रीतिकालीन कवियों के पाठों की एक इकाई। अथवा एक-एक कवि की रचनाओं की अलग-अलग इकाई। जैसे—सूरदास की कविताओं की एक इकाई, तुलसीदास की कविताओं की एक इकाई अथवा एक ही कवि की विभिन्न कविताओं की भिन्न-भिन्न इकाइयाँ, जैसे—तुलसीदास की कविताएँ—(राम का) बाल-वर्णन, रामचरितामानस की चौपाइयाँ, केवट-प्रसंग, गीतावली के पद, विनय के पद आदि के लिए अलग-अलग इकाइयाँ।

इस प्रकार इकाई-योजना में भिन्न-भिन्न तरीके से पाठ्यक्रम को अलग-अलग इकाइयों में वर्गीकृत कर लिया जाता है। फिर इन इकाइयों की पूर्ण योजना निम्न प्रकार से बना ली जाती है :

(i) पूरी इकाई को उसके उपखंडों में विभाजित कर लिया जाता है। उपखंड का निर्माण इस प्रकार करते हैं कि वह विद्यालय के एक कालांश में पूरा हो जाए।

(ii) सभी उपखंडों के शिक्षण-लक्ष्य निर्धारित कर लिए जाते हैं।

(iii) हर उपखंड की शिक्षण-पद्धतियों एवं शिक्षण-सामग्री के बारे में निर्णय लेकर उसको स्पष्ट कर दिया जाता है।

(iv) हर उपखंड से संबंधित अध्यापक व छात्र-क्रियाएँ निश्चित कर ली जाती हैं।

(v) हर उपखंड के संदर्भ में घंटों का निर्धारण कर लेते हैं।

(vi) सभी उपखंडों के पूरा होने के उपरांत मूल्यांकन तकनीकों एवं उसमें लगनेवाले समय को भी पहले से निश्चित कर लिया जाता है।

इस प्रकार से इकाई-योजना के आधार पर पाठ्यक्रम की इकाइयों का निर्माण कर लिया जाता है।

इकाई-योजना की उपयोगिता (Importance of Unit Planning)

भाषा शिक्षण में इकाई-योजना की उपयोगिता को निम्न रूप से आँका जा सकता है :

1. इकाई-योजना में शिक्षण-लक्ष्यों का निर्धारण पहले ही कर लिया जाता है। किस पाठ के पढ़ाने के क्या उद्देश्य हैं, इस बात की जानकारी से अध्यापक के लिए शिक्षण-कार्य स्पष्ट हो जाता है।

2. शिक्षण-विधि का निर्धारण पहले ही हो जाने से पाठ-योजना बनाने में परेशानी नहीं होती है।

3. शिक्षण-प्रक्रिया सुव्यवस्थित हो जाती है। अध्यापक पहले ही यह निश्चित कर लेता है कि कब क्या करना है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4. अध्यापक को शिक्षण-सामग्री का चुनाव करने में कोई परेशानी नहीं होती।

5. अध्यापक व छात्र क्रियाएँ पूर्वनिर्धारित होने से कक्षा में शिक्षण-कार्य अनुशासित रूप में होता है।

6. समय का सदुपयोग होता है।

7. मूल्यांकन तकनीकों का पूर्व-निर्धारण होने से मूल्यांकन करने में भी कोई परेशानी नहीं होती।

8. यह जानने में भी सहायता मिलती है कि अध्यापक को अपने शिक्षण-कार्य में कहाँ तक सफलता मिली।

9. पाठ्य-सामग्री का उचित विभाजन होने के कारण पाठ्य-वस्तु रोचक बनी रहती है।

10. इकाइयों का निर्माण बालकों के मानसिक स्तर के आधार पर किए जाने के कारण, शिक्षण बालकों की आवश्यकताओं को पूरा करता है और बालक सक्रिय बने रहते हैं।

इस प्रकार इकाई-योजना शिक्षण-प्रक्रिया को सुरुचिपूर्ण, सोद्देश्य, प्रभावशाली, गतिशील, स्वाभाविक और व्यवस्थित बनाती है।

इकाई-योजना की सीमाएँ (Limitations of Unit-Planning)

वैसे तो इकाई-योजना शिक्षण-प्रक्रिया को सुनियोजित बनाती है, परंतु इसमें कुछ कमियाँ भी पाई जाती हैं जो निम्न हैं :

1. इसमें अध्यापक की स्वतंत्रता का हनन होता है। कई बार पाठ को पढ़ते हुए कोई नई बात सूझ जाती है परंतु इकाई में उसका स्थान न होने के कारण उन्हें छोड़ना पड़ता है।

2. योजनाबद्ध ढंग से कार्य करने के कारण कई बार छात्रों की रुचियों की उपेक्षा करनी पड़ती है और शिक्षण नीरस हो जाता है।

3. शिक्षण में समय का बंधन होने के कारण बहुत-सी बातों को छोड़ना पड़ता है। भाषा एक कौशल है। इसके लिए अभ्यास की आवश्यकता है। परंतु समय कम होने से या तो अभ्यास को समय नहीं दे पाते हैं या पाठ निर्धारित समय पर समाप्त नहीं हो पाता है।

4. अध्यापक का ध्यान बराबर योजना पर रहने के कारण शिक्षण छात्र-केंद्रित न होकर योजना-केंद्रित हो जाता है।

5. भाषा-शिक्षण के सभी उद्देश्य एक-दूसरे के पूरक हैं। कई बार ऐसा होता है कि पूर्व-निर्धारित उद्देश्य की प्राप्ति के स्थान पर किसी अन्य उद्देश्य की प्राप्ति इकाई द्वारा हो जाती है। ऐसी स्थिति में यह निर्णय लेना, कि शिक्षण सफल रहा या असफल, कठिन हो जाता है।

6. भाषा में विभिन्न उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए भिन्न-भिन्न क्रियाएँ करनी होती हैं। कई बार एक ही क्रिया कई उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक होती है। एक ही क्रिया के द्वारा अनेक उद्देश्यों को सम्मिलित करने से योजना में अस्वाभाविकता और अस्पष्टता आ जाती है।

7. भाषा-शिक्षण में प्रायः सभी विधाओं एवं सभी कौशलों में गहरा संबंध है। इस संबंध को कायम रखते हुए इकाई-योजना बनाना कठिन कार्य है।

इन सीमाओं के रहते हुए भी यदि छात्रों के मानसिक स्तर, आवश्यकताओं, रुचियों, विद्यालय में उपलब्ध समय, सामग्री आदि को ध्यान में रखकर इकाई-योजना बनाई जाए और अध्यापक को, उसे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu.

क्रियान्वित करते समय पर्याप्त स्वतंत्रता दी जाए तो इकाई-योजना भाषा-शिक्षण में काफी उपयोगी सिद्ध हो सकती है। ध्यान रहे, योजना शिक्षण-प्रक्रिया की सफलता के लिए है, शिक्षण-प्रक्रिया योजना के लिए नहीं है।

दैनिक पाठ-योजना
(Daily Lesson-Planning)

शिक्षण एक नियोजित रूप से की जानेवाली प्रक्रिया है। कक्षा में शिक्षण से पूर्व अध्यापक पढ़ाए जानेवाले पाठ के शिक्षण-लक्ष्यों, विधियों, उपकरणों के बारे में निर्णय कर लेता है। अर्थात पठनीय वस्तु का विधिवत विवेचन कर लेता है, इसे ही पाठ-योजना कहा जाता है।

पाठ-योजना का अर्थ (Meaning of the term Lesson-Planning)

कक्षा में जाने से पूर्व अध्यापक द्वारा पढ़ाए जानेवाले पाठ के शिक्षण-लक्ष्यों को निश्चित करना, लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए पाठ्य-वस्तु के तथ्यों को व्यवस्थित करना, यह निश्चित करना कि कौन-सा तथ्य किस शिक्षण-विधि की सहायता से पढ़ाया जाएगा, शिक्षण-साधनों के प्रयोग के बारे में निर्णय लेना, पाठ पढ़ाते समय अध्यापक-क्रियाएँ व छात्र-क्रियाएँ क्या होंगी, इसका विचार करना, कक्षा में क्या समस्याएँ आ सकती हैं, उनका समाधान कैसे होगा, बच्चों को जो कुछ पढ़ाया जाएगा उसके माध्यम से शिक्षण-लक्ष्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हुई है, इस बात की जाँच करने के लिए मूल्यांकन तकनीकें क्या होंगी, इन सबका विवरण 'पाठ-योजना' कहलाता है। कहने का तात्पर्य है कि ''अध्यापक अपने दैनिक शिक्षण कार्य को कुशलतापूर्वक संपन्न करने के लिए जो योजना बनाता है, उसे पाठ-योजना कहते हैं।''

पाठ-योजना की आवश्यकता और महत्त्व
(Needs and Importance fo Lesson-Planning)

शिक्षण-प्रक्रिया की सफलता का मुख्य आधार अच्छी तरह से सोच-विचारकर बनाई गई पाठ-योजना ही है। पाठ-योजना शिक्षण-पथ में यात्रा कर रहे अध्यापक का पग-पग पर मार्गदर्शन करती है। इसके अभाव में अध्यापक के भटक जाने का भय बना रहता है। डेविस महोदय ने पाठ-योजना की आवश्यकता बताते हुए कहा है—''शिक्षक के लिए कोई अन्य वस्तु इतनी घातक नहीं है, जितनी कि पाठ की तैंयारी का कम होना।'' पाठ-योजना बनाने से ही पाठ पूरी तरह से तैयार हो पाता है। इसकी आवश्यकता व महत्त्व को हम निम्न दृष्टि से स्पष्ट कर सकते हैं :

1. पाठ-योजना बनाने से शिक्षण-कार्य नियोजित ढंग से होता है और शिक्षण-कार्य सुव्यवस्थित ढंग से चलता है।

2. पाठ-योजना में शिक्षण-लक्ष्यों का निर्धारण पहले ही कर लिया जाता है। अतः शिक्षण-प्रक्रिया सोद्देश्य रहती है। उन्हीं लक्ष्यों को ध्यान में रखकर शिक्षण-कार्य संपन्न किया जाता है।

3. पाठ-योजना बनाते समय छात्रों के प्रारंभिक व्यवहार को ध्यान में रखा जाता है। अतः शिक्षण छात्रों के मानसिक स्तर के अनुसार रहता है।

4. अध्यापक पाठ को पढ़ाने से पहले ही विषयवस्तु को सुव्यवस्थित कर लेता है। अतः विषयवस्तु ठीक क्रम में आगे बढ़ती है। 'सरल से कठिन की ओर', 'ज्ञात से अज्ञात की ओर' आदि। शिक्षण-सूत्रों का पालन होने से शिक्षण मनोवैज्ञानिक रूप से होता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

5. शिक्षण-विधियों के बारे में पहले से ही निर्णय ले लेने से अध्यापक को कक्षा में पढ़ाते समय कोई परेशानी नहीं होती है। वह उचित समय पर उचित विधि की सहायता से विषयवस्तु का स्पष्टीकरण करता है। इससे शिक्षण प्रभावशाली बन सकता है।

6. पाठ-योजना बनाते समय अध्यापक यह भी विचार कर लेता है कि पाठ्य वस्तु के किस तथ्य को स्पष्ट करने के लिए किस दृश्य-श्रव्य उपकरण की सहायता ली जाएगी। इससे वह पहले से ही उपकरण को तैयार कर लेता है और कक्षा में सही समय पर उसका प्रयोग करता है। उसका यह कार्य शिक्षण को सजीव एवं रोचक बनाता है।

7. पाठ-योजना में अध्यापक पहले ही यह निर्णय ले लेता है कि कक्षा में अध्यापक-क्रियाएँ क्या होंगी और छात्र-क्रियाएँ क्या होंगी। इससे विद्यार्थियों को सक्रिय रखने में सहायता मिलती है।

8. पाठ-योजना छात्रों को नियंत्रित रखने व कक्षा में अनुशासन स्थापित रखने में सहायता करती है।

9. पाठ-योजना में सभी कार्य नियोजित होने से समय का अपव्यय नहीं होता है।

10. पाठ-योजना बनाने से अध्यापक शिक्षण-कार्य की पूर्व तैयारी कर लेता है। अत: कक्षा में पूर्ण आत्मविश्वास से शिक्षण-कार्य संपन्न करता है।

11. पाठ-योजना में मूल्यांकन-प्रक्रिया का भी पूर्वनिर्धारण होने से शिक्षण-कार्य की सफलता का मापन व मूल्यांकन करने में सहायता मिलती है। शिक्षण-लक्ष्यों की प्राप्ति हुई है या नहीं, इस बात की जाँच हो जाती है।

12. अध्यापक की पूर्ण तैयारी होने के कारण शिक्षण-कार्य स्वाभाविक, नियमित, व्यवस्थित एवं संतुलित रूप से चलता है।

दैनिक पाठ-योजना और इकाई योजना में अंतर
(Distinction between Unit Planning and Daily Lesson Planning)

इकाई-योजना और दैनिक पाठ-योजना में बहुत अंतर है।

(1) इकाई-योजना पाठ्यक्रम को नियोजित करती है और दैनिक पाठ-योजना दैनिक कालांश के लिए पाठ के शिक्षण को आयोजित करती है।

(2) इकाई-योजना का क्षेत्र व्यापक होता है और पाठ-योजना का क्षेत्र सीमित।

(3) इकाई-योजना एक कालांश के लिए भी हो सकती है और कई दिन भी चल सकती है, परंतु दैनिक पाठ-योजना केवल एक कालांश के लिए होती है।

(4) इकाई-योजना के उद्देश्य व्यापक होते हैं, परंतु दैनिक पाठ-योजना के उद्देश्य सीमित, सुनिश्चित एवं संबंधित पाठ पर आधारित होते हैं।

(5) एक इकाई-योजना में कई दैनिक पाठ-योजनाएँ सम्मिलित हो सकती हैं।

पाठ-योजना की विशेषताएँ (Characteristics of a good Lesson Planning)

पाठ-योजना से शिक्षण-प्रक्रिया रोचक एवं प्रभावशाली तभी बन सकती है जब वह पूरी तरह सोच-समझकर, ठीक ढंग से बनाई गई हो। एक अच्छी पाठ-योजना में निम्न विशेषताएँ होनी चाहिए :

1. पाठ-योजना लिखित रूप से तैयार करनी चाहिए क्योंकि लिखित रूप से तैयार पाठ-योजना का परीक्षण हो सकता है और कोई त्रुटि होने पर उसको दूर किया जा सकता है।

2. पाठ-योजना बच्चों के पूर्व ज्ञान पर आधारित होनी चाहिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3. पाठ-योजना में शिक्षण-लक्ष्य स्पष्ट होने चाहिए।

4. पाठ-योजना में पाठ्यवस्तु के तथ्यों को तार्किक क्रम में व्यवस्थित करना चाहिए।

5. पाठ-योजना में यह स्पष्ट होना चाहिए कि पाठ्यवस्तु के किस तथ्य के लिए किस शिक्षण-विधि का प्रयोग होगा तथा किस स्थल पर किस शिक्षण-साधन की सहायता से विषयवस्तु को स्पष्ट किया जाएगा।

6. पाठ-योजना में प्रत्येक पद का स्पष्टीकरण होना चाहिए।

7. किस स्थल पर अध्यापक-क्रियाएँ व छात्र-क्रियाएँ क्या होंगी यह स्पष्ट होना चाहिए।

8. पाठ-योजना में यह स्पष्ट होना चाहिए कि सीखे गए ज्ञान का मापन कैसे होगा।

9. कक्षा में सिखाए गए ज्ञान का प्रयोग छात्र कैसे करेंगे, इस बात का भी उल्लेख होना चाहिए।

10. पाठ-योजना कितने समय में पूरी होगी, यह भी स्पष्ट होना चाहिए।

11. पाठ-योजना बालकों के जीवन से संबंधित होनी चाहिए।

12. पाठ-योजना में आवश्यकतानुसार परिवर्तन करने की गुंजाइश होनी चाहिए। अर्थात योजना में लचीलापन होना चाहिए।

13. पाठ-योजना बालकों की रुचि, क्षमता तथा योग्यता के अनुरूप होनी चाहिए।

14. पाठ-योजना बालकों को प्रेरित व प्रोत्साहित करनेवाली होनी चाहिए।

दैनिक पाठ-योजना निर्माण कितना सार्थक है ?
(Appropriateness of Daily Lesson-Planning)

पाठ-योजना अध्यापक की सेविका है, शासिका नहीं। पाठ-योजना का निर्माण कर वह अपने शिक्षण को सुनियोजित एवं सुव्यवस्थित करता है। पूर्वनिर्धारित क्रम से शिक्षण-क्रियाओं को संपन्न करता हुआ शिक्षण-लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास करता है। परंतु कई बार अध्यापक पाठ-योजना पर इतने निर्भर हो जाते हैं कि वे आवश्यकता पड़ने या कक्षा की परिस्थितियों में परिवर्तन होने पर भी पूर्व-निर्धारित शिक्षण-क्रम में कोई परिवर्तन नहीं कर पाते हैं। वे पाठ-योजना के पदों का इस प्रकार से अंधानुकरण करते हैं कि उनका शिक्षण कृत्रिम, नीरस और निर्जीव हो जाता है। कुछ लोगों का कहना है कि पाठ-योजना में बँधकर शिक्षण-कार्य करने पर, बालकों के केवल ज्ञान के विकास पर बल दिया जाता है, उनके भावात्मक और क्रियात्मक पक्ष के विकास के लिए कोई प्रयत्न नहीं किया जाता है। अतः पाठ-योजना के अनुकूल शिक्षण-कार्य करने से समय का पूरी तरह से सदुपयोग नहीं हो पाता है। शिक्षण-पदों का कठोरता से पालन करने के कारण शिक्षण-क्रियाएँ कृत्रिम हो जाती हैं। परंतु इसमें दोष पाठ-योजना का नहीं बल्कि पाठ-योजना का सही ढंग से उपयोग न कर पाने का है। अगर हम निष्पक्ष ढंग से विचार करें तो यह बात स्पष्ट हो जाती है कि पाठ-योजना शिक्षण को कृत्रिम, नीरस या निरर्थक नहीं बनाती। यदि हम पाठ-योजना का सही ढंग से प्रयोग नहीं करते हैं तब शिक्षण नीरस या उबाऊ हो जाता है। आवश्यकता इस बात की है कि पाठ-योजना के पदों का सही रूप से प्रयोग किया जाए। जिन पाठों में जिन पदों की आवश्यकता न हो उन्हें छोड़ दिया जाए। पाठ-योजना बनाते समय अध्यापक को अपने विवेक से काम लेते हुए पाठ-योजना का सोच-समझकर पालन करना चाहिए।

पाठ-योजना पाठ की प्रकृति को देखकर सोच-समझकर बनाई जाए। कक्षा की परिस्थिति के अनुसार उसमें आवश्यकतानुसार परिवर्तन कर लिया जाए।

पाठ-योजना की विशेषताओं को ध्यान में रखकर पाठ-योजना का निर्माण किया जाए और उसे सही ढंग से क्रियान्वित किया जाए तो पाठ-योजना अध्यापक में आत्मविश्वास की वृद्धि कर उसे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिक्षण-कार्य के लिए मानसिक रूप से तैयार करती है और शिक्षण को रोचक, सार्थक व प्रभावशाली बनाती है। अत: पाठ-योजना का निर्माण करते समय इसी अध्याय में पूर्व वर्णित सभी विशेषताओं पर पूरा-पूरा ध्यान दिया जाना चाहिए। वास्तव में यदि पाठ-योजना इन विशेषताओं को ध्यान में रखकर बनाई जाए और अध्यापक कक्षा की परिस्थिति एवं शिक्षण की आवश्यकता के अनुसार इस पाठ-योजना का प्रभावपूर्ण उपयोग करने का प्रयत्न करे तथा कक्षा-शिक्षण को सजीव व रोचक बनाए रखे तो फिर किसी भी अवस्था में यह कहने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी कि पाठ-योजना का निर्माण व उसका उपयोग समय का अपव्यय करने वाला, नीरस तथा निरर्थक हो सकता है।

पाठ-योजना निर्माण (Preparation of Lesson Plans)

दैनिक पाठ-योजना निर्माण अध्यापक के लिए उतना ही आवश्यक है जितना कि उसके द्वारा नियमित रूप से विद्यालय जाना और अपने विषय की कक्षाएँ लेना तथा अन्य संबंधित कार्य करना। किसी भी शिक्षक की शिक्षण में सफलता उसके द्वारा भली-भाँति नियमित रूप से पाठ-योजना निर्माण कार्य करने और उस पर चलकर अपने शिक्षण कार्य को संपादित करने में है। अत: प्रत्येक अध्यापक को दैनिक पाठ-योजना निर्माण कार्य में अपने आपको यथावश्यक रूप से प्रशिक्षित करने का प्रयत्न करना चाहिए। इसके लिए उसे पाठ-योजना निर्माण से संबंधित विभिन्न उपागमों (Approaches) तथा पाठ-योजना किस रूप में बनाई जाए उससे संबंधित आवश्यक रूपरेखा तथा ढाँचे इत्यादि का पूरा ज्ञान होना चाहिए। आगे के पृष्ठों में हम पाठ-योजना कैसे बनाएँ इससे संबंधित आवश्यक जानकारी देने का प्रयास कर रहे हैं।

हिंदी-शिक्षण में पाठ-योजना का प्रारूप या रूपरेखा (Format of Daily Lesson Plan in Teaching of Hindi)—पाठ-योजना निर्माण के लिए सामान्यत: प्रशिक्षण महाविद्यालयों में जिस प्रारूप या रूपरेखा का प्रयोग किया जाता है, वह निम्न प्रकार से है :

क्रमसंख्या..........	दिनांक..........
छात्राध्यापक का नाम तथा अनुक्रमांक............	कक्षा.........
विषय...........	छात्रों की औसत आयु...........
उपविषय..............	कालांश की अवधि..........

अनुदेशनात्मक उद्देश्य..............

अनुदेशनात्मक सामग्री

पूर्वज्ञान या प्रारम्भिक व्यवहार

पूर्वज्ञान-परीक्षा या प्रस्तावना

उद्देश्य-कथन

प्रस्तुतीकरण

पुनरावृत्ति

गृहकार्य

इन सोपानों की व्याख्या निम्न प्रकार से है :

क्रमसंख्या—पाठ-योजना की नोटबुक में पृष्ठ में सबसे ऊपर बीच में पाठ-योजना की क्रमसंख्या लिखी जाती है। जैसे—पाठ-योजना नं. 1 या नं. 2 आदि।

छात्राध्यापक का नाम तथा अनुक्रमांक—जिस छात्राध्यापक को पाठ पढ़ाना है उसका नाम तथा अनुक्रमांक लिखा जाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विषय—जिस विषय के लिए पाठ-योजना बनाई जा रही है, उसका नाम लिखा जाता है। हिंदी में विभिन्न साहित्यिक विधाओं की अलग-अलग पाठ-योजना होती है अत: हिंदी की पाठ-योजना में 'हिंदी' विषय लिखने के उपरांत साहित्यिक विधा का उल्लेख भी किया जाता है। जैसे—हिंदी (गद्य) या हिंदी (पद्य) या हिंदी (व्याकरण) या हिंदी (रचना) आदि।

उपविषय—यहाँ पढ़ाए जानेवाले पाठ या प्रकरण का शीर्षक लिखा जाता है। जैसे—हरियाणा का जन-जीवन, कबीर के दोहे, मुरझाया फूल, विशेषण के भेद, दीपावली आदि।

दिनांक—पाठ पढ़ाए जानेवाले दिन की तिथि लिखी जाती है।

कक्षा—जिस कक्षा को पाठ पढ़ाना है, उसकी श्रेणी और उपश्रेणी यहाँ लिखी जाती है। जैसे—सातवीं ए या नवम बी।

अवधि—जिस कालांश में पाठ पढ़ाना है उसकी अवधि यहाँ लिखी जाती है। जैसे—30 मिनट या 40 मिनट आदि।

अनुदेशनात्मक उद्देश्य—यहाँ पर पढ़ाए जानेवाले पाठ के उद्देश्य लिखे जाते हैं। उद्देश्यों को लिखने के लिए, शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में दो तरीके प्रचलित हैं—

1. परंपरागत ढंग—इसमें उद्देश्य दो भागों में विभाजित किए जाते हैं :

(क) सामान्य उद्देश्य—किसी पाठ-विशेष को पढ़ाने से विषय से संबंधित जिन सामान्य उद्देश्यों की प्राप्ति हो सकती है उन्हें यहाँ लिखा जाता है। हिंदी में हर साहित्यिक विधा के अलग-अलग सामान्य उद्देश्य होते हैं, हाँ, इतना अवश्य है कि उस साहित्यिक विधा के सभी पाठों के लिए ये एक जैसे हो सकते हैं। विस्तार में इनका उल्लेख सभी साहित्यिक विधाओं से संबंधित पाठों के शिक्षण में किया जाएगा।

(ख) विशिष्ट उद्देश्य—किसी भी पाठ-विशेष को पढ़ाने से जो उद्देश्य प्राप्त होते हैं, उन्हें यहाँ लिखा जाता है। ये हर पाठ के लिए अलग-अलग होते हैं।

2. आधुनिक ढंग—आधुनिक तरीके में शिक्षण-उद्देश्यों को प्राप्य उद्देश्यों के रूप में व्यवहारपरक शब्दावली में लिखा जाता है। शिक्षण-प्रक्रिया का उद्देश्य छात्रों के व्यवहार में परिवर्तन लाना है। उद्देश्यों को लिखने के परंपरागत ढंग से यह स्पष्ट नहीं हो पाता है कि पाठ को पढ़ाने के उपरांत छात्रों के व्यवहार में क्या परिवर्तन आएगा। अत: पाठ-योजना के प्रारंभ में यह स्पष्टीकरण अत्यंत आवश्यक है कि पाठ को पढ़ने के उपरांत, छात्रों के व्यवहार में किस प्रकार के परिवर्तन आ सकेंगे। इस स्पष्टीकरण से शिक्षण-प्रक्रिया की सफलता की जाँच करने में भी सहायता मिलती है। इस ढंग से लिखने के लिए विभिन्न तरीके प्रचलित हैं जैसे मेगर उपागम, मिलर उपागम तथा क्षेत्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय मैसूर में विकसित उपागम, जिसे आर. सी. ई. एम. उपागम के नाम से जाना जाता है। यहाँ इनका उल्लेख नहीं किया जा रहा है।

इन व्यवहारगत परिवर्तनों को अनुदेशनात्मक उद्देश्य शीर्षक के अंतर्गत लिखा जाना ठीक रहता है। छात्राध्यापक को अपने पाठ को पूरी तरह से पढ़ने के उपरांत स्पष्ट शब्दावली में अपने पाठ के **अनुदेशनात्मक** उद्देश्य लिखने चाहिए। ये व्यवहारगत उद्देश्य 'भविष्यकाल' में लिखे जाएं या 'वर्तमान काल में' इस संबंध में हिन्दी शिक्षण के प्राध्यापकों में मतभेद है। अत: प्राध्यापक अपनी रुचि अनुसार किसी काल का प्रयोग कर सकते हैं। जैसे—छात्र...........(शब्दों) का शुद्ध उच्चारण कर सकेगा।

या

छात्र..............को अपने वाक्यों में प्रयुक्त कर सकेगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

या

छात्र (पाठ) के गद्यांश का उचित रूप से वाचन कर सकेगा।

या

छात्र संज्ञा शब्द की परिभाषा बताते हैं।

या

छात्र दिए हुए गद्यांश में से विशेषण शबदों को छाँट सकते हैं।

इस प्रकार से अपने पाठ को पढ़कर यह निश्चित कर लेना चाहिए कि उस पाठ के क्या-क्या अनुदेशनात्मक उद्देश्य हो सकते हैं और फिर उन्हें व्यवहारगत परिवर्तन के रूप में लिखना चाहिए।

अनुदेशनात्मक सामग्री—पाठ को पढ़ाने में जिस सहायक सामग्री जैसे—चार्ट, चित्र, माडल, नमूना, वास्तविक पदार्थ या फ्लैश कार्ड आदि का प्रयोग करना हो, उसे क्रमपूर्वक स्पष्ट ढंग से यहाँ लिखा जाता है।

प्रारम्भिक व्यवहार या पूर्वज्ञान—पढ़ाए जाने वाले पाठ से संबंधित जो बातें विद्यार्थी पहले से जानते हैं, उन्हें यहाँ लिखा जाता है।

पूर्वज्ञान-परीक्षा या प्रस्तावना—नवीन पाठ की ओर छात्रों को आकर्षित करने के लिए छात्रों के पूर्वज्ञान पर आधारित कुछ प्रश्न पूछे जाते हैं और पूर्वज्ञान एवं नवीन ज्ञान में संबंध स्थापित करने का प्रयास किया जाता है। यहाँ चार्ट, चित्र आदि को दिखाकर भी पूर्वज्ञान-परीक्षा की जा सकती है। पाठ से संबंधित किसी कविता का पाठ करके भी छात्रों को नवीन ज्ञान की तरफ आकर्षित किया जा सकता है। यदि पाठ में कोई ऐतिहासिक या पौराणिक घटना छिपी है तो उसको स्पष्ट करके भी पाठ की प्रस्तावना की जा सकती है। जैसे मैथिलीशरण गुप्त की कविता 'पश्चात्ताप' पढ़ाने के लिए गौतम बुद्ध के गृहत्याग से संबंधित घटना का वर्णन करके पाठ की प्रस्तावना की जा सकती है।

उद्देश्य-कथन—छात्रों को नवीन ज्ञान की तरफ उत्सुक करने के पश्चात छात्राध्यापक अपने पाठ की घोषणा करता है, जैसे—छात्रो, आज हम इसी विचार / घटना विषय से संबंधित एक पाठ का / पाठ के एक गद्यांश का / कविता का, अध्ययन करेंगे जिसका शीर्षक.........है। इस पाठ के रचयिता श्री........हैं। गद्य-पद्य आदि के पाठ में छात्रों से पाठ्यपुस्तक का पृष्ठ नं०.......खोलने को भी कहा जाता है।

प्रस्तुतीकरण—इस सोपान के अंतर्गत ही विषय-सामग्री छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत की जाती है। विषय-सामग्री के क्रमिक विकास, उसकी शिक्षण-विधियों, सहायक सामग्री, अध्यापक एवं छात्र-क्रिया आदि का उल्लेख यहाँ करना होता है। हिंदी भाषा में विभिन्न विधाओं के लिए अलग-अलग पद्धति का प्रयोग किया जाता है। अत: प्रस्तुतीकरण के सोपान में प्रकरण या पाठ के अनुसार शिक्षण-विधि का चुनाव कर नोटबुक के पृष्ठ पर 3-4 कॉलम बनाकर लिखा जाता है। लिखने के लिए अलग-अलग उपागम में अलग-अलग तरीकों का प्रयोग किया जाता है। (विभिन्न विधाओं के शिक्षण संबंधी पाठों में इन तरीकों को देखा जा सकता है।)

पुनरावृत्ति—पाठ का शिक्षण समाप्त करने के उपरांत, विषयवस्तु को स्थायी रूप प्रदान करने के लिए पाठ को दोहराया जाता है। यह जाँच करने का प्रयास किया जाता है कि छात्र विषयवस्तु को पूरी तरह समझ पाए या नहीं। इसके लिए अध्यापक पूरी पाठ्य-सामग्री से संबंधित कुछ प्रश्न पूछकर पाठ की दुहराई कर लेता है। पुनरावृत्ति में इन्हीं प्रश्नों को लिखा जाता है।

गृहकार्य का प्रयोग—ज्ञान के स्थायित्व के लिए उसका प्रयोग करना आवश्यक होता है। अतः

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पढ़ाए गए पाठ के आधार पर कुछ कार्य घर पर करने के लिए दिया जाता है। इस सोपान में ऐसे ही अभ्यासात्मक प्रश्नों को लिखा जाता है और छात्रों से घर से उनके उत्तर लिखकर लाने को कहा जाता है।

इस प्रकार से उपर्युक्त रूपरेखा के आधार पर पाठ-योजना का निर्माण किया जाता है। परंतु यह जरूरी नहीं कि अध्यापक इन सोपानों का अंधानुकरण करे। पाठ-योजना तो शिक्षण को सफल, सुनियोजित एवं प्रभावशाली बनाने के लिए होती है। अत: अध्यापक को कक्षा की परिस्थिति एवं आवश्यकतानुसार, अपनी कल्पनाशील एवं सृजनात्मक क्षमता से काम लेते हुए शिक्षण को रोचक, गतिशील एवं उद्देश्यपूर्ण बनाने का प्रयास करना चाहिए।

उपर्युक्त रूपरेखा पर आधारित दैनिक पाठ-योजनाओं को गद्य, पद्य, व्याकरण एवं रचना आदि के शिक्षण संबंधी अध्यायों में देखा जा सकता है।

पाठ-योजना निर्माण संबंधी विभिन्न उपागम
(Various Approaches for the Writing of Lesson Plans)

पाठ-योजना निर्माण हेतु शिक्षाशास्त्रियों ने कई उपागमों को विकसित किया है जिनमें से प्रमुख रूप से निम्न उपागम उल्लेखनीय हैं :

1. हरबर्ट का पंचपदीय उपागम (Herbartian Five Steps Approach)
2. ब्लूम का मूल्यांकन उपागम (Bloom's Evaluation Approach)
3. मॉरीसन का इकाई उपागम (Morrison's Unit Approach)
4. आर. सी. ई. एम. उपागम (R.C.E.M's Approach)

इन सभी उपागमों में से प्रथम दो उपागमों का उपयोग हमारे देश के प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्राय: किया जाता है। यह बात दूसरी है कि ये प्रशिक्षण महाविद्यालय अपनी-अपनी रुचि के अनुसार इन उपागमों में थोड़ा-बहुत परिवर्तन करके इनको पाठ-योजना-निर्माण के लिए अपना रहे हैं। इन दोनों उपागमों का वर्णन यहाँ किया जा रहा है।

1. हरबर्ट उपागम—प्रसिद्ध जर्मन शिक्षाशास्त्री हरबर्ट ने पाठ-योजना का निर्माण करने के लिए जिस पद्धति को विकसित किया उसे ही हरबर्ट उपागम कहा जाता है। हरबर्ट, पूर्वानुवर्ती प्रत्यक्ष के सिद्धांत को मानते थे। उनका विचार था कि हम जिन वस्तुओं, व्यक्तियों या विचारों के संपर्क में आते हैं वे हमारे मन के किसी कोने में जाकर सुप्तप्राय हो जाते हैं। उनसे मिलते-जुलते विचारों, व्यक्तियों या वस्तुओं के संपर्क में आने पर वे पुन: जाग्रत हो जाते हैं। अत: पूर्वज्ञान के आधार पर नया ज्ञान दिया जाए तो बच्चा नवीन ज्ञान को आसानी से ग्रहण कर लेता है। परंतु इसके लिए बच्चे का स्वयं क्रियाशील होना आवश्यक है। अपने उन्हीं विचारों के आधार पर हरबर्ट ने शिक्षण की प्रक्रिया को स्पष्ट करते हुए निम्न क्रम निश्चित किया :

(i) सबसे पहले छात्र के सामने पाठ्य वस्तु के तथ्यों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया जाए।
(ii) फिर पाठ्य वस्तु का संबंध बच्चों के पूर्व अर्जित ज्ञान से जोड़ा जाए।
(iii) पाठ्य वस्तु को व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत किया जाए।
(iv) सीखे हुए नवीन ज्ञान का स्वयं प्रयोग करने के अवसर छात्रों को प्रदान किए जाएँ।

हरबर्ट के बताए गए इन्हीं चार पदों को हरबर्ट के शिष्य जिलर ने कालांतर में पाँच पदों में वर्गीकृत किया :

(i) प्रस्तावना या तैयारी।
(ii) विषय-प्रवेश या प्रस्तुतीकरण।
(iii) तुलना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(iv) सामान्यीकरण या नियमीकरण।

(v) प्रयोग।

इन्हीं पाँच पदों या सोपानों के आधार पर तैयार की गई पाठ-योजना को पंचपदीय प्रणाली की पाठ-योजना के रूप में जाना जाता है।

गुण—हरबर्ट की पंचपदीय प्रणाली पूर्वानुवर्ती प्रत्यक्ष के सिद्धांत पर आधारित होने के कारण शिक्षण को मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया मनाती है। इसमें विषयवस्तु सरल से कठिन और ज्ञात से अज्ञात के क्रम में आगे बढ़ती है। अत: ज्ञान स्थायी होता है। इसमें आगमन व निगमन दोनों विधियों का प्रयोग हो सकता है। सभी विषयों के ज्ञानात्मक पाठों को इस विधि से आसानी से पढ़ाया जा सकता है। छात्रों को क्रियाशील रखने का प्रयास किया जाता है।

दोष—वास्तव में हर विषय के हर पाठ को पढ़ाने के लिए इस उपागम का प्रयोग ठीक नहीं। गद्य, पद्य आदि के पाठों में सामान्यीकरण पद की कोई आवश्यकता नहीं। यदि अध्यापक इन पदों का अंधानुकरण करते हैं तो उनका शिक्षण नीरस एवं बोझिल बन जाता है। उसी प्रकार भावात्मक एवं क्रियात्मक पक्ष को विकसित करनेवाले पाठों में इस उपागम का प्रयोग करना कठिन कार्य है।

निष्कर्ष—आवश्यकता इस बात की है कि विषय एवं पाठ की प्रकृति को देखते हुए इन पदों का प्रयोग किया जाए। जिस विषय की पाठ-योजना में जो सोपान आवश्यक हो उनका ही प्रयोग किया जाए। आजकल प्रशिक्षण महाविद्यालयों में हरबर्ट उपागम के इन सोपानों को कुछ परिष्कृत रूप में निम्न रूप से पाठ-योजना बनाने के लिए प्रयोग में लाया जाता है :

1. विषय, उपविषय, कालांश, अवधि का उल्लेख
2. उद्देश्य
3. सहायक सामग्री
4. अनुमानित पूर्वज्ञान
5. पूर्वज्ञान-परीक्षा या प्रस्तावना।
6. उद्देश्य-कथन
7. प्रस्तुतीकरण :

पाठ्यवस्तु	पाठ्यविधि या अध्यापक-क्रिया	श्यामपट्ट-कार्य या छात्र-क्रिया
—	—	
—	—	
—		
—		

प्रकरण के अनुसार लिखने के ढंग में परिवर्तन भी किया जा सकता है।

8. पुनरावृत्ति
9. गृहकार्य

2. ब्लूम उपागम—अमरीका के प्रोफेसर ब्लूम ने पाठ-योजना का निर्माण करने के लिए जिस विधि का विकास किया उसे ब्लूम उपागम कहा जाता है। उसे मूल्यांकन उपागम भी कहते हैं क्योंकि ब्लूम ने शिक्षण-लक्ष्यों का व्यवहार परिवर्तन के रूप में लिखने की बात कही जिससे अध्यापक के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिक्षण के प्रभाव का सही मापन और मूल्यांकन किया जा सके। मूल्यांकन पर जोर देने के कारण ही ब्लूम उपागम को मूल्यांकन उपागम कहा जाता है।

ब्लूम महोदय के अनुसार शिक्षण बच्चों के व्यवहार में परिवर्तन लानेवाली त्रिपदी प्रक्रिया है। उनके अनुसार अध्यापक को कोई भी पाठ पढ़ाने से पहले उसकी पाठ्य वस्तु का अध्ययन कर शिक्षण-लक्ष्यों को निर्धारित करना चाहिए। फिर यह देखना चाहिए कि उन शिक्षण-लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए बच्चों को क्या अधिगम अनुभव प्रदान किए जाएँ। इसके बाद यह अनुमान लगाना चाहिए कि उनसे बच्चों के व्यवहार में क्या परिवर्तन आएगा। ब्लूम ने बच्चों के व्यवहार को तीन भागों में विभाजित किया—ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक। इन तीनों को उन्होंने छह-छह पदों में विभाजित किया और इन्हीं के आधार पर शिक्षण-लक्ष्यों को व्यवहार-परिवर्तन के रूप में लिखने का विचार प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि इसके बाद यह निश्चित करना चाहिए कि अध्यापक पाठ्य-सामग्री प्रस्तुत करने के लिए किन शिक्षण-विधियों, साधनों एवं युक्तियों आदि को प्रयुक्त करेगा एवं वह स्वयं और छात्र क्या-क्या कार्य करेंगे। अंत में व्यवहार-परिवर्तन का मापन करने के लिए किन-किन तकनीकों की सहायता लेगा, यह निश्चित कर लेना चाहिए।

गुण—इस उपागम में शिक्षण-लक्ष्यों को व्यवहार-परिवर्तन के रूप में लिखे जाने एवं उनकी प्राप्ति के लिए अधिगम अनुभवों की व्यवस्था किए जाने के कारण शिक्षण-लक्ष्य, व्यवहार-परिवर्तन एवं अधिगम अनुभव—इन तीनों को संबंधित करने का प्रयास किया गया है। इसमें शिक्षण-विधियों, युक्तियों, उपकरणों, शिक्षक एवं छात्र क्रियाओं तथा मूल्यांकन प्रविधियों का स्पष्ट उल्लेख किया जाता है। अतः अध्यापक का शिक्षण सुव्यवस्थित रहता है।

दोष—शिक्षण-लक्ष्यों को व्यवहार-परिवर्तन के रूप में लिखने में अध्यापकों को काफी मेहनत करनी पड़ती है। 30-40 मिनट के एक कालांश में बच्चों के व्यवहार में क्या परिवर्तन हो जाएगा इसका अनुमान लगाना असंभव है।

ब्लूम के आधार पर पाठ-योजना को निम्न रूप से लिखा जा सकता है :

दिनांक....................

कक्षा................

छात्राध्यापक का अनुक्रमांक.................

विषय.. कालांश......................

उपविषय........................अवधि....................

छात्रों की औसत आयु...............

—शिक्षण लक्ष्य (प्रत्याशित व्यवहार-परिवर्तन के रूप में)

—प्रारम्भिक व्यवहार

—प्रस्तावना

—उद्देश्य-कथन

प्रस्तुतीकरण :

शिक्षण-बिंदु	अध्यापक क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ	शिक्षण विधि एवं साधन	मूल्यांकन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

—पुनरावृत्ति

—गृहकार्य

इस तरह अध्यापक अपने प्रकरण के अनुसार हरबर्ट उपागम या ब्लूम उपागम के आधार पर पाठ-योजना का निर्माण कर सकता है। वैसे हरबर्ट उपागम पाठ-योजना बनाने के लिए सभी तरह से दोषरहित है। केवल उसके उद्देश्य सोपान में परिवर्तन किया जा सकता है। ब्लूम उपागम के आधार पर शिक्षण-लक्ष्यों को व्यवहार-परिवर्तन के रूप में लिखना ज्यादा ठीक है। इससे मूल्यांकन करने में सहायता मिलती है। इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए की जानेवाली शिक्षक तथा छात्र-क्रियाओं का भी स्पष्ट उल्लेख लाभकारी होता है। इस प्रकार विषय एवं उसके प्रकरण तथा कक्षा की परिस्थिति के अनुसार किसी एक उपागम का या दोनों उपागमों के समन्वित रूप का प्रयोग पाठ-योजना-निर्माण के लिए किया जा सकता है।

अध्ययन के लिए प्रश्न

1. इकाई-योजना से आप क्या समझते हैं? भाषा-शिक्षण में इकाइयों का निर्माण कैसे किया जा सकता है? इस योजना की उपयोगिता एवं सीमाओं का उल्लेख कीजिए।

2. पाठ-योजना से आप क्या समझते हैं? एक अध्यापक के लिए पाठ-योजना बनाना क्यों आवश्यक है?

3. पाठ-योजना से क्या अभिप्राय है? एक अच्छी पाठ-योजना की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

4. इकाई-योजना से आप क्या समझते हैं? यह दैनिक पाठ-योजना से किन अर्थों में भिन्न होती है?

5. ''अधिकांश प्रशिक्षणार्थी एवं अध्यापक पाठ-योजना निर्माण एवं तदनुकूल शिक्षण-क्रियाओं को कृत्रिम, समय का अपव्यय करनेवाली, नीरस तथा निरर्थक मानते हैं।'' समीक्षा कीजिए।

6. दैनिक पाठ-योजना का प्रारूप बताते हुए एक दैनिक पाठ-योजना का उदाहरण दीजिए।

7. पाठ-योजना से क्या तात्पर्य है? हिंदी शिक्षण में इसकी क्या आवश्यकता है? पाठ-योजना के मुख्य सोपानों का वर्णन कीजिए।

8. पाठ-योजना निर्माण के लिए कौन-कौनसे विभिन्न उपागम काम में लाए जाते हैं? इनमें से किसी एक उपागम का विस्तार से वर्णन कीजिए।

9. पाठ-योजना निर्माण के लिए हरबर्ट उपागम और ब्लूम उपागम का विस्तार से वर्णन कीजिए।

10. निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :

(i) भाषा-शिक्षण के लिए इकाई-योजना

(ii) इकाई-योजना की उपयोगिता और उसकी सीमाएँ

(iii) पाठ-योजना की आवश्यकता और महत्त्व

(iv) एक उत्तम पाठ-योजना की विशेषताएँ

(v) दैनिक पाठ-योजना और इकाई-योजना में अंतर

(vi) पाठ-योजना निर्माण के मुख्य सोपान

(vii) पाठ-योजना निर्माण के विभिन्न उपागम

(viii) हरबर्ट उपागम

(ix) ब्लूम उपागम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

18

हिंदी पाठ्यक्रम—निर्माण एवं समीक्षा
(Construction and Evaluation of Hindi Curriculum)

पाठ्यक्रम का अर्थ (Meaning of the term Curriculum)

'पाठ्यक्रम' शब्द का अंग्रेजी पर्याय Curriculum है। यह शब्द लैटिन भाषा के Currer शब्द से बना है जिसका अर्थ है 'दौड़ का पथ'। अत: पाठ्यक्रम का शाब्दिक अर्थ है—शिक्षा संबंधी दौड़ का वह मार्ग जिस पर दौड़कर बालक अपने व्यक्तित्व-विकास संबंधी लक्ष्य को प्राप्त करता है।

बालक का व्यक्तित्व-विकास करने के लिए अध्यापक विद्यालय के पूर्ण शिक्षण सत्र में एक निश्चित विषय-सामग्री तथा अनुभवों को अपनी शिक्षण-प्रक्रिया के माध्यम से बच्चों के सामने प्रस्तुत करता है। विविध प्रकार के ये अधिगम अनुभव (Learning Experiences) ही किसी विषय-विशेष का पाठ्यक्रम बनाते हैं।

कनिंघम ने पाठ्यक्रम को परिभाषित करते हुए कहा है :

''पाठ्यक्रम कलाकार (शिक्षक) के हाथों में एक औजार (साधन) है जिससे वह अपनी वस्तु (छात्र) को अपने कलाकक्ष (विद्यालय) में अपने आदर्शों (शैक्षिक लक्ष्य) के अनुसार ढालता है।''

हिंदी-शिक्षण में पाठ्यक्रम का स्थान और आवश्यकता
(Place and need of Curriculum in Teaching of Hindi)

पाठ्यक्रम की आवश्यकता—किसी भी विषय के शिक्षण-लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए उस विषय के पाठ्यक्रम की काफी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। सीखने संबंधी सभी प्रकार के अनुभवों का समावेश इसी पाठ्यक्रम के अंतर्गत किया जाता है और यही अधिगम अनुभव विद्यार्थी के व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाने में सहायक होते हैं। यही कारण है कि हिंदी भाषा का ज्ञान कैसे और किस प्रकार प्रदान किया जाए तथा विद्यार्थी कैसे इस दिशा में आगे बढ़ें, इन बातों की योजना पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर ही बनाई जाती है।

इस प्रकार पाठ्यक्रम का हिंदी भाषा के शिक्षण में महत्त्वपूर्ण स्थान है। संक्षेप में हिंदी भाषा के पाठ्यक्रम के महत्त्व को निम्न ढंग से व्यक्त किया जा सकता है :

1. पाठ्यक्रम के द्वारा ही स्पष्ट किया जाता है कि विद्यालय में भिन्न-भिन्न स्तरों पर किस-किस विषय का कितना ज्ञान छात्रों को दिया जाएगा। इस प्रकार पाठ्यक्रम से पाठ्य-सामग्री का निर्धारण होता है जिससे शिक्षण-प्रक्रिया को सुनियोजित करने में सहायता मिलती है।

2. पाठ्यक्रम निश्चित होने से अध्यापक को यह ज्ञात हो जाता है कि पूरे शिक्षण सत्र में किसी कक्षा-विशेष को कितना पढ़ाना है, और छात्रों को यह पता लग जाता है कि पूरे सत्र में उन्हें कितना पढ़ना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है। इससे छात्र व अध्यापक पढ़ने व पढ़ाने के लिए मानसिक रूप से तैयार हो जाते हैं।

3. अध्यापक पाठ्यक्रम को मासिक, साप्ताहिक व दैनिक इकाइयों में विभाजित कर लेता है और उसी के आधार पर अपने शिक्षण-कार्य की व्यवस्था करता है। इस प्रकार पाठ्यक्रम शिक्षण-प्रक्रिया को सुव्यवस्थित कर देता है।

4. पाठ्यक्रम में सभी कार्य स्पष्ट होने से अध्यापक व छात्र दोनों की शक्ति व समय का सदुपयोग होता है।

5. पाठ्यक्रम की सहायता से छात्रों की योग्यता का मूल्यांकन करने में सहायता मिलती है।

6. छात्रों की कमजोरियों का पता लगाकर उन्हें दूर करने का प्रयास किया जाता है। अत: पाठ्यक्रम छात्रों की कमजोरियों का पता लगाने व दूर करने में उनका उचित मार्गदर्शन करता है।

7. पाठ्यक्रम पूरे समाज में शिक्षा का एक सामान्य स्तर बनाए रखने में सहायता करता है।

8. शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति हो रही है या नहीं, इस बात की जाँच करने में भी पाठ्यक्रम हमारी सहायता करता है।

9. परीक्षण के लिए प्रश्नपत्र बनाने में पाठ्यक्रम एक मार्गदर्शक का कार्य करता है।

10. पाठ्यक्रम की सहायता से ही निरीक्षक या मुख्याध्यापक अपने विद्यालय की शैक्षिक प्रगति का निरीक्षण कर सकते हैं। अध्यापक ने कितना पाठ्यक्रम समाप्त कर दिया है, इस बात की जाँच से अध्यापक की कार्यकुशलता की जाँच हो जाती है।

11. पाठ्यपुस्तकों का निर्माण पाठ्यक्रम के आधार पर ही होता है।

पाठ्यक्रम-निर्माण के सिद्धांत (Principles of Curriculum Construction)

संपूर्ण शिक्षण-प्रक्रिया का केंद्र पाठ्यक्रम ही होता है। विद्यालय के सभी शिक्षण-कार्य एवं शैक्षिक आयोजन पाठ्यक्रम पर आधारित होते हैं। अत: पाठ्यक्रम का निर्माण बहुत सोच-विचारकर अनुभवी विद्वानों के द्वारा किया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम का निर्माण करते समय निम्नलिखित सिद्धांतों को ध्यान में रखना चाहिए :

1. पाठ्यक्रम शैक्षिक उद्देश्यों के अनुसार हो (Principle of aims Centredness)—शिक्षा एक त्रिकोणात्मक प्रक्रिया है। सर्वप्रथम हम शैक्षिक उद्देश्यों का निर्माण करते हैं फिर उन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शैक्षिक क्रियाकलापों को निर्धारित किया जाता है। अत: पाठ्यक्रम ऐसा हो जो शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक हो। पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई किसी एक या अनेक उद्देश्यों पर आधारित हो। उदाहरण के लिए यदि विषय का उद्देश्य छात्रों का सृजनात्मक विकास करना है तो पाठ्यक्रम में रचना संबंधी ऐसी क्रियाओं एवं प्रकरणों को शामिल किया जाए जो बालक की सृजनात्मक शक्तियों को विकसित करने में सहायता करनेवाले हों।

2. पाठ्यक्रम बच्चों के मानसिक स्तर के अनुकूल हो (Principle of Child Centredness)—आज संपूर्ण शिक्षण-प्रक्रिया बालकेंद्रित मानी जाती है। इस बात को सभी स्वीकार करते हैं कि बालक उसी विषय को आसानी से ग्रहण कर सकता है जो उसके शारीरिक, सामाजिक, मानसिक एवं संवेगात्मक विकास पर आधारित हो। बच्चे की अधिगम क्षमता, रुचियों एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर ही पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाए। यदि बच्चा प्राकृतिक दृश्यों एवं घटनाओं में रुचि रखता हो तो पाठ्यक्रम में ऐसी पाठ्य-सामग्री का चयन किया जाए जिसमें प्राकृतिक दृश्यों आदि का चित्रण हो।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3. क्रियाशीलता का सिद्धांत (Principle of Activity)—बच्चा हमेशा सक्रिय रहना चाहता है। साथ ही स्वयं करके सीखा हुआ ज्ञान स्थायी भी होता है अतः पाठ्यक्रम का आयोजन इस प्रकार से किया जाए जिसमें बच्चों को स्वयं कार्य करने के अवसर प्राप्त हों।

4. समवाय का सिद्धांत (Principle of Correlation)—ज्ञान अपने आपमें पूर्ण इकाई है। विभिन्न विषय ज्ञान की उप इकाइयाँ हैं। अतः इनमें आपस में सह-संबंध होता है। भाषा तो एक कौशल है जिसमें हम बच्चों में सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने का कौशल विकसित करने का प्रयास करते हैं। इन कौशलों को विकसित करने के लिए हिंदी भाषा के पाठ्यक्रम में जो विषय-सामग्री ली जाती है वह विभिन्न विषयों से संबंधित होनी चाहिए। किसी महान वैज्ञानिक के पाठ द्वारा हिंदी व विज्ञान में समवाय स्थापित किया जा सकता है। इसी प्रकार भाषा का अन्य विषयों से भी समवाय स्थापित किया जा सकता है।

5. वातावरण के साथ एकीकरण का सिद्धांत (Principle of Integration with Environment)—शिक्षा बालक को जीवन के साथ सामंजस्य स्थापित करना सिखाती है। अतः पाठ्यक्रम में बच्चे के जीवन से संबंधित घटनाओं को समन्वित करना चाहिए ताकि वह अपने सामाजिक वातावरण के साथ तालमेल स्थापित कर सके।

6. उपयोगिता का सिद्धांत (Principle of Utility)—'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।' वास्तव में भाषा का अध्ययन करने से ही बालक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में पदार्पण करने में समर्थ होता है। अतः भाषा के पाठ्यक्रम में ऐसे प्रकरणों को स्थान देना चाहिए जो बालक को भावी जीवन के लिए तैयार करते हों। जिनका अध्ययन कर वह समाज का उपयोगी सदस्य बन सके।

7. निरंतरता का सिद्धांत (Principle of Continuity)—पाठ्यक्रम का निर्माण करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि बच्चे प्राप्त अनुभवों के आधार पर जटिल सामग्री को समझने का प्रयास कर सकें। परिचित और ठोस तथ्यों की सहायता से अपरिचित और सूक्ष्म तथ्यों को जानें। अर्थात किसी भी स्तर पर पाठ्यक्रम अपने से पूर्व स्तर के पाठ्यक्रम पर आधारित होना चाहिए। इससे अधिगम में निरंतरता बनी रहती है।

8. लचीलेपन का सिद्धांत (Principle of Flexibility)—समय परिवर्तनशील है अतः पाठ्यक्रम में भी समाज की बदलती हुई परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन करने की सुविधा होनी चाहिए। पाठ्यक्रम में बच्चों की तात्कालिक आवश्यकताओं को स्थान देकर, पाठ्यक्रम को रूढ़िवादी होने से बचाने का प्रयास करना चाहिए।

9. पाठ्यक्रम बच्चों में सद्भावनाओं को विकसित करने वाला होना चाहिए।
10. पाठ्यक्रम प्रजातांत्रिक मूल्यों को विकसित करनेवाला होना चाहिए।
11. पाठ्यक्रम बालकों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं पर आधारित होना चाहिए।
12. पाठ्यक्रम इकाइयों में विभाजित होना चाहिए।

उपर्युक्त सिद्धांतों को ध्यान में रखकर बनाया गया पाठ्यक्रम भाषा-शिक्षण के लक्ष्यों को प्राप्त करने में पूरी तरह से सक्षम होगा और बालकों के व्यक्तित्व का विकास भी संतुलित रूप से कर सकेगा इसमें कोई संदेह नहीं। वास्तव में पाठ्यक्रम निर्माण का कार्य एक गंभीर एवं उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य है अतः पाठ्यक्रम का निर्माण करने के लिए विषय विशेषज्ञों की एक समिति बननी चाहिए। पूरी तरह से सोच-विचार, गंभीर चिंतन-मनन, शिक्षाकार्य में रत अध्यापक वर्ग से विचार-विमर्श एवं शैक्षिक उद्देश्यों का अध्ययन करने के उपरांत ही पाठ्यक्रम का निर्माण होना चाहिए। पाठ्यक्रम लागू करने के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
पश्चात छात्र वर्ग एवं अध्यापक वर्ग की जो भी प्रतिक्रिया हो, उसको जानकर पाठ्यक्रम में आवश्यक परिवर्तन करने चाहिए। समय-समय पर पाठ्यक्रम का मूल्यांकन भी करते रहना चाहिए कि वह बदलते हुए परिवेश के लिए उपयोगी है या नहीं। इस प्रकार सावधानीपूर्वक आवश्यक परिवर्तन करते रहने से पाठ्यक्रम समय के बदलते हुए परिवेश के साथ आगे बढ़ने में समर्थ रहता है तथा उपयोगी, प्रभावशाली, क्रियाशील एवं रुचिकर बना रहता है।

पाठ्यक्रम की समीक्षा
(Evaluation of the Curriculum)

किसी भी विषय का अध्यापन करने के लिए पूर्ण शिक्षण-सत्र में अध्यापक विषय से संबंधित जिन क्रियाओं का आयोजन करता है और जिन प्रकरणों को अपने विषय के कालांश में छात्रों को पढ़ाता है, वह सब उस विषय के पाठयक्रम में आते हैं। यह पाठ्यक्रम शिक्षण-लक्ष्यों की प्राप्ति की सामर्थ्य रखता है या नहीं, छात्रों के विकास की दृष्टि से उपयोगी है या नहीं, छात्रों की इसमें रुचि है या नहीं तथा यह छात्रों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं के अनुरूप है या नहीं। इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम का अध्ययन और विवेचन पाठ्यक्रम की समीक्षा कहा जाता है।

किसी भी विषय के पाठ्यक्रम की समीक्षा करने के लिए उस विषय के उद्देश्य तथा उसके निर्माण के सिद्धांतों को ध्यान में रखना पड़ता है।

विद्यालयी शिक्षा के प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च सभी स्तरों पर बच्चों को भाषा की शिक्षा दी जाती है। जहाँ तक भाषा के रूप में हिंदी-शिक्षण की बात है, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, बिहार, हरियाणा, केंद्रशासित दिल्ली आदि सभी प्रांतों में हिंदी मातृभाषा के रूप में पढ़ाई जाती है। इन सभी प्रांतों में अलग-अलग पाठ्यक्रम लागू हैं। इस दृष्टि से किसी प्रांत विशेष के पाठ्यक्रम का मूल्यांकन न कर हम हिंदी विषय के पाठ्यक्रम की समीक्षा सामान्य ढंग से कर रहे हैं।

माध्यमिक स्तर पर हिंदी भाषा के पाठ्यक्रम में प्राय: निम्न प्रकार की पुस्तकें निर्धारित की जाती हैं :

1. **निबंध-संग्रह की पुस्तक,** जैसे—गद्य-सौरभ या गद्य-कौमुदी आदि।

2. **गद्य की विभिन्न विधाओं का संग्रह** जैसे—इंद्रधनुष या एकांकी-संग्रह या कहानी-संग्रह आदि।

3. **कविता-संग्रह की पुस्तक,** जैसे—पद्यपीयूष या मकरंद आदि।

4. **व्याकरण की कोई पुस्तक,** जैसे—व्याकरण प्रबोध।

ये पुस्तकें पाठ्यक्रम की रूपरेखा के आधार पर ही प्रस्तावित की जाती हैं। इन पुस्तकों का अध्ययन करने से हम अपने राज्य के पाठ्यक्रम की समीक्षा निम्नलिखित ढंग से कर सकते हैं :

वर्तमान पाठ्यक्रम के गुण (Good Points of Present Curriculum)

1. हिंदी भाषा के पाठ्यक्रम में प्रस्तावित पुस्तकों का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि इसमें बालकेंद्रितता, उपयोगिता, प्रजातांत्रिक मूल्यों का विकास आदि सिद्धांतों पर पूरा ध्यान दिया गया है।

2. पाठ्यक्रम में समवाय के सिद्धांतों का भी पूरी तरह पालन किया गया है।

3. पुस्तकों का अध्ययन करने से छात्रों के भाषा-ज्ञान में वृद्धि होती है, उनके शब्द-भंडार में वृद्धि होती है तथा इन्हें मौखिक अभिव्यक्ति के उचित अवसर प्राप्त होते हैं।

4. पाठ्य-सामग्री बच्चों के मानसिक स्तर के अनुकूल है। बच्चे पाठ को पढ़कर उसके केंद्रीय भाव को समझ सकते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

5. कविता-संग्रह में जिन कविताओं का संग्रह किया जाता है, उनमें से अधिकांश कविताएँ रसानुभूति कराने में समर्थ हैं। देशभक्ति की कविताएँ छात्रों में देशभक्ति की भावना विकसित करती हैं। रस, छंद तथा अलंकार का ज्ञान भी प्रदान करती हैं। कविताएँ कंठस्थ करने योग्य हैं। 'गुरु गोविंद दोऊ खड़े' जैसे दोहे छात्रों में गुरु के प्रति श्रद्धा के भाव को विकसित करते हैं। सूर, तुलसी, मीरा, रहीम आदि प्राचीन कवियों की कविताएँ भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था विकसित करती हैं।

6. साहित्य की विभिन्न विधाओं के संग्रह बच्चों को समाज की विभिन्न स्थितियों से परिचित कराते हैं।

7. व्याकरण पुस्तक के माध्यम से छात्रों को हिंदी की वर्णमाला, शब्द-विन्यास, पद-विश्लेषण, वाक्य-रचना, वाक्य-विश्लेषण, आदि का समुचित ज्ञान देकर, भाषा का शुद्ध प्रयोग करने की योग्यता विकसित की जाती है।

8. पत्र-रचना, निबंध-रचना आदि के द्वारा लिखित अभिव्यक्ति की योग्यता विकसित कर भावी जीवन के लिए तैयार किया जाता है।

दोष तथा कमियाँ (Demerits and Limitations)—इन गुणों के साथ-साथ पाठ्यक्रम में कुछ कमियाँ भी पाई जाती हैं, जो बहुत खटकती हैं :

1. पाठ्यक्रम में प्रारंभ से ही व्याकरण की शिक्षा देने की व्यवस्था की गई है जो उचित नहीं। भाषा का पर्याप्त ज्ञान होने के उपरांत ही व्याकरण का ज्ञान देना चाहिए। व्यावहारिक व्याकरण पर कम बल दिया गया है। माध्यमिक स्तर पर समीक्षा के सामान्य सिद्धांतों की ओर कम ध्यान दिया गया है।

2. पाठ्यक्रम में उचित क्रम का अभाव है। भाषा-शिक्षण में सुनना, बोलना, पढ़ना लिखना स्वाभाविक क्रम माना गया है। पाठ्यक्रम में सुनने का कौशल विकसित करने की कोई व्यवस्था नहीं है।

3. एक स्तर का पाठ्यक्रम दूसरे स्तर के पाठ्यक्रम से पूरी तरह से संबंधित नहीं है।

4. समवाय के सिद्धांत का भी पूरी तरह से पालन नहीं किया गया है।

5. बाल-मनोविज्ञान का भी पूरी तरह से ध्यान नहीं रखा गया है।

6. पाठ्यक्रम में साहित्यिक क्रियाओं को उचित स्थान नहीं दिया गया है।

7. साहित्य की विभिन्न विधाओं को बहुत कम स्थान दिया गया है।

8. पाठ्यक्रम को सामाजिक जीवन से पूरी तरह संबंधित नहीं किया गया है।

पाठ्यक्रम में पाए जानेवाले इन दोषों को आसानी से दूर किया जा सकता है। थोड़े-से प्रयास एवं सावधानी से हम पाठ्यक्रम को प्रभावशाली, व्यापक एवं दोषरहित बना सकते हैं।

वैसे वर्तमान समय में माध्यमिक स्तर का पाठ्यक्रम कुछ कमियों के होते हुए भी एक सफल पाठ्यक्रम है क्योंकि यह हिंदी भाषा के शिक्षण-महत्त्व, उद्देश्यों एवं सिद्धांतों की कसौटी पर खरा उतरता है।

अध्ययन के लिए प्रश्न

1. पाठ्यक्रम से आप क्या समझते हैं ? हिंदी-शिक्षण में पाठ्यक्रम की आवश्यकता का वर्णन कीजिए।

2. पाठ्यक्रम से आपका क्या अभिप्राय है ? हिंदी-शिक्षण में पाठ्यक्रम का क्या स्थान है ? स्पष्ट कीजिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3. पाठ्यक्रम किसे कहते हैं ? हिंदी पाठ्यक्रम का निर्माण करते समय आप किन-किन बातों को ध्यान में रखेंगे ?

4. पाठ्यक्रम का क्या अर्थ है ? पाठ्यक्रम निर्माण के विभिन्न सिद्धांतों का वर्णन कीजिए।

5. हिंदी शिक्षण के संदर्भ में पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धांतों का उल्लेख कीजिए।

6. पाठ्यक्रम की समीक्षा आप किस प्रकार करेंगे ? अपने राज्य के माध्यमिक स्तर पर निर्धारित पाठ्यक्रम की समीक्षा कीजिए।

7. हिंदी-पाठ्यक्रम निर्माण के सामान्य सिद्धांतों के आधार पर बताइए कि आपके राज्य में विद्यालयी पाठ्यक्रम कहाँ तक सही है ? सुधार के लिए उपयुक्त सुझाव भी दीजिए।

8. निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :

(i) पाठ्यक्रम निर्माण के सामान्य सिद्धांत

(ii) हिंदी शिक्षण में पाठ्यक्रम की आवश्यकता और उसका महत्त्व

(iii) राज्य में प्रचलित हिंदी के वर्तमान पाठ्यक्रम की समीक्षा।

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

19

हिंदी-पाठ्यपुस्तक समीक्षा
(Critical Evaluation of Hindi-Text Books)

हिंदी-शिक्षण में पाठ्यपुस्तकों का स्थान एवं महत्त्व
(Place and Importance of Text-Books in Teaching of Hindi)

आज की संपूर्ण शिक्षा-प्रणाली पाठ्यपुस्तक पर केंद्रित है। मुद्रण-कला के विकास ने हमें पुस्तकों के रूप में अमूल्य उपहार दिया है। पाठ्यपुस्तकें समूची शिक्षा-प्रक्रिया को नियोजित एवं व्यवस्थित बनाए रखती हैं। वैसे तो पाठ्यचर्या के सभी विषयों की शिक्षा में पाठ्यपुस्तकों का अमूल्य योग होता है, परंतु भाषा की शिक्षा में तो इनका अपना विशिष्ट स्थान है। भाषा में तो पाठ्यपुस्तकें साधन और साध्य दोनों रूपों में प्रयुक्त की जाती हैं। जब पाठ्यपुस्तकें बच्चों के शब्द, सूक्ति, मुहावरे एवं लोकोक्ति-भंडार में वृद्धि करने, उन्हें वर्ण-विन्यास सिखाने, उनका उच्चारण शुद्ध करने, उन्हें सस्वर व मौन वाचन का अभ्यास कराने, स्वाध्याय की योग्यता विकसित करने आदि के लिए प्रयुक्त की जाती हैं तब ये साधन रूप में कार्य करती हैं और जब काव्य की रसानुभूति या कहानी, नाटक आदि का रसास्वादन कराने के लिए प्रयुक्त होती हैं तो साध्य का काम करती हैं।

पाठ्यपुस्तक की उपयोगिता को संक्षेप में निम्न रूप से स्पष्ट किया जा सकता है :

1. पाठ्यपुस्तकें विषय के पाठ्यक्रम को स्पष्ट कर देती हैं। इनसे अध्यापक व छात्र दोनों को यह मालूम पड़ जाता है कि पूर्ण शिक्षण-सत्र में उसे क्या पढ़ाना है व क्या पढ़ना है। किसी के भटकने का डर नहीं रहता है।

2. पाठ्यपुस्तके कक्षा में जाने से पूर्व विषय तैयार करने में अध्यापक की सहायता करती हैं।

3. यह जरूरी नहीं कि कक्षा में जो भी पढ़ाया जाए वह सभी छात्रों को पूरी तरह से समझ में आ जाए। पाठ्यपुस्तकें ऐसी स्थिति में छात्रों की सहायता करती हैं। वे कक्षा-शिक्षण की पूरक होती हैं।

4. पाठ्यपुस्तकों में विषय से संबंधित संपूर्ण सामग्री एक ही स्थान पर मिल जाती है। इसमें छात्रों को इधर-उधर नहीं भटकना पड़ता है।

5. पाठ्यपुस्तकें विषय को दोहराने में सहायता करती हैं।

6. पाठ्यपुस्तकें की सहायता से ही अनेक छात्रों को एक साथ पढ़ाना संभव होता है।

7. पाठ्यपुस्तकें पठन-योग्यता को विकसित करने में सहायता करती हैं। सस्वर वाचन एवं मौन वाचन का अभ्यास पाठ्यपुस्तकों से ही होता है। स्वाध्याय की आदत विकसित करने में भी वे सहायक होती हैं।

8. इनसे अध्यापक व छात्र दोनों के समय व शक्ति की बचत होती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

9. ये छात्रों को गृह-कार्य देने में अध्यापक की सहायता करती हैं और छात्रों को गृह-कार्य करने में मदद करती हैं।

10. पाठ्यपुस्तकें छात्रों के ज्ञान में वृद्धि करती हैं। इनके द्वारा छात्रों को विभिन्न विषयों की जानकारी होती है।

11. बहुत-सी आधुनिक शिक्षण-पद्धतियों जैसे—योजनाविधि, डाल्टन विधि आदि में पाठ्यपुस्तक के बिना कार्य पूरा नहीं हो सकता है। इनमें छात्रों को स्वयं अध्ययन कर ज्ञान प्राप्त करना होता है। शिक्षक तो केवल पथ-प्रदर्शक का कार्य करते हैं।

12. भाषा में लेखन-कौशल का विकास पाठ्यपुस्तकों से ही संभव है। छात्र पहले स्वयं पढ़कर शब्द-विन्यास, वाक्य-विन्यास, विराम-चिह्न प्रयोग आदि को देखते हैं फिर स्वयं लिखने का अभ्यास करते हैं।

13. भाषा की पाठ्यपुस्तकों के नाटक, कहानी, एकांकी आदि छात्रों का मनोरंजन करते हैं।

14. पाठ्यपुस्तकें अवकाश के समय का सदुपयोग करती हैं। इन्हीं से इन्हें 'एकांत के क्षणों की प्रिय मित्र' कहा जाता है।

15. वर्तमान परीक्षा-प्रणाली में पाठ्यपुस्तकों के बिना छात्र परीक्षा दे ही नहीं सकता। पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन कर वह परीक्षा की तैयारी करता है।

16. भाषा-शिक्षण में पाठ्यपुस्तकें बच्चों को विभिन्न प्रकार की लेखन-शैलियों एवं साहित्यिक विधाओं से परिचित कराती हैं।

17. विभिन्न साहित्यिक व सांस्कृतिक क्रियाओं का आयोजन करने में पाठ्यपुस्तकों की विशेष आवश्यकता होती है।

18. छात्रों में साहित्यिक रुचि विकसित करने के लिए पाठ्यपुस्तकें ही प्रमुख भूमिका अदा करती हैं।

हिंदी पाठ्यपुस्तकों की अपेक्षित विशेषताएँ एवं उनका चयन
(Desirable Characteristics of Hindi Text books and their Selection)

हिंदी भाषा की शिक्षा में पाठ्यपुस्तकें एक सशक्त माध्यम के रूप में प्रयुक्त की जाती हैं। भाषा संबंधी विभिन्न कौशलों को विकसित करने में पाठ्यपुस्तक की एक महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। अतः विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर पाठ्यपुस्तकों का चुनाव बहुत ही सावधानीपूर्वक करना आवश्यक है। पाठ्यपुस्तक के चयन में थोड़ी-सी असावधानी या पक्षपात छात्रों में भाषीय कौशलों को विकसित करने में एक प्रमुख बाधा बन सकता है। पाठ्यपुस्तक का चयन करते समय इस बात का ध्यान रखा जाए कि पाठ्यपुस्तक छात्रों के मानसिक स्तर के अनुकूल हो एवं छात्रों के भाषायी ज्ञान में क्रमबद्ध वृद्धि करनेवाली हो ताकि छात्र उचित शब्दावली एवं भाषा का प्रयोग कर प्रभावशाली ढंग से अपने विचारों को अभिव्यक्त कर सकें। उनके विचारों में पूर्णता हो, इसके लिए पाठ्यपुस्तकों में विभिन्न प्रकार के ज्ञान-विज्ञान का समावेश हो। चयनकर्त्ता को एक अच्छी पाठ्यपुस्तक में निहित सभी विशेषताओं की जाँच व मापन करने के पश्चात ही पाठ्यपुस्तक का चुनाव करना चाहिए।

एक अच्छी पाठ्यपुस्तक के गुण या विशेषताएँ (Features and characteristics of a good Text-book)—एक अच्छी पाठ्यपुस्तक के गुणों या विशेषताओं को दो वर्गों में विभाजित किया जाता है :

(I) आंतरिक गुण या आंतरिक विशेषताएँ—हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक में निम्नलिखित

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
आंतरिक गुण या विशेषताएँ होनी चाहिए :

(क) विषयवस्तु—पाठ्यपुस्तक में संकलित विषयवस्तु के माध्यम से ही छात्रों को भाषा संबंधी ज्ञान दिया जाता है तथा साहित्य में रुचि विकसित करने का प्रयास किया जाता है। अतः पूर्वनिर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने तथा छात्रों में वांछित योग्यताओं को विकसित करने की दृष्टि से विषयवस्तु निम्न प्रकार की होनी चाहिए :

(i) पाठ्यपुस्तक में पाठों का क्रम सरल से कठिन की ओर होना चाहिए। भाषा, भाव, विषय और शैली की दृष्टि से जो पाठ अपेक्षाकृत सरल हों उन्हें पहले व अन्य पाठों को बाद में रखा जाए।

(ii) पाठ्यवस्तु छात्रों के भाषा संबंधी क्रमिक विकास के अनुरूप विकसित की जानी चाहिए।

(iii) पाठ्यवस्तु में गद्य, पद्य, कहानी, एकांकी आदि पाठ होते हैं। पाठ्यपुस्तक में इन प्रकरणों को सरल से कठिन के क्रम में रखना चाहिए।

(iv) साहित्यिक विधाओं की तरह पाठ्यपुस्तक में विभिन्न विषयों से संबंधित, प्रकरणों को भी उचित क्रम में रखना चाहिए। एक विषय से संबंधित कविता, निबंध, कहानी आदि को एक साथ न रखकर रोचक क्रम में रखना चाहिए।

(v) विषयवस्तु या क्रम निर्धारित करते समय मौसम तथा वातावरण का भी ध्यान रखना चाहिए। वर्षा से संबंधित पाठ इस क्रम में रखा जाए कि जुलाई-अगस्त के समय पढ़ाने का अवसर आए। रामायण से संबंधित पाठ को इस तरह संगठित किया जाए कि दशहरे के आसपास पढ़ाया जा सके।

(vi) उचित परिणाम या अनुपात की दृष्टि से विषयवस्तु इतनी होनी चाहिए कि पूरे शिक्षण-सत्र में आसानी से पूरी की जा सके।

(vii) पाठ्यपुस्तकों के पाठ की लंबाई इतनी होनी चाहिए कि उसे एक या दो कालांश में पूरा किया जा सके। कोई भी पाठ इतना लंबा न हो कि उसे पढ़ाने में पूरा सप्ताह लग जाए, इससे छात्र ऊब जाएँगे और शिक्षण नीरस बन जाएगा।

(viii) पाठ्यपुस्तक के सभी पाठ समान अनुपात में होने चाहिए। यह नहीं कि एक पाठ एक कालांश में समाप्त हो और दूसरा पूरे सप्ताह में। विभिन्न साहित्यिक विधाओं के पाठ भी समान अनुपात में होने चाहिए।

(ख) पाठ्यपुस्तक की भाषा—वैसे तो सभी विषयों की पाठ्यपुस्तकों की भाषा सरल, सुबोध एवं शुद्ध होनी चाहिए, परंतु भाषा की पाठ्यपुस्तक में तो उसकी भाषा की शुद्धता की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। पाठ्यपुस्तक की भाषा में निम्न विशेषताएँ होनी चाहिए :

(i) पाठ्यपुस्तकों की भाषा छात्रों के स्तर के अनुकूल होनी चाहिए। किसी भी स्थिति में पाठ्यपुस्तक की भाषा इतनी क्लिष्ट नहीं होनी चाहिए कि छात्र उसे समझ ही न सकें।

(ii) भाषा व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध होनी चाहिए।

(iii) भाषा सरल एवं सुबोध होनी चाहिए। यथासंभव छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग करना चाहिए। भाषा तद्भव प्रधान होनी चाहिए। शब्द सरल एवं सरस होने चाहिए। धीरे-धीरे भाषा में क्रमिक विकास होना चाहिए। उच्च कक्षाओं में तत्सम शब्दों से युक्त भाषा का प्रयोग होना चाहिए। इस स्तर पर सामासिक पदावली से युक्त रचनाओं को पाठ्यपुस्तक में रखा जा सकता है।

(iv) पाठ्यपुस्तकों की भाषा ऐसी हो कि सरल से कठिन और ज्ञात से अज्ञात के क्रम में छात्रों का शब्द एवं सूक्ति-भंडार विकसित हो।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(v) गहन अध्ययन की पाठ्यपुस्तकों में इस बात का ध्यान रखा जाए कि हर पाठ में छात्रों को कुछ नवीन शब्दों का परिचय प्राप्त हो।

(ग) शैली—पाठ्यपुस्तक की लेखन-शैली भी पाठ्यपुस्तक को आकर्षक बनाने में सहायक होती है। शैली की दृष्टि से निम्न बातें ध्यान देने योग्य हैं :

(i) पाठ्यपुस्तक की शैली छात्रों के स्तरानुकूल होनी चाहिए। छोटी कक्षाओं में संवादात्मक व कथात्मक शैली अधिक रुचिकर होती है और बड़ी कक्षाओं में वर्णनात्मक या भावप्रधान शैली। इस बात को ध्यान में रखकर ही पाठों का चयन करना चाहिए।

(ii) पाठ्यपुस्तक की शैली में विविधता होनी चाहिए। इससे पाठ्यपुस्तक में एकरसता दूर हो जाती है और पुस्तक रोचक बनी रहती है। साथ ही बच्चों को विभिन्न लेखन-शैलियों का ज्ञान भी हो जाता है।

(iii) शैली की विविधता का ध्यान रखते हुए उनके औचित्य को भी देखना चाहिए। प्रारंभ में तद्भव-प्रधान शैली हो, फिर रूढ़ोक्ति-प्रधान शैली और उसके पश्चात तत्सम-प्रधान शैली के निबंधों का चयन करना चाहिए।

(iv) शैली में माधुर्य, ओज एवं प्रसाद गुण अवश्य होने चाहिए।

(v) शैलियों में संतुलन भी रखना चाहिए। एक शैली में लिखे गए पाठ एक के बाद दूसरे के क्रम में नहीं रखना चाहिए बल्कि विभिन्न शैलियों का क्रमानुसार संतुलित रूप से प्रयोग करना चाहिए।

(vi) विविध शैलियों को अपनाते समय यह भी ध्यान रखा जाए कि पाठों में पाठ्यसामग्री को छोटे-छोटे, उचित अनुच्छेदों में विभाजित करना चाहिए।

(vii) शैली पाठ्यसामग्री के अनुकूल हो अर्थात इस बात को भी ध्यान में रखना चाहिए कि शैली पाठ्यसामग्री का समुचित विकास करने में समर्थ है या नहीं।

(घ) व्याख्या एवं सामग्री—पाठ्य सामग्री के प्रत्येक पाठ में कुछ नवीन शब्द एवं वाक्यांश प्रयुक्त होते हैं जिनकी व्याख्या करना आवश्यक होता है।

इसके लिए निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए :

(i) प्रत्येक पाठ के अंत में या पुस्तक के अंत में पाठों के क्रमानुसार उन पाठों में आए कठिन शब्दों, सूक्तियों तथा मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करना चाहिए।

(ii) शब्दों की व्याख्या के साथ-साथ पाठ में आए नवीन नामों, वस्तुओं, स्थानों एवं तथ्यों आदि को टिप्पणी देकर स्पष्ट करना चाहिए।

(iii) पाठ में आए पारिभाषिक शब्दों को स्पष्ट करना चाहिए।

(iv) पाठ में आए ऐतिहासिक या पौराणिक प्रसंगों की संक्षिप्त व्याख्या की जानी चाहिए।

(v) प्रत्येक पाठ के आरंभ में पाठ के लेखक या कवि का संक्षिप्त परिचय होना चाहिए।

(ङ) चित्र—बच्चे चित्र देखने में बहुत रुचि लेते हैं अत: प्रत्येक पाठ में विषयवस्तु से संबंधित श्वेत-श्याम या रंगीन चित्रों का भी समावेश करना चाहिए।

(च) अभ्यासार्थ प्रश्न—प्रत्येक पाठ के अंत में अभ्यास करने के लिए विभिन्न प्रकार के वस्तुपरक, लघु-उत्तर एवं निबंधात्मक प्रश्न दिए जाने चाहिए। इससे छात्र पाठ को पढ़ने के उपरांत अपना मूल्यांकन कर सकेंगे। पाठ को दोहराने में भी सहायता मिलेगी।

(छ) विषय-सूची—पाठ्यपुस्तक के प्रारंभ में विषय-सूची दी जानी चाहिए, जिसमें पाठ का शीर्षक, लेखक का नाम तथा पृष्ठ संख्या दी हुई हो। इससे छात्रों को पाठ ढूँढ़ने में सुविधा हो जाती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(II) बाह्य गुण या विशेषताएँ—पाठ्यपुस्तक का बाह्य आकार, रंग-रूप एवं सज्जा बच्चे को अपनी तरफ आकर्षित करती है। उसकी विषयवस्तु कितनी भी रुचिकर क्यों न हो, यदि बाह्य रूप आकर्षक नहीं तो बच्चे का मन पुस्तक पढ़ने के लिए प्रवृत्त नहीं होता है। बाह्य आकर्षण ही छात्र को पुस्तक पढ़ने के लिए प्रवृत्त करता है। बाह्य आकर्षण की दृष्टि से पाठ्यपुस्तक में निम्न गुण या विशेषताएँ होनी चाहिए :

(क) मुखपृष्ठ—पाठ्यपुस्तक का आवरण या मुखपृष्ठ आकर्षक एवं रंगीन होना चाहिए। उस पर विषय से संबंधित कोई चित्र बना होना चाहिए। जैसे भाषा की पाठ्यपुस्तक पर बच्चे और पुस्तक या लेखनी का चित्र, कमल के फूल का चित्र आदि। आवरण पृष्ठ मजबूत होना चाहिए। आवरण पृष्ठ ही पुस्तक को सुरक्षित रखता है। आवरण पृष्ठ के फटते ही पूरी पुस्तक विकृत होने लगती है।

(ख) पाठ्यपुस्तक का शीर्षक आकर्षक होना चाहिए। यह छोटा एवं साहित्यिक होना चाहिए। जैसे गद्य-सौरभ, पद्यपीयूष, गद्यमंजूषा, मकरंद, पद्यपराग, गद्यकौमुदी, इंद्रधनुष आदि।

(ग) पाठ्यपुस्तक का आकार बच्चों के स्तरानुकूल होना चाहिए। छोटी कक्षाओं में पाठ्यपुस्तक का आकार बड़ा और उच्चतर की पाठ्यपुस्तक का आकार छोटा 6" × 4" का होना चाहिए।

(घ) पाठ्यपुस्तक का कागज अच्छा तथा मजबूत होना चाहिए। सफेद व चिकना कागज छपाई के लिए अच्छा होता है। इसमें स्याही नहीं फैलती है। कागज ऐसा हो जिस पर स्पष्ट और आकर्षक ढंग से छपाई हो सके।

(ङ) पाठ्यपुस्तक की छपाई सुंदर व आकर्षक होनी चाहिए। वर्णों का आकार ऐसा हो कि छात्र आसानी से पढ़ सकें। छोटी कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकों में बड़े आकार के अक्षर हों और जैसे-जैसे कक्षा का स्तर बढ़ता जाए वैसे-वैसे वर्णों का आकार छोटा करते जाना चाहिए। परंतु किसी भी स्तर पर 12 पाइंट से कम का आकार नहीं होना चाहिए। पाठ के शीर्षक 16 पाइंट के आकार के होने चाहिए। छोटी कक्षाओं में 24 और 32 पाइंट के आकार का टाइप भी हो सकता है।

(च) छपाई करते समय हर पृष्ठ के चारों तरफ हाशिया छोड़ा जाना चाहिए। छपाई के लिए काली स्याही का प्रयोग करना चाहिए। छपाई करते समय दो वर्णों के बीच की, दो शब्दों के बीच की, और दो वाक्यों के बीच की दूरी की उपयुक्तता पर समुचित ध्यान दिया जाना चाहिए।

(छ) हर पृष्ठ के ऊपर या नीचे पृष्ठ-संख्या छपी होनी चाहिए।

(ज) छपाई में भाषा संबंधी शुद्धता का ध्यान रखना चाहिए।

(झ) पुस्तक की बँधाई के लिए मजबूत धागें, गोंद आदि का प्रयोग करना चाहिए। बँधाई ऐसी हो कि पुस्तक पढ़ने में असुविधा न हो।

(ञ) पाठ्यपुस्तक का मूल्य भी छात्रों की सामर्थ्य के अनुसार होना चाहिए।

उपर्युक्त आंतरिक एवं बाह्य गुणों से युक्त पाठ्यपुस्तक को ही एक अच्छी पाठ्यपुस्तक माना जा सकता है।

हिंदी की वर्तमान पाठ्यपुस्तकों की समीक्षा
(Critical Evaluation of Existing Hindi Text-Books)

सामान्यत: हिंदी भाषा की शिक्षा में निम्न प्रकार की पाठ्यपुस्तकें प्रयोग में लाई जाती हैं :

1. गहन अध्ययन की पुस्तकें—इसमें प्राय: गद्य और पद्य की पुस्तकें आती हैं जिनके द्वारा छात्रों के भाषा-ज्ञान में वृद्धि की जाती है। गद्य की पुस्तक के माध्यम से ही छात्रों को शब्दविन्यास, शुद्ध उच्चारण, शब्दावली, व्यावहारिक व्याकरण, रचना-कार्य, पठन-कौशल, अर्थग्रहण आदि का ज्ञान दिया जाता है। पद्य की पुस्तक द्वारा छात्रों को रसानुभूति कराई जाती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2. विस्तृत अध्ययन की पुस्तकें—इसमें कहानी, नाटक, एकांकी, जीवनी, आत्मकथा आदि से संबंधित सहायक पुस्तकें आती हैं जिनसे बच्चों के भाषा-ज्ञान को दृढ़ किया जाता है, उन्हें मौन वाचन की कला में निपुण कर स्वाध्यायी बनाया जाता है, उनका मनोरंजन कर उन्हें अवकाश के समय का सदुपयोग करना सिखाया जाता है।

3. व्याकरण की पुस्तकें—व्याकरण के लिए अलग से कोई पुस्तक निर्धारित की जाती है। इसके द्वारा छात्रों को वर्णमाला, लिपि, वर्ण-विन्यास, शब्दावली, वाक्य-विन्यास, विराम-चिह्न आदि व्याकरण संबंधी नियमों का ज्ञान कर भाषा के शुद्ध रूप का प्रयोग करना सिखाया जाता है।

4. रचना की पुस्तक—छात्रों के रचना-कौशल को विकसित करने के लिए विभिन्न प्रकार की पत्र-रचना, निबंध-रचना, कहानी-रचना आदि की कोई पुस्तक प्रस्तावित की जाती है।

जहाँ तक हमारे हरियाणा प्रदेश का प्रश्न है यहाँ पर माध्यमिक स्तर पर हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड ने केंद्रीय माध्यमिक विद्यालय शिक्षा बोर्ड के पाठ्यक्रम को अपनाया है। नवम तथा दसवीं कक्षा में निम्नलिखित पुस्तकें प्रस्तावित की गई हैं :

1. गद्यकौमुदी—इसके संपादक डा. जयपाल तरंग एवं हरीश नवल हैं और प्रधान संपादक डा. विजयेंद्र स्नातक हैं। इस पुस्तक में निबंधों का संग्रह किया गया है जैसे—मैं और मेरा देश, भीड़ में खोया आदमी, ठेले पर हिमालय, विचार-विनिमय और भाषा, फिजी भारत से दूर, भारत कोकिला सरोजनी नायडू, हिम्मत और जिंदगी आदि।

2. इंद्रधनुष—इसमें साहित्य की विविध विधाओं का संग्रह है जैसे—मुंशी प्रेमचंद की कहानी—कजाकी, डा. विजयेंद्र स्नातक का—अनुज के नाम पत्र, महात्मा गांधी का संस्मरण—हाई स्कूल में, इंद्र विद्यावाचस्पति द्वारा लिखित झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई (जीवनी), मानसरोवर की यात्रा (संस्मरण) आदि।

3. मकरंद—यह काव्य-संग्रह है। इसमें कबीरदास, सूरदास आदि प्राचीन भक्त कवि एवं मैथिलीशरण गुप्त, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुमित्रानंदन पंत, हरिवंशराय बच्चन, शिवमंगल सिंह सुमन आदि आधुनिक कवियों की कविताओं का संकलन किया गया है।

4. व्याकरण प्रबोध—इस पुस्तक में व्याकरण संबंधी नियमों का विवेचन किया गया है। वर्ण और वर्णमाला, संधि, शब्द-वर्गीकरण, शब्द-रचना, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय, वाक्य-रचना, विराम-चिह्न, मुहावरे, लोकोक्ति, छंद, अलंकार, पत्र एवं निबंध-रचना आदि भाषा संबंधी सभी तत्वों का स्पष्टीकरण किया गया है।

उपर्युक्त सभी पुस्तकों में विषयवस्तु को उचित क्रम में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। यदि हम गंभीरतापूर्वक इनका अध्ययन करें तो इनमें निम्न विशेषताएँ देखने को मिलती हैं :

1. गद्य एवं पद्य दोनों पुस्तकों में हिंदी गद्य एवं कविता के विकास को क्रमशः सरल भाषा में संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है।

2. पुस्तकों में पाठ-परिचय, लेखक-परिचय आदि परिचयात्मक बिंदुओं को उभारकर लिखा गया है।

3. लेख या कविता के अंत में मूल्यांकन एवं अभ्यास के लिए नवीन ढंग से प्रश्न दिए गए हैं।

4. पाठ्यपुस्तक के अंत में शब्दार्थ, पौराणिक, ऐतिहासिक तथा भौगोलिक प्रसंगों को स्पष्ट करने के लिए टिप्पणी दी गई है।

5. विषय-सामग्री को रोचक ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास भी किया गया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

6. साहित्य की विभिन्न विधाओं को सरल एवं सुबोध शैली में प्रस्तुत किया गया है।

7. छात्रों के भाषा संबंधी ज्ञान में क्रमिक विकास करने का तथा उन्हें जीवन-मूल्यों से परिचित कराने का प्रयास किया गया है।

8. छात्रों की मानसिक योग्यता, रुचि, पूर्वज्ञान आदि को ध्यान में रखने का प्रयास भी किया गया है।

इन गुणों के होते हुए भी पाठ्यपुस्तकों को आदर्श पुस्तक नहीं कहा जा सकता है क्योंकि उनमें निम्नलिखित कमियाँ देखने को मिलती हैं :

1. गद्य-संग्रह के कुछ निबंध माध्यमिक कक्षा के छात्रों के स्तर से बहुत ऊँचे हैं जैसे—ठेले पर हिमालय, विचार-विनिमय और भाषा। 'फिजी भारत से दूर' जैसे प्रकरण छात्रों के जीवन से संबंधित नहीं हैं। इसी प्रकार व्याकरण में छंद और अलंकार का पठन छात्रों के स्तर से ऊँचा है।

2. इन पुस्तकों की भाषा-शैली भी संतुलित नहीं है। कुछ प्रकरणों की भाषा इतनी सरल है कि माध्यमिक स्तर से बहुत नीचे दिखाई देती है तो कुछ प्रकरणों की भाषा इतनी प्रौढ़ हो गई है कि छात्रों को सरलता से समझ नहीं आती।

3. पाठ्यपुस्तकों का बाह्य रूप भी पूरी तरह से आकर्षक नहीं है।

4. पुस्तक के लिए प्रयुक्त कागज भी ठीक स्तर का नहीं है। पुस्तक की छपाई भी छात्रों के स्तर के अनुकूल नहीं है।

5. पाठ्यपुस्तकों का संपादन एक ऐसे विद्वान ने किया है जो महाविद्यालय व विश्वविद्यालय में शिक्षण-कार्य का अनुभव रखते हैं। स्कूली बच्चों के मानसिक स्तर, रुचियों, आवश्यकताओं आदि का उन्हें अनुभव नहीं है। इसलिए कहीं-कहीं छात्रों की मानसिक योग्यता की उपेक्षा हो गई है।

6. कहीं-कहीं पुस्तक की छपाई में भी त्रुटियाँ रह गई हैं।

इस प्रकार से उपर्युक्त कमियाँ पाठ्यपुस्तकों में पाई जाती हैं परंतु इन कमियों के होते हुए भी पाठ्यपुस्तकें ठीक स्तर की कही जा सकती हैं। इन कमियों को थोड़ी-सी सावधानी और प्रयास से दूर किया जा सकता है। यदि लेखक, संपादक और प्रकाशक थोड़ी-सी ईमानदारी, न्याय एवं निष्पक्षता से कार्य करें तो पाठ्यपुस्तकों का स्तर स्वयमेव ही ठीक हो जाएगा।

अध्ययन के लिए प्रश्न

1. हिंदी-शिक्षण में पाठ्यपुसतकों का क्या स्थान है ? इनकी उपयोगिता का वर्णन करें।

2. ''पाठ्यपुस्तक एक उपकराणत्मक संपदा है जिसका वर्तमान विद्यालय-कक्षा में महत्त्वपूर्ण स्थान है।'' हिंदी-शिक्षण के संदर्भ में उपर्युक्त कथन की समीक्षा कीजिए।

3. हिंदी-शिक्षण में पाठ्यपुस्तकों का चयन करते समय उनके किन गुणों एवं विशेषताओं का ध्यान रखा जाना चाहिए। वर्णन कीजिए।

4. पाठ्यपुस्तकों की आंतरिक व बाह्य विशेषताओं से क्या अभिप्राय है ? मातृभाषा की पाठ्यपुस्तकों के चयन के कुछ सिद्धांतों का वर्णन कीजिए।

5. हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक की रचना अथवा चयन करते समय उसकी भाषा तथा पाठ्यवस्तु से संबंधित किन-किन बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है ?

6. हिंदी पाठ्यपुस्तकों की अपेक्षित विशेषताओं का उल्लेख करते हुए स्पष्ट कीजिए कि प्रचलित पाठ्यपुस्तकें बालकों की आयु एवं शैक्षिक स्तर की दृष्टि से क्यों अनुपयुक्त हैं ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

7. हिंदी की वर्तमान पाठ्यपुस्तकों में कौन-कौनसे दोष पाए जाते हैं ? एक आदर्श पाठ्यपुस्तक की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

8. हिंदी पाठ्यपुस्तकों की अपेक्षित विशेषताओं के संदर्भ में अपने राज्य में प्रचलित माध्यमिक स्तर की हिंदी पाठ्यपुस्तकों की समीक्षा कीजिए।

9. निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :

(i) हिंदी-शिक्षण में पाठ्यपुस्तकों का स्थान एवं महत्त्व,

(ii) अच्छी हिंदी पाठ्यपुस्तकों की विशेषताएँ,

(iii) वर्तमान हिंदी पाठ्यपुस्तकों की समीक्षा,

(iv) कक्षा में हिंदी-शिक्षण हेतु पाठ्यपुस्तकों का चयन।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

20

हिंदी शिक्षण में पाठ्यक्रम-सहगामी क्रियाएँ
(Co-curricular Activities in Hindi Teaching)

शिक्षा एक परिवर्तनशील प्रक्रिया है। समय के परिवर्तन के साथ-साथ शिक्षा के स्वरूप में भी परिवर्तन आता रहता है। पहले शिक्षा विषयकेंद्रित थी परंतु आज शिक्षा बालकेंद्रित है। बालक स्कूल में कक्षा के कमरों, खेल के मैदान, पुस्तकालय, सभा-भवन अथवा किसी अन्य स्थान पर जो भी अनुभव प्राप्त करता है वे सब पाठ्यक्रम का अंग माने जाते हैं। जब से बालक को शिक्षा का केंद्र माना जाने लगा है तब से पढ़ाई के साथ-साथ मनोरंजनात्मक क्रियाओं जैसे—खेल, संगीत, कला, अभिनय, भ्रमण आदि सभी को विद्यालय कार्यक्रम का अभिन्न अंग माना जाने लगा है। बालक का सर्वांगीण विकास तभी हो सकता है जब बालकों को पढ़ाई के साथ-साथ अन्य क्रियाओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाए और वे क्रियाएँ ऐसी हों जिनसे बच्चों का शारीरिक, मानसिक व नैतिक विकास हो तथा जिनसे बच्चों में स्वस्थ दृष्टिकोण विकसित हो।

A. अर्थ
(Meaning)

बहुत पहले जब शिक्षा का उद्देश्य केवल कुछ विषयों का ज्ञान देना मात्र था तब इन विभिन्न क्रियाओं को अतिरिक्त क्रियाएँ (Extra-Activities) या पाठ्येतर क्रियाएँ (Extra curricular Activities) कहा जाता था परंतु अब समय की गति के साथ इन्हीं क्रियाओं को पाठ्यक्रम सहगामी या सहपाठ्य क्रियाएँ (Co-curricular Activities) कहा जाने लगा है। पाठ्य एवं सहपाठ्य दोनों क्रियाएँ विद्यालय पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग हैं, वे एक-दूसरे की पूरक हैं।

इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि ''विभिन्न विषयों के शिक्षण कार्य के अतिरिक्त विद्यालय में आयोजित की जानेवाली वे सभी क्रियाएँ, जिनसे बच्चे के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में सहायता मिलती है, पाठ्यक्रम सहगामी या सहपाठ्य क्रियाएँ कही जाती हैं।'' (''All those activities, other than teaching, which are organised in the school and are helpful in the more harmonius development of the pupils are regarded as co-curricular activities.'') अर्थात ऐसी क्रियाएँ, जो बच्चों के कक्षा अध्ययन से संबंधित न हों, परंतु जिनमें भाग लेकर बच्चे अपना शारीरिक, मानसिक, सामाजिक व नैतिक विकास करते हों, पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बन जाती हैं और उन्हें सहपाठ्य क्रियाएँ कहा जाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

B. महत्त्व एवं उपयोगिता

(Importance and Utility)

आधुनिक शिक्षा पद्धति में सहपाठ्य क्रियाओं का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है। संसार के सभी शिक्षा-शास्त्री इन क्रियाओं के महत्त्व को एक मत से स्वीकार करते हैं। इन्हीं क्रियाओं के माध्यम से औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षा में उचित समन्वय हो पाता है।

संक्षेप में पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं के महत्त्व को हम निम्न रूपों में देख सकते हैं।

1. ये क्रियाएँ बालकों के शारीरिक विकास में सहायक होती हैं क्योंकि इनमें भाग लेने से बच्चों की मांसपेशियाँ सक्रिय होती हैं, उनका उचित व्यायाम होता है तथा उनमें सुदृढ़ता आती है। भागने-दौड़ने से पाचन संस्थान ठीक रहता है और स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

2. सहपाठ्य क्रियाएँ मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी उपयोगी होती हैं। ये बालकों की रुचि के आधार पर व्यवस्थित की जाती हैं। बच्चे अपनी रुचि की क्रियाओं में भाग लेते हैं, इससे उन्हें आंतरिक संतुष्टि मिलती है जो उनके स्वाभाविक व स्वस्थ विकास में सहायक होती हैं।

3. सहपाठ्य क्रियाएँ बालकों को सामाजिक अनुकूलन का पाठ पढ़ाती हैं। इनमें भाग लेने से भाईचारे, मित्रता, सेवा, प्रेम, सहयोग आदि की भावना विकसित होती है। इनसे बच्चों में ऐसे स्वभाव का विकास होता है जो उन्हें यह सिखाता है कि हमें दूसरों के साथ किस प्रकार मिल-जुलकर जीवन व्यतीत करना चाहिए।

4. सहपाठ्य क्रियाएँ बच्चों के शैक्षिक विकास में भी सहायक होती हैं। भाषा शिक्षण के कई उद्देश्यों को साहित्यिक क्रियाओं के आयोजन के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। जैसे मौखिक अभिव्यक्ति की योग्यता का विकास भाषण, वाद-विवाद, नाटक आदि क्रियाओं में भाग लेने से हो सकता है।

5. ये क्रियाएँ बच्चों में जनतंत्रात्मक योग्याताओं को विकसित करने में भी सहायता करती हैं। इन क्रियाओं से वे सीखते हैं कि जीवन में कर्त्तव्य, अधिकार और उत्तरदायित्व का क्या महत्त्व है। विभिन्न क्रियाओं के संगठन के प्रतिनिधियों का चुनाव करते समय वे जनतंत्रीय चुनाव-पद्धति से परिचित होते हैं :

6. ये क्रियाएँ बच्चों में नेतृत्व की क्षमता का विकास करती हैं। ये क्रियाएँ बच्चों में नेतृत्व के गुणों को उभारकर एक अच्छा नेता बनने का प्रशिक्षण देती हैं।

7. नैतिक विकास की दृष्टि से भी इन क्रियाओं का बहुत महत्त्व है। विभिन्न क्रियाओं में भाग लेते समय, समूह कार्य करते हुए त्याग, प्रेम, सच्चाई, आत्मनियंत्रण एवं निष्पक्षता आदि चारित्रिक गुण बच्चों में अनजाने ही विकसित हो जाते हैं जो बच्चों के चारित्रिक विकास में सहायक होते हैं।

8. बच्चों के भावात्मक विकास की दृष्टि से भी इन क्रियाओं का बहुत महत्त्व है। आज बच्चों का पढ़ाई का पाठ्यक्रम इतना ज्यादा होता है कि बच्चा हर समय तनावपूर्ण रहता है। इन क्रियाओं में भाग लेने से कुछ समय के लिए बच्चों को उस तनाव से मुक्ति मिल जाती है। बच्चों की जिन इच्छाओं की पूर्ति दैनिक जीवन में नहीं हो पाती है, उनकी पूर्ति इन क्रियाओं में भाग लेने से आसानी से हो जाती है।

9. ये क्रियाएँ विद्यार्थियों के मन में अपने विद्यालय के प्रति अपनत्व की भावना को विकसित करने में सहायक होती हैं। वे अपने या अपने साथियों के जीतने पर प्रसन्न होते हैं और ऐसा महसूस करते हैं मानो वे स्वयं जीते हैं। अन्य विद्यालयों के साथ विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेनेवाले अपने विद्यालय के साथियों की विजय की कामना करते हैं, इससे उनके मन में अपने विद्यालय के प्रति प्रेम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उत्पन्न होता है।

10. बच्चे कभी भी खाली नहीं बैठ सकते हैं। यदि कोई भी काम न हो तो वे खाली समय में ऐसे कार्य करने लगते हैं जो उनके व समाज के लिए हानिकारक होते हैं। पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएँ बच्चों के अवकाश के समय का सदुपयोग कराने में सहायक होती हैं। बच्चे अपने खाली समय में अपनी रुचि की किसी भी क्रिया का अभ्यास कर सकते हैं। इससे समय का सदुपयोग भी होगा और वे गलत कार्यों से भी बच जाएँगे।

11. मनोवैज्ञानिक तथ्य यह है कि किशोरों में कार्य करने की इतनी शक्ति होती है कि वह केवल शैक्षणिक क्रियाओं के द्वारा पूरी तरह खर्च नहीं हो पाती है। यदि बच्चा पढ़ाई के अलावा खाली बैठेगा तो वह अतिरिक्त शक्ति गलत कार्य की तरफ उन्मुख हो जाएगी। अत: सहपाठ्य क्रियाओं में भाग लेने से उस अतिरिक्त शक्ति को बाहर निकालने का अच्छा मार्ग मिल जाता है। जिस तरह इंजन में अतिरिक्त भाप को निकालने के लिए सुरक्षा कपाट (Safety valve) होता है उसी तरह सहपाठ्य क्रियाएँ भी किशोरों की अतिरिक्त शक्ति को निकालने के लिए सेफ्टीवाल्व का काम करती हैं। इससे बच्चा संतुलित व स्वस्थ रहकर उचित रूप से काम करने में समर्थ्य हो जाता है।

12. पढ़ाई करते-करते बच्चे ऊब जाते हैं। ऐसे में सहपाठ्य क्रियाएँ बच्चों का स्वस्थ मनोरंजन करती हैं और उन्हें फिर से पढ़ाई करने के लिए तरोताज़ा कर देती हैं।

13. खाली समय में बच्चे इन क्रियाओं का अभ्यास करने में लग जाते हैं, इससे विद्यालय में अनुशासन बना रहता है, किसी भी प्रकार की अव्यवस्था नहीं आ पाती है। अत: अनुशासन स्थापित रखने की दृष्टि से भी इन क्रियाओं का बहुत महत्त्व है।

14. चित्रकला, संगीत, फैंसी ड्रैस, नृत्य, नाटक आदि क्रियाएँ बच्चों में कलात्मक भावनाओं को विकसित करने में सहायक होती हैं।

15. तरह-तरह के लोक संगीत, लोक नृत्य एवं नाटकों से संबंधित क्रियाएँ बच्चों को देश-विदेश को संस्कृति से परिचित कराती हैं और इस तरह से सांस्कृतिक एकता की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं।

16. इतना ही नहीं, पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएँ बच्चों के व्यावसायिक विकास में भी सहायता करती हैं। कुछ बच्चे इन क्रियाओं में इतने पारंगत हो जाते हैं कि वे बड़े होने पर उस क्रिया को ही अपनी जीविका उपार्जन का साधन बना लेते हैं या विद्यार्थी जीवन में भी उस क्रिया विशेष में भाग लेकर पढ़ाई के साथ अपनी कुछ आय करने लगते हैं।

इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि सहपाठ्य क्रियाएँ बच्चों के सर्वांगीण विकास में पूरी तरह से सहायता करती हैं। कोई भी शिक्षा पद्धति इन क्रियाओं के बिना पूर्ण नहीं है। कहा जाता है कि ''सहपाठ्य क्रियाओं के बिना स्कूल केवल शिक्षा की दुकानें बन जाते हैं, अध्यापक केवल सूचना-प्रेषक बन जाते हैं और विद्यार्थी किताबी कीड़े बन जाते हैं तथा शिक्षा केवल रटंत में सीमित होकर रह जाती है।''

C. सहपाठ्य क्रियाओं के संगठन एवं मूल्यांकन के सिद्धांत एवं प्रक्रिया
(Principles & Procedures of Organisation & Evaluation of Co-Curricular Activities)

सहपाठ्य क्रियाओं का पूरा-पूरा लाभ हमें तभी मिल सकता है जब इनका संगठन बहुत सोच-विचार कर किया जाए। इन क्रियाओं के सार्थक, रोचक एवं उपयोगी संगठन के लिए हमें निम्नलिखित

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
सिद्धांतों को ध्यान में रखना चाहिए।

1. चयन का सिद्धांत (Principle of Selection)—पाठ्य सहगामी क्रियाओं का चुनाव बहुत सोच-समझकर किया जाना चाहिए। ये क्रियाएँ शिक्षा-प्रक्रिया की सफलता में एक साधन है, साध्य नहीं। अत: उन्हीं क्रियाओं को चुना जाए जिनका कुछ शैक्षिक मूल्य हो। इसके लिए हमें निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए—

(i) सहपाठ्य क्रियाएँ उतनी ही चुनी जाएँ जितनी आसानी से आयोजित की जा सकें और मुख्याध्यापक, अध्यापक या विद्यार्थी पर अत्यधिक बोझ न पड़े।

(ii) प्रत्येक विद्यार्थी की विभिन्न रुचियों, अभिरुचियों और योग्यता को संतुष्ट एवं विकसित करनेवाली क्रियाओं को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

(iii) क्रियाएँ ऐसी हों जिनमें विद्यालय को या विद्यार्थियों को बहुत अधिक खर्चा न करना पड़े।

(iv) विद्यार्थियों को अपनी रुचि की क्रिया का चुनाव करने की पूरी स्वतंत्रता होनी चाहिए। किसी भी क्रिया में भाग लेने के लिए छात्रों को बाध्य न किया जाए।

(v) किसी भी विद्यार्थी को उतनी ही क्रियाओं में भाग लेने की अनुमति देनी चाहिए जितने में भाग लेने से उसके शैक्षणिक कार्य में बाधा उत्पन्न न हो।

(vi) विद्यालय में सहपाठ्य क्रियाएँ धीरे-धीरे ही शुरू करनी चाहिए। एकदम से बहुत अधिक क्रियाएँ शुरू नहीं करनी चाहिए।

(vii) विद्यार्थियों के स्तर को ध्यान में रखकर ही क्रियाओं का चुनाव करना चाहिए। कोई भी दो स्कूल एक से नहीं होते हैं। प्राथमिक स्कूल की आवश्यकता माध्यमिक स्कूल की आवश्यकता से भिन्न होती है।

2. समय व स्थान की व्यवस्था का सिद्धांत (Principle of providing Time and Place)—सहपाठ्य क्रियाओं के उचित संगठन के लिए यह भी जरूरी है कि स्कूल के नियमित कार्यक्रम में उन्हें उचित स्थान दिया जाए। विद्यालय के समय-विभाग चक्र में सहपाठ्य क्रिया के पीरियड की भी व्यवस्था होनी चाहिए। पीरियड निश्चित न होने से बहुत से विद्यार्थी इनसे अनभिज्ञ रह जाते हैं और इनमें भाग नहीं ले पाते हैं। अत: स्कूल के निर्धारित समय में ही इनकी व्यवस्था होनी चाहिए जिस में सभी छात्र अपनी-अपनी रुचि की क्रिया में भाग ले सकें। समय के साथ-साथ स्थान भी निर्धारित होना चाहिए कि कौन सी क्रिया का पीरियड किस स्थान पर लगेगा।

3. प्रेरणा प्रदान करने का सिद्धांत (Principle of providing Motivation)—सभी छात्र किसी-न-किसी क्रिया में भाग लें, इसके लिए छात्रों को उचित प्रेरणा देनी चाहिए। विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के लिए निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए—

(i) छात्रों को विद्यालय में आयोजित की जानेवाली विभिन्न क्रियाओं की पूर्व सूचना दी जानी चाहिए जिससे वे अपनी रुंचि के आधार पर क्रिया में भाग ले सकें।

(ii) विद्यालय में आयोजित की जानेवाली हर क्रिया का क्लब या सभा बनी होनी चाहिए और छात्रों को अपनी रुचि वाली क्रिया के क्लब का सदस्य बना देना चाहिए।

(iii) क्रियाओं के संगठन में प्रजातंत्रीय दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। इससे छात्र अपनी मर्ज़ी से कार्य करने के लिए स्वतंत्र होंगे।

(iv) विद्यार्थियों को यह बात स्पष्ट कर देनी चाहिए कि यह उनकी अपनी सभा या क्लब है,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इनका संचालन उनके अपने हाथ में है। इससे वे अपने मन से आगे बढ़-चढ़ कर क्रियाओं के संचालन में भाग लेंगे।

(v) क्रियाओं में भाग लेनेवाले विद्यार्थी को उसके कार्य के आधार पर उचित श्रेय देना चाहिए। अध्यापकों को निष्पक्ष होकर छात्रों के प्रदर्शन के बारे में निर्णय लेना चाहिए।

(vi) छात्रों को इन क्रियाओं में अधिक-से-अधिक भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न क्रियाओं में भाग लेनेवाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत करना चाहिए। नकद राशि, प्रमाणपत्र, पदक, उपयोगी वस्तुएँ आदि के रूप में छात्रों के अच्छे प्रदर्शन के लिए पुरस्कार दिया जा सकता है। इससे भी अन्य छात्रों को भाग लेने के लिए प्रेरणा मिलती है।

(vii) प्रात:कालीन सभा या अन्य सभा में सभी छात्रों की उपस्थिति में उस छात्र की प्रशंसा की जानी चाहिए जिसने किसी क्रिया में अन्य विद्यालयों के मुकाबले में अपनी विद्यालय को गौरवान्वित किया हो।

(viii) विभिन्न क्रियाओं में अच्छा प्रदर्शन करनेवाले छात्रों का नाम विद्यालय के सम्मान-पटल पर लिखवाना चाहिए तथा विद्यालय पत्रिका में भी उनका नाम व फोटो प्रकाशित करवाने चाहिएँ।

4. मार्गदर्शन तथा परामर्श का सिद्धांत (Principle of Guidance and Advice)— सहपाठ्य क्रियाओं के उचित संगठन के लिए यह भी जरूरी है कि क्रियाओं के चुनाव एवं उनमें भाग लेने के लिए छात्रों का उचित मार्गदर्शन होना चाहिए। इसके लिए निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए—

(i) हर अध्यापक को उसकी रुचि के अनुसार किसी-न-किसी क्रिया का इंचार्ज बनाया जाए जो छात्रों का उस क्रिया के बारे में उचित मार्गदर्शन कर सके।

(ii) इंचार्ज को उस क्रिया में रुचि होने के साथ-साथ उसकी योग्यता भी होनी चाहिए।

(iii) जो अध्यापक क्रिया का इंचार्ज हो उसका शैक्षिक कार्य कुछ कम कर देना चाहिए।

(iv) छात्रों को इंचार्ज अध्यापक के निरीक्षण में ही क्रिया का अभ्यास करना चाहिए जिससे उनको उचित समय पर उचित मार्गदर्शन मिल सके।

(v) क्रियाओं के परामर्शदाता अध्यापक में क्रियाओं के प्रति उत्साह होना चाहिए। यदि उसमें उत्साह नहीं होगा तो वह क्रिया को बोझ समझने लगेगा और तब वह न्यायपूर्वक छात्रों को परामर्श नहीं दे पाएगा।

(vi) परामर्शदाता अध्यापक को विद्यार्थियों के साथ प्रेम और सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। उसे चतुरतापूर्ण ढंग से विद्यार्थियों के साथ उचित व्यवहार करना चाहिए।

5. नियम संहिता बनाने का सिद्धांत (Principle of Framing Code or Rules)— प्रत्येक सहपाठ्य क्रिया का क्लब बनाना चाहिए, उसका संचालक एक अध्यापक हो व संरक्षक मुख्याध्यापक हो। प्रत्येक क्लब के लिए उसकी नियम संहिता बनाई जाए। क्लब के उद्देश्य, उसकी सदस्यता के नियम, चुनाव-विधि, विभिन्न कार्यकर्त्ताओं के कर्त्तव्य, कार्यक्रमों के आयोजन के नियम आदि अच्छी तरह से सोच-समझकर बना लेने चाहिए जिससे किसी भी क्रिया का आयोजन करने में कोई परेशानी न हो।

6. उचित प्रचार का सिद्धांत (Principle of due Publicity)—सहपाठ्य क्रियाओं में अधिक-से-अधिक छात्र भाग लें, इसके लिए इन क्रियाओं का उचित प्रचार होना चाहिए। कब, किस समय, किस दिन, किस स्थान पर कौनसी क्रिया का आयोजन होना है, इन सब बातों का उचित प्रचार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2023-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

होना चाहिए। विभिन्न क्रियाओं के आयोजन के बारे में विस्तृत सूचना उचित समय पर दे देनी चाहिए। विद्यालय के सूचना-पटल पर इसके बारे में विस्तृत सूचना कार्यक्रम आयोजन की तिथि से काफी समय पूर्व देनी चाहिए जिससे छात्रों को किसी क्रिया में भाग लेने व तैयारी करने के लिए यथोचित समय मिल सके। सभी अध्यापकों को भी ठीक प्रकार से सूचित कर देना चाहिए।

7. रिकार्ड रखने का सिद्धांत (Principle of maintaining Records)—विद्यालय की सभी क्रियाओं से संबंधित क्लबों, संगठनों या समितियों का पूरा-पूरा रिकार्ड रखना चाहिए। इसके लिए हर क्रिया के अलग-अलग रजिस्टर बने होने चाहिए। उस रजिस्टर में क्लब के प्रतिनिधियों के नाम, सदस्यों की सूची, समय-समय पर होनेवाले कार्यक्रमों की प्रकृति, उसमें भाग लेनेवाले व विजित छात्रों के नाम कार्यक्रम में भाग लेने की नियमावली, कार्यक्रमों में होनेवाला व्यय आदि सभी का उल्लेख होना चाहिए। कार्यक्रम की सफलता या असफलता के बारे में अध्यक्ष की रिपोर्ट भी लिखी जानी चाहिए जिससे भावी कार्यक्रमों के सफल आयोजन के लिए उस रिपोर्ट से मार्गदर्शन मिल सके।

8. उचित सुविधाएँ देने का सिद्धांत (Principle of Providing Proper Facilities)—विभिन्न सहपाठ्य क्रियाओं के संगठन व आयोजन के लिए जिन-जिन साधनों एवं सुविधाओं की आवश्यकता हो, वे पूरी तरह से उपलब्ध करानी चाहिए। स्थान, फर्नीचर, आवश्यक साधन व सामग्री आदि सभी छात्रों को आवश्यकतानुसार प्रदान करानी चाहिए। परंतु ये सब विद्यालय की वित्तीय सीमाओं के अंतर्गत ही होनी चाहिए।

9. मूल्यांकन का सिद्धांत (Principle of Evaluation)—सहपाठ्य क्रियाओं के उचित संगठन के लिए मूल्यांकन के सिद्धांत को भी ध्यान में रखना चाहिए। इससे क्रियाओं के स्तर का पता लग जाता है तथा कमियों को जानकर उन्हें दूर करने में सहायता मिलती है। इसके लिए हमें निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए—

(i) सभी क्रियाओं का पूरा-पूरा रिकार्ड रखना चाहिए।

(ii) परामर्शदाता या इंचार्ज अध्यापक की अनुमति मिलने पर ही क्रिया का आयोजन होना चाहिए, जिससे आयोजन होने के पश्चात उससे आयोजन की सफलता या असफलता के बारे में विचार-विमर्श किया जा सके।

(iii) क्रियाओं के उद्देश्य पहले से स्पष्ट हों, उन्हीं के आधार पर क्रियाओं का आयोजन हो और बाद में देखा जाए कि क्रियाओं से उन उद्देश्यों की पूर्ति हो रही है या नहीं।

(iv) क्रियाओं का मूल्यांकन निष्पक्ष होकर करना चाहिए।

(v) विद्यालय में कभी भी किसी क्रिया का आयोजन करते समय उस क्रिया के पहले किए गए आयोजन के रिकार्ड का निरीक्षण करना चाहिए और उस समय के निष्कर्षों के आधार पर वर्तमान में किए जानेवाले आयोजन में रद्दोबदल कर लेनी चाहिए। जो कमियाँ पहले रह गई थीं उनकी पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिए।

(vi) किसी भी क्रिया का आयोजन हो जाने के तुरंत बाद ही एक मीटिंग का आयोजन कर उसमें सभी दृष्टियों से क्रिया की सफलता के बारे में विचार-विमर्श करना चाहिए तथा सभी पक्षों का पुनर्मूल्यांकन करना चाहिए जिससे भावी आयोजनों के बारे में सही मार्गदर्शन मिल सके।

10. कुछ अन्य सुझाव (Some other Suggestions)—(i) प्रत्येक क्रिया के उद्देश्य तथा कार्य स्पष्ट एवं रुचिकर ढंग से छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत करने चाहिए, जिससे छात्रों की रुचि क्रियाओं की ओर जाग्रत हो सके।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ii) जहाँ तक संभव हो, क्रियाओं के आयोजन का स्थान विद्यालय भवन या विद्यालय के खेल के मैदान में ही होना चाहिए, बाहर नहीं।

(iii) जहाँ तक संभव हो सके प्रत्येक अध्यापक को अपनी रुचि की किसी-न-किसी क्रिया का इंचार्ज होना चाहिए।

(iv) क्रियाओं के आयोजन में होनेवाले खर्च का पूरा-पूरा रिकार्ड रखना चाहिए तथा खर्च नियंत्रित रखना चाहिए।

(v) सभी विद्यार्थियों को क्रियाओं में भाग लेने के समान अवसर मिलने चाहिए। ये क्रियाएँ केवल कुछ विद्यार्थियों की बपौती बनकर न रह जाएँ।

(vi) क्रियाओं के आयोजन में कभी-कभी बच्चों के माता-पिता, अभिभावक तथा समुदाय के गणमान्य सदस्यों को भी आमंत्रित करना चाहिए।

(vii) क्रियाओं में छात्रों के प्रदर्शन के स्तर का निर्णय निष्पक्ष व न्यायसंगत होना चाहिए। नहीं तो छात्र भाग लेने के लिए हतोत्साहित हो जाएँगे।

(viii) क्रियाओं के आयोजन में अनावश्यक खर्च नहीं करना चाहिए। बहुत से मुख्याध्यापक अपना रौब दिखाने के लिए अतिथियों की आवभगत पर बहुत ज्यादा खर्च पर देते हैं, यह उचित नहीं।

(ix) सहपाठ्य क्रियाएँ विद्यालय के आदर्शों को ध्यान में रखकर ही आयोजित की जानी चाहिए। ऐसी क्रियाओं का आयोजन नहीं होना चाहिए जिससे विद्यालय के नाम को धब्बा लगे।

(x) परामर्शदाता अध्यापकों को क्रियाओं के बारे में कभी-कभी प्रशिक्षण दिलाते रहना चाहिए जिससे वे नवीन तकनीक का प्रयोग करते हुए परामर्श दे सकें।

हिंदी की पाठ्य-सहगामी क्रियाएँ
(Cocurricular activities in Hindi)

प्रश्न उठता है कि माध्यमिक विद्यालयों में किस प्रकार की पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन किया जाए। इस दृष्टि से माध्यमिक विद्यालयों में आयोजित विभिन्न पाठ्यसहगामी क्रियाओं के प्राय: कुछ निम्न प्रकार देखने को मिलते हैं।

1. साहित्यिक एवं शैक्षणिक क्रियाएँ (Literary and Academic activities)
2. शारीरिक एवं खेल-कूद क्रियाएँ (Physical and sports activities)
3. सांस्कृतिक क्रियाएँ (Cultural activities)
4. नागरिकता प्रशिक्षण संबंधी क्रियाएँ (Civic training activites)
5. अवकाश का सदुपयोग करनेवाली क्रियाएँ (Laisure time utilisation activites)
6. हस्तकला कौशल से संबंधित क्रियाएँ (Handi craft activities)
7. भ्रमण संबंधी क्रियाएँ (Excursion activities)
8. वैज्ञानिक अभिरुचि संबंधी (Scientific interests activities)
9. समाज-सेवा संबंधी क्रियाएँ (Social service activities)
10. नैतिक विकास संबंधी क्रियाएँ (Moral development activities)

इन विभिन्न प्रकार की क्रियाओं के परिप्रेक्ष्य में जो पाठ्यसहगामी क्रियाएँ हिंदी भाषा शिक्षण के साथ अधिक अच्छी तरह से जुड़ी हुई हैं उन्हें निम्न रूप में लिपिबद्ध किया जा सकता है।

(i) प्रात:कालीन सभा (Morning Assembly)

(ii) भाषण प्रतियोगिता (Declamation contest)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(iii) वाद-विवाद प्रतियोगिता (Debate competition)

(iv) भित्ति पत्रिका (Wall Magazine)

(v) विद्यालय पत्रिका (School Magazine)

(vi) कविता-पाठ (Poetic Recitation)

(vii) गोष्ठी (Seminar)

(viii) समाचारपत्र पठन (News Paper reading)

(ix) विस्तारभाषण (Extension Lecture)

(x) लेखन प्रतियोगिताएँ (Writing competitions) (क) कहानी लेखन (Story writing) (ख) निबंध लेखन (Essay writing) (ग) कविता लेखन (Poem writing) (घ) सुलेख (Good writing)

(xi) प्रश्नमंच (Quiz competition)

(xii) साहित्य सभा (Literary Assosiation)

(xiii) नाटकीकरण (Dramatisation)

(xiv) उत्सवों का आयोजन (Organisation of Birthday of great persons and festivals)

(xv) विद्यालय के विभिन्न समारोहों का आयोजन जैसे—वार्षिक उत्सव, पुरस्कार वितरण समारोह, अभिभावक दिवस आदि। (Organisation of functions—Annual function, Prize distribution function, Parents day)

(xvi) साहित्यिक रुचि के स्थानों का भ्रमण (Visits to the places fo Literary interest)

कुछ पाठ्य सहगामी क्रियाओं का संगठन (Organisation of a few Cocurricular activities)

उपरोक्त वर्णित पाठ्य सहगामी क्रियाओं में से अपनी परिस्थितियों और संसाधनों के अनुसार हिंदी भाषा के पाठ्यक्रम की सहयोगी क्रियाओं के रूप में विद्यालय विशेष के द्वारा अधिकाधिक सहगामी क्रियाओं का आयोजन किया जा सकता है। यह आयोजन कैसे किया जाए इसे स्पष्ट करने हेतु हम यहाँ इस अध्याय में अब आगे हिंदी शिक्षण हेतु सामान्य रूप से अधिक प्रचलित पाठ्य सहगामी क्रियाओं का उल्लेख कर रहे हैं।

प्रातःकालीन सभा (Morning Assembly)

किसी भी अच्छे स्कूल में विद्यालय की सबसे पहली क्रिया प्रातःकालीन सभा होती है। विद्यालय कार्य का प्रारंभ ही प्रातःकालीन सभा से किया जाता है। यहाँ सभी छात्र, अध्यापक व मुख्याध्यापक किसी एक निश्चित स्थान पर एकत्रित होते हैं। यहाँ सामूहिक प्रार्थना होती है, विद्यालय कार्यक्रम संबंधी घोषणाएँ की जाती हैं, आवश्यक निर्देश दिए जाते हैं, संक्षिप्त नैतिक भाषण दिए जाते हैं तथा ऐसी अन्य क्रियाएँ आयोजित की जाती हैं।

प्रातःकालीन सभा के उद्देश्य (Objectives of Morning Assembly)

1. छात्रों में एकता की भावना पैदा करना—सभी छात्रों के एक साथ, एक ही स्थान पर एकत्रित होने, विभिन्न क्रियाओं में भाग लेने और विद्यालय की गतिविधियों से परिचित होने से उनमें विद्यालय के प्रति अपनत्व की भावना तथा आपस में एक होने की भावना विकसित होती है।

CC-0. Ekatvam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

2. चरित्र-निर्माण—प्रातःकालीन सभा में ईश्वर की प्रार्थना करने तथा संक्षिप्त नैतिक भाषणों को सुनने से बच्चों को अच्छे-बुरे का ज्ञान होता है। वे जानते हैं कि हमारे सच्चे आदर्श क्या हैं ? क्या कर्त्तव्य हैं और क्या अकर्त्तव्य हैं। इस प्रकार यह सभा बच्चों में सदगुणों को विकसित करने में सहायक होती है।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3. अच्छी आदतों का विकास करना—आदर्श सभा का एक उद्देश्य बच्चों में अच्छी आदतों का विकास करना भी है। बच्चे सामूहिक प्रार्थना के समय शांतचित्त खड़े होकर प्रार्थना करते हैं। सार्वजनिक सभाओं में कैसा व्यवहार करना चाहिए इस बात का प्रशिक्षण यहाँ पर बच्चों को मिलता है। भाषणकर्ता की बात को ध्यानपूर्वक सुनना, उचित समय पर तालियाँ बजाना, दूसरों की भावनाओं का आदर करना आदि आदतें प्रार्थना सभा में अच्छी तरह से विकसित की जा सकती हैं।

4. आत्माभिव्यक्ति के लिए प्रशिक्षण देना—प्रात:कालीन सभा में छात्रों को भी संक्षिप्त भाषण देने के लिए प्रेरित किया जाता है। छात्रों को श्रोताओं के सामने खड़े होकर बोलने, घोषणाएँ करने आदि का प्रशिक्षण मिलता है।

5. नेतृत्व का प्रशिक्षण देना—प्रार्थना सभा में छात्रों को प्रार्थना का नेतृत्व करना पड़ता है। प्रतिदिन के समाचार संक्षेप में पढ़कर सुनाने पड़ते हैं, इन सबसे प्रार्थना सभा छात्रों में नेतृत्व के गुणों को विकसित करने में सहायक होती है।

6. बच्चों की श्रेष्ठ उपलब्धियों को पहचानना—जो बच्चे विभिन्न प्रकार की सहपाठ्य क्रियाओं या पाठ्य क्रियाओं में श्रेष्ठ प्रदर्शन करते हैं, उनका उल्लेख प्रार्थना सभा में सबके सामने किया जाता है। इससे बच्चों को संतुष्टि एवं आत्मगौरव का अनुभव होता है और दूसरे बच्चों को अच्छे प्रदर्शन के लिए प्रेरणा मिलती है।

7. महत्त्वपूर्ण घोषणाएँ करना—प्रार्थना सभा का एक उद्देश्य विद्यालय के विभिन्न कार्यक्रमों से संबंधित घोषणाएँ सार्वजनिक रूप से करना भी है। यहाँ सभी बच्चे व अध्यापक इकट्ठे होते हैं। अत: एक साथ ही सबको किसी भी प्रकार की सूचना दे दी जाती है, जैसे विद्यालय के किसी कार्यक्रम के आयोजन के बारे में, दैनिक कार्यक्रम के परिवर्तन के बारे में, किसी अवकाश के बारे में आदि।

8. विभिन्न उत्सवों व दिवसों का आयोजन—विद्यालय में बिना किसी विशेष औपचारिकता के राष्ट्रीय दिवस एवं राष्ट्रीय उत्सवों को मनाना भी प्रार्थना सभा का उद्देश्य है।

9. प्रात:कालीन सभा में बच्चों को विद्यालय के नियमों, परंपराओं, आदर्शों आदि से भी आसानी से परिचित कराया जा सकता है।

10. देश-विदेश में घटित होनेवाले नवीनतम समाचारों से भी प्रार्थना सभा में बच्चों को परिचित कराया जा सकता है।

11. किसी भी आपातकालीन स्थिति से निपटने के लिए बच्चों से सहयोग की अपील करने में भी प्रात: कालीन सभा सहायक होती है।

12. प्रात:कालीन सभा सभी छात्रों को पाठ्य एवं सहपाठ्य क्रियाओं में अधिक-से-अधिक भाग लेने के लिए प्रेरित करने का अच्छा साधन है।

प्रात:कालीन सभा का संगठन (Organisation of Morning Assembly)

प्रात:कालीन सभा का संगठन करने के लिए वैसे तो सहपाठ्य क्रियाओं के आयोजन के सभी सिद्धांतों को ध्यान में रखना चाहिए। इनके साथ-साथ निम्न बातों को भी प्रात:कालीन सभा का आयोजन करते समय ध्यान में रखना चाहिए :

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(i) प्रात:कालीन सभा की एक कमेटी बनानी चाहिए जिसमें कुछ विद्यार्थी और एक-दो अध्यापक सम्मिलित हों। इन्हें प्रात:कालीन सभा के कार्यक्रम की रूपरेखा ठीक प्रकार से पहले से ही तैयार कर लेनी चाहिए।

(ii) प्रात:कालीन सभा के लिए एक बड़ा हॉल या खुला स्थान होना चाहिए जो साफ-सुथरा हो।

(iii) सभा में आयोजित होनेवाली क्रियाओं में विविधता होनी चाहिए।

(iv) सभा में ज्यादा-से-ज्यादा विद्यार्थियों को भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

(v) सभा के कार्यक्रम नैतिक, शिक्षाप्रद एवं प्रेरणादायक होने चाहिए।

(vi) सभा में दिए जानेवाले भाषण रोचक, प्रेरक व संक्षिप्त होने चाहिए।

(vii) प्रात:कालीन सभा के लिए अच्छी-सी प्रार्थना एवं गीतों का चुनाव करना चाहिए।

(viii) सभा में कुछ समय के लिए सामूहिक व्यायाम भी कराना चाहिए।

(ix) सभा में किसी भी समुदाय के विरुद्ध कुछ नहीं बोलना चाहिए।

(x) सभा में उचित अनुशासन का पूरा ध्यान रखना चाहिए।

(xi) प्रात:कालीन सभा के कार्यक्रमों की उपयोगिता का मूल्यांकन करने के लिए उसका पूरा-पूरा रिकार्ड रखना चाहिए।

(xii) कार्यक्रमों का समय-समय पर निरीक्षण व मूल्यांकन करते रहना चाहिए।

(xiii) इसके गठन के लिए सभी विद्यार्थियों को कुछ सदनों (Houses) में भी विभाजित किया जा सकता है और उन्हें कुछ विशिष्ट नाम दिए जा सकते हैं जैसे टैगोर सदन, गांधी सदन, विवेकानंद सदन आदि। हर सदन का इंचार्ज कोई अध्यापक होना चाहिए। कुछ दिनों के लिए प्रात:कालीन सभा का आयोजन एक सदन करे फिर कुछ दिनों के लिए दूसरा सदन। इस प्रकार विद्यालय के सभी छात्रों को इस सभा में भाग लेने का अवसर भी मिलता रहेगा।

इस प्रकार से उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर सुव्यवस्थित ढंग से प्रात:कालीन सभा का आयोजन किया जा सकता है।

भाषण एवं वाद-विवाद
(Declamation & Debates)

विद्यार्थी में मौखिक अभिव्यक्ति संबंधी कौशल को विकसित करने के लिए विद्यालय में भाषण, वाद-विवाद, विचार-विमर्श, गोष्ठी आदि क्रियाओं का आयोजन किया जाता है। भाषण-क्रिया में बच्चों को दिए गए विषय पर अपने विचारों को व्यवस्थित रूप में प्रकट करना होता है, इसी प्रकार वाद-विवाद क्रिया में बच्चे दिए गए विषय के पक्ष और विपक्ष में तर्क सहित अपने-अपने विचारों को प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं।

भाषण एवं वाद-विवाद के उद्देश्य एवं लाभ
(Aims and Advantages of Declamation & Debates)

(i) विचारों की अभिव्यक्ति की योग्यता का विकास : भाषण एवं वाद-विवाद क्रिया में बच्चों को दिए विषय पर अपने-अपने विचारों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करना पड़ता है। अत: इन क्रियाओं में उन्हें उचित हाव-भाव, उचित मुखमुद्रा, शुद्ध उच्चारण, सुस्वरता, सम्यक गति, उचित प्रवाह, शिष्टाचार आदि मौखिक अभिव्यक्ति के गुणों को ध्यान में रखते हुए बोलने का अभ्यास कराया जाता है। अत: बच्चों में विचारों को उचित प्रकार से बिना हिचक के अभिव्यक्ति की योग्यता विकसित होती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ii) भाषायी योग्यताओं का विकास : मौखिक अभिव्यक्ति की योग्यता के विकास के लिए बच्चों में जिन भाषायी योग्यताओं का होना आवश्यक है उनको विकसित करने में भी ये क्रियाएँ सहायक होती हैं। इनसे बच्चों के शब्द-भंडार में वृद्धि होती है। उन्हें वाक्य-विन्यास, स्वराघात, विराम-चिह्नों के उचित प्रयोग आदि का ज्ञान होता है। तरह-तरह के विषय की तैयारी करने से ज्ञान में भी वृद्धि होती है। साथ ही वाचन तथा लेखन संबंधी भाषायी योग्यताओं को विकसित करने में भी सहायता मिलती है।

(iii) बौद्धिक योग्यताओं का विकास : भाषण एवं वाद-विवाद क्रियाएँ बच्चों में स्पष्ट, सशक्त एवं मौलिक चिंतन की योग्यता विकसित करती हैं। उनमें स्वाध्याय की योग्यता का विकास करती हैं। उनकी बोध-शक्ति को विकसित करती हैं। इनसे उन्हें तर्क देने का प्रशिक्षण मिलता है।

(iv) इन क्रियाओं में भाग लेने से विद्यार्थियों को उपयोगी विचारों का चयन कर उनको उचित रूप से संगठित करने का प्रशिक्षण मिलता है।

(v) इन क्रियाओं में भाग लेने से विद्यार्थियों में आत्मविश्वास बढ़ता है। आत्माभिव्यक्ति की योग्यता विकसित हो जाने से किसी भी जगह साक्षात्कार आदि के समय होनेवाली घबराहट, हिचकिचाहट अथवा रुकावट उनमें नहीं आ पाती है।

(vi) इन क्रियाओं का प्रशिक्षण बच्चों को कालांतर में वकालत, शिक्षण या नेतृत्व आदि के कार्य में सहायक सिद्ध होता है।

(vii) भाषण एवं वाद-विवाद क्रिया में भाग लेने से बच्चों में तर्क देकर अपनी बात से सहमत कराने की कला का विकास हो जाता है। अत: ऐसे बच्चे अपने साथियों से अपनी बात मनवाने की कला में निपुण हो जाते हैं।

(viii) जो बच्चे इन क्रियाओं में भाग लेते हैं, वे यह चाहते हैं कि उनकी बात को अन्य बच्चे ध्यान से सुनें, अत: वे स्वयं भी दूसरों के विचारों को ध्यान से सुनते हैं। इस प्रकार ये क्रियाएँ बच्चों में श्रवण संबंधी योग्यताओं को विकसित करने में भी सहायता करती हैं।

(ix) इन क्रियाओं में भाग लेने से बच्चों की आत्मगौरव, सृजन आदि मूल-प्रवृत्तियों की संतुष्टि होती है। इससे बच्चों के स्वाभाविक विकास में सहायता मिलती है।

संगठन (Organisation)

इन क्रियाओं के महत्त्व को देखते हुए यह जरूरी है कि इनका संगठन उचित रूप से किया जाए।

सबसे पहले साहित्यिक क्रियाओं से संबंधित एक समिति का गठन करना चाहिए। इसका संरक्षक मुख्याध्यापक हो तथा इंचार्ज या अध्यक्ष भाषा का अध्यापक हो। भाषा के अध्यापक को ही परामर्शदाता का कार्य भी करना चाहिए। विद्यार्थियों में से ही अन्य प्रतिनिधियों का चुनाव करना चाहिए तथा अन्य विद्यार्थियों को इस समिति का सदस्य बनाना चाहिए।

इस समिति को अपनी सभा बुलाकर उसमें विचार-विमर्श करके भाषण एवं वाद-विवाद या किसी अन्य साहित्यिक क्रिया के आयोजन का निर्णय लेना चाहिए। किसी रुचिकर एवं समयानुकूल विषय का चुनाव करके भाषण या वाद-विवाद के आयोजन के समय एवं स्थान की घोषणा कर देनी चाहिए। वक्ताओं की संख्या तथा प्रति वक्ता को बोलने के लिए दिए जाने वाले समय के बारे में पहले ही निर्णय ले लेना चाहिए।

भाषण या वाद-विवाद को कैसे प्रारंभ किया जाए, कैसे समाप्त किया जाए और कैसे निर्णय लिया जाए इन सभी बातों के बारे में पहले ही विचार कर लेना चाहिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विद्यार्थियों की तैयारी के लिए भी कुछ समय देना चाहिए और उस समय में भाषा के अध्यापक को बच्चों का उचित रूप से मार्गदर्शन करना चाहिए। छात्रों को संबंधित विषय की आवश्यक जानकारी देनी चाहिए। भाषण की भाषा ऐसी हो जिसे श्रोता आसानी से समझ सकें। इसमें रटने की प्रवृत्ति को हतोत्साहित करना चाहिए। भाषण में बच्चों को किसी एक विषय पर अपने विचारों को बढ़-चढ़ाकर, मुहावरेदार एवं प्रभावशाली भाषा में प्रस्तुत करना होता है।

वाद-विवाद में विषय विवादास्पद होने से वक्ता को उसके पक्ष या विपक्ष में अपने तर्क प्रस्तुत करने होते हैं। वक्ता की भाषा स्पष्ट और प्रवाहमय होनी चाहिए। इसमें हास्य-विनोद का पुट वक्ता की प्रस्तुति को प्रभावशाली बना देता है। बच्चों को भाषण और वाद-विवाद का अंतर स्पष्ट कर देना चाहिए।

शुरू में विद्यालय स्तर पर ऐसी क्रियाओं का आयोजन होना चाहिए और जब बच्चे भाषण-कला में निपुण हो जाएँ तो उन्हें अन्य विद्यालयों में होनेवाली प्रतियोगिताओं में भाग लेने के अवसर देने चाहिए। प्रतियोगिता में अच्छा प्रदर्शन करनेवाले बच्चों को पुरस्कार प्रदान करने चाहिए और इन सभी कार्यों का पूरा-पूरा रिकार्ड रखना चाहिए जिससे क्रिया की सफलता का उचित मूल्यांकन किया जा सके।

कविता-पाठ (Poetic recitation)

भाषा प्रयोग एक कौशल है। कौशल में निखार आता है अभ्यास से। कहावत है—''करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान''। अभ्यास के द्वारा भाषा के सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने के कौशल में दक्षता प्राप्त की जा सकती है। इन कौशलों में पारंगत होने पर ही बालक को भाषा पर पूर्ण अधिकार प्राप्त हो सकता है। भाषण, वाद-विवाद, समूह चर्चा आदि की तरह कविता-पाठ भी एक प्रभावशाली सरस साहित्यिक क्रिया है। ''कविता कान की कला है आँखों की नहीं।'' यह एक श्रव्यकला है। कविता-पाठ के द्वारा हम कविता और साहित्य में बच्चों की रुचि विकसित कर सकते हैं। सस्वर कविता-पाठ मन को प्रफुल्लित कर देता है, इससे थोड़े समय के लिए हम सांसारिक चिंताओं से मुक्त होकर आनंदविभोर हो जाते हैं। अत: विद्यालय मे हमें समय-समय पर कभी कक्षा के स्तर पर तो कभी विद्यालयी और अंतर्विद्यालयी स्तर पर कविता-पाठ साहित्यिक क्रिया का आयोजन करना चाहिए। इसमें बच्चे विभिन्न कवियों को रचनाओं का उचित ताल, लय एवं हावभाव के साथ उचित स्वर में काव्य-पाठ प्रस्तुत करते हैं। कभी-कभी बच्चे स्वरचित कविता भी उचित स्वर में प्रस्तुत करते हैं।

कविता-पाठ का महत्त्व :

1. कविता-पाठ कविता का लयात्मक प्रस्तुतीकरण है। लययुक्त गाना कोई कर पाए या नहीं परंतु सुनना सबको अच्छा लगता है। कविता-पाठ से आनंद की प्राप्ति होती है।
2. कविता-पाठ बच्चों में रसास्वादन की क्षमताओं में वृद्धि करता है।
3. कविता-पाठ से बच्चों की अभिव्यंजना शक्ति के विकास में मदद मिलती है।
4. यह बच्चों को नई-नई कविता कंठस्थ करने के लिए प्रेरित करता है।
5. यह बच्चों की काव्य सृजन संबंधी योग्यता को विकसित करने में भी सहायक होता है।
6. काव्य-पाठ बच्चों की सद्वृत्तियों के विकास में सहायक होता है। इससे बच्चों के सकारात्मक संवेगों का निर्माण करने में सहायता मिलती है।
7. कविता-पाठ बच्चों की श्रवण कौशल संबंधी योग्यताओं को विकसित करने में भी सहायक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
होता है। सभी बच्चे काव्य पाठ को बहुत ही ध्यान से सुनते हैं तथा सुनकर उसका अर्थ ग्रहण करने का प्रयास भी करते हैं।

कविता-पाठ का आयोजन—कक्षा में या विद्यालय में कविता-पाठ क्रिया का आयोजन करते समय निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए :

1. कक्षा में हिंदी भाषा और उसके साहित्य का अध्ययन कराते समय बच्चों से कविता का उचित स्वर में पाठ कराना चाहिए और उन्हें वह कविता कंठस्थ करने के लिए कहना चाहिए।

2. कभी-कभी कक्षा को दो समूहों में विभाजित कर प्रत्येक समूह के सदस्यों से क्रमानुसार काव्य पाठ करने के लिए कहा जाता है। उनके उच्चारण, लय, प्रवाह, कविता की सरसता आदि के आधार पर उन्हें श्रेष्ठ घोषित किया जाता है।

3. छात्र कविता-पाठ में निपुण हों इसके लिए जरूरी है कि अध्यापक सस्वर कविता-पाठ में निपुण हो। बच्चे अध्यापक द्वारा किए कविता-पाठ के आदर्श का हो अनुकरण करके सीखते हैं।

4. कविता-पाठ भावानुकूल होना चाहिए तब ही उससे छात्रों को कविता के रस की अनुभूति हो सकेगी तथा कविता-पाठ सुनने में आनंद आएगा।

5. विद्यालय में समय-समय पर होनेवाले आयोजनों में कविता-पाठ क्रिया को शामिल किया जा सकता है। यह कविता-पाठ कार्यक्रम का आयोजन विभिन्न प्रकार से हो सकता है, जैसे—

(i) किसी कवि की जयंती मनाना।

(ii) विद्यालय में कवि-सम्मेलन का आयोजन करना

(iii) काव्य-गोष्ठी का आयोजन करना

(iv) कवि-दरबार का आयोजन करना

(v) काव्य संबंधी समस्या-पूर्ति का आयोजन करना

(vi) अंत्याक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन

6. इन सभी प्रकार की काव्य-पाठ संबंधी क्रियाओं में श्रेष्ठ प्रदर्शन करनेवाले बच्चों को पुरस्कृत करना चाहिए, इससे अन्य बच्चों को भी भाग लेने के लिए प्रोत्साहन मिलता है।

7. निर्णय देने के लिए योग्य, निष्पक्ष, न्यायप्रिय निर्णायक-मंडल होना चाहिए।

8. बच्चों से एक 'मेरा कविता संग्रह' नामक पुस्तिका बनवानी चाहिए और उसमें उनकी रुचिकर कविताओं का संकलन करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

9. अन्य विद्यालयों में कविता-पाठ प्रतियोगिता का आयोजन होने पर अच्छे कवितापाठी छात्रों का निष्पक्ष रूप से चयन करके, उन्हें उचित अभ्यास कराकर प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए तैयार करना चाहिए।

विद्यालय पत्रिका
(School Magazine)

विद्यार्थियों की भावनाओं को लिखित रूप में अभिव्यक्ति प्रदान करने और उनमें अच्छे गुणों के विकास के लिए स्कूल पत्रिका एक महत्त्वपूर्ण साधन है। स्कूल पत्रिका निम्नलिखित दो प्रकार की हो सकती है :

(क) भित्ति पत्रिका (Wall Magazine)

(ख) वार्षिक या अद्र्धवार्षिक प्रकाशित होनेवाली पत्रिका (Annula or Half yearly Magazine)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भित्ति पत्रिका से आरंभ करना हमेशा अच्छा रहता है। भित्ति पत्रिका के लिए विद्यार्थियों को अपने हाथ से लेख, कविताएँ तथा अन्य संगृहीत उपयोगी विचार अथवा जानकारी लिखने के लिए किया जाए। वे कुछ स्कैच, व्यंग्य चित्र, नमूने या पेटिंग भी बना सकते हैं। इन सभी रेखाचित्रों तथा लेखों की पत्रिका, कमेटी तथा अध्यापक इंचार्ज द्वारा उनके प्रदर्शन से पूर्व ही जाँच-पड़ताल हो जानी चाहिए। इस प्रयोजन के लिए आनेवाली रचनाओं तथा रेखाचित्रों की संख्या के आधार पर उनका प्रदर्शन दो या तीन दिनों या सप्ताह के लिए होना चाहिए। उन पत्रिकाओं में से अच्छी रचनाओं को चुनकर स्कूल-पत्रिका में भी प्रकाशित करवाना चाहिए। प्रकाशित होनेवाली मैगज़ीन में विषय-सूची की विविधता होनी चाहिए जैसे लघु कहानियाँ, निबंध, कविताएँ, रेखाचित्र, व्यंग्य चित्र और पेटिंग आदि। इनके अतिरिक्त अन्य क्षेत्र हैं : उपयोगी विचारों अथवा जानकारी का संग्रह, प्रचलित विषयों पर नोट तथा जानकारी, हास्यपूर्ण स्किट, चुटकले, स्कूल स्टाफ के बारे में जानकारी, स्कूल की पाठ्य सहगामी क्रियाओं की जानकारी आदि।

स्कूल पत्रिका के उद्देश्य
(Objective of School Magazine)

1. लिखित रूप में आत्माभिव्यक्ति के लिए अवसर प्रदान करना।
2. साहित्यिक रुचि तथा अध्ययन संबंधी आदतों का विकास करना।
3. विद्यालय में एकात्मकता के लिए साधन रूप में काम करना।
4. अवकाश के उचित उपभोग के लिए प्रशिक्षण प्रदान करना।
5. स्कूल के प्रति निष्ठा का विकास करना और इसकी उपलब्धियों के लिए गौरव का अनुभव करना।
6. आचरण के उच्च प्रतिमान विकसित करने में सहायता करना।
7. उपयोगी क्रियाओं को प्रोत्साहन एवं प्रेरणा देना।
8. स्कूल कार्यक्रमों तथा क्रियाओं का बाहरी दुनिया में प्रचार करना।
9. अभिभावकों तथा स्कूल के बीच सहयोग को प्रोत्साहन देना।
10. विद्यार्थियों के सामान्य ज्ञान को समृद्ध बनाने में सहायता करना।
11. रचनात्मक गुणों को खोजना और विकसित करना और इस प्रकार भावी पत्रकारों, लेखकों कवियों, व्यंग्यकारों तथा कलाकारों को अपने छुपे हुए गुणों की अभिव्यक्ति और विकास के अवसर देना।

स्कूल पत्रिका कार्य को किस प्रकार गठित किया जाए ?
(How to Organise School Magazine Activity?)

इस दिशा में निम्नलिखित उपाय उपयोगी हो सकते हैं :

1. कार्य की शुरुआत भित्ति पत्रिका द्वारा होनी चाहिए। इस कार्य को क्लास के ढंग पर या सदन रीति पर संगठन करना एक अच्छा पग होगा। एक अध्यापक इंचार्ज की नियुक्ति की जानी चाहिए जो अपने सदन या कक्षा पत्रिका का आयोजन कर सके।

2. पत्रिका के प्रकाशन के लिए योग्यता के आधार पर संपादकीय परिषद-बोर्ड का सतर्कता से चयन करना चाहिए। इसमें स्टाफ संपादक तथा छात्र संपादक दोनों ही होने चाहिए। स्टाफ का वरिष्ठ सदस्य इसका मुख्य संपादक होना चाहिए।

3. पत्रिका के प्रकाशन के लिए सरकार से आवश्यक आज्ञा लेनी चाहिए और पत्रिका के नाम का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

पंजीकरण करा लेना चाहिए। Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4. रचनाओं के लिए आमंत्रण बहुत समय पहले देना चाहिए। भित्ति पत्रिका से भी कुछ रचनाओं का चयन करना चाहिए।

5. विद्यार्थियों को उचित अभिप्रेरणा मिलनी चाहिए, उनको उचित निर्देश तथा बुद्धिमत्तापूर्ण प्रोत्साहन देना चाहिए। दूसरे शब्दों में उन्हें पत्रिका के लिए रचनाएँ देने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।

6. संपादक बोर्ड को ठीक रचनाओं के चयन और भाषा, शैली तथा सामग्री के संशोधन में उचित ध्यान देना चाहिए।

7. मुद्रण कार्य के गुण या उत्तमता को भी ध्यान में रखना चाहिए।

8. नाममात्र की पत्रिका फीस के साथ स्कूल के प्रत्येक छात्र को पत्रिका देने का प्रयत्न करना चाहिए। खर्चे को पूरा करने के लिए अन्य साधनों जैसे समुदाय से चंदा प्राप्त करना तथा विज्ञापन प्राप्त करना आदि का प्रयोग किया जा सकता है।

9. स्कूल पत्रिका स्कूल कल्याण से संबंधित प्रसिद्ध जनसेवी व्यक्तियों, शिक्षा अधिकारियों तथा अन्य स्कूलों को भेजनी चाहिए।

10. पत्रिका के पिछले अंकों की जिल्द बँधवा लेनी चाहिए और ये उचित रिकार्ड के लिए पुस्तकालय में रखने चाहिए।

अध्ययन के लिए प्रश्न

1. पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं से आप क्या समझते हैं? आधुनिक शिक्षा-प्रणाली में इनका क्या महत्त्व है?

2. ''सह-पाठ्यक्रियाएँ अतिरिक्त क्रियाएँ नहीं हैं बल्कि स्कूल कार्यक्रम का एक अभिन्न अंग हैं।'' स्पष्ट करें।

3. हिंदी भाषा शिक्षण के संदर्भ में सह-पाठ्य क्रियाओं का क्या महत्त्व है? आप अपने विद्यालय में इन क्रियाओं के संगठन हेतु क्या उपाय करना चाहेंगे?

4. हिंदी शिक्षण में सहायक विभिन्न पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं का उल्लेख कीजिए। इनमें से किसी एक क्रिया के गठन पर विस्तार से प्रकाश डालिए।

5. हिंदी शिक्षण में सहायक होने की दृष्टि से आप अपने विद्यालय में किन-किन सहगामी क्रियाओं का आयोजन करना चाहेंगे? इनमें से किन्हीं दो क्रियाओं की संगठन प्रक्रिया का संक्षेप में उल्लेख कीजिए।

6. विद्यालय में हिंदी शिक्षण हेतु आप किन पाठ्य सहगामी क्रियाओं को आयोजित करना चाहोगे? इन क्रियाओं के संगठन संबंधी विभिन्न सिद्धांतों का संक्षेप में उल्लेख करें।

7. अपने विद्यालय में हिंदी भाषा की पाठ्य सहगामी क्रिया के रूप में भाषण व वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन कैसे करेंगे? विस्तार से वर्णन कीजिए।

8. अपने विद्यालय में हिंदीभाषा की पाठ्य सहगामी क्रिया के रूप में आयोजित निम्न क्रियाओं में से किसी एक की संगठन प्रक्रिया पर विस्तार से प्रकाश डालिए।

(a) प्रार्थना सभा (Morning Assembly)

(b) कविता-पाठ (Poctic Recitation)

(c) विद्यालय पत्रिका (School magazine)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

21

हिंदी-शिक्षण में मूल्यांकन

(Evaluation in Hindi Teaching)

मूल्यांकन का अर्थ (Meaning of the term Evaluation)

शिक्षण एक त्रिध्रुवीय प्रक्रिया है—सर्वप्रथम शिक्षण-उद्‌देश्य निर्धारित किए जाते हैं, फिर इन उद्‌देश्यों की प्राप्ति के लिए अधिगम अनुभव प्रदान किए जाते हैं और इसके बाद विभिन्न तकनीकों एवं साधनों की सहायता से यह पता लगाने का प्रयास किया जाता है कि शिक्षण-कार्य द्‌वारा पूर्वानिर्धारित उद्‌देश्यों की प्राप्ति हुई है या नहीं। शिक्षण-उद्‌देश्यों की प्राप्ति के स्तर की जाँच करने की इसी प्रक्रिया को मूल्यांकन कहा जाता है।

मूल्यांकन का शाब्दिक अर्थ है मूल्य आँकना। हिंदी-शिक्षण में मूल्यांकन से तात्पर्य है इस बात की जाँच करना कि शिक्षण के परिणामस्वरूप छात्रों के व्यवहार में क्या परिवर्तन हुआ है। शिक्षण से पूर्व जिन शिक्षण-उद्‌देश्यों को निर्धारित किया गया था, शिक्षण द्‌वारा छात्रों को उनकी प्राप्ति किस स्तर तक हुई है, अध्यापक अपने शिक्षण-कार्य में कहाँ तक सफल हुआ है, बच्चों की रुचियों, रुझानों, योग्यताओं और व्यवहार में कितना परिवर्तन हुआ है, इस बात का अनुमान मूल्यांकन द्‌वारा ही संभव होता है। अपनी शिक्षण-क्रिया द्‌वारा हम छात्रों के व्यवहार में जो अपेक्षित परिवर्तन लाना चाहते हैं, वे परिवर्तन लाए जा सके हैं या नहीं, जिन योग्यताओं को विकसित करना चाहते थे वे योग्यताएँ विकसित हो सकी हैं या नहीं और यदि विकसित हुई हैं तो किस सीमा तक? शिक्षण-परिस्थितियाँ किस सीमा तक इन उद्‌देश्यों को प्राप्त करने में सफल हुई हैं? शिक्षण का जो एक व्यापक उद्‌देश्य है—बच्चे के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास वह कितनी सफलता और किस अनुपात में पूरा हो सका है? इस सबकी जाँच करने की प्रक्रिया को ही मूल्यांकन कहा जाता है। इस प्रकार मूल्यांकन द्‌वारा विषय वस्तु के ज्ञान की जाँच तो होती ही है; साथ ही बालक की रुचियों, अभिवृत्तियों, योग्यताओं, दृष्टिकोणों आदि के परिवर्तन तथा विकास की जाँच भी की जाती है। इसीलिए मूल्यांकन का क्षेत्र परीक्षा से अधिक व्यापक होता है क्योंकि परीक्षा का संबंध केवल विषय वस्तु के ज्ञान की जाँच से होता है।

मूल्यांकन के अर्थ एवं प्रकृति को और अधिक स्पष्ट करने हेतु हम यहाँ कुछ प्रसिद्‌ध परिभाषाओं पर विचार करना चाहेंगे।

1. सी०सी० रॉस (C.C. Roos) **के अनुसार**—''मूल्यांकन का प्रयोग बच्चे के संपूर्ण व्यक्तित्व अथवा शिक्षा की समूची स्थितियों की जाँच-प्रक्रिया के लिए किया जाता है।''

2. जे०डब्ल्यू राइटस्टोन (J.W. Rightstone) **के अनुसार**—''मूल्यांकन में व्यापक व्यक्तित्व से संबंधित परिवर्तनों तथा शिक्षा-कार्यक्रम के मुख्य उद्‌देश्यों पर बल दिया जाता है। इसमें केवल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विषय-वस्तु का मूल्यांकन ही सम्मलित नहीं बल्कि दृष्टिकोणों, रुचियों, आदर्शों, चिंतन-विधियों, कार्य, आदतों, वैयक्तिक तथा सामाजिक समायोजन योग्यताओं का मूल्यांकन भी सम्मिलित है।''

3. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT) **के अनुसार**—''मूल्यांकन एक ऐसी सतत व व्यवस्थित प्रक्रिया है जो देखती है कि—

(i) निर्धारित शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हो रही है,

(ii) कक्षा में प्रदान किए गए अधिगम अनुभव कितने प्रभावशाली रहे हैं तथा

(iii) व्यवहार परिवर्तन की प्रक्रिया कितने अच्छे ढंग से पूर्ण हो रही है।

अगर इन सभी उपरोक्त परिभाषाओं का उचित विश्लेषण करके देखा ज़ाए तो यह स्पष्ट विदित हो सकता है कि मूल्यांकन का संप्रत्यय काफी अधिक व्यापक ओर बहुआयामी है। पारंपरिक परीक्षा प्रणाली के द्वारा प्राप्त मापन प्राप्तांकों के ऊपर ही यह निर्भर नहीं करता बल्कि अपने मापन हेतु यह विभिन्न विधियों, प्रविधियों तथा तकनीकों का उपयोग चाहता है तथा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया द्वारा संपूर्ण व्यक्तित्व-विकास तथा व्यवहार के सभी पक्षों—ज्ञानात्मक भावात्मक तथा क्रियात्मक में होनेवाले परिवर्तनों की सतत जाँच की यह अपेक्षा करता है। इस तरह मूल्यांकन-प्रक्रिया में निम्न तीन पक्षों या अंगों की उपस्थिति अनिवार्य रूप से पाई जाती है।

(i) शिक्षण उद्देश्य (ii) अधिगम अनुभव (iii) व्यवहार परिवर्तन मूल्यांकन-प्रक्रिया के इन तीन पक्षों में निहित संबंधों को निम्न त्रिभुजाकार चित्राकृति द्वारा भलीभाँति समझा जा सकता है।

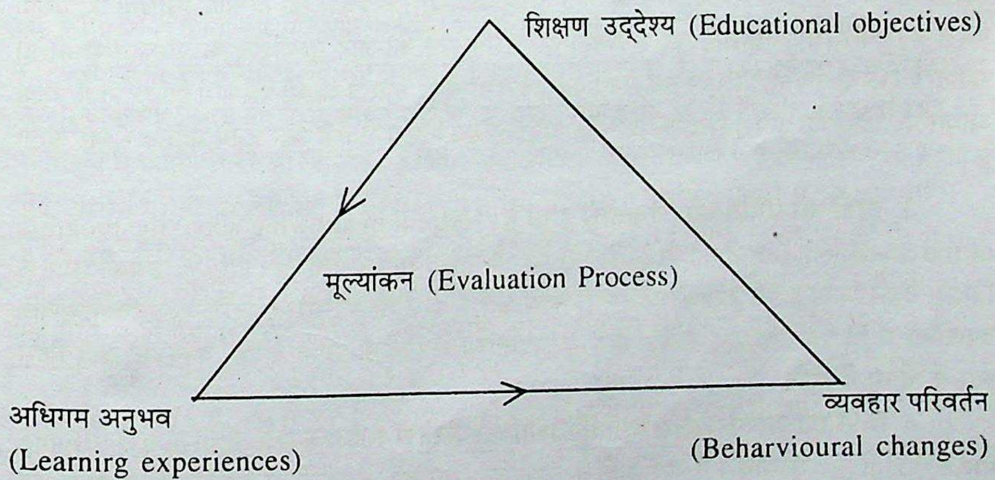

चित्र 21.1 मूल्यांकन-प्रक्रिया (Evaluation Process)

उपरोक्त विवरण से अब यह अच्छी तरह स्पष्ट हो सकता है कि मूल्यांकन एक ऐसी व्यापक तथा बहुआयामी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया से जुड़ी सभी बातों का पूरी तरह मूल्य आँकने का प्रयत्न किया जाता है। शिक्षक ने क्या किया, विद्यार्थी ने किस प्रकार से अधिगम अनुभव अर्जित किए, विधियों तथा वातावरण का शिक्षण-अधिगम में क्या योगदान रहा, उद्देश्यों की व्यवहारगत परिवर्तनों के संदर्भ के किस रूप में प्राप्ति हुई आदि-आदि।

मूल्यांकन का महत्त्व (Importance of Evaluation)

यों तो जीवन के हर क्षेत्र में किसी भी कार्य को करने के पश्चात इस बात की जाँच की जाती है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कि उस कार्य में कर्त्ता को कितनी सफलता मिली है, परंतु शिक्षा के क्षेत्र में तो यह आवश्यक है कि शिक्षण-क्रिया को जिन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए संपन्न किया गया है, उन उद्देश्यों की प्राप्ति किस स्तर तक हुई, इस बात का पता लगाया जाए। किसी विषय में निर्धारित ज्ञान, कौशल तथा योग्यताओं को किसी छात्र ने किस सीमा तक ग्रहण किया है, इस बात की जानकारी मूल्यांकन द्वारा ही संभव है। अत: शिक्षा में अध्यापक एवं छात्र दोनों के लिए ही मूल्यांकन का विशेष महत्त्व होता है। हिंदी-शिक्षण में मूल्यांकन के महत्त्व को निम्न रूप से स्पष्ट किया जा सकता है :

1. हिंदी-शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक है (Helpful in achieving aims of Hindi Teaching)—मूल्यांकन ही वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति की जाँच की जाती है। हिंदी विषय के शिक्षण से पूर्व कुछ शिक्षण लक्ष्यों का निर्धारण किया जाता है और छात्रों में हुए व्यवहार-परिवर्तन के आधार पर उन उद्देश्यों की प्राप्ति का पता लगता है। छात्रों के व्यवहार-परिवर्तन के स्तर और सीमा की जाँच मूल्यांकन की विभिन्न तकनीकों के द्वारा ही की जाती है। यदि उद्देश्यों की प्राप्ति वांछित स्तर तक नहीं होती है तो शिक्षण-क्रिया का पुनर्वेक्षण किया जाता है। इस प्रकार मूल्यांकन ही शिक्षक को उद्देश्योन्मुख बनाए रखता है।

2. शिक्षण-विधियों के उचित चुनाव एवं प्रयोग में सहायक है (Helpful in the proper Selection of Teaching Methods)—शिक्षण-प्रक्रिया एक त्रिध्रुवीय प्रक्रिया है। शिक्षण-उद्देश्यों के निर्धारण के पश्चात उनकी प्राप्ति के लिए अध्यापक शिक्षण-कार्य को क्रियान्वित करता है। शिक्षण-क्रिया को कुशलतापूर्वक संपन्न करने के लिए अध्यापक विभिन्न प्रकार की शिक्षण-विधियों का प्रयोग करता है। इन शिक्षण-विधियों की सफलता या असफलता का ज्ञान मूल्यांकन के परिणाम से ही हो सकता है। मूल्यांकन की विभिन्न तकनीकों का प्रयोग करने के उपरांत जो भी परिणाम प्राप्त होते हैं उनके आधार पर अध्यापक अपनी शिक्षण-विधि के औचित्य का निर्णय लेता है और उनमें वांछित सुधार करता है।

3. छात्रों की प्रगति की जानकारी होती है (Helpful in knowing about the progress of the Students)—छात्रों को विद्यालय में जो भी कुछ विषय संबंधी ज्ञान दिया है, उसको छात्रों ने कितना ग्रहण किया है इस बात की जानकारी मूल्यांकन से ही होती है। परीक्षा, निरीक्षण आदि मूल्यांकन तकनीकों से ही यह ज्ञात होता है कि छात्र ने विद्यालय में कितनी प्रगति की है, कौन-सा छात्र किस स्तर के योग्य है आदि।

4. छात्रों को अलग-अलग वर्गों में विभाजित करने में सहायक (Helpful in Classifying the Students)—मूल्यांकन में जब छात्रों के उपलब्धि-स्तर की जानकारी हो जाती है तो उसके आधार पर उन्हें अलग-अलग वर्गों में विभाजित करने में सहायता मिलती है। कौन-सा विद्यार्थी किस स्तर के योग्य है, कौन-से विद्यार्थी दूसरे विद्यार्थियों से अधिक योग्य या कम योग्य हैं—इस बात का निर्णय लेने के उपरांत ही उन्हें अलग-अलग वर्गों में वर्गीकृत किया जाता है और उनके मानसिक स्तर के अनुरूप ही शिक्षण-विधि का प्रयोग किया जाता है।

5. छात्रों की कमजोरियों को जानने में सहायक है (Helpful in diagnosing the weak points of the Students)—मूल्यांकन-प्रक्रिया से छात्रों की कमजोरियों का ज्ञान होता है। कौन-सा छात्र भाषा के किस क्षेत्र में कमजोर है, किसे शुद्ध उच्चारण नहीं आता, किसकी लिखित अभिव्यक्ति में दोष है, कौन अक्षर-विन्यास संबंधी त्रुटि करता है, कौन वाचन में कमजोर है आदि बातों की जानकारी मूल्यांकन से ही होती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

6. छात्रों की कमजोरियों को दूर कर उनकी प्रगति में सहायक है (Helpful in the progress of the students by removing their shortcomings)—मूल्यांकन से जब छात्रों को अपनी कमजोरियों का पता लगा जाता है तो वे उनके प्रति सचेत हो जाते हैं और उन्हें दूर करने का प्रयास करते हैं। अध्यापक भी अपने छात्रों की कमजोरियों को जानने के पश्चात उन कमजोरियों को दूर करने से संबंधित विशेष अभ्यास छात्रों से करवाते हैं। उनका विशेष ध्यान रखते हैं और उनकी त्रुटियों को दूर करने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार अध्यापक के मार्गदर्शन में छात्र विशेष अभ्यास कर अपनी कमजोरियों को दूर कर भाषा संबंधी विशिष्ट योग्यताओं को विकसित करने के लिए प्रयत्नशील होते हैं।

7. छात्रों को अध्ययन के लिए प्रेरित करती है (Helpful in inspiring the Students towards Studies)—मूल्यांकन-प्रक्रिया छात्रों को पढ़ाई करने के लिए प्रेरित करती है। जो छात्र विद्यालय में नियमित रूप से अध्ययन कार्य नहीं करते हैं, जब उन्हें ज्ञात होता है कि परीक्षा या परीक्षण होनेवाला है तो वे भी पढ़ाई में जुट जाते हैं।

8. छात्रों के व्यक्तिगत मार्गदर्शन में सहायक है (Helps in providing individual guidance to the Students)—हर छात्र के अंदर अधिगम-क्षमता, रुचि, योग्यताएँ आदि अलग-अलग होती हैं। कुछ छात्र प्रखर बुद्धि के होते हैं, कुछ सामान्य स्तर के तो कुछ मंद बुद्धि के होते हैं। इन सब छात्रों को एक ही तरह से पढ़ाना उचित नहीं। मूल्यांकन द्वारा छात्रों के इन व्यक्तिगत अंतरों का पता चल जाता है और अध्यापक छात्रों की योग्यता के अनुसार ही उचित मार्गदर्शन करने का प्रयास करता है।

9. माता-पिता को छात्रों की प्रगति की जानकारी होती है (Helps parents to know the progress of their wards)—मूल्यांकन के द्वारा ही बच्चों के माता-पिता या अभिभावकों को विद्यालय में अपने बच्चों की क्रियाओं, विकास तथा प्रगति की सही स्थिति की जानकारी होती है और इसके आधार पर ही वे बच्चे की शिक्षा के लिए उचित सुविधाओं की व्यवस्था करते हैं।

10. शैक्षिक एवं व्यावसयाकि मार्गदर्शन में सहायक है (Helpful in providing Educational and Vocational guidance)—मूल्यांकन के द्वारा छात्रों की योग्यता, क्षमता, मनोवृत्ति, रुचियों तथा दृष्टिकोणों का पता चलता है। इससे छात्रों के शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन में सहायता मिलती है। कौन-सा बच्चा किस प्रकार के कार्य-व्यापार को जीवन में सफलतापूर्वक कर सकेगा, कौन-सा छात्र किस विषय-क्षेत्र में उच्च अध्ययन कर सकेगा, इस बात का मार्गदर्शन मूल्यांकन के परिणामों के आधार पर ही किया जाता है।

इस प्रकार से यह स्पष्ट है कि शिक्षण-प्रक्रिया में मूल्यांकन का महत्त्वपूर्ण स्थान है। मूल्यांकन के अनुरूप निर्दिष्ट मार्ग पर अग्रसर होनेवाले बच्चे ही समायोजित व्यक्तित्व से युक्त होकर जीवन में सफलता प्राप्त करते हैं। आज विद्यालयों में सामान्य रूप से त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक परीक्षाएँ इसी उद्देश्य से ली जाती हैं। कुछ परीक्षाएँ विद्यालय के शिक्षक एवं अधिकारी ही लेते हैं और कुछ परीक्षाएँ शिक्षा-बोर्ड आदि के द्वारा ही ली जाती हैं। ये परीक्षाएँ ही शिक्षण-पद्धति का अनिवार्य अंग बनी हुई हैं। परंतु यह वर्तमान परीक्षा-प्रणाली इतनी दोषपूर्ण है कि इससे छात्रों की उपलब्धियों की सही-सही जानकारी नहीं हो पाती है अतः इसमें सुधार की आवश्यकता है। इसके लिए मूल्यांकन की विस्तृत योजना का क्रियान्वयन आवश्यक है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिंदी में मूल्यांकन के लिए प्रयुक्त विभिन्न विधियाँ एवं साधन

(Methods and means employed for the Evaluation in Hindi)

शिक्षण-क्रिया एक बहुत ही सुनियोजित और व्यवस्थित प्रक्रिया है

शिक्षण-क्रिया को संपन्न करने के लिए सबसे पहले शिक्षण-उद्देश्यों का निर्धारण किया जाता है। हिंदी-शिक्षण में भी शिक्षण से पूर्ण पाठ्यवस्तु को ध्यान में रखते हुए भाषा-शिक्षण के उद्देश्यों का निर्धारण होता है और छात्रों के व्यवहार में आए परिवर्तनों के आधार पर यह ज्ञात किया जाता है कि शिक्षण-उद्देश्यों की प्राप्ति हुई है या नहीं। छात्रों के इन व्यवहारगत परिवर्तनों, रुचियों, आकांक्षाओं, रुझानों एवं योग्यता की जाँच करने के लिए अध्यापक विभिन्न तकनीकों, विधियों एवं साधनों की सहायता लेता है। मूल्यांकन की ये विधियाँ निम्नलिखित हो सकती हैं :

(क) परीक्षा (Testing)—

I. लिखित (Written)

(i) निबंधात्मक (Essay Type)

(ii) लघु उत्तर (Short Answer Type)

(iii) वस्तुनिष्ठ (Objective Type)

II. मौखिक (Oral)

III. प्रायोगिक (Practical)

(ख) पर्यवेक्षण (Supervision)

(ग) संचित अभिलेख (Cumulative Record)

(घ) घटनावृत्त (Anecodotal Record)

(ङ) गृह-कार्य (Home-work inspection)

(च) निर्धारण मापनी (रेटिंग स्केल) (Rating Scale)

उपर्युक्त सभी विधियों का विस्तृत विवेचन इस प्रकार से है—

(क) परीक्षा—मूल्यांकन की सबसे महत्त्वपूर्ण विधि परीक्षा है। कक्षा में पढ़ाए गए विषय के आधार पर छात्रों के सम्मुख कुछ प्रश्न प्रस्तुत किए जाते हैं और उनके उत्तरों के आधार पर छात्रों की विषयगत योग्यता की जाँच की जाती है। इस प्रक्रिया को ही परीक्षा कहते हैं। यह परीक्षा तीन प्रकार की होती है :

I. लिखित II. मौखिक III. प्रायोगिक।

I. **लिखित परीक्षा**—छात्रों की उपलब्धियों एवं व्यवहार-परिवर्तन की जाँच जब लिखित रूप से की जाती है तो उसे लिखित परीक्षा कहते हैं। आज के युग में लिखित परीक्षा ही सबसे अधिक लोकप्रिय है। इसमें एक समय में लाखों छात्रों को विभिन्न केंद्रों में प्रश्न-प्रत्र वितरित कर दिए जाते हैं और वे उत्तर-पुस्तिकाओं पर प्रश्नों का उत्तर लिखते हैं। बाद में परीक्षक अपनी सुविधानुसार उनकी उत्तर-पुस्तिकाओं की जाँच कर उनकी योग्यता का मापन कर सकते हैं। इसमें सभी कार्य का लिखित रूप में अभिलेख (रिकार्ड) सुरक्षित रहता है। कभी भी आवश्यकता पड़ने पर उसका पुनर्मूल्यांकन किया जा सकता है। छात्रों की पढ़कर अर्थ ग्रहण करने एवं लिखित रूप से विचारों को अभिव्यक्त करने की योग्यता की जाँच करने की यह एक सर्वोत्तम विधि है।

प्रश्न-पत्र में पूछे गए प्रश्नों की रचना के आधार पर लिखित परीक्षा के तीन रूप हैं :

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(i) निबंधात्मक (ii) लघु उत्तर (iii) वस्तुनिष्ठ।

(i) **निबंधात्मक परीक्षा**—जिन प्रश्नों का उत्तर छात्रों को विस्तृत निबंध के रूप में देना होता है, ऐसे प्रश्नों पर आधारित लिखित परीक्षा को निबंधात्मक परीक्षा कहा जाता है। इसमें बच्चों को विषय से संबंधित प्रश्नों पर आधारित प्रश्न-पत्र दिया जाता है। प्रश्न-पत्र में 8-9-10 प्रश्न होते हैं, उनमें से छात्रों को 5-6 प्रश्नों का उत्तर एक निश्चित समयावधि में देना होता है।

गुण—इस परीक्षा के द्वारा छात्रों की लिखित अभिव्यक्ति की योग्यता की जाँच होती है। पढ़कर अर्थ ग्रहण करना, विचारों का संग्रह करना, विचारों का विश्लेषण करना, विचारों को व्यवस्थित करना एवं उचित भाषा तथा क्रम में अभिव्यक्ति करना, तीव्र गति से लिखना आदि योग्यताओं का मूल्यांकन करने के लिए निबंधात्मक परीक्षाएँ सबसे अच्छी साधन हैं। इनमें निम्न प्रकार से प्रश्न पूछे जाते हैं। जैसे—

(क) तुलसीदास जी की भाषा, शैली एवं रचनाओं का साहित्यिक परचिय दें।

(ख) महावीरप्रसाद द्विवेदी के निबंध 'साहित्यिक की महत्ता' का सार लिखते हुए उसके केंद्रीय भाव को स्पष्ट करें।

(ग) अपने देश के 'राष्ट्रीय ध्वज' पर एक लेख लिखिए।

इस प्रकार के प्रश्नों से छात्रों की समीक्षात्मक एवं सृजनात्मक योग्यता की जाँच करने में सहायता मिलती है। अक्षर-विन्यास, विराम-चिह्न आदि के शुद्ध प्रयोग की परख भी आसानी से की जाती सकती है।

दोष—उपर्युक्त गुणों के होने पर भी यह परीक्षा दोषमुक्त नहीं है। प्रश्न-पत्र के 10-12 प्रश्नों में से केवल 5-6 प्रश्नों का उत्तर देने की परंपरा के कारण छात्र विषय का पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं करते हैं बल्कि कुछ संभावित प्रश्नों को तैयार कर लेते हैं। प्रश्न-पत्र में भी पाठ्यक्रम के कुछ ही अंश पर प्रश्न पूछे जाते हैं अतः छात्र पूरे पाठ्यक्रम का अध्ययन नहीं करते हैं। इनसे विषय की आंशिक जाँच ही हो पाती है। ये परीक्षाएँ साधन न बनकर साध्य बन गई हैं। छात्र विषय को समझने के स्थान पर रट लेते हैं और परीक्षा में रटे-रटाए उत्तर लिख आते हैं। यदि दुर्भाग्यवश रटे हुए प्रश्न नहीं आए तो अपने भाग्य को कोसते हैं या पास होने के लिए अनुचित साधनों का प्रयोग करते हैं। अतः ये परीक्षाएँ छात्रों को भाग्यवादी बना देती हैं और उनमें अनैतिक आदतों का विकास करती हैं। इस परीक्षा में एक दोष और भी है कि इनमें उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन परीक्षकों के व्यक्तिगत दृष्टिकोण पर निर्भर करता है। उत्तर की निश्चितता या सीमारेखा न होने के कारण एक प्रश्न के उत्तर की जाँच करने पर एक परीक्षक 50% अंक देता है तो उसी के लिए दूसरा या तीसरा परीक्षक 40% या 60-70% अंक तक दे सकता है। अतः ये परीक्षाएँ अविश्वसनीय, अप्रामाणिक एवं व्यक्तिनिष्ठ हैं। इनमें परीक्षा-परिणाम घोषित होने की अवधि तक छात्रों के मन में आतंक छाया रहता है। बहुत-से छात्र तो परीक्षकों तक पहुँचा करते हैं और अनैतिकता को प्रोत्साहन देते हैं। छात्रों के साथ उचित न्याय नहीं हो पाता है। इन दोषों के कारण बहुत-से विद्वान इस परीक्षा की कटु आलोचना करते हैं और इसे त्याज्य मानते हैं।

परंतु इनकी अपनी विशेषताएँ भी हैं। जैसाकि इसके गुणों को स्पष्ट करते हुए बताया गया है कि यह परीक्षा छात्रों की विचार-संगठन एवं विश्लेषण-संबंधी योग्यता की जाँच करती है, उनकी लिखित अभिव्यक्ति की योग्यता की जाँच करती है एवं भाषा के शुद्ध तथा प्रभावशाली प्रयोग आदि का मापन भी करती है अतः इसे त्यागा नहीं जा सकता है। भाषा योग्यताओं की जाँच की दृष्टि से विशेषकर हिंदी-शिक्षण में निबंधात्मक परीक्षा की बहुत उपयोगिता है। इसलिए हिंदी-शिक्षण के उद्देश्य का मापन करने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant.

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
के लिए इसका प्रयोग होना आवश्यक है लेकिन थोड़ी सावधानी के साथ।

(ii) **लघु उत्तर परीक्षा**—जिन प्रश्नों का उत्तर बहुत छोटा अर्थात एक, दो, तीन या चार पंक्तियों में देना होता है, उन्हें लघु उत्तर परीक्षा कहा जाता है। यह निबंधात्मक परीक्षा का ही परिष्कृत रूप है। इनमें निबंधात्मक परीक्षाओं की अपेक्षा अधिक प्रश्न पूछे जा सकते हैं अत: यह पाठ्यक्रम के अधिक अंश से संबंधित ज्ञान की जाँच करती है। इनके उत्तर भी अपेक्षाकृत अधिक निश्चित होते हैं। इनमें छात्रों की बोधशक्ति तथा ज्ञान की जाँच भी होती है। ये छात्रों की वाक्य-रचना की योग्यता की जाँच करने में भी सहायक हैं, परंतु ये न तो छात्रों की तर्क, विचार आदि मानसिक शक्तियों की जाँच कर सकती हैं और न ही भाषा, शैली एवं विचाराभिव्यक्ति की जाँच भी पूरी तरह से करने में सक्षम होती हैं।

लघु उत्तर परीक्षाओं में निम्न प्रकार के प्रश्न पूछे जा सकते हैं :

(क) रामचरितमानस हिंदी का सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ क्यों माना जाता है? कोई चार कारण बताइए।

(ख) संज्ञा या विशेषण की परिभाषा दीजिए।

(ग) कबीरदास जी की भाषा-शैली की दो विशेषताएँ बताइए।

(घ) नाटक में कौन-कौनसे तत्व होते हैं?

(iii) **वस्तुनिष्ठ परीक्षा**—जिन प्रश्नों के उत्तर किसी चिह्न विशेष या एक-दो शब्द के द्वारा दिए जाते हैं, उन्हें वस्तुनिष्ठ परीक्षा कहते हैं। निबंधात्मक परीक्षा के दोषों को दूर करने की दृष्टि से इस परीक्षा का विकास किया गया है। प्रश्नों के उत्तर एक-दो शब्दों में होने के कारण इसमें कम समय में अधिक-से-अधिक प्रश्न पूछे जा सकते हैं। अत: प्रश्न पूरी पाठ्यचर्या से संबंधित होते हैं। छात्रों को विषय पूरी तरह से तैयार करना पड़ता है, विषय का कोई भी अंश छोड़ा नहीं जा सकता है। इसमें प्रश्नों के उत्तर निश्चित होने के कारण हर परिस्थिति में परीक्षक को निश्चित अंक देने पड़ते हैं अर्थात उत्तर सही है तो पूर्ण अंक और गलत है तो शून्य। प्रश्न के उत्तर की विषयवस्तु निश्चित होने के कारण ही इसे वस्तुनिष्ठ कहा जाता है। ये परीक्षाएँ विश्वसनीय एवं प्रामाणिक होती हैं। इनके द्वारा बच्चों के ज्ञान की सही-सही जाँच होती है।

इन गुणों के होने पर भी वस्तुनिष्ठ परीक्षा दोषमुक्त नहीं हैं। इनसे बच्चों की विचार, तर्क आदि मानसिक शक्तियों, भाषा-शैली का प्रयोग, विचारों की अभिव्यक्ति आदि की जाँच नहीं हो पाती है। ये तो केवल बच्चों की स्मरणशक्ति की जाँच करती हैं। कभी-कभी ये अनुमान-कार्य (guess work) को भी प्रोत्साहन देती हैं।

अत: वस्तुनिष्ठ परीक्षा पर पूरी तरह से निर्भर न रहकर, निबंधात्मक एवं लघु उत्तर परीक्षाओं के साथ समन्वित करके इसका प्रयोग करना चाहिए। वस्तुगत प्रश्नों का निर्माण बड़ी सावधानी के साथ करना चाहिए। परस्पर विचार-विमर्श एवं पर्याप्त अभ्यास के उपरांत ही इनका निर्माण किया जा सकता है। प्रश्नों की संख्या इतनी होनी चाहिए कि छात्र दिए गए समय में उनका उत्तर दे सकें। प्रश्न छात्रों के मानसिक स्तर के अनुकूल होने चाहिए। कुछ प्रश्न ऐसे हों जिनका उत्तर 5 से 10 प्रतिशत तक असाधारण प्रतिभा के छात्र दे सकें, कुछ प्रश्न ऐसे हों जिनका उत्तर 40 से 65 प्रतिशत तक सामान्य प्रतिभा के छात्र दे सकें, कुछ प्रश्न ऐसे हों जिनका उत्तर 40 से 65 प्रतिशत तक सामान्य प्रतिभा के छात्र दे सकें और कुछ प्रश्न ऐसे हों जिनका उत्तर सभी छात्र दे सकें। इससे सभी छात्रों की मानसिक क्षमता, योग्यता आदि की जाँच भी हो सकेगी।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न अनेक प्रकार के होते हैं :

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

1. पुन:स्मरण परीक्षा (Recall test)—इस प्रकार के प्रश्नों में छात्रों को अपनी स्मृति अर्थात स्मरणशक्ति का प्रयोग कर प्रश्नों का उत्तर देना होता है। जैसे—

प्रश्न (i) रामचरितमानस की रचना किसने की ?

(ii) संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतानेवाले शब्दों को क्या कहते हैं ?

(iii) जयशंकर प्रसाद की जन्मतिथि क्या है ?

(iv) भक्तिकालीन पाँच कवियों के नाम लिखिए।

(v) वायु के तीन पर्यायवाची लिखिए।

इन प्रश्नों में उत्तर नहीं दिया होता है। छात्रों को स्वयं सीखे हुए ज्ञान का पुन: स्मरण करके उत्तर लिखना पड़ता है।

2. रिक्त-स्थान पूर्ति परीक्षा (Completion Test)—इसे वाक्य-पूर्ति परीक्षा भी कहते हैं। इसमें वाक्य लिखकर बीच-बीच में रिक्त स्थान छोड़ देते हैं और छात्र उन रिक्त स्थानों में उचित शब्द लिखते हैं। इसके प्रश्न भी दो प्रकार के होते हैं—

(i) स्मृति वाक्य-पूर्ति परीक्षा—जैसे—

प्रश्न (अ) तुलसीदास जी का प्रमुख ग्रंथ..........है।

(आ) हरियाणा की मातृभाषा..........है।

(इ) गोदान के लेखक..........हैं।

(ई) क्रिया की विशेषता प्रकट करनेवाले शब्द को..........कहते हैं।

(ii) चुनाव वाक्य-पूर्ति परीक्षा—इनमें वाक्य के आगे कुछ शब्द दिए होते हैं और छात्र को उन शब्दों में से उचित शब्द का चुनाव कर रिक्त स्थान को पूरा करना होता है। जैसे—

प्रश्न (अ) कामायनी .... की प्रमुख रचना है।

(तुलसीदास, सुमित्रानंदन पंत, जयशंकर प्रसाद)

(आ) जो शब्द संज्ञा के स्थान पर आते हैं उन्हें .... कहते हैं।

(क्रिया, विशेषण, सर्वनाम, अव्यय)

(इ) ज्ञानराशि के संचित कोष को .... कहते हैं।

(समाज, सभ्यता, साहित्य, संस्कृति)

3. बहु-विकल्प परीक्षा (Multiple Choice Test)—इस प्रकार के प्रश्नों में एक प्रश्न के तीन-चार उत्तर लिख दिए जाते हैं और छात्रों को सही उत्तर के आगे निशान लगाना होता है। जैसे—

प्रश्न (i) सूरदास जी ने रामचरितमानस/प्रियप्रवास/सूरसागर की रचना की थी।

(ii) पुस्तक शब्द व्याकरण में संज्ञा/सर्वनाम/क्रिया है।

4. सत्यासत्य परीक्षा—इसमें कुछ प्रश्न या/कथन प्रस्तुत किए जाते हैं जो सही या गलत हो सकते हैं। छात्रों को ठीक होने पर सही का निशान ( ) लगाने या ठीक, हाँ, सत्य या शुद्ध लिखने को कहा जाता है। जैसे—

प्रश्न—नीचे लिखे वाक्यों में जो ठीक हों उनके आगे 'हाँ' और जो गलत हों उनके आगे 'नहीं' लिखो—

(अ) महादेवी वर्मा वेदना की कवयित्री मानी जाती हैं।( )

(आ) सूरदास ने कृष्ण की बाललीला का अति सुंदर चित्रण किया है। ( )

(इ) भूषण श्रृंगार रस के कवि हैं। ( )

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ई) राम शब्द व्याकरण की दृष्टि से विशेषण है। ( )

5. समरूप या युगलीकरण परीक्षा (Matching Test)—इसमें प्रश्नों को दो भागों में बाँटा जाता है। प्रथम भाग में एक से अधिक कथन, शब्द या वाक्य दिए जाते हैं और दूसरे भाग में उनके उत्तर या उनसे संबंधित सूचनाएँ दी जाती हैं परंतु इनका क्रम अव्यवस्थित होता है अर्थात उत्तरों को प्रथम भाग वाले कथनों के क्रम में नहीं लिखा जाता है। छात्रों को दोनों भागों के शब्दों, वाक्यों या कथनों को पढ़कर प्रथम भाग वाले कथनों के क्रम में लिखना होता है। जैसे :

प्रश्न—नीचे प्रथम भाग में कुछ साहित्यकारों के नाम हैं और दूसरे भाग में कुछ रचनाओं के। जिस साहित्यकार की जो रचना हो उसके क्रम को उसके सामने कोष्ठक में लिखिए—

साहित्यकार	**रचना**	
जायसी	(क) राम की शक्ति पूजा	( )
जयशंकर प्रसाद	(ख) साकेत	( )
मैथिलीशरण गुप्त	(ग) कामायनी	( )
सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	(घ) यामा	( )
महादेवी वर्मा	(ङ) पद्मावत	( )

6. वर्गीकृत परख प्रश्न (Classification Test)—इन प्रश्नों में लगभग पाँच-छ: शब्दों का एक समूह होता है। केवल एक शब्द को छोड़कर शेष सभी एक ही वर्ग के होते हैं। जो शब्द उस वर्ग का नहीं है छात्रों से उसे रेखांकित करने को कहा जाता है। जैसे—

प्रश्न—नीचे दिए गए प्रत्येक समूह में से उस शब्द को रेखांकित कीजिए जो उस समूह से संबंधित नहीं है :

(क) प्रेम, प्यार, स्नेह, ममता, दया।

(ख) सूर, तुलसी, मीरा, प्रसाद, कबीर।

(ग) प्रात:काल, किरण, धूप, सूर्योदय, तारे।

7. व्यवस्थीकरण परीक्षा (Arrangement Test)—इसमें कई शब्दों, कथनों या वाक्यांशों को अव्यवस्थित रूप से रख दिया जाता है और छात्रों को उन शब्दों, कथनों या वाक्यांशों को व्यवस्थित रूप में रखने को कहा जाता है। इससे छात्रों के विषय एवं भाषा-ज्ञान की परीक्षा ली जाती है।

प्रश्न—नीचे दिए गए शब्दों को उचित क्रम में रखिए :

(अ) कर्ण, वाक्य, अनुच्छेद, निबंध, शब्द।

(आ) गगन हम उन्मुक्त पंछी के।

(इ) हैं संज्ञा स्थान के शब्दों प्रयुक्त को पर सर्वनाम होनेवाले कहते।

इस प्रकार हिंदी भाषा-शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति की जाँच करने के लिए हिंदी के प्रश्न-पत्र में उपर्युक्त निबंधात्मक, लघु उत्तर एवं वस्तुनिष्ठ सभी प्रकार के प्रश्नों का समावेश कर प्रश्न-पत्र का निर्माण करना चाहिए जिससे छात्रों की भाषा संबंधी विभिन्न योग्यताओं की सही-सही जाँच हो सके।

(II) मौखिक परीक्षा—मौखिक रूप से छात्रों से प्रश्न पूछकर उनके उत्तर भी मौखिक रूप से ही देने को कहा जाता है। इसे ही मौखिक परीक्षा कहते हैं। हिंदी भाषा के मूल्यांकन में मौखिक परीक्षा का बहुत महत्त्व है क्योंकि हिंदी भाषा-शिक्षण में पढ़ने-लिखने की योग्यता का विकास करने से पहले छात्रों को सुनकर विचार ग्रहण करने और बोलकर विचारों को अभिव्यक्त करने के योग्य बनाना भाषा की शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है। हम दैनिक जीवन में पढ़ने-लिखने से अधिक कार्य सुनने और बोलने का करते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
भाषा के दो रूपों, मौखिक एवं लिखित, में से व्यावहारिक जीवन में मौखिक रूप का प्रयोग अधिक होता है। मौखिक रचना ही लिखित रचना का आधार है अतः हिंदी के मूल्यांकन में मौखिक अभिव्यक्ति की योग्यता की जाँच करना भी उतना ही आवश्यक है जितना लिखित अभिव्यक्ति की योग्यता की जाँच करना।

मौखिक परीक्षा में अध्यापक छात्रों में होनेवाले मौखिक अभिव्यक्ति संबंधी अपेक्षित व्यवहार-परिवर्तनों व दिए गए ज्ञान के आधार पर प्रश्नों का निर्माण कर लेता है और एक-एक से कुछ प्रश्नों का उत्तर पूछता है। छात्रों के उत्तर देने के ढंग के आधार पर उनका मूल्यांकन कर लिया जाता है। मौखिक परीक्षा के द्वारा ही छात्रों की शुद्ध उच्चारण, उचित, गति, हाव-भाव, स्वर के उतार-चढ़ाव एवं उचित स्वराघात के साथ बोलने की योग्यता की जाँच की जाती है। वाचन संबंधी योग्यता की जाँच भी मौखिक परीक्षा द्वारा ही की जाती है। अध्यापक द्वारा पूछे गए प्रश्नों का मौखिक रूप से उत्तर देने पर उनकी सुनने की योग्यता की जाँच भी होती है।

इस परीक्षा की सबसे बड़ी परेशानी यह है कि इसमें एक-एक छात्र से अलग-अलग प्रश्न पूछने के कारण समय अधिक लगता है। परंतु इसकी उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए लिखित परीक्षा के साथ-साथ इसे भी सहायक रूप में स्वीकार करना चाहिए।

III. **प्रायोगिक परीक्षा**—वैसे तो प्रायोगिक परीक्षा विज्ञान, भूगोल, मनोविज्ञान तथा हस्त-कौशलों से संबंधित विषयों की परीक्षा लेने में प्रयुक्त की जाती है, अन्य विषयों में नहीं। परंतु भाषा भी एक कौशल है अतः जिस प्रकार अन्य विषयों की कुशलता का मूल्यांकन करने के लिए प्रायोगिक परीक्षा ली जाती है उसी प्रकार भाषा में विभिन्न कौशलों की जाँच करने के लिए प्रायोगिक परीक्षा अवश्य ली जानी चाहिए।

हिंदी भाषा में सस्वर पठन, कविता-पाठ, भाषण, वाद-विवाद, सुलेख, निबंध-लेखन आदि क्रियाओं द्वारा प्रायोगिक परीक्षा का आयोजन कर छात्रों की भाषा संबंधी विभिन्न योग्यताओं की जाँच की जा सकती है। हाँ, स्वतंत्र रूप में यह परीक्षा अपने आपमें पर्याप्त नहीं है। लिखित एवं मौखिक परीक्षा के साथ इसका प्रयोग किया जा सकता है।

(ख) पर्यवेक्षण—किसी भी विषय के शिक्षण के लिए जिन उद्देश्यों का निर्धारण किया जाता है उनकी उपलब्धि व्यवहार-परिवर्तन के रूप में मापी जाती है। परीक्षा के द्वारा तो इस उपलब्धि का आंशिक मूल्यांकन ही हो पाता है। भाषा-शिक्षण संबंधी उपलब्धियों का सही और विस्तृत मूल्यांकन तो बच्चे के दैनिक कार्य-कलापों एवं व्यवहार को देखकर ही किया जा सकता है।

बच्चे के दैनिक व्यवहार एवं क्रियाओं को देखकर उनका लेखा-जोखा रखने की क्रिया को ही पर्यवेक्षण कहा जाता है। कक्षा-शिक्षण के समय कक्षा अंतर्क्रिया में छात्र की सक्रियता, विद्यालय के विभिन्न कार्यक्रमों में आयोजित भाषा एवं साहित्य संबंधी क्रियाओं में उसकी सहभागिता एवं प्रदर्शन, विद्यालय में छात्र के कार्य करने के ढंग एवं विद्यालय के सभी अध्यापकों, छात्रों व अन्य कर्मियों आदि के साथ वार्तालाप आदि का पर्यवेक्षण करते हुए छात्रों की भाषागत योग्यताओं के विकास एवं उपलब्धियों की जाँच की जा सकती है।

(ग) संचित अभिलेख पत्र—छात्रों के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों में आए व्यवहार-परिवर्तनों एवं उपलब्धियों को एक ही प्रपत्र में लिखकर सुरक्षित रखा जाता है, इसी को संचित अभिलेख पत्र कहा जाता है। इसकी सहायता से छात्रों के क्रमिक विकास एवं व्यवहार-परिवर्तनों की जाँच की जाती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्योंकि इसमें छात्र के विद्यालय प्रवेश से लेकर विद्यालय छोड़ने तक की छात्र की स्वास्थ्य एवं शारीरिक विकास संबंधी उपलब्धि, सहगामी क्रियाओं में सहभागिता की स्थिति, मानसिक व बौद्धिक विकास एवं शैक्षिक उपलब्धियों से संबंधित समय-समय पर किए गए मूल्यांकन के परिणामों का पूरा-पूरा लेखा-जोखा (रिकार्ड) रखा जाता है। छात्र का प्रारंभिक स्तर क्या था, शिक्षणोपरांत उसमें क्या अंतर आया है, प्रगति हुई है या नहीं, इन सभी बातों की यथार्थ जानकारी संचित अभिलेख पत्र द्वारा हो जाती है।

(घ) घटनावृत्त—विद्यालय में घटित होनेवाली दैनिक घटनाओं का विवरण भी बालकों के व्यवहार-परिवर्तन का मूल्यांकन करने में सहायता करता है। उन घटनाओं में किस छात्र की क्या भूमिका रही, उस बात का विवरण छात्रों की भाषागत उपलब्धियों का मापन करने में सहायक होता है।

(ङ) गृह-कार्य—कक्षा-शिक्षण के उपरांत पढ़ाए गए विषय का अभ्यास करने के लिए अध्यापक द्वारा छात्रों को घर से करके लाने के लिए कुछ प्रश्न दिए जाते हैं। इन्हें ही गृह-कार्य कहते हैं। गृह-कार्य के रूप में लिखे गए प्रश्नों के उत्तर पाठ के सार, शब्दों का वाक्यों में प्रयोग, कंठस्थ विषयवस्तु को सुनाने आदि क्रियाओं के आधार पर भी छात्र की भाषागत योग्यताओं के विकास की जाँच की जाती है। अत: मूल्यांकन में गृह-कार्य भी एक साधन का कार्य करता है।

(च) निर्धारण मापनी (रेटिंग स्केल)—उपर्युक्त विभिन्न विधियों एवं साधनों द्वारा छात्रों की भाषागत योग्याताओं एवं उपलब्धि की जो जाँच की जाती है, वह किस स्तर की है, इस बात का निर्धारण करने के लिए निर्धारण मापक का प्रयोग किया जाता है। निर्धारण मापक की तीन उत्तम, संतोषजनक, साधारण या पाँच अत्याधिक, अधिक, सामान्य, कम, बहुत कम आदि श्रेणियाँ बनाकर बच्चे की योग्यता व उपलब्धि को किसी भी श्रेणी विशेष में रखा जाता है। जैसे :

योग्यताएँ एवं उपलिब्धयाँ	श्रेणियाँ				
	अत्यधिक	अधिक	सामान्य	कम	बहुत कम
1. छात्र के उच्चारण में शुद्धता है	✓				
2. अभिव्यक्ति में मौलिकता है।			✓		
3. सस्वर वाचन भावानुसार है।		✓			
4. साहित्यिक क्रियाओं में भाग लेता है।					✓
5. अक्षर-विन्यास की शुद्धता है।	✓				

इस प्रकार उपर्युक्त विधियों एवं साधनों की सहायता से शिक्षण-क्रिया के फलस्वरूप छात्रों में आए व्यवहार-परिवर्तनों की जाँच आसानी से की जा सकती है। हिंदी-शिक्षण के उद्देश्यों एवं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विषयवस्तु की प्रकृति के आधार पर अलग-अलग विधियों के प्रयोग द्वारा उचित रूप से मूल्यांकन कार्य को संपन्न किया जा सकता है।

हिंदी की विभिन्न विधाओं के शिक्षण का मूल्यांकन कैसे किया जाए?

(How to perform Evaluation in the various aspects of Hindi teaching?)

हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाएँ

हिंदी साहित्य के दो अंग हैं—पद्य एवं गद्य।

1. पद्य—पद्य मानव-मन की भावनाओं का चित्रण है। इसमें छंद, लय, प्रवाह आदि की प्रधानता होती है। कविता इतनी सरस होती है कि पाठक या श्रोता अनायास ही उससे आनंद की अनुभूति करने लगता है। पद्य या कविता में रस की प्रधानता होती है। आचार्य विश्वनाथ ने कहा है, 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्'। काव्य भी कई प्रकार का होता है—प्रबंध काव्य, खंड काव्य, मुक्तक काव्य आदि।

2. गद्य—साहित्य के इस रूप में छंद, लय, प्रवाह आदि के बंधनों का होना आवश्यक नहीं। उसमें तथ्यों को सर्वमान्य भाषा में ज्यों-का-त्यों प्रस्तुत किया जाता है। सामान्य व्यक्ति अपने विचारों की अभिव्यक्ति गद्य के माध्यम से ही करते हैं। गद्य हमारे दैनिक जीवन की भाषा है। हमारा मस्तिष्क हर समय विचार करने, तर्क-वितर्क करने, चिंतन-मनन करने एवं विवेकपूर्ण निर्णय लेने का कार्य करता रहता है। इन्हीं विचारों, तथ्यों एवं सिद्धांतों का विवेचन साहित्य के गद्य रूप द्वारा किया जाता है। इन विचारों व तर्कों की अभिव्यक्ति में व्यवस्था, क्रम एवं शृंखला का होना आवश्यक है। यह गद्य हमें विभिन्न रूपों में देखने को मिलता है। जैसे—निबंध, कहानी, नाटक, एकांकी, उपन्यास, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, पत्र, डायरी, आलोचना आदि। इन्हें ही गद्य की विधाएँ कहा जाता है। हर विधा, भाषा-शैली, विषय के प्रतिपादन, प्रस्तुतीकरण आदि की दृष्टि से अलग-अलग होती है। सभी विधाओं को अलग-अलग आगे स्पष्ट किया जा रहा है।

(i) **निबंध**—निबंध एक ऐसी गद्य रचना है जिसमें व्याकरणसम्मत भाषा और विषयानुकूल शैली के माध्यम से विचारों अथवा तथ्यों को सरल, संक्षिप्त किंतु क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत किया जाता है। न्यूनाधिक मात्रा में इसमें लेखक का व्यक्तित्व भी प्रतिंबिबित होता है। सामान्यतः निबंध चार प्रकार के होते हैं—वर्णनात्मक, विवरणात्मक या कथात्मक, विचारात्मक एवं भावनात्मक।

वर्णनात्मक निबंधों में किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थान आदि का तथा प्रकृति या मानव-जीवन की घटनाओं का वर्णन किया जाता है। विवरणात्मक या कथात्मक निबंधों में किसी पौराणिक कथा, ऐतिहासिक घटना, सामाजिक स्थिति अथवा किसी आत्मानुभूत प्रसंग का विवरण प्रस्तुत किया जाता है। विचारात्मक निबंध में किसी समस्या अथवा अप्रत्यक्ष विषय पर विचार किया जाता है, और विषय के सत-असत् का प्रतिपादन या गुण-दोषों का विवेचन सुसंबद्ध रीति से किया जाता है। भावनात्मक निबंधों में प्रायः लेखक अपनी किसी अनुभूति को या अमूर्त एवं इंद्रियातीत विषयों को भावपूर्ण भाषा में पाठक के हृदय तक पहुँचाता है।

परिमार्जित भाषा, विषयानुकूल शैली, विचारों की क्रमबद्धता, भावों की गहराई, अपने मत का प्रतिपादन एवं जो कुछ कहा गया है उसका पाठक पर प्रभाव—ये निबंध विधा के तत्व कहलाते हैं। निबंध में इनका निर्वाह होना आवश्यक है।

(ii) **कहानी**—गद्य साहित्य की दूसरी सर्वाधिक प्रिय विधा कहानी है। कहानी में जीवन के एक पहलू, एक क्षण, एक घटना अथवा एक भावना या एक विचार को कथारूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। कहानी मुख्यतः चार प्रकार की होती है : (i) **घटना-प्रधान**—जिनमें किसी पौराणिक,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE 2025 Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
सामाजिक व ऐतिहासिक घटना के तथ्यों को स्पष्ट किया जाता है, (ii) **चरित्र-प्रधान**—जिनमें किसी घटना के माध्यम से उसके सक्रिय पात्रों के चरित्र को उभारकर प्रस्तुत किया जाता है, (iii) **समस्या-प्रधान**—जिनमें किसी धार्मिक, सामाजिक या राजनैतिक समस्या को आधार बनाकर उसका समाधान प्रस्तुत किया जाता है, (iv) **भाव-प्रधान व मनोवैज्ञानिक**—जिनमें पात्रों की मनोदशा या अंतद्‌र्वंद्‌व का चित्रण किया जाता है।

कथावस्तु, पात्र एवं चरित्र-चित्रण, कथोपकथन, भाषा-शैली, देश-काल एवं उद्‌देश्य, ये कहानी के तत्व होते हैं।

(iii) **नाटक**—गद्‌य साहित्य की विभिन्न विधाओं में नाटक प्राचीनतम विधा है। इसमें कथा या घटना को पात्रों के अभिनय द्‌वारा रंगमंच पर प्रस्तुत किया जाता है। इसे देखने से दर्शकों के ह्रदय प्रभावित होते हैं अत: इसे दृश्य काव्य कहा जाता है। कथावस्तु, पात्र एवं चरित्र-चित्रण, संवाद या कथोपकथन, देशकाल, भाषा-शैली, उद्‌देश्य, अभिनेयता—ये नाटक के तत्व होते हैं।

(iv) **एकांकी**—यह नाटक का ही एक रूप है। इसमें जीवन की किसी घटना को एक अंक में प्रस्तुत किया जाता है। रंगमंच पर दृश्य-परिवर्तन नहीं करना पड़ता है। कम समय में अधिक आनंद प्रदान करना एकांकी की प्रमुख विशेषता है।

(v) **उपन्यास**—उपन्यास गद्‌य साहित्य की एक ऐसी विधा है जिसका स्वरूप बहुत विस्तृत होता है। इसमें एक विस्तृत प्रमुख कथा का वर्णन होता है परंतु उस विस्तृत कथा के अंतर्गत अनेक गौण कथाएँ समाहित होती हैं। उपन्यास दो प्रकार के होते हैं—घटना-प्रधान व चरित्र-प्रधान। जासूसी तथा साहसिक कथानकवाले उपन्यास घटना-प्रधान होते हैं तथा ऐतिहासिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कथानक वाले उपन्यास चरित्र-प्रधान होते हैं।

(vi) **जीवनी**—जीवनी गद्‌य साहित्य की वह विधा है जिसमें किसी व्यक्ति के जीवन की सत्य घटनाओं पर आधारित विवरण प्रस्तुत किया जाता है। व्यक्ति के जीवन की कुछ प्रमुख घटनाओं को चुनकर भाषा-शैली एवं कल्पना के सहारे उसे रोचक और प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इसमें किसी काल्पनिक घटना का वर्णन नहीं होता है।

(vii) **आत्मकथा**—गद्‌य साहित्य की इस विधा में कोई व्यक्ति अपने जीवन की घटनाओं को स्वयं लिखकर प्रस्तुत करता है। जीवनी अन्य कोई व्यक्ति लिखता है और आत्मकथा स्वत: लिखी जाती है। लेखक अपने जीवन के सुखद व दुखद, अच्छे एवं बुरे दोनों पक्षों का चित्रण करता है। वह आत्मपरीक्षण कर स्वनिष्कर्ष भी प्रस्तुत करता है जिससे पाठक उसके अनुभवों का लाभ उठा सकें।

(viii) **संस्मरण**—गद्‌य साहित्य की इस विधा के अंतर्गत लेखक स्वयं अपनी आँखोंदेखी या अनुभव की गई घटनओं का रोचक विवरण प्रस्तुत करता है। यदि यह संस्मरण अपने जीवन की घटनाओं से संबंधित है तो आत्मकथा के अति निकट और यदि अन्य व्यक्ति के जीवन की घटनाओं से संबंधित है तो जीवनी के अति निकट होता है। इसमें लेखक अपने दृष्टिकोण से घटना का विश्लेषण करता है।

(ix) **रेखाचित्र**—गद्‌य की इस साहित्यिक विधा को शब्दचित्र या स्कैच भी कहते हैं। इससे किसी व्यक्ति की आकृति, चाल-ढाल या स्वभाव की किन्हीं विशेषताओं को शब्दचित्रों के माध्यम से सजीव रूप में चित्रित किया जाता है। इसमें व्यक्ति के कार्यों का संक्षिप्त एवं सजीव चित्रण होता है।

(x) **रिपोर्ताज**—यह विधा रेखाचित्र का ही परिवर्तित रूप है। जब व्यक्ति के कार्यों या व्यापार या आकृति का चित्रण न होकर घटनाओं का क्रमबद्‌ध चित्रण होता है तो उसे रिपोर्ताज कहा जाता है। यह शब्द रिपोर्ट से बना है। किसी भी घटना की कलात्मक एवं साहित्यिक अभिव्यक्ति अर्थात रिपोर्ट ही

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
रिपोर्ताज है। ये घटनाएँ वास्तविक होती हैं, केवल कल्पना की सहायता से उन्हें रोचक बनाया जाता है।

(xi) **पत्र**—जब कोई लेखक अपने किसी मित्र, संबंधी या परिचित को पत्र लिखकर अपने किसी सामाजिक या राजनैतिक अनुभव या विचार का विश्लेषण करता है तो गद्य की इस विधा को पत्र कहा जाता है। जवाहरलाल जी द्वारा अपनी पुत्री इंदिरा को लिखे गए पत्र एवं महात्मा गांधी के पत्र आदि बहुत प्रसिद्ध हुए हैं।

(xii) **डायरी**—गद्य साहित्य की यह विधा भी काफी लोकप्रिय है। इस विधा में लेखक अपने अनुभवों, जीवन की घटनाओं, अपने संपर्क में आए व्यक्तियों आदि को प्रतिदिन अलग-अलग लिखित रूप में अभिव्यक्त करता है। यह डायरी कहलाती है।

विभिन्न विधाओं के शिक्षण का मूल्यांकन

हिंदी केवल एक विषय ही नहीं है वरन विभिन्न विषयों को सीखने का एक माध्यम भी है। अत: विद्यालय में हिंदी की शिक्षा देते समय छात्रों को केवल विषयवस्तु का ज्ञान ही नहीं दिया जाता अपितु शुद्ध मौखिक अभिव्यक्ति एवं शुद्ध लिखित अभिव्यक्ति के कौशल को विकसित करने का प्रयास भी किया जाता है। छात्रों की साहित्य में रुचि जाग्रत कर उनकी सृजनात्मक शक्तियों को विकसित करने की ओर भी ध्यान दिया जाता है। इन सभी उद्देश्यों को प्राप्त करने अर्थात छात्रों में इन योग्यताओं को विकसित करने के लिए बच्चों को भाषा एवं साहित्य के दोनों रूप—गद्य एवं पद्य का अध्ययन कराया जाता है। गद्य-शिक्षण में गद्य की विभिन्न विधाओं को हिंदी पाठ्यचर्या में सम्मिलित किया जाता है। जैसे—निबंध, कहानी, नाटक, उपन्यास, एकांकी, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, डायरी, एवं साक्षात्कार आदि। प्राथमिक स्तर पर केवल निबंध, कहानी और एकांकी का अध्यन कराया जाता है तो माध्यमिक स्तर पर निबंध, एकांकी, नाटक, कहानी, जीवनी, आत्मकथा आदि गद्यविधाओं का ज्ञान छात्रों को कराया जाता है। छात्रों के मानसिक स्तर के अनुरूप हर शिक्षण स्तर पर कविताओं का अध्ययन भी कराया जाता है। इन सभी विधाओं का शिक्षण करने से पूर्व अलग-अलग इनके शिक्षण उद्देश्यों का निर्धारण किया जाता है और उन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए ही शिक्षण अधिगम प्रक्रिया क्रियान्वित की जाती है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के फलस्वरूप छात्रों में उन पूर्वनिर्धारित योग्यताओं का विकास कहाँ तक हुआ है, विभिन्न कौशलों को छात्रों ने किस स्तर तक अर्जित किया है एवं छात्रों के व्यवहार में वांछित परिवर्तन किस सीमा तक आए हैं, इस बात की जानकारी प्राप्त करने के लिए मूल्यांकन प्रक्रिया का प्रयोग किया जाता है। मूल्यांकन करने के लिए मूल्यांकन की विभिन्न तकनीकों एवं साधनों की सहायता ली जाती है और इन सभी तकनीकों एवं साधनों के प्रयोग से मूल्यांकन को उपयोगी, सार्थक एवं उद्देश्यपूर्ण बनाने का प्रयास किया जाता है। अत: हिंदी की विभिन्न विधाओं की मूल्यांकन प्रक्रिया को स्पष्ट करने से पहले विभिन्न विधाओं के शिक्षण उद्देश्यों की जानकारी आवश्यक है।

हिंदी-शिक्षण में इन सभी विधाओं का सामान्यत: एक ही उद्देश्य है और वह यह है कि बच्चे दूसरों के मौखिक रूप से एवं लिखित रूप से व्यक्त किए गए विचारों को ठीक प्रकार से समझ सकें और स्वयं अपने भाव, विचार एवं अनुभवों को मौखिक एवं लिखित रूप में प्रभावशाली ढंग से व्यक्त कर सकें। साथ ही उनके व्यक्तित्व का संतुलित विकास कर जीवन में उचित रूप से समायोजित होने के योग्य बनाना भी भाषा-शिक्षण का उद्देश्य है। इन सभी उद्देश्यों को हम संक्षेप में निम्न रूप से स्पष्ट कर सकते हैं :

1. छात्रों के शब्द-भंडार में वृद्धि करना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2. छात्रों को सूक्तियों, मुहावरों एवं लोकोक्तियों का ज्ञान कराना।

3. छात्रों में ध्यानपूर्वक सुनने और अर्थ ग्रहण करने की क्षमता का विकास करना।

4. छात्रों को शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराना।

5. छात्रों को उचित हाव-भाव आदि के साथ अपने विचारों को मौखिक रूप से अभिव्यक्त करने के योग्य बनाना।

6. छात्रों में पठन-कौशल को विकसित करना।

7. छात्रों की अर्थग्रहण-योग्यता अर्थात बोध-शक्ति का विकास करना।

8. छात्रों को व्याकरणसम्मत शुद्ध भाषा का प्रयोग करते हुए लिखित अभिव्यक्ति के योग्य बनाना।

9. छात्रों की सृजनात्मक योग्यता को विकसित करना।

10. छात्रों की साहित्य में रुचि जाग्रत करना।

11. छात्रों को साहित्य का रसास्वादन करने के योग्य बनाना।

12. साहित्य के अध्ययन से छात्रों को मानव-जीवन के विविध पक्षों का ज्ञान कराना।

13. छात्रों की अभिवृत्तियों को परिमार्जित करना।

14. छात्रों की समीक्षात्मक योग्यताओं को विकसित करना।

इन सभी कौशलों एवं उद्देश्यों को छात्रों ने किस स्तर तक ग्रहण किया है इस बात की जाँच उनकी पाठ्यचर्या में सम्मिलित विभिन्न विधाओं से संबंधित पाठों के आधार पर की जाती है। इसके लिए निम्नलिखित प्रकार से मूल्यांकन की व्यवस्था की जा सकती है :

1. शब्द, सूक्ति, मुहावरे एवं लोकोक्ति ज्ञान का मूल्यांकन—साहित्य की विभिन्न विधाओं निबंध, कहानी, नाटक, एकांकी, जीवनी आदि के शिक्षण द्वारा छात्रों को विभिन्न शब्दों, सूक्तियों, मुहावरों एवं लोकोक्तियों का ज्ञान कराकर उनके शब्द, सूक्ति, मुहावरों एवं लोकोक्ति-भंडार में वृद्धि हो जाती है। छात्रों में इस शब्द-भंडार का विकास कहाँ तक हुआ है, इसका मूल्यांकन करने के लिए कक्षा-कार्य एवं गृह-कार्य के पर्यवेक्षण के साथ-साथ मौखिक परीक्षा तथा वस्तुनिष्ठ परीक्षा की सहायता ली जा सकती है। शब्दों के अर्थ, पर्यायवाची, विपरीतार्थक शब्द आदि तथा सूक्तियों, मुहावरों, लोकोक्तियों का अर्थ पूछकर मौखिक परीक्षा हो सकती है और सत्यासत्य, युगलीकरण, स्मृति परीक्षा, रिक्त स्थान पूर्ति, व्यवस्थीकरण आदि विभिन्न प्रकार के प्रश्नों के निर्माण द्वरा वस्तुनिष्ठ परीक्षा का आयोजन कर शब्दावली आदि के ज्ञान की परीक्षा ली जा सकती है।

2. श्रवण-कौशल का मूल्यांकन—साहित्य की विभिन्न विधाओं का शिक्षण करते समय अध्यापक उनसे संबंधित विषयवस्तु की चर्चा छात्रों के सम्मुख करता है। छात्रों ने उसे सुनकर समझा है या नहीं, इसके लिए पाठ का सार, विषयवस्तु से संबंधित प्रश्न आदि पूछकर अर्थात मौखिक परीक्षा द्वारा अध्यापक छात्रों के श्रवण-कौशल की जाँच कर सकता है। किसी कहानी को सुनाकर छात्रों को अपने शब्दों में कहने के लिए कहा जा सकता है। किसी विषय पर संक्षिप्त भाषण देकर या कहानी सुनाकर उसे संक्षेप में अपने शब्दों में लिखने को भी कहा जा सकता है। इसके लिए गृह-कार्य के पर्यवेक्षण की सहायता ली जा सकती है।

3. उच्चारण-कौशल का मूल्यांकन—मौखिक अभिव्यक्ति कौशल के विकास में शुद्ध उच्चारण का महत्त्वपूर्ण स्थान है। बिना शुद्ध उच्चारण के मौखिक अभिव्यक्ति प्रभावशाली हो ही नहीं सकती है। उच्चारण-कौशल की जाँच करने के लिए मौखिक परीक्षा ही सर्वोत्तम विधि है। शब्दों को श्यामपट्ट पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लिखकर उनका उच्चारण करने के लिए कहा जा सकता है। पाठ्यपुस्तक का कोई परिच्छेद पढ़वाकर और सामान्य ज्ञान या पुस्तक की विषयवस्तु से संबंधित प्रश्न का उत्तर पूछकर उच्चारण-कौशल का मूल्यांकन किया जा सकता है।

4. मौखिक अभिव्यक्ति-कौशल का मूल्यांकन—छात्रों में अपने भावों, विचारों एवं अनुभवों को मौखिक रूप से अभिव्यक्त करने की योग्यता का विकास करना भाषा की विभिन्न विधाओं के शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य है। छात्रों में मौखिक अभिव्यक्ति की योग्यता का विकास किस स्तर तक हुआ है, इस बात की जाँच मौखिक परीक्षा एवं प्रायोगिक परीक्षा के द्वारा की जा सकती है। पठित विषयवस्तु पर प्रश्न पूछकर उनके उत्तर देने के ढंग से, कहानी आदि सुनाने के ढंग से, विभिन्न साहित्यिक क्रियाओं जैसे भाषण, वाद-विवाद, नाटक, कविता-पाठ आदि में छात्रों की सहभागिता के स्तर आदि की जाँच करके इस बात का पता लगाया जा सकता है कि छात्र मौखिक रूप से अपने विचारों को किस तरह व्यक्त करता है। साक्षात्कार आदि से भी मौखिक अभिव्यक्ति-कौशल की जाँच की जा सकती है।

5. पठन-कौशल का मूल्यांकन—दूसरों के विचारों को एक तो सुनकर ग्रहण किया जाता है और दूसरे पढ़कर। भाषा साहित्य की सभी विधाएँ छात्रों में वाचन-कौशल को विकसित करने की उत्तम माध्यम होती हैं। छात्र गद्य, कहानी, नाटक आदि विधाओं को पढ़कर उनमें व्यक्त विचारों से परिचित होते हैं। अत: भाषा की शिक्षा में छात्रों में पठन-योग्यता का विकास करना भी आवश्यक होता है। छात्रों को उचित गति के साथ शुद्ध वाचन का अभ्यास कराया जाता है। छात्रों में वाचन-कौशल का विकास किस सीमा तक हुआ है इसका मूल्यांकन भी मौखिक एवं प्रायोगिक परीक्षा के द्वारा ही किया जाता है। इसके लिए छात्रों को किसी भी पुस्तक से कोई पाठ, अनुच्छेद या अंश पढ़ने के लिए कहा जाता है और छात्रों के पढ़ते समय उसकी पढ़ने की गति, उच्चारण, बल, विराम, स्वर के उतार-चढ़ाव, प्रवाह एवं हाव-भाव का निरीक्षण कर उसके वाचन-कौशल के स्तर का मूल्यांकन किया जाता है।

6. बोधशक्ति का मूल्यांकन—छात्रों ने दूसरों के विचारों को सुनकर या पढ़कर कितना ग्रहण किया है, इस बात की जाँच करना ही बोधशक्ति का मूल्यांकन कहलाता है। साहित्य की विभिन्न विधाओं में जो भी विचार व्यक्त किए गए हैं उनको समझने के योग्य बनाना भाषा-शिक्षण का एक प्रमुख उद्देश्य है। मौखिक परीक्षा द्वारा अर्थात मौखिक रूप से प्रश्न पूछकर एवं लिखित परीक्षा द्वारा अर्थात किसी अनुच्छेद को प्रश्न-पत्र में छापकर, उस पर कुछ प्रश्न पूछकर उनका उत्तर लिखित रूप में देने का निर्देश देकर छात्रों को बोधशक्ति की परीक्षा ली जाती है। प्रश्नों के मौखिक व लिखित उत्तरों में प्राप्त अंकों के आधार पर छात्रों की बोधशक्ति के स्तर का मूल्यांकन किया जाता है।

7. व्याकरण-ज्ञान का मूल्यांकन—गद्य साहित्य का अध्ययन कराते हुए छात्रों को व्याकरण के विभिन्न नियमों की व्यावहारिक एवं सैद्धांतिक जानकारी दी जाती है। व्याकरण भाषा के शुद्ध प्रयोग में सहायक होती है। बच्चे व्याकरण का कितना ज्ञान रखते हैं, व्याकरण की दृष्टि से भाषा का शुद्ध प्रयोग कर सकते हैं या नहीं, इसकी जाँच करने के लिए वस्तुनिष्ठ लिखित परीक्षा का प्रयोग करते हुए स्मृति-परख, युगलीकरण-परख, रिक्त स्थान पूर्ति, शुद्ध-अशुद्ध, व्यवस्थीकरण आदि प्रकार के प्रश्नों का प्रयोग किया जा सकता है। लघु-उत्तर परीक्षा रूप में विभिन्न नियमों एवं उपनियमों की परिभाषा आदि पूछी जा सकती है।

8. सृजनात्मक योग्यता का मूल्यांकन—साहित्य की सभी विधाएँ छात्रों की सृजनात्मक योग्यताओं को विकसित करने के लिए प्रयत्नशील होती हैं। सृजनात्मक योग्यता ही साहित्य के भंडार को विकसित करने का प्रमुख एवं एकमात्र साधन है। अत: छात्रों की सृजनात्मक योग्यता की जाँच करने के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE 2025 Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
लिए निबंधात्मक परीक्षा का प्रयोग किया जाना चाहिए। निबंध, कहानी, पत्र आदि की रचना द्वारा, किसी कहानी, निबंध आदि का सार लिखवाकर, किसी कहानी, नाटक आदि के पात्रों का चरित्र-चित्रण लिखवाकर एवं उद्देश्य आदि लिखवाकर छात्रों की सृजनात्मक योग्यता का मूल्यांकन किया जा सकता है।

9. साहित्य में रुचि के विकास का मूल्यांकन—साहित्य की विभिन्न विधाओं के शिक्षण का एक उद्देश्य साहित्य के विभिन्न रूपों के अध्ययन में छात्रों की रुचि जाग्रत करना भी है। छात्रों में इस साहित्यिक रुचि का विकास हुआ है या नहीं, इसके लिए मूल्यांकन की पर्यवेक्षण तकनीक का प्रयोग करना चाहिए। विद्यालय की साहित्यिक क्रियाओं में छात्रों की क्रियाशीलता, पुस्तकालय से पुस्तकों का अध्ययन, पुस्तकों के रुचिकर अंशों के संग्रह का परीक्षण एवं विभिन्न साहित्यिक संगठनों में छात्रों की सदस्यता आदि की जाँच कर छात्रों की सहित्यिक रुचि का मूल्यांकन किया जा सकता है।

10. साहित्य के रसास्वादन की योग्यता का मूल्यांकन—हिंदी-शिक्षण में साहित्य की विभिन्न विधाओं के अध्ययन के साथ कविता भी पढ़ाई जाती है। कविता-शिक्षण का मुख्य उद्देश्य छात्रों की रसास्वादन एवं सौंदर्यानुभूति को विकसित करना है। इसका मूल्यांकन करने के लिए मौखिक परीक्षा, लघु उत्तर परीक्षा एवं निबंधात्मक परीक्षा का आयोजन किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त कविता-पाठ साहित्यिक क्रिया रसास्वादन की जाँच करने का सर्वोत्तम साधन है। उचित स्वर, लय, प्रवाह एवं गति से किए गए कविता-पाठ से रसास्वादन-योग्यता की जाँच हो सकती है। अर्थ-बोध के लिए निबंधात्मक, शैली-बोध एवं काव्य-तत्वों के बोध की जाँच के लिए निबंधात्मक एवं लघु उत्तर परीक्षा का प्रयोग किया जा सकता है।

11. विषयवस्तु के ज्ञान का मूल्यांकन—हिंदी-शिक्षण में विभिन्न शिक्षण-उद्देश्यों का विकास करने के लिए निश्चित पाठ्यपुस्तक के माध्यम से विभिन्न विषयों एवं तथ्यों का ज्ञान दिया जाता है। साहित्य की विभिन्न विधाओं से संबंधित पाठ इस पाठ्यपुस्तक में संकलित होते हैं। इनके माध्यम से छात्रों को मानव-जीवन के विविध पक्षों से परिचित कराया जाता है। छात्रों को इस विषयवस्तु का कितना ज्ञान प्राप्त हुआ है इसकी जाँच के लिए निबंधात्मक, वस्तुनिष्ठ एवं लघु उत्तर परीक्षाओं का प्रयोग किया जा सकता है।

12. अभिवृत्तियों के विकास का मूल्यांकन—साहित्य की विभिन्न विधाओं के अध्यापन के द्वारा छात्रों की मनोवृत्तियों को परिमार्जित कर उनमें सद्वृत्तियों को विकसित करने का प्रयास भी किया जाता है। छात्रों ने इन अभिवृत्तियों को कितना ग्रहण किया है इसके लिए निबंधात्मक परीक्षा एवं पर्यवेक्षण का प्रयोग किया जा सकता है। किसी कहानी या नाटक से क्या शिक्षा मिलती है आदि प्रश्नों का उत्तर लिखवाकर या छात्रों के दैनिक व्यवहार का निरीक्षण कर उनमें विकसित अभिवृत्तियों का मूल्यांकन करना चाहिए।

13. समीक्षात्मक योग्याताओं का मूल्यांकन—विभिन्न साहित्यिक विधाओं के स्वरूप को शुद्ध बनाए रखने एवं भाषा के शुद्ध प्रयोग की दृष्टि से छात्रों की समीक्षात्मक योग्यता को विकसित करना भी भाषा-शिक्षण का उद्देश्य है। किसी भी चीज के गुण-दोषों को परखने की योग्यता रखनेवाला व्यक्ति जीवन के हर मोड़ पर गुण-दोषों की परख कर सही दिशा निर्धारण करने में समर्थ होता है। छात्रों की समीक्षात्मक योग्यता का मूल्यांकन करने के लिए लघु उत्तर एवं निबंधात्मक परीक्षा का प्रयोग करना चाहिए। इसके लिए विषयवस्तु, भाषा एवं शैली के गुण-दोषों की परख करने से संबंधित प्रश्नों का निर्माण करना चाहिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस प्रकार साहित्य की विभिन्न विधाओं और उनमें निहित विभिन्न शिक्षण-उद्देश्यों की प्राप्ति का मूल्यांकन करने के लिए मौखिक, लिखित एवं प्रायोगिक परीक्षा तथा पर्यवेक्षण आदि का प्रयोग कर हम मूल्यांकन प्रक्रिया को सोद्देश्य, सार्थक एवं प्रभावशाली बना सकते हैं।

हिंदी में मूल्यांकन हेतु प्रश्न-पत्र का निर्माण

(Setting of Question Paper for the Evaluation in Hindi)

हिंदी भाषा के शिक्षण के लिए जिन उद्देश्यों का निर्धारण किया जाता है, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के उपरांत उन उद्देश्यों की प्राप्ति किस स्तर तक हुई है, अध्यापक ने शिक्षण के लिए जिन शिक्षण-विधियों का प्रयोग किया वे ठीक थीं या नहीं, तथा जिस पाठ्यचर्या या पाठ्यपुस्तक को शिक्षण का माध्यम बनाया गया वह छात्रों के मानसिक स्तर के अनुरूप थी या नहीं, इस बात की जाँच मूल्यांकन-प्रक्रिया के द्वारा ही की जाती है और यह मूल्यांकन प्रश्न-पत्र के आधार पर किया जाता है। हिंदी की शिक्षा में चाहे किसी भी साहित्यिक विधा को पढ़ाया जाए, उसके मूल्यांकन के लिए प्रश्न-पत्र का निर्माण ही किया जाता है। मूल्यांकन की सफलता प्रश्न-पत्र पर निर्भर करती है। यदि प्रश्न-पत्र ठीक बन गया अर्थात प्रश्न-पत्र में पूछे गए प्रश्न सार्थक, विविधतापूर्ण एवं छात्रों के स्तर के अनुकूल हैं तब तो ठीक, नहीं तो सारी-की-सारी मूल्यांकन-प्रक्रिया प्रभावहीन हो जाती है। अत: मूल्यांकन की सफलता एवं प्रभावशीलता को ध्यान में रखते हुए प्रश्न-प्रत्र का निर्माण बहुत सावधानी एवं चिंतन-मनन के पश्चात करना चाहिए। प्रश्न-पत्र में प्रश्नों की विविधता होनी चाहिए, प्रश्न स्पष्ट होने चाहिए, छात्रों के लिए स्पष्ट निर्देश होने चाहिए तथा हर प्रश्न के अंक आदि का उल्लेख भी स्पष्ट रूप से होना चाहिए।

एक अध्यापक को प्रश्न-पत्र का निर्माण करते समय निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए :

1. हिंदी भाषा की शिक्षा छात्रों में अनेक योग्यताओं को विकसित करने के लिए दी जाती है। अध्यापक को सर्वप्रथम यह निर्धारित करना चाहिए कि वह छात्र की किस योग्यता का मापन करने के लिए प्रश्न-पत्र का निर्माण कर रहा है। विचार ग्रहण योग्यता, अभिव्यक्ति-योग्यता, सृजनात्मक योग्यता या किसी अन्य योग्यता की या इन सभी योग्यताओं के विकास का मापन करना है, इस बात का निश्चय कर लेना चाहिए।

2. छात्र की योग्यताओं के बारे में निश्चय कर लेने के उपरांत इस बात का निर्णय लेना चाहिए कि किस योग्यता को कितना महत्त्व देना है अर्थात भाषा-शिक्षण के किस उद्देश्य के मापन को कितना स्थान देना है। किसी भी विधा के शिक्षण के जितने भी उद्देश्य पूर्वनिर्धारित किए गए हैं, उनमें से किसी भी उद्देश्य की उपेक्षा नहीं होनी चाहिए। जैसे हिंदी-शिक्षण के प्रमुख उद्देश्य यदि ज्ञान, अर्थबोध, अभिव्यक्ति और सौंदर्यबोध हैं तो अध्यापक को यह सोचना चाहिए कि इन सभी उददेश्यों के लिए प्रश्न-पत्र में कितने-कितने प्रतिशत अंक देने हैं। उदाहरण के लिए एक अध्यापक ज्ञान को 30%, अर्थबोध को 20%, अभिव्यक्ति को 30% और सौंदर्यबोध को 20% अंक दे सकता है तो दूसरा अध्यापक ज्ञान को 35%, अर्थबोध एवं अभिव्यक्ति को 45% एवं रुचि तथा अभिव्यक्ति उद्देश्यों को 10-10% अंक दे सकता है।

3. उद्देश्यों का मान निर्धारित करने के पश्चात अध्यापक को विषयवस्तु पर ध्यान देना चाहिए। हिंदी की शिक्षा के लिए विभिन्न प्रकार की विषयवस्तु का चयन किया जाता है, जैसे—गद्य, पद्य, कहानी, नाटक, रचना, व्याकरण आदि। प्रश्न-पत्र बनाने से पूर्व अध्यापक को यह निर्णय करना चाहिए कि किस विधा को या विधा के किस भाग को कितने अंक देने हैं। जैसे—गद्य को 40 अंक, पद्य को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
20 अंक, व्याकरण को 25 अंक, रचना को 15 अंक आदि। इसके आधार पर ही विषयवस्तु के हर भाग पर प्रश्नों का निर्माण करना चाहिए।

4. प्रश्न-पत्र बनाने के लिए अब अध्यापक को पूरा पाठ्यक्रम देखकर अधिक-से-अधिक भाग पर प्रश्न बनाने चाहिए। इसके लिए पहले परीक्षा की समयावधि निश्चित कर लेनी चाहिए और फिर यह सोचना चाहिए कि उस समयावधि में यथा स्तर के छात्र कितना कुछ लिख सकते हैं, यह विचार करने के उपरांत प्रश्नों का चयन करना चाहिए।

5. प्रश्नों के प्रकार का निर्धारण करने के लिए यह देखना चाहिए कि हिंदी-शिक्षण के किस उद्देश्य की प्राप्ति की जाँच किस प्रकार के प्रश्नों द्वारा की जा सकती है। इसका निर्णय लेने के उपरांत ही यथा प्रश्नों के प्रकार एवं संख्या का निश्चय करना चाहिए। जैसे—लिखित अभिव्यक्ति, समीक्षा आदि उद्देश्यों के लिए निबंधात्मक एवं ज्ञान की जाँच के लिए लघु उत्तर तथा वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का चयन किया जा सकता है।

6. प्रश्नों के प्रकार का निर्धारण करने के उपरांत यह देखना चाहिए कि किस प्रकार के प्रश्न कितने अंकों के हों। जैसे—निबंधात्मक प्रश्न 50, लघु उत्तर 25 और वस्तुनिष्ठ प्रश्न 25 अंक के हो सकते हैं।

7. अब अध्यापक को यह निर्णय लेना चाहिए कि पाठ्यवस्तु के किस भाग में से निबंधात्मक प्रश्न पूछे जाएँ, किस अंश में से लघु उत्तर और किस भाग में से वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएँ।

8. अब अध्यापक को पाठ्यपुस्तक सामने रखकर प्रश्नों का निर्माण करना चाहिए। प्रश्न सरल, स्पष्ट तथा सुबोध भाषा में बनाने चाहिए।

9. प्रश्न इस प्रकार के हों कि प्रतिभाशाली, सामान्य एवं पिछड़ी सभी बुद्धि के बच्चों का उचित मूल्यांकन हो सके।

10. प्रश्न-पत्र में यदि छात्रों को कुछ प्रश्नों की छूट देनी हो तो वह इस प्रकार से दी जाए कि छात्रों को पूरा पाठ्यक्रम तैयार करना पड़े। एक प्रश्न के अंतर्गत ही यह करो या वह करो के आधार पर प्रश्न बनाए जाएँ। ऐसा न हो कि छात्र कुछ निश्चित अध्यायों को ही तैयार करें।

11. प्रत्येक प्रश्न और उसके विभिन्न भागों के लिए अलग-अलग अंक निर्धारित होने चाहिए और प्रश्न-पत्र में उनका उल्लेख भी होना चाहिए।

12. प्रश्न-पत्र में समय का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए।

13. प्रश्न-पत्र में उत्तर देने से संबंधित स्पष्ट निर्देश होने चाहिए।

14. प्रश्न-पत्र का निर्माण करने के उपरांत बार-बार उसका मूल्यांकन करना चाहिए और उसकी कमियों को दूर करना चाहिए।

15. परीक्षकों के लिए आवश्यक निर्देश भी प्रश्न-पत्र के साथ ही तैयार कर लेने चाहिए जिससे उत्तर-पुस्तिकाओं की जाँच करने में किसी भी छात्र के साथ अन्याय न हो सके।

16. प्रश्न-पत्र निर्माण के उपरांत उत्तर-तालिका का निर्माण भी करना चाहिए। लघु उत्तर एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर साफ-साफ लिखे होने चाहिए। निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तरों की सीमारेखा एवं वांछित उत्तरों की संक्षिप्त रूपरेखा का उल्लेख भी होना चाहिए जिससे अंकन-कार्य में वस्तुनिष्ठता बनी रहे।

इस प्रकार पूरी तरह से विचार करके प्रश्न-पत्र का निर्माण इस प्रकार से किया जाना चाहिए कि प्रश्न-पत्र में प्रामाणिकता, विश्वसनीयता, वस्तुनिष्ठता, विषय की संपूर्णता, व्यावहारिकता, वैधता, सरलता, स्पष्टता, सुबोधता, सुसंबद्धता आदि गुणों का पूरी तरह से समावेश हो सके।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

परीक्षा होने के उपरांत विषय के अध्यापकों, परीक्षकों एवं प्रश्न-पत्र-निर्माताओं को आपस में विचार-विमर्श करके प्रश्न-पत्र का विश्लेषण करना चाहिए और प्रश्न-पत्र में आवश्यक परिवर्तन एवं सुधार करने का प्रयास करना चाहिए।

हिंदी में मूल्यांकन हेतु प्रश्न-पत्र निर्माण का एक नमूना

(An exanple of setting Question paper in Hindi)

हिंदी में मूल्यांकन हेतु एक प्रश्न-पत्र का निर्माण कैसे किया जाता है इस बात को हम हरियाणा बोर्ड की आठवीं कक्षा के हिंदी के पाठ्यक्रम-पर आधारित एक प्रश्न-पत्र का उदाहरण देकर स्पष्ट करने जा रहे हैं। प्रश्न-पत्र के निर्माण से संबंधित आधारभूत बातों का हम यहाँ नीचे पहले उल्लेख करना चाहेंगे।

1. प्रश्न-पत्र पूरे पाठ्यक्रम को आधार बनाकर बनाना है।

2. प्रश्न-पत्र में तीन तरह के प्रश्नों—निबंधात्मक, लघु उत्तरात्मक तथा वस्तुनिष्ठ का समावेश करना है।

3. विषयवस्तु या अधिगम अनुभव जिनका मूल्यांकन किया जाना है वे है गद्य, पद्य, व्याकरण तथा रचना।

4. जिन उद्देश्यों का मूल्यांकन किया जाना है वे हैं ज्ञानात्मक, अभिवृत्यात्मक तथा कौशलात्मक।

5. प्रश्न-पत्र का समय 3 घंटे का रहेगा तथा पूर्णांक 100 होंगे।

इन सभी उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर प्रश्न-पत्र निर्माण संबंधी जो कार्ययोजना यानी ब्ल्यूप्रिंट तैयार किया जाएगा उसका प्रारूप निम्न प्रकार का हो सकता है।

प्रश्न-पत्र की रूपरेखा (Blue Print)

योग्यता	ज्ञान			कौशल			अभिवृत्ति			जोड़
विषयवस्तु	निबं०	ल०उ०	वस्तुनि०	निब०	ल०उ०	वस्तुनि०	निब०	ल०उ०	वस्तुनि०	
गद्य	-	3 (4)	1 (1)	1 (10)	-	-	-	-	-	23
कविता	-	1 (4)	1 (1)	1 (10)	-	-	-	1 (4)	-	19
व्याकरण	-	1 (4)	11 (1)	-	-	-	-	-	-	15
शब्दावली	-	-	15 (1)	-	-	-	-	-	-	15
रचना	-	-	-	2 (10)	-	-	-	-	-	20
अपठित गद्य एवं वर्तनी										
	-	-	8 (1)	-	-	-	-	-	-	08
जोड़	-	5 (20)	36 (36)	4 (40)	-	-	-	1 (4)	-	100

नोट- कोष्ठक के अंदर एक प्रश्न के अंक दिखाए गए हैं और कोष्ठक के बाहर प्रश्नों की संख्या दी गई है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant.

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रश्न-पत्र

समय :-3 घंटे

पूर्णांक 100

निबंधात्मक प्रश्न :

1. निम्नलिखित गद्यांश का सरलार्थ लिखो— 10 अंक

(अ) परिवार व्यक्ति की नींव होता है। व्यक्तित्व को कहीं से खरीदा नहीं जा सकता। समझदार माता-पिता अपने बच्चों पर आरंभ से ही ध्यान देते हैं। जो यहाँ पिछड़ जाते हैं उनके बच्चे उच्च शिक्षा पाकर भी व्यक्तित्व में पिछड़े रह जाते हैं।

अथवा

(ब) आत्मा का ज्ञान ही सच्चा ज्ञान है। ज्ञानी मनुष्य सब प्राणियों को अपने अंदर और अपने आपको सब प्राणियों के अंदर देखता है। सभी के अंदर उसकी आत्मा रहती है, इसलिए न तो वह किसी से राग रखता है, न द्वेष। ऐसा मनुष्य कभी भी अशांत और दुखी नहीं होता।

2. निम्नलिखित कविता का भावार्थ अपने शब्दों में लिखो— 10 अंक

(क) ''लोग योंही हैं झिझकते सोचते,
जब कि उनको छोड़ना पड़ता है घर।
किंतु घर का छोड़ना अक्सर उन्हें,
बूंद लौं कुछ और ही देता है कर।''

अथवा

(ख) ''उद्यम कबहुं न छोड़िए, पर आशा के मोद।
गागर कैसे फोरिये, उनयो देखि पयोद॥
विद्या धन उद्यम बिना, कहो जु पावै कौन।
बिना डुलाये न मिलै, ज्यों पंखा की पौन॥''

3. अपने मित्र को एक पत्र लिखो जिसमें उसके व्यक्तित्व को सुधारने के लिए सुझाव दिए गए हों। 10 अंक

अथवा

अपने मित्र को अनुशासन का महत्त्व बताते हुए पत्र लिखो।

4. एक निबंध लिखो— 10 अंक

स्वतंत्रता दिवस अथवा मेरा प्रिय खेल

लघु उत्तर प्रश्न

1. वेद-पुराणों में भारत की किस विशेषता का वर्णन किया गया है? 4
2. विपत्ति आने पर राजा हरिश्चंद्र को क्या करना पड़ा? 4
3. निवेदिता ने राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करने के लिए क्या किया? 4
4. हिमालय के वीर सपूत पाठ के लेखक ने सत्प्रकाश के जीवन के संबंध में जानने के लिए किससे भेंट की? 4
5. भारत की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति के बारे में नेहरू जी के क्या विचार थे? 4
6. संधि और समास में क्या अंतर है? 4

वस्तुनिष्ठ प्रश्न : – प्रत्येक उत्तर एक अंक का है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

1. रिक्त स्थान की पूर्ति करो— अंक

(क) वाक्य में जिसके विषय में कुछ कहा जाए, उसे..........कहते है। 1 (उद्देश्य)

(ख) शब्द के अंत में जुड़नेवाले शब्दांश को..........कहते हैं ? 1 (प्रत्यय)

2. पंक्ति से वह शब्द काट दो जो उस समूह का नहीं है—

जलाशय, सर, सरोवर, जलद, तड़ाग 1 (जलद)

3. (क) उपकार का विपरीतार्थक शब्द बताओ। 1 (अपंकार)

(ख) मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम के दो उदाहरण दो। 1 (तुम, तुम्हारा)

4. नीचे दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान में भरो—

अनुग्रह, अमूल्य, परंपराओं,

(क) प्रेम जैसी..........वस्तु का बदला चुकाया भी नहीं जा सकता। 1

(ख) हमें अपनी पुरानी..........का पालन करना चाहिए। 1

(ग) अपने साथियों के..........का मैं और भी अधिक श्रृणी हूँ। 1

5. निम्नलिखित शब्दों को वर्तनी की दृष्टि से कोष्ठक में शुद्ध या अशुद्ध लिखो—

(क) चिकीत्सा	( )	(घ) शृंखला	( )	
(ख) क्रुर	( )	(च) उत्तराधिकार	( )	
(ग) क्षात्र	( )	(छ) श्रृद्धांजलि	( )	6

6. निम्नलिखित शब्दों का संधि विच्छेद करो—

(क) निश्छल	....	(ग) नयन	....	
(ख) तल्लीन	....	(घ) यद्यपि	....	4

7. (क) नचिकेता के पिता का क्या नाम था ? .... 1 (वाजश्रवा)

(ख) एक बूंद कविता किसने लिखी ? .... 1 (हरिऔध)

8. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखो—

(क) निर्यात	....	(ग) सुषमा	....	
(ख) इच्छुक	....	(घ) प्रस्थान	....	4

9. निम्न मुहावरों का उनके ठीक अर्थों से मिलान करो—

(क) टेढ़ी खीर	....	(क) व्यर्थ की कल्पना करना	
(ख) हवाई किले बनाना	....	(ख) क्रोधित होना	
(ग) चिकना घड़ा	....	(ग) कठिन कार्य	4
(घ) आँखें दिखाना	....	(घ) वेशरम	

10. निम्न गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों का उत्तर दो—

भारत एक ग्राम प्रधान देश है। यहाँ की अधिकतर जनसंख्या गाँवों में ही निवास करती है। ग्रामवासियों का जीवन सरल और निष्कपट होता है। इनकी वेशभूषा भी साधारण होती है। इनका लक्ष्य होता है—सादा जीवन और उच्च्न विचार। ये बहुत परिश्रमी होते हैं। गाँवों की जलवायु स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभप्रद होती है।

प्रश्न—

1. भारत किस प्रकार का देश है ? 1

2. ग्रामवासियों का जीवन कैसा होता है ? 1

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3. सादा जीवन और उच्च विचार किसका लक्ष्य होता है ? 1

4. कहाँ की जलवायु स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद होती है ? 1

5. निष्कपट, परिश्रमी, लक्ष्य शब्दों का अर्थ बताओ। 3

6. इस अनुच्छेद का शीर्षक बताओ। 1=(8) अंक

अध्ययन के लिए प्रश्न

1. मूल्यांकन से आप क्या समझते हैं ? हिंदी में मूल्यांकन के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

2. मूल्यांकन क्या है ? परीक्षा से यह कैसे भिन्न है ? हिंदी शिक्षण में मूल्यांकन-प्रक्रिया का क्या महत्त्व है ? स्पष्ट करें।

3. मूल्यांकन के अर्थ, स्वरूप, एवं शिक्षण में उसके महत्त्व को स्पष्ट करते हुए हिंदी-शिक्षण में मूल्यांकन के स्वरूप एवं प्रक्रिया को स्पष्ट कीजिए।

4. हिंदी में मूल्यांकन के लिए प्रयुक्त विभिन्न विधियों एवं साधनों का संक्षेप में उल्लेख कीजिए।

5. हिंदी में मूल्यांकन प्रक्रिया का क्या महत्त्व है ? माध्यमिक स्तर पर हिंदी में मूल्यांकन किस प्रकार से किया जाना चाहिए ?

6. हिंदी की विभिन्न विधायें कौन-कौनसी हैं ? इनका मूल्यांकन किस प्रकार किया जाना चाहिए ?

7. हिंदी-शिक्षण के विभिन्न उद्देश्यों की प्राप्ति की जाँच के लिए आप मूल्यांकन की किन विधियों एवं साधनों का प्रयोग करेंगे ? वर्णन कीजिए।

8. भाषा के विभिन्न कौशलों का मूल्यांकन किस प्रकार किया जा सकता है ? स्पष्ट करें।

9. मूल्यांकन का अर्थ समझाते हुए हिंदी भाषा के विभिन्न पक्षों अथवा विधाओं के मूल्यांकन हेतु प्रयुक्त साधनों का उल्लेख कीजिए।

10. मूल्यांकन का आधुनिक स्वरूप क्या है ? हिंदी-शिक्षण में निम्नलिखित पक्षों की जाँच कैसे की जा सकती है :

(i) व्याकरण ज्ञान

(ii) मौखिक अभिव्यक्ति

(iii) लिखित अभिव्यक्ति

(iv) उच्चारण-कौशल

11. हिंदी भाषा में मूल्यांकन हेतु आप एक प्रश्न-पत्र का निर्माण कैसे करेंगे ?
एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिये।

12. हिंदी प्रश्न-पत्र निर्माण कार्य से संबंधित आवश्यक सोपानों एवं सावधानियों का संक्षेप में वर्णन कीजिये।

13. निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :—

(i) हिंदी-शिक्षण में मूल्यांकन का स्थान एवं महत्त्व

(ii) मातृभाषा शिक्षण में मूल्यांकन के साधन

(iii) भाषा की शिक्षा में वस्तुगत प्रश्नों की रचना

(iv) भाषा-शिक्षण में प्रश्न-पत्र का निर्माण

(v) हिंदी की विभिन्न विधाओं का मूल्यांकन

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

22

हिंदी-शिक्षण में गृह-कार्य
(Home-Work in Hindi Teaching)

गृह-कार्य क्या है ? (What is home-work?)

गृह-कार्य का शाब्दिक अर्थ है—"घर पर किया जानेवाला कार्य।" शिक्षण-प्रक्रिया में गृह-कार्य से अभिप्राय उस कार्य से है जो पाठ के शिक्षण के उपरांत, अध्यापक विद्यार्थियों को घर से करके लाने के लिए देता है अर्थात जो पाठ कक्षा में पढ़ाया जाता है उसी से संबंधित कुछ प्रश्न छात्रों को दिए जाते हैं ज़िनके उत्तर उन्हें घर से लिखकर लाने को या याद करके आने को कहा जाता है। गृह-कार्य दो प्रकार से होता है—घर पर जो काम लिखकर लाना होता है उसे लिखित गृह-कार्य और जो याद करके आना होता है उसे मौखिक गृह-कार्य कहा जाता है।

गृह-कार्य देना चाहिए या नहीं ? (Whether Home-work is to be assigned or not?)

कुछ अध्यापक गृह-कार्य को शिक्षण-प्रक्रिया का आवश्यक अंग मानते हैं और कुछ अध्यापक इसे शिक्षण-प्रक्रिया में बाधक मानते हैं। इस संबंध में उन्होंने अपने-अपने तर्क दिए हैं।

गृह-कार्य के पक्ष में दिए जानेवाले तर्क इस प्रकार हैं :

(i) गृह-कार्य कक्षा-शिक्षण का पूरक है। यदि कक्षा में कोई बात अधूरी रह जाती है तो छात्र गृह-कार्य द्वारा उसे घर पर पूरा कर लेते हैं। इसी प्रकार अगले दिन पढ़ाए जानेवाले पाठ को एक बार घर से पढ़कर आ सकते हैं। भाषा-शिक्षण में नए पाठ के कठिन शब्द छाँटकर ला सकते हैं।

(ii) गृह-कार्य से अध्यापक को अपनी शिक्षण-प्रक्रिया की सफलता का पता लगता है। यदि बच्चे गृह-कार्य ठीक करके लाते हैं तो इससे स्पष्ट है कि शिक्षण-विधि सफल है। इसी प्रकार छात्रों की बोधशक्ति, मानसिक योग्यता आदि की जाँच भी आसानी से हो जाती है।

(iii) गृह-कार्य करने से छात्र कक्षा में पढ़ाए गए पाठ को दुहरा लेते हैं। आवृत्ति से कक्षा में सीखा हुआ विषय पक्का हो जाता है।

(iv) छात्रों को स्वाध्याय करने का अवसर प्राप्त होता है। उन्हें स्वयं पढ़कर चिंतन करना पड़ता है और प्रश्नों का उत्तर लिखना पड़ता है।

(v) भाषा-शिक्षण में मौन वाचन की योग्यता का विकास भी एक उद्देश्य है। गृह-कार्य देने से छात्रों को मौन वाचन करने का अवसर प्राप्त होता है।

(vi) छात्रों की सक्रिय शब्दावली में वृद्धि होती है। उन्हें लिखित अभिव्यक्ति का अवसर मिलता है। वर्तनी का अभ्यास होता है। सुंदर-सुडौल लेख का अभ्यास होता है।

(vii) गृह-कार्य पूरा तथा ठीक होने पर छात्रों में आत्मविश्वास बढ़ता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(viii) अवकाश के समय का सदुपयोग होता है।

(ix) छात्र पढ़ाई में नियमित रहते हैं। प्रतिदिन गृह-कार्य मिलने पर नियमित रूप से विषय का अध्ययन करना पड़ता है, इससे प्रतिदिन पढ़ने की आदत पड़ जाती है।

(x) नियमित अध्ययन से परीक्षा के समय छात्रों को घबराना नहीं पड़ता है। वे पूरे आत्मविश्वास के साथ परीक्षा में बैठते हैं।

(xi) गृह-कार्य ठीक होने पर कक्षा में छात्र की प्रशंसा होती है, जिससे उसे और भी लगन व मेहनत से कार्य करने के लिए प्रोत्साहन मिलता है।

(xii) गृह-कार्य की जाँच करने से अध्यापक को छात्रों की व्यक्तित्व विभिन्नताओं को जानने का सुअवसर प्राप्त होता है। उसे छात्रों की व्यक्तिगत योग्यता व क्षमता का पता लगता है जिसके आधार पर वह छात्रों पर व्यक्तिगत ध्यान दे सकता है।

परंतु कुछ अध्यापक गृह-कार्य को बालक के 'कोमल मन पर दबाव' मानकर इसका विरोध करते हैं। उनका मत है कि—

1. शिक्षण-प्रक्रिया का उद्देश्य बालक के व्यक्तित्व का संतुलित विकास करना है। गृह-कार्य से इस संतुलित विकास में बाधा पहुँचती है। एक तो विद्यालय में बच्चे को कक्षा में कई-कई घंटे लगातार बैठे रहकर शिक्षा ग्रहण करनी पड़ती है फिर गृह-कार्य के कारण घर में भी आते ही पढ़ाई के लिए बैठ जाना पड़ता है जिससे शारीरिक रूप से क्रियाशील होने का अवसर नहीं मिल पाता है। परिणामस्वरूप बच्चा शारीरिक रूप से सुदृढ़ नहीं हो पाता है। गृह-कार्य के कारण पढ़ाई के लिए कई-कई घंटे लगातार बैठे रहने से स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और जब शरीर अस्वस्थ होगा तो स्वस्थ मन कहाँ से होगा?

2. दूसरी तरफ गृह-कार्य बच्चे के व्यावहारिक जीवन के विकास में भी बाधक होता है। पढ़ाई के कारण घर पर बच्चे माता-पिता के काम में तनिक भी हाथ नहीं बँटा पाते हैं। घर में किसी अतिथि या रिश्तेदार के आने पर भी बच्चा अलग कमरे में अपनी पढ़ाई में लगा रहता है, परिणामस्वरूप वह न तो उन्हें जान पाता है और न ही उनके साथ बातचीत कैसे करनी चाहिए, या मेहमान का स्वागत-सत्कार कैसे करना चाहिए, इस बात का प्रशिक्षण प्राप्त कर पाता है। इस प्रकार गृह-कार्य बच्चे के सामाजिक विकास में भी बाधक होता है।

3. गृह-कार्य से बच्चे के मस्तिष्क पर जरूरत से ज्यादा बोझ पढ़ता है जिससे कई बच्चों का तो पढ़ाई से मन ही हट जाता है।

4. गृह-कार्य न कर पाने की स्थिति में कक्षा में सज़ा मिलती है और इस सज़ा से बचने के लिए बच्चे बहाने बनाना व झूठ बोलना सीख जाते हैं, जो कि बच्चे के चारित्रिक विकास में बाधक है।

5. बहुधा गृह-कार्य न करने पर सज़ा से बचने के लिए बच्चे विद्यालय से भागने लगते हैं जिससे बच्चे में अपराधी प्रवृत्ति पनपने लगती है।

6. बहुत-से विद्यार्थी अध्यापक की डाँट से बचने के लिए नकल करके गृह-कार्य कर लेते हैं। कई छात्र बेगार समझकर बिना सोचे-समझे गलत-सलत कार्य कर देते हैं। इससे बच्चा लापरवाह प्रवृत्ति का बन जाता है।

उपर्युक्त तर्क गृह-कार्य को अमनोवैज्ञानिक, असामाजिक, अव्यावहारिक, चरित्र-विरोधी एवं शिक्षा-अवरोधक सिद्ध करते हैं; परंतु यदि न्यायपूर्ण ढंग से जाँच की जाए तो ये सभी तर्क निराधार साबित होंगे। ये दोष गृह-कार्य के नहीं वरन गृह-कार्य देने के ढंग के हैं। शिक्षण-प्रक्रिया में इतना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
महत्त्वपूर्ण स्थान रखनेवाला गृह-कार्य यदि उचित मात्रा और उचित ढंग से नहीं दिया जाएगा तो वह नीरस, बोझिल और अवरोधक बनेगा ही।

गृह-कार्य देने के समय ध्यान रखने योग्य बातें (गृह-कार्य का स्वरूप)
(How to assign Home-Work?)

गृह-कार्य देते समय हमें कुछ बातों को विशेष रूप से ध्यान में रखना चाहिए, जो कि निम्न हैं :

1. गृह-कार्य उचित मात्रा में देना चाहिए—विद्यालय में छात्र को कई विषय पढ़ाए जाते हैं और हर विषय का अध्यापक छात्रों को गृह-कार्य देता है। यदि सभी अध्यापक अधिक-से-अधिक गृह-कार्य देंगे तो वह छात्र के लिए बोझिल हो जाएगा। अत: सभी अध्यापकों को छात्र की मानसिक क्षमता का ध्यान रखते हुए उतनी ही मात्रा में गृह-कार्य देना चाहिए जितना छात्र आसानी से कर सके।

2. गृह-कार्य छात्र की मानसिक क्षमता के आधार पर देना चाहिए—गृह-कार्य देते समय अध्यापक को इस बात पर विचार कर लेना चाहिए कि जिस कक्षा के छात्रों को गृह-कार्य दिया जा रहा है उनकी मानसिक क्षमता क्या है ? वे किस स्तर का कार्य आसानी से कर सकते हैं ?

3. गृह-कार्य कक्षा-कार्य पर आधारित होना चाहिए—अध्यापक को उसी विषय पर गृह-कार्य देना चाहिए जो कक्षा में पढ़ा दिया गया हो। कक्षा में स्पष्टीकरण होने के पश्चात छात्रों को घर पर प्रश्नों का उत्तर लिखने में सुविधा होती है।

4. गृह-कार्य रोचक होना चाहिए—गृह-कार्य के रूप में इस प्रकार के प्रश्न देने चाहिए जो छात्रों के लिए रुचिकर हों। छात्र उन्हें बेगार समझकर न करें।

5. गृह-कार्य में विविधता होनी चाहिए—विविधता रोचकता को जन्म देती है। अत: गृह-कार्य के रूप में दिए जानेवाले कार्य में विविधता होनी चाहिए। प्रतिदिन अलग-अलग तरह का कार्य देंना चाहिए। कभी मौखिक कभी लिखित। कभी लंबे उत्तर वाला तो कभी लघु उत्तर का।

6. गृह-कार्य में स्पष्टता होनी चाहिए—जो भी गृह-कार्य दिया जा रहा है, एक तो उसका स्वरूप स्पष्ट होना चाहिए, उसकी भाषा सरल, सुबोध तथा स्पष्ट हो। छात्र को यह समझ में आ जाए कि क्या लिखना है। दूसरे, जो भी प्रश्न दिया जा रहा है उसे एक बार कक्षा में स्पष्ट भी कर देना चाहिए।

7. गृह-कार्य में सृजनात्मकता होनी चाहिए—गृह-कार्य ऐसा हो जिसमें छात्रों को कुछ नवीन कार्य करने का अवसर मिले। केवल पाठ की नकल करके लाना या कंठस्थ करके आना ही ठीक नहीं बल्कि प्रश्न ऐसा हो जिसमें छात्र को स्वयं सोचकर मौलिक विचार प्रकट करने का अवसर मिले और जिससे छात्र में भाषायी कौशलों का विकास हो सके।

8. गृह-कार्य का संशोधन सावधानीपूर्वक होना चाहिए—गृह-कार्य से अध्यापक को छात्र की बोधशक्ति, अभिव्यक्ति की योग्यता एवं विषय-ज्ञान की जाँच करने में सहायता मिलती है। अत: गृह-कार्य की जाँच का कार्य सावधानीपूर्वक करना चाहिए। छात्रों को उनकी कमियों से परिचित कराना चाहिए जिससे वे अपनी कमियों को दूर कर अपने ज्ञान में वृद्धि कर सकें।

9. अध्यापक का व्यवहार सहानुभूतिपूर्ण होना चाहिए—गृह-कार्य में त्रुटि होने पर छात्र को डाँटना या फटकारना या शारीरिक दंड देना अमनोवैज्ञानिक है। ऐसे छात्र के साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार प्रदर्शित कर उसे ठीक कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

यदि कोई छात्र किसी दुर्घटनावश या परेशानी के कारण गृह-कार्य निश्चित समय पर न ला सके तो उससे कारण पूछकर सहानुभूति दिखाते हुए गृह-कार्य करने को प्रोत्साहित करना चाहिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE 2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिंदी-शिक्षण में गृह-कार्य का संशोधन
(Correction work of the Home-task in Teaching of Hindi)

गृह-कार्य के संशोधन का अर्थ
(Meaning of the term Correction of the Home-work)

हिंदी-शिक्षण में कक्षा में छात्रों को जो भी कुछ पढ़ाया जाता है उसे स्थायी बनाने एवं पक्का करने के लिए उस कार्य का अभ्यास छात्रों के द्वारा अपने आप किया जाना आवश्यक होता है। इसके लिए छात्रों को पढ़ाए गए विषय में से कुछ प्रश्न गृह-कार्य के रूप में दिए जाते हैं। परंतु इस गृह-कार्य की सार्थकता तभी है जब उसका संशोधन-कार्य सावधानी के साथ किया जाए।

छात्रों के द्वारा गृह-कार्य के रूप में किए कार्य की अध्यापक द्वारा की गई जाँच व उसकी त्रुटियों का शुद्धीकरण ही गृह-कार्य का संशोधन कहलाता है। गृह-कार्य का संशोधन करना अत्यंत आवश्यक है। इससे छात्रों को अपनी त्रुटियाँ एवं कमियाँ मालूम पड़ जाती हैं और वे उनको दूर करने का प्रयास करते हैं। वैसे भी संशोधन होते रहने से छात्रों को गृह-कार्य सावधानी से करने की प्रेरणा मिलती है, क्योंकि उन्हें यह पता रहता है कि यदि वे गृह-कार्य असावधानी से करेंगे तो उनके कार्य में गलतियाँ हो जाएँगी और जब अध्यापक उसकी जाँच करेंगे तो कापी लाल स्याही से रंग जाएगी। संशोधन-कार्य छात्रों को गृह-कार्य सावधानी के साथ ठीक-ठीक करने के लिए प्रेरित करता है। अत: अध्यापक छात्रों को चाहे गृह-कार्य कम दे, परंतु उसका संशोधन सावधानी के साथ करे। जब अध्यापक छात्रों के गृह-कार्य की जाँच करता है तो उसे विभिन्न प्रकार की त्रुटियाँ देखने को मिलती हैं। संशोधन कार्य द्वारा ही वह उन त्रुटियों की ओर छात्रों का ध्यान आकर्षित करता है और छात्र उन्हें दूर करते हैं।

संशोधन प्रक्रिया, तकनीक एवं विधि (Correction Process, Techniques and Method)—गृह-कार्य में संशोधन के महत्त्व को देखते हुए अध्यापक को गृह-कार्य का संशोधन नियमित रूप से सावधानी के साथ करना चाहिए। अध्यापक को गृह-कार्य का संशोधन करने के लिए निम्न प्रक्रिया-तकनीक एवं विधि का प्रयोग करना चाहिए :

1. बच्चों को जब भी गृह-कार्य दिया जाए तो उसका संशोधन नियमित रूप से सावधानीपूर्वक करना चाहिए। यदि बच्चों को अपनी त्रुटियाँ मालूम नहीं पड़ पाती हैं तो वे बार-बार उन अशुद्धियों को दोहराते रहते हैं और उनकी अभिव्यक्ति प्रभावहीन हो जाती है।

2. गृह-कार्य का संशोधन करने के लिए अध्यापक को समय देना चाहिए, और हर बच्चे की कापी की उचित जाँच करनी चाहिए।

3. गृह-कार्य की जाँच लाल या हरी स्याही से करनी चाहिए, जिससे छात्रों को अध्यापक द्वारा लगाए गए निशान साफ-साफ दिखाई दे जाएँ।

4. संशोधन-कार्य करने में समय बहुत लगने के कारण कई बार अध्यापक इसके प्रति लापरवाही दिखाते हैं। परंतु संशोधन का सारा भार अपने ऊपर न लेकर संशोधन करने के लिए छात्रों की सहायता लेनी चाहिए। इसके लिए अध्यापक संशोधन की निम्न विधियों का प्रयोग कर सकता है :

(क) वैयक्तिक संशोधन विधि (Individual Correction Method)—इस विधि में अध्यापक सभी छात्रों की गृह-कार्य की कापियाँ एकत्रित कर लेता है और उन्हें घर ले जाकर या खाली पीरियड में एक-एक कर देखता है तथा उनकी अशुद्धियों पर निशान लगाता है और आवश्यक निर्देश भी लिखता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ख) कक्षा में संपर्क विधि (Method of Contacting in the Class room)--इस विधि में अध्यापक कक्षा में एक-एक छात्र को गृह-कार्य की कापी के साथ अपने पास बुलाता है और उसके गृह-कार्य का संशोधन कर उसकी प्रत्येक अशुद्धि को समझाता है। वैसे तो यह विधि अत्यंत उत्तम है क्योंकि अध्यापक प्रत्येक छात्र के साथ व्यक्तिगत संपर्क स्थापित करता है और छात्रों की अशुद्धियों की प्रकृति, उसके कारण व दूर करने का ढंग भी बताता है, परंतु यह विधि बहुत श्रमसाध्य है, इसमें समय भी बहुत लगता है। हाँ, यदि कक्षा में छात्रों की संख्या केवल 10-12 हो तब तो इस विधि का प्रयोग हो सकता है अन्यथा नहीं।

(ग) सामूहिक संशोधन विधि (General Correction Method)—इस विधि में अध्यापक दिए गए गृह-कार्य से संबंधित संभावित अशुद्धियों को संपूर्ण कक्षा के सामने समझाता है और उसके आधार पर छात्र अपने-अपने गृह-कार्य की अशुद्धियों को दूर करते हैं। यह विधि समय व श्रम की दृष्टि से तो अच्छी है परंतु इसमें व्यक्तिगत समस्याएँ दूर नहीं हो पाती हैं।

(घ) मिश्रित विधि (Integrated Method)—इस विधि में अध्यापक क्रमपूर्वक 3-4 छात्रों को एक-एक कर अपना-अपना गृह-कार्य कक्षा में खड़े होकर पढ़ने के लिए कहता है और स्वयं भी उसे देखकर उसकी अशुद्धियों को संपूर्ण कक्षा के सम्मुख स्पष्ट करता है। दो-तीन छात्रों के गृह-कार्य को इस प्रकार से संशोधित किए जाने पर सभी छात्रों की प्रायः त्रुटियाँ दूर हो जाती हैं। इस विधि में भी समय व शक्ति की बचत होती है, परंतु लापरवाह प्रकृति के छात्र इस विधि से अपनी त्रुटियाँ दूर नहीं कर पाते हैं।

(ङ) पारस्परिक संशोधन विधि (Mutual Correction Method)--इस विधि में छात्रों की गृह-कार्य की नोट-बुक आपस में बदलवा दी जाती हैं और वे आपस में एक-दूसरे के गृह-कार्य का संशोधन करते हैं। परंतु यह विधि ठीक नहीं, क्योंकि एक तो सभी छात्र त्रुटियों को निकालने में समर्थ नहीं होते हैं, दूसरे वे आपस में एक-दूसरे की कापियों को ज्यादा ही रँग देते हैं, जिससे छात्रों में आपस में लड़ाई-झगड़ा होने की संभावना पैदा हो जाती है।

अध्यापक उपर्युक्त विधियों के अलावा अपने प्रयास एवं अनुभवों के आधार पर किसी कम श्रमसाध्य विधि का निर्माण कर अपनी संशोधन-प्रक्रिया को सरल व सार्थक बना सकता है।

5. उपर्युक्त विधियों से संशोधन-कार्य करते हुए अध्यापक को छात्रों के गृह-कार्य में होनेवाली त्रुटियों को ढूँढ़ना चाहिए। छात्र गृह-कार्य में प्रायः निम्न प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं :

(i) सुलेख का अभाव
(ii) अक्षरों की बेडौल बनावट अर्थात लिपि की अशुद्धता
(iii) अक्षर-विन्यास की त्रुटियाँ
(iv) व्याकरण की अशुद्धियाँ
(v) विराम-चिह्नों की अशुद्धियाँ
(vi) शब्दावली का अशुद्ध प्रयोग
(vii) शब्दों की व्यर्थ पुनरावृत्ति
(viii) अशुद्ध वाक्य-विन्यास
(ix) विचारों में क्रमबद्धता का अभाव
(x) विचारों की अपूर्णता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(xi) विचारों में स्पष्टता का अभाव

(xii) विचारों का उचित अनुच्छेदों में न बँटा होना

6. इन सभी अशुद्धियों को ढूँढ़ने के पश्चात हर अशुद्धि के लिए कुछ विशेष चिह्नों का प्रयोग करना चाहिए और छात्रों को भी उन चिह्नों से परिचित करा देना चाहिए जिससे वे चिह्न देखकर अपनी गलती समझ जाएँ। ये चिह्न निम्न प्रकार से हो सकते हैं :

लि—लिपि की अशुद्धि

अ—अक्षर-विन्यास की अशुद्धि

व्या—व्याकरण संबंधी अशुद्धि

का—कारक संबंधी अशुद्धि

।—शब्दों की व्यर्थ पुनरावृत्ति

?—अस्पष्ट है

×—शब्द अनावश्यक या अशुद्ध है

^—कुछ छूट गया है

अनु—अनुच्छेद ठीक नहीं हैं। आदि

7. अशुद्धियों के चिह्न लगाकर छात्रों के साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करते हुए उन्हें ठीक कराने का प्रयास करना चाहिए।

8. छात्रों के मानसिक स्तर को ध्यान में रखते हुए अशुद्धियों को दूर कराना चाहिए। जैसे कुछ अशुद्धियों को तो प्राथमिक स्तर पर ही ठीक कराना चाहिए, परंतु कुछ को माध्यमिक स्तर के लिए छोड़ देना चाहिए।

9. अशुद्धियाँ शुद्ध कराने से पहले धैर्य के साथ उनके कारणों का भी पता लगाना चाहिए और उसके अनुसार ही अशुद्धि को ठीक कराने का प्रयास करना चाहिए। अशुद्धियों के निम्न कारण हो सकते हैं :

(i) छात्रों को गृह-कार्य कम दिया जाना

(ii) गृह-कार्य के संशोधन का अभाव

(iii) लिखित कार्य का अभाव

(iv) लिखते समय असावधानी

(v) लिखते समय अतिशीघ्रता

(vi) छात्रों को घर पर समय का अभाव

(vii) अनुचित लेख

(viii) व्याकरण-ज्ञान का अभाव

(ix) गृह-कार्य छात्रों के मानसिक स्तर के अनुरूप न होना

(x) गृह-कार्य के रूप में दिए गए प्रश्नों की अस्पष्टता

(xi) गृह-कार्य देने से पहले कक्षा में शिक्षण एवं मौखिक कार्य का अभाव

(xii) गृह-कार्य में विविधता का अभाव

(xiii) छात्रों को प्रोत्साहन का अभाव

(xiv) गृह-कार्य की अनुचित मात्रा, आदि

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

10. गृह-कार्य का संशोधन करते समय अशुद्धियों के कारणों का पता लगाने के उपरांत उन कारणों को दूर करने का प्रयास करना चाहिए और छात्रों की गृह-कार्य संबंधी त्रुटियों को दूर करना चाहिए।

11. गृह-कार्य का संशोधन करते समय छात्रों के प्रति व्यंग्यात्मक शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

12. गृह-कार्य में होनेवाली त्रुटियों को श्यामपट्ट पर लिखकर उनका विश्लेषण करना चाहिए और उनका शुद्ध रूप समझाना चाहिए।

13. संशोधन करने में छात्रों का सक्रिय सहयोग लेना चाहिए।

14. त्रुटियों को दूर करने के लिए आवृत्ति-पुनरावृत्ति के नियम का पालन करना चाहिए।

15. अच्छा गृह-कार्य करनेवाले छात्रों की कक्षा में प्रशंसा करनी चाहिए जिससे अन्य छात्रों को भी त्रुटिरहित गृह-कार्य करने के प्रेरणा मिले।

16. लिखित गृह-कार्य के साथ-साथ कंठस्थ करने के लिए भी कार्य देना चाहिए और कक्षा में छात्रों से सुनना चाहिए।

17. छात्रों के प्रति अध्यापक का व्यवहार प्रोत्साहनजनक होना चाहिए।

18. विद्यालयों के समय-विभाग-चक्र में कुछ समय अलग से केवल गृह-कार्य के संशोधन के लिए होना चाहिए। इससे अध्यापकों पर भी अधिक बोझा नहीं पड़ेगा।

इस प्रकार से किया गया संशोधन-कार्य गृह-कार्य को उपयोगी, सार्थक एवं उद्देश्यपूर्ण बनाता है।

अध्ययन के लिए प्रश्न

1. गृह-कार्य से क्या अभिप्राय है ? हिंदी-शिक्षण में गृह-कार्य देने के पक्ष एवं विपक्ष में अपने तर्क प्रस्तुत करते हुए बताइए कि गृह कार्य को सही रूप प्रदान करने के लिए किन बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए ?

2. हिंदी-शिक्षण में गृह-कार्य के स्वरूप, नियोजन एवं संशोधन-प्रक्रिया पर प्रकाश डालिए।

3. हिंदी-शिक्षण में गृह-कार्य का क्या महत्त्व है ? इसका क्या स्वरूप होना चाहिए ? गृह-कार्य संबंधी संशोधन प्रक्रिया, तकनीक एवं विधियों का वर्णन कीजिए।

4. गृह-कार्य से क्या अभिप्राय है ? हिंदी-शिक्षण में गृह-कार्य का महत्त्व बताते हुए संशोधन-प्रक्रिया, तकनीक एवं विधियों का वर्णन कीजिए।

5. निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :

(i) हिंदी-शिक्षण में गृह-कार्य का महत्त्व

(ii) हिंदी-शिक्षण में गृह-कार्य का स्वरूप

(iii) हिंदी-शिक्षण में गृह-कार्य का संशोधन

(iv) हिंन्दी-शिक्षण में गृह-कार्य

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

23

हिंदी-शिक्षण में अनुदेशनात्मक सामग्री

(Instructional Material in Hindi Teaching)

प्रत्येक अध्यापक यह चाहता है कि उसके द्वारा प्रदत्त कक्षा अनुदेशन अधिक-से-अधिक प्रभावशाली हो। वह जो कुछ अपने विषय के अंतर्गत पढ़ाता है उसे ध्यान से सुना जाए, स्पष्ट रूप से समझा तथा ग्रहण किया जाए ताकि उसकी छाप विद्यार्थियों के मस्तिष्क में स्थायी रूप से अंकित हो जाए। दूसरे शब्दों में अच्छे अनुदेशन का लक्ष्य होता है प्रभावशाली संप्रेषण प्रक्रिया (communication process) तथा अनुदेशन के उपयुक्त परिणाम (desirable outcomes)। इन दोनों उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए एक अध्यापक को अपने अनुदेशन में उपयुक्त अनुदेशन सामग्री तथा साधनों का प्रयोग करना पड़ता है। यह बात हिंदी-शिक्षण के लिए भी उतनी ही सही है जितनी कि विद्यालय पाठ्यक्रम के अन्य विषयों के लिए। प्रश्न उठता है कि माध्यमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण में इस प्रकार की अनुदेशनात्मक सामग्री तथा साधन क्या हो सकते हैं जिनकी मदद से हिंदी शिक्षण में कक्षा अनुदेशन कार्य को सही दिशा तथा दशा प्रदान की जा सके। यह जानने से पहले, आइए, पहले अनुदेशनात्मक सामग्री एवं साधनों के अर्थ से परिचित हुआ जाए।

अनुदेशनात्मक सामग्री एवं साधनों का अर्थ एवं परिभाषा

(Meaning and definition of the term instructional material or aids)

ऐसी सभी सामग्री, उपकरण तथा स्रोत जो एक कक्षा अध्यापक को उत्तम संप्रेषण प्रक्रिया, स्वस्थ कक्षा-कक्ष अंत:क्रिया तथा अनुदेशनात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति में आवश्यक सहयोग प्रदान करते हैं उन्हें शिक्षण अधिगम के क्षेत्र में अनुदेशनात्मक सामग्री या साधन कहकर पुकारा जाता है।

इस दृष्टि से माध्यमिक स्तर पर हिंदी भाषा के कक्षा अनुदेशन कार्य में जब कोई अध्यापक हिंदी भाषा के शिक्षण संबंधी विभिन्न पाठों जैसे गद्य शिक्षण, पद्य शिक्षण, रचना शिक्षण, व्याकरण शिक्षण का अनुदेशन देते समय जिन साधनों, उपकरणों या सामग्री की सहायता लेता है उन सभी साधनों, सामग्री तथा उपकरणों को अनुदेशनात्मक सामग्री या साधन कहा जाता है।

कक्षा-कक्ष में जो भी अनुदेशनात्मक कार्य संपन्न होता है उसमें मूल बात तो अध्यापक और विद्यार्थियों के बीच होनेवाले संप्रेषण (communication) तथा अंत:क्रिया (interaction) की प्रभावशीलता की ही है। इस संप्रेषण और अत:क्रिया की प्रभावशीलता को बनाए रखने में जो भी उचित भूमिका निभाई जा सकती है उसमें शिक्षक ओर शिक्षार्थी दोनों की ही दृश्येंद्रियाँ तथा कर्णेंद्रियाँ का बहुत अधिक योगदान रहता है। अनुदेशनात्मक सामग्री तथा साधन चाहे किसी भी प्रकार के हों उनसे उचित लाभ प्राप्त करने के लिए कक्षा में बैठे हुए विद्यार्थी या तो अपने दृश्येंद्रियों अथवा नेत्रों का उपयोग करते

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हैं या कर्णेंद्रियों अथवा कानों की अथवा नेत्रों और कानों का सम्मिलित रूप में प्रयोग करते हैं। अत: इस दृष्टि से कक्षा-कक्षा में अनुदेशनात्मक कार्य के लिए प्रयुक्त सामग्री या साधनों का संबोधन प्रदान करके निम्न शब्दों में परिभाषित करने का प्रयत्न किया जाता है।

ऐसी सभी अनुदेशनात्मक सामग्री या साधन जो विद्यार्थियों की देखने और सुनने संबंधी शक्तियों को प्रभावित करते हुए एक शिक्षक के अनुदेशनात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति में उसकी सहायता करते हैं दृश्य श्रव्य सहायक सामग्री या साधन कहलाती है।

हिंदी शिक्षण में अनुदेशनात्मक सामग्री या साधनों के प्रकार

(Types of instructional material or aids in Teaching of Hindi)

सामान्यतया हिंदी शिक्षण में प्रयुक्त अनुदेशनात्मक सामग्री एवं साधनों को मोटे तौर पर निम्न दो वर्गों में बाँटा जा सकता है :

1. पाठ्य सामग्री
2. दृश्य-श्रव्य सहायक साम्ग्री या साधन

1. पाठ्य सामग्री (Text material or subject matter)

पहले वर्ग की सामग्री को केंद्रीय अथवा मूलभूत सामग्री भी कहा जाता है। इसमें वह सामग्री आती है जिसे अध्यापक और विद्यार्थी दोनों ही नियमित रूप से प्रयोग करते हैं। इस वर्ग में निम्न प्रकार की अनुदेशनात्मक सामग्री को शामिल किया जा सकता है :

(क) पाठ्यपुस्तक (Text books)
(ख) पूरक पुस्तक (supplementary books)
(ग) अभ्यास पुस्तिका (work-books)
(घ) शिक्षक निर्देशिका या शिक्षण संदर्शिका (Teacher's Guide or Hand books)
(ङ) संदर्भ ग्रंथ (Reference books)
(च) शब्दकोश (Dictionaries)
(छ) समाचार पत्र एवं पत्रिकाएँ (News papers and Magazines)

पाठ्यपुस्तक—हिंदी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में अनुदेशनात्मक सामग्री के रूप में पाठ्यपुस्तक का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। हिंदी शिक्षण में भाषा एवं साहित्य दोनों के शिक्षण में पाठ्यपुस्तक केंद्रीय सामग्री की भूमिका का निर्वाह करती है। वैसे तो सभी विषयों के शिक्षण में पाठ्यपुस्तक का विशिष्ट स्थान होता है परंतु हिंदी शिक्षण में तो पाठ्यपुस्तक वैचारिक तथा भाषिक दोनों पक्षों के ज्ञानवर्धन के लिए आधार-शिला का कार्य करती है। हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं तथा रूपों का ज्ञान देने के लिए पाठ्यपुस्तक मुख्य अनुदेशानात्मक सामग्री का कार्य करती है। श्रवण कौशल, पठन कौशल, मौखिक अभिव्यक्ति कौशल, लेखन कौशल आदि हिंदी शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति पाठ्यपुस्तक की सहायता एवं प्रयोग के द्वारा ही की जा सकती है। मातृभाषा विषय क्षेत्र अत्यंत व्यापक एवं बहुमुखी होने के कारण उसकी पाठ्यपुस्तक की सामग्री व्यापक एवं विविधतापूर्ण होती है। यह एक ओर तो अध्यापक का पाठ्यक्रम की सीमा के संबंध में मार्गदर्शन करती है तो दूसरी ओर शिक्षण अधिगम लक्ष्यों की प्राप्ति के संदर्भ में विद्यार्थियों को अभ्यास तथा व्यवहार परिवर्तन करने के लिए अवसर प्रदान करती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant.

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(पाठ्यपुस्तकों के महत्त्व एवं आंतरिक तथा बाह्य गुणों के बारे में अध्याय अठारह में विस्तार से चर्चा की जा चुकी है।)

पूरक पुस्तक—हिंदी शिक्षण के अंतर्गत बालकों को दो प्रकार से अध्ययन कराया जाता है—सूक्ष्म अध्ययन तथा स्थूल अध्ययन। सूक्ष्म अध्ययन कराने के लिए पाठ्यपुस्तकों की सहायता ली जाती है तो स्थूल अध्ययन के लिए पूरक पुस्तकों की सहायता ली जाती है। पाठ्यपुस्तक के द्वारा बच्चों में जिन भाषागत योग्यताओं तथा कौशलों का विकास करने के लिए शिक्षण कार्य किया जाता है उन्हीं योग्यताओं और कौशलों का अभ्यास कराने तथा उन पर पूर्ण अधिकार कराने के लिए पाठ्यपुस्तक से अतिरिक्त कुछ ऐसी पुस्तकों की व्यवस्था की जाती है जिनमें रुचिकर कहानियाँ, प्रसंग, एकांकी, पौराणिक कथा-प्रसंग, यात्रा वर्णन आदि संकलित होते हैं। ऐसी पुस्तकों को ही पूरक पुस्तक कहा जाता है। इन पुस्तकों की सहायता से भाषागत योग्याताओं के विकास के साथ-साथ निम्न उद्देश्यों की प्राप्ति में भी सहायता मिलती है—

(i) स्वाध्याय की योग्यता विकसित करने में।

(ii) पठन रुचि विकसित करने में।

(iii) द्रुतगति से मौनपाठ करने की योग्यता विकसित करने में।

(iv) परिचित शब्दावली को सक्रिय शब्दावली में परिवर्तित करने में।

(v) मनोरंजन करने में।

(vi) मानवजीवन से संबंधित विविध पक्षों की जानकारी कराने में।

(vii) सृजनात्मक योग्यताओं को विकसित करने में तथा

(viii) सद्वृत्तियों को विकसित करने में।

पाठ्यपुस्तकों की तरह ही पूरक पुस्तकों में भी बाह्य व आंतरिक गुणों का होना आवश्यक है। उनके अतिरिक्त पूरक पुस्तकों में निम्न विशेषताएँ भी अपेक्षित होती हैं—

(i) पूरक पुस्तक का कलेवर पाठ्यपुस्तक से छोटा होता है। इसमें पृष्ठों की संख्या पाठ्यपुस्तक की पृष्ठसंख्या से कम होती है।

(ii) इसकी भाषा पाठ्यपुस्तक की भाषा से सरल होती है।

(iii) पूरक पुस्तकों में नवीन शब्दावली नहीं होनी चाहिए। यदि हो भी तो अत्यंत सीमित मात्रा में होनी चाहिए और नवीन शब्दावली उसी पृष्ठ के नीचे टिप्पणी के रूप में स्पष्ट कर देनी चाहिए। वैसे तो परिचित शब्दावली को सक्रिय शब्दावली में परिवर्तित करना पूरक पुस्तक का उद्देश्य होता है अतः पाठ्यपुस्तक में सीखे गए शब्दों की पुनरावृत्ति ही इसमें होनी चाहिए।

(iv) पूरक पुस्तक में वाक्य छोटे, सरल और स्पष्ट होने चाहिए जिससे तीव्र गति से पढ़ते हुए ही बच्चे उनका अर्थ व भाव समझ सकें।

(v) विषय-सामग्री रुचिकर, मनोरंजक, ज्ञानवर्धक तथा सद्वृत्यात्मक होनी चाहिए।

अभ्यास पुस्तिका—बच्चों को हिंदी कक्षा में पाठ्यपुस्तक की सहायता से सिखाए गए शब्द-भंडार, वाक्य-भंडार, वाक्य-रचना, वर्तनी, उच्चारण, व्याकरण संबंधी कार्य, लघु नियंत्रित रचना, पत्र आदि का अभ्यास कराने के लिए अभ्यास पुस्तिका की आवश्यकता होती है। विशेष रूप से प्राथमिक कक्षाओं और निम्न माध्यमिक कक्षा के बच्चों में भाषायी योग्यताओं का विकास करने के लिए अभ्यास पुस्तिका का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
इसका प्रयोग अनुदेशनात्मक सामग्री के रूप में तो किया ही जाता है साथ ही बच्चों के भाषायी ज्ञान एवं कौशल के परीक्षण के सहायक साधन के रूप में भी किया जा सकता है।

शिक्षक निर्देशिका या शिक्षक संदर्शिका—जैसा कि इसके नाम से ही विदित होता है, यह शिक्षक के अनुदेशनात्मक कार्य को प्रभावशाली एवं उद्देश्यपूर्ण बनाने में शिक्षक का मार्गदर्शन करती है। शिक्षक निर्देशिका या शिक्षक संदर्शिका एक ऐसी पुस्तिका होती है जिसमें भाषा एवं साहित्य की विभिन्न विधाओं से संबंधित पाठों को पढ़ाने के लिए प्रत्येक पाठ के शिक्षण बिंदु, प्रत्येक कक्षा के अनुरूप शिक्षण उद्देश्यों का निर्धारण, प्रत्येक पाठ के शिक्षण बिंदु पढ़ाने के संबंध में अनुदेशन प्रक्रिया एवं सुझाव, छात्रों का परीक्षण करने संबंधी आवश्यक सुझाव आदि के बारे में चर्चा की जाती है। इसकी सहायता से अध्यापक को अपनी शिक्षण प्रक्रिया को नियोजित एवं क्रियान्वित करने में काफी सहायता मिलती है अत: शिक्षक निर्देशिका भी एक महत्त्वपूर्ण अनुदेशनात्मक सामग्री की भूमिका का निर्वाह करती है।

संदर्भ ग्रंथ—कक्षा में हिंदी शिक्षण करते समय गद्य, पद्य आदि किसी भी पाठ को पढ़ाने के उपरांत उसका विस्तृत अध्ययन करने के लिए अध्यापक बच्चों को संदर्भ ग्रंथों के बारे में बताता है। जैसे—''चारु चंद्र की चंचल किरणें, खेल रही थीं जल थल में'' इस कविता को पढ़ाने के उपरांत अध्यापक बच्चों को बताता है कि ये पंक्तियाँ मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित काव्य ग्रंथ ''पंचवटी'' में से ली गई हैं। वह इन पंक्तियों की पृष्ठभूमि की व्याख्या भी करता है और विस्तृत अध्ययन के लिए पंचवटी पढ़ने के लिए बच्चों को प्रेरित भी करता है। इस समय 'पंचवटी' काव्य सदंर्भग्रंथ की भूमिका अदा कर रहा है। इस प्रकार हिंदी शिक्षण में गद्य, पद्य, कहानी, नाटक, उपन्यास, व्याकरण की कोई भी रचना संदर्भ ग्रंथ की भूमिका अदा कर सकती है।

शब्दकोश—शब्दकोश से अभिप्राय है शब्दों का खजाना। शब्दकोश के अंतर्गत भाषा के सभी शब्द, उनकी व्युत्पत्ति, रचना एवं व्याकरणिक विशेषता स्पष्ट की जाती है। इसमें वर्णमाला के क्रमानुसार, वर्णक्रम के विस्तार को ध्यान में रखते हुए शब्दों को व्यवस्थित रूप दिया जाता है। बच्चों के शब्द-भंडार को विकसित करने के लिए शब्दकोश का प्रयोग किया जाता है। हिंदी शिक्षण के समय किसी पाठ में आए नवीन शब्दों के अर्थ एवं व्युत्पत्ति आदि का ज्ञान कराने के लिए अध्यापक छात्रों को शब्दकोश का प्रयोग करने का आदेश देता है तथा प्रयोग संबंधी मार्गदर्शन करता है। इस प्रकार शब्द-भंडार में वृद्धि करने के लिए शब्दकोश एक उपयोगी अनुदेशनात्मक सामग्री के रूप में उपयोग में लाया जाता है।

समाचार-पत्र एवं पत्रिकाएँ—बच्चों में द्रुतवाचन की योग्यता विकसित करने, देश-विदेश की घटनाओं की जानकारी प्राप्त कर ज्ञान वर्धन करने, अवकाश के समय का सुदपयोग करने, मनोरंजन करने, स्वाध्याय की प्रवृत्ति विकसित करने, सामान्यज्ञान में वृद्धि करने, बोधशक्ति को विकसित करने, सृजनात्मक योग्यताओं को विकसित करने एवं साहित्य के अध्ययन में रुचि विकसित करने के उद्देश्य से समाचारपत्र तथा पत्रिकाएँ भी महत्त्वपूर्ण अनुदेशनात्मक सामग्री की भूमिका अदा करती हैं।

समाचारपत्रों के अध्ययन से बच्चों की वाचन संबंधी योग्यताओं को विकसित करने में मदद मिलती है तथा इससे बच्चों के समान्य ज्ञान में वृद्धि होती है जो कि उसके भावी जीवन में तरह-तरह की प्रतियोगिताओं एवं साक्षात्कार के लिए उन्हें तैयार करती है। इसके अलावा बच्चों को शब्दों का वाक्यों में प्रयोग, वाक्य-निर्माण, अभिव्यक्ति का ढंग आदि का भी ज्ञान होता है। इसके लिए अध्यापक बच्चों से एक पुस्तिका बनवाकर प्रतिदिन उसमें मुख्य-मुख्य पाँच समाचार संगृहीत करने का कार्य दे सकता है। इससे बच्चे समाचारपत्र पढ़कर समाचार को समझेंगे और अपनी पुस्तिका में लिखेंगे जिससे लिखित अभिव्यक्ति की योग्यता को विकसित करने में भी मदद मिल सकेगी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant.

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इसी प्रकार विभिन्न मनोरंजक पत्रिकाएँ भी पढ़ने का आदेश दिया जा सकता है। आजकल अनेकों बाल पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं। समाचारपत्रों में भी 'बाल जगत' शीर्षक के अंतर्गत बच्चों से संबंधित रचनाएँ प्रकाशित की जाती हैं। इन्हें बच्चे बड़ी रुचि से पढ़ते हैं। इससे बच्चों में वाचन कौशल का विकास होता है साथ ही वे स्वयं भी कुछ रचना करने के लिए प्रेरित हो सकते हैं।

इस प्रकार समाचारपत्र तथा पत्रिकाएँ भी हिंदी शिक्षण से संबंधित भाषायी योग्यताओं विभिन्न कौशलों को विकसित करने, ज्ञान में वृद्धि करने तथा अवकाश के समय का सदुपयोग करने की दृष्टि से रुचिकर एवं मनोरंजक अनुदेशनात्मक सामग्री के रूप में प्रयोग में लाई जा सकती है।

दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्री या साधन—(Audio visual aid material)

इस वर्ग की सामग्री को दृश्य-श्रव्य सहायक इसलिए कहा जाता है कि यह दृश्य-श्रव्य इंद्रियों के उपयोग द्वारा विद्यार्थी ओर अध्यापक दोनों को ही शिक्षण-अधिगम कार्य में पर्याप्त सहयोग देती है।

हिंदी शिक्षण में प्रयुक्त इस वर्ग की अनुदेशनात्मक सामग्री तथा साधनों को सामान्यतया निम्न तीन श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है।

1. श्रव्य साधन या अनुदेशनात्मक सामग्री—इस वर्ग में उन सभी साधनों तथा अनुदेशनात्मक सामग्रियों को समाविष्ट किया जा सकता है जिनकी सहायता से सुनकर ज्ञान प्राप्त किया जाता है। इस प्रकार की सभी सामग्री और साधन इस तरह विद्यार्थियों की कर्णेद्रियों को प्रभावित कर अनुदेशन कार्य में अध्यापक को सहयोग प्रदान करते हैं। टेपरिकॉर्डर, रेडियो, ग्रामोफोन, रिकॉर्ड प्लेयर आदि इसी प्रकार की अनुदेशनात्मक सामग्री या साधन हैं जिनसे इनमें भरी ध्वनि को सुनकर अनुदेशन प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

2. दृश्य साधन या अनुदेशनात्मक सामग्री—इस वर्ग में उन सभी साधनों तथा अनुदेशनात्मक सामग्रियों को समाविष्ट किया जा सकता है जो विद्यार्थियों की दृश्येंद्रियों अर्थात आँखों को प्रभावित करके उन्हें देखकर अनुदेशन प्राप्त कराने में सहायता करते हैं। दूसरे शब्दों में वह ऐसे साधन या अनुदेशनात्मक सामग्री होती है जिनके प्रयोग से विद्यार्थी विषयवस्तु को स्वयं अपने नेत्रों से देखकर वास्तविक ज्ञान एवं अनुभव प्राप्त करने की चेष्टा करते हैं। श्यामपट्ट, वास्तविक पदार्थ, चार्ट, चित्र, रेखाचित्र, मानचित्र, फ्लेशकार्ड, प्रतिरूप (मॉडल), छाया चित्र, चित्र दर्शक, चित्र विस्तारक शिरोपरि प्रक्षेपी (over head projectors) आदि साधन एवं सामग्री इसी श्रेणी में आती है।

3. दृश्य-श्रव्य साधन या अनुदेशनात्मक सामग्री—इस वर्ग में वे सभी साधन तथा अनुदेशनात्मक सामग्री शामिल की जा सकती है जो हमारी श्रवण तथा चक्षु दोनों ही इंद्रियों को एक साथ प्रभावित करती है और इस तरह विद्यार्थी इनके प्रयोग से देखकर तथा सुनकर दोनों तरह से ही अनुदेशन प्राप्त कर सकते हैं। चलचित्र, नाटक, टेलीविजन, कठपुतली का प्रदर्शन, शिक्षण मशीन तथा कंप्यूटर निदेशित अनुदेशन आदि इस वर्ग में शामिल अनुदेशनात्मक सामग्री या साधनों के उदाहरण हैं।

हिंदी शिक्षण में दृश्य-श्रव्य अनुदेशनात्मक सामग्री तथा साधनों की उपयोगिता
(Significance of Audio-visual Instructional material and aids in Hindi Teaching)

मनोविज्ञान एवं शिक्षा क्षेत्र में होनेवाले अनुसंधानों ने यह अच्छी तरह से सिद्ध कर दिया है कि अनुदेशनात्मक प्रक्रिया में विद्यार्थियों की जितनी अधिक इंद्रियाँ सक्रिय होती हैं, अनुदेशन उतना ही

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
अधिक प्रभावशाली होता है। यही कारण है कि फ्राबेल, मोंटेसरी, रूसो, पेस्टालोजी आदि सभी शिक्षाशास्त्रियों ने अनुदेशनात्मक प्रक्रिया में ऐसी सभी सहायक सामग्री उपकरणों तथा साधनों के उपयोग पर जोर दिया जिनसे ज्ञानेंद्रियों के प्रयोग के माध्यम से विषयवस्तु संबंधी आवश्यक अनुभव प्राप्त करने में मदद मिलती है। उनके द्वारा प्रतिपादित सभी शिक्षण पद्धतियों में अनुदेशनात्मक सामग्री तथा साधनों के प्रयोग को इसीलिए सभी रूपों में एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। फ्रॉबेल की किंडरगार्टन प्रणाली में ये अनुदेशनात्मक साधन उपहार (gifts) कहे जाते है और मोंटेसरी प्रणाली में शिक्षण साधन। एक विद्वान का कहना है कि ज्ञानेंद्रियाँ ज्ञान की प्रवेश-द्वार हैं। यदि ज्ञानेंद्रियों को सक्रिय करके ज्ञान दिया जाता है तो मस्तिष्क क्रियाशील हो जाता है और विषयवस्तु आसानी से समझ आ जाती है और अनुदेशन प्रक्रिया प्रभावशाली बन जाती है। हिंदी भाषा के शिक्षण में अनुदेशनात्मक सामग्री तथा साधनों की उपयोगिता का वर्णन निम्न प्रकार से किया जा सकता हैं:—

1. प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान करने में सहायक—अनुदेशनात्मक दृश्य श्रव्य सामग्री एवं साधन बच्चों को विषय से संबंधित प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान करने में सहायता करते हैं। शब्दों का अर्थ बताने के लिए वास्तविक पदार्थ, चित्र, प्रतिरूप, रेखाचित्र आदि का प्रयोग करके शब्दों का प्रत्यक्ष अनुभव कराया जा सकता है और जिन तत्वों का प्रत्यक्ष अनुभव नहीं हो सकता है उनका वैकल्पिक अनुभव, जो कि प्रत्यक्ष जैसा ही होता है, कराया जा सकता है। जैसे—एकवचन, बहुवचन का ज्ञान कराने के लिए एक और एक से अधिक वस्तु दिखाकर एकवचन और बहुवचन का ज्ञान कराया जा सकता है।

2. ज्ञानेंद्रियों के प्रभावपूर्ण उपयोग में सहायक—इन साधनों के प्रयोग से दो महत्त्वपूर्ण ज्ञानेंद्रियों—'कान और नेत्र' का उपयोग करके ज्ञान प्राप्त करने के अवसर मिलते हैं। एक प्रमुख शिक्षण सूत्र है 'स्थूल से सूक्ष्म की ओर।' इस सूत्र का प्रयोग इन साधनों के द्वारा ही हो सकता है। बच्चों को हिंदी वर्णमाला का ज्ञान कराते समय वर्णों से संबंधित शब्दों के चित्र, वास्तविक पदार्थ आदि दिखाकर उन वर्णों को सार्थक बनाया जा सकता है। जैसे 'अ' का ज्ञान करने के लिए पहले अनार या अनार का चित्र या प्रतिरूप दिखाकर बच्चों की दृश्येंद्रिय और स्पर्शेंद्रिय को सक्रिय किया जा सकता है। इस प्रकार से प्राप्त अनुभव स्थायी हो जाता है।

3. रुचि और ध्यान को बढ़ाने में सहायक—हिंदी विषय को पढ़ाते समय अध्यापक यदि बीच-बीच में अनुदेशनात्मक सामग्री या साधन का प्रयोग करते हैं तो इससे बच्चों का ध्यान विषय की तरफ बना रहता है और पढ़ने में उनकी रुचि बढ़ती है। अत: पाठ रोचक बन जाता है। इन साधनों का प्रयोग शिक्षण अधिगम की उबाऊ तथा नीरस प्रक्रिया में एक प्रकार की ताजगी भर देता है, जिससे विद्यार्थी पाठ की कठिन-से-कठिन बात को समझने में भी रुचि लेने लगते हैं। जैसे—हिंदी व्याकरण में विशेषण के बारे में पढ़ाते समय यदि फूल, पत्ती, गिलास तथा अन्य पदार्थों का बीच-बीच में प्रयोग किया जाए तो व्याकरण का नीरस विषय भी सरस और रुचिपूर्ण बन जाता है और बच्चों का ध्यान बराबर शिक्षण की तरफ बना रहता है।

4. विषयवस्तु को बोधगम्य बनाने में सहायक—हिंदी भाषा शिक्षण में ऐसे बहुत से संप्रत्यय, शब्द, नियम एवं विचार होते है जिन्हें व्याख्यान विधि या केवल मौखिक कथनों या पुस्तकों से पढ़कर समझाना मुश्किल होता है तथा शिक्षक के लिए उन्हें बोधगम्य बनाना एक समस्या बन जाती है। ऐसी स्थिति में ये अनुदेशनात्मक सहायक साधन विषयवस्तु के संप्रत्यय, शब्द, नियम, एवं विचार को स्पष्ट, सार्थक और सरल बना देते हैं।

5. शिक्षणसूत्रों के व्यावहारिक उपयोग में सहायक—शिक्षण के विभिन्न सूत्र जैसे—सरल से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कठिन की ओर, ज्ञात से अज्ञात की ओर, मूर्त से अमूर्त की ओर, उदाहरण से नियम की ओर आदि के प्रयोग से अनुदेशन प्रक्रिया रुचिकर, उद्देश्यपूर्ण और प्रभावशाली बन जाती है। यदि इन सूत्रों का हिंदी पढ़ाते समय प्रयोग किया जाए तो विषयवस्तु बच्चों को आसानी से समझ आ जाती है और बच्चों की रुचि भी अधिगम में विकसित होती है। दृश्य-श्रव्य सहायक साधनों के प्रयोग से इन शिक्षणसूत्रों का उपयोग करने में सहायता मिलती है। जैसे—वर्णमाला के विभिन्न वर्णों अ, आ, क, प, त आदि का ज्ञान कराते समय जब अध्यापक बच्चों को अनार, आम, कलम, पतंग, तराजू आदि को वास्तविक रूप में, या उनके चित्र आदि दिखाता है तो बच्चे इन चित्रों के साथ वर्णों का साहचर्य स्थापित कर लेते हैं और निरर्थक एवं अज्ञात वर्ण भी उनके लिए सार्थक, ज्ञात और सरल बन जाते हैं।

6. हिंदी भाषा के विभिन्न कौशलों को विकसित करने में सहायक—हिंदी भाषा पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करने के लिए यह जरूरी है कि हिंदी भाषा के चारों कौशलों-श्रवण कौशल, मौखिक अभिव्यक्ति कौशल, लेखन कौशल का प्रयोग करने में पारंगत हुआ जाए। अनुदेशनात्मक सहायक साधन इन कौशलों का विकास करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। रेडियो, टेलीविजन, टेपरिकॉर्डर आदि के प्रयोग से बच्चों में श्रवण कौशल का विकास आसानी से किया जा सकता है। इनके द्वारा किसी कहानी, वार्ता या विवरण को सुनवाकर बच्चों से उसका मौखिक वर्णन करने को कहा जा सकता है। इससे मौखिक अभिव्यक्ति कौशल का विकास करने में भी सहायता मिल सकती है। इसी प्रकार चार्ट, चित्र आदि के द्वारा किसी कहानी की रचना या लिखित अभिव्यक्ति कौशल का अभ्यास कराया जा सकता है। इस प्रकार इन साधनों के प्रयोग से बच्चे प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त कर विभिन्न कौशलों का अभ्यास कर, उनमें कौशल का अर्जन की सकते हैं।

7. कक्षा में अनुशासन बनाए रखने में सहायक—अनुदेशनात्मक सामग्री तथा साधनों के प्रयोग से कक्षा का वातावरण सजीव एवं रुचिकर बना रहता है तथा अनुदेशन प्रक्रिया आकर्षक एवं प्रभावशाली बन जाती है। इनका प्रयोग करते समय बच्चों को पाठ के विकास में अपना सक्रिय सहयोग देना पड़ता है अत: बच्चों का मन पढ़ने में लगा रहता है। परिणामस्वरूप अनुशासनहीनता संबंधी समस्याओं या परिस्थितियों के उत्पन्न होने की संभावना बहुत कम हो जाती है और कक्षा में अनुशासन और व्यवस्था बनी रहती है।

इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि अनुदेशनात्मक सामग्री तथा साधनों का प्रयोग हिंदी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सजीव, रुचिपूर्ण, आकर्षक, उद्देश्यपूर्ण और प्रभावशाली बनाने में पूरी तरह से सहायक सिद्ध होता है।

कक्षा अनुदेशन हेतु अत्यंत सजीव एवं आकर्षक वातावरण बनाने में दृश्य श्रव्य साधनों का प्रयोग जितनी अधिक सहायता कर सकता है उतनी सहायता अन्य किसी क्रिया के द्वारा नहीं हो सकती है। अत: हिंदी शिक्षण अनुदेशन प्रक्रिया में अनुदेशनात्मक सामग्री तथा साधनों को सदैव ही अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान किया आता है।

हिंदी भाषा शिक्षण में प्रयुक्त अनुदेशनात्मक सामग्री तथा साधन

प्राचीन काल से शिक्षक अपनी शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने के लिए दृश्य श्रव्य साधनों का प्रयोग करते आ रहे हैं। गुरुकुलों में अध्यापन कार्य के समय गुरु अपने शिक्षकों को विभिन्न विद्याओं का ज्ञान देने के लिए यथार्थ परिस्थितियों का निर्माण करके उनमें छात्रों को अभ्यास कराते थे। कुरु पुत्रों और पांडव पुत्रों को शस्त्र विद्या का ज्ञान देते समय, गुरु द्रोणाचार्य द्वारा वृक्ष पर बैठी हुई चिड़िया की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आँख को धनुर्विद्या के अभ्यास के लिए लक्ष्य बनाने का उदाहरण तो सर्वविदित ही है। इस प्रकार चित्र, चार्ट, मानचित्र, श्यापट्ट आदि साधनों का प्रयोग भी परंपरागत रूप से होता आ रहा है। आज वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास के फलस्वरूप शिक्षा के क्षेत्र में कुछ नवीन विकसित उपकरणों का प्रयोग भी किया जाने लगा है, जैसे—चित्रविस्तारक, चित्रदर्शक, रेडियो, टेपरिकॉर्डर, टेलीविजन एवं कंप्यूटर आदि।

यहाँ हम उन सभी समाग्री एवं साधनों का उल्लेख कर रहे हैं, जिनका प्रयोग हिंदी भाषा अनुदेशन में किया जा सकता है।

1. श्यामपट्ट—हिंदी भाषा अनुदेशन में सबसे ज्यादा कक्षोपयोगी उपकरण श्यापट्ट है जिसका प्रयोग प्राचीन काल से सभी शिक्षक करते चले आ रहे हैं। भाषा शिक्षण में श्यामपट्ट के प्रयोग की आवश्यकता पग-पग पर होती है। वर्णमाला के वर्णों का उच्चारण या पढ़ना सिखाते समय श्यामपट्ट पर ही वर्णों को लिखकर छात्रों से उनका उच्चारण कराया जाता है और वर्णों की पहचान कराई जाती है। वर्तनी का ज्ञान कराने के लिए शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखकर उसका ज्ञान कराया जाता है। व्याकरण के नियमों का ज्ञान कराते समय उनके उदाहरण, उदाहरणों का विश्लेषण, नियम आदि श्यामपट्ट पर लिखे जाते हैं। गद्य, पद्य के पाठ पढ़ाते समय शब्द और उनके अर्थ, पाठ का सारांश तथा रचना कार्य कराते समय विषय की रूपरेखा आदि श्यापट्ट पर लिखी जाती है। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि भाषा शिक्षण में श्यामपट्ट अध्यापक का सबसे निकट का मित्र है। यहाँ तक कि यदि भाषा शिक्षण के समय कक्षा के कमरे में श्यामपट्ट नहीं है तो उसे शिक्षण-कक्ष ही नहीं कहा जा सकता है। इसलिए प्रत्येक भाषा शिक्षक को इसका प्रयोग करना आना चाहिए। काले रंग का होने के कारण ही इसे श्यामपट्ट या कृष्णफलक कहा जाता है। आजकल हरे, नीले आदि रंगों के फलक भी आने लगे हैं अतः अब इन्हें चॉकबोर्ड भी कहा जाता है अर्थात वह फलक, पट्ट या बोर्ड जिसपर चॉक से लिखा जाता है। इस चॉक बोर्ड का प्रयोग करते समय अध्यापक को कुछ बातों को ध्यान में रखना चाहिए—

(i) लिखने से पहले श्यामपट्ट को अच्छी तरह से साफ कर लेना चाहिए।

(ii) चॉक को श्यामपट्ट पर अच्छी तरह से दबाकर लिखना चाहिए।

(iii) चॉकबोर्ड पर लिखते समय अध्यापक को बाईं ओर से दाईं ओर को लिखना चाहिए। ध्यान रहे कि कभी भी अध्यापक की पीठ लिखते समय कक्षा की तरफ न हो। अध्यापक को इस तरह खड़े होकर लिखना चाहिए कि बीच-बीच में छात्रों की तरफ बार-बार देखता रहे।

(iv) चॉक बोर्ड पर लिखते समय शिक्षक को मौखिक रूप से भी बोलते रहना चाहिए।

(v) श्यामपट्ट पर सीधे अक्षर तथा सीधी पंक्ति में लिखना चाहिए।

(vi) लिखी-हुई सामग्री का उपयोग हो जाने के पश्चात उसे मिटा देना चाहिए ताकि आगे की सामग्री को प्रस्तुत करने के लिए स्थान उपलब्ध हो सके।

(vii) श्यापट्ट पर हमेशा शुद्ध वर्तनी में लिखा जाना चाहिए। इसके अलावा जो कुछ भी लिखा जाए या चित्र रूप में बनाया जाए उसका आकार ठीक प्रकार का होना चाहिए।

(viii) छात्र सहभागिता के उद्देश्य से कभी-कभी छात्रों को भी श्यामपट्ट पर लिखने का अवसर प्रदान करना चाहिए।

2. वास्तविक पदार्थ, चित्र, चार्ट, रेखाचित्र, मानचित्र, पोस्टर एवं प्रतिरूप आदि—हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तकों में प्रायः सभी विषयों से संबंधित रचनाएँ संगृहीत होती हैं। इन सभी लेखों अर्थात रचनाओं को पढ़ाते समय विषयवस्तु के अनुसार चित्र, चार्ट, रेखाचित्र, वास्तविक पदार्थ, मानचित्र

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
प्रतिरूप आदि का प्रयोग करके विषयवस्तु को सरल, स्पष्ट और बोधगम्य बनाया जा सकता है। कोई कविता या निबंध पढ़ाते समय उसके रचयिता कवि या लेखक का परिचय देने के लिए उनके चित्र दिखाने से बच्चों को उनके जीवन परिचय की तरफ आकर्षित किया जा सकता है। इसी प्रकार सूरदास की बाललीला के पद या चेतक की वीरता जैसी कविता पढ़ाते समय कृष्ण की बाललीला का या राणा प्रताप और उनके घोड़े चेतक का चित्र दिखाया जा सकता है। 'ताजमहल' पर रचना कार्य कराते समय ताजमहल का मॉडल (प्रतिरूप) दिखाया जा सकता है। श्रवण कौशल और मौखिक अभिव्यक्ति कौशल का विकास करने के लिए किसी कहानी की विभिन्न स्थितियों को दर्शानेवाले चार्ट का प्रयोग किया जा सकता है। वर्णमाला के स्वर एवं व्यंजनों का ज्ञान देते हुए अनार, आम, कलम, पतंग जैसे विभिन्न वास्तविक पदार्थ या उनके प्रतिरूप को दिखाकर बच्चों को प्रत्यक्ष अनुभव कराए जा सकते हैं। किसी भौगोलिक स्थान की यात्रा का वर्णन कराते हुए मानचित्र का प्रयोग किया जा सकता है। महपुरुषों की जीवनी पढ़ाते समय उनका चित्र तथा उनके जीवन के इतिहास से संबंधित घटनाओं के चित्रों का प्रयोग भाषा शिक्षण में आसानी से किया जा सकता है। विभिन्न शब्दों का अर्थ स्पष्ट करने के लिए श्यामपट्ट पर चॉक से रेखाचित्र बनाकर पाठ को रोचक व सरल बनाया जा सकता है, जैसे—वृत्त, मंडलाकार, उच्चासन, आयताकार आदि शब्दों का स्पष्टीकरण रेखाचित्र द्वारा आसानी से किया जा सकता है।

इन सभी साधनों एवं उपकरणों का प्रयोग करते समय शिक्षक को निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए—

(i) वास्तविक पदार्थ चित्र, चार्ट आदि का आकार ऐसा होना चाहिए जिसे कक्षा में आसानी से लाकर दिखाया जा सके और जो विषय के स्पष्टीकरण में सहायक हो।

(ii) किसी भी पदार्थ, चित्र, चार्ट आदि का प्रयोग करते समय इस बात का ध्यान रखा जाए कि वह साधन कक्षा के सभी बच्चों को अच्छी प्रकार से दिखाई दे।

(iii) किसी भी सामग्री को उसी समय दिखाया जाए जब उसकी आवश्यकता हो। कार्य होने के उपरांत उसे उठाकर रख देना चाहिए। किसी भी सामग्री की प्रदर्शनी लगाना उचित नहीं।

(iv) सामग्री छात्रों के मानसिक स्तर के अनुकूल होनी चाहिए।

(v) जिस विचार, तथ्य या विषयवस्तु को सामग्री के द्वारा स्पष्ट करना हो, उसे स्पष्ट करने में वह सामग्री सक्षम होनी चाहिए। चित्र, चार्ट, प्रतिरूप आदि में दृश्य सामग्री का प्रस्तुतीकरण इस प्रकार किया जाए कि विषय को स्पष्ट एवं प्रभावपूर्ण ढंग से अभिव्यक्त किया जा सके।

(vi) कक्षा में दिखाई जानेवाली सामग्री साफ-सुथरी ठीक दशा में होनी चाहिए। धुँधली कटी-फटी या टूटी, मटमैली, अस्पष्ट सामग्री का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

(vii) एक चित्र, चार्ट या प्रतिरूप में एक ही बात को प्रदर्शित करना चाहिए। एक ही चित्र आदि में बहुत-सी बातों को शामिल कर लेने से विषयवस्तु की स्पष्टता में कमी आ जाती है।

फ्लैनल बोर्ड—हिंदी भाषा शिक्षण में एक नवीन उपकरण के रूप में फ्लैनल बोर्ड का प्रयोग किया जाने लगा है। इसे फैल्ट बोर्ड या खादी बोर्ड भी कहा जाता है। एक बोर्ड (तख्ते) पर किसी भी गहरे रंग का फलालैन या खादी ऊनी कपड़ा तानकर पीछे की ओर पिन, कील आदि की सहायता से कसकर लगा दिया जाता है। पाठ से संबंधित चित्र, वर्ण, शब्द, आकृतियाँ, कटे हुए अक्षर आदि लेकर उनके पीछे रेगमाल चिपका देते हैं। ये चित्र आदि, जिन्हें फ्लैशकार्ड कहा जाता है, फ्लैनल बोर्ड के ऊपर आवश्यकतानुसार चिपकाकर कक्षा में प्रदर्शित किए जा सकते हैं। इन्हें जल्दी-जल्दी चिपकाया या हटाया जा सकता है। वर्णमाला सिखाते समय या शब्द निर्माण कार्य कराते समय या वचन, लिंग आदि का ज्ञान

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

कराते समय इन चित्रों (फ्लैश कार्ड) आदि का आसानी से प्रयोग किया जा सकता है। अध्यापक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि इन फ्लैशकार्डों और चित्रों में बनी या छपी आकृति इतनी बड़ी अवश्य होनी चाहिए कि कक्षा के सभी बच्चों को साफ-साफ दिखाई दे।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3. चित्रप्रदर्शक यंत्र—विज्ञान एवं तकनीकी विकास के फलस्वरूप नए-नए आविष्कार हुए जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में एक नवीन क्रांति ला दी और शिक्षण प्रक्रिया को एक नवीन स्वरूप प्रदान किया।

(क) मैजिकलैंटर्न—चित्रदर्शक यंत्रों में सबसे पहले मैजिक लैंटर्न (जादुई चिराग) का आविष्कार हुआ था। इसमें चित्र, आरेख आदि की पारदर्शी स्लाइडें बनाकर, उन पर सीधे प्रकाश की किरणें डालकर एक लैंस के द्वारा पर्दे पर बड़ा करके दिखाया जाता है।

(ख) एपीस्कोप—इसके बाद में एपिस्कोप का आविष्कार हुआ। मैजिक लैंटर्न में चित्र आदि दिखाने के लिए उनकी पारदर्शी स्लाइडें बनानी पड़ती हैं परंतु एपिस्कोप द्वारा किसी भी चित्र, मानचित्र, पुस्तक के किसी पृष्ठ, फोटोग्राफ, रेखाचित्र कागज पर खींची आकृति आदि को बिना किसी पारदर्शी स्लाइड का प्रयोग किए हुए पर्दे पर प्रक्षेपित करके बड़े आकार के रूप में परिवर्तित करके दिखाया जाता है।

(ग) एपीडायस्कोप—इसके बाद में तकनीकी विकास के फलस्वरूप एपीडायस्कोप का आविष्कार हुआ। यह यंत्र मैजिक लैंटर्न और एपीस्कोप दोनों यंत्रों का काम देता है। इसमें पारदर्शी और अपारदर्शी दोनों प्रकार के चित्र, मुद्रित सामग्री, रेखाचित्र आदि को पर्दे पर प्रक्षेपित करके बड़ा करके दिखाया जाता है।

(घ) प्रोजेक्टर—मैजिक लैंटर्न, एपीस्कोप, एपीडायस्कोप के बाद तकनीकी विकास ने और भी अधिक उन्नत उपकरण प्रोजेक्टर का विकास किया। इसके द्वारा दिखाई जानेवाली सामग्री को पर्दे पर प्रक्षेपित करके आसानी से बड़ा करके दिखाया जा सकता है।

भाषा शिक्षण में इन सभी चित्रदर्शक एवं चित्र विस्तारक उपकरणों की सहायता से प्राकृतिक दृश्यों, यात्रा-वर्णनों, उत्सवों, त्यौहारों आदि के पाठ पढ़ाने के लिए विभिन्न चित्रों एवं पाठ्यपुस्तक में मुद्रित चित्र आदि को आसानी से बड़ा करके प्रदर्शित किया जा सकता है। हिंदी भाषा शिक्षण में पाठ्यपुस्तक के गद्य पद्य आदि के पाठ पढ़ाते समय कई बार कवियों, लेखकों या पाठ में छपे हुए विषयवस्तु से संबंधित चित्र बड़े आकार में नहीं मिल पाते हैं तब छोटे चित्रों को बड़ा करके दिखाने के काम में ये यंत्र प्रयोग में लाए जा सकते हैं।

इन चित्रप्रदर्शक और चित्रविस्तारक यंत्रों का प्रयोग करते समय अध्यापक को पहले इन यंत्रों का प्रयोग करने की विधि अच्छी तरह से जान लेनी चाहिए। चित्र दिखाने के लिए पर्दा कक्षा में ऐसे स्थान पर होना चाहिए जिससे सभी बच्चों को अच्छी प्रकार से दिखाई दे। कोई भी चित्र दिखाने से पहले उसके दिखाने के उद्देश्य को स्पष्ट कर देना चाहिए और दिखाने के पश्चात छात्रों से मौखिक रूप से उससे संबंधित प्रश्न पूछकर पाठ को स्पष्ट करना चाहिए तथा जिस समय कोई चित्र आदि दिखाया जा रहा हो उस समय साथ-साथ मौखिक टिप्पणी भी करते रहना चाहिए।

4. ध्वनि श्रवण यंत्र—(क) ग्रामोफोन—शिक्षण प्रक्रिया में आधुनिक श्रव्य उपकरणों में सबसे सरल, सस्ता साधन ग्रामोफोन है। इसे सीतावाद्य भी कहते हैं। भाषा शिक्षण में इसका महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसमें एक विशेष मसाले के बने गोलाकार तवे पर रेखाओं के रूप में भाषा से संबंधित विषयवस्तु की ध्वनि भर ली जाती है और फिर आवश्यकतानुसार ग्रामोफोन की सहायता से वह विषयवस्तु छात्रों को सुनाई जाती है। सस्वरवाचन, शब्द-उच्चारण, कवितापाठ, वार्तालाप, संवाद एवं भाषण की शिक्षा जितनी अच्छी तरह से ग्रामोफोन के द्वारा दी जा सकती है उतनी अन्य साधन से नहीं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

मौखिक कौशल की शिक्षा एवं अभ्यास के लिए यह साधन सर्वाधिक उपयोगी एवं आकर्षक है।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ख) टेपरिकार्डर—ग्रामोफोन की तरह ही टेपरिकार्डर भी पहले से संगृहीत ध्वनि को सुनाने का एक अच्छ उपकरण है। इसमें विभिन्न विषयों से संबंधित विचारों को टेप में भर लिया जाता है और फिर टेपरिकार्डर पर उस टेप को चलाकर रिकॉर्ड की गई विषयवस्तु बच्चों के सामने प्रसारित की जाती है जिसे वे श्रवणेंद्रिय के माध्यम से ग्रहण करते हैं। ग्रामोफोन का रिकॉर्ड तो स्थायी होता है परंतु टेपरिकॉर्डर के टेप अस्थायी होते हैं। अपनी मर्जी के अनुसार टेप से पहले रिकॉर्ड की गई विषयवस्तु को समाप्त कर पुन: नई विषयवस्तु उसी टेप पर रिकॉर्ड की जा सकती है। टेपरिकॉर्ड का प्रयोग भाषा संबंधी मौखिक अभिव्यक्ति के कौशल को विकसित करने में अत्यंत सहायक सिद्ध हो सकता है। विभिन्न अनुभवी विद्वानों के वक्तव्य, भाषण, कविता, गीत एंव वार्तालाप आदि छात्रों को बार-बार सुनाए जा सकते हैं। इससे छात्रों में मौखिक अभिव्यक्ति संबंधी गुणों का ज्ञान आसानी से कराया जा सकता है। छात्र अपने भाषण, कवितापाठ आदि को टेप करके, फिर पुन: स्वयं सुनकर अपनी त्रुटियों को जानकर उन्हें सुधारने का प्रयास कर सकते हैं। शुद्ध उच्चारण की शिक्षा देने में तो यह उपकरण बहुत ही प्रभावशाली सिद्ध हो सकता है। विद्यालय में होनेवाले सांस्कृतिक समारोह आदि के कार्यक्रमों को टेप करके उन्हें बाद में छात्रों को सुनवाकर या रेडियो पर प्रसारित होनेवाले कार्यक्रमों को टेप करके, बाद में छात्रों को सुनवाकर छात्रों को मौखिक अभिव्यक्ति संबंधी अभ्यास कराया जा सकता है।

(ग) रेडियो—श्रव्य साधनों एवं उपकरणों में रेडियो आज एक उपयोगी साधन माना जाता है। हिंदी भाषा के शिक्षण में तो रेडियो द्वारा प्रसरित होनेवाले कार्यक्रम अपना विशेष स्थान रखते हैं। आकाशवाणी से प्रसारित कवितापाठ, वार्ता, समाचार, संवाद, वाद-विवाद, बाल नाटक आदि कार्यक्रम बच्चों का मनोरंजन करने के साथ-साथ उनके लिए शिक्षाप्रद भी होते हैं। हिंदी भाषा संबंधी मौखिक अभिव्यक्ति कौशल संबंधी गुणों का विकास करने में तो ये कार्यक्रम विशेष सहायता करते हैं। इन कार्यक्रमों को सुनकर बच्चों को शुद्ध उच्चारण का ज्ञान होता है, शब्द-भंडार में वृद्धि होती है, बोलने की शैली का ज्ञान होता है अर्थात भाषा संबंधी विभिन्न योग्यताओं का विकास इन कार्यक्रमों को सुनकर आसानी से हो जाता है। इनसे छात्रों की बोधशक्ति का विकास होता है और उनमें ध्यानपूर्वक सुनने की योग्यता भी विकसित होती है। छात्रों के ज्ञान-भंडार में वृद्धि करने में भी रेडियो कार्यक्रम बहुत अधिक सहायता करते हैं।

आजकल तो आकाशवाणी के सभी केंद्रों से शैक्षिक कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। शिक्षक उन कार्यक्रमों के प्रसारण का समय नोट कर बच्चों को उन कार्यक्रमों को सुनाने की उचित व्यवस्था कर सकते हैं। प्रत्येक स्तर के छात्रों की भाषा संबंधी योग्यताओं का विकास करने में इन कार्यक्रमों की सहायता ली जा सकती है। इसके लिए रेडियो को एक ऐसे स्थान पर रखना चाहिए जहाँ से छात्रों को उसकी ध्वनि स्पष्ट सुनाई दे। कार्यक्रम सुनवाने से पहले उसकी विषयवस्तु के बारे में छात्रों को पहले से कुछ बताकर मानसिक रूप से तैयार कर लेना चाहिए। कार्यक्रम के प्रसारण के समय छात्रों को शांत रहकर ध्यानपूर्वक सुनने के स्पष्ट निर्देश पहले ही दे देने चाहिए और प्रसारण के पश्चात प्रसारित कार्यक्रम की विषयवस्तु पर आधारित प्रश्न छात्रों से पूछना चाहिए तथा वार्तालाप करना चाहिए तथा प्रसारण से संबंधित छात्रों की शंकाओं-समस्याओं का समाधान भी करना चाहिए।

5. दृश्यश्रव्य उपकरण—टेलीविजन—टेलीविजन दृश्यश्रव्य साधन है। रेडियो द्वारा प्रसारित कार्यक्रम को हम केवल सुन सकते हैं जबकि टेलीविजन पर प्रसारित होनेवाले कार्यक्रमों को हम सुन भी सकते हैं और अपने नेत्रों से स्वयं देख भी सकते हैं। इसमें बच्चे की कान और नेत्र दोनों इंद्रियाँ सक्रिय

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

होती हैं। अत: हिंदी भाषा शिक्षण के लिए यह रेडियो से अधिक प्रभावशाली साधन है। टेलीविजन अंग्रेजी भाषा का शब्द है। टेली का अर्थ है दूर तथा विजन का अर्थ है देखना अर्थात 'दूर से देखना।' हिंदी में इसे दूरदर्शन कहा जाता है। इसके द्वारा वक्ता के हाव-भाव, बातचीत करने के ढंग, भाषण करने की शैली, कविता पाठ करने की विधि तथा अभिनय करने का ढंग आदि बच्चे अपनी आँखों से देखते हैं। बोला जानेवाला प्रत्येक शब्द, चित्र, दृश्य, आवाज और घटनाएँ आदि प्रत्यक्ष रूप से सुनी व देखी जा सकती हैं। अत: टेलीविजन के द्वारा बच्चों के ज्ञान में तो वृद्धि होती ही है, साथ ही श्रवण कौशल, मौखिक अभिव्यक्ति कौशल तथा भाषा संबंधी विभिन्न योग्यताओं का विकास भी रुचिकर, आकर्षक और प्रभावशाली ढंग से किया जा सकता है। टेलीविजन पर संगीत, नृत्य, नाटक, वार्ताएँ, समाचार तथा महिलाओं के विभिन्न कार्यक्रम, बच्चों के कार्यक्रम, ग्रामीण भाइयों के कार्यक्रम, देश-विदेश में घटनेवाली घटनाओं से संबंधित कार्यक्रम, खेल जगत से संबंधित कार्यक्रम, कहानियाँ आदि प्रसारित किए जाते हैं जो बच्चों के ज्ञान में तो वृद्धि करते ही हैं, उनका मनोरंजन भी करते हैं और उन्हें देख-सुनकर बच्चों को उन नए शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों आदि का भी ज्ञान होता है। वार्तालाप करने का सही तरीका ज्ञात होता है और तर्क-वितर्क आदि की योग्यता भी विकसित होती है।

आजकल तो टेलीविजन पर स्कूली बच्चों के लिए उनके पाठ्यक्रम से संबंधित कार्यक्रम भी प्रसारित किए जाते हैं जिन्हें देखकर बच्चों को वह विषय रुचिपूर्वक आसानी से समझ में आ जाता है। अत: टेलीविजन का प्रयोग करते समय अध्यापक को कुछ बातों को ध्यान में रखना चाहिए जिससे बच्चों को इसका पूरा-पूरा लाभ मिल सके।

सर्वप्रथम टेलीविजन ऐसे स्थान पर रखना चाहिए जहाँ से कक्षा के सभी बच्चों को ठीक-ठीक दिखाई दे और आवाज भी स्पष्ट सुनाई दे। दूरदर्शन पर प्रसारित होनेवाले कार्यक्रमों की पूर्व जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए तथा शैक्षिक दृष्टि से उपयोगी कार्यक्रम ही बच्चों को दिखाने चाहिए। कार्यक्रम दिखाने से पूर्व छात्रों को उसके बारे में कुछ सामान्य-सी बातें बताकर उन्हें मानसिक रूप से तैयार कर देना चाहिए। कार्यक्रम प्रसारण के समय बच्चों को ध्यान से कार्यक्रम देखने और सुनने के लिए अभ्यास करना चाहिए। प्रसारण के पश्चात छात्रों से उस विषय पर विचार-विमर्श करना चाहिए और छात्रों की प्रसारण से संबंधित शंकाओं का समाधान भी करना चाहिए। तत्पश्चात छात्रों से देखे गए विषय पर लिखित रचना भी करानी चाहिए तथा उनकी त्रुटियों को दूर करने का प्रयास भी करना चाहिए।

इस प्रकार यदि टेलीविजन का प्रगोग उचित प्रकार से करने से हिंदी भाषा शिक्षण प्रक्रिया को रोचक, आकर्षक, उद्देश्यपूर्ण तथा प्रभावशाली बनाने में सहायता की जा सकती है।

चलचित्र—टेजीविजन की तरह चलचित्र भी एक आधुनिक दृश्य-श्रव्य उपकरण है जिसका प्रयोग हिंदी भाषा संबंधी योग्यताओं को विकसित करने के लिए किया जा सकता है। इसके लिए सामान्य रूप से प्रचलित चलचित्रों का नहीं बल्कि शैक्षिक चलचित्रों का प्रयोग किया जाता है जिनका निर्माण बच्चों की आयु और मानसिक अभिरुचियों को ध्यान में रखकर किया जाता है। इनका कथानक बाल जीवन की समस्याओं से संबंधित होता है। जिन स्थानों को हम स्वयं प्रत्यक्ष रूप से नहीं देख सकते हैं उन्हें चलचित्र के माध्यम से दिखाकर बच्चों को उनका आँखोंदेखा वर्णन आदि कराकर बच्चों की रचनात्मक योग्यताओं को विकसित करने का प्रयास किया जा सकता है। महपुरुषों की जीवनी, आत्मकथा आदि से संबंधित चलचित्र बच्चों के ज्ञान में वृद्धि करने एवं उनका चरित्र निर्माण करने में भी सहायक सिद्ध होते हैं। प्राकृतिक जीवन से संबंधित दृश्य भी चलचित्र के माध्यम से दिखाकर बच्चों की कल्पना को साकार रूप प्रदान किया जा सकता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
जिस विषय पर छात्रों को चलचित्र दिखाना हो उसकी चर्चा पहले से ही कक्षा में कर लेनी चाहिए और उस विषय के बारे में और ज्यादा जानने के लिए छात्रों के मन में जिज्ञासा पैदा करनी चाहिए जिससे चलचित्र उनकी जिज्ञासा को संतुष्ट कर सके। चलचित्र दिखाने के पश्चात छात्रों से दिखाए गए विषय पर वार्तालाप करना चाहिए और यदि आवश्यकता हो तो चलचित्र को एक से अधिक बार भी दिखाना चाहिए।

वीडियो—यह भी दृश्य-श्रव्य उपकरण की श्रेणी में आता है। वीडियो की सहायता से चलचित्रों के मनचाहे कैसेट को टेलीविजन के पर्दे पर दिखाया जा सकता है। यह टेलीविजन और चलचित्र का संयुक्त रूप है।

नाटक—नाटक शिक्षण का प्राचीनतम दृश्य-श्रव्य साधन है। प्रत्येक कक्षा की भाषा की पाठ्यपुस्तक में एक-दो नाटकों का संकलन अवश्य होता है, अत: भाषाशिक्षण में नाटकों का बड़ा महत्त्व है। नाटकों के द्वारा छात्रों को संवाद प्रस्तुतीकरण, हाव-भाव के साथ बोलना आदि भाषायी योग्यताओं का उचित रूप से अभ्यास कराया जा सकता है। ये नाटक स्कूल के विभिन्न समारोहों के अवसर पर रंगमंच पर आसानी से खेले जा सकते हैं। रंगमंच पर अभिनय करने के बाद यदि शिक्षक वही नाटक कक्षा में पढ़ाए तो नाटक शिक्षण अत्यंत सजीव और रोचक बन जाता है। इससे बच्चे स्वाभाविक गति से, शब्दों और वाक्यों को सजीव ढंग से बोलना सीख जाते हैं।

शिक्षण मशीन (Teaching machines)—विज्ञान और तकनीकी विकास ने शिक्षण के क्षेत्र में एक नवीन उपकरण को विकसित किया जिसे हम शिक्षण-मशीन के नाम से जानते हैं। इसकी गणना आधुनिक विकसित अति उन्नत दृश्य-श्रव्य उपकरणों में की जाती है।

यह शिक्षण-मशीन अधिगमकर्त्ता के सम्मुख कुछ प्रश्न प्रस्तुत करती है, ठीक उत्तर के लिए छात्र को बटन दबाना होता है। यदि उत्तर ठीक होता है तो दूसरे प्रश्न से संबंधित विषय सामग्री छात्रों को प्राप्त होती है और यदि उत्तर गलत है तो उसी प्रश्न की विषवस्तु पुन: छात्र के सम्मुख प्रस्तुत हो जाती है। इस प्रकार यह शिक्षण मशीन छात्रों को स्वयं सीखने में सहायता करती है और कठिन-से-कठिन विषय सामग्री को भी बहुत सरल और रुचिकर बनाकर छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत करती है।

हिंदी भाषा शिक्षण में भी इस शिक्षण मशीन के प्रयोग से हिंदी शिक्षण प्रक्रिया को रुचिकर और आकर्षक बनाया जा सकता है। व्याकरण संबंधी विभिन्न नियमों और संप्रत्ययों का ज्ञान देने के लिए, बच्चों को स्वरों, व्यंजनों, शब्दों, वर्तनी आदि का ज्ञान कराने के लिए छोटे बच्चों को विभिन्न फलों, सब्जियों, दिनों, महीनों के नाम आदि का ज्ञान कराने के लिए भी शिक्षण मशीन का प्रयोग किया जा सकता है।

कंप्यूटर्स (Computers)—शिक्षण-अधिगम एवं अनुदेशन के क्षेत्र में कंप्यूटर्स का प्रयोग अति आधुनिक अनुेदशनात्मक सामग्री एवं साधन का प्रतिनिधित्व करता है। विद्यालय पाठ्यक्रम का कोई भी ऐसा विषय नहीं जिसके अनुदेशन हेतु कंप्यूटरों का भली-भाँति उपयोग नहीं किया जा सकता हो। हिंदी शिक्षण भी इसका अपवाद नहीं है। यहाँ भी इसके सभी प्रकार के अनुदेशनात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति में कंप्यूटरों द्वारा प्रदत्त अनुदेशन तथा अनुदेशनात्मक सामग्री के द्वारा उचित भूमिका निभाई जाती है। कंप्यूटरों द्वारा यह कार्य हिंदी शिक्षण तथा अनुदेशन में सहायक उपयुक्त सौफ्टवेयर्स, सीडीज तथा बेवसाइटों पर उपलब्ध सूचना एवं पठन सामग्री द्वारा किया जाता है। इसके अतिरिक्त कंप्यूटरों के द्वारा चित्र, चार्ट, ग्राफ तथा मुद्रित सामग्री के सृजन की सहायता से ऐसी अनुदेशनात्मक सामग्री तथा साधनों का भी संग्रह किया जा सकता है जिनसे हिंदी शिक्षण से संबंधित विविध विषयों या प्रकरणों का

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भली-भाँति अनुदेशन प्रदान किया जा सके। संक्षेप में हिंदी शिक्षण में कंप्यूटरों द्वारा प्रदत्त इस प्रकार के लाभों का निम्न प्रकार वर्णन किया जा सकता है।

कंप्यूटर के वर्ड प्रोसेसिंग (Word Processing) सोफ्टवेयर्स द्वारा हिंदी भाषा के लिखने तथा पढ़ने संबंधी कौशलों का विकास किया जा सकता है।

लिखने तथा पढ़ने की त्रुटियों को दूर करने तथा व्याकरणसम्मत शुद्ध भाषा के ज्ञानार्जन में भी कंप्यूटरों का प्रयोग काफी मदद कर सकता है।

विभिन्न प्रकार के गद्य तथा पद्य पाठों के विधिवत् शिक्षण में विशेष रूप से तैयार की गई सीडीज तथा बेवसाइड पर उपलब्ध सामग्री भलीभाँति मदद कर सकती है।

हिंदी भाषा के रचना कार्य जैसे निबंध तथा पत्रलेखन, कहानी रचना, संस्मरण लेखन, आलोचना तथा समालोचना कार्य आदि में कंप्यूटरों द्वारा प्रदत्त अनुदेशनात्मक सामग्री बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

वाद-विवाद, अभिनयीकरण, प्रश्नमंच, अंताक्षरी तथा अन्य साहित्यिक क्रियाओं के सफल आयोजन में भी कंप्यूटरों द्वारा प्रदत्त अनुदेशनात्मक सामग्री द्वारा बड़ी ही सशक्त भूमिका निभाई जा सकती है और इस बात में कोई शंका नहीं है कि हिंदी भाषा शिक्षण में इस प्रकार की गतिविधियों का सफल आयोजन तथा इनसे संबंधित प्रशिक्षण कितना अधिक महत्त्व रखता है।

कंप्यूटरों की सहायता से हमें हिंदी भाषा शिक्षण में सहायक ऐसी बहूमूल्य मुद्रित सामग्री, चित्र, चार्ट, ग्राफ तथा आरेख आदि आसांनी से उपलब्ध हो जाते हैं जिनकी मदद से विभिन्न प्रकार की अनुदेशनात्मक क्रियाओं के संपादन द्वारा निर्धारित अनुदेशनात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति में यथासंभव सहायता मिलती रहती है।

कंप्यूटरों की मदद से आज हिंदी भाषा शिक्षण में 'आन लाइन एजूकेशन' ग्रहण करने की भी पूरी तरह सभी आवश्यक सुविधाएँ संभव हैं। सूदूर बैठे हुए अध्यापकों तथा विद्यार्थियों में नेट वर्किंग द्वारा भलीभाँति संप्रेषण तार जुड़े रहते हैं और वे हिंदी भाषी संबंधी आवश्यक लाभ और सूचनाओं की शिक्षण ओर अधिगम के रूप में आदान-प्रदान करते रहते हैं।

कंप्यूटरों के द्वारा एक मशीनी अध्यापक तथा शिक्षण मशीन की भाँति ऐसी भूमिका भी बड़ी अच्छी तरह से निभाई जा सकती है कि विद्यार्थी स्वयं के प्रयत्नों से हिंदी भाषा संबंधी सभी कौशलों के अर्जन तथा आवश्यक ज्ञान-प्राप्ति की दिशा में स्व-अनुदेशन तकनीक को अपनाकर आवश्यक प्रगति कर सके।

इस तरह कंप्यूटरों का प्रयोग हिंदी भाषा शिक्षण क्षेत्र में एक ऐसे उन्नत साधन तथा अनुदेशनात्मक सामग्री स्रोत का प्रतिनिधित्व करता है जिससे सभी कक्षाओं में हिंदी शिक्षण संबंधी अनुदेशनात्मक कार्य को एक अच्छा सहायक तथा ठोस आधार प्रदान किया जा सके।

अध्ययन के लिए प्रश्न

1. हिंदी शिक्षण में अनुदेशनात्मक सामग्री एवं साधनों से क्या अभिप्राय है? इस प्रकार की सामग्री एवं साधनों के विभिन्न प्रकारों का उदाहरण सहित उल्लेख कीजिए?

2. हिंदी शिक्षण में प्रयुक्त विभिन्न प्रकार के श्रव्य साधन या अनुदेशनात्मक सामग्री का उल्लेख करते हुए उनके किसी एक की विस्तार से चर्चा कीजिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

3. हिंदी शिक्षण में किस प्रकार के दृश्य-श्रव्य साधन या अनुदेशनात्मक सामग्री काम में लाई जा सकती है ? किसी एक साधन का विस्तार से उल्लेख कीजिए।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4. हिंदी शिक्षण में दृश्य-श्रव्य अनुदेशनात्मक सामग्री या साधनों का उपयोगिता एवं महत्त्व पर विस्तार से प्रकाश डालिए।

5. हिंदी भाषा शिक्षण में प्रयुक्त विभिन्न प्रकार की अनुदेशनात्मक सामग्री एवं साधनों का उल्लेख करते हुए किसी एक साधन या सामग्री के उपयोग की उदाहरण सहित चर्चा कीजिए।

6. आपने अपने कक्षा शिक्षण अभ्यास के दौरान हिंदी शिक्षण हेतु जिस प्रकार की अनुदेशनात्मक सामग्री का प्रयोग किया था उसके उपयोग ओर औचित्य पर प्रकाश डालिए।

7. हिंदी शिक्षण में निम्न अनुदेशनात्मक सामग्री एवं साधनों में से किन्हीं दो के उपयोग के संबंध में विस्तृत जानकारी दीजिए।

(i) चित्र एवं चार्ट (ii) टेपरिकॉर्डर (iii) टेलीविजन (iv) शिक्षण मशीन (v) कंप्यूटर्स (vi) ओवरहैड प्रोजेक्टर (vii) संदर्भ ग्रंथ (viii) पूरक पुस्तक।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

24

हिंदी पाठ्यवस्तु का शिक्षाशास्त्रीय विश्लेषण

(Pedagogical Analysis of the Subject Matter of Hindi)

हिंदी पाठ्यवस्तु से अभिप्राय

(Meaning of the term subject matter of Hindi)

हर विषय की अपनी पाठ्यवस्तु या विषयवस्तु होती है जिसमें विषय से संबंधित ऐसे अनुभव तथा अध्ययन सामग्री शामिल होती है जिसका अध्ययन एवं मनन करके विषय शिक्षण संबंधी विभिन्न उद्देश्यों की प्राप्ति सहज हो जाती है। विद्यार्थी इसी के सहारे विभिन्न प्रकार के अधिगम अनुभवों को प्राप्त करते हैं तथा शिक्षक इसके माध्यम से अपने शिक्षण को नियोजित करके अपने विद्यार्थियों को अपेक्षित अधिगम अनुभवों को ग्रहण करने में सहायता पहुँचाने का प्रयत्न करते हैं। सरल शब्दों में विद्यार्थियों के लिए विषय संबंधी शिक्षा ग्रहण करना तथा अध्यापकों का पढ़ाना विषय संबंधी पाठ्यवस्तु पर बहुत कुछ सीमा तक आधारित रहता है। हिंदी पाठ्यवस्तु के लिए भी इस प्रकार की सभी बातें समान रूप से लागू होती हैं। हिंदी विषय में किसी एक विशेष कक्षा स्तर पर क्या कुछ पढ़ाया जाए इसके चयन तथा आयोजन का कार्य हिंदी विषय के अध्ययन-अध्यापन द्वारा उस कक्षा स्तर विशेष के लिए निर्धारित शिक्षण उद्देश्यों को ध्यान में रखकर ही किया जाता है। हिंदी का स्थान विद्यालय पाठ्यक्रम के अन्य विषयों की तुलना में कहीं कुछ अधिक है क्योंकि यह केवल एक विषय मात्र ही नहीं बल्कि विभिन्न विषयों के बारे में ज्ञान प्राप्त करने का एक सशक्त माध्यम भी है। यह उन्हें संप्रेषण कला में पारंगत करता है और उचित संप्रेषण ही सीखने-सिखाने का एक सफलतम साधन है। विद्यार्थियों में सप्रेषण संबंधी सभी कौशलों—श्रवण, मौखिक अभिव्यक्ति पठन एवं लेखन का विकास करने के लिए ही हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं के अंशों को पाठ्यवस्तु के रूप में किसी कक्षा विशेष के हिंदी पाठ्यक्रम में स्थान दिया जाता है और यह सभी विषय सामग्री सामान्य रूप से हिंदी विषय शिक्षण हेतु कक्षा विशेष के लिए निर्धारित पाठ्यपुस्तकों जैसे गद्य सौरभ, पद्य पीयूष, व्याकरण मंजरी, निबंध संग्रह, एकांकी संग्रह, कथा सागर अथवा भाषा पुस्तक भाग-1, भाग-2, भाग-3 आदि के रूप में अध्यापक और विद्यार्थियों को उपलब्ध हो जाती है। अतः हिंदी पाठ्यवस्तु से सही रूप में अभिप्राय हिंदी शिक्षण हेतु किसी कक्षा विशेष के लिए निर्धारित पाठ्यक्रमानुसार विभिन्न पाठ्यपुस्तकों में उपलब्ध विषय सामग्री से ही होता है और इसी विषय सामग्री या पाठ्यवस्तु को ही उस कक्षा विशेष में हिंदी पढ़ने तथा पढ़ाने का आधार बनाकर हिंदी विषय के लिए निर्धारित शिक्षण उद्देश्यों को प्राप्त करने का विद्यार्थियों और अध्यापक द्वारा प्रयत्न किया जाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-GRant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिंदी पाठ्यवस्तु के शिक्षाशास्त्रीय विश्लेषण से अभिप्राय

(Meaning of the term Pedagogical analysis of the Subject matter of Hindi)

किसी कक्षा विशेष के लिए निर्धारित हिंदी पाठ्यवस्तु का शिक्षा शास्त्र के नियमों एवं सिद्धांतों को ध्यान में रखकर उचित रूप से विश्लेषण करना ही हिंदी पाठ्यवस्तु का शिक्षाशास्त्रीय विश्लेषण कहलाता है। प्रश्न उठता है कि शिक्षा शास्त्र के ये नियम एवं सिद्धांत क्या हैं जिनके आधार पर पाठ्यवस्तु का विश्लेषण किया जाता है और फिर विश्लेशण का यह संप्रत्यय अपने आपमें क्या है और यहाँ हिंदी शिक्षण की विषयवस्तु को लेकर उसका रूप कैसा हो सकता है आदि-आदि।

विश्लेषण का जैसा कि हम जानते हैं साधारण रूप में अर्थ होता है किसी वस्तु को उसके छोटे-छोटे परंतु सार्थक खंडों या इकाइयों में विभाजित करना। इस दृष्टि से हिंदी पाठ्यवस्तु के विश्लेषण का अर्थ होगा कि कक्षा विशेष के लिए निर्धारित हिंदी की पाठ्य सामग्री या विषयवस्तु को उपयुक्त विभागों, खंडों तथा इकाइयों में बाँटना। हिंदी भाषा शिक्षण की विभिन्न विधाओं जैसे गद्य, पद्य व्याकरण तथा रचना शिक्षण को लेकर एक तरह का विषयवस्तु विश्लेषण हमें उस कक्षा विशेष के लिए निर्धारित पाठ्यपुस्तकों तथा उनमें निहित पाठ विशेषों के रूप में स्वत: ही मिल जाता है। अब आगे जाकर फिर इन पाठों से संबंधित पाठ्य सामग्री को पुन: सार्थक खंडों या इकाइयों में विभक्त करने की आवश्यकता आ जाती है। अब इस विश्लेषण हेतु शिक्षा शास्त्र के सिद्धांतों एवं नियमों को साथ लेकर चलने की बात उठती है। आइए, देखें, शिक्षाशास्त्र (Pedagogy) इस बारे में क्या कहता है।

किसी भी विषय की कोई भी विषयवस्तु उस विषय विशेष के लिए किसी विशेष कक्षा में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए निर्धारित शिक्षण-अधिगम उद्देश्यों की पूर्ति हेतु ही बनी होती है। इस तरह अगर उदाहरण के लिए सातवीं कक्षा के हिंदी विषय के पाठ्यक्रम में हिंदी की विभिन्न विधाओं, गद्य, पद्य, व्याकरण, रचना आदि के रूप में जो भी विषय सामग्री शामिल की गई है वह सभी प्रकार से निर्धारित पाठ्यपुस्तकों में इस तरह संकलित और व्यवस्थित की गई है कि उससे सातवीं कक्षा में हिंदी शिक्षण के लिए निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति ठीक प्रकार से हो सके। पाठ्यपुस्तकों तथा पाठ्यक्रम में वर्णित इस विषयवस्तु का इस ढंग से सर्वोचित विश्लेषण किया जाना कि उससे निर्धारित शिक्षण-अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति सर्वोत्तम ढ़ग से हो सके शिक्षाशास्त्रीय विश्लेषण कहलाता है।

किसी कक्षा विशेष में पढ़ाए जानेवाले किसी विषय विशेष के लिए निर्धारित पाठ्यक्रमानुसार जो भी विषयवस्तु होती है उसे अधिकतर शिक्षक और विद्यार्थीगण निर्धारित पाठ्यपुस्तकों द्वारा उपलब्ध कर सकते हैं। साथ ही जैसी आवश्यकता हो इस विषय सामग्री को सहायक पुस्तकों, संदर्भ ग्रंथों, पत्र-पत्रिकाओं तथा सूचना के अन्य स्रोतों एवं साधनों द्वारा भी प्राप्त किया जाता रहता है। इस तरह शिक्षा शास्त्रीय विश्लेषण की पहली जरूरत यह होती है कि कक्षा-विशेष के किसी भी विषय के निर्धारित पाठ्यक्रमानुसार सभी आवश्यक विषय सामग्री को उपयुक्त विभागों तथा सार्थक खंडों या इकाइयों में विभक्त किया जाए। जैसे हिंदी में गद्य-शिक्षण, पद्य शिक्षण, व्याकरण शिक्षण तथा रचना शिक्षण आदि विभागों में पहले इसका विभाजन किया जाए तथा फिर इन विभागों में शामिल पाठ्यक्रम विषयों का विभिन्न पाठों, सार्थक खंडों या इकाइयों में विभाजन किया जाए। इस तरह का विभाजन शिक्षक और विद्यार्थियों को निर्धारित पाठ्यपुस्तकों के रूप में सहज ही प्राप्त हो जाता है। अब आगे का जो काम बचता है वह यही है कि पाठ्यपुस्तकों में संकलित और वर्णित इस विषयवस्तु को आगे दैनिक पाठ योजना निर्माण हेतु इस तरह विश्लेषित किया जाए कि उससे निर्धारित कक्षा अनुदेशनात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति ठीक ढंग से होती रहे। अत: कक्षा अध्यापक का कार्य सामान्य तौर पर पढ़ाए जानेवाले दैनिक पाठों

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की विषय सामग्री की इस तरह शिक्षा शास्त्रीय विश्लेषण करने तक सीमित हो जाता है कि प्रस्तुत पाठ के शिक्षण द्वारा निर्धारित शिक्षण-अधिगम या अनुदेशन उद्देश्यों की प्राप्ति सर्वोत्तम ढंग से हो सके। इस तरह किसी कक्षा विशेष में हिंदी शिक्षण हेतु जब भी कोई शिक्षक किसी प्रकरण या पाठ विशेष की विषयवस्तु का शिक्षाशास्त्रीय विश्लेषण करने के बारे में सोचता है तो उसे निम्न चार सोपानों का अनुसरण करके आगे बढ़ना होता है।

1. पाठ या प्रकरण विशेष की विषयवस्तु को छोटे-छोटे परंतु सार्थक खंडों या इकाइयों में विभक्त करना।

2. पाठ या प्रकरण विशेष की विषयवस्तु के संदर्भ में उचित अनुदेशनात्मक उद्देश्यों का निर्धारण करना।

3. निर्धारित अनुदेशनात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु विषयवस्तु के प्रस्तुतीकरण के लिए उचित विधियों, व्यूहरचनाओं, शिक्षण सहायक सामग्री आदि के उपयोग के बारे में निर्णय लेना।

4. पाठ या प्रकरण विशेष से संबंधित विषयवस्तु के शिक्षण या अनुदेशन के फलस्वरूप निर्धारित शिक्षण-अधिगम या अनुदेशनात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति में किस सीमा तक सफलता मिली इसका मूल्यांकन करना।

उपरोक्त चार सोपानों का अनुसरण करके हिंदी विषय के किसी प्रकरण या पाठ के शिक्षण हेतु एक शिक्षक के द्वारा आवश्यक विषयवस्तु का शिक्षाशास्त्रीय विश्लेषण कैसे किया जाता है इसे हम आगे कुछ उदाहरणों द्वारा स्पष्ट करना चाहेंगे।

उदाहरण-1

विषय—हिंदी गद्य

उपविषय—'पंचपरमेश्वर' कहानी

प्रथम सोपान :— पाठ्यवस्तु का विश्लेषण

पंचपरमेश्वर कहानी को गद्य पाठ के रूप में पढ़ाते समय पाठ्यवस्तु का विश्लेषण निम्न रूप में किया जा सकता है—

भाषा तत्वों का ज्ञान—

कठिन शब्दों का उच्चारण	— जिंदगी, प्रबंध, विश्वास, स्त्री, वस्त्र, गुजर, हड्डी, दुश्मन, न्याय, परमेश्वर, फैसला, आपत्ति
वर्तनी का ज्ञान	— प्रबंध, प्रश्न, ईमान, दुश्मन, परमेश्वर
नवीन शब्दों का अर्थ	— अपमान, आपत्ति, न्याय, परमेश्वर, फैसला।
मुहावरे	— दूध का दूध पानी का पानी, हड्डी डड्डी निकल आना।
उपसर्ग	— अप,
संधि	— स्वर संधि (परम + ईश्वर)
विलोम शब्द	— दुश्मन—मित्र, अपमान—आदर, न्याय—अन्याय, जिंदगी—मृत्यु, ईमान—बेईमान
विषयवस्तु का ज्ञान	—1. अलगू और जुम्मन-दो मित्र 2. जुम्मन की बूढ़ी मौसी द्वारा अपने खेत जुम्मन के नाम लिखवा देना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant.

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3. जुम्मन द्वारा मौसी को भोजन व वस्त्र देने का वचन देना।
4. जुम्मन की पत्नी द्वारा बूढ़ी मौसी का अपमान।
5. बूढ़ी मौसी द्वारा अलग रहने की व्यवस्था की माँग करना।
6. जुम्मन द्वारा इंकार करना
7. बूढ़ी मौसी द्वारा पंचायत बुलाना और अलगू चौधरी को सरपंच बनाना।
8. पंचायत द्वारा बूढ़ी मौसी के पक्ष में फैसला करना।
9. इस पर जुम्मन की अलगू से दोस्ती खत्म होना।
10. जुम्मन द्वारा अलगू से बदला लेने का उपाय सोचना।
11. समझू साहू का अलगू से बैल खरीदना।
12. चारापानी पूरा न देने तथा अधिक काम लेने से बैल की मृत्यु।
13. साहू द्वारा अलगू को बैल की कीमत देने से इंकार।
14. अलगू द्वारा पंचायत बुलाना और जुम्मन का सरपंच बनना।
15. मामले को सुनवाई के बाद जुम्मन द्वारा अलगू के पक्ष में फैसला दिया जाना।
16. पंच के मुख से परमेश्वर बोलता है यह बात जुम्मन द्वारा स्वीकार किया जाना और फिर से जुम्मन व अलगू का मित्र हो जाना।

इस प्रकार से पाठ्यवस्तु का भाषा तत्वों तथा विषयवस्तु बिंदुओं के रूप में विश्लेषण कराया जा सकता है।

द्वितीय सोपान

अनुदेशनात्मक उद्देश्यों का निर्धारण—संपूर्ण पाठ्यवस्तु का विश्लेषण करने के उपरांत उसके आधार पर शिक्षण द्वारा प्राप्त किए जानेवाले उद्देश्यों का निर्धारण किया जाता है अर्थात संपूर्ण पाठ पढ़ने के उपरांत छात्रों के व्यवहार में क्या परिवर्तन आएगा, इस बात का निश्चय किया जाता है।

उपरोक्त विषयवस्तु के अध्यापन के द्वारा छात्रों के अंतिम व्यवहार (Terminal behaviour) का निम्न स्वरूप होगा।

1. छात्र दिए गए कठिन शब्दों का शुद्ध उच्चारण करते हैं।
2. छात्र उपरोक्त शब्दों के शुद्ध रूप की पहिचान करते हैं।
3. छात्र लेखन कार्य के समय उपरोक्त शब्दों की शुद्ध वर्तनी का प्रयोग करते हैं।
4. छात्र उपरोक्त शब्दों का अर्थ बताते हैं।
5. छात्र बताए गए मुहावरों का अर्थ बताते हैं तथा उन्हें अपने वाक्यों में प्रयुक्त करते हैं।
6. छात्र अप उपसर्ग का प्रयोग कर नवीन शब्दों का निर्माण करते हैं।
7. छात्र उचित स्वर में शुद्ध उच्चारण करते हुए गद्यांश का सस्वर वाचन करते हैं।
8. छात्र अध्यापक द्वारा किए गए वाचन को ध्यानपूर्वक सुनते हैं।
9. छात्र अध्यापक कथन को ध्यानपूर्वक सुनकर उसका अर्थ समझने का प्रयास करते हैं।
10. छात्र अध्यापक द्वारा पूछे गए प्रश्नों को समझकर उनका उत्तर देते हैं।

CC0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

11. छात्र पूरी कहानी पढ़ने के उपरांत यह समझते हैं कि पंच को परमेश्वर क्यों कहा जाता है ?
12. छात्र न्याय, सत्य, मित्रता आदि सद्वृत्तियों को समझेंगे और अपने जीवन में उन्हें अपनाने का प्रयास करेंगे।
13. छात्र इसी प्रकार की अन्य कहानियों को रुचिपूर्वक पढ़ेंगे।
14. छात्र कहानी को अपने शब्दों में लिखते हैं।

तृतीय सोपान

शिक्षण विधि एवं प्रक्रिया आदि का निर्धारण—अनुदेशनात्मक उद्देश्यों का निर्धारण करने के उपरांत अध्यापक को इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए शिक्षण प्रक्रिया की योजना बनानी चाहिए अर्थात प्रत्येक उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कक्षा में अध्यापक को किस शिक्षण प्रक्रिया को अपनाना होगा, कक्षा में अध्यापक छात्र अंतर्क्रिया का क्या स्वरूप होगा ? अध्यापक क्या करेगा ? छात्र क्या करेंगे ? आदि निर्णय इस सोपान में लिए जाते हैं। उपरोक्त पाठ्यवस्तु द्वारा निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए निम्न शिक्षण प्रक्रिया नियोजित की जा सकती है—

1. आदर्श वाचन—बच्चों को शुद्ध उच्चारण का ज्ञान कराने के लिए अध्यापक सर्वप्रथम स्वयं निर्धारित पाठ का सस्वर वाचन करेगा और छात्र ध्यानपूर्वक सुनकर शब्दों का शुद्ध उच्चारण तथा वाचन का ढंग देखेंगे तथा समझेंगे।

2. अनुकरण वाचन—स्वयं वाचन करने के उपरांत अध्यापक कक्षा के कतिपय छात्रों को सस्वर वाचन करने का निर्देश देता है। बच्चे निर्देशानुसार वाचन करते हैं, तथा ध्यान से सुनते हैं। इसी समय शुद्ध उच्चारण का अभ्यास भी कराया जाता है।

3. वर्तनी विश्लेषण—आदर्श वाचन तथा अनुकरण वाचन के समय ही अध्यापक श्यामपट्ट पर कठिन शब्दों की वर्तनी का विश्लेषण करता है और छात्र ध्यान से देखकर शुद्ध वर्तनी समझते हैं और शुद्ध वर्तनी का अभ्यास करते हैं।

4. शब्दार्थ—गद्य पाठ में आए हुए कठिन तथा नवीन शब्दों का अर्थ स्पष्ट करने के लिए अध्यापक विभिन्न विधियों की सहायता लेता है, जैसे—

अपमान का अर्थ स्पष्ट करने के लिए उपसर्ग विग्रह
आपत्ति का अर्थ स्पष्ट करने के लिए वाक्य प्रयोग
न्याय का अर्थ स्पष्ट करने के लिए विलोम शब्द
परमेश्वर का अर्थ स्पष्ट करने के लिए संधि विच्छेद
फैसला का अर्थ स्पष्ट करने के लिए वाक्य प्रयोग

इसी प्रकार मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करने के लिए भी वाक्य प्रयोग, प्रदर्शन, प्रसंग कथन अथवा प्रतीकात्मक शब्द स्पष्टीकरण आदि विधि की सहायता ली जा सकती है। छात्र नए शब्दों व मुहावरों का अर्थ समझते हैं और अपनी-अपनी पुस्तिका में लिखते हैं।

5. विषयवस्तु का ज्ञान कराने के लिए पाठ्यवस्तु से संबंधित घटनाओं एवं तथ्यों को आधार बनाकर विश्लेषणात्मक एवं संश्लेषणात्मक प्रश्नों की सहायता ली जा सकती है, साथ ही कहानी के पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं से संबंधित प्रश्न भी पूछे जा सकते हैं। इसी समय छात्रों की कल्पना शक्ति एवं सृजनात्मक शक्ति का विकास करने के लिए कल्पनात्मक प्रश्न भी पूछे जा सकते हैं। उपरोक्त कहानी की विषयवस्तु का ज्ञान कराने के लिए निम्न प्रश्न बच्चों से पूछे जा सकते हैं—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant.

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रश्न—1. अलगू और जुम्मन कौन थे ?

2. जुम्मन की मौसी ने अपने खेत किसके नाम लिखवा दिए ?
3. बदले में जुम्मन ने मौसी से क्या वादा किया ?
4. जुम्मन के घर पर अपमानित होने पर बूढ़ी मौसी ने क्या किया ?
5. बूढ़ी मौसी द्वारा पंचायत बुलाने पर सरपंच कौन बना ?
6. बुढ़िया ने अलगू से क्या कहा ?
7. जुम्मन ने अलगू के पंच बनने पर क्या सोचा होगा ?
8. अलगू ने पंच बनने पर किसके पक्ष में फैसला दिया ?
9. जुम्मन ने अलगू से बदला लेने के लिए क्या किया होगा ?
10. यदि अलगू बुढ़िया का कहना नहीं मानता और जुम्मन के पक्ष में फैसला कर देता है तो आपको कैसा लगता ?
11. समझू साहू का बैल क्यों मर गया ?
12. समझू साहू ने बैल मर जाने पर क्या सोचा ?
13. जुम्मन ने पंच बनने पर क्या फैसला दिया ?
14. जुम्मन ने अलगू के पक्ष में फैसला क्यों दिया ?
15. जुम्मन और अलगू दोनों फिर से दोस्त कैसे हो गए ?
16. जुम्मन और अलगू दोनों के फैसले आपको अच्छे क्यों लगे ?

इस प्रकार प्रश्नोत्तर विधि की सहायता से पाठ की संपूर्ण विषयवस्तु का ज्ञान बच्चों को कराया जा सकता है। अध्यापक बीच-बीच में अपने कथन के द्वारा कठिन स्थल की व्याख्या भी कर सकता है। तदुपरांत बच्चों से पूरी कहानी अपने शब्दों में सुनाने के लिए भी कहा जा सकता है। बीच-बीच में कुछ कल्पनात्मक प्रश्न भी पूछे जा सकते हैं।

चतुर्थ सोपान

मूल्यांकन तकनीक का निर्धारण—मूल्यांकन की यह प्रक्रिया संपूर्ण शिक्षण प्रक्रिया के दौरान चलती रहती है तथा पाठ पूरा होने के उपरांत पाठ की आवृत्ति के द्वारा तथा गृहकार्य के द्वारा भी छात्रों के ज्ञान की जाँच की जा सकती है, जैसे—

श्रवण कौशल परीक्षण	— अध्यापक के आदर्श वाचन को छात्र ध्यानपूर्वक सुनेंगे।
उच्चारण कौशल परीक्षण	— अनुकरण वाचन को सुनकर
वर्तनी कौशल परीक्षण	— वर्तनी लिखवाकर
नए शब्दों के अर्थ	— नए शब्दों का अर्थ पूछकर तथा उन्हें वाक्य में प्रयोग करवाकर।
व्याकरण संबंधी ज्ञान का परीक्षण	— छात्रों से 'अप' उपसर्ग का प्रयोग कर अन्य शब्द पूछकर। स्वर संधि के अन्य उदाहरण पूछकर, विलोम शब्द पूछकर।
विषय वस्तु के ज्ञान का परीक्षण	— छात्रों से लघु उत्तरात्मक प्रश्न पूछकर। कुछ छात्रों से कहानी सुनकर। आवृत्यात्मक प्रश्न पूछकर। गृह कार्य देकर।

भाषा और साहित्य में रुचि का परीक्षण — अन्य कहानियों को पढ़ने की रुचि देखकर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सद्वृत्तियों के विकास का परीक्षण — छात्रों का व्यवहार देखकर

लेखन कौशल का परीक्षण — 'पंचपरमेश्वर' कहानी को छात्रों द्वारा अपने शब्दों में लिखवाकर।

अंत में इन सभी बातों के विधिवत मूल्यांकन हेतु इकाई परीक्षण (Unit test) तकनीक का भी प्रयोग किया जा सकता है।

उदाहरण-2

विषय—हिंदी कविता

उपविषय—'क्षमा'

विषयवस्तु या पाठ्य सामग्री

सच पूछो तो शर में ही, बसती है दीप्ति विनय की।
संधि-वचन संपूज्य उसी का, जिसमें शक्ति विजय की।
सहनशीलता क्षमा दया को, तभी पूजता जग है।
बल का दर्प चमकता उसके, पीछे जग जागरण है।
जहाँ नहीं सामर्थ्य शोध की, क्षमा वहाँ निष्फल है।
गरल-घूँट पी जाने का, मिस है, बाणी का छल है।
फलक क्षमा की आड़ छिपाते, जो अपनी कायरता।
वे क्या जानें ज्वलित प्राण, जन की पौरुष-निर्भरता ?

प्रथम सोपान :

पाठ्य सामग्री का विश्लेषण

भाव बिंदुओं का निर्धारण

(अ) भाव सौंदर्य—कविता के मार्मिक स्थलों की पहचान करके भाव सौंदर्य की अनुभूति करायी जाएगी। इसके लिए कविता के निम्न मार्मिक स्थलों का चयन किाय जाएगा :—

(i) शर में ही बसती..........दीप्ति विनय की।
(ii) संधि वचन.............शक्ति विजय की।
(iv) गरल घूँट...........वाणी का छल है।
(v) वे क्या जानें.........पौरुष निर्भरता।

(ब) कला-सौंदर्य

(i) शब्द-सौंदर्य — दीप्ति, संधि-वचन, संपूज्य, दर्प, गरल-घूँट, मिस, सामर्थ्य शोध की, वाणी का छल, ज्वलित प्राण, जन की पौरुष निर्भरता।

(ii) नाद-सौंदर्य — लय सौंदर्य, ध्वनि सौंदर्य-वाचन द्वारा काव्यानंद-अनुभूति।

(iii) रस-सौंदर्य — विनय, क्षमा, दया के भावों की अभिव्यक्ति के साथ वीरोचित कदम उठाने की दिशा प्रदान करना तथा वीररस भाव की अनुभूति कराना।

(iv) विरोधाभास संबंधी शब्दावली का सौंदर्य — शर में ही दीप्ति विनय की।
बल का दर्प चकमता।
जहाँ नहीं सामर्थ्य शोध की, क्षमा वहाँ निष्फल है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(v) भावाभिव्यक्ति — मार्मिक स्थल।

(vi) सद्वृत्यात्मक सौंदर्य — सहनशीलता, क्षमा, दया, त्याग, तप, बल आदि सद्वृत्तियाँ।

द्वितीय सोपान

अनुदेशनात्मक उद्देश्यों का निर्धारण

कविता की विषयवस्तु का विश्लेषण करने के उपरांत उससे संबंधित अनुदेशनात्मक उद्देश्यों को निश्चित किया जाता है। शिक्षण के उपरांत छात्रों के व्यवहार में जो परिवर्तन आएगा और वे जिस प्रकार का व्यवहार प्रदर्शित करेंगे, उन्हें निम्न प्रकार से लिखा जा सकता है।

(अ) कौशलात्मक उद्देश्य

(i) छात्र अध्यापक द्वारा किए गए काव्य-पाठ को ध्यानपूर्वक सुनकर उसका भाव समझने का प्रयास करते हैं।

(ii) छात्र उचित स्वर, ताल और लय में कविता का अनुकरण वाचन करते हैं।

(iii) छात्र कविता के वाचन के साथ-साथ कविता में निहित भावों की अनुभूति करते हैं।

(iv) छात्र कविता में निहित मार्मिक स्थलों की पहचान करते हैं।

(v) छात्र मार्मिक स्थलों की पहचान कर कविता में निहित भाव-सौंदर्य की अनुभूति करते हैं।

(आ) ज्ञानात्मक उद्देश्य

(i) छात्र कवि द्वारा की गई क्षमा की व्याख्या से परिचित होते हैं।

(ii) कवि द्वारा की गई 'क्षमा' की व्याख्या का वर्तमान समय में क्या औचित्य है, छात्र इस तथ्य को समझने का प्रयास करते हैं।

(iii) छात्र रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित कुरुक्षेत्र काव्य की कथा का सामान्य ज्ञान प्राप्त करते हैं।

(इ) सौंदर्यानुभूति उद्देश्य

(i) छात्र कविता में निहित दर्प, दीप्ति, गरल घूँट, वाणी का छल, ज्वलित आदि शब्दों का अर्थ समझते हैं।

(ii) उपरोक्त शब्दों का अर्थ जानकर शब्द-सौंदर्य की अनुभूति करते हैं।

(iii) कविता की पंक्तियों के अंतिम वर्ण की आवृत्ति से नाद-सौंदर्य का अनुभव करते हैं।

(iv) कविता के मार्मिक स्थलों को पहचानकर कविता में निहित भाव-सौंदर्य की अनुभूति करते हैं।

(v) लयात्मक वाचन द्वारा काव्यानंद की अनुभूति करते हैं।

(vi) छात्र उन शब्दों के सौंदर्य की अनुभूति करते हैं जो अपने प्रचलित भावों से गहन विरोधी भाव को अभिव्यक्त करते हैं।

(ई) सद्वृत्त्यात्मक उद्देश्य

(i) छात्र दया, क्षमा, त्याग, विनय आदि सद्वृत्तियों के वास्तविक मूल्य को पहचानते हैं।

(ii) छात्र इन गुणों को अपने जीवन में सही रूप में उपयोग करने के लिए प्रेरित होते हैं।

(उ) रुच्यात्मक उद्देश्य

(i) 'क्षमा' नामक कविता के अध्ययन से दिनकर द्वारा रचित काव्य ग्रंथ 'कुरुक्षेत्र' को पढ़ने में रुचि लेते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ऊ) सृजनात्मक उद्देश्य

(i) कविता का अध्ययन करने के पश्चात छात्र दया, क्षमा, त्याग आदि गुणों का वास्तविक भाव मौलिक रूप में अभिव्यक्त करते हैं।

(ii) छात्र स्पष्ट करते हैं कि त्याग, तप, क्षमा की बात कायर करते हैं। यदि शक्तिशाली व्यक्ति इन गुणों की बात करता है तभी इन गुणों का वास्तविक मूल्य स्पष्ट होता है।

तृतीय सोपान

शिक्षण विधि एवं प्रक्रिया का निर्धारण

अनुदेशनात्मक उद्देश्यों का निर्धारण करने के उपरांत शिक्षक को संबंधित पाठ्यवस्तु कक्षा में प्रस्तुत करने और छात्रों के व्यहार में वांछित परिवर्तन लाने के लिए अपनी शिक्षण विधि और प्रक्रिया का स्पष्टीकरण भी करना होता है। किस बिंदु को स्पष्ट करने और किस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए कौन-सी विधि का प्रयोग किया जाएगा, किस समय कौन-सी सहायक सामग्री उपयोग में लाई जाएगी तथा अध्यापक क्रिया क्या होगी और प्रत्युत्तर में छात्र किस प्रकार की अनुक्रिया करेंगे ?

उपरोक्त पाठ्यवस्तु को कक्षा में प्रस्तुत करने और उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए एक अध्यापक निम्न शिक्षण विधि और प्रक्रिया को अपना सकता है—

पाठ की प्रस्तावना और उपविषय की घोषणा के उपरांत शिक्षक शिक्षण कार्य का प्रारंभ करेगा।

आदर्श वाचन—शिक्षक उचित स्वर, गति, ताल, लय आदि का ध्यान रखते हुए कविता का भावानुकूल वाचन करेगा। छात्र अध्यापक के वाचन को ध्यानपूर्वक सुनेंगे और कविता का भाव समझने का प्रयास करेंगे।

अनुकरण वाचन—कक्षा के कतिपय छात्रों से कविता का भावानुकूल सस्वर वाचन कराया जाएगा।

शब्दार्थ व्याख्या—अध्यापक श्यामपट्ट पर शब्दों का अर्थ लिखेगा और शब्द-सौंदर्य की अनुभूति कराएगा।

शब्द	—	**अर्थ**
शर	—	वाण
दीप्ति	—	शोभा, चमक
संधिवचन	—	समझौते का वचन
दर्प	—	तेज
सामर्थ्य शोध की	—	बदला लेने की शक्ति
निष्फल	—	बेकार, व्यर्थ
गरल घूँट	—	विष का घूँट
मिस	—	बहाना

छात्र शब्दों का अर्थ समझकर शब्द-सौंदर्य का अनुभव करेंगे।

नाद-सौंदर्य—अध्यापक क्षमा कविता के प्रथम पद के द्वितीय एवं चतुर्थ चरण के अंत में ''विनय की, विजय की'', द्वितीय पद के द्वितीय तथा चतुर्थ चरण के अंत में ''जग है, जागरण है'', तृतीय पद के द्वितीय तथा चतुर्थ चरण के अंत में ''निष्फल है, छल है'' तथा चतुर्थ पद के द्वितीय तथा चतुर्थ चरण के अंत में ''कायरता, निर्भरता'' शब्दों के प्रयोग से होनेवाले नाद एवं ध्वनि-सौंदर्य को स्पष्ट करेगा। छात्र ध्यानपूर्वक सुनेंगे और काव्य का आनंद लेंगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भाव-विश्लेषण—कविता में व्यक्त भावों को स्पष्ट करने तथा छात्रों को भाव एवं रस सौंदर्य का अनुभव कराने के लिए अध्यापक प्रश्नोत्तर एवं व्याख्या विधि की सहायता से शिक्षण प्रक्रिया को आगे विकसित करेगा। छात्र प्रश्नों को ध्यान से सुनकर उत्तर देंगे।

प्रश्न 1. ''सच पूछो तो शर में ही बसती है दीप्ति विनय की।'' इस पंक्ति के अनुसार विनय की दीप्ति कहाँ बसती है ? (शर में)

2. विनय की दीप्ति से कवि का क्या अभिप्राय है ? (विनय की शोभा)

3. कवि ने विनय की दीप्ति को शर में स्थित क्यों माना है ? (व्याख्या)

अध्यापक कथन—कवि ने विनय की चमक एवं कांति को शर में स्थित इसलिए माना है क्योंकि वीर व्यक्ति बाण विद्या में निपुण होता हुआ भी विनयी होता है। (छात्र समझेंगे)

प्रश्न० 4. कवि ने किसके संधि वचन को पूज्य एवं महत्त्वपूर्ण माना है ?

(जिसके पास विजय की शक्ति हो)

5. 'शक्ति विजय की' से कवि का क्या तात्पर्य है ? (जिसके पास जीतने की शक्ति हो)

6. कवि ने विजयी के संधि वचनों को संपूज्य क्यों कहा है ? (व्याख्या)

अध्यापक कथन — विजयी व्यक्ति सामर्थ्यवान होने पर मित्रता का हाथ बढ़ाकर शत्रु को अपनाता है इसलिए विजेता के संधि वचनों को संपूज्य माना है।

(छात्र सुनकर भाव-सौंदर्य का अनुभव करते हैं)

प्रश्न. 7 कवि के अनुसार सहनशीलता, क्षमा, दया आदि गुण किसको शोभा देते हैं ?

(बलवान को)

8. इन गुणों का बलवान से क्या संबंध है ? (व्याख्या)

अध्यापक कथन—यदि शक्तिहीन व्यक्ति सहनशीलता, क्षमा, दया की बात करता है तो ठीक है क्योंकि उसमें विरोध का सामना करने की शक्ति ही नहीं है। परंतु यदि बलवान व्यक्ति शक्ति के होते हुए भी सहनशील है और दया तथा क्षमा की बात करे तो वास्तव में इन गुणों का मूल्य बढ़ जाता है। शिक्षक यहाँ तुलनात्मक पंक्तियों का भी प्रयोग कर सकता है।

''क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल है। (छात्र सुनते हैं और समझते हैं)
उसको क्या जो दंत हीन विषहीन, विनीत सरल है॥''

(दिनकर)

प्रश्न 9. क्षमा कहाँ निष्फल हो जाती है ? (जहाँ बदले की सामर्थ्य ही नहीं होती)

10. 'सामर्थ्य शोध की' से कवि का क्या अभिप्राय है ? (बदला लेने की शक्ति)

11. 'गरल घूँट' से क्या तात्पर्य है ? (अपमान सहना)

12. 'वाणी का छल' इसका भाव स्पष्ट कीजिए।

(बड़ी-बड़ी बातें बनाकर अपने आपको धोखे में रखना)

13. शक्तिहीन व्यक्ति क्षमा का सहारा क्यों लेते हैं ? (जिससे लोग उन्हें कायर न कहें)

14. कायर क्या नहीं जानते हैं ? (पौरुष को)

15. ज्वलित प्राण से क्या अभिप्राय है ? (जलते हुए प्राण, दीप्तिमान प्राण)

16. ''जन की पौरुष निर्भरता'' से कवि का क्या आशय है ? (व्याख्या)

अध्यापक कथन—जो व्यक्ति शक्तिहीन और कायर हैं वे पुरुषत्व को प्रमुखता देनेवाले और दीप्तिमान, प्रज्वलित प्राणों तथा उत्साहवाले व्यक्ति की शक्ति को नहीं समझ सकते हैं क्योंकि पौरुष को

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
महत्त्व देनेवाले व्यक्ति विजय को ही अपना लक्ष्य मानते हैं जबकि शक्तिहीन व्यक्ति अपमानित होकर भी क्षमा की बात कहकर अपने को धोखे में रखते हैं।

(छात्र ध्यानपूर्वक सुनकर कविता के वीरोचित भाव-सौंदर्य का अनुभव करते हैं।)

पुनः आदर्श वाचन — छात्रों को कविता में निहित भावों का समग्र रूप में अनुभव कराने के लिए अध्यापक एक बार फिर भावानुकूल आदर्श वाचन करेगा।

(छात्र सुनकर काव्य का आनंद लेंगे और भावानुभूति करेंगे)

पुनः अनुकरण वाचन — बच्चों को काव्य-सौंदर्य का अनुभव कराने के लिए पुनः कुछ छात्रों से कविता का सस्वर वाचन कराया जाएगा।

चतुर्थ सोपान—मूल्यांकन

पूर्ण निर्धारित अनुदेशनात्मक उद्देश्यों के आधार पर छात्रों में आए हुए व्यवहारगत परिवर्तनों का मूल्यांकन करने के लिए निम्न मूल्यांकन प्रक्रिया को अपनाया जा सकता है जो कि शिक्षण प्रक्रिया के दौरान चलती रहेगी—

(i) अनुकरणवाचन—छात्र कविता का सस्वर वाचन करेंगे जिससे उनकी वाचन क्षमता का परीक्षण होगा।

(ii) विश्लेषणात्मक प्रश्न—कविता शिक्षण के बीच-बीच में शब्द-सौंदर्य, नाद-सौंदर्य एवं भाव-सौंदर्य बोध का परीक्षण करने के लिए विभिन्न प्रकार के विश्लेषणात्मक, संश्लेषणात्मक एवं व्याख्यात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे—

प्रश्न 1. प्रथम पद में वे कौन से शब्द हैं जो विपरीत अर्थ रखते हुए भी समान भाव की अभिव्यक्ति में सहायक हैं? (शर में बसती है दीप्ति विनय की)

प्रश्न 2. कविता में नाद-सौंदर्य की वृद्धि करनेवाले तुकांत शब्द कौन-कौन से हैं?

(प्रथम पद — की।
द्वितीय पद — है।
तृतीय पद — है।
चतुर्थ पद — ता।)

प्रश्न 3. कविता में वीर भावों की अभिव्यक्ति करनेवाली पंक्तियाँ कौन-कौन सी हैं?

(क) शर में ही...........दीप्ति विनय की।

(ख) संधि वचन संपूज्य...........विजय को।

(ग) बल का दर्प.............जागरण है।

(घ) वे क्या जानें.............पौरुष निर्भरता।

(iii) पुनरावृत्ति—पाठ पूरा हो जाने के उपरांत आवृत्ति के समय प्रश्नों की सहायता से भी छात्रों के व्यवहारगत परिवर्तनों का परीक्षण किया जा सकता है। इस समय अध्यापक निम्न आवृत्यात्मक प्रश्न पूछ सकता है—

1. कवि ने शक्ति को विनय, दया एवं क्षमा का द्योतक क्यों माना है?
2. कवि दुष्टों का दमन करने के लिए किसका सहारा लेने की बात कह रहा है?
3. प्रस्तुत कविता के रचयिता कौन हैं?
4. कवि देशवासियों को क्या बनने की प्रेरणा दे रहा है?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

5. इस कविता में किस रस का चित्रण किया गया है?

(iv) गृहकार्य—(क) छात्रों की कविता में रुचि जाग्रत करने के लिए अध्यापक उनसे कविता के रुचिकर अंशों को कंठस्थ करके आने के लिए कहेगा।

(ख) कवि दिनकर द्वारा रचित 'कुरुक्षेत्र' काव्य पढ़ने और रुचिकर अंशों को संगृहीत करने के लिए कहेगा।

उदाहरण—3

विषय—हिंदी (व्याकरण)

उपविषय—विशेषण की परिभाषा

प्रथम सोपान

पाठ्यवस्तु का विश्लेषण

1. उदाहरण वाक्य—(i) यह लाल फ्रॉक है।
(ii) रमा को पीली कलम मिली।
(iii) श्यामपट्ट चौकोर है।
(iv) श्यामपट्ट काला है।
(v) वह मोटा है।
(vi) इंजन बड़ी-बड़ी रेलगाड़ी खींच ले जाता है।
(vii) इस पुस्तक में सत्यवादी राजा हरिशचंद्र की कथा छपी है।
(viii) इस कविता में वीर राणा प्रताप की लड़ाई का वर्णन है।
2. (क) उदाहरण वाक्यों में से संज्ञावाची शब्द
(ख) उदाहरण वाक्यों में से सर्वनाम शब्द
(ग) उदाहरण वाक्यों में से रंग गुण बतानेवाले शब्द
(घ) उदाहरण वाक्यों में से आकार गुण बतानेवाले शब्द
(च) उदाहरण वाक्यों में से चरित्र गुण बतानेवाले शब्द
3. विशेषण की परिभाषा
4. कुछ अन्य उदाहरण (परीक्षण के लिए)

द्वितीय सोपान

अनुदेशनात्मक उद्देश्यों का निर्माण

1. छात्र वर्णों, शब्दों और वाक्यों के शुद्ध रूप का प्रयोग करते हैं ?
2. छात्र भाषा के सर्वमान्य रूप का प्रयोग करने की क्षमता रखते हैं।
3. मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति के समय छात्र शुद्ध भाषा का प्रयोग करते हैं।
4. छात्रों में भाषा के गुण-दोषों को परखने की क्षमता है।
5. छात्र संज्ञा शब्दों को पहचानने की योग्यता रखते हैं।
6. छात्र सर्वनाम शब्दों को पहचानने की योग्यता रखते हैं।
7. छात्र व्याकरण के नियमों की जानकारी प्राप्त करने में रुचि लेते हैं।
8. छात्र विशेषण शब्दों का प्रत्यास्मरण करते हैं।
9. छात्र विशेषण की परिभाषा का प्रत्यास्मरण करते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

10. छात्र दिए गए गद्यांश में से विशेषण शब्दों का चयन करते हैं।

11. छात्र संज्ञा और विशेषण शब्दों में अंतर बताते हैं।

तृतीय सौपान

अनुदेशनात्मक प्रक्रिया अथवा शिक्षण विधि

अनुदेशनात्मक उद्देश्यों का निर्धारण करने के उपरांत अध्यापक पाठ्यपुस्तक को कक्षा में प्रस्तुत करने के लिए अपनी शिक्षण प्रक्रिया के बारे में निर्णय लेता है। अर्थात वह यह नियोजन करता है कि वह पाठ्यवस्तु के किस अंश को स्पष्ट करने के लिए किस विधि का प्रयोग करेगा, किस समय कौन सी सहायक सामग्री का प्रयोग करेगा, कक्षा में शिक्षक और छात्रों में क्या अंतर्क्रिया होगी। इसके लिए अध्यापक निम्न प्रक्रिया का निर्धारण कर सकता है—

1. प्रस्तावना—अध्यापक सर्वप्रथम रेलगाड़ी का चित्र दिखाते हुए बच्चों से कहेगा—"इंजन बड़ी-बड़ी रेलगाड़ी खींच ले जाता है।" इस वाक्य में संज्ञा शब्द कौन कौन से हैं? (इंजन, रेलगाड़ी)

दूसरा प्रश्न पूछेगा—इंजन कैसी रेलगाड़ी खींच ले जाता है। (बड़ी-बड़ी)

तीसरा प्रश्न पूछेगा—बड़ी-बड़ी शब्द से किसकी विशेषता मालूम पड़ती है? (रेलगाड़ी की)

2. पाठ्य विषय की घोषणा—अध्यापक बताएगा कि आज हम संज्ञा शब्दों के साथ लगनेवाले इस प्रकार के शब्दों के बारे में पढ़ेंगे।

3. प्रस्तुतीकरण—अब अध्यापक लपेट फलक या चार्ट पर लिखे हुए वाक्य कक्षा में प्रदर्शित करेगा और प्रत्येक वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम शब्द छाँटने और उनकी विशेषता बताने वाले शब्दों को बताने के लिए प्रश्न पूछेगा और उन्हें श्यामपट्ट पर लिखेगा।

(क) (उदाहरणों का विश्लेषण एवं संश्लेशण)--

1. प्रथम वाक्य में लाल शब्द किसका रंग बता रहा है? (फ्राक का)
2. फ्राक शब्द व्याकरण की दृष्टि से क्या है? (संज्ञा)

(छात्र सभी वाक्यों को ध्यान से पढ़ेंगे और अध्यापक द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देंगे।)

3. दूसरे वाक्य में रमा को किस रंग की कलम मिली? (पीली)
4. 'कलम' शब्द व्याकरण की दृष्टि से क्या है? (संज्ञा)
5. तीसरे वाक्य में संज्ञा शब्द कौन सा है? (श्यामपट्ट)
6. कौन सा शब्द श्यामपट्ट का आकार बता रहा है? (चौकोर)
7. चौथे वाक्य में कौन सा शब्द श्यामपट्ट के रंग की विशेषता बता रहा है? (काला)
8. पाँचवे वाक्य में 'वह' शब्द व्याकरण की दृष्टि से क्या है? (सर्वनाम)
9. कौन सा शब्द 'वह' का आकार बता रहा है? (मोटा)
10. सातवें वाक्य में राजा हरिश्चंद्र की क्या विशेषता बताई गई है? (सत्यवादी)
11. आठवें वाक्य में कविता में किसकी लड़ाई का वर्णन किया गया है? (राणा प्रताप)
12. राणा प्रताप कैसे राजा थे? (वीर)
13. राणा प्रताप शब्द व्याकरण की दृष्टि से क्या है? (संज्ञा)
14. राजा हरिश्चंद्र शब्द व्याकरण की दृष्टि से क्या है? (संज्ञा)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इसका श्यामपट्ट कार्य निम्न प्रकार होगा

संज्ञा / सर्वनाम	**विशेषता**
फ्राक-संज्ञा	लाल-रंग गुण
कलम-संज्ञा	पीली-रंग गुण
श्यामपट्ट-संज्ञा	चौकोर-आकार गुण
	काला-रंग गुण
वह-सर्वनाम	मोटा-आकार गुण
राजा हरिश्चंद्र-संज्ञा	सत्यवादी-चरित्र गुण
राणा प्रताप-संज्ञा	वीर-बहादुरी का गुण

(सामान्यीकरण)—अध्यापक उपरोक्त विश्लेषण करने के उपरांत छात्रों के सहयोग से विशेषण की परिभाषा निकलवाएगा और श्यामपट्ट पर लिखेगा।

अध्यापक कथन — इस प्रकार लाल, पीली, चौकोर, काला, मोटा, सत्यवादी एवं वीर शब्द क्रमशः फ्राक, कलम, श्यामपट्ट, वह, राजा हरिश्चंद्र एवं राणा प्रताप संज्ञा एवं सर्वनाम शब्दों की विशेषता प्रकट करते हैं।

संज्ञा और सर्वनाम शब्दों की विशेषता प्रकट करनेवाले शब्दों को विशेषण कहते हैं।

(छात्र विशेषण की परिभाषा निकालने में सहयोग देंगे एवं परिभाषा अपनी-अपनी अभ्यास पुस्तिकाओं में लिखेंगे।)

(ग) नियम का परीक्षण— अब अध्यापक लपेट पट्ट पर लिखे हुए कुछ वाक्य या श्यामपट्ट पर कुछ वाक्य लिखकर छात्रों से उन वाक्यों में से विशेषण शब्द छाँटने के लिए कहेगा। (छात्र वाक्यों को मन में पढ़कर विशेषण शब्द बताएँगे।)

वाक्य—1. गांधी जी बचपन से ही तेजस्वी बालक थे।
2. पहाड़ी मार्ग पर चलना कठिन होता है।
3. मोहन के पास सफेद गाय है।
4. रमा नया बस्ता लाई है। (तेजस्वी, पहाड़ी, सफेद, नया)

अध्यापक छात्रों द्वारा बताए गए शब्द श्यामपट्ट पर लिखेगा और विशेष्य तथा विशेषण शब्दों में संबंध स्पष्ट करेगा—

प्रश्न.1 तेजस्वी शब्द किसकी विशेषता बता रहा है? (गांधी जी की बालक)
2. पहाड़ी शब्द विशेषण क्यों है? (क्योंकि यह मार्ग की विशेषता बता रहा है।)
3. गाय का क्या गुण बताया है। (सफेद-रंग का गुण)
4. नया शब्द किसकी विशेषता बता रहा है? (बस्ते की)

श्यामपट्ट कार्य—

संज्ञा / सर्वनाम	**विशेषता**
बालक	तेजस्वी : चरित्र गुण
मार्ग	पहाड़ी : स्थान गुण
गाय	सफेद : रंग गुण
बस्ता	नया : वस्तु गुण

अध्यापक पूछेगा विशेषण किसे कहते हैं? (छात्र उत्तर देंगे।)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

5. संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतानेवाले शब्दों को विशेषण कहते हैं।

चतुर्थ सोपान

मूल्यांकन — पाठ के विकास के साथ-साथ प्रश्नों के द्वारा छात्रों का मूल्यांकन किया जाता रहेगा। इसके अलावा कुछ उदाहरण देकर उनमें से संज्ञा व विशेषण शब्दों को छाँटने के लिए पूछा जा सकता है। नियम के परीक्षण के समय पाठांतर मूल्यांकन किया गया है। पाठोपरांत निम्न आवृत्यात्मक प्रश्नों की सहायता से तथा गृहकार्य के द्वारा भी मूल्यांकन किया जा सकता है।

आवृत्त्यात्मक प्रश्न

1. राम अच्छा लड़का है? इस वाक्य में अच्छा शब्द किसकी विशेषता बता रहा है? (लड़का)
2. लड़का शब्द व्याकरण की दृष्टि से क्या है? (संज्ञा)
3. संज्ञा की विशेषता बतानेवाले शब्दों को क्या कहते हैं। (विशेषण)
4. विशेषण की परिभाषा बताओ।

गृहकार्य—छात्रों से अपनी पाठ्यपुस्तक के पाँचवें अध्याय में से 10 विशेषण शब्द छाँटकर लाने के लिए कहा जाएगा।

इसके अलावा निम्न प्रश्न दिया जा सकता है :—

प्रश्न—निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति विशेषण शब्दों से करें—

(क) मेरा पैन..................स्याही का है।

(ख) सीता.....................गाना गा रही है।

(ग) उसके पास..............पुस्तकें हैं।

(घ) इस पेड़ पर.............अमरूद लगे हैं।

(च) वह बाजार से...........स्वेटर खरीद कर लाया।

अध्ययन के लिए प्रश्न

1. हिंदी की पाठ्यवस्तु (Content or Subject matter of Hindi) से क्या अभिप्राय है?

2. हिंदी पाठ्यवस्तु के शिक्षाशास्त्रीय विश्लेषण (Pedagogical analysis) से क्या अभिप्राय है?

3. माध्यमिक कक्षाओं के हिंदी पाठ्यक्रम में से किसी एक गद्य या पद्य पाठ का शिक्षा-शास्त्रीय विश्लेषण कैसे किया जा सकता है? उदाहरण सहित स्पष्ट करें।

4. माध्यमिक कक्षाओं के हिंदी पाठ्यक्रम में से किसी एक व्याकरण संबंधी प्रकरण का चुनाव करते हुए स्पष्ट कीजिए कि आप इसका शिक्षाशास्त्रीय विश्लेषण किस प्रकार करेंगे?

5. माध्यमिक कक्षाओं में हिंदी शिक्षण की विभिन्न विधाओं से संबंधित किसी एक प्रकरण या पाठ का चयन करते हुए उसका शिक्षाशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत कीजिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सहायक एवं विशेष अध्ययन ग्रंथ-सूची

अनंत चौधरी, **नागरी लिपि और हिंदी वर्तनी,** बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना।

के० क्षत्रिया, **मातृभाषा शिक्षण,** विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

के० जी० रस्तोगी, **भाषा संप्राप्ति मूल्यांकन,** केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा।

के० के० सुखिया, **हिंदी ध्वनियाँ और उनका शिक्षण,** रामनारायण लाल, इलाहाबाद।

जयनारायण कौशिक, **हिंदी शिक्षण,** हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़।

जयनारायण कौशिक एवं विमला कौशिक, **पाठ-योजना निर्देशिका हिंदी शिक्षण,** आर्य बुक डिपो, करोलबाग, नई दिल्ली।

जयनारायण कौशिक, **शुद्ध हिंदी लेखन,** आर्य बुक डिपो, करोल बाग, नई दिल्ली।

निरंजन कुमार सिंह, **माध्यमिक विद्यालयों में हिंदी शिक्षण,** राजस्थान ग्रंथ अकादमी जयपुर।

भगवतीप्रसाद शुक्ल, **हिंदी उच्चारण और वर्तनी,** आर्य बुक डिपो, करोल बाग, नई दिल्ली।

भोलानाथ तिवारी, **भाषा-विज्ञान,** किताब महल, इलाहाबाद।

भोलानाथ तिवारी तथा कैलाश भाटिया, **हिंदी शिक्षाण,** लिपि प्रकाशन, दिल्ली।

(भाई) योगेंद्रजीत, **हिंदी भाषा शिक्षण,** विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

रघुनाथ सफाया, **हिंदी शिक्षण,** पंजाब किताब घर, जालंधर।

रमन बिहारी लाल, **हिंदी शिक्षण,** रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ।

रामशकल पांडेय, **हिंदी शिक्षण,** विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

लक्ष्मीनारायण शर्मा, **भाषा की शिक्षण विधियाँ एवं पाठ-नियोजन,** विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

वैद्यनाथ प्रसाद वर्मा, **हिंदी शिक्षण पद्धति,** बिहार ग्रंथ अकादमी, पटना।

सीताराम चतुर्वेदी, **भाषा की शिक्षा, हिंदी साहित्य कुटीर,** वाराणसी।

सावित्री सिंह, **हिंदी शिक्षण,** लायल बुक डिपो, मेरठ।

शारदा भसीन, **स्वनिम विज्ञान और हिंदी की स्वनिम व्यवस्था,** आर्य बुक डिपो, करोल बाग, नइ दिल्ली।

हरिदेव बाहरी, **व्यावहारिक हिंदी व्याकरण,** लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद।

Decent, E. B.; **Improving the Teaching of Reading,** London : Prentice-Hall, 1964.

Freeman, F.N.; **Teaching Hand Writing,** Washington : American Educatioal Research Association, 1954.

Jesperson Otto; **Language, Nature, Development and Origin,** Allen and Unwin, 1922.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Lado, Rabert; **Language Teaching—A Scientific Approach,** New York : McGraw Hill, 1964.

NCERT; **Preparation and Evaluation Text-books in Mother Tongue,** New Delhi, 1970.

Ryburn, W. M; **Suggestions for Teaching the Mother Tongue,** London : Oxford University Press, 1954.

Strangand Others ; **The Improvement of Reading,** New York : McGraw-Hill, 1961.

Thorndike, **R.L.; Reading Comprehension Education in Fifteen Countries,** New York : John Wiley, 1973.

Tidyman, Willard F and Marguerite Butterfield; **Teaching the Language Arts,** New York : McGraw-Hill, (2nd ed.), 1960.

G. M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc. No. 6376
Dated 21/9/2004

G.M.C.E.J
6376

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant